[०१] श्री आचाराङ्ग-चूर्णि:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"आचार" चूर्णि:

[बहुश्रुतकिंवदन्त्या: **जिनदासगणिवर्य विहिता**]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ jain_e_library's Net Publications

प्रत
वृत्यंक
[–]

दीप
अनुक्रम
[–]

श्रीआचारांगचूर्णिः

बहुश्रुतकिंवदन्त्या श्रीजिनदासगणिवर्यविहिता

मुद्रणप्रयोजिका—मालवदेशान्तर्गतरत्नपुरीय (रतलामगत) श्रीऋषभदेवजीकेशरीमलजी श्वेतांबरसंस्था.

मुद्रणकर्त्ता—सूर्यपुरीयश्रीजैनानंदमुद्रणालयव्यापारयिता शा० मोहनलाल मगनलाल बदामी.

विक्रमस्य संवत् १९९८ — श्रीवीरस्य २४६८ — क्राइष्टस्य १९४१

पण्यं रूप्यकपंचकं — प्रतयः ५००

सर्वेऽधिकारा मुद्रणस्य मुद्रणकारकाधीनाः

*** आचाराङ्गसूत्रस्य चूर्णि: मूल "टाइटल पेज"

मूलाङ्का: ५५२ — आचाराङ्ग चूर्णेः विषयानुक्रम — निर्युक्ति गाथा: ३५६

मूलांक	विषय:	पृष्ठांक	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
—	श्रुतस्कंध- १	००५	१४३	--उद्देशक: २ धर्मप्रवादीपरीक्षणं	१४१	२२०	--उद्देशक: ३ अंगचेष्टाभाषित:	२७०
✻-✻	अध्ययनं १ शस्त्रपरिज्ञा	००६	१४७	--उद्देशक: ३ निरवद्यतप:	१४८	२२४	--उद्देशक: ४ वेहासनादिमरणं	२७७
००१	--उद्देशक: १ जीवअस्तित्वं	००६	१५०	--उद्देशक: ४ संयमप्रतिपादनं -वचनं	१५२	२२९	--उद्देशक: ५ ग्लानभक्तपरिज्ञा	२८०
०१४	--उद्देशक: २ पृथ्विकाय	०२२				२३१	--उद्देशक: ६ इंगितमरणं	२८३
०१९	--उद्देशक: ३ अप्काय:	०२८	✻-✻	अध्ययनं ५ लोकसार:	१५८	२३६	--उद्देशक:७ पादपोपगमनमरणं	२८८
०३२	--उद्देशक: ४ अग्निकाय:	०३३	१५४	--उद्देशक: १ एकचर्या	१५८	२४०	--उद्देशक: ८ उत्तममरणविधि:	२९१
०४०	--उद्देशक: ५ वनस्पतिकाय:	०३५	१५९	--उद्देशक: २ विरतमुनि	१६९	✻-✻	अध्ययनं ९ उपधानश्रुतं	३०१
०४९	--उद्देशक: ६ त्रसकाय:	०३९	१६४	--उद्देशक: ३ अपरिग्रह	१७५	२६५	--उद्देशक: १ चर्या:	३०१
०५६	--उद्देशक: ७ वायुकाय:	०४१	१६९	--उद्देशक: ४ अव्यक्त:	१८४	२८८	--उद्देशक: २ शय्या:	३१५
✻-✻	अध्ययनं २ लोकविजय:	०४८	१७३	--उद्देशक: ५ हृदोपम:	१९२	३०४	--उद्देशक: ३ परिषह:	३२१
०६३	--उद्देशक: १ स्वजन:	०४८	१७९	--उद्देशक: ६ कुमार्गत्याग:	२००	३१८	--उद्देशक: ४ रोगातंक:	३२५
०७३	--उद्देशक: २ अदृढत्वम्	०६२	✻-✻	अध्ययनं ६ द्युतं	२०४	—	श्रुतस्कंध- २	३२९
०७८	--उद्देशक: ३ मदनिषेध:	०६७	१८६	--उद्देशक: १ स्वजनविधूननं	२०४		▶ चूडा-१ ◀	३२९
०८४	--उद्देशक: ४ भोगासक्ति:	०७६	१९४	--उद्देशक: २ कर्मविधूननं	२१३	✻-✻	अध्ययनं १ पिण्डैषणा	३२९
०८८	--उद्देशक: ५ लोकनिश्रा	०८१	१९८	--उद्देशक: ३ उपकरण एवं . शरीर-विधननं	२२०	३३५	-- (उद्देशका: १...११)	३२९
०९८	--उद्देशक: ६ अममत्वं	०९३					आहारग्रहण विधि: एवं निषेध: आहारार्थे गमनविधि:,सङ्खडी-दोष:,पानकग्रहण विधि:,भोजन ग्रहण विधि: इत्यादि:।	------
✻-✻	अध्ययनं ३ शीतोष्णीयं	१०५	२०१	--उद्देशक: ४ गौरवत्रिकविधूननं	२३१			
१०९	--उद्देशक: १ भावसुप्त:	१०५	२०७	--उद्देशक: ५ उपसर्ग-सन्मान . विधननं	२३८			
११५	--उद्देशक: २ द:खानुभव:	११४						
१२५	--उद्देशक: ३ अक्रिया	१२२	✻-✻	“अध्ययनं ७ व्युच्छिन्नम्”	-------	✻-✻	अध्ययनं २ शय्यैषणा	३४९
१३४	--उद्देशक: ४ कषायवमनं	१२९	✻-✻	अध्ययनं ८ विमोक्षं	२४८	३९८	-- (उद्देशका: १...३)	३४९
✻-✻	अध्ययनं ४ सम्यक्त्वं	१३३	२१०	--उद्देशक: १ कुशीलपरित्याग:	२४८		शय्या-वसति ग्रहणे निषेध: व विधि:, संस्तारक प्रतिमा	-----
१३९	--उद्देशक: १ सम्यकवाद:	१३४	२१५	--उद्देशक: २अकल्प्यपरित्याग:	२६४			

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

मूलाङ्का: ५५२ **आचाराङ्ग चूर्णः विषयानुक्रम** निर्युक्ति गाथा: ३५६

मूलां	विषय:	पृष्ठांक	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक	मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
	श्रुतस्कंध- २ चूडा-१	-----	❊-❊	अध्ययनं ६ पात्रैषणा	३६९	४९९	सप्तैकक ३ उच्चार-प्रश्रवणं	३७३
❊-❊	अध्ययनं ३ इर्य्या	३५८	४८६	-- (उद्देशका: १, २)	३६९	५०२	सप्तैकक ४ शब्द:	३७४
४४५	-- (उद्देशका: १...३)	३५८		पात्रस्वरूपं, पात्रग्रहण विधि:-	-----	५०५	सप्तैकक ५ रूप:	३७४
	विहार निषेध: व विधि: वर्षा-	------		निषेधश्च, पात्र पडिमा, पात्र		५०६	सप्तैकक ६ परक्रिया	३७५
	वास:, गमनागमन विधि: व			प्रमार्जना, पात्र परिग्रहणम्		५०७	सप्तैकक ७ अन्योन्यक्रिया	३७६
	निषेध:,पथिना सह वार्ताविधि		❊-❊	अध्ययनं ७ अवग्रह प्रतिमा	३७०		► चूडा-३ ◄	३७७
❊-❊	अध्ययनं ४ भाषाजातं	३६४	४९५	-- (उद्देशका: १, २)	३७०	५०९	भगवन् महावीरस्य च्यवन,जन्म,	-----
४६६	--उद्देशक: १ वचनविभक्ति:	३६४		अवग्रह आदि याचनाविधि:	-----		दीक्षादि वर्णनम्, पंच महाव्रतस्य	
४७०	--उद्देशक: २ क्रोधोत्पतिवर्जनं	३६६		एवं अवग्रह पडिमा(७)			प्ररूपणा, तस्य पंच-पंच भावना	
❊-❊	अध्ययनं ५ वस्त्रैषणा	३६६		► चूडा-२ ◄	३७१		► चूडा-४ ◄	३८४
४७५	--उद्देशक: १ वस्त्रग्रहणविधि:	३६६	४९७	सप्तैकक १ स्थानं	३७१	५४१-	अनित्यभावना, मुने:हस्ति आदि	-----
४८३	--उद्देशक: २ वस्त्रधारणविधि:	३६८	४९८	सप्तैकक २ निषिधिका:	३७३	-५५२	उपमा,अन्त्कृत्+मोक्षगामी मुनि०	

आचाराङ्ग चूर्णः संक्षिप्त विषयानुक्रम: परिसमाप्त:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

[आचार-चूर्णि] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "आचाराङ्गसूत्र" के नामसे सन १९४१ (विक्रम संवत १९९८) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब।

वृत्ति की तरह चूर्णी के भी दुसरे प्रकाशनों की बात सुनी है, जिसमे ऑफसेट-प्रिंट और स्वतंत्र प्रकाशन दोनों की बात सामने आयी है, मगर मैंने अभी तक कोई प्रत देखी नहीं है। सिर्फ एक 'आचार-चूर्णि' का नया प्रकाशन तैयार होता हुआ देखा था।

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? - ✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर श्रुतस्कंध-अध्ययन-उद्देशक-मूलसूत्र-निर्युक्ति आदि के नंबर लिख दिए, ताकिं पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगम चूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था, परंतु जब मैंने 'आचार-चूर्णि' के ९० से ज्यादा पृष्ठों का काम किया तब पता चला की चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति सर्वथा भिन्न है, चूर्णिमें प्रत्येक सूत्र स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहीं देते, नाही चूर्णिमें सूत्रो या गाथा का कोई स्पष्ट अलग क्रम संकलित हुआ है और बहोत स्थानोमें तो सूत्रों के अपूर्ण अंश लिखकर ही पूरी चूर्णि तैयार हुई है, इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है। हम यहाँ प्रत्येक पृष्ठ पर अलग सूत्रक्रम दे नहीं पाये अगर लिख भी देते तो भी आप चूर्णिमें से उसे ढुंढ नहीं पाते क्योंकि चूर्णिमें सभी स्थानोमे अलग क्रमांकन है प्राप्त नहीं है। हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रों का क्रम, वृत्ति के क्रमानुसार [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है तांकि वृत्ति के आधार पर चूर्णिमें से सूत्र ढुंढ शके और बायीं तरफ़ इस वृत्ति के सूत्रक्रम और नीचे दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे सभी आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता औ र आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसिको मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

......मुनि दीपरत्नसागर.

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

अर्हम् ॥

श्रीआचारांगसूत्रचूर्णिः।

ॐ नमो वीतरागाय, नमः सर्वज्ञाय ॥ मंगलादीणि सत्थाणि मंगलमज्झाणि मंगलावसाणाणि मंगलपरिग्गहा य सिस्सा सत्थाणं अवग्गहेपायधारणासमत्था भवंति, एएण कारणेणं आदौ मंगलं मज्झे मंगलं अवसाणे मंगलमिति, तत्थ अज्झयणकृतं आदीये जीवगहणं तदत्थित्तप्पसाहणं च, मज्झे मंगलं सम्मत्ता लोगसारग्गहणा, अंते मंगलं भगवतो गुणुक्कित्तणा, एयं अज्झयण-कयं, इदाणिं सुत्तकयं भण्णति–आदीये सुयग्गहणा भगवतोग्गहणा य, मज्झे 'से बेमि जे य अतीता अरहंता भगवंता' तहा 'से बेमि से जहावि हरे,' अंतेवि 'अभिणिव्वुडे अमाई य' एयस्स गहणा, तं पुण मंगलं चउविहं-णाममंगलं ठवणामंगलं दव्वमंगलं भावमंगलं, णामठवणाओ गयाओ, दव्वे सुत्थियादि भावे णंदी, सा चउविहा-नाम०ठवणा०दव्व०,भाव० णामठवणाओ गयाओ,दव्वे संखबारसगाणि तूराणि, भावणंदी पंचविहं णाणं, सव्वेसिंपि परूवणं काऊणं सुयनाणेणं अहिग्गारो, कम्हा ?, जम्हा सुयनाणे

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

***सूत्रस्य आदि-मध्य-अंत्य 'मंगल' कथनं

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ २ ॥

अनुयोगद्वाराणि अगादिदिगंतनिक्षेपाः

उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुयोगो य पवत्तति, तत्थ उद्देससमुद्देसअणुण्णाओ गयाओ, इह तु अणुओगेणं अहिगारो, सो चउविहो, तंजहा–चरणकरणानुयोगो धम्माणुयोगो गणियाणुयोगो दवियाणुयोगो, सो पुण दुविहो–पुहुत्ताणुयोगो अपुहुत्ताणुयोगो, अपुहुत्ते एक्केके अणुयोगद्दारे चत्तारिवि समोयारिज्जंति, अपुहुत्तं जाव अज्जवइरोत्ति, एत्थ अज्जवइरऽज्जरक्खित पुस्समित्ततिगं च घेत्तूणं जहय पुहुत्ता कया तह भाणियवं, इह चरणकरणाणुयोगेणं अहिगारो, सो य इमेहिं दारेहिं अणुगंतवो, तंजहा–णिक्खेवेगट्ठ णिरुत्त विही पवत्ती अ केण वा कस्स। तद्दारभेदलक्खणतदरिहपरिसा य सुत्तत्थो ॥१॥ एयाए गाहाए अत्थो जहा कप्पपेढियाए, णवरं कस्सत्ति दारं इमं भण्णइ-कप्पे वण्णियगुणेण आयरिएणं, कस्स कहेयवो ?, सवस्सेव सुतनाणस्स, विसेसेण पुण आयारस्स, जेण इहं चरणकरणजातामातावत्तीओ धम्मो आघविज्जइ, आयारस्स अणुयोगो, 'आयारे णं भंते ! किं अंगं अंगाइं सुतखंधो सुतखंधा अज्झयणं अज्झयणा उद्देसो उद्देसा ?, आयारे णं अंगं नो अंगाइं नो सुयखंधो सुयखंधा नो अज्झयणं अज्झयणा नो उद्देसो उद्देसा, तम्हा आयारं निक्खिविस्सामि अंगं निक्खिविस्सामि सुयं निक्खिविस्सामि खंधं निक्खिविस्सामि बंभं निक्खिविस्सामि चरणं निक्खिविस्सामि सत्थं निक्खिविस्सामि परिण्णं निक्खिविस्सामि सन्नं निक्खिविस्सामि दिसं णिक्खिविस्सामि, एत्थ पुण चरण-दिसावज्जाणं दाराणं सव्वेसिं चउक्कओ निक्खेवो, चरणस्स दिसाणं तु छक्को, तत्थ गाथा 'चरणदिसावज्जाणं'(३-४)वितियगाहा 'जत्थ तु जं जाणेज्जा'(४-४) एस निक्खेवलक्खणगाहा, आयारो चउविहो जहा खुड्डियायारे तहा दव्वायारो भावायारो य भाणियवा, तत्थ पंचविहेण भावायारेण अहिगारो, तस्स य इमे सत्त दारा भवंति, तंजहा- तस्सेगट्ठ पवत्तण'गाहा (५-६) एगट्ठियाइओ जहा 'आयारो आचालो' गाहा (७-५) तत्थ आयारो पुवभणिओ, इदाणिं आचालो, सो चउविहो, तत्थ दव्वे जहा वातो वृक्षं

॥ २ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

***चतुर् अनुयोगद्वाराणाम् कथनं, निक्षेपा गाथा:

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥ ३ ॥

'आयार' एकार्थाः तन्निक्षेपाः

कुंजरो स्तम्भं आरोहगं वा एवमादि, अहवा किरियाजोगो आचालो, आचलितो खंधावारो आचलितं आसणमिति, भावे सो चेव पंचविहो, कोहादि सव्वं अप्पसत्थं भावं चालेति कम्मबंधं आचारो, इयाणिं आगालो, जं वा उदगस्स णिण्णया व तलागं वा आगालो भवति, अहवा आगलिता मेहा, भावे तु अयमेव नाणादि भावागालो, इयाणि आगारो-दव्वेसु दव्वागारादि, अहवा रत्तणागरो समुद्रो, भावे अयमेव नाणादियागारो, इदाणिं आसासो, तत्थ दव्वे णदिमादिएसु वट्टमाणस्स तरणं दीवो वा,अहवाऽऽसासो दरिसणतो फासओ य, दरिसणे संजत्तया वाणियगा समुद्दमज्झे कूलं दट्ठुं आससंति, अहवा धातु(वाउ)पिसाया बिलं पविट्ठा दिसामूढा बिलद्वारं, करिसगा मेहं, पक्कणाणि वा ससाणि, माता णट्ठं पुत्तं, गब्भिणी पसूया पुत्तमुहं वा,रयणत्थियां रयणागरं एवमादी, फासओऽवि मुच्छिओ तिसितो वा तोयं घम्मत्तो चंदणं मारुतं वा एवमादि, भावआसासो आयारो संसाराओ उत्तरणं, इदाणिं आदरिसो, तत्थ दव्वे दप्पणादि, भावे आयारो, एत्थ करणिज्जं अकरणिज्जं च दरिसिज्जति। अंगं चउव्विहं, तं चाउरंगिज्जे वण्णितं इहंपि तं चेव। इदाणिं आचिण्णं, तत्थ दव्वे गोणादीणं तणा सीहादीण पोग्गलं खित्ताचिण्णं वाहिएसु सत्तुगा कोंकणासु पेज्जा, काले जहा “सरसो चंदणपंको अग्घति उल्ला य गंधकासाई। पाडलसिरीस मल्लियपियंगु काले निदाहंमि” ॥ १ ॥ भावाइण्णं सव्वसाहूहिं अयमेव नाणादियायारो मोक्खनिमित्तं आइण्णो। इयाणिं आयातो, तत्थ दव्वे जहा आयातो देवदत्तो, अहवा जातिस्सरकहासु सुव्वति अमुगभवाओ इमं भवं आयातो, भावे गुरुपरंपरएण। इयाणिं आमोक्खो, तत्थ दव्वे निग्गंथादीणि मोइज्जंति भावे पच्छा विवद्धिओ मुच्चइ सकम्माओ। इयाणिं पवत्तणं, **'सव्वेसिं आयारो'** गाहा (८-६) सव्वतित्थगरावि आयारस्स अत्थं पढमं आइक्खंति, ततो सेसगाणं एक्कारसण्हं अंगाणं, ताए चेव परिवाडीए गणहरावि सुत्तं गुंथंति। इयाणिं पढमंगंति, किंनिमित्तं आयारो पढमं ठविओ?, एत्थ गाहा **'आयारो अंगाणं'** ॥ ३ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

***आचार शब्दस्य एकार्थका शब्दा:

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥ ४ ॥

(९--६) जेण कारणेण एत्थ आयारो वन्निज्जइ चरणं चेव मोक्खस्स सारो, तत्थ ठितो सेसाणि अंगाणि अहिज्जइ तेण सो पढमं कतो, इयाणिं गणित्ति 'आयारंमि अहीए' गाहा (१०--६) गणीति गणं वायारेति तम्हा आयारो भविस्सइ पढमं गणिठाणं। इयाणिं परिमाणं, तत्थ 'णवबंभचेरमइओ अट्ठारसपदसहस्सिओ वेओ' गाहा (११--६) तत्थ णव बंभचेरा आयारो, तस्स पंच चूलाओ, ताओ पुण आयारेहिंतो अज्झयणसंखाए बहु पदग्गेण बहुत्तरियाओ दुगुणा तिगुणा वा, ताओ पुण इमाओ भवंति-एक्कारस पिंडेसणाओ जाव उग्गहपडिमा पढमा चूला, सत्तसत्तिकया वितिया, भावणा ततिया, विमोत्ति चउत्था, णिसीहं पंचमा चूला। इदाणिं समोयारो, तत्थ दवे जहा आमंतणे बडुया, खलगादिसु कवोयादी, ण्हाणाणुयाणादिसु अरुहंतयादिसुसाहुणो, भावे अयमेव नाणादीणं भावाणं समोयारो, तत्थ गाहाओ तिण्णि पढियवाओ। (१२, १३, १४--७) इयाणिं सारो, तत्थ दवे जहा कोडीसारो देवदत्तो अहवा ससारो बंभो ससारो दधि एवमादि, भावे अयमेव नाणादी भावो चेव, सुत्ते आयारो सारो, अहवा सवस्सेव सुयनाणस्स एस आयारो सारो, तत्थ गाहाओ 'अंगाणं किं सारो' गाहाओ (१६, १७) दोन्नि पढियवाओ। इयाणिं अंगं, तं चउविहं-नामंगं ठवणंगं दवंग भावंगंति, णामठवणाओ गयाओ, दवंगं जहा चउरंगिज्जे, भावंगं आगमओ जाणओ उवउत्तो, नोआगमओ इमं चेव आयारभावंगं, तेण अहीगारो, इदाणिं सुत्तं, दवे पत्तयपोत्थयलिहियं, भावे इमं चेव, खंधेचउविहे दवे सचित्तादी भावे एतेसिं चेव नवण्हं अज्झयणाणं समुदाओ, को य पुण एस भावसुयक्खंधो?, भण्णइ, बंभचेरा, तेण बंभं णिक्खिवियवं 'बंभंमि(मी उ)चउक्कं' गाहा ( ) तत्थ ठवणाबंभं अक्खणिक्खेवादिसु, अहवा बंभणुप्पत्ती भाणियवा, 'एगा मणुस्सजाई' गाहा (१९--८) एत्थ उसभसामिस्स पुवभवजम्मणअहिसेयचक्कवट्टिरायाभिसेगाति, तत्थ जे रायअस्सिता ते य खत्तिया

आदिस्था-
पनहेतुः
पदमानं,
ब्रह्मनिक्षेपः।

॥ ४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

***'ब्रह्म' शब्दस्य निक्षेप:

प्रत वृत्यंक [१-१२]

दीप अनुक्रम [१-१२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ ५ ॥

क्षत्रियादयो वर्णाः

जाया अणस्सिता गिहवइणो जाया, जया अग्गी उप्पण्णो ततो य भगवऽस्सिता सिप्पिया वाणियगा जाया, तेहिं तेहिं सिप्पवाणिज्जेहिं वित्तिं विसंतीति वइस्सा उप्पन्ना, भगवए पव्वइए भरहे अभिसित्ते सावगधम्मे उप्पण्णे बंभणा जाया, अणस्सिता बंभणा जाया माहणत्ति, उज्जुगसभावा धम्मपिया जं च किंचि हणंतं पिच्छंति तं निवारंति मा हण भो मा हण, एवं ते जणेणं सुकम्मनिवत्तितसन्ना बंभणा(माहणा)जाया, जे पुण अणस्सिया असिप्पिणो ते वयख(क)लासुइबहिकआ तेसु तेसु पओयणेसु सोयमाणा हिंसाचोरियादिसु सज्जमाणा सोगद्रोहणसीला सुद्दा संवुत्ता, एवं तावं चत्तारिवि वण्णा ठाविता, सेसाओ संजोएणं, तत्थ 'संजोए सोलसयं' गाहा (२०-८) एतेसिं चेव चउण्हं वण्णाणं पुव्वाणुपुव्वीए अणंतरसंजोएणं अण्णे तिण्णि वण्णा भवंति, तत्थ 'पयती चउक्कयाणंतरे' गाहा (२१-८) पगती णाम बंभखत्तियवइससुद्दा चउरो वण्णा। इदाणिं अंतरेण-बंभणेणं खत्तियाणीए जाओ सो उत्तमखत्तिओ वा सुद्धखत्तिओ वा अहवा संकरखत्तिओ पंचमो वण्णो, जो पुण खत्तिएणं वइस्सीए जाओ एसो उत्तमवइस्सो वा सुद्धवइस्सो वा संकरवइस्सो वा छट्ठो वण्णो, जो वइस्सेण सुद्दीए जातो सो उत्तमसुद्दो वा (सुद्धसुद्दो) वा संकरसुद्दो वा सत्तमो वण्णो। इदाणिं वण्णेणं वण्णेहिं वा अंतरितो अणुलोमओ पडिलोमतो य अंतरा सत्त वण्णंतरया भवंति, जे अंतरिया ते एगंतरिया दुअंतरिया भवंति। चत्तारि गाहाओ पढियव्वाओ (२२,२३, २४, २५-८) तत्थ ताव बंभणेणं वइस्सीए जाओ अंबट्ठोत्ति वुच्चइ एसो अट्ठमो वण्णो, खत्तिएणं सुद्दीए जातो उग्गोत्ति वुच्चइ एसो नवमो वण्णो, बंभणेण सुद्दीए निसातोत्ति वुच्चइ, किंतिपारासवोत्ति, तिण्णि गया, दसमो वण्णो। इदाणिं पडिलोमा भण्णंति-सुद्देण वइस्सीए जाओ अउगवुत्ति भण्णइ, एक्कारसमो वण्णो, वइस्सेण खत्तियाणीए जाओ मागहोत्ति भण्णइ, दुवालसमो, खत्तिएणं बंभणीए जाओ सूओत्ति भण्णाति, तेरसो ॥ ५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

***मनुष्यजाती/वर्ण एवं वर्णान्तरम्

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ ६ ॥

ब्रह्मचरणनिक्षेपः

वण्णो, सुद्देण खत्तियाणीए जाओ खत्तिओत्ति भण्णइ, चोद्दसमो, वइस्सेण बंभणीए जाओ वैदेहोत्ति भण्णति, पन्नरसमो वण्णो, सुद्देण बंभणीए जाओ चंडालोत्ति पवुच्चइ, सोलसमो वण्णो, एतव्वतिरित्ता जे ते बिजाते ते वुच्चंति—उग्गेण खत्तियाणीए सोवागोत्ति वुच्चइ, वैदेहेणं खत्तीए जाओ वेणवुत्ति वुच्चइ, निसाएणं अंबट्ठीए जाओ बोक्कसोत्ति वुच्चइ, निसाएण सुद्दीए जातो सोवि बोक्कसो, सुद्देण निसादीए कुकुडओ, एवं सच्छंदमतिविगप्पितं ठवणाबंभं गतं। इदाणिं दव्वबंभं भण्णइ ‘दव्वं सरीरभविओ’ गाथा (२८–९) दुविहं आगमओ नोआगमओ य जहा अणुयोगद्दारे, णवरं जाणइ वावारेहिति वा बंभं, जाणवइरित्तं अन्नाणियवत्थिसंजमो, जाओ य रंडकुरंडाओ बंभं धरेंति, भावे तु विदुवत्थिसंजमो, विदुत्ति आगमओ भावबंभं गहितं, नोआगमतो तस्सेव जो वत्थिसंजमो मेहुणओवरति, अहवा संजमो बंभं भण्णति। दारं। चरणं छव्विहं, वइरित्तं दव्वचरणं तिविहं, तंजहा—गइचरणं भक्खणाचरणं आचरणाचरणं, तत्थ गइचरणं रहेण चरति घोडेहिं चरति पादेहिं चरति एयं गइचरणं भण्णइ, भक्खणाचरणं मोदए चरति देवदत्तो तणाणि गावो चरंति, आयारणाचरणं णाम चरगादीणं, अहवा तेसिंपि जो आहारादिपूयानिमित्तं तवं चरति तं दव्वाचरणं, लोगुत्तरेऽवि उदायिमारगप्रभृतीणं, जं वाऽणुवउत्ताणं, खेत्तचरणं जइयं खित्तं चरति—गच्छति, अहवा सालिखित्तं गोणादि चरति, कालेवि जो जावतिकालेण गच्छति भुंजति वा, भावे तिविहं—गतिचरणं भक्खणचरणं गुणचरणं, ‘भावे गति आहारे’गाहा–(३०–८) तत्थ गतिभावचरणं जं ईरियासमितो चरति गच्छति, भक्खणा जो बायालीसादोसपरिसुद्धं वीतिंगालं विगतधूमं कारणे आहारेइ, एतं आहारभावचरणं पसत्थमपसत्थं च, अप्पसत्थं मिच्छत्तऽण्णाणुवहतमतिया अन्नउत्थिया धम्मं उवचरंति मोक्खस्सत्थं, किं पुण णिदाणोवहया?, लोउत्तरेवि निदाणोवहतं अप्पसत्थं, पसत्थं तु णिज्जराहेउं जं बंभचरणं, एत्थ ॥ ६ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

***चरण-निक्षेपाः,

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः
॥ ७ ॥

पसत्थगुणचरणाणं अहीगारो, एयाणि णवविहबंभचेराणि निज्जरत्थं पढिज्जंति, जहत्थ भणियं तह आयरिज्जंति, तस्स पुण णवबंभचेर-सुयखंधस्स इमे अज्झयणा भवंति, तंजहा–'सत्थपरिण्णा लोगविजओ'गाहा 'अट्ठमए य विमोक्खो'गाहा (३१,३२-९) एतेसिं णवण्हं अज्झयणाणं इमे अत्थाहिगारा भवंति, तंजहा–'जियसंजमो य' गाहा (३३) 'णिस्संगया य छट्ठे' गाहा, (३४–१०) तत्थ परिण्णाए जीवसब्भावोवलंभो कीरति, जीवअभावे णवि बंभचरणं नवि तप्पयोजणं अतो अत्तोवलंभो पढमं कायव्वो, एवं सो अप्पाणं उवलभित्ता उत्तरकाले सत्तरसंजमे अप्पाणं ठावेइ संजमं वा अप्पाणे, लोगविजए उदइओ भावो लोगो कसाया जाणियव्वा, जहा य खवेयव्वा, एवं महव्वयाववहियस्स विसयकसायलोयं जिणंतस्स जइ अणुलोमपडिलोमा उवसग्गा उप्पज्जेज्जा ते सहियव्वा तति‍तो अहिगारो, पंचमहव्वयअवहितमइस्स जियकसायलोयस्स सुहदुक्खं तितिक्खमाणस्स पंचग्गितावगोमयसुक्कसेलामाइआहारजंतणतवोविसेसं दट्ठूण विज्जातिरिद्धीओ य मा दिट्ठिमोहो भविस्सइ तेण चउत्थे संमत्तं, पंचमे तहेव अहिगारं उच्चारित्ता लोगं सारमसारं जाणित्ता विस्सारं छड्डित्ता सारगहणं कायव्वं, छट्ठे उ तहेव अहिगारे उच्चारित्ता संमत्तादिसारं गहेऊणं भावतो निस्संगो विहरेज्जा, सत्तमे तु मोहसमुत्था परीसहोवसग्गा सहिता परिजाणियव्वा, अट्ठमे तु वियाणित्ता णिज्जाणं कायव्वं, जं भणितं भक्तप्रत्याख्यानं, नवमे केण इमं दरिसितमाइण्णं वा ?, वीरसामिणा, 'एसो उ बंभचेरे पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं । एत्ताहे एक्केक्कं अज्झयणं वण्णइस्सामि ॥ ? ॥' तत्थ पढमं अज्झयणं सत्थपरिण्णा, तस्स चत्तारि अणुओगदारे वण्णेऊणं पुव्वाणुव्वीए पढमं पच्छाणुपुव्वीए णवमं अणाणुपुव्वीए णवगच्छगयाए०, णामे खयोवसमिए समोवतरति, भावप्पमाणे लोउत्तरे आगमे विभासा, णो णयप्पमाणे, कालियसुयपरिमाणसंखाए, उस्सण्णेणं सव्वसुयं ससमयवत्तव्वयाए,

अर्थाधिकाराः
॥ ७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

शस्त्रपरिज्ञयोर्निक्षेपाः

अत्थाहिगारो सो इमाए गाहाए अणुगंतव्वो, 'जीवो छक्कायपरूवणा य'गाहा-(३५-१०) जत्थ जत्थ समोयरति तत्थ तत्थ समोतारितं, णामणिप्फण्णो सत्थपरिण्णा, सत्थं परिण्णा य दो पदाइं, तत्थ सत्थं निक्खेवियव्वं 'दव्वं सत्थग्गिविसं'गाहा-(३६-१०) तत्थ सत्थं असिमादि अग्गिसत्थं एवं विससत्थं णेहं अबिलं खारो नाम क्षारो रूक्षाणि च-पीलुकरीरादी करीसणगरणिद्धमणादी दव्वसत्थं, भावसत्थं कायो वाया मणो य दुप्पणिहियाइं। परिण्णा चउव्विहा, 'दव्वं जाणण पच्चक्खाण' गाहा (३७-१०) दव्वपरिण्णा दुविहा-जाणणापरिण्णा पच्चक्खाणपरिण्णा य, तत्थ जा सा दव्वजाणणापरिण्णा सा दुविहा-आगमओ नोआगमओ य, आगमओ जस्स णं परिण्णात्तिपदं० णोआगमतो दुविहा-जाणगसरीर० भवियसरीरा०, इदाणिं पच्चक्खाणदव्वपरिण्णा—जो जेण रजोहरणादिदव्वेणं पच्चक्खाइ एसा पच्चक्खाणदव्वपरिण्णा, भावपरिण्णा दुविहा—जाणणा पच्चक्खाणे य, जाणणा आगमतो णोआगमतो य, आगमतो जाणतो उवउत्तो, नोआगमतो इमं चेव सत्थपरिण्णाअज्झयणं, भावपच्चक्खाणपरिण्णावि सव्वपावाणं अकरणं, जहा सव्वं पाणाइवायं तिविहं तिविहेण पच्चक्खाइ। गतो नामनिप्फण्णो निक्खेवो, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं-अक्खलियं अमिलितं०, तत्थ संधिता-सुत्तं-सुयं मे आउसं! तेण भगवया एवमक्खायं'(१-११) एयस्स अज्झयणस्स इमो उग्घातो-'अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणा। सासणस्स हियट्ठाए ततो सुत्तं पवत्तइ ॥ १ ॥' त्तं सुणित्तु गणहरा तमेव अत्थं सुत्तीकरित्ता पत्तेयं ससिस्सेहिं पज्जुवासिज्जमाणे एवं भणंति-सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं, सुहम्मो वा जंबुनामं-सुयं मे आउसं! तेण भगवया, सुणेइ सुतं, मे इति अहमेवासौ येन श्रुतं तदा, ण खणविणासी, आउसो! त्ति सिस्सामंतणं, सिस्सगुणा अण्णेऽवि पसत्थदेसकुलादि परिग्गहिता भवंति, दिग्घाउयत्तं तेसुं गरुयतरं ॥ ८ ॥

प्रत वृत्यंक [१-१२]

दीप अनुक्रम [१-१२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥ ९ ॥

संज्ञा

तेण तग्गहणं, चिरजीवी अण्णेसिंपि दाहिति, तेणंति णेणं भगवया, अहवा आउसंतेण—जीवता कहितं, अहवा आवसंतेण गुरुकुलवासं, अहवा आउसंतेण सामिपादा, विणयपुव्वो सिस्सायरियकमो दरिसिओ होइ आवसंतआउसंतग्गहणेण, भग इति जो सो भण्णइ सो से अत्थि तेण भगवं 'माहात्म्यस्य समग्रस्य, रूपस्य यशसः श्रियः। धर्म्मस्याथ प्रयत्नस्य, षण्णां भग इतींगणा ॥१॥ भगवद्ग्रहणं तु सत्थगोरवत्थं धम्मायरियत्ति सिस्सायरियकमे मंगलत्थं च 'इह' इति प्रवचने आयारे वा सत्थपरिण्णज्झयणे वा 'एगेसिं'ति ण सव्वेसिं, अमानोना पडिसेहे, एत्थ अगारमागारनगारा सव्वपडिसेहगया, णोगारो तु देशे सव्वे य अधिगारं आसज्ज, तंजहा—नोगाम इति भण्णंते सुण्णगामो घेप्पइ, णवनिवासो वा, ण तात्र आवासेति, अग्गामोत्ति ण भण्णति, जो वा ग्रामस्य देशो एसो नोगामो, सव्वपडिसेहे अरण्णमेव, इह तु देशपडिसेहे दट्ठव्वो, जेण न कोऽपि संसारत्थो जीवो सन्नारहितो, भणियं च—“संसारत्थाणं दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—आहारसण्णा भय० मेहुण० परिग्गह० कोह० माण० माया० लोभ० लोग० ओघसण्णा, जेण पुढविकाइयाणवि अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडो तेण ण कोइ जीवो सण्णारहिओ, अतो नोकारेण पडिसेहो, 'एगेसिं'ति मणुस्साणं, जेण मणुस्सेसु चरित्तपडिवत्ती, सण्णा चउव्विहा '**दव्वे सचित्तादी**' गाहा (३८–१२) संजाणणं संज्ञा, जो हि जेण सचित्तेण ३ दव्वेण दव्वं संजाणइ सा दव्वसण्णा जहा बलागादीहिं सलिलं, जहा वा भमुगाअंगुलियनयणवयणमादिएहिं आगारेहिं सण्णं करेइ जहा गच्छ चिट्ठ पढ भुंज एवमादि चेयणा जहा अक्खेहि दाएति, लद्धीए व सिस्सस्स, जहा उज्जोतणियाए पदीवेण दरिसेइ, भावसन्ना अणुभवणा जाणणे य 'मइ होति जाणणाए' मई सण्णा णाणं एगत्था, सा सण्णा पंचविहा, तंजहा—आभिणिबोहियनाणसन्ना सुयनाणसन्ना ओहिनाण० मणपज्जवनाणसन्ना केवलणाणसण्णा, सा पुण ॥ ९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१-१२]

दीप अनुक्रम [१-१२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ १० ॥

दिशः

खइया वा होज्ञा खओवसमिया वा, अणुभवणसण्णा कम्मोदयनिप्फण्णा पायं सोलसविहा भवति, तंजहा–‘आहारभयपरिग्गहा’ गाहा (३९–१२) वितिगिच्छा तेहिं तेहिं नाणंतरादीहि सम्मदिट्ठिस्सवि भवति, किन्नु सेसस्स?, कोहसण्णा कोहज्झवसाओ, एवं माण० माया० लोभ० सोगो य, ओहसण्णा सेससण्णाविरहिया केवलं उवओगो, लोगसण्णा सच्छंदवियप्पिया अणेगरूवा, अणवच्चस्स लोगो णत्थि, सोयसुत्त(द्ध)त्थो रणमुह एवमादि, धम्मसण्णा णाम धम्मपियया तस्सीलसेवणा य, जाणणासण्णाए अहिगारो, तं च पडुच्च भण्णइ–‘इहमेगेसिं नो सन्ना भवति, तंजहा–पुरच्छिमाओ वा दिसाओ आगतो अहमंसि जाव अणुदिसातो आगओ अहमंसि’ (२–१३) दिस्सते जा सा दिसा ताओ पुव्वमादि, सा सत्तविहा ‘णामं ठवणा’ गाहा ॥ (४०–१३) ॥ णामदिसा जहा दिसाकुमारी, ठवणादिसा अक्खणिक्खेवादिसु दिसाविभागो ठाविओ, स पुण सुत्तपरूवणादिसुवि विज्ञति, दव्वदिसा ‘तेरसपदेसियं खलु’ गाहा ॥ (४१–१३) ॥ खेत्तदिसा ‘अट्ठपदेसो रुयओ गाहा ॥ (४२–१३)॥ इंदग्गेयी जंमा य गाहा ॥ (४३–१३) ॥‘अंतो सादीआओ’गाहा ॥ (४५–१४) ॥‘सगडुद्धिसंठियाओ’ गाहाओ (४६–१४) कंठाओ। ‘जस्स जओ आइच्चो उदेइ’ गाहा ‘दाहिणपासंमि य’ गाहा ॥ (४७, ४८-१४) ॥ भाणियव्वा, सव्वेसिं मेरुगिरी उत्तरतो ‘सव्वेसिं उत्तरेणं’ ‘जत्थ य जो पण्णवओ णव गाहा कंठ्या (५०, ५८-१५) । इदाणिं भावदिसा अट्ठारसविहा ‘मणुया इंदियकाया’ गाहा ॥ (६०–१५) ॥ तिरिया काया कम्मभूमगा अकम्मभूमगा य अन्तरदीवगा संमुच्छिममणुस्सा बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदियतिरिक्खजोणिया, पुढविकाइया तेउकाइया वाउकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया-अग्गबीया मूलबीया खंधबीया पोरबीया देवा नेरइया, एसा भावदिसा, दिस्सति तेण दिसा, तेण प्रकारेण दिस्सति जहा पुढवि- ॥ १० ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

अध्ययन-१ ‘शस्त्रपरिज्ञा’ आरब्धं

प्रथम अध्ययने प्रथम-उद्देशक ‘जीव अस्तित्व’ आरब्धः

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥ ११ ॥

काइयो आउआइओ जाव देवो, तत्थ खेत्तदिसं पडुच्च चउसु महादिसासु जीवाणं गति आगति अत्थि, सेसासु णत्थि, जेण जीवो असंखेज्जेसु पदेसेसु ओगाहति, पण्णवगदिसा उण पडुच्च अट्ठारसुवि दिसासु अत्थि गइरागमणं वा जीवाणं, एत्थ पुण एक्केकीए पण्णवगदिसाए अट्ठारसविहाएवि भावदिसाए गमणं आगमणं वा भवति, स पुण संजोगो 'अण्णतरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि' एतेण गहिओ भवति, तत्थ दिसाग्रहणात् पण्णवगदिसाओ चत्तारि य तिरियदिसा उड्ढ अ अहे य अट्ठारस य भावदिसाओ गहियाओ भवंति, अणुदिसाग्रहणात् पुण चत्तारि अणुदिसाओ गहियाओ, तत्थ असन्निदिसाओ आगयाणं णत्थि एतं विन्नाणं, अन्नतरीओ दिसाओ आगयाणं एवमेगेसिं णो णातं भवति, एवमवधारणे इति उपदेसे वा, णातमुवधारितं, अहवा उपसंधारवयणमेतं, तंजहा–कोइ मत्तवालो पुरिसो अइमत्तो कलालाऽऽवणातो अन्नाओ वा वमंतो मज्जं गंधेण साणेण वदणे संपिहिज्जमाणो सहीहि ओखेविओ सगिहमाणीओ मदावसाणे पडिबुद्धोऽवि सो ण याणति कओ वा केण वा आणिओ ?, कओ मदकाले ?, एस दिट्ठंतो, उवसंहारो इमो एवमेगेसिं, अहवा इदं च एगेसिं णो णातं भवति तंजहा–'अत्थि मे आया ओववातिए, णत्थि मे आया ओववातिए, के वाऽहं आसी ?, के वा इओ चुए पेच्चा भविस्सामि'(३–१६) अत्थित्ति विज्जमाणए विति, मे इति अत्तनिद्देसे, अततीति अप्पा हेउपच्चयसामग्गिपिहब्भावेसु, अहवाऽऽयपच्चइओ पाणियं भूमी आगासं कालो एवमादि, एतेहिं हेऊहिं अत्थि अप्पा, एवं एगेसिं णो परिण्णातं भवति, तज्जीवतस्सरीरवातियाणं तु अत्थि अप्पा, किंतु उववातिओ एतण्णो परिण्णातं भवति, सरीरं चेव तेसिं अप्पा, संसारी न भवति, जइ अण्णाओ सरीराओ निष्फिडंतो दिसिज्ज, ण पदिस्सति तेण न संसरति, आतग्रहणेण तिण्णि सट्ठाणि पावादियसताणि गहियाणि भवंति, आसीतं किरियावादिसतं, तत्थ किरियावादीणं ॥ ११ ॥

दिक्संयोगाः आत्मप्रत्ययः

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः
॥ १२ ॥

सम्यत्त्व-ग्रहः

अत्थि केसिंचि सव्वगतो असव्वगतो वा, तथा कत्ता अकर्ता मुत्तो अमुत्तो वा, अत्थित्तेऽवि सामाकतंदुलमित्ते अन्नेसिं अंगुट्ठपव्वमित्तो अन्नेसिं पईवसिहोवसोहियाहिट्ठितो, एतेसिं सव्वेसिं अत्थि उववादिओ य, अकिरियावादीणं णत्थि चेव, कओ उववादिओ ?, अण्णाणिया अप्पाणं पडुच्च ण विपडिवज्जंति, वेणइया य, अहवा इमंमि अत्तसब्भावोवलंभुद्देसए सम्मत्तगहणुद्देसए वा अवस्सं सम्मद्दंसणायारो वण्णेयव्वो तप्पडिवक्खं च मिच्छंति, तं जइविय चउत्थे सम्मत्तज्झयणे वित्थरेण वण्णिज्जिहिति तहावि इह संखेवुद्देसेणं उल्लाविज्जइ, सम्मद्दंसणपरिच्छाएवि आदिपदत्थो जीवो, तहिं सिद्धे सेसपदत्थसिद्धी, तं चेव उवरिं इच्चेव उद्देसए भण्णिहिति, तंजहा 'से आतावादी लोगावादी', कहं सम्मत्तं न लब्भति ?, भण्णति, अट्ठण्हं पगडीणं पढमिल्लगाण उदए णो सण्णा भवति, पगडीणं अब्भितरे, सण्णत्ति वा बुद्धित्ति वा नाणंति वा विण्णाणंति वा एगट्ठा, आदिरंतेण सहिता, सण्णाग्रहणेणं आभिणिबोहियनाणं सूयितं भवति, एयं आभिणिबोहियनाणं अस्सन्निदिसाए एगंतेण णत्थि, सन्नीवि तिरीयं अभिनिवेसेणं णत्थि, 'केसिंचि अत्थि सन्ना'गाहा (६३-१६) जेसिंपि अत्थि अप्पा उववाइओ य तेसिंपि एतं णो णातं भवति-के अहं आसी णेरइओ वा तिरिओ वा इत्थी वा पुरिसो वा णपुंसओ वा ? के व इओ-इमाओ माणुस्साओ चुओ पेच्चत्ति परलोगे, तो एसो ताव अयाणतो, तव्विवरीओ जाणओ, सो कहं जाणइ ?, भण्णइ-'सहसंमुतियाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा सोच्चा'(४-१९) सोभणा मति संमति सहसंमुतियाएत्ति 'इत्थ य सहसम्मइया जं एदं' गाहा (६५-२०) पढियव्वा, एसा चउव्विहावि सहसंमुइया आतपच्चक्खा भवति, परवागरणं णाम सव्वनाणीणं तित्थगरो परो-अणुत्तरो, वागरिज्जतीति वागरणं परस्स वागरणं परं वा वागरणं परवागरणं, परस्स वा वागरणं परोवदेसो जहा गोयमसामी तित्थगरवयणेणं इंदनागं संबोधति-भो अणेगपिंडिया ! ॥ १२ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ १३ ॥

औपपातिकादि

एगपिंडिओ ते पुच्छइ, जहा वा सुलसं समणोवासियं अंबडो परिव्वायओ, अन्नेसिं वा अंतिए सोच्चत्ति तित्थगरवइरित्तो जो अण्णो केवली वा ओहिणाणी वा मणपज्जवनाणी वा चोद्दसपुव्वी वा दसपुव्वी वा णवपुव्वी वा एवं जाव आयारधरो वा सामाइयधरो वा सावओ वा अण्णतरो वा सम्मद्दिट्ठी, तिण्हं उवलद्धिकारणाणं अण्णतरेणं जाणइ, तंजहा-पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, पण्णवगदिसाओ य भावदिसाओ य सव्वाओ गहियाओ भवंति, अहवा अप्पवयणं नातं भवति, अहवा जम्ममच्चुजाग(ज)रादिया संसारिभावा णाआ भवंति, एवमेतं जहोद्दिट्ठकमेणं एगेसिं णातं भवति, अहवा एवं मण्णे जहेव दिसाविदिसाओ एगेसिं गतिरागई णाआ भवति तहेव इमंपि णातं,'तंजहा—अत्थि मे आया उववातिए,' आया अट्ठविहे तंजहा—दवियाता कसायाता० 'दविए कसाय जोगे उवजोगे नाण दंसणे चरणे। विरिये आता(य) तथा अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥१॥ एवमादी,उववादी संसारी, अण्णो सरीराओ अमुत्तो णिच्चो य अब्भुवगतं भवति, जेण संसरंतो न विणस्सइ ण य अकम्मस्स संसारो तेण कस्सा(म्मा)वि णहि सव्वगतस्स संसारो तेण ण सव्वगतो, णहि णिग्गुणस्स कयत्तणं तेण गुणीवि, जो इमाओ जहा परूवियाओ दिसाओ अणुदिसाओ य अणुसंचरइ धावति गच्छति वा एगट्ठा, अणुगयो कम्मेहिं कम्माइं वा अणुगतो संसरति अणुसंसरति, पुव्विं तप्पाउग्गाइं कम्माइं करेइ पच्छा संसरति, अणुसंभरति वा वत्तव्वं, जहा भट्टारएणं असंखेज्जाइं जम्माइं संभरित्ता गोयमसामी भणितो—चिरसंसिट्ठोऽसि मे गोयमा !' अहवा जो एगं भवं सव्वपज्जवेहिं अणुसंभरति सो सव्वभवग्गहणाणि सव्वपज्जवेहिं अणुसंभरति, ओहिणाणी कोइ संखेज्जाइं उवलभित्ता भवइ—जो एयाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अस्सिओ धावति सोऽहं, एवं चेव अण्णस्स अक्खाइ, जहा मल्लिसामी छण्हं रायाणं 'किंथ तयं पम्हुट्ठं ? जत्थ गयाओ विमाणपवरेसु। वुच्छा समयणिबद्धं ॥ १३ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ १४ ॥

लोकादिवादिता

देवा ! तं संभरइ जातिं ॥ १ ॥ जइ एवं कोइ सहसंमुइयाए जाणइ जहा सोऽहं तहेव अन्नो परतो अण्णाओ वा सोच्चा अणेगहा जाणाविओ अप्पाणं पच्चभिण्णाइ जाव सोऽहमिति, जइवा कोई भणेज्जा भणितं भट्टारएणं–अप्पा अत्थि, न तस्स लक्खणं उवदिट्ठं, भण्णइ–भणितं सोऽहमिति, इह निरहंकारे सरीरे जस्स इमोऽहंकारो, तंजहा–अहं करेमि मया कयं अहं करिस्सामि, एयं तस्स लक्खणं जो अहंकारो, भणितं अप्पलक्खणं । इदाणीं पगतं भण्णइ–'से आआवादी लोगावादी कम्मावादी किरियावादी' (५–२२) जेण एवं अप्पा जहुद्दिट्ठउवलद्धिकारणाणं अन्नतरेणं उवलद्धो से आयावादी–आयाअत्थित्तवादी, णो णाहिवादी, लोगवादी णाम जह चेव अहं अत्थि एवं अन्नेऽवि देहिणो संति, लोगअब्भंतरे एत्र जीवा, जीवाजीवा लोगसमुदओ इति, भणितो लोगवादी, अकम्मस्स संसारो णत्थि तेण कम्मवादीवि, तस्स बंधो चउव्विहो पगतिठितिअणुभागपदेसबंधो य, सो य ण विणा आसवेण तेण आसवो भाणियव्वो, आसवो किरियाए भवति, भणियं च–"जाव च णं एस जीवे सयासमियं एयति वेयति चलति ताव ण तस्स अंतकिरिया भवति, किरिया य जीवस्स अत्थंतरभूता ण भवति तेण भण्णति 'अकरिंसु' वऽहं करेमि वऽहं' अहवा णिच्चत्तअन्नत्तकत्तित्ते सिद्धे एतं सिद्धं भवति–'अकरेंसु वऽहं करिस्सामि वऽहं' अहवा तिकालकज्जववएसा आया अप्पवक्खो, तत्थ काइयं वाइयं माणसियं तिविहं करणं, एक्केक्कं कियं कारियं अणुमोदियमिति, तेण भणइ–'अकरिंसु वऽहं करेमि वऽहं करिस्सामि वऽहं' तत्थ करेसुं वऽहं-सयं कियं वा एवं कारावियं वा अणुमोदितं वा, एवं वट्टमाणेऽवि करेमि कारवेमि अणुमोयामि, अणागतेऽवि करिस्सामि कारविस्सामि अणुमन्निस्सामि, एएसिं पुण नवण्हं पदाणं दो आदिपदा गहिया अंतिमं च, अवसेसा पुण अणुत्तावि अत्थतो सूइज्जंति, एवं जोगत्तियकरणत्तिएणं णवओ भेदो जोए नायव्वो, अतीतग्रहणा अतीताणि चेव भवग्गह- ॥ १४ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥ १५ ॥

णाणि सूचिताणि, अणागतग्गहणा एस्साणि, 'एतावंति सव्वावंति' एत्तिओ बंधविसओ, अहवा उडुमहतितिरियं सव्वावंति, अहवा एतियं बंधं, एतंति तित्थगरवयणं, तंजहा अकरेंसु वऽहं करेमि वऽहं करिस्सामि वऽहं 'लोयंसि कम्मसमारंभा' पच्चक्खतरंमि लोए-जीवलोए दुविहाए परिण्णाए परिजाणियव्वा, अपरिणायकम्मस्स के दोसा ?, भण्णंति 'परिण्णायकम्मे खलु अयं पुरिसे' (८-२३) पुन्नो सुहदुक्खाणं पुरिसो पुरि सयणा वा पुरिसो, सव्वं सव्वण्णुस्स प्रत्यक्षमितिकाउं तेण भण्णति-अयं पुरिसो, अहवा जो विवक्षितो असंतपुरिसो तं पडुच्च भण्णति-अपरिण्णाय०, अयं पुरिसो दिसाओ भावदिसाओ य अट्ठारस, पण्णवगं पडुच्च छदिसाओ सेसा सव्वाओ अणुदिसाओ, पुणरुच्चारणं ण हि काति दिसा अणुदिसा वा विद्यते जत्थ सो णो संसरति, 'साहेति' सह कम्मणा, स किं तेणेव अपरिण्णायदोसेणं 'अणेगरूवाओ जोणीओ संभवंति' अणेगरूवा णाम चउरासीइजोणिप्पमुहसयसहस्सा, अहवा सुभासुभाओ अणेगरूवाओ, तत्थ सुभा देवगतिअसंखेज्जवासाउयमणुस्सराईसरमाईआओ गोत्तेवि जातीसंपण्णाति, सेसाओ अणिट्ठाओ, अहवा देवेसुवि अभियोगकिब्बिसियाति, असुभा तिरिएसुवि, गंधहत्थी अस्सरतणाणि सुभाओ, एगिंदिएसुऽवि जत्थ वण्णगंधफासा इट्ठा कंता, स सम्मं सुभासुभकम्मेहिं धावति संधावति, सव्वओ एगो वा धावति संधावति, संधेत्ति वा पडिज्जति, तत्थ संधणा दव्वे भावे य, दव्वे छिन्नसंधणा य अच्छिन्नसंधणा य, तत्थ छिन्नसंधणा दसियाहिं धागा धागेहिं वा रज्जू, अच्छिण्णा वल्लतो सुत्तं वट्टिज्जति, भावेवि दुविहा, छिण्णा जो उवसामगसेढीपडिवडंतो पुणरवि उदइयं भावं संधेति सा छिण्णसंधणा, अच्छिण्णा सो चेव उवरिं दंतादिविसुज्झमाणपरिमाणो अपुव्वाइं संजमट्ठाणाइं संधेति, एवं खइएवि, तस्स पुण पडिवातो णत्थि, अहवा संदधाति अहवा संधारयति, एता जोणी संधावंतस्स को दोसो ?, भण्णति- ॥ १५ ॥

योनिसंसारः

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

'अणेगरूवे फासे पडिवेदेति' अणेगाणि रूवाणि जेसिं ते अणेगरूवा, आदिरंतेण सहिता, एगग्गहेण गहणं, तेण गंधरसरूवसद्देऽवि विविधे वेदेति, पच्छाणुपुव्वी एसा, जेण फरिसवेदणा सव्वेसिं संसारीणं पज्जत्ताण अत्थि एगिंदिएसुवि अतो गहणं पज्जत्तोऽवि पढमं फरिसं वेदेति तेण तग्गहणं, किंनिमित्तं से संसारियं कम्मं वज्झति ?, भण्णइ–' तत्थ खलु भगवया जाव दुक्खपडिघातहेउं' (१०, ११–२५) तत्थेति तत्थ बंधपगते, खलु विसेसणे, किं विसेसयति ?, जाणणापरिण्णं विसेसयति, ता एएणं वज्झइ, किं निमित्तं सो तेसु कम्मासवेसु वट्टमाणो अणेगरूवाओ जोणीओ संसरति ?, भण्णइ,'इमस्स चेव जीवियस्स' इमस्स चेव माणुस्सगस्स, जीविज्जइ तेण णेहपाणवमणविरेयणअब्भंगणण्हाणसिरावेहादीणि करेइ, रसायणाणि य उवभुंजिज्जइ, परबलभयाओ बलं पोसेइ, तन्निमित्तं च दंडकुंडडेहिं जाणवतं पीडेति, परिवंदणं नाम छत्ती अविलिओ होहामि, वण्णो वा मे भविस्सइ, तेण णेहमाईणि करोति, मल्लजुद्धे वा संगामे वा संसारादि बलकरं भोत्तूणं णित्थरिस्सामि तेण सत्ते-हणति, इदाणिं माणणानिमित्त, जो णं अब्भुट्ठाणादी ण करोति तस्स वंधवहरोहसव्वस्सहरणादीणि करेति, तेण दिट्ठपरकम्मस्स अब्भुट्ठाणादीणि करेंति, अहवा धणं अज्जिणति बलसंग्रहं करेति विज्जं वा सिक्खइ वरं परो सम्माणेंतो वत्थादीहि, जो वा ण सम्माणेइ तस्स बंधणादीणि करेइ, वरं भयं विणीयं होइ। इयाणिं जाइनिमित्तं धिज्जातियाण जीवंतदाणगाइं देंति, जं वा सजातिउत्ति तन्निमित्त आरंभं करेइ, मरणेत्ति करदुयादीणि कारवेइ वा, जहा कत्तविरियावराहे, भोयणाएत्ति करिसणादिकम्मेहिं पवत्तमाणो तसथावरे विराहेंति, मंसनिमित्तं छगलसूगरतित्तिरादि, दुक्खपडिघायहेउत्ति आतंकाभिभूता रसगादिहेउं बगतित्तिरादीहि य एकुडियाउ पकरेंति निण्हवणादीणि, सहस्सपागओसहसंभारहेउं मूलकंदावि विराहेंति, जं वा दुक्खं जस्स जेण विणयइ जहा सीतवासपरित्ताणणिमित्तं ॥ १६ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१-१२]

दीप
अनुक्रम
[१-१२]

इट्ठापागादिएसु तसथावरेसु विराहित्ता गिहादीणि, परिस्संतो जाणं वा अभिलसइ, 'एतावंतो सव्वावंती' एतंनिमित्तं पंचिंदिया संता सत्तवहेसु पवत्तंते, तं जहा केवलनाणेण जाणित्ता एव इहमेगेसिं णो सण्णा भवतित्ति आदि जाव दुक्खपडिघातहेउं पवेदितं, जं वा संसरति जहा बज्झति जं च उवरिं भण्णिहिति तं च एतावंति सव्वावंतिगहणेणं दरसियं भवति, लोगस्स कम्मस्स परि०, असंजतलोगस्स लोयंमि वा कम्माइंति—कम्मंता तेसु मणोवाचकाइया कियकारितअणुमोदिता दुविहाए परिण्णाए परियाणिता भवंति जस्सेते जेसिं वा एते इयाणि दुविहाए परिण्णाए परिण्णाया 'से हु मुणी' मुणेइ जगं तिकालावत्थं तेण मुणी, परिण्णायकम्मो णाम जाणिऊण विरतो, इति परिसमत्तीए, बेमित्ति गोयमसामिप्रभृतीणं सिस्साणं, एयं पढमुद्देसं तत्थऽत्थत्तो अधित्ता भगवं आह—सयं जाणामि, णो परपच्चएण, अज्जसुहम्मो वा अज्जजंबुणामं भणति, सयं अहं एयस्स सुयस्स कत्ता अतो बेमि इति, सत्थपरिण्णाअज्झयणचुण्णीए प्रथमेऽध्याये प्रथम उद्देशः समाप्तः ॥

स एव वयणपगरणगताधिगारो अणुसज्जति, दीसो तं वा, सत्थपरिण्णत्ति अज्झयणंति, तत्थ पढमउद्देसो दंसणनाणाधिगारेणं गतो, लोगंसि कम्मा परिण्णाया भवंति, चरित्ताधिगारादि अत्थि, सेसेसु सो चेव नाणदंसणाधिगारो, अहवा स मुणी परिण्णायकंमित्ति अंतिमसुत्तं, तस्स पडिवक्खत्तओ अपरिण्णायकम्मा इमेसु जीवनिकाएसु उववज्जइ, तंजहा—पुढविकाइएसु आउकाइएसु तेउकाइएसु वाउकाइएसु वणस्सकाइएसु तसकाइएसु, तत्थ पढमं पुढविकाइयं भवति, आदिसुत्तेणाभिसंबंधो—सुयं मे आउसं ! तेण भगवया एवमक्खायं ?, इमंपि सुतं चेव-'अट्टे लोए परिज्जूणे', अहवा णो सण्णत्ति, सा कहं न भवति ?, आह—ण णाया भवंति, तंजहा—पुढवीए निक्खेवो परूवणा' गाहा (६८–२८) 'णामं ठवणादविए पुढवि' गाहा (६९–२८)

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम अध्ययने द्वितीय: उद्देशक: 'पृथ्विकाय' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥ १८ ॥

पृथ्वी
निक्षेपाद
२ उद्देशः

दव्वं सरीरभविओ गाहा (७०–२९) आगमओ नोआगमओ य, आगमओ जस्स णं पुढवि०, णोआगमओ तिविहा– जाणगसरीर० भवियसरीर० वइरित्ता, तत्थ वइरित्ता एगभविय बद्धाउया अभिमुहणामगोयाइं, भाव० पुढवीणामगोयाइं कम्माण वेदेमाणो जीवो भावपुढवी, गतो णामनिप्फण्णो निक्खेवो। परूवणा ‘दुविहा बायरपुढवि’ (७२–२८) गाहा॥ ‘पुढवी य सक्करा वालुगा य’ एवं चत्तारि गाहाओ (७३, ७४, ७५, ७६–२९) जाव जलकंतो सूरकंतो ‘वण्णरसगंधफासे’ गाहा (७७–२९) वण्णादेसेण गंध० रस० फासादेसेण सहस्सग्गसो संखेज्जाइं जोणीप०, तंजहा–किण्हो किण्हतरो किण्हतमो एवं एकेके वण्णगंधरसफासे संजोगनिप्फण्णेसु वण्णादिसु संखेज्जाइं जोणीप० ‘जे बादरे विधाणा पज्जत्ता’ गाहा (७९–२९) ‘रुक्खाणं’ गाहा (८०-३०) ‘ओसहीतण’ गाहा (८१-३०) ‘एकस्स’ गाहा (८२-३०) ‘एएहिं सरीरेहिं’ गाहा (८३-३०) इदाणिं लक्खण ‘उवजोगो’ गाहा (८४–३०) एयाण्ण उवजोगादीण सुत्तस्स मुच्छियस्स वा जहा अवत्ताणि ‘अट्ठिं जहा सरीरंमि अणुगतं’ गाहा (८५–२१) इदाणिं परिमाणं ‘जे बादरपज्जत्ता’ गाहा (८६–३१) ‘पत्थेण व कुलएण व’ गाहा (८७-३२) लोगागासपए गाहा (८८-३२) ‘निउणो य होइ’ गाहा (८९-३२) ‘अणुसमयं च’ गाहा (८९-३२) एगसमएण केवइया उववज्जंति?, असंखिज्जा लोगा, एवं उव्वट्टंतावि, सव्वो चेव काओ असंखिज्जा लोगा, संचिट्ठणावि असंखिज्जा लोगा। इदाणिं उवओगो–‘चंकमणा य’ गाहा ‘आलेवणा य’ गाहा ‘एएहिं’ गाहा (९२, ९३, ९४–३२) इयाणिं– ‘सत्थं हलकुलिय’ गाहा (९५–३३) ‘किंची सकायसत्थं’ गाहा (९६–३३) इयाणिं वेयणत्ति ‘पायच्छेयण’ गाहा (९७–३३) ‘णत्थि य सियंगभंगा’ गाहा (९८–३३) इदाणिं चवणत्ति, जत्थ ण लज्जमाणो तत्थ ‘पवदंति य अणगारा’ ॥ १८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ १९ ॥

पृथ्वी निक्षेपाद २ उद्देशः

गाहा (९९-३३) 'अणगारवाइणो' गाहा (१००-३३) 'कई सयं वधेइ' गाहा (१०१-३४) अण्णे य णेगरूवे पाणेत्ति 'जो पुढवि समारभते' गाहा (१०२-३४) 'पुढविं समारभंता' गाहा (१०३-३४) इदाणिं णियत्तित्ति-'एवं वियाणिऊणं' गाहा (१०४-३४) से हु मुणी परिण्णायकम्मेत्ति बेमित्ति 'गुत्ता गुत्तीहिं' गाहा (१०५-३४) 'अट्टे लोए परिज्जुण्णे' (१०६-३४ सूत्रं) पदच्छेदं कते वइरित्ते दव्वट्टो सगडादिचक्काणं एकतो दुहतो वा वरित्ताओ आचालिजंति सो दव्वट्टो भण्णति, कंबले वत्तावंधमादिसु वा सरहा (ण्हाइ), भावदोसट्टो तेहिं संपीडित जीवचक्कं संसारचक्के अणुपरीति, अहवा पंचहिं इंदियविसएहिं, अहवा कसायदहो, अहवा दंसणमोहं चरित्तमोहेण य, मिच्छत्तमोहो अभिग्गहियअणभिग्गहितेहिं, चरित्तमोहो कसायणोकसाएहिं, अहवा सव्वेण मोहणिज्जेण, अहवा अट्ठविहेण कम्मेण, लोगस्स अट्ठविहो णिक्खेवो, अप्पसत्थेण जीवोदयभावलोगेण अहिगारो, तत्थवि सन्नीपंचेंदियलोएणं, जो सम्मत्तं चरित्तं वा चरित्ताचरित्तं वा पडिवज्जेज्जा, अहवा सव्वेणं लोगेणं अहिगारो, जइओ अट्टो निच्छयं नियतं वा ऊणो परिज्जूणो, सव्वतो वा ऊणो, सो चउव्विहो दव्वपरिज्जूणो दरिद्दो, जो वाऽइदव्वं आभलसमाणोऽवि न लभइ, तिसिओ पाणियं बुभुक्खितो असणं आउरो भेसज्जं एवमादि, भावपरिज्जूणो नाणादीहिं जुण्णो परिजुण्णोत्ति वा वुच्चइ, जहा जिण्णं सरीरं थेरीहुओ रुक्खो, अचित्ते जुण्णो पडो जिण्णं गिहं सगडं वा एवमादि, भावजुण्णो उदइयभावउक्कडो य, सत्थनाणादिभावपरिहीणो अणंतगुणपरिहाणी, जहा व पुढविक्काइएसु अक्खरस्स अणंतभागो उग्घाडो, बोहणं बोही, दुक्खेण बुज्झइ दुक्खबोही, सो एवं अइज्झाणेण दुक्खबोधी य लोगो भवति, जह मेअज्जो, असंबोही वा जहा बंभदत्तो, को हेऊ ?, अयाणत्तं, जंति अण्णाणत्तणेण परिजुण्णो परिज्जुण्णत्तेण मंदविन्नाणो मंदविण्णाणत्तणेण दुस्संबोही, एवं परोप्पकारणं परेसिं

॥ १९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ २० ॥

पृथ्वीकायः
२ उद्देशः

पदाणं, एवं अट्टातिदोसजुत्तस्स किं भवति ?, भण्णति—'अस्सिं लोगे पव्वहिते' अस्सिं जीवलोए वा सयमेव हि संबंधिते पव्वहिते सकम्मेहिं अत्ताबि णं बंधेति, अहवा अट्टो परिजुण्णो अयाणतो अस्सिंल्लोए पव्वहिते 'तत्थ तत्थे'ति तेसु तेसु कारणेसु पुढविसमारंभेणं विणा ण सिज्झंति, ताणि समारभति, अहवा पत्तेयं पत्तेयं तेहिं तेहिं करणेहिं हलकुलियकुद्दालमादिएहिं देवउलसभाधरतलागसेतुअगडधातुणिमित्तादी पिधप्पिहं, 'पस्से'ति सीसामंतणं 'आतुरा परितावेंति'त्ति अट्टत्तणेण आतुरा, जह वा एगस्स रण्णो किंचि सचित्तं वा अचित्तं वा महरिहं द्रव्यं अवधितं, तेण णगरगुत्तिया भणिता—जइ एवतिएण कालेणं ण उवट्ठावेह चोरं तो भे सीसं छिंदामि, तेहिं मच्चुभयातुरेहिं कहंचि गवेसंतेहिं चोरा उवलद्धा, गहिया य, ते ण पडिवज्जंति, ततो ते मरणभयाउरा णाणाविहाहिं जायणाहिं परितावेंति, एस दिट्ठंतो, एवं अट्टकम्माउरा मणुस्साबि जीविगा मरणभया विसयाभिलासिणो य पुढविकाए णिग्घिणा णिरणुकंपा य परितावेन्ति हलकुलियकोद्दालादीहिं, 'संती'ति विज्जंति पाणा—आउपाणाति जं भणितं, ण जीवा अजीवा, आजीविगपडिसेहत्थं वकारगहणं, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखिज्जा, 'पुढोसिति'त्ति पुढविसिता, अहवा पिधप्पिहं अस्सिता, जं भणितं—पत्तेयसरीरा, एवं सव्वपत्थिवचेतण्णे अमोक्खो ?, भण्णति पुणो—'पुढो सिय'त्ति असत्थपरिणते दोसे, सत्थपरिणते अचित्ता भवंति, सत्थपरूवणा जहा पिंडनिज्जुत्तीए, सचित्ता य अन्नपरूवणा जहा पण्णवणाए, लक्खणं तु अट्ठि जं वा सरीरे अचिरोववण्णगम्भो वा, कुतित्थिगाणवि आगमसिद्धाणि जहा आरोग्यादि, किमंग पुण सव्वण्णू णं ?, भणियं च—"जिनेन्द्रवचनं सूक्ष्महेतुभिर्यदि गृह्यते। आज्ञया तद्ग्रहीतव्यं, नान्यथावादिनो जिनाः ॥ १ ॥ जे पुण पच्चक्खेण वा णाणेणं पुढविक्काइए जीवे ण उ सद्दहइ 'लज्जमाणा पुढो पास' लज्जा दुविहा-लोगिगी य लोउत्तरा य, लोइया ॥ २० ॥

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥ २१ ॥

ससुरादीणं ण्हुसा लज्जमाणी ण हसति ण वा भुंजति एवमादीहिं, वाणियओ वा अलद्धलाभओ घरं पविसंतो लज्जति, लोउत्तरं संजम एव लज्जा, भणियं च -“लज्जा दया संजमो बंभचेरं” असंजमं काउं लज्जति, पुढो णाम पत्तेयं २, पास पच्चक्खाणा वा पुढविं समारभंता लज्जति. अहवा ते लज्जमाणे पासाहि, कुतित्थिए पुण लज्जणिज्जेवि विणिहयासा अहिए परिजुण्णो दुस्संबोधे अवियाणए पत्तेयं २ कसिमणाहारादीकारणेहिं कुलियकोहालादीहिं सत्थेहिं समारभंति, ‘अणगारे’त्ति अगा-रुक्खा तेहिं कयं अगारं, अगारं से णत्थि तेण अणगारा, दव्वे चरगादि, भावे अणगारा साहू, ते सीलंगसहस्सरक्खणट्ठा पुढविं ण समारभंति, इतरे पुण तिण्णि लिंगट्ठा पावाइयमया ‘पवदंति य अणगारा’ गाहा (९९-३३) लोएण अणगारा भण्णमाणा, भण्णंती-पूया-सक्कारहेउं पुण पवयंति ‘अणगारवादिणो पुढविहिं’ गाहा (१००-३३) मलिणतरं अप्पाणं करेंति, पुढविसमारंभविरए दुगुंछमाणा, जहा मलिणं वत्थं कद्दमोदएण धुव्वमाणं, एवं ते जं चेव दूसेंति तं चेव करेंति सुइवोही वा, जहा एक्कंमि गामे सुइ-वोदी, तस्स गामस्स एगस्स गिहे कणतो छिप्पति तो वउसट्ठीए मट्टियाहि स ण्हाति, अण्णदा यस्स गिहे बलद्दो मतो, कम्मा-रएहिं णिवेदयं, तेण भणियं-संधि (मज्जे)नीणेध, तं च ठाणं पाणिएणं धावह, निप्फेडिए चंडाला उवट्ठिता विगिंचियं कुज्ज, तेहिं कम्मयरेहिं सुइवोही पुच्छिओ, चंडालाण दिज्जउ ?, तेण वुत्तं-मा, किंतु किंखु किंखु किंखुत्ति भणति, विकिंचतु सयं, एवमेव मंसं दामयगाणं देह, चम्मेण वइयाउ वलेह, सिंगाणि उच्छुवाडमज्झे कीरहित्ति इज्झंपि सुत्तं भविस्सइ, अट्ठिहिवि धूमो कज्जि-हिति तउसीण, ण्हारूणा मत्थकंडाणं भविस्सइ, एवं तेणावि जहा परिच्चत्तं, एवं अण्णतित्थियावि तं चेव दूसेंति तं चेव करेंति, हिंसाभीता पव्वइया तं चेव करेंति हिंसं, दगसोयरिया चउसट्ठिए मट्टियाहिं सोयं करेंति, तव्वण्णियावि गामादिपरिग्गहो, हलकु-

लज्जा शुद्धिबोधः २ उद्देशः

॥ २१ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ २२ ॥

पृथ्वीअध्य० २ उद्देशः

लिएहि हिंसंति, कहं अणगारा ण भवंति ?, भण्णति–'जमिणं विरूवरूवेहिं' जमिति अणुदिट्ठं इदमिति पच्चक्खवयणं, अविकितो पुढविकाओ, स एव चुतो भवति विण्णाणाभावे, स हिंसिज्जति जेणं तं सत्थं, विविधाणि रूवाणि जेसिं तेसिं उवभोगेहिं हेउहिं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वहेहिंति हलकुलियादीहिं, किंचि सकायसत्थं पुढविकम्मं समारभंति, जं करेइ तं कम्मं, पुढवीए कम्मं २, तं तु खणणं विलेहणं वा, पुढविसत्थंति पुढविमेव सत्थं० अप्पणो परेसिं च, हलादीणि वा पुढविसत्थाणि ताणि समारभति, अणेगरूवे ण एगरूवे सण्हबादरपुढविभेदो, सुहुमाणं बादरं सत्थं ण होति, सुहुमाणं परोप्परतो होइ, किमत्थं पुढवी विभज्जति ?, भण्णति–'तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया इमस्स चेव जीवितस्स' 'तत्थे'ति तहिं पुढविकायीए खलु विसेसणे जाणणापरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए, अहवा पच्चक्खाणेवि एवमादि उवभोगं न कुज्जा, इमस्स चेव जीवियस्स–जीवियकारणा धातुं धमंति करिसणाणि य पगारादीए य, एवं अन्नाणवि जावि दुक्खपरिघायहेउंति, सप्पो खद्धो कद्दमं खायइ, पिसायस्स कूवं खणंति, सयमेव पुढविसत्थं करिसगादि अण्णेहिं विहिज्ज कारवेहिंति अणुमोयंति उवजीवंति पसंसंति य, एत्थ जोगत्तियकरणत्तिएण य तं पुण अट्ठाए वा तं सहिताएत्ति, अहियाए संसारे भवति, चिरेणावि बोहिं ण लभइ, लद्धाएवि ण करेति, अपायोद्धेजणो पालइति, अहवाऽवायो दंसितो 'से तं संबुज्झमाणे' स इति णिद्देसे, तंति जो भणितो तदारंभो तं संबुज्झमाणो, सिक्खागो वा भण्णति–से तं संबुज्झमाणो आदाणिओ–संजमो तं सम्मं उट्ठाए समुट्ठाए, अहवा आदाणिओ–विणओ तं सम्मं उट्ठाए, ण मिच्छाविणएणं उदायिमारगो व, पुव्वं समुट्ठाए जहा भट्टारगं गोयमो, सोच्चा भगवतो सगासे, अणगारेणं वा तप्पुरिसो अणगाराणं चरगादीणं पत्तेयबुद्धाणं वा, एवं एगेसिं रागदोसरहियाणं कयसामाइयाणं सिस्साणं गणहरेहिं पवेइयं जहा पुढवि जीवे, तदारंभो य अहितो,

॥ २२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ २३ ॥

प्रथमाध्ययने २ उद्देशः

तं समारभमाणस्स एस खलु गंथे एवं (स) मोहे एस खलु मारे' एस अवधारणे खलु विसेसणे गंथो पुढविकाइयवहेणं अट्ठविहो कम्मगंथो भवति, कारणे कज्जस्स उवयारा भण्णति एस खलु गंथे, 'मोहि'त्ति अप्पाणं अवसो मोहणिज्जं, 'मारि'त्ति आयुगं सूयितं, दुक्खगहणेण वेदणिज्जं, एवं सेसियाओवि पगडीओ एकाओ पुढविवधातो बज्झंति, एवं मोहेणवि के०, अहवा एसो पुढविवधो गंथे मोहो संतो विग्घो मोक्खस्स मोक्खमग्गस्स वा, 'इच्चत्थं गढिए लोए'त्ति इति एत्थं पुढविकाए आहारोवगरणविभूसणहेऊ मुच्छिओ गढिओ गिद्धोत्ति वा एगट्ठं, एत्थ गढिओ किं करेति ? 'जमिदं विरूवरूवेहि सत्थेहिं' पुव्वं भणितानि, जं करेति तं कम्मं, सत्थंपि सकायसत्थं परकायसत्थं च कुद्दालालित्तादीहि अण्णे व णाणारूवेहि पुढविघायं छकाया, भणियं च–'पुढविजीवे विहिंसंतो हिंसति तु तदस्सिते', जे ण पस्संति ण सुणंति तेसिं कहं वेदणा उप्पज्जइ ?, 'से बेमि' सोऽहं ब्रवीमि, अप्पेगे अन्धमब्भे अप्पेगेऽधमच्छे ण गच्छंतीति अगा अंधो अपि एगे अपि अंधे अभेदिति भिंदे अच्छेदिति छिंदे, तत्थ थावरसंधे अगा अंधो य जहा पुरिसो कोइ अंधोवि पंगुलोवि केवलं रुंडमेव जातो मितापुत्तो जहा जाव ते उववातो बेइंदिय तेइंदिय अपंगुत्तेवि य च समासेणं भयणा, तत्थ दव्वंधे अंधलओ, भावांधो मिच्छादिट्ठी, जहा तं अगं अंधं वा सिरकवाले अन्नत्थ वा खरपदेसे कोइ भिंदति छिंदइ वा किं तस्स अपस्सतोवि वितणा ण भवति ?, एवं पुढविकाइयाणवि अगच्छंताणं सुहुमयाए अप्पसंघयणाणं फरिसमित्तेणवि मारणे अतुला वेदणा भवति, जहा पंचिंदियाणं पदे सूयीइ कंटएण वा विज्झमाणाणं अणुत्तरेण सत्थेण भिज्जमाणाणं वेदणा भवति तहा पुढविक्काइयाणवि अत्थि ते पदेसा तित्थगरदिट्ठा आणागिज्झा पादत्थाणीया, एवं खलुअग जाव सीस, अप्पेगे संपमारए अप्पेगे उद्दवए संपमारणा मुच्छा मुमुच्छा वेति, 'णत्थि य से अंगमंगा'गाहा(९८-३३) पाणाणं ॥ २३ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१३-१७]

दीप
अनुक्रम
[१३-१८]

श्री आचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ २४ ॥

थामण उद्दवणं, जहा वा मुच्छितो पुरिसो छिज्जंतो भिज्जंतो वा खारेण वा खाए छिप्पंतो वेदेति एवं थीणगिद्धिकम्मुदएणं णिसट्ठं मुच्छिता इव वेदणं वेदेंति, 'एत्थं' पुढविक्काए सत्थंति किंची सकायसत्थं, सव्वेविति आरंभा, जे ते हलकुलियादि, अहवा पादभेदादि एतेण अवक्खिज्जा, जे अन्ने तदस्सिता तमादि, जहा दवग्गिदायगो तणस्स, तेण अहिक्खइ, कुड्डं वा पाडेंतो चित्तकम्मं, जो वा गब्भिणिं मारेति सो तं गब्भं न अविक्खइ, एस दिट्ठंतो, एवं पुढवि हलादीहि समारभमाणो तदस्सितजीवे ण अविक्खति, दुविहाए परिण्णाए 'एत्थं सत्थं असमारभमाणस्स' कंठं, ते परिण्णाया मेहावी, तमिति तं जहा उद्दिट्ठं पुढविकायसमारंभं परिण्णाय दुविहाए मेराघाहिणि अहिभागो, गहणधारणसंजुतोत्ति इच्छिज्जइ, णेव सयं पुढविसत्थं सत्थहलादीहिं जोगतियकरणतियएण, जस्स ते जहुद्दिट्ठा पुढविकम्मसमारंभा खवणविलेहणा जंनिमित्तं च पुढवीं समारंभंति तंनिमित्तो य कम्मबंधो, अट्ठविहो अट्ठ परिजुण्णाति य, सव्वं एत्थ जहुद्दिट्ठं दुविहाए परिण्णाए परिण्णातं भवतीति, स मुणी परिण्णायकम्मा भवतीति, बेमिति तहेव, एवं सत्थपरिण्णाअज्झयणचुण्णीए बितिओ उद्देसो समत्तः ॥

णिज्जुत्तिगाहाओ पढितसिद्धाओ (१०६, ११५-३९) उद्देसाभिसंबंधो–मुणी परिण्णायकम्मेति, इहवि सो चेव मुणी से बेमि, उज्जुगि वा कणगारं अणगारोति वा मुणित्ति वा एगट्ठा, ण य तंमतपरिहारेण सम्मत्तं मुणीलक्खणं भवति, अन्नेहिंवि काएहिं परिण्णाय कम्मुणा भवितव्वं, तत्थ आउकायमधिकिच्च भण्णति–'से बेमि से' से इति णिद्देसो, जेण प्रकारेण जहा, अणगारो भणितो, जहा पुढविं परिहरंतो अणगारो भवति एवं उदकंपि, अवि संभावणे, अवि भवति अवि ण भवति, सो जहा भवति जहा य ण भवति तहा इहेवि बेमि–'उज्जुकडे'त्ति रिजु–संजमो रिजुं करोतीति उज्जुकडे, अहवा पगतीए अज्जवे–अवंकसहावो जं ॥ २४ ॥

पृथ्वीवेदना अप्कायः २ उद्देशः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रथम अध्ययने तृतीयः उद्देशकः ‘अप्काय’ आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[१८-३०]

दीप
अनुक्रम
[१९-३१]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ २५ ॥

अप्कायः

भणितं होति, अवामसीलो, णिकाओ णाम देसप्पदेसबहुत्तं णिकायं पडिवज्जति, जहा आऊ जीवा, अहवा णिकायं-णिव्वं मोक्खं मग्गं पडिवण्णो अमायं कुव्वमाणो णे पडिच्छिण्णिस्सित्ति वंकादीणि अमायमेव सेवति, एवं अलोभमवि, वियाहिनो अक्खाए, पच्छतो गरूयं सामन्नंतिकाउं मा तण्हाइओ उदगं पिबिहिति वा, ण्हाहिति वा, तेण भण्णति—'जाए सद्धाए णिक्खंतो' (२०-४३) पायं पव्वयंतो वड्ढमाणपरिणामो भवति, तमेव वड्ढमाणपरिणामं फासए, जं भणितं आसेवए, संजमसेढीपडिवण्णो वड्ढमाणपरिणामो वा हीयमाण० अवट्ठितबुड्ढी वा, हाणी वा जहण्णेण समओ उक्कोसेणं अंतमुहुत्तं, अवट्ठितकालो दोसु जहण्णमज्झासु अट्ठसमया, सेसेसु णत्थि, तं छउमत्थो णिच्छएण ण याणति-किं मम परिहीणं परिवड्ढति वा ?, केसु वा वट्टामि ?, अहवा कोइ एक्कगाहाए 'जह सउणगणा बहवे समागया एगपादवे रत्तिं। वसिऊण जंति विविहा दिसा तहा सव्वणाइजणो ॥ १ ॥ गाहा, एगवागरणेण वा जहा अहिंसालक्खणो धम्मो, सद्धासंवेगजुत्तो रज्जादिविभवं छड्डित्ता पव्वइओ, ण याबलियाए सद्धाए रज्जादीणि छड्डिज्जंति, चिरपव्वइयस्स सुयाभिगमेणं सव्वा बुड्ढी भवति, भणियं च—"जह जह सुतमोगाहति अइसयरसपसरसंजुयमपुव्वं। तह तह पल्हाइ मुणी नवनवसंवेगसद्धाए ॥ १ ॥ तेण जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया, अहवा जइ ण सक्केइ तच्चसद्धापरिणामो होउं तहावि जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया, जति लाभओ णत्थि मूलंपि ता होउ, मा सव्वं णस्सतु, एवं जाए सद्धाए णिक्खंतो तंपि ताव अणुपालेहि जावज्जीवाएत्ति, सेहस्स तिण्हाभिभूयस्स अनुसासणं 'तिण्णो हुऽसि विसोत्तियं' तरतीति तिण्णो, सवतीति सोत्तिया, विसोत्तिया दव्वे णदी निकादिसु वा अणुलोमवाहिणी सोत्तिया, इतरी विसोत्तिया, भावतो अणुसोत्तं, नाणदंसणचरित्ततवविणयसमाहाणं अणुसोत्तं, तव्विवरीयं कोहादि, अट्टरोद्दज्झाणिया भावविसोत्तिया, ॥ २५ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१८-३०]

दीप
अनुक्रम
[१९-३१]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥ २६ ॥

अप्कायः

अहवा संका विसोत्तिया, किं आउकाओ जीवो ण जीवोत्ति ?, एवं तिण्णो कहं वद्धमाणपरिणामो ण भणियव्वो ?, भण्णइ– ‘पणता वीरा महाविहिं’ (२१–४३) मिसं णता पणता अभिमुहीहुया मोक्खस्स वीथी-रत्था वा मग्गो वा एगट्ठा, दव्वे अंतरावणविही गोविही सुंकविही, भावविही महती पवणा वा वीथी महावीथी, मोक्खमग्गस्स, जतिवि कहंचि पमायखलितेण ण वड्ढमाणपरिणामो भवति तहावि लहु पडिबुज्झित्ता पुणरवि तिव्वतरपरिणामो भवति, किंच ‘लोयं वा आणाए अ-भिसमिचा’ (२२–४४) लोयंति जीवलोयं आउलोयं वा, आणाए भगवतो उवदेसो, जेऽवि पच्चक्खनाणिणो तेहिंवि पुव्वं आणाए अधिगता, अभिमुहं पच्छा अभिसमेज्जा, अहवा दिट्ठंतेहिं कहिज्जमाणमवि आउक्कायलोगं एगिंदियलोगं वा कोइ मंदबुद्धी ण सद्दहति तं पडुच्च इमं भण्णइ–‘लोयं वा आणाए अभिसमेचा अकुतोभयं’ ति ण कुतोऽवि जस्स भयं तं अकुओभयं, अहवा ण कयाइवि भयं करेइ आउकायस्स, तस्स भयं दुक्खं असातं मरणं असंति अणत्थाणमिति एगट्ठा, जओ एवं तेण भण्णइ ‘से बेमि णेव सयं लोयं’ अब्भाइक्खिज्ज, ण इति प्रतिषेधे सयं अब्भाइक्खइ जहा एगिंदिया अजीवा, अत्ताणं जो अन्नं वा संतं अन्नहा भणति जहा साहुं असाहुंति एवमादि, एवं जो एगिंदिए जीवे उवगरणदु(पड्डु)प्पायं भणति तेण अब्भक्खातं भवति, अहवाऽऽउ-लोगो अविकितो ‘तं’ति विजहाए ण अब्भाइक्खति, नेव सयं अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा, अलातचक्कदिट्ठंतादीहिं अप्पाणं अब्भा-इक्खइ जहा अहमवि नत्थि तेण छज्जीवकायलोगो अप्पा य ण अत्थीति वत्तव्वं, इमं अन्नं गइरागइलक्खणं ‘जो एगिंदियकाय-लोयं अब्भक्खाइ सो अप्पाणं अब्भाइक्खइ, जस्स एगेंदियलोगो णत्थि तस्स अप्पावि णत्थि, जो वा अधिकियं आउलोगं अब्भाइक्खइ सो अप्पाणं अब्भक्खाइ, कहं ?, तस्स अप्पा अणंतसो तत्थ उववन्नपुव्वो, यदि सो णत्थि अप्पावि णत्थि, के पुण

॥ २६ ॥

प्रत
वृत्यंक
[१८-३०]

दीप
अनुक्रम
[१९-३१]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ २७ ॥

अप्कायः

लोगं अब्भाइक्खंति ?, जे अट्टपरिजुण्णो दुस्संधो वा आउरा परिताविता, सीसो भणइ–भगवं ! आउक्काओ अचत्थं दुग्गेज्झो ण सुणेति ण पासति णग्घाति ण रसं वेदेति ण सुहदुक्खं दीसंति वेदेंता ण चलणं ण फंदणं णात्रि उस्सासो णिस्सासो वा दिस्सइ, स कहं जीवो ?, एत्थ दिट्ठंतो 'जह हत्थिस्स सरीरं' गाहा (११०–४०) जं च णिज्जुत्तीए आउक्कायजीवलक्खणं जं च अज्जगोविंदेहिं भणियं गाहा, आयरिएहिं सीसो परियच्छावेयव्वो, आणाए य सद्दहणा, आउक्काइए जीवे जो ण सद्दहइ सो मिच्छादिट्ठी अणगारत्तणं तस्स कतो ?,'लज्जमाणा पुढो पास' एस आढत्तं पुढविक्काइयउद्देसयगमेणं धुवगंडिया सुत्तत्थतो भाणियव्वा, अप्पेगे अंधमज्झे जाव संपमारे य पच्छा 'से बेमि संति पाणा उदगणिस्सिता'(२४–४५) से इति णिद्देसे सोऽहं बेमि 'संति' विज्जंति पायसो उदए सव्वलोए पतीता पूतरगादि तसा विज्जंति तदस्सिता, ण उदगं जीवा जहा सक्काणं, अण्णेसिं णवि उदगं जीवा णवि अस्सिता जीवा जे पूतरगादि, ते खित्तसंभवा ण आउक्कायसंभवा, 'इह च खलु भो ! अणगाराणं' 'इहे'ति इमंमि पवयणे च समुच्चये, खलु विसेसणे, किं विसेसयति ?–णायपुत्तसिस्साणं अणगाराणं, ण अण्णेसिं, उदयजीवे वियाहिते, चसद्दो उदगणिस्सिता य पूतरगादि, ते ण खेत्तसंभवा, एत्थ भंगा–कत्थइ उदगं तसावि, कत्थइ उदगं नो तसा, कत्थइ उदगं निज्जीवं तसा, कत्थइ उदगंपि निज्जीवं तसावि णत्थि, सो पुण आउक्काओ तिविहो, तंजहा–सचित्तो अचित्तो मीसओ, कहं अचित्तो भवति ?–'सत्थं चेत्थ अणुवीइ पास' तंजहा 'उस्सिंचणा य पाणे'गाहा (११३–४१)'किंची सकायसत्थं' (११४–४२) अहवा वण्णरसगंधफासा सत्थं, वण्णओ उण्होदगं अग्गिपुग्गलाणुगतं इसिंचि कविलं भवति गंधतो धूमगंधि य, जत्थ गंधो तत्थ रसोवि विरसं वा रसएणं, फरिसओ उण्हं, किंचि उण्हभूयंपि न अचेयणं जहा अणुव्वत्तो दंडो, सभावेण ॥ २७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१८-३०]

दीप
अनुक्रम
[१९-३१]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ २८ ॥

अप्कायः

महानवोतीरोदगं सचेयणं, जया सीतलीभूतं तदा समावपरिणाएण अचेयणं, लवणमहुरअंबउदगाणं अण्णोण्णं सत्थं, दुब्भिगंधं च पाएणं अचित्तं भवति, सकायसत्थे परकायसत्थे भंगा चत्तारि, तंजहा–थोवं अथोवेणं०, एतं सत्थं 'अणुवीय पास'ति सयमतीए चिंतेत्ता परतो वा सोतव्वं, न सहसा फासुयंतिकाउं घेत्तव्वं, 'पुढो सत्थं पवेदितं'ति बहूणि आउक्कायसत्थाणि भगवता पवेदिताणि उस्सिंचणे य पाणे, जे कुतित्थिया उदगं पिबंति ते णियमा हिंसगा उदगस्स तदस्सिताणं च, अहिंसं घोसित्ता तक्कारी तद्दोसी पमिलंगमउणी वा, 'अदुवा अदिण्णादाणं' ते लोगअगडादिएसु जइवि पुव्वाणुण्णायत्तणेणं ण अदत्तं तहावि णदीए वा वासोदकं वा उवजीवंताणं अदत्तं भवति, जेसिं वा ते सरीरा तेहिं अणणुण्णायं, अह सामिअणुण्णातं णिद्दोसं तो सामिअणुण्णायं महिसं छगलं वा घातेंतो णिद्दोसो भविज्जा, ण य सो णिद्दोसो, कुतित्थिया तेहिं तेहिं कारणेहिं उदगसमारंभं करेंति तेवि अविरता, तंजहा–'कप्पइ णे २' द्विरभिहिता वीप्सा केसिंचि पातुं कप्पति, ण ण्हातुं, आजीविगसरक्खाणं च, तच्चण्णियाण ण्हातुं पातुं च, केसिंचि ण्हाणपियणहेतुं भंडोवगरणचरुवसमादीणं पक्खालणहेउ, केसिंचि परिपूतं, केसिंचि अपरिपूतं, केसिंचि परिमियं, केसिंचि अपरिमियमिति, 'अदुवा विभूसाए'त्ति विभूसा नाम ण्हाणहत्थपादमुहवत्थादिधोवणं च 'पुढो'त्ति पत्तेयं ण्हाणादिसु बहुसु कारणेसु, अथवा 'पुढो सत्थेहिं'त्ति पिधप्पिहेहिं सत्थेहिं उस्सिंचणा य पाणे गाहा, 'विउट्टंति'त्ति जीविया ववरोवेंति, अहवा ण्हाणादिसु विउव्वट्टंति, 'एत्थवि तेसिं णो णिकरणा' जइवि ण्हाणपियणधोवणादिसु परिमियारंभं करेंति तहावि ते अविरया, साहूणं उदगारंभविरयाणं जहाऽकरणं भवति सव्वप्रकारेण विरता भवंति। 'एत्थ सत्थं समारभमाणस्स जाव परिसमत्तं''ति ॥ इति सत्थपरिण्णा अज्झयणचुण्णीए तइओ उद्देसो परिसमत्तो ॥ ॥ २८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[३१-३८]

दीप
अनुक्रम
[३२-३९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ २९ ॥

तेजस्कायः ४ उद्देश

तेउकायस्सवि पत्र पदाइं वन्नेऊणं स एव जीवणिकायाहिगारो नदीसोतव्व अणुवत्तते जहा पत्थिवाणं पवाललवणंकुर-
फालियपहाणगज्जितगसद्दभूमिफोडगादि तप्पसिद्धीए हेतू भणिता जहा वा कणुया णिच्चेट्ठावि जीवा तहा पत्थिवावि जीवा, आउ-
काएवि जलं(कलल)दगदिट्ठंतो वुत्तो, इह तु जीवलक्खणत्तिदारे वण्णिज्जंते जरितस्य सरीरं उसिणं जह वा खज्जोतओ रत्तिं दिप्पति
देवसरीरं व सदा दीप्यमाणं ण अजीवो भवति तहा तेउकाइया दिप्पमाणा जीवा भवंति, इंधनसंजोगेण विद्धिविगारोवलंभाओ
य जीवा तेउक्काइया, सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं, दुस्सद्धेयं तेउकायस्स जीवत्तं अतो आदिसुत्तं भण्णइ–'से बेमि'ण पडिसेहे
लोगो–अग्गिलोगो जहा आउक्काइउद्देसए किंच–'जो दीहलोए सत्थस्स खेत्तण्णो' जे इति अणुद्दिट्ठस्स दीहलोगो वण्हिइ
लोगो, संचिट्ठणाए वणस्सइकालो दव्वपरिमाणेण व वणस्सइकाइया अणंता, अहवा दिग्घसरीरत्ता दिग्घलोगो, जोयणसहस्सं
साइरेगं, अहवा सव्वत्थोवा बादरा तेउक्काइया पज्जत्तया, ततो अण्णे जीवनिकाया अणंतगुणा, ठितीवि अड्ढाइज्जा राइंदिया,
इतरेसिं दिग्घतरिया, तेण दीहलोगो, तस्स दीहलोगस्स किं?; सत्थं अग्गी, जो एयं जाणाति, एसो आयावगनामस्स उज्जो-
वगनामस्स य उदएणं सेसकाएहिंतो विसिस्सति, 'असत्थस्स'त्ति ण सत्थं असत्थं सो संजमो न तं कस्सइ य सत्थं भवति,
अगणिकायसंजमो वा, जे असत्थस्स० से दीहलोगसत्थस्स०,गतिपच्चागतिलक्खणं एयं, केण भणितं एतं?, भण्णति–'वीरेहिं एतं
अभिभूत दिट्ठं' णिच्चं आत्मनि गुरुषु च बहुवचनं, तेण वीरेहिं एतं अभिभूत, सव्वतित्थगरग्रहणं वा बहुवयणेनं, अहवा केव-
लिग्रहणं गणहरग्रहणं च, 'एतं'ति छज्जीवनिकायचक्कं अगणिजीवत्तं वा,'अभिभूय'त्ति तत्थ दव्वे जहा साहस्समल्लेण सत्तुसेणा
सरवड्डत्तेण अभिभूता, जहा वा आदिच्चेण तमो, भावाभिभवे तु चत्तारि घाइकम्माणि अभिभूत परीसहा उवसग्गे य अभिभूय, अहवा ॥ २९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रथम अध्ययने चतुर्थः उद्देशकः 'अग्निकायः' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[३१-
३८]

दीप
अनुक्रम
[३२-
३९]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णि:
॥ ३० ॥

तेजस्कायः

जहा आइच्चो गहणक्खत्ततारागं प्रभं अभिभूय भाति तहा छउमत्थियनाणाणं अभिभूय सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झयारे परितित्थिए अभिभूय 'दिट्ठं' दट्ठुं अक्खातं, संजयत्ति पावउवरतेहिं, 'जतेहि'त्ति जयणा दुविहा-पमत्तजयणा य अप्पमत्त-जयणा य, पमत्तस्स का जयणा ?, भण्णइ-पमत्तस्सवि कसायादिनिग्गहपरस्स इरियादिउवओगो पमत्तजयणा, अपमत्तजयणा तु अक-सायचयणसज्झत्ति, तत्थ जयणग्गहणा दिग्घकालिया जयणा घेप्पति, अप्पमत्तग्गहणा इंदियादिपमादे वज्जेइ, तप्पडिपक्खभूतो पमत्तो तं पडुच्च भण्णति-'जे पमत्ते गुणट्ठिए' जे इति अणुद्दिट्ठस्स पमत्तो इंदियादिणा असंजतो पमत्तसंजतो वा 'गुणट्ठिए'त्ति तंजहा-रंधणपयणपगासणादि जस्स तेहिं अट्ठो सो गुणट्ठिओ, अहवा नाणादितो जे णवि आतावणादीणि करेति, एवं सेसेवि काए आर-मति 'से सडंडे पवुच्चती'तं कायं दंडओ अप्पाणं दंडेइ संसारे, अभिवुच्चति पव्वुच्चइ, जतो एवं तेण 'तं परिण्णाय मेहावी' 'तं' ति छज्जीवनिकाया अग्गिं वा अभिनवपव्वइओ पव्वइउकामो वा अप्पाणं अणुमासेइ, गुरुमादी वा अणुसासंति-जो काए हणइ सो तेसिं दंडो भवति, तस्स घायस्स पच्छा दंडो भविस्सइ, अतो तं जाणणापरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए य मेहावी भणितो। इदाणि तिसंजतो जातो 'णो' इति न कुज्जा यं समारंभं जं अहं पुव्वं असंजतो, किं ?, तहा पमाएणं अट्ट परि-जुण्णा दुसंबोध अयाणगा आतुरपरितावित्ता जाव आतुरा परितावंति संति पाणा तेउकाइए 'लज्जमाणा पुढो०' धुवगंडियं भणिऊणं जाव से बेमि, 'संति' विज्जंति, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अण्णे वऽणेगरूवा अगणिसत्थेण वहंति तं इमेण सुत्तेण विभावितं वित्थरितं च भवति, तंजहा-पुढविनिस्सिता तसथावरा य कुंथुपिपीलिया अहिमंडुकादि तसा रुक्खगुम्मलतातणानि थावरा, तणपत्तेहिं कुंथुमादि कट्ठे घुणादि गोमये कुंथुपणगादि कयवरेवि कुंथुमादि 'संति संपातिमा' संति-विज्जंति संपातिमा

॥ ३० ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [३१-३८]

दीप अनुक्रम [३२-३९]

भमरकीडपतंगादि ‘आहच्च’ णाम कयाइ पतंति, तंजहा–णिसिं सलभाण दिवसतो सुहुमेहिं लोगो कुलवो उवमितो, णिचं वाती वातो सवेसु लोगागास जाव णिक्खुडेसु अहवा आहच्च आगत्य सवतो पतंति संपतंति, चसद्देण वाउजीवा तप्पेरिता वा मसगादि ‘अगणिं च खलु पुट्ठ’त्ति अग्गिणा पुट्ठो अग्गिं वा फुसित्ता चसद्दा जालं फुसित्तावि खलु पूरणे सव्वतो अण्णोण्णगातसमागमतो संकुचंति तप्पमाणा, जहा मज्जारभएण मूसओ, तत्थ परियावज्जंतित्ति सव्वओ आवज्जंति, धूमेण जालाहि वा पतावेण वा मुच्छिता णिसण्णीभूया अग्गिं परियावज्जंति, जं भणितं अग्गीभवंति, जे परियावज्जंति ते उद्दायंति, जतो एवं तेण ण एकं अग्गी चेव आरभंति, तदारंभे अण्णेवि सत्ता विणस्संति, भणियं च–“दो भंते ! पुरिसा अण्णमण्णेण सद्धिं अगणिकायं०” तहा “जीवाणं एसमाघातो०” तं परिण्णाय मेहावी जाव बेमि। प्रथमाध्ययनस्य अग्निकायाख्यश्चतुर्थ उद्देशकः समाप्त ४।

इदाणिं वाउस्स अवसरो,सो य अचक्खुसोत्ति दुस्सद्धेयो, मा य सिक्खगो तं असद्दहमाणो विप्पडिवज्जेज्जा तेण उक्कमो, जं वणस्सई भण्णइ,एसेवक्कमो जेण सिक्खगो पडिवज्जइ, तेण चउहिं एगिंदियकाएहिं परूवितेहिं सव्वलोगप्पतीते य तसकाए सुट्ठु सद्दहिहिति वायुजीवत्तं,(वणस्सइं)पुण पाएण लोगो सद्दहति,तेण पुव्वं सो भण्णति, ण वाऊ, वणस्सती नवहिं दारेहिं भाणियव्वो,निज्जुत्ती पठितसिद्धा,‘तण्णो करिस्सामि’ तं दंसितं वणस्सतीं, इति परिसमत्तीए, एवं परिसमत्तं समणलक्खणं भवति,जं पुव्वकतं समारंभं तं पवज्जं अब्भुवगतो ण करेति,सम्मं उत्थाय,जं भणितं छज्जीवकायसंजमे अब्भुट्ठितो, अहिकयकायस्स वा,मंता-जाणित्ता, मति से अत्थि मतिमं-आभिणिबोहियनाणं घेप्पति, सुत्तं तत्थेव, अहवा मइग्गहणा सव्वनाणाइं गहियाइं, कायाणं अधिकयस्स वा अभयंविदित्ता, अभयं सत्तरसविहो संजमो, अहवा सातंति वा सुहं वा परिणिट्ठाणंति वा अभयंति वा एगट्ठा, तव्विवक्खो असातंति वा दुक्खंति ॥ ३१ ॥

प्रथम अध्ययने पंचम उद्देशक: ‘वनस्पतिकाय:’ आरब्ध:,

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [३९-४७]

दीप अनुक्रम [४०-४८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ ३२ ॥

वनस्पतिः

वा अपरिणिव्वाणंति वा भयंति वा एगट्ठा, ते सातासाते अप्पोवमेणं जाणित्ता जं अप्पणो अणिट्ठं ण तं परस्स कुज्जा 'जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं' गाहा, 'तदि'ति तं भयं जे जीवा 'णो' पडिसेहे 'करइ' कुज्जा, किं तं?, छज्जीवनिकायआरंभं अधिकयं वा 'एत्थोवरते'त्ति वणस्सइकायसमारंभो 'एसोवरए'त्ति गुरुसमीवं धम्मं वा उवेच्च विरतो स एव अणगारो भवति, सेसा दव्वअणगारा, 'जे गुणे'त्ति सद्दादिविसया ते पायं सव्वे वणस्सइसमारंभाओ णिप्फज्जंति, तत्थ सद्दा वंसवेणुलयत्तिवीणविहंचिपडहादि वणस्सईओ, तसा तंतिचम्मादि, रूवाणि कट्ठपोत्थकम्मगिहावणलेणवेइयाखंभपुप्फफलवत्थादीणि गंधा कोट्ठादी गंधजुत्तीओ परमा मूलकंदपुप्फफलादीणं तित्तादओ य विभासा, मासक्खमणादीणि काऊणं सेवालकंदमूलादि आहारिन्ति फासो तूलिमादीहिं, अन्नेसुवि काएसु सद्दादिगुणा विभासियव्वा, पुढविए सद्दे सुरवासलिप्पादीणि गंधो सज्जो वुट्ठीए महीए रसे लवणादी फासे दहिकुट्टिमादि, उदये सद्दा जलमदुयादि रूवे णदीतूरादि धाराणि वातानि वा गंधे गंधोदगादि रसे धारोदगादि फासे सीतं तावोदए वा उण्हगुणो, तेउकाए तवणवितावणपतावणादि, वातेवि गवक्खादीहि, तसेऽवि सद्दो संखादीणं गीयसद्दा य इत्थिमादीणं, एवं रूवावि गंधा कत्थूरियातीणं रसा मंसगोरसाईणं फासा हंसपक्खादीणं, सव्वोवि गुणो पुणो चउव्विहो नामठवणाओ गयाओ, दव्वगुणो सामित्तकरणअहिकरणेहिं एगतपुहुत्तेहिं भाणियव्वं, दव्वस्स गुणा अग्गीए उण्हा एवमादि, दव्वाणं बहूणं समेयाणं जो रसविवाए गुणो, दव्वेण जहा अण्णेणं छुहा फिट्टति एवमादि, दव्वे जहा ओसहेहिं रोगो नासइ, सन्निहाणे, द्रव्ये गुणो तित्तादि, अणेगेसु दव्वेसु पिंडितेसु जे गुणा जोगीपाहुडादिसु, भावगुणो पसत्थो य अपसत्थो य, अपसत्थो जो जहिं रागंधो, जहा रागेणं ण याणंति रागा लोभा जूयकरादि खुहं पिवासं वा, पसत्थो नाणोवओगेणं

॥ ३२ ॥

प्रत
वृत्यंक
[३९-४७]

दीप
अनुक्रम
[४०-४८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ ३३ ॥

वनस्पतिः

तिसादी ण तिवेदेति, दरिसणगुणो कुतित्थिएसु ण मुज्झति सुलसा वा जहा, चरित्तगुणो ण विसएसु रागं करेइ, दोसं वा, थूलभद्दो जहा, आवट्टो चउव्विहो णामादी, दव्वे साभित्तकरणअधिगरणएगत्तपुहुत्तेसु जहासंभवं भाणीयव्वं, दव्वस्स आवट्टणादिसु कहंचि उदगस्स आवट्टो भवति, दव्वाणं आगासे कोंचपंतीमादीणं पुणो पुणो आवट्टो भवति, दव्वेण तेणेव उदगेण तणादि आवट्टिता, दव्वेहिं संदामगकत्तियादीहि लोहादि, सण्णिहाणेत्ति एगत्तपुहुत्ते विभासा, भावावट्टो णाम अण्णाणभावसंकंती उदइयभावोदयो वा, णरगादिसु भावेसु आवट्टति, आह–जे गुणे से आवट्टे?, आमं, जे आवट्टे से गुणे?, आमं, गतिपच्चागतिलक्खणं, कोऽभिप्पायो?, कायपुग्गलुत्था (कोइलमुरवुत्थ) सद्दादिणा रागो तप्पडिपक्खे दोसो, ततो संसारियं कम्मं भवतीति-काउं कारणे कार्योपचारा भण्णति जो एव गुणो सो आवट्टो, आवट्टो कहं गुणो भवति?, गुणतो अण्णऽण्णो आवट्टो तेण आवट्टो अ गुणो, जइ नाणनाणीणं एगत्तं, अहवा जो गुणेसु वट्टति सो आवट्टे वट्टइ?, आमं, गतिपच्चागतिलक्खणं, कोऽभिप्पायो?, गुणेसु वट्टमाणो ण संसारा उव्वट्टति, एते गुणा कत्थ?, भण्णति–पण्णवगदिसं पडुच्च उड्डं पासातातिहम्मियेसु, अधं अहे, उच्चत्थ गिरित्थले वा आरूढो, तिरियं आवासगं, अहवा उड्डलोए वेमाणियादि अहे भवणवासीणं तिरियं दीवसमुद्रव्यन्तरजोइसियाण य मणुयस्स तिरिक्खाणं सभाप्रपादिसु, पाईणग्रहणेण तिरियं चत्तारि दिसाओ अणुदिसाओ य गहियाओ, पासिस्सामित्ति दरिसणिज्जाइं, ताणिमणुवत्तणेण सयमिव अप्पाणं दरिसेति, असोभणेहिं तु आसणेहिवि दिट्ठी णिवत्तेति, अहवा पासियाइं ताहिं चक्खुफासियाइं जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभागे उक्कोसेणं सातिरेगाओ जोयणसयसहस्साओ, पढिज्जइ य–पस्समाणो रूवाइं पासइ' जं भणितं स चक्खुज्ञोओ उवउत्तो पासइ, भणितं साहियं तं सुणाति, एवं 'सद्दावि सुणिमाणि सुणेति' सुणिमाइंति– ॥ ३३ ॥

प्रत
वृत्यंक
[३९-४७]

दीप
अनुक्रम
[४०-४८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ ३४ ॥

वनस्पतिः

सोइंदियग्गहणपाउग्गाइं, जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं बारसहिं जोयणेहिं, अहवा सुणिमाइंति मल्लगदिट्ठंतेणं जहा तं वंजणं पूरियं भवति ततो सुणेइ, पढिज्जइ य-'सुणमाणो सद्दाइं सुणेति', निरुवहयइंदियो तदुवउत्तो, एवं गंधरसफासेहिवि भाणियव्वं, अग्घाइमाइं गंधे अस्सातणिज्जाइं रसे फासिमाइं फासे, तिसुवि च्छिन्ने पोग्गले उक्कोसेणं णवहिं जोयणेहिं, तिव्वेवि विसए उवलभमाणो उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणो रूवेसु सद्देसु यावि, दूरालोगं हारिं च तेण रूवं आदीए, तत्थ रूवे मुच्छमाणे मुच्छिए दुस्समाणे दुट्ठो, जं भणितं सरागो ण वीतरागो, एवं सद्देसुवि रागी रागं जाति दोसी दोसं, रूवग्गहणे सेसविसएहिवि, अपिग्गहणा अपि जाति अवि ण जाति रागं दोसं वा, अपि जाइत्तावि ण जाति अजाइत्तावि जाति, कहिंचि रज्जति कहिंचि ण रज्जति, एवं दुस्सतीवि, एस असंजतलोए वियाहिते, 'एत्थ अगुत्ते अणाणाए'त्ति एत्थ वणस्सतिकायपरे लोए छक्काय-परिभोयगुणे वा कामगुणेसु वा अगुत्तो नाम रागदोसवसओ पंचसु विसएसु कहिंपि विसए अगुत्तो जो वणस्सइसमारंभे अगुत्तो सो सेसकाएहिवि अगुत्तो भवति, अहवा हिंसाए अगुत्तो सेसवएसुवि अगुत्तो, एवं सो अगुत्तो तित्थंगराण अणाणागारी भावावट्टे चउव्विहे नरगमादिसु छव्विहे वा पुढविमादिसु इंदियपमायभावावट्टे वट्टमाणो आवट्टइ 'पुणो २ गुणासाए वंकसमायारे' पुणो पुणो अभिक्खणं अणिवारिततप्पयारो ते सद्दाइविसए गुणे आसादेन्तो वंकसमायारो वंको-असंजमो तं समायरति वंकसमायारो, अहवा नाणागइकुडिलो वंको-संसारो तं समायरति, गुणामत्तो हिंसादिसु कम्मेसु वट्टमाणो समायरति-णिव्वत्तेति अडति वा, सो एवं वंकसमायारो पमत्तो अट्टो आकंपितो आतुरो परितावितो ततो अगारवासं वसइ निग्गंथो वा काए पडिसेवइ पच्छा आतुरीभूतो छज्जीवनिकायसमारंभं करेमाणो सद्दादिगुणबुद्धिए वजण्फइकाए 'लज्जमाणो-'धुत्तं गंडिया, लक्खणावसिद्धत्थं ॥ ३४ ॥

प्रत
वृत्यंक
[३९-४७]

दीप
अनुक्रम
[४०-४८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः
॥ ३५ ॥

भणति-'इमंपि जाइधम्मं' इमंति मणुस्ससरीरं 'जाइधम्मं'ति जाइस्सभावं, अहवा अप्पाणगं सरीरं सिस्सं वा, एस दिट्ठंतो, एवं वणस्सइसरीरंपि, तंजहा-जातो रुक्खो जातो साखी एवमादि, कोई भणेज दहिं जाति सोऽवि जीवो ?, भण्णति-ण तं मरति, 'इमंपि वुड्ढिधम्मं'ति जहा परिवड्ढितो दारओ, अहवा थेरीभूतो, एवं वणस्सतीवि, अहवा आहारेण उवचिज्जति तदभावे अवचिज्जति एवं वणस्सईवि, जहा वा हत्थो छिन्नो मिलाति तहा वणस्सईवि, साहा पुप्फं पत्तं वा छिन्नं मिलायति, अधुवं हाणीए वुड्ढीए एवं वणस्सईवि, अणितियं अणिच्चं जं भणितं, जतिकालावत्थिते असासतं चओवचइत्ताओ, चओवचइयं-चिज्जति अवचिज्जतीवि, 'परिणामधम्मं'ति भावंतरसंकमणं सो णिसेगादिबालमज्झिमवीरियाणि एवं वणस्सईवि बीयंकुरादि कमेण भवति, तहा मूलकंदखंधतया, एवं अण्णेवि सुयणदोहलरोगादिलक्खणा पज्जाया भाणियव्वा 'एत्थ सत्थं समारभमाणस्स तेसिं' तहेव इति सत्थपरिण्णाज्झयणे वणप्फइ उद्देसो पंचमः।

इदाणिं तसकायनिज्जुत्तीए नव दाराइं वण्णेऊणं पठितसिद्धाइं णवरं 'तिविहा तिविहा' गाहा (१५५-६७) संमुच्छिमा गब्भवक्कंतिया उववादिया एसा तिविहा पुणो तिविधा इति, एक्केक्का तिविहा-सचित्ता अचित्ता मीसा, अहवा सीता उसिणा सीतोसिणा, अहवा संवुता विवुता संवुतविवुता, अहवा बितिओ तिविहो सद्दो गब्भवक्कंतियाण ण चेव भण्णइ, तंजहा गाहाये चेव भण्णति अंडयादि, लक्खणत्ति दारं, बेइंदियादीण तसाणं वइसेसियाइं लक्खणाइं भवंति। 'दंसण' गाहा (१५७, १५८-६८) पढियव्वा, णोसण्णावियारे अणुयत्तमाणे अपरिण्णायकम्मा छसु काएसु उववज्जंति, इह तु तसाहिगारो 'से बेमि संति-विजंति सव्वलोगप्पईया बालादिपच्चक्खा, बालावि भणती एस पिपीलिया जह ण मारेहि, अहवा संति, ण तेहि संसारो विरहितो भवती,

त्रसकायः
६ उद्देश
॥ ३५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम अध्ययने षष्ठम् उद्देशक: 'त्रसकाय:' आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[४८-५४]

दीप
अनुक्रम
[४९-५५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ ३६ ॥

त्रसकायः

मेदेण अंडया पोयया जराउया रसया, अंडया जाता अंडया मयूरकुकुड एवमादी, पोतया सणफता पक्खीवग्गुलियादि, जरायुजा जहा गोमहिसादि, रसया रसगादि, संसेदया यूगादि, संमुच्छिमा सलभमक्खिगादि, उब्भिया मुत्तिमा(खजरीडा)दि, उववाइया देवनारगा, एस संसारेत्ति पवुच्चइ, एस अट्ठविहो जोणिसंगहो संसारेति पवुच्चइ, मंदो दव्वे भावे य, द्रव्ये मंदो उवचए अकए य, भावेवि उवचये जो बुद्धिमंतो अवचए बुद्धिहीणो, भावे मंदेण अहिगारो, एस पुण अपडुपण्णबुद्धि बालओ गहिओ,तस्स मंदस्स अवियाणओ एसो अट्ठविहो जोणिसंगहो जायइत्ति निश्चितं, किमु वियाणगस्स?, एव तसकायं णिज्झाएत्ता पडिलिहित्ता निच्छितं नियतं वा ज्झाइत्ता, पडिलिहित्ता णाम दट्ठुं, अहवा अदिट्ठोऽवि कुंथुसुहुमादिरक्खणट्ठा रयोहरणेणं पडिलेहित्ता य ठाणाति चेतेज्जा, अहवा णिज्झाइत्ता णाउं पडिलेहित्तात्ति संपेक्खित्ता, पडिलेहित्ता एक्केक्कं पडुच्च पत्तेयं परिणिव्वुइ परिणिव्वाणं जं भणितं सुहं, एगं परिणिव्वाणं पत्तेयं ‘सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं’‘सव्वेसिं’ति अविसेसेणं इट्ठं-णिव्वाणं सातंति वा सुहंति वा अभयन्ति वा परिणिव्वाणंति वा एगट्ठा, एतव्विवरीतं अणिट्ठं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं एवं जाव सत्ताणं दुक्खं सारीरमाणसं असातंति वा अपरिणिव्वाणंति वा महब्भयंति वा एगट्ठा, इच्चेतेण अपरिणिव्वाणं अभिभूता ‘तसंति पाणा पदिसादिसासु’ तसंतित्ति वा उव्विवंतिवा संकुयंति वा बीभिंति वा एगट्ठा, एवं वा तसियाणं मच्चुभएण दुक्खं भवति, किं पुण तालियाण वा संमद्दियाण वा पीसियाण वा, तसंति पाणा पदिसो दिसासुत्ति, पगारेहिं भिसं वा दिसाहि य अणुदिसाहि य तसंति तं कायं मा दिसा जत्थ तसा ण तसंति जहा कोसियारा य सव्वाहि दिसाहि बीभेन्ति तेण कोसगं करेंति, एवं ता पण्णवगदिसं पडुच्च, भावदिसाएवि, ण सा भावदिसा अत्थि जहिं वट्टमाणे जाओ वा ण लभिज्जा जो जाई, जाईए जीवो आजाति ॥ ३६ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[४८-५४]

दीप
अनुक्रम
[४९-५५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
॥ ३७ ॥

त्रसकायः

स तेहिं मरति, इच्छइ य जीवेहिं जो ते अण्णेहिं संपसंसंति, किंणिमित्तं ?, तेहिं तसंति समारभंता तं चेव नो सण्णाति, 'अहा ते जाव परितावेन्ति' धुवगंडिया, जहिं अण्णे णेगरूवे ण णिविहिंसंति, तदस्सिते किमियउदयादि सत्ते मारेंति, तत्थ छक्काये विराहइ तसपाणेवि हिंसंतोत्ति, अप्पेगे अच्चाए वहंति 'अच्च'त्ति सरीरं तंनिमित्तं आहारअलंकारनिमित्तं वा वधति, अहवा विसखतितो हत्थि मारेऊण छुब्भइ, अहवा वेयालनिमित्तं सलक्खणं सरीरं खतं करेंतेहिं मारिज्जति, अहवा अच्चाए अज्झिय(जिणा)ए वा, लोहियाय बलिणिमित्तं छगलाति, अजिणं–चम्मं तंनिमित्तं सीहवग्घमिगमादी, वसाए सूगरादि, सोणीताए कमिरागादीणं हितयाए हितयउड्डियाणं, अट्ठीए आहिट्ठणिया, पित्ताए मयूरादी, वसाए वग्घमगरवराहादि, पिंछाए मयूरगेद्धादि, पुच्छाए मिगपुंच्छगा, वालाए चमरी, संगाए रुरुखग्गिमादि, विसाणाए हत्थिगादि, दंताए सियालदंतेहिं तिमिरं नासयति, दाढाए वराहमादी, णखाए वग्घमादि, ण्हारुए जीवाए कंडाण वग्घादयो, अट्ठीए संखमादि, अट्ठिमिंजाए ओसहहेउं मंसासिणो वा अप्पेगे, अट्ठाए एते चेव अच्चादि, अहवा अप्पणो परस्स वा उभयस्स वा अट्ठाए, अणट्ठाए चेडरूवाणं खेलंताणं घरकोइलादि मारेंति, राया रायपुत्तो वा गद्दभादि, अहवा अट्ठाए वधेंति जं किंचि लएत्ता सेसयं छड्डेति, जीवंतस्स वा अच्छिदंता घिप्पंति एसो अट्ठो, सेसं अणट्ठो, 'हिंसिस्सु मे'त्ति एतेण मम पिता माया वा मारियओ अन्नभवे, हिंसंतित्ति अभिमुहं एतं सीहादि मारेति, हिंसिस्संतित्ति सप्पमादि मारेइ मा खहिहित्ति, अरिं वा णो मारेहित्ति, गब्भे वा मारेति मम एस अरी भविस्सति जहा कणगज्झओ राया, 'एत्थ सत्थं समारभमाणस्स'सेसं तहेव। एवं सत्थपरिण्णाअज्झयणचुण्णीए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१–६॥ संबंधो स एव, दुस्सद्धेयत्ता दुप्परिहारित्ता अपरिभोगत्ता य उक्कमकरणं, जो एते चत्तारि तसवज्जे ते काए तसे य बालादिप्पभिति ते सद्दहति, तस्स

॥ ३७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम अध्ययने सप्तमं उद्देशकः 'वायुकाय:' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[५५-६१]

दीप
अनुक्रम
[५६-६२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
॥ ३८ ॥

वायुकाय: ७ उद्देश:

वा उद्देसो भण्णति, णव दारा तहेव, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं 'पभू य एगस्स दुगुंछणाए'पभुत्ति समत्थो जो एयेत्ति जो एते जहुद्दिट्ठे काए सद्दहइ सो एस भवति, कस्स ?-एयतीति एओ, भणियं च–"एयती वेयति चलति फंदति" अहवा एगस्स वाउकायस्स, कहं एगो ?, सेसा चक्खुसा अयमचक्खुसो तेण एगो, अहवा एगो देसपच्चक्खोवग्गहणे पभू, सद्दहणाए य भवति दुगुंछणाए, दुंगुंछणा णाम संजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्तित्ति वा एगट्ठा, कहं एतं दुपरिहरं परिहरति ?, केण वा आलंबणेण ?, भण्णति–'आतंकदंसी अहियंति णच्चा' तेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अप्पाणं अंकेति आतंको, वाही वा आतंको, वक्खमाणं वा अथणं फुसंति आतंका, छज्जीवकायसमारंभेण अधिकयसमारंभेग वा जं दुक्खं आतंकसण्णितं उप्पज्जइ तं पस्सइ आतंकदंसी, तत्थ दव्वायंके इदमुदाहरणं–जितसत्तुराया सावओ, धम्मघोसथेरे पज्जुवासमाणो वेड्डीभूतं सेहं पासति, अभिक्खणं अभिक्खणं पडिओतिज्जमाणं पुणरवि तदेवावराधं करेमाणं, तस्स हियट्ठाए सेसउच्छाहणत्थं च आयरियं अणुण्णविचा खारविज्जलोहीए खारो सज्जावितो जहिं पक्खित्तमित्ते पुरिसो अट्ठिसेसो भवती, आयरियस्स पुव्वं कहिया, रायपुरिसेहिं आयरिया वाहिता भणंति–को मम सहाओ गच्छिज्जा ?, सज्झायवाउला सेसत्ति सेहो णीतो, तत्थ आयरिया रण्णो धम्मं कहेंति, पुव्वसन्नागएहि य रायपुरिसेहिं दो मतया पुरिसा आणीता, तत्थ एगो गिहत्थनेवत्थो एगो पासंडिणेवत्थो, गुरूहिं पुच्छियं–एतेहिं को अवराहो कतो ?, राया भणइ–एस गिही मम आणालोवं करेइ, एस लिंगी तु भिन्नचित्तो जह भणिए णाए अप्पाणं ण वेड्त्ति मारिचा मम उवणीता, ते दोऽवि खारातंके पक्खित्ता गोदोहमित्तेणं कालेणं अट्ठिसंकलिया सेसा, सो य राया सरोसंपित्र सेहं निज्झायंतो आयरियं भणइ–अत्थि तुज्झवि कोइ छत्तो चरणालसो जाणं तं जीवंतगमेव आतंके छुभामित्ति, आयरिया भणंति- ॥ ३८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[५५-६१]

दीप
अनुक्रम
[५६-६२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ ३८ ॥

वा उद्देसो भण्णति, णव दारा तहेव, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं 'पभू य एगस्स दुगुंछणाए'पभुत्ति समत्थो जो एयेत्ति जो एते जहुद्दिट्ठे काए सद्दहइ सो एस भवति, कस्स ?-एयतीति एओ, भणियं च-"एयती वेयति चलति फंदति" अहवा एगस्स वाउकायस्स, कहं एगो ?, सेसा चक्खुसा अयमचक्खुसो तेण एगो, अहवा एगो देसपच्चक्खोवग्गहणे पभू, सद्दहणाए य भवति दुगुंछणाए, दुगुंछणा णाम संजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्तित्ति वा एगट्ठा, कहं एतं दुपरिहरं परिहरति ?, केण वा आलंबणेण ?, भण्णति-'आतंकदंसी अहियंति णच्चा' तेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अप्पाणं अंकेति आतंको, वाही वा आतंको, वक्खमाणं वा अधणं फुसंति आतंका, छज्जीवकायसमारंभेण अधिकयसमारंभेग वा जं दुक्खं आतंकसण्णितं उप्पज्जइ तं पस्सइ आतंकदंसी, तत्थ दव्वायंके इदमुदाहरणं-जितसत्तुराया सावओ, धम्मघोसथेरे पज्जुवासमाणो वेड्डीभूतं सेहं पासति, अभिक्खणं अभिक्खणं पडिओतिज्जमाणं पुणरवि तदेवावराधं करेमाणं, तस्स हियट्ठाए सेसउच्छाहणत्थं च आयरियं अणुण्णवित्ता खारविज्जलोहीए खारो सज्जावितो जहिं पक्खित्तमित्ते पुरिसो अट्ठिसेसो भवती, आयरियस्स पुव्वं कहिया, रायपुरिसेहिं आयरिया वाहिता भणंति-को मम सहाओ गच्छिज्जा ?, सज्झायवाउला सेसत्ति सेहो णीतो, तत्थ आयरिया रण्णो धम्मं कहेंति, पुव्वसआगएहि य रायपुरिसेहिं दो मतया पुरिसा आणीता, तत्थ एगो गिहत्थनेवत्थो एगो पासंडिणेवत्थो, गुरूहिं पुच्छियं-एतेहिं को अवराहो कतो ?, राया भणइ-एस गिही मम आणालोवं करेइ, एस लिंगी तु भिन्नचित्तो जइ भणिए णाए अप्पाणं ण वेड्ढित्ति मारित्ता मम उवणीता, ते दोऽवि खारातंके पक्खित्ता गोदोहमित्तेणं कालेणं अट्ठिसंकलिया सेसा, सो य राया सरोसंपिव सेहं निज्झायंतो आयरियं भणइ-अत्थि तुज्झवि कोइ छत्तो चरणालसो जा णं तं जीवंतगमेव आतंके छुभामित्ति, आयरिया भणंति-

वायुकायः ७ उद्देशः

॥ ३८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[५५-६१]

दीप
अनुक्रम
[५६-६२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
॥ ३८ ॥

वा उद्देसो भण्णति, णव दारा तहेव, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं ‘पभू य एगस्स दुगुंछणाए’पभुत्ति समत्थो जो एयेत्ति जो एते जहुद्दिट्ठे काए सद्दहइ सो एस भवति, कस्स ?-एयतीति एओ, भणियं च–“एयती वेयति चलति फंदति” अहवा एगस्स वाउकायस्स, कहं एगो ?, सेसा चक्खुसा अयमचक्खुसो तेण एगो, अहवा एगो देसपच्चक्खोवग्गहणे पभू, सद्दहणाए य भवति दुगुंछणाए, दुंगुंछणा णाम संजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्तित्ति वा एगट्ठा, कहं एतं दुपरिहरं परिहरति ?, केण वा आलंबणेण ?, भण्णति–‘आतंकदंसी अहियंति णच्चा’ तेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अप्पाणं अंकेति आतंको, वाही वा आतंको, वक्खमाणं वा अधणं फुसंति आतंका, छज्जीवकायसमारंभेण अधिकयसमारंभेण वा जं दुक्खं आतंकसण्णितं उप्पज्जइ तं पस्सइ आतंकदंसी, तत्थ दव्वायंके इदमुदाहरणं–जितसत्तुराया सावओ, धम्मघोसथेरे पज्जुवासमाणो वेड्डीभूतं सेहं पासति, अभिक्खणं अभिक्खणं पडिओतिज्जमाणं पुणरवि तदेवावराधं करेमाणं, तस्स हियट्ठाए सेसउच्छाहणत्थं च आयरियं अणुण्णवित्ता खारविज्जलोहीए खारो सज्जावितो जहिं पक्खित्तमित्ते पुरिसो अट्ठिसेसो भवती, आयरियस्स पुव्वं कहिया, रायपुरिसेहिं आयरिया वाहिता भणंति–को मम सहाओ गच्छिज्जा ?, सज्झायवाउला सेसत्ति सेहो णीतो, तत्थ आयरिया रण्णो धम्मं कहेंति, पुव्वसआगएहि य रायपुरिसेहिं दो मतया पुरिसा आणीता, तत्थ एगो गिहत्थनेवत्थो एगो पासंडिणेवत्थो, गुरूहिं पुच्छियं–एतेहिं को अवराहो कतो ?, राया भणइ–एस गिही मम आणालोवं करेइ, एस लिंगी तु भिन्नचित्तो जह भणिए णाए अप्पाणं ण वेइत्ति मारित्ता मम उवणीता, ते दोऽवि खारातंके पक्खित्ता गोदोहमित्तेणं कालेणं अट्ठिसंकलिया सेसा, सो य राया सरोसंपिव सेहं निज्झायंतो आयरियं भणइ–अत्थि तुज्झवि कोइ छत्तो चरणालसो जाणं तं जीवंतगमेव आतंके छुभामित्ति, आयरिया भणंति-

वायुकायः
७ उद्देशः

॥ ३८ ॥

प्रत वृत्यंक [५५-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ ३८ ॥

वायुकायः ७ उद्देशः

वा उद्देसो भण्णति, णव दारा तहेव, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं 'पभू य एगस्स दुगुंछणाए' पभुत्ति समत्थो जो एयेत्ति जो एते जहुद्दिट्ठे काए सद्दहइ सो एस भवति, कस्स ?-एयतीति एओ, भणियं च-"एयती वेयति चलति फंदति" अहवा एगस्स वाउकायस्स, कहं एगो ?, सेसा चक्खुसा अयमचक्खुसो तेण एगो, अहवा एगो देसपच्चक्खोवग्गहणे पभू, सद्दहणाए य भवति दुगुंछणाए, दुंगुंछणा णाम संजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्तित्ति वा एगट्ठा, कहं एतं दुपरिहरं परिहरति ?, केण वा आलंबणेण ?, भण्णति-'आतंकदंसी अहियंति णच्चा' तेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अप्पाणं अंकेति आतंको, वाही वा आतंको, वक्खमाणं वा अधणं फुसंति आतंका, छज्जीवकायसमारंभेण अधिकयसमारंभेण वा जं दुक्खं आतंकसण्णितं उप्पज्जइ तं पस्सइ आतंकदंसी, तत्थ दव्वायंके इदमुदाहरणं-जितसत्तुराया सावओ, धम्मघोसथेरे पज्जुवासमाणो वेट्ठीभूतं सेहं पासति, अभिक्खणं अभिक्खणं पडिओतिज्जमाणं पुणरवि तदेवावराधं करेमाणं, तस्स हियट्ठाए सेसउच्छाहणत्थं च आयरियं अणुण्णवित्ता खारविज्जलोहीए खारो सज्जावितो जहिं पक्खित्तमित्ते पुरिसो अट्ठिसेसो भवती, आयरियस्स पुव्वं कहिया, रायपुरिसेहिं आयरिया वाहिता भणंति-को मम सहाओ गच्छिज्जा ?, सज्झायवाउला सेसत्ति सेहो णीतो, तत्थ आयरिया रण्णो धम्मं कहेंति, पुव्वसमागएहि य रायपुरिसेहिं दो मतया पुरिसा आणीता, तत्थ एगो गिहत्थनेवत्थो एगो पासंडिणेवत्थो, गुरूहिं पुच्छियं-एतेहिं को अवराहो कतो ?, राया भणइ-एस गिही मम आणालोवं करेइ, एस लिंगी तु भिन्नचित्तो जह भणिए णाए अप्पाणं ण वेइत्ति मारित्ता मम उवणीता, ते दोऽवि खारातंके पक्खित्ता गोदोहमित्तेणं कालेणं अट्ठिसंकलिया सेसा, सो य राया सरोसंपिव सेहं निज्झायंतो आयरियं भणइ-अत्थि तुज्झवि कोइ छत्तो चरणालसो जा णं तं जीवंतगमेव आतंके छुभामित्ति, आयरिया भणंति-

॥ ३८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[५५-६१]

दीप
अनुक्रम
[५६-६२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
॥ ३८ ॥

वायुकाय: ७ उद्देश:

वा उद्देसो भण्णति, णव दारा तहेव, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं 'पभू य एगस्स दुगुंछणाए'पभुत्ति समत्थो जो एयेत्ति जो एते जहुद्दिट्ठे काए सद्दहइ सो एस भवति, कस्स ?-एयतीति एओ, भणियं च–"एयती वेयति चलति फंदति" अहवा एगस्स वाउकायस्स, कहं एगो ?, सेसा चक्खुसा अयमचक्खुसो तेण एगो, अहवा एगो देसपच्चक्खोवग्गहणे पभू, सद्दहणाए य भवति दुगुंछणाए, दुंगुंछणा णाम संजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्तित्ति वा एगट्ठा, कहं एतं दुपरिहरं परिहरति ?, केण वा आलंबणेण ?, भण्णति–'आतंकदंसी अहियंति णच्चा' तेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अप्पाणं अंकेति आतंको, वाही वा आतंको, वक्खमाणं वा अभणं फुसंति आतंका, छज्जीवकायसमारंभेण अधिकयसमारंभेग वा जं दुक्खं आतंकसण्णितं उप्पज्जइ तं पस्सइ आतंकदंसी, तत्थ दव्वायंके इदमुदाहरणं–जितसत्तुराया सावओ, धम्मघोसथेरे पज्जुवासमाणो वेड्डीभूतं सेहं पासति, अभिक्खणं अभिक्खणं पडिओतिज्जमाणं पुणरवि तदेवावराधं करेमाणं, तस्स हियट्ठाए सेसउच्छाहणत्थं च आयरियं अणुण्णविता खारविज्जलोहीए खारो सज्जावितो जहिं पक्खित्तमित्ते पुरिसो अट्ठिसेसो भवती, आयरियस्स पुव्वं कहिया, रायपुरिसेहिं आयरिया वाहिता भणंति–को मम सहाओ गच्छिज्जा ?, सज्झायवाउला सेसत्ति सेहो णीतो, तत्थ आयरिया रण्णो धम्मं कहेंति, पुव्वसआगएहि य रायपुरिसेहिं दो मतया पुरिसा आणीता, तत्थ एगो गिहत्थनेवत्थो एगो पासंडिणेवत्थो, गुरूहिं पुच्छियं–एतेहिं को अवराहो कतो ?, राया भणइ–एस गिही मम आणालोवं करेइ, एस लिंगी तु भिन्नचित्तो जह भणिए णाए अप्पाणं ण वेट्टत्ति मारिचा मम उवणीता, ते दोऽवि खारातंके पक्खित्ता गोदोहमित्तेणं कालेणं अट्ठिसंकलिया सेसा, सो य राया सरोसंपित्र सेहं निज्झायंतो आयरियं भणइ–अत्थि तुज्झवि कोइ छत्तो चरणालसो जाणं तं जीवंतगमेव आतंके छुभामित्ति, आयरिया भणंति- ॥ ३८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[५५-६१]

दीप
अनुक्रम
[५६-६२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ ३८ ॥

वायुकायः ७ उद्देशः

वा उद्देसो भण्णति, णव दारा तहेव, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं 'पभू य एगस्स दुगुंछणाए' पभुत्ति समत्थो जो एवेत्ति जो एते जहुद्दिट्ठे काए सद्दहइ सो एस भवति, कस्स ?-एयतीति एओ, भणियं च-"एयती वेयति चलति फंदति" अहवा एगस्स वाउकायस्स, कहं एगो ?, सेसा चक्खुसा अयमचक्खुसो तेण एगो, अहवा एगो देसपच्चक्खोवग्गहणे पभू, सद्दहणाए य भवति दुगुंछणाए, दुगुंछणा णाम संजमणा अकरणा वज्जणा विउट्टणा णियत्तित्ति वा एगट्ठा, कहं एतं दुपरिहरं परिहरति ?, केण वा आलंबणेण ?, भण्णति-'आतंकदंसी अहियंति णच्चा' तेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अप्पाणं अंकेति आतंको, वाही वा आतंको, वक्खमाणं वा अधण्णं फुसंति आतंका, छज्जीवकायसमारंभेण अधिकायसमारंभेण वा जं दुक्खं आतंकसण्णितं उप्पज्जइ तं पस्सइ आतंकदंसी, तत्थ दव्वायंके इदमुदाहरणं-जितसत्तुराया सावओ, धम्मघोसथेरे पज्जुवासमाणो वेड्डीभूतं सेहं पासति, अभिक्खणं अभिक्खणं पडिओतिज्जमाणं पुणरवि तदेवावराधं करेमाणं, तस्स हियट्ठाए सेसउच्छाहणत्थं च आयरियं अणुण्णवित्ता खारविज्जलोहीए खारो सज्जावितो जहिं पक्खित्तमित्ते पुरिसो अट्ठिसेसो भवती, आयरियस्स पुव्वं कहिया, रायपुरिसेहिं आयरिया वाहिता भणंति-को मम सहाओ गच्छिज्जा ?, सज्झायवाउला सेसत्ति सेहो णीतो, तत्थ आयरिया रण्णो धम्मं कहेंति, पुव्वसमागएहि य रायपुरिसेहिं दो मतया पुरिसा आणीता, तत्थ एगो गिहत्थनेवत्थो एगो पासंडिणेवत्थो, गुरूहिं पुच्छियं-एतेहिं को अवराहो कतो ?, राया भणइ-एस गिही मम आणालोवं करेइ, एस लिंगी तु भिन्नचित्तो जह भणिए णाए अप्पाणं ण वेइत्ति मारिचा मम उवणीता, ते दोऽवि खारातंके पक्खित्ता गोदोहमित्तेणं कालेणं अट्ठिसंकलिया सेसा, सो य राया सरोसंपिव सेहं निज्झायंतो आयरियं भणइ-अत्थि तुज्झवि कोइ छत्तो चरणालसो जा णं तं जीवंतगमेव आतंके छुभामित्ति, आयरिया भणंति- ॥ ३८ ॥

प्रत वृत्यंक [६२-७१]

दीप अनुक्रम [६३-७२]

हातिविजओ, काले जहिं काले, जत्तिएण वा कालेणं, जहा भरहेणं सट्ठीए वरिससहस्सेहिं जितं, मतएण वा मासो जितो, भावे पसत्थो अप्पसत्थो य विजयो परूवेयव्वो, अप्पसत्थभावविजएण अहिगारो, तत्र भावविजये 'से तं कारक०' गाहा, 'लोगो भणिओ (१७६-८३) ॥'विजिओ कसायलोगो सेयं'(१७७-८४) सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं जाव चालणा य पसिद्धी य पंचहा(छव्विहं)विद्धि लक्षणं-'सुयं मे आयुसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं' एस उत्रग्घातो, किं सुत्तं ?, भण्णइ-'जे गुणा से मूलट्ठाणा' जो इति अणुदिट्ठस्स ग्रहणं, गुणणं गुणो जं भणियं पभावो 'से' इति उद्दिट्ठस्स निद्देसे, मूलं प्रतिष्ठा आधारो य एगट्ठा तिट्ठंति तहिं तेण ठाणं, अहवा सुत्तकएण विहाणेणं गतिपच्चागति 'जे गुणे से मूलट्ठाणे' अत्थतो भंगविकल्पा भवंति, जे गुणे से मूले, जे मूले से गुणे ?, आमं, एवं 'जे गुणे से ठाणे, जे ठाणे से गुणे ?, आमं, अहवा जे मूले से ठाणे, जे ठाणे से मूले ?, आमं, अहवा 'जे गुणेसु वट्टइ से मूले वट्टति, ते चेव विकल्पा, एवं एतेसिं गुणादीणं वंजणओ नाणत्तं अत्थओ अनाणत्तं, तम्हा गुणं णिक्खिविस्सामि, तत्थ गुणो तेरसविहो-'दव्वे खेत्ते काले' गाहा (१७८-८४) णामठवणाओ गयाओ, दव्वगुणा णाम दव्वमेव स गुणो घेप्पति, ण हि गुणा गुणवतो अत्थंतरभूया इतिकाउं 'दव्वगुणो दव्वं चेव गुणा' गाहा (१७९-८५) सो तिविहो 'संकुचितविगसितत्तं' गाहा (१८०-८५) सवीरियसजोगीसदव्वयाए पदेससंहरणविसरणेगं पदीवोव्व जाव लोयंतो, अहवा जीवदव्वगुणो अग्गिस्स उण्हत्तं वाउस्स चंचलत्तं, वायामो विक्कमो वीरत्तं पुरिसगुणा, चलत्तं भीरुत्तं विक्कवत्तं इत्थिगुणा, अहवा नाणादिगुणा, अचेयणा दव्वगुणा ओसहाणं रसवीरियविवागगुणा, मीसदव्वगुणोत्ति खीरोदगं तिरावहरणं, अहवा सावरणस्स आमस्स हत्थिणो वा गुणेण परबलं पविसइ जोहेति नित्थरइ य, खेत्तगुणो 'देवकुरुसुसमसुसुम' गाहा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

द्वितीयं अध्ययनं "लोकविजय"आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक [६२-७१]

दीप
अनुक्रम [६३-७२]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः
२ अध्य०
॥ ४९ ॥

गुणनिक्षेपाः

(१८०-८६) देवकुरादीअकम्मभूमीसु सता जोव्वणे वट्टंति, निरुवक्कमाउया विहरियं, सुभाणुभावा पगतिभद्दातिगुणेण देवलोएसु उववज्जंति खेत्तगुणेण, कालगुणो एगंतसुसमादिसु तिसु समासु एसचेव अणुभागो, फलगुणो णाम तवसंजमादिसु सव्वकिरिया, सव्वकिरियाओ इहलोइयाओ फलनिमित्तं आरभंति, ताओ सम्मत्तादिविरहियाओ अणेगंतियाओ अगुण एव द्रष्टव्यो, सम्मत्त-तवसंजमकिरियाओ एगंतियाओ अच्चंतियाओ य सिद्धिसुहअव्वाबाहफला इति, पज्जवगुणो कालगादीऽणंता भेदा, गणणागुणो णाम महंताएवि रासीए गणणागुणेण परिमाणं घेप्पति, करणगुणो णाम कलाकोसल्लं, बवगादि, करणजएण य वत्तिति, गाया कारगादी य करणजएण करेंति, अब्भासगुणो अंधग्गरिवि भुंजमाणो अव्वासंगेण कवलं मुखे प्रक्षिप्पति, गुणोवि अगुणो भवतित्ति जो समभावमद्दवादिगुणजुत्तो सो दुट्ठेहि परिभविज्जति तस्स गुणो अगुणो इहलोगं प्रति भवति, सो चेव परलोगं प्रति गुणो भवति, कूरो साहसिओ अमरिसणो दुआधरिसो भवति तस्स अगुणो गुणो भवति इहलोगं प्रति, परलोगे अगुण एव, अहवा संसारो, वृक्षो छिद्यति सो तस्स गुणो अगुणो भवति, अगुणो वंको णिस्सारो पत्तादि अणुवभोगो जो य ण च्छिज्जति, भवगुणो नेरइयादीणं भवाणं जो गुणो नेरइया अंगुल०, वेयणं सहंति, छिण्णा पुणो साहण्णंति, ओहिण्णाणं, तिरियाणं आगासग-मणलद्धी, गोणादीणं च आहारियं सुभत्तेण परिणमति, मणुस्सभवे कम्मक्खयादि, देवेसु सव्वे सुहाणुभावा, सीलगुणो णाम अक्कुस्समाणोऽवि ण खुब्भति, अहवा सद्दादिएसु भद्दयपावएसु ण रज्जति दुस्सति वा, भावगुणो उदइयादीणं भावाणं जो जस्स गुणो, उदइयगुणो तित्थगरसरीरं आहारगसरीरादि, उवसमियगुणो सतिवि णिमित्ते ण विसयकसाया उदिज्जंति, खइयस्स खीणत्ता ण उदिज्जंति, णाणसामग्गंति णाणसमिद्धी य. एवं सेसाणवि भाणियव्वं, अहवा भावगुणो दुविहो-जीवभावगुणो य ॥ ४५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

द्वितीय-अध्ययने प्रथमं उद्देशकः 'स्वजन' आरब्धः,

आगम (०१)	"आचार" - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) श्रुतस्कंध [१], अध्ययन [२], उद्देशक [१], निर्युक्ति: [१७२-१८६], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक ६२-७१]
प्रत वृत्यंक [६२-७१] दीप अनुक्रम [६३-७२]	श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ॥ ४६ ॥ अजीवभावगुणो य, जीवभावगुणो पसत्थो अपसत्थो य, अपसत्था सद्दादिविसयगणो, पसत्थो नाणादिगुणो, अजीवभावगुणो उदइयो पारिणामिओ य, तत्थ उदइओ ओरालियं वा सरीरं ओरालियपरिणामियं वा दव्वं, पारिणामिओ दुविहो–अणादि सादि, अणादिपारिणामिओ धम्मत्थिकायादीण तिण्हं दव्वाणं गतिठिइअवगाहणा, सातियपारिणामिओ अब्भइन्दधणुमादीणं परमाणुमादीण य वण्णादिगुणा। भणिओ गुणो, इदाणिं मूलं 'मूले छक्कं' गाहा (१८२–८७) द्रव्यमूलं त्रिविधं–उदइय उवदेसो आदिमूलं 'ओदइयं उवदिट्ठा' गाहा (१८३–८८) तत्थ ओदइयं द्रव्यमूलं जाणि द्रव्याणि रुक्खादीण मूलत्तेण उदिण्णाणि, उवएसमूलं णाम जं विज्जा मूलं उवदिसंति जहा पिप्पलिमूलं पंचमूलादी वा, आदिमूलं कम्मगसरीरं, जओ रुक्खा ओ मूलाओ उप्पज्जंति, खेत्तमूलं जहिं खित्ते मूलं जातं कहिज्जइ वा, एवं कालेवि, जावइयं वा कालं, भावमूलं तिविहं–उदइयं उवदेस आदिमूलं, तत्थ उदइयभावमूलं जीवो मूलणामगोयवेदओ घेप्पइ, उवदेसभावमूलं आयरिओ, विविहेहिं कम्मेहिं रुक्खमूलत्ताए उववज्जइ, अतो तदुवयुत्तो आगमतो भावमूलं भवति, आदिमूलं पसत्थं अपसत्थं च, तत्थ अप्पसत्थं विसयकसायादि संसारमूलं भवति, पसत्थं विणओ मूलं, मूलित्ति गतं। इदाणिं ठाणं 'णामं ठवणा' गाहा (१८४–८८) वइरित्तं दव्वठाणं सचित्तादी ३, सचित्तं दुपयादी ३, दुपदट्ठाणं दिणे २ जत्थ मणूसो उवविसइ तत्थ ठाणं जायति, चतुप्पयठाणंपि एवं चेव, अपदाणं गरुयं फलं जत्थ णिक्खिप्पति तत्थ ठाणं संजायति, अचित्तं जत्थ फलग णिसदजंतादीणि णिक्खिप्पंति तत्थ ठाणं जायति, मिस्सट्ठाणं उव्वसिताणवि ठाणं दीसति, 'अद्धा' काल इत्यर्थः दुविहं–भवट्ठिती कायठीती, भवठिती नेरइयदेवाण संचिट्ठणा कायठिई, तिरिक्खजोणियमणुस्साणं संचिट्ठणा, उड्ढं तज्जातीयग्रहणात् णीसियणतुयट्टणठाणा, एतेसिं उद्धठाणं आदी पुण तं, कायोत्सर्ग इत्यर्थः, ॥ ४६ ॥ मूलनिक्षेपाः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[६२-७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ॥ ४७ ॥

स्थान-निक्षेपाः

णिसियणा-उत्तविसणणा संपिहणा, उवरइठाणं देसे सव्वे य, देसे अणुव्रताणि पंच, सव्वे महव्वयाणि पंच, वसधिठाणं उवस्सओ, संजमठ्ठाणं असंखिज्जा संजमठाणा, पग्गहठाणं दुविहं–लोइयं लोउत्तरियं च, ता लोइयं पचविहं–राजा जुवराया सेणावई महत्तर अमच्चकुमारा, लोउत्तरियं पंचविहं–आयरिया उवज्झाया पवत्ति थेरे गणावच्छेदका, जोधट्ठाणं आलीढादि पंचविहं, आलीढं दाहिणं पादं अग्गतोहुत्तं काउं वामपादं पच्छतोहुत्तं ओसारेइ, अंतरं दोण्हं पादाणं पंच पादा, तयं चेव विवरीतं पच्चालीढं, वेसाहं पण्हियो अब्भंतराहुत्ता अग्गिमतला बाहिराहुत्ता, मंडलं दोवि पादे समे दाहिणवामहुत्ता ओसारित्ता उरूणोवि आउंटावेति जह मंडलं भवती, अंतरं चत्तारि पादा, समपादं दोवि पाए समं निरंतरं ठवेइ, अचलं ठाणं ‘परमाणुपोग्गले णं भंते ! णिरेके कालतो केवच्चिरं होति ?, जहण्णेणं एकं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं’ गणणट्ठाणं एकं दस सत सहस्समित्यादि, इदाणिं संधणा, ‘भावे’त्ति भावद्वारस्य संधनायाः व्याख्या करणीया, संधना दुविधा-दव्वे भावे य, दव्वसंधणा दुविहा–छिन्नसंधणा अच्छिन्नसंधणा य, रज्जुं वालंतो अच्छिन्नं वालेइ कंचुयादीणं छिन्नसंधणा, अच्छिन्नसंधणा य सेढिदुयं, उवसामगसेढिपविट्ठो जाव सव्वोवि लोभो उवसामितो, एसा अच्छिन्नसंधणा, खवगसेढीएवि अच्छिन्नसंधणा, ‘अप्पुव्वगहणं तु भावंमि’त्ति पसत्थेसु भावेसु वट्टमाणो जं अपुव्वं भावं संधेइ एसावि अच्छिन्नसंधणा, भावे इमा छिन्नसंधणा–खओवसमियाओ उदइयं संकमंतस्स छिन्नसंधणा, एवं अप्पसत्थाओ पसत्थं संकमंतस्स छिन्ना, पसत्थाओवि अप्पसत्थं संकमंतस्स छिण्णा, एवं भावसंधणा, अप्पसत्थाए अहिगारो, ठाणंति गतं। इयाणिं संसारो, सो य कसायमूलं, कसाया य कम्ममूला, तत्थ गाहा-‘पंचसु कामगुणेसु त’ (१८५-८७) कामगुणा इट्ठा अणिट्ठा य, इट्ठेसु रागो अणिट्ठेसु दोसो, माया लोभो य रागो, कोहो माणो य दोसो, एवं विसएसु कसाया वड्ढंति ॥ ४७ ॥

प्रत वृत्यंक [६२-७१]

दीप अनुक्रम [६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः २ अध्य० ॥ ४८ ॥

संसारः

कमाएहि य मूलट्ठाणं संसारो भवति, तत्थ अप्पसत्थमूलट्ठाणेणं अहिगारो, उवसमियादी पसत्थभावा मोक्खट्ठाणं, अहवा तव-संजमा णिव्वाणमूलट्ठाणं भवति, तत्थ संसारमूलट्ठाणे इमा गाहा 'जह सव्वपायवाणं' (१८६-९०) अट्ठविहकम्मरुक्खा गाहा (१८७-९०) केवलणाणुप्पत्तीएवि पढमं मोहणिज्जं खविज्जइ, सो य पुण मोहो दुविहो 'दुविहो य होइ मोहो' गाहा (१८८-९०) अट्ठावीसइविहंपि मोहं परूवित्ता चरित्तमोहणिज्जलोभस्स रईसु इत्थिपुरिसनपुंसगवेदेसु य कामा समोयरंति तेण 'संसारस्स य मूलं' गाहा (१८९-९१) कम्मस्स कसाया मूलं, जेण कसाया संपराइयं कम्मं बंधंति 'ते सयणपेसण-अट्ठ' गाहा, माता मे पिता मे एवमादि, 'अण्णत्थओ य ठिय'त्ति पिंडोलगस्स सपसण्णचंदस्स य एवेंगिंदियाणं च अप्पेहिंतो सो संसारो, सो य पंचविहो-'दव्वे खेत्ते' गाहा (१९१-९२) दव्वसंसारो चउव्विहो, तंजहा-नेरइयदव्वसंसारो एवं तिरियदव्व-संसारो एवं मणुय० देव०, एवं खित्ते ४, काले चउभंगो, भवे चत्तारि, भावे चउसुवि गईसु अणुभावो वण्णेयव्वो जहा जंबु-णामे, अहवा दव्वाइ चउव्विहो संसारो, तत्थ दव्वे अस्सा हत्थिणं संकमइ, खेत्ते गामा नगरं, काले वसंता गिम्हं, भावे उदइया उवसमितं कोयातो वा माणंति, संसारणिक्खेवो गतो। तस्स मूलं कम्मं तेण 'नामं ठवणा दविए' गाहाद्वयं, (१९२, १९३-९२) दव्वकम्मं दुविहं-दव्वकम्मं णोदव्वकम्मं च, तत्थ दव्वकम्मं जे अट्ठविहकम्मपायोग्गा पोग्गला बद्धा ण ताव उदिज्जंति, णोकम्मदव्वकम्मं करिसणातिकम्मं। इदाणिं पयोगकम्मं, जंमि पओए वट्टमाणो कम्मपोग्गले गिण्हइ तं पयोगकम्मं, समुदाणकम्मंति तं जहा अण्णतरजोगगहिया पोग्गला बद्धणिधत्तणिकाइया तं समुदायकम्मं भवति अट्ठविहं, ईरियावहियं दुसमयट्ठितियं वीयरागस्स भवति, आहाकम्मं जं आहाय कीरइ, तवोकम्मं बारसविहं, किइकम्मं वंदणं, भावकम्मं ॥ ४८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[६२-
७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-
७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: २ अध्य० ॥ ४९ ॥

परितापादि:

तदेव अट्ठविहं उदयपत्तं, सविसए भावगुणो मूलट्ठाणे वट्टइ, सो सद्दादिसु गुणेसु वट्टइ, सो तेसिं गुणाणं अप्पत्ताणं पत्ताण व विणासे सारीरमाणसेण दुक्खेण अभिभूतो, 'इति से महता परितावेण' इति-उवप्रदरिसणे अप्पसत्थेसु गुणेसु चिट्ठित्ता संसारमूलट्ठाणं अवोलेंतो अट्ठविहं कम्मबंधणहेउं वा रागादि तेहिं उवेसिअप्पा इति से 'महता' महता इति अपरिमितेण भोगाभिलासेण सव्वतो तावेणं परितावेणं काइयवाइयमाणसिएण परितप्पमाणो पुणो २ तं करेति जेण तहिं मूलट्ठाणे वग्गति, 'पमत्ते' पंचविहेण पमादेण, इमे से हेऊ 'माता मे पिता मे' माता मम दुक्खिया दिगिंछणादिणा, अहवा केणइ से अप्पितं कतं तन्निमित्तं कसाया, ततो वेरप्पसूई, जहा रेणुया अणंतविरिएणं परिभुत्ता तन्निमित्तं रामेण मारिता, कत्तविरिएण रामपिया पितिनिमित्तं, रामेण निक्खत्तिया पुहवी सत्त वारा कया, सुभोमेण तं सुणित्ता निब्बंभणा पुहवी एक्कवीसं वारा कया, तथा भ्रातिणिमित्तं भइणी भज्जा व मे ण जीवइ चोरियादी करेइ, अणलंकिया हसियत्ति चाणक्केण णंदवंसो उच्छादितो, एवं सेसाणवि 'सहिसयणसंगंथिसंथुतो' त्ति सहि-सहजातगा मित्ता सयणा पुव्व पच्छा संथुता संगंथो-छिन्नपुद्धो संथुतासहवासा दिट्ठाभट्ठा य 'विवित्तं' प्रभूतं अणेगपगारं विचित्तं च उवकरेति, उवकरणं-सयणआसणहडप्फाडिसरावत्थालिपिहुडाकंसभायणादि परियट्टणं-दुगुणं तिगुणं एवमादी, भुञ्जतीति भोयणं-गोहूमतंदुलसंभारगोरसादि अच्छादणयं वत्थविहाणाणि, इति एत्थं इच्चत्थं, मम स मातापितात्ति अतोऽत्थं संतेसु मुच्छिते गिद्धे णढिते अज्झोववण्णे, अस्संजतमणुस्सलोगो कुपासंडलोगो वा तंमि चेव असंजते वसति संसारे वा, ण ततो उत्तरइ, कसायइंदियपमादातिपमत्तो मातापितिमाइणिमित्तं अत्थोवज्जणपरो तस्स रक्खणे य अहो य रातो य परितप्पमाणो—हियएण ससरीरेण य परितप्पमाणो "कइया वच्चइ सत्थो०" कालो णाम जो ॥ ४९ ॥

प्रत
वृत्यंक
[६२-
७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-
७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
॥ ५० ॥

कालाकालो-त्थानादिः

जस्स कालो अहो राती वा, मज्झदेसे जाव मज्झण्हो ताव हलाइ वहंति, सो तेसिं कालो, अवरण्हो अकालो, एवं अन्नेसुवि चित्तंतकम्मादिसु दिवसो कालो, राई अकालो, जाव जस्स कम्मस्स कालो, स तु जहा काले तहा अकालेवि पवत्तइ, सम्मं उत्थाय समुत्थाय अत्थसंग्रहं प्रति, जहा चारुदत्तो सोलसहिरण्णकोडिविणासणं तस्स अज्जिणणहेउं मातुलएण समग्गो परिहिंडितो अत्थलोभेण, मम्मणवणिओ वा एत्थ दिट्ठंतो, सो अकालेवि कम्मं करेइ, वासे पडंते णदीए पुण्णाए, 'संजोगट्ठी'ति भज्जत्थी रज्जातिविभवसंयोगट्ठी वा, सद्दादिविसयसंयोगा, तंजहा—गंधव्ववीणाविहंचिसद्दे इत्थिवत्थाभरणादिरूवे मणुण्णा गंधा घाणे इट्ठा रसा रसे इत्थिसिज्जाइ फासे 'अत्थालोभी' उक्खणइ, अचत्थं वा अत्थालोभी 'आलुंपति' अग्गे संजमादि सयं करेत्ता पच्छा भीआणं वत्थादि आलुंपति पडच्छोडणं वा करेति, जत्तियाइं चोरविहाणाइं ताइं करेइ, उस्सोवणाइ चोरविज्जाहि य 'सहसक्कारे'त्ति साहसं करेइ, पुव्वावरं अगणेंतो तंजहा—दव्वग्गाहित्तं रायभंडागारे, अह डज्झति रायादिवंधं वा करेइ अत्थलोभेणं, विण्णाणत्थे णातादिसु वा सद्दादिसु वा विसएसु विणिविट्ठं चित्तं विणिविट्ठचित्ते, पढिज्जइ य—'विणिविट्ठचिट्ठे' मातादिआयणिमित्तं च विसएसु तदज्जणे य विणिविट्ठा जस्स कातियातिचिट्ठा स भवति विणिविट्ठचिट्ठो एत्थ सत्थे पुणो, उवज्जणे इंदियादिसु वा सत्तो रत्तो मुच्छितो गिद्धो गढितो अज्झोववण्णो, तहिं कालाकालसमुट्ठाणादिएसु पवत्तमाणो 'पुणो पुणो'त्ति अणेगसो तेसु कम्मेसु पवत्तमाणो छक्काइयवहं करेइ, पढिज्जइ य 'एत्थ सत्थे पुणो पुणो', इह रायचोरादि सासिज्जति परलोए नरगादिसु, अहवा सो एवं चिट्ठमाणो कायाणं सत्थं भवति, जं भणितं घातारो, जंपि सो चिरं जीविस्सामि अत्थोवज्जणं करेइ तंपि अणेगंतो, 'अप्पं च खलु आउं' अप्पमिति सोवक्कमाण, ण दिग्घं, चसद्दो अविगियजीविणो दिग्घंति, केसिंचि उक्कोसेणं तिण्णि

॥ ५० ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत

वृत्यंक

[६२-७१]

दीप

अनुक्रम

[६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
॥ ५१ ॥

श्रोतादिहातिः

पलिओवमाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा, धम्मचरणेणं अहिगारो, असंजयाणं अधम्मं चरमाणाणं मोहा जंति राईओ, ण य विसयसुहाभिलासिणोऽवि सव्वे इच्छिते अत्थे साधेंति, अकतत्था चेव उवरमंति, ण य अकुसलसमज्जियस्स पावस्स विवागं बुज्झंति, जेऽवि दिग्घाउया भवति तेऽवि जराभिभूया मतकतुल्ला भवंति तंजह 'सोतप्पण्णाणेहिं' अहवा सो भोगविणिविट्ठचित्तो लोगो इंदियपरिहाणिं न बुज्झइ, तंजहा 'सोतप्पण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं' सुव्वति जेण पन्नाणेण सोयपण्णाणं तं, सोतग्गहणा दव्विदियं पण्णाणग्रहणा भाविंदियं, तत्थ अभिघातेण रोगेण वा दव्विंदियं हीयति वा ण वा चक्खुसोत्रि तिमिरे अक्खिरोगअभिघातेहि घाणस्स पूयाणासद्धेयणउवघातादिहि जिब्भाण पंतपुद्गलादिणा उवग्घातेण, एवं फासेवि, परिहाणी देसे सव्वे य, देसे उच्चेण सुणेइ, सव्वपरिहाणीए ण किंचि सुणेति, एवं सेसेहिवि, एत्थ संयोगा कायव्वा तंजहा—कायसो ते ण सुणेइ णेत्तेहि य, केइ सोतेण घाणेहि य, एत्थ दस दुगसंजोगा दस तियसंजोगा पंच चउक्कसंजोगा एगो पंचगसंजोगो, असंखिज्जवासाउया अपरिहीणेहिं कालं करेंति, संपति तित्थं पुण वाससयाउगेसु पवेदितं, वाससयाउआवि जहा तारुण्णए सोएहिं पयोयणं करेंति ण तहा थेरत्तणे, एवं परिहायमाणे 'अभिक्कंतं च वयं सपेहाए' जरं मृत्युं वा पडुच्च अभिमुहं क्रंतं—कम्मं पेहाए, वयो तिविधो, तंजहा—पढमो मज्झिमो पच्छिमो, वरिससयाउगस्स पुरिसस्स आयुगं तिधा करेति, ताओ पुण दस दसाओ, एक्केको वओ साहिया तिन्नि दसा, खणे खणे वड्ढमाणस्स छायाबलपमाणातिविसेसा भवंति जाव चउत्थी दसा, तेण परं परिहाणी, भणियं च—"पंचामगस्स चक्खुं, हायती मज्झिमं वयं। अभिक्कंतं सपेहाए, ततो से एति मूढतं ॥१॥" तओ पढमवयाओ अतीतो मज्झिमस्स एगदेसे पंचमीदसाए वट्टमाणस्स इंदियाणि परिहायंति, एगया, न सव्वया, मोहो—अण्णाणं मूढ- ॥ ५१ ॥

प्रत
वृत्यंक
[६२-७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ॥ ५२ ॥

स्सभावे से इंदियाणि अणुवलद्धिं जणंति, तंजहा–णो सुणेति, उच्चेहिं सुणेति वा, एवं सेसेहिवि इंदिएहिं, अहवा मूढभावो जह जह इंदिएहिं परिहीयति तह तह तदत्थेहिं सज्जइ, सो एवं वुड्ढत्ते मूढसभावो पायं लोगस्स अवगीओ भवति, किंच–'जेहिं वा सद्धिं संवसइ' (६५–१०५) ते हि मित्तादिविभासा, जेहिवि सद्धिं संवसइ भज्जादिएहिं तेहिंपि अवगीतो भवति, किं पुण परेसिंति ?, अप्पावि अप्पणो अवगीतो भवति, 'वलिसंततमांस्थिशेषितं, शिथिलस्नायुवृतं कडेवरम् । स्वयमेव पुमान् जुगुप्सते, किमु कान्ता कमनीयविग्रहा ? ॥१॥'' एगता, ण सव्वया, णियगा–भज्जादि 'पुव्व'मिति ते पढमं पच्छा अण्णो जणवओ जेसिं पुव्वं अट्ठाए सयतं अज्जिणणपरो आसी ते पढमं परिवडंति, अहवा जे पुव्वं देवमिव मण्णिताइया ते संपदं तं णिरुवगारित्ति सत्तुमिव मन्नंति, भणियं च–"होइ जणसण्णिओ बाहिरो य०" परिवादो णाम परिभवो, दिट्ठंतो–एगंमि गामे एक्को कोडुंबिओ धणमंतो बहुपुत्तो य, सो वुड्ढीभूतो पुत्तेसु भरं संणसति, तेहि य पजायपुत्तभंडेहिं पुत्तेहिं भज्जाओ भणियाओ एयं उव्वलणण्हाणोदगभत्तसेज्जमादीहि पडियारिज्जइ, ताओ य कंचि कालं पडियरिऊण पच्छा पुत्तभंडेहिं वड्ढमाणेहिं पच्छा सणियं सणियं उवयारं परिहावेउमारद्धाओ, कदायि देंति कदायि ण देंति, सो झूरदि, पुत्ता य णं पुच्छंति, सो भणइ—पुव्वपुव्वुत्तं अंगसुस्सूसं परिहायंति, ताहे ते ताओ बहुगाओ खिज्जंति, पुणो पुणो निब्भत्थमाणीओ, पुणो अम्हे णिक्कज्जोवगस्स थेरस्स एयस्स तणएणं खलियारिज्जामो ताहे ताओ रुट्ठाओ सुट्ठुयरं न करेंति, पच्छा ताहिं संपहारेऊणं अपरोप्परं भणंति पतिणो–अम्हे एयस्स करेमो विणयपवत्तिं, एसो निण्हवति, कतिवि दिवसे पडियरिओ पुच्छिओ किंचि, ते इदाणिं करेंति ?, ताहे तेण पुव्विल्लगरोसेणं भण्णइ–हा ण मे किंचिवि करेंति, कइतवेण वा, ताहे तेहिं वुच्चइ–विवरीतीभूतो एस थेरो, जइवि कुव्वति तहवि परिवदति, एस कयग्घो, कीरमाणेवि

वृद्धत्वावगातः

॥ ५२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [६२-७१]

दीप अनुक्रम [६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः २ अध्य० ॥ ५३ ॥

त्राणाद्यभावः

णिण्हवति, अन्नेसिंपि णीयल्लगाणं साहेंति, एवं ता पायं जराजिण्णं परिवदंति-समंता वदंति परिवदंति, जत्तियं तदा चिट्ठंति भासंति वा, जेवि ण य परिवदंति देवतमिव मण्णंति तेवि 'णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा,' पर्याप्तमादिषु, पजत्तीए अलं वीतरागो मोक्खस्स, भूसणे अलंकृता कण्णा अलंकृतं कुलं वद्धमाणेणं एवमादी, वारणे अलं भुत्तेणं गतेण वा एवमादि, इह पज्जत्तीए, सो सिक्खगो पुव्वबंधुणेहेण विसीयमाणं सयमेव अप्पाणं अणुसासति, जेसिं कएण विसीतई णालं ते मम ताणाए वा सरणाए वा, परेण वा भण्णति-णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, जरारोगातंकेहिं अभिभूतस्स ताणं जहा णदिमादिएसु वुज्झमाणस्स जाणवत्तं, जेण आवति तरति जं अस्सिता णिब्भयं वसंति तं सरणं, तं पुण दुग्गं पुरं पव्वतो वा पुरिसे वा, तुमंपि तासिं णालं ताणाए वा सरणाए वा, कोइ वुड्डादि वुड्ढसरीरेण वा जराए अभिभूतो सो पुत्तादीणं दारिद्दातिअभिभूताणं वा ताणाए वा, जो पुण जराए अभिभूयति सो ण हस्साए, तेण मज्झत्थं भविदव्वं, जति हसति हस्सो भवति, किं किर एयस्स हसितेणं तित्थाणपलितस्स ?, असमत्थो य ण सक्केति हसितुं, तेण ण हस्साए, 'ण किड्डाए'त्ति लंघणपहावणअप्फोडणधावणातिअयोग्गो भवति, जुन्नस्स वा 'ण रतीए'त्ति विसयरती गहिता, हसितललितउवगूहणचुंबणादीणि तेसिं अयोग्गो 'ण विभूसाए'-त्ति जति विभूसेति आभरणादीहिं तो हसिज्जति, भणियं च-" ण तु भूषणमस्य युज्यते, न च हास्यं कुत एव विभ्रमः । अथ तेषु प्रवर्त्तते जतो, ध्रुवमायाति परां प्रपञ्चनाम् ॥ १ ॥ अत्थो धम्मो कामो तिण्णि य एयाइं तरुणजोग्गाइं। गतजुव्वणस्स पुरिसस्स होंति कंतारभूताइं ॥ २ ॥ गतं अप्पसत्थगुणमूलट्ठाणं। इदाणिं पसत्थगुणमूलट्ठाणं, णाते 'इच्चेवं समुट्ठिते अहो विहाराए' इति एवं इच्चेवं, जाणित्ता वक्कसेसं, किमिति ?, पत्तेयं सुभासुभा कम्मा, फलविभागं, अहवा जतो एवं ते सुहि० ण अलं जरमरण-

॥ ५३ ॥

प्रत
वृत्यंक
[६२-७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
॥ ५४ ॥

विहारादिः

रोगपरित्ताणाए तेण एतेण पसत्थमूलगुणट्ठाणे ठाइत्ता से ण हस्साए ण रईए ण विभूसाए य अब्भुट्ठिज्ज, ववगयहासकोऊहल्लो चत्तसरीरो इच्चेवं समुट्ठितो मूलगुणेहिं पुव्वभणितेहिं संविज्जइ, ण केवलं मूलगुणेहिं परिण्णायकम्मो जो ण हसति, उत्तरगुणउवघातविरहितो स मुणी परिण्णायकम्मोत्ति अभिसमिच्चा सोच्चा वा तिविहकरणसावज्जजोगविरहितो इच्चेवं समुट्ठिते अहो विहाराए, अहो दइण्णे विम्हए य, बिम्हये द्रष्टव्यः अहोसद्दो, विहारो दव्वे भावे य, दव्वविहरणं लोहमयं जेण उड्डिमाईणि दव्वाइं फालिज्जंति, भावविहरणं पसत्थगुणमूलट्ठाणं जेण अट्ठविहकम्मखंधा विप्पदालिज्जंति, 'अंतरं वा खलु'त्ति अंतरं विरहो छिद्दं, जहा कोइ सधणो पुरिसो पंथं वच्चंतो चोरेहिं चारियं अप्पाणं जाणित्ता तेसिं सुत्तमत्तपमत्ताणं अंतरं लद्धुं णिस्सरति, इहरहा तेसिं मुहे पडइ, एवं माणुसस्स खेत्तकालाईणि लद्धुं अहवा नाणावरणीअंतरं लद्धुं जइ ण पक्कमति तो पुणरवि संसारे पडइ, खलु विसेसणे, किं विसेसेइ ?, मणुस्सेसु तं अंतरं भवतिं, ण अण्णत्थ, 'इमं'ति तवसंजमवसं सपेहाए धी-बुद्धी पेहा मतीति, मुहुत्ते-मुहुत्तमवि णो पमायए, किमु चिरं कालं ?, अंतोमुहुत्तिओ उवओगो, तेण समतो, इहरहा समयमवि ण पमातए, सो तहा अतीव अतीति अच्चेति, जं भणितं-वोलेति, सव्वया णं जोव्वणं पियं तंपि वोलेति, भणियं च-"नइवेगसमं चंचलं च जीवितं च" ग्रहणं जहा जोव्वणं तहा वालातियावि, एवं णाऊणं अहो विहारेणं उट्ठिओ पुणरवि अप्पसत्थं गुणट्ठाणं जं उवयंति अतिकमंति, ण बुज्झं 'इह पमत्ता' इयिति अप्पसत्थगुणमूलट्ठाणे विसयकसाएसु अहो य राओ य परितप्पमाणा कालाकाल० 'से हंता' से इति सो अप्पसत्थगुणमूलट्ठाणी हंता थावरे जंगमे, छेत्ता हत्थपायाइ, अवराहे अणवराहे वा, रुक्खाति वा, भेत्ता सिरउदराति फलाणि वा, लुंपित्ता कमादिहि मारणे पहारे य, लुंपणासद्दो पहारे वट्टति, विलोपो गामातिघातो उद्दवणं तासो वा, ॥ ५४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[६२-७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
॥ ५८ ॥

एयाणि जोगतियकरणतिएणं करेंतो अकडं करिस्सामिति मण्णमाणो अण्णेण केणति अकतपुव्वं जहा सुभोमेव खिज्जाइयाण उच्छायणं कतं, अकयपुव्वं अण्णेण खत्तिएणं, अहवा जं कयं तं कयमेव, अकयं करिस्सामि, सो एवं आयपरोभयपोसणत्थं हणछिंदभिंदआलुंपाविलुंपउद्दवणाइएहिं अकयं करिस्सामीति मण्णमाणे अत्थं समज्जिणइ, सो एवं अत्थपरो 'जेहिं वा सद्धिं संवसति' जेहिंति मातातिहिं सएहिं एगतो सम्मं वसति, ते च णं नियगा ते एव मातापिताति, मातापितरो जातमित्तं पुव्वं पोसंति, पीवगभित्तपोत्तादीहिं, वा वियप्पे, कदायी ण पोसिज्ज जहा जारगब्भो उज्झितो अण्णेहिं पोसिज्जति, अदुट्ठगब्भो विप्पजुत्तो वा, स एव पुत्तो संवड्ढितो मातापितरो पोसंति, केयि अणारिया देसेहि थोवितरोवितेहिं पुत्तेहिं अकम्मसहोत्ति पिता गद्दभपालो कीरति, अण्णेसिं मारित्ता खित्ते खयं खणित्ता णिक्खमंति, पमत्थवंतरो भवित्ता तं खेत्तं रक्खइ, ण कस्सवि अन्नस्स तत्थ उत्तारं देति, ते एवं अदुस्समाणावि जरादिदुक्खपत्तीए णालं तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा, एवं ता सयणो ण ताणाए, सयणाउवि धणं प्रियतरं, उक्तं च-"प्राणैः प्रियतराः पुत्राः, पुत्रैः प्रियतरं धनम्। स तस्य हरते प्राणान्, यो यस्स हरते धनम् ॥१॥ तंपि ण ताणाए०,तं कहं उप्पज्जइ ?,भण्णइ-'उवधातीतसेसेण वा से' जं तेण अहण्णहणिणकम्मत्तेण धणं उवज्जितं ततो उवातीतसेसं, जं भणितं-उवभुत्तिसेसं, णिधाणं सण्णिही, ओदणदोचंगादीणि विणासिदव्वाणि,संनिहिसंणिचयो घृतगुडपडधण्णकप्पासादीएहिं, इह असंजते मणुस्से एगेसिं, न सव्वेसिं, असंजता वा केयि खाइक्कचकला तेसिं कयो संचयो ?, तं च दुक्खं परिभुत्तुं भवति, कहं ?,'ततो से एगता रोगसमुप्पाता समुप्पज्जंति' तंमि उवज्जिते धणे एगस्स, ण सव्वस्स, रोगा कासाति, रोगाणं समुप्पाता रोगसमुप्पाया, सव्वरोगाणं च कुट्ठरोगी अवगीतोत्तिकाउं तेण भण्णति 'जेहिं वा

अपूर्वकरणादिः

॥ ५८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[६२-७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
॥ ५६ ॥

सम्यक्त्वादिक्षणः

जाव परिहरंति' ब्राह्मणं सेडुगमिव पुत्ता, 'सो वा तें पच्छा परिहरिज्जा' सो चेव सेडुयओ ते पच्छा णियए परिहरति, जेवि अतिनेहेण न रोगामिभूतंपि परिहरंति, तेवि नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं, इच्चेवं जाणिय परिवारे पोस णो, परिहारे य अपडिपत्रखदुक्खं 'पत्तेगसातं' एकेक्कं प्रति पत्तेयं दुक्खं सातं वा, तेण जाव ण परियतंती जाव य मच्चिट्ठा ण य रोगित्ता जिण्णत्ता वा परिहरंति ताव 'अणभिकंतं वयं सपेहाए' न अभिक्कंतो अणभिक्कंतो बितिए पढमे वा वए संजमो, अभिक्कंते वए जाव तिण्णि दोसा परिवात पोसणा परिहीणसद्धा, अणभिकंतेवि संबुज्झ, तेसिं परिवातादीणं दोसाणं एगतरेणावि अपुट्ठो अभिकंतवयोवि कोयि दढसरीरो प्रव्रज्जारिहो जह भगवया पुव्वं मातापितरो पव्वाविता, किं च-अणभिकंतवओ 'ख्रणं जाणाहि पंडिते' खीयत इति खणो, स तु सम्मत्तसामायियमादि, एक्केकस्स सामायियस्स चउव्विहो खणो भवति, तंजहा-खेत्तखणो कालखणो कम्मखणो रिकखणो, खित्तं उड्ढमहतिरियं च, उड्ढलोए ततियचउत्थाण सामाइयाण खणो णत्थित्ति जं भणितं, लंभो, सम्मत्तसुत्ताणं पुण होज खणो, अहेलोएवि अहेलोइगामवज्जं एवं चेव, अहेलोइएसु तु गामेसु चउण्हवि खणो अत्थि. जं भणितं-लंभो, तिरिक्खलोए माणुस्सखेत्तस्स बहिं अचरित्ताणं तिण्हं खणो होज्जा, अंतो पण्णरससु कम्मभूमिसु चउण्हवि लंभो, भरहं पडुच्च अद्धछव्वीसाए विसएसु होज्जा, तंजहा-रायगिह०, विज्जाहरसेढीसुवि होज्जा, अकम्मभूमीसु पडिवज्जमाणयं पडुच्च सम्मत्तसुया होज्जा, साहारणे पुव्वपडिवण्णगं पडुच्च चत्तारिवि होज्जा, एवं अंतरदीवेसु, कालक्खणेवि ओसप्पिणीए उस्सप्पिणीए णोउस्सप्पिणीओसप्पिणीए, तिगचउत्थसामाइय जम्मणेण दोहिं संतिभावेण तीहिं, ओसप्पिणि जम्मणेण तीहि संतिभावेण दोहि, णोउस्सप्पिणि० चउत्थे पलियभागे होज्जा, साहारणं पडुच्च अन्नतरे समाकाले होज्जा, सम्मत्तसुयाणं सव्वासु समासु ॥ ५६ ॥

प्रत
वृत्यंक
[६२-७१]

दीप
अनुक्रम
[६३-७२]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
१ उद्देशः
॥ ५७ ॥

क्षणविचारः

खणो पलिभागेसु य, कम्मक्खणो तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेण चउण्हंपि सामाइयणिज्जुत्तीए, रिक्कखणे इमा गाहा 'आलस्स मोहवण्णा०' अहवा इमो खणो भण्णति 'जाव सोतपण्णाणा अपरिहीणा' सोतस्स पण्णाणं सोयपण्णाणं, परिहाणी देसे सव्वे य, सा पुण जराए वाहिणा उवक्कमेण वा परिहाणी भवति इंदियाण, 'इच्चेतेहिं' विरूवं-विविधं रूवं, विरूवं रूवं जेसिं ताणि विरूवरूवाणि, जं भणितं-नानासंठाणाणि, तंजहा-कलंबुयापुप्फसंठिए एवमादी, भावेवि सद्दग्गहणसमत्थं सोतं रूवोवलद्धिखमं चक्खु एवं सेसाणिवि. विसिट्ठं वा रूवं विरूवं, जं भणितं णिरुवहतं, अहवा नोइंदियच्छट्ठाणि विरूवरूवाइं पण्णाणाइं भवंति, जं भणितं पत्तट्ठविसयाहिं, तेहिं अपरिहीणेहिं आयट्ठमेव-अप्पणो अट्ठो आयट्ठो, को य सो ?, संजमो पंचविहो वा आयारो विसयकसायनिग्गहो वा, अहवा आयतपण्णाणं घेत्तुं, अहवा दिग्घदरिसिया आयतट्ठी, अहवा सातिअपज्जवसितो मोक्खो आयतो, आयतस्स अट्ठो आयतट्ठो-पंचविहो आयारो तमायतट्ठं सम्मं, ण मिच्छा, जं भणितं अवहितं, कहं सम्मं ?, भण्णइ-णो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेति णो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेति नो अप्पाणं मणुस्सकामभोगाण हेउं, मंसवडिसगिद्धा इव मच्छा, जहा वा कागिणीए हेतुं, रायिस्सरादयो अप्पकालिए मोहे मज्जा नरएसु उववज्जंति कसायविसयलोयअपरिण्णायदोसेणं, तम्हा एवं अपरिहीणविण्णाणो आयतट्ठं सम्मं अणुवसिज्जा-अणुसियं अणुकूलं वा वसिज्जाहि बंभचेरे अणुवासेज्जासित्तिबेमि। इति लोगविजयसारस्य द्वितीयाध्ययनस्य प्रथमोद्देशकः ॥

संबंधो दुविहो-अणंतरसुत्रेण तदणंतरेण य, अनंतरेण आययट्ठं सम्मं अणुवासेज्जासित्ति, सम्मं संजमे रतिं कुज्जा उवदेसो, तं उवदेसे अविरत्तभावा अथायुगं वालंति, केयि पुण विसयकसायवसं गता अप्पं वा बहुं वा कालं अहाविहारेण विहरित्ता ॥ ५७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

द्वितीय-अध्ययने द्वितीय-उद्देशकः 'अदृढता' आरब्धः,

प्रत वृत्यंक [७२-७६]

दीप अनुक्रम [७३-७७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० २ उद्देशः ॥ ५८ ॥

अरतिवर्जनं

पुणो पढंति, परंपरसुत्तसंबंधो जाव ते पण्णाणेहिं अपरिहाणी ताव तं संजमे ठिच्चा रतिं कुज्जा इति, अदढत्तं विसयकसाएहिं कुरु तव्विवक्खे य दढत्तंति, एस संबंधो 'अरतिं आउट्टे' संजमे अरतिं रतिं विसयकसाएहिं कलत्तादिसु तं आउट्टे, जं भणितं होइ णिण्णेहि, आरंभे वा आउट्टणासद्दो, संजमे रतिं कुज्जा, मुणिभावे वेरग्गे पसत्थमूलगुणट्ठाणेसु य आउट्टाहि, सा पुण पंचविहे आयारे रती विसयकसायनिग्गहे रतिं धम्मे रतिं अधम्मे अरइं, तस्स एवं संजमरयस्स इह चेव अव्वाबाहसुहं भवति, भणियं च 'तणसंथारणिविट्ठोवि मुणिवरो०'गाहा, अप्पसत्थरईए कंडरीओ उदाहरणं णरएसु उववण्णो, पसत्थरईए पोंडरीओ, एवं अप्पसत्थरईओ पसत्थरतिं आउट्टमाणो मेरामेहावी, मेहा ता 'खणंसि मुक्के' खीयतीति खणो खणमित्तेण मुच्चति, भरहो जहा सव्वकामेहिं बंधणेहि य, जे पुण अणुवदेसचारिणो कंडरियादि ते 'अणाणाए पुट्ठा णियट्टंति' अणाणा जहा अभिलसिता अहितपवित्ती, पुट्ठा परीसहेहिं, तत्थ इत्थीपरीसहो गरुयतरो तेण पुट्ठा मंदा बुद्धिअवचए मंदा, मोहो-कम्मं तेण पाउडा--छादिता इहपरलोइए अपाए ण बुज्झंति, विसयतिसिया इहलोगगवेसया कंडरियादी भणिया लिंगपच्छागडा, अण्णे पुण 'अपरिग्गहा भविस्सामो' अंतग्रहणा अहिंसगादि जाव अपरिग्गहा, संमं उत्थाय लद्धा पडुपण्णा कंडरीओ जहा, अभिमुहं गाहति, जहा तण्हाइतो हत्थी सरंतो अप्पत्तो चेव कोइ पंके खुप्पति, एवं सोऽवि भुंजिहामि भोगे अंतरा चेव मरति, कोइ पुण लज्जाए वा गारवेण वा पराणुयत्तीए वा णो लिंगं मुयति संकिलिट्ठपरिणामो जहा खुड्डुओ, अणाणाए पडिलेहेति, आणा भणिता, पडिलेहणा कामभोगणिविट्ठचित्तत्तं, णाणाविहेहि उवाएहिं सविय प्पोहि य विसए पुणो २ पडिलेहिइ 'एत्थ मोहे पुणो पुणो' दव्वमोहे मज्जाति भावमोहो अण्णाणं संसारो वा, एत्थ भावमोहे संसारे पुणो पुणो भवंति, अहवा एत्थंति-एत्थं अकुसले संसितो पुणो पुणो ॥ ५८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[७२-७६]

दीप
अनुक्रम
[७३-७७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
२ अध्य०
२ उद्देशः
॥ ५९ ॥

कामभोगेसु सज्जमाणो पुणो मोहो भवति, जं भणितं कम्मबंधो होति, एवं विसयाभिलासिणो सण्णामूढा, दवे णदीतरणादिसु मज्जंति, सो तिविहो संनो-इसिन्ति मज्झिमो णिसंनो, तत्थ इसित्तिसंनो णातिदूरं वुज्झति, मज्झिमो दूरतरं, निसंनो सुदूरं वुज्झति, अहवा तत्थ नेव विणस्सति, एवं भावसण्णोवि तिविहो-जहण्णो उत्तरे गुणे पमादि, मज्झिमो लिंगधारणो, उक्कोसो पुणो चउत्थं सेवति, ते एवं 'नो हव्वाए णो पाराए' हव्वं-गारहत्थं पगामकामभोगित्तं तं तेसिं अदढचित्ताणं ण भवति, पारं-संजमो, तत्थवि ते ण भवंति, ते उ ततो मुक्का ण गिहत्था ण पव्वइया भवंति, जे पुण अपसत्थरतिविणियट्टा पसत्थरतिआउट्टा विमुत्ता ते जणा पारगामिणो, दव्वविमुत्ती सयणधणाति भावे विसयकसायाति, सव्वतो वा पमाता ते विमुक्का, तहा कज्जमाणे कडे, एवं समए २ विमुच्चमाणो, अहवा सिज्झमाणसमए विमुच्चमाणा विमुक्का, जायंतीति जणा, अहवा सव्वत्थ जणभूया जणा, जं भणितं णिण्णेहा, के तेवि विमुत्ता ?, भण्णंति-पारगामिणो, पंचविहआयारगुणं पसत्थगुणं मूलं पारं वा गच्छंति, पारगामिणो वा एते, जगारेण उद्दिट्ठस्स तगारेण निद्देसो भवति, भण्णति-अणेगंतो एसो, जेण भणितम्-"तस्मै धर्म्मभृते देयं, यस्य नास्ति परिग्रहः। परिग्रहे तु ये सक्ता, न ते तारयितुं क्षमाः ॥१॥" ते कहं पारगामिणो ?, भण्णति-'लोभं अलोभेण दुगुंछमाणा' "यथाऽऽहारपरित्यागो, ज्वरितस्यौषधं तथा। लोभ(स्यैवं)परित्यागः, असंतोषस्य भेषजम् ॥१॥ असंतेसऽप्पसंतोसो, दुगुंछा नाम पडिगारो, अहवा असंतोसं दुगुंछंति, असंतुट्ठाणं इह परत्थ य भयं भवति, इह लोए अज्जिणणे रक्खणे य, परलोगे णरगादिसु भयं, एवं कोवं खंतीए जिणत्ति, माणं मद्दवेणं, मायं अज्जवेणं, बहुदोसा दुलंघता य तेण पच्छाणुपुव्वीए, ते पुण संजलणा, इतरे संतस्स णत्थि, सो लोभो अलोभेण दुगुंछितो सव्वतित्थगरेहिं रायीसरतलवरपव्वइएहि य, अहवा सव्वसाहूहिं दुगुंछिओ, कहं ?, पव्वयं-

संज्ञामंदादि

॥ ५९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[७२-७६]

दीप
अनुक्रम
[७३-७७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
२ उद्देशः
॥ ६० ॥

लोभजुगुप्सादि

तेण जतो तिण्णि कोडीओ पक्खित्ताओ भवंति, तंजहा—अग्गी उदगं इत्थिओ, कहं?, जइ कोइ वुच्चेज्जा—तिण्णि कोडीओ गिण्ह उदगादीणि मुय, सो इच्छिज्जा, एवं लोभं दुगुंछमाणो लद्धे कामे नाभिगाहति, अभिमुहं गाहति अभिग्गाहति जहा चित्तो खुड्डओ वा, 'सुट्ठु गाइतं सुट्ठु वाइयं सुट्ठु नच्चियं सामसुंदरी!।' दिज्जंतंपि रज्जं न इच्छति एस, एवं दढत्ताहिगारे अणुत्तरे, एवं तामलोभो णिक्खंतो कोयि तं लोभं अलोभेण दुगुंछइ जाव सव्वथा खीणो, कोयि पुण विणावि लोभेण निक्खमइ जहा भरहो राया चाउरंतचक्कवट्टी, एवं कोहो माणो माया, अहवा अणंताणुबंधी अप्पच्चक्खाण पच्चक्खाणावरणा तिन्निवि लोभा गहिता, तेहिं विणा णिक्खंतो, एवं कोहमाणमायावि तिण्णि तिण्णि, कोयि महावि लोभेणं णिक्खंतो सरागसंजमो घेप्पइ, णवि सो तेसिं खवणाए उट्ठितो अणिक्खंतो भवति, अहवा सह जहा गोविंदो णिक्खंतो, तंपि सेयं भवति, अहवा ओदणमुंडो जावि सावि पव्वज्जा होति अहगं पुण णरस्स सुहवइणिज्जो, अहगं पुण ओदणमुंडो अच्छरामज्झगतो विलसामि, एअं सकम्मे जाणइ पासइ भरहो जहेह राया, अण्णो देसक्खएणं पडिलेहाए णावकंखंति विसयादि, सम्मं उट्ठिते आयतट्ठीए, एस अणगारेत्ति पवुच्चति-भिसं वुच्चति, भणिता दढधितिणो, तव्विवक्खा अप्पसत्थगुणट्ठाणवत्तिणो विसयकसायवसगा, अलोभं लोभेण दुगुंछमाणा लद्धे कामे निगूहमाणा, अविणयितुं लोभं निक्खंता भिच्छुगमादी, अणिक्खंता वा सकम्मणो णो अणगारा पव्वुच्चंति, 'इत्थं गढिए लोए वसति' पमत्तो गिहिलोगो पासंडिलोगो वसति भोगेसु विसयकसायातिपमत्तो अदढधितित्ता अप्पसत्थरतिआउट्टो आयपरउभयहेउं अत्थोवज्जणपरो कालाकालसमुट्ठायी जाव एत्थ सत्थे पुणो २ पाताइवायमादिएसु जोगतियकरणतिएणं 'से यातबले' अप्पा मे बलितो भविस्सति अपरिभूतो वा, बलितो भोगे भुंजीहामी जुज्झिहामि वा वंसालंकारो वा मे भविस्सति, तेण मंसमज्जपाणण्हाणादीहिं सरीरपुट्ठी-

॥ ६० ॥

प्रत

वृत्यंक [७२-७६]

दीप

अनुक्रम [७३-७७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
२ उद्देशः
॥ ६१ ॥

खमेहिं अप्पाणं पोसेति, तित्तिरवट्टगलावगमादी सत्ते उच्छादयति, 'णातिबले' सयणसंबंधी ते मम वरं बलिया भवंतु, तेहिं बलिएहिं अहं बलिओ अपरिभूतो य भविस्सामि, एवं मित्तं सहवासाति, सो पेच्चतलोगणिमित्तं धिज्जाइये पोग्गलेणं भुंजावेंति, जण्णा य जयंति, एवमादि, देवबले पसत्थदेवबले य अपसत्थदेवबले य, पसत्थदेवबले दुब्बलियपूसमित्तप्पमुहेण संघेण देवयाए बलनिमित्तं काउस्सग्गो कओ, अप्पसत्थदेवबले छगलगमहिसपुरिसमादीहिं चंडियाईदेवयाणं जागा कीरंति, 'राजबले'त्ति वृत्त्यर्थं सेवते 'राजा त्राणमनर्थे मे, ततस्त्रिवर्गमेव च' त्रिवर्गं साधयिष्ये वा विजयिष्यामि वा परं 'चोरबले'त्ति चोरा मम भागं देहिंति दरिसिस्संति वा छिद्दे सत्तूणं मम रुयिता, अतिधीनो धूलीजंघा 'किविणा' विगलसरीरा 'समणा' चरगाति, एतेसिं अत्थत्थी जसत्थी धम्मार्थीय दयेंति 'इच्चेतेहिं' इति एतेहि विरूवरूवाणि णाम अणेगरूवाणि अण्णाणिवि जीवंतगदाणाणि मतकिच्चपुन्नदाणभरणादीणि, एवमादिविरूवरूवेहिं कज्जेहिं दंडं समारभति, पढिज्जइ य–'इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं दंडसमादाणं सपेहाए' दंडयति जेण सो दंडो, दंडो घातो मारणंति एगट्ठा, समत्तं आताणं समादाणं, सयं पेहाए सपेहाए, भया कज्जति, पावमोक्खा, ण केवलं आतबलातिणिमित्तं, कायदंडा कीरति रायचोरादीणं, अहवा सव्वाइं एयाइं भया कज्जंति, मा मे सरीरं दुब्बलं भविस्सइ, नातत्तो वा रुस्सिहिंति, देवयावि पुव्वाचारखंडणेणं रुस्सेज्जा, अतिहिमादीणवि देती, बलं लोगस्स गणमतो भविस्सति, संभोक्खो पमोक्खो तं मोक्खं मन्नमाणो चरगादीणं देंति, आसंसणा णाम पत्थणा, सा इह परत्थ य, तत्थ इहलोगासंसा रायादी वित्तिणिमित्तं सेविज्जंति, परलोइयाणि रत्तातीण करेंति, णिदाणोवहता वा, एगपुप्फुपादाणेणं एवमादी आसादेंति, 'तं परिण्णाय मेहावी' तदिति तं आयबलादि, अहवा सव्वं एतं जहुद्दिट्ठं जं सत्थपरिण्णाए जं च इह अज्झयणे पढमुद्देसए वुत्तं दुविहं

ज्ञातिबलादि

॥ ६१ ॥

प्रत
वृत्यंक
[७२-७६]

दीप
अनुक्रम
[७३-७७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ३ उद्देशः ॥ ६२ ॥

गुणट्ठाणं विसयकसायात्राणादि तहा कालाकालसमुट्ठाणि जराए य अभिभूतस्स परिवारपोसणपरिहारा णो हस्साते य० खणं च इंदियपरिहाणी मूढभावं च जं जत्थ जुज्जति तं दुविहाए परिण्णाए परिण्णाय रतिं अरतिं आउंटणं च जाव आसंसति, एवमादि दुविहाए परिण्णाए. मेरामेहावी णो पडिसेवे 'एतेहिं कज्जेहिं'ति जाइं एताइं आतबलादीणि उद्दिट्ठाइं 'णेव' ण इति पडिसेहे एवसद्दो अभिधारणे, सयं-अप्पणा दंडं समारभिज्जा छसु जीवनिकाएसु, णोवि अण्णेणं, अन्नंपि न समणुजाणेज्जा जोगतिगकरणतिगेणं, एवं मुसावायं जाव परिग्गहं, किं कारणं ?, जे सत्थे तेहिं हिंसादिएहिं पगारेहिं दंडेति, वक्खमाणं च, तुमंसि णाम, केण एतं पवेदितं ?, भण्णति-'एस मग्गे आयरिएहिं पवेदिते' एस इति णाणादिजुत्तो भावमग्गो णाणादि आयरिएहिं पगरिसेण साधु वा वेदीतो प्रवेदितो, तंमि भगवंपवेदिते मग्गे भगवतो गौरवा सव्वतित्थगरभत्ती संसारभीरुता 'जहित्थ कुसले णोवलिंपेज्जासि'त्ति दव्वे कुसले कुसे लुणाति दव्वकुसलो एवं भावकुसलोवि णोवलिंपेज्जासित्ति, लेवो अप्पसत्थगुणमूलट्ठाणं विसयकसाया मातापितादि अण्णतरजोगलेवो दकणिवातलेवो जो य उवरिगो ताणाति, तेण णोवलिंपेज्जासित्ति अप्पाहणिया ॥ एवं लोगविजयस्स द्वितीयोद्देशकः ॥

कसायविसया भणिओ भावलेवो, एत्थवि कसाया वण्णिज्जंति इति अणंतरसूत्रसंबंधो, आतबलादीण माणणत्थं कज्जंति कायदंडाइ य अतो परंपरसूत्रसंबंधो, सो माणो अणेगसो संसारे पत्तपुव्वोत्तिकाउं भण्णति 'से असइं उच्चागोते' से इति संसारी असइ-अणेगसो अणन्तसो वा उच्चं दाणमाणसकारारिहं गोत्तं, नीयं विवरीतं, तंपि असइं आसी भदंत !, नागार्जुनीयास्तु पढंति 'एगमेगे खलु जीवे अतीतद्धाए असईं उच्चागोए, असइं णीयागोए, कंडगट्ठयाए णो हीणो णो अतिरित्तो' तत्थ कंडगं

उच्चनीच-गोत्रादि

॥ ६२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्वितीय-अध्ययने तृतीय-उद्देशक: 'मदनिषेध' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[७७-८१]

दीप
अनुक्रम
[७८-८३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ३ उद्देशः ॥ ६३ ॥

उच्चनीचगोत्रादि

परिमाणं छेदोत्ति वा, जच्चियं कालं जाइमादीहिं विसिट्ठो भवति तं उच्चागोयकंडगं, विवरीतं इतरं, जातिविसिट्ठयाकंडगस्स जातिविहीणताकंडग पडिपक्खो, एवं कुलबलादीहिवि भाणियव्वं, अप्पाबहुयं कंडगट्ठयाए णो हीणे णो अतिरित्ते, उच्चागोयकंडएहिं एगभविएहि वा अणेगभविएहि वा णियागोयकंडगा णो हीणा णो अतिरित्ता, तत्थ उच्चगोयकंडगं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णीयगोयं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं, अंतोमुहुत्तेणावि एगतरं अंतरं कंडगं ण भवति, जतो य अणंतसो सव्वजीवेहिं उच्चत्तं णीयत्तं च पत्तपुव्वं अतो णो हीणो णो अतिरित्तो, पीहणं णाम मदनभिलासकयं पेमं, जो जातिहीणो सो जातिमंताणं पीहेति रायमातिणिक्खंताणं, परेण वा वुत्तो जहा तुमं कट्ठहारगादि निक्खंतो, ण तेसिं कुप्पेज्जा, इति वुत्ते णवि अरतिं कुज्जा इति, 'एवं संखाए' त्ति एवं जाणित्ता, किमिति परिगणित्ता? 'से असइं उच्चागोए परिन्ति,' जेण एवं परिगणितं-जहा मया अन्नेहि य जीवेहि अविसेसेण सव्वट्ठाणाइं अणेगसो पत्तपुव्वाइं, अतो तस्स विदितप्पणो के गोतावाते? के माणावातो?, जातिमादीणं अन्नतरेणं उववेतस्स गोतावातो भवति, सगुणपरिकप्पणाणिमित्तो माणो भवति, एवं के जातिवाते जाव इस्सरियवाते, कंसि वा एगे गिज्झेति?, ण हि केणइ किंचि उवट्ठाणं ण पत्तपुव्वं, अतो को रागी? कतरेहिं वा सद्दाइहि सुहगेहिं करिस्सति? जं तुमए णाणुभूतंति, भणितं च-"सर्वसुखाण्यपि बहुशः प्राप्तान्यटता मया तु संसारे। उच्चस्थानानि तथा तेन न मे विस्मयस्तेषु ॥१॥ कतरं वा णीयत्थाणं सद्दादीदुक्खं ण अणुहूयंति मया जो उव्वेविजामि, किंच-अन्नेहिंतो हीणं होऊण ण होति पुणो उत्तमो, उत्तमो वा हीणो 'होऊण चक्कवट्टी पुहविपती विमलमंडलच्छन्नो। सो चेव णाम तुच्छो अणाहसालोवगो होति ॥१॥' तम्हा पंडिते णो हरिसे-जातिमादीसंपण्णेण हरिसो ण कायव्वो, तदणुववेतेण हीलिज्जमाणेण ण कुप्पेयव्वं, कहं?, अयवाडगदिट्ठं-

॥ ६३ ॥

प्रत वृत्यंक [७७-८१]

दीप अनुक्रम [७८-८३]

तेण, किंच-इमंमि चेव भवे कोयि राया भवित्ता दासो भवति, कहं ?, जो हि कंडणिज्जितो गहितो य स दास इव भवती, स एव पुणो मुक्को तक्खणादेव राया, जहा उद्दायणेण पज्जोतो, णंदो वा खणेण राया जातो, रूवसंपण्णोवि खणेण विरूवी भवति काणितो कुंठितो वा, छायातो वा भस्सति, जहा सणंकुमारदेवोदाहरणं, कालंतरेण वा जराए वा विणा वा रूवविवज्जिओ भवति, जहा सणंकुमारस्स, एवं सेसावि मदट्ठाणा सपज्जाया भाणियव्वा, सो एवं उच्चाहि णिवेहि य गोतेहिं निविपज्जमाणो भूतेहिं जाण पडिलेह सातं, अहवा णामं च गोयं च पाएण सहगयाणि चेव भवंति, कहं ?, अंगपच्चंगभेदे सरीरिंदियविणासे वट्टमाणो मरणा असुभणामं बंधति, जातिकुलादिट्ठाणववरोवणे वट्टमाणो नीयं गोयमिति, ताणि य तब्भया चेव परेसिं ण कायव्वाणि, अतो भूतेहिं जाण पडिलेह सातं', जम्हा भूतेहिं जाणतित्ति जाणतो, किं जाणति ?–कम्मं जीवाजीवादि बंधहेउं तव्विवागं च जाणति, पडिलेहेहि–गवेसाहि सातं–सुहं, तव्विवक्खो असातं, तं पडिलेहेहि, कस्स कं पियं ? किं अणिट्ठं ?; जं जस्स अप्पितं तं ण कायव्वं, नागज्जुणिया पढंति–पुरिसेण खलु दुक्खविवागगवेसएणं पुव्विं ताव जीवाभिगमे कायव्वे, जाइं च इच्छिताणिच्छे, तं सातासातं वियाणिया हिंसोवरंती कायव्वा, एवं अहिंसतो, सो भूतसातगवेसओ अलियादिआसवदारविरतो जाव परिग्गहाओ, वयाणुपालणत्थं च उत्तरगुणा इच्छिज्जंति, तप्पसिद्धीए इमं भण्णति–'समिते एता अणुपस्सी' ईरियासमिती पढमवयअणुपालणत्थं, एवं सेसव्वतेहिवि जा जत्थ समीती जुज्जति सा वत्तव्वया, एयाए एतं उच्चनीयगोयगतिगहणं संसारं अणुपस्समाणो, अहवा एतं इच्छिताणिच्छितं सातासातं अणुपस्संतो भूतेहिं जाण पडिलेहि सातमिति वत्तते, उच्चानीयगोतप्पसिद्धिए अणेगरूवासु जोणीसु जहा पहिओ गच्छंतो (कहिंचि) सुहं वसति कहिंचि दुक्खं वसति कहिंचि गामे कहिंचि रण्णे

प्रत
वृत्यंक
[७७-
८१]

दीप
अनुक्रम
[७८-
८३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
॥ ६९ ॥

कहिंचि वणसंडे सीतलं सलिलं कहिंचि तव्विवरीयं एवं संसारेवि कहिंचि उच्चागोयं कहिंचि णीयंति, अहवा 'एयाणुपस्सि'त्ति अणेगरूवाओ जोणीए विरूवरूवे फासत्ति इट्ठाणिट्ठा फासिज्जंतिन्ति फासा, जहा अंधत्तं, अंधो दुविहो-दव्वे भावे य, दव्वंधो उवहतणेत्तो अंधतणतो य, भावंधो मिच्छादिट्ठी, दव्वभावे चउभंगो, पुढविमादि जाव तेइंदिया दोहिवि अंधा, सेसाण विभासा, बहिरत्तं ण सुणेति, मूतो तिविहो-जलमूतओ एलमूतओ मम्मणोत्ति, खुज्जो वामणो 'वडभे'त्ति जस्स वडभं पिट्ठीए णिग्गतं, सामो-कुट्ठी सबलत्तं-सिति, सह पमादेणंति कारणे कज्जुवयारा भणितं सकम्मेहि, एस उद्देसओ पायं पमाएणं गतो, से असइं उच्चागोयसि माणो गहितो, सह कोहेण सह मायाए अणेगरूवाओ जोणीओ पुव्वभणियाओ विरूवरूवे फासे संधाति, अहवा रोगातंका फासा तेसिं माणादिकसायाणं भूयाणं असायपवत्तीए य दोसे अबुज्झमाणो, तेण भण्णति 'बुज्झमाणे हतोवहते' अहवा जतो सो तत्थ अवाए बुज्झिज्ज ण मातातिकसाए करेज, अतो अबुज्झमाणे-णाणातितिविहबोहि अबुज्झमाणे हिंसादि-पवत्ते णरगादिउववातं उव्वट्टस्स अंधत्तादि ण बुज्झति, जहवा अप्पसत्थगुणमूलट्ठाणाणि य अरतिदोसे आतबलादिदोसे य एवमादि अबुज्झंते, हतोवहतो हतो डंडकसादिपहारेहिं उवहतो असुइआहारेण, जहा वाणियगस्स साहस्सो णउलओ पुरोहितेण अवहिओ, मग्गिज्जंतोवि ण देति, रण्णो णिवेदितं, ववहारे पराजितो, किं कससतं सहसि उदाहु गूहं भक्खयसि ?, भणति-कससतं सहामित्ति, कतिहिं पहारेहिं दिण्णेहिं भणति-अलं मे पहारेहिं, परिहारं खायामि, पच्छा थोवं खाइतं, णेच्छति, एवं पुणो पहारो, पुणो थोवं खादयति, एवं ते पहारा तं च गूहं खाती, एवं सो सव्वस्सहरणो कतो, हतो य, परिहारमलक्खणेण य अपंतेओ कतो, अहवा वक्किमिगादिसु उववण्णो हतो य उवहतो य, अहवा सण्णा समुदिसंता सेस अंतत्था ण विरहिता, किंतु सेसाण ?,

अंधत्वादिः

॥ ६९ ॥

प्रत
वृत्यंक
[७७-
८१]

दीप
अनुक्रम
[७८-
८३]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
॥ ६६ ॥

जातिमर-
णादि

अहवा दारिद्रं च रोगा य एवमादि, कहं ?, हतोवहतो भवति ?, भण्णति-'विणिविट्ठचित्ते एत्थ सत्थे पुणो पुणो' जो य अट्टिए अप्पसत्थगुणमूलट्ठाणेसु विसयकसाएसु पसत्तो पुणो २ पवत्तइ 'जाइमरणं'ति जणणं जातिमेवं मरणं, जं भणितं माणो मरणमाणो य, आवीचिमरणेण खणे खणे जायमाणे मरणमाणे श, 'अणुपरियट्टमाणो' संसारे परिभमंतो अयवाडग-दिट्ठंतेण वा 'वालग्गकोडिमित्तोवि पदेसो णत्थि कोयि लोगंमि । संसार संसरंतो जत्थ ण जातं मतं वावि ॥ १ ॥ एगे अण्णे वा देसा 'जीविग्रं पुढो पियं' जीविज्जइ जेणं तं जीवितं, पुढो-पत्तेयं, अहवा विहु-वित्थारे विच्छिन्नं जीवितं विभवेण, अहवा पिहप्पिहं जणस्स अण्णारिसं जीवितं पियं २ जवादीपाणाणं वीयारत्तं प्रियं अण्णेसिं ण, एत्थ मज्जति पिज्जति तेण अप्पियं, एगे-सिणंति, न सव्वेसिं, केयि दुक्खेहिं पीलिता तं दुक्खं जीवितं णेच्छंति उब्बंधणाईणि करेंति, अहवा एगेसिं असंजयाणं, संजता जीविते मरणे य अपडिबद्धा, वत्थिसु भोगणिमित्तं अबुज्झमाणा 'खेत्तवत्थुं ममायति' खित्तवत्थूणि पूर्वभणिताणि ममाइत-मिति ममाययमाणा, ममीकारातो य परिग्गहो भवति तेण 'आरत्तं'इसित्ति रत्तं आरतं, अहवा अचत्थं रत्तं तं कुसुंभातिणा 'विरत्तं' जं विरंगीहूतं विचित्तरंगं वा जाव पंचवर्णं अजिणाति सव्वा वत्थविही कोयि ण भुंजति काणिपियाणि पडितेतरो, मणीकुंडलग्रहणा सव्वाभरणजाति गहिता, सह हिरण्णेण घडिताघडितरूवं घेप्पति, हिरण्णं सुवण्णं वा, अहवा सव्वं कुवियं घेप्पति, इत्थीण य परिग्गहं सव्वओ गिज्झ परिगिज्झ 'तत्थेवारत्ता' तंमि खित्तातिपरिग्गहे, अहवा खित्तादिपरिग्गहे वट्टमाणो परिग्गह एव भवति ण एत्थ तवो वा दमो वत्ति, 'एत्थं'ति एयंमि परिग्गहे सपरिग्गहे वा माणुस्से णिरुद्धआसवस्स अणुवंधं सरीरं मणसंतावो, ण तवो, कोहादि इंदियआरंभपरिग्गहा अणियट्टचित्तेसु, ण एत्थ तवे वा दमे वा दीसति, अहवा मिच्छादिट्ठी ॥ ६६ ॥

प्रत वृत्यंक [७७-८१]
दीप अनुक्रम [७८-८३]

य चोदितवां, साहुं पूइज्जमाणं दट्ठुं भण्णंति–'ण एत्थ तवे वा दमे वा' निरत्थयं एते किलिस्संति, स किल 'संपुण्णो बाले जीवितुकामो' संपुण्णं–निव्वाघातं सयणमिचविसअविगलो सुयभोगे व, अहवा संपुण्णं चक्कवट्टिजीवियं तं महल्लं इच्छंतो दोहि य गलितो बालो रमणो वा वाकाएहिं, अच्चत्थं पुणो पुणो लप्पमाणो लालप्पमाणो, अबुज्झमाणो इति, किमिति ?–धम्मं अधम्मं वा अट्ठितदोसेणं छक्कायवहेणं अपसत्थगुणट्ठाणेणं दुल्लभं च पसत्थगुणट्ठाणं अबुज्झमाणा हियाहितकत्तव्वविवरीतनिवेसाण मूढा दुरप्पणा विसयगेहीए कागिणिअंबदिट्ठंतेण सुहत्थी तव्विवज्जयं करेइ, अत्थउवज्जणपरो वट्टति, परलोगे नरगादिसु दुक्खं-सुहस्स दुक्खं विपरिआसो तं उवेति 'इदमेव णाइ कंखंति' इदमिति जति तं संपुण्णकामभोगी जीवितं पुव्वभुत्ताति य बालजीवितं णाइकंखंति, जणभूता जणा जं भणितं–सयणे य जणे य समा०, जेण कम्मा चवंति य तं धुवं, कारणे कज्जुवयारा, किं च तं ?, तवो नाणादि वा, तं जा चरंति धुवचारिणो 'जाईमरणंपरिण्णाए' जायतीति जाती मरतीति मरणंति, मरणं संसारो, एतेहिं कम्मेहिं नरगादिगतिं जाति, एच्चिरं च जीविता मरति, एतं जाणणापरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए य 'चरे' इति अणुमतत्थे, असंकितो मणो जस्स भवति असंकितमणो, तत्थ भण्णति–कुदिट्ठिसु जो एवं असंकमणो स एव दढो स एव अविसंकमणो, दढचरित्तो वा दढो, अहवा जेण संकमिज्जंति तं संकमणं–नाणादितिएण मोक्खं संकमिज्जंति तत्थ चर, संकमणे दढेण य, एतं चिंतेयव्वं–काहामो परूपरा धम्मं, बहुविग्घाइं सेयाइं, अतो भण्णति–'णत्थि कालस्स णागमो' कलासमूहो कालो, को य सो ?, मृत्युकालो, ण सो खणो लवो मुहुत्तो वा जाव संवच्छरो विज्जइ जत्थ कालस्स णागमो, अतो अहिंसादिसु अप्पमत्तेणं खणलवमुहुत्तादिसु अप्पडिबज्झमाणेण भवितव्वं, कहं ?, जेण अप्पोवमेण 'सव्वे पाणा पियाउगा' पिओ अप्पा जेसिं ते पियगा, जो जाए जाईए जीवो आयाति सो तहिं

प्रत वृत्यंक [७७-८१]

दीप अनुक्रम [७८-८३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ॥ ६८ ॥

प्रियजीवितादिः

रमति, इच्छइ य जीविउं जो तेण अहिंसं पसंसंति, सुहं अस्सातेतिन्ति सुहसाता, कुलं पति जमण्णं कूलं गोतघातजातिघातेहिवि अणिट्ठेहि, सावयाणं सा सुई पडिकूला भवति, किमु सारीरेहिं दुक्खेहिं ?, अतो दुक्खपडिकूला, वहो दुविहो–तालणं मारणं वा, सो दुविहोवि अप्पियो, ‘पियजीविणो’त्ति तं कामभोगजीवितं जसोकित्तिजीवियं च निरुवक्कमं पियजीवितुकामत्ति, दुक्खियावि जीवितं कामेंति, किमु सुहिता ?, अतो जीवितुकामा ‘सव्वेसिं’ति णिरयतसेऽवि य जीवा कामभोगजीविताति, पसिद्धं, एतं ‘परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं’ समंता गहो परिग्गहो, दुपदं जहा दासीदासकम्मकरादि, चउप्पदंति जहा वत्थुं हत्थिअस्सगोमहिसादि अभिमुहं जुंजिय, जं भणितं अभिभूय, तंजहा–बंधरुंधतो सणाकसप्पहारादिएहि वाहित्ता तेहिं तेहिं कम्मेहिं णिजुंजइ ‘संसिंचियाण’त्ति परिग्गह इति वट्टति तं दुपदादिपरिग्गहं हिरण्णसुवण्णधणधन्नाणि वा संसिंचिय, जं भणितं संवड्ढिय, ‘तिविहेणं’ति जोगतियकरणतिएणं अप्पणा परेहिं उभएणं, अहवा चेयणं अचेयणं मीसं, मीयत इति मत्ता, अप्पा णाम ण दीहकालभोगखमा, विपरीया बहुया, अहवा पमाणतो सारमतो वा अप्पा वा बहुया वा, ‘से तत्थ गढिते चिट्ठति’ स इति असंजतो ‘तत्थे’ति तत्थ अप्पाए वा बहुयाए वा मुच्छिते गिद्धे गढिए अज्झोववण्णो, अहवा कयअकयलद्धअलद्धादिएहिं आसापासेहिं गढ्ढितो, तत्थेव चिट्ठति, ण ततो मणसावि उवरमति, ‘भोयणाए’त्ति भोयणत्थं ते पणिज्जितु पालेति ‘ततो से एगता विप्परिसिट्ठं’ ततो इति ततो धणाओ ततो वा उज्जाणकाला, एगया, ण सव्वता, कदाइ दिवा रातो वा, विविधेहिं प्रकारेहिं परिसिट्ठं विप्परिसिट्ठं, जं भणितं–वेइयं, उत्तसेसं, सम्मं भवति संभूतं, संमितं वा संभूतं ‘महद्दि’ति पहाणं बहुयं वा उवगरणं महंतं उवगरणं महोवगरणं तंपि आगतणिति तं विप्परिसिट्ठं एगया कयाइ, ण सव्वया, दाइयां विभयंति, णेव सव्वस्स अवहिज्जति,

॥ ६८ ॥

प्रत
वृत्यंक
[७७-८१]

दीप
अनुक्रम
[७८-८३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
३ उद्देशः
॥ ६९ ॥

पितिपिंडादि देति तेण दातारो, जहा केणइ रायपुत्तेण भट्टरज्जेणं सविक्कमेणं आणामितं, ततो तस्स रण्णो अण्णे दायियादि तं छिद्देण विक्कमेण वा मारित्ता अवहरंति, अहवा णिद्धणवणियपुत्तेण दव्वे उवज्जिते दाइया खुब्भंति अविभत्तसंपयुत्ता वयं, अदत्तहारी छिद्देण अक्कमित्ता वा, रायाणो वा अवहरंतित्ति, स राया परचक्केण वा, णस्सति चउप्पयादि सयमेव, अपयं देवताजोगेण, जहा तस्स पंडुमहुरदारगस्स विणस्सति, जं विणा परिभोगेण कालेण विणस्सइ जहा वत्थं सोत्तियावण्णं एवमादि, अहवा णावाए भिण्णाए सव्वं विणस्सइ, अगारं—गिहं तं डाहेण डज्झति, तत्थ कंसदूससुवण्णयमादीणं छण्हं पदाणं दुगसंजोगमादिया जाव छ संजोगत्ति भंगा कायव्वा इति ।'से परस्स अट्ठाए' इति सो परस्सत्थो णाम दाइयादीणं अत्था, एवं च वहघातादि कारेमाणो कारो, अहवा तत्थ बंधे सोगरियचारगपालादीणि कूरकम्माइं करेंति बालो-मूढो, जं भणितं अण्णाणीति, स कुज्जमाणो 'तेण दुक्खेण संमूढो' जं तेणत्ति तेण कूरजत्तणितेण दुक्खमिति—कम्मं मूढो—बालो रागदोसअभिभूततया कज्जाकज्जे अयाणंतो एस मूढो विवरीयभावो, विपरिआसो सुहत्थी दुक्खे बट्टति णरगादिसु, केणेयं पवेदितंति ?, भण्णति 'मुणिणा हु एतं पवेदितं' कतरेण मुणिणा ?, वद्धमाणसामिणा, गोतमप्रभृतीणं मुणीणं पवेदितं—आदितो वेदितं, ततो मुणीपरंपरण जाव अम्हं धम्मायरिया, सो एवं कूरेसु कम्मेसु वट्टमाणो मुढो विप्परियासभूतो मुणिणा पवेदिओ गिहत्थलोगो पासंडिलोगो वा 'अणोहंतराइं'ति, अहवा सो विपज्जासभूतो अणोहंतरो, अहवा जस्स णो सण्णा अहितो वा सो अणोहंतरो, दव्वोघो णदी समुद्दो वा, संसारसमुद्दो कम्मं च भावोघो, तं कुतित्थियाण ण तरेंति तेण अणोहंतरो ' एते ' इति जे उद्दिट्ठा कूरकम्मणो 'णो य ओहं तरित्तए'त्ति न य सयमवि कम्मगुरुगत्ता अणुवायउ ओहं तरित्तए, तिष्ठति तरति वा तमिति तीरं, तस्सवि तहेव, पारं णाम परकूलं

अपहारादि

॥ ६९ ॥

प्रत
वृत्यंक
[७७-
८१]

दीप
अनुक्रम
[७८-
८३]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः
२ अध्य०
३ उद्देश
॥ ७० ॥

आदानादि

अहवा सन्ति सण्णिगिद्धविप्पगिद्धकतो तीरपाराणं विसेसो, कहं अणोहंतरा ते भवंति ?, भण्णति ?—संसारभीतेहिं गिण्हियव्वं आदाणियं, किं च तं ?, पंचविहो आयारो, तंमि आदिणिये उ, अहवा सविव्वादसंठाणेण ण चिट्ठति ण करेति तं उवदेसं, एवं सो णो अप्पाणं तारयति, ण परं, तं तेसिं दरिसणं उवदेसो चिट्ठितं वा 'वितहं पप्प खेयण्णे' तेण प्रकारेण तहा वितथा कुतित्थिया करेंति, खेतण्णो पंडितो, तंमि इति तहिं अदोसी उवदेसट्ठाणे चिट्ठतीति आयरति, जं भणितं—ण अतियरति, तस्स एवंविहस्स नाणिस्स उद्देसो पासगस्स णत्थि, अहवा आदाणियस्स आणाए 'तंमि ठाणे', कतरे ठाणे ?, भण्णति—उद्धट्ठाणे, जं भणितं-संसारट्ठाणे ण चिट्ठइ, जो पुण तं आणं वितहं पप्प अखेतण्णो वितहं करित्ता अखेतण्णो अपंडितो सो तहिं चेव संसारट्ठाणे चिट्ठति, जो पुण एतं जहाउद्दिट्ठं लोगं एवं पस्सति, अहवा नो सण्णं आदिं काऊणं जहा विइस्सति तस्स, 'उद्देसो पासगस्स णत्थि' उद्दिस्सति अणेण उद्देसो, सो य नेरइयादित्तेण उद्दिस्सइ, अहवा ससरीरत्तेण, एवमादि णामकम्मविभागा सव्वे भाणियव्वा, अहवा चक्खुदरिसणत्तेण साताइ सुहदुक्खत्तेण कोहित्तेण चउभंगो उच्चागोयत्तेण एवं जावतिया उत्तरपगडीओ ताहिं उद्दिस्सति, पासगो—तित्थगरो गणहरादि वा, तप्पडिपक्खभूतो अपासगो, जं भणितं—बालो, सो एवंविहो 'बाले पुण णिहे कामसमणुण्णे' पुण विसेसणे, किं विसेसेति ?, ण केवलं वयबालो, पुट्ठोऽवि सो कज्जं अयाणओ बालो चेव, परीसहेहि णिहतो णिहो, अहवा चतुरंगं लद्धा जो अप्पाणं संजमतवेसु णिहेति सो णिहो, आयाणियस्स आणाए अवट्टमाणो संपुण्णं बालजीवितं जीवितुकामो कामे समणुमण्णमाणो पत्थेमाणो भाविज्जमाणो असमियदुक्खी, जं भणितं तं अणिज्जरितं, णरगादि उद्देसमाणेहिं उद्दिस्समाणो दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टति, आवट्टो भणितो, अणुगतो कम्मेहिं परियट्टति । लोकविजयाख्यद्वितीयाध्ययनस्य तृतीय उद्देशकः॥ ॥ ७० ॥

प्रत
वृत्यंक
[८२-
८५]

दीप
अनुक्रम
[८४-
८७]

रोगोत्पा-
दादि

भोगेहिं संगो ण कायव्वो पुव्वभणितो उद्देसगसंबंधो, सुत्तेण सह संबंधो अणंतरे परंपरे य, तत्थ अणंतरो दुक्खी दुक्खे अणुपरियट्टति, रोगावि दुक्खमेव भवति, 'ततो से एगता रोगसमुप्पाता' परंपरं तु 'बाले पुण णिहे कामसमणुण्णो' ते य कामा दुक्खमेव, अहवा अतिकामासत्तस्स इहेव भगंदरो अंतविहिमाति रोगा उप्पज्जंतिचिकाउं तेण 'ततो से एगया रोगा समुप्पज्जंति, 'ततो' इति कामसमणुण्णायाओ, कामा चेव कम्मा उ, कम्मा चेव य मरणं, मरणा नरओ, नरगा गब्भो जम्मं च, जातस्स रोगा, ततो से एगता, ततो परंपरएणं णिसेगकललअब्बुयपेसिघणगब्भपसवातिक्कमो दरिसितो, अहवा अत्थमारो अधिकतो, अत्थवती कामे सेवति, कामंतस्स 'ततो से एगया रोगसमुप्पाया' ततो इति जहभणितहेऊतो, एगता, ण सव्वता, कदायि ण उप्पज्जेज्ज काएवि यावत्थाए, 'सम्' इति एकीभावे असमत्तं वा वातादि उप्पज्जंति 'जेहिं वा सद्धिं संवसइ'त्ति इति–अणुमते सद्धिं–सह एगतो वसति, तंजहा–बंधूहिं मित्तेहिं सहवासेहिं वा, णियया णाम अप्पणो बंधवाति, एगता, ण सव्वता, 'पुव्व' मिति पढमं जया सो अरोगतो आसी सव्वकम्मसहो त तता तं सव्वे बंधवाति रायकुलं सभं उज्जाणं वा गच्छंतं अणुवयित्था, तं रोगावहंतं पुण ण अणुव्वयंति, तत्थ उदाहरणं—णंदिणी गणिया, सा चउसट्ठिमहिलागुणोववेया सहस्सलक्खा सिंगारागारचारुवेसा संगतहसित० विदिन्नछत्तचामरवालवीणिया, तं च रायकुलमतियच्छंतीं निज्जायंतिं वा केइ हडप्फहत्थगया एवं वीणाति जाव परिव्वयंति, तीसे य अण्णता मज्जमंसासिणीए भोगप्पसंगेण इति जागरिता, ताहे देहे रोगातंका समुप्पण्णा, णिकज्जाविया जाता, तीसे से णीयछगा अन्नं जोव्वणत्थं गणियं ठावेऊणं तं परिव्वयंति, सावि रायकुलमयिंति पच्छा परिव्वयंति अग्गओ गच्छइ, एवं गोज्झातिणोवि जोव्वणं गुणरूवसंपण्णं एवण्णं परिवयंति, सोवि पच्छा रोगिओ समाणो अन्नं ॥ ७१ ॥

द्विवितीय-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशक: 'भोगासक्ति' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[८२-८५]

दीप
अनुक्रम
[८४-८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
४ उद्देशः
॥ ७२ ॥

प्रत्येकसातादि

जोव्वणगुणरूवसंपण्णं परिव्वयति, अहवा णत्ताणो णडो वा कुट्टितो उदरितो वा जुंगितो वा लट्ठीवालो कीरति, सुखासणादि त्रा वहाविज्जंति, तं च अण्णं णत्रण्णं परिव्वयंति,'णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा' ताणसरणा पुव्वभणिता, अहवा इह रोगा अधिकृता तत्थ सम्मं रोगिस्स किरियं ताणं, वाहिउवसमो सरणं, जहा ते तव णालं ताणाए वा सरणाए वा 'जाणित्तु दुक्खं पत्तेय सातं'ति, एवं जाव एगेगं प्रति पत्तेयं, दुक्खं णाम कम्मं, तं च कामभोगाभिणिविट्ठचित्तेण रागदोसगुणजुतेण हिंसाइयासवद्दारेहिं वट्टमाणेणं पुत्तदारादीणं अप्पणो वा अत्थे पावं दुक्खं फलं अज्जिणितं तं कत्तुरेव पत्तेगसो भवति, ण जेसिं कए कयं तेसु संकमति,'सातं'ति एवं सातंपि पत्तेयं भवति, एवं जागरमाणावि केयि भोगे एव अणुवयंति, अहवा एवं जाणिय दुक्खं पत्तेयसातं च तम्हा भुत्तपुव्वे कामे णाणुस्सरेज्जा, पडुप्पण्णेवि न सेवेज्जा, अणागतेवि ण पत्थिज, अहवा एवं णचावि पत्तेयं सातासाते कम्मविवाए तहावि 'भोगामेव अणुसोयंति' अप्पइट्ठाणे नरए उववण्णो तत्थवि नरगवेयणाभिभूतो कुरुमती कुरुमति कुरुमतित्ति विलवमाणो, पिंडोलगतंदुलमच्छाण य उवलद्धो, तत्थ वेयणा उवलभति 'इह' माणुस्से एगे ण सव्वे, माणंतित्ति माणवा, धणं च तेसिं मूलकारणंतिकाउं तेण 'तिविहेण करणेणं उवज्जिणंति–अप्पं वा बहुयं वा, मीयतीति मत्ता, से तत्थ गढिते जाव विप्परियासुवेति' एतं पुव्वभणितं, एवं कामभोगे खेलासवे वंतासवे पित्तासवे जाव विप्पजहणिज्जे जाणित्ता तेसु 'आसं च छंदं च' आससति तमिति आसा–भोगाभिलासो आसा, छंदो णाम पराणुवत्ती, अणासंसंतोवि कोपि पराणुवत्तीए अकुसलं आरभति, तंपि अ साहू 'विकिंचि'त्ति उज्झाहि 'धीरो' बुद्धिमां, भोगासाए पराणुवत्तीए य किं भवति ?, अतो भण्णति–'तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु' अहवा अप्पमायं, अणंतरपमाओ तदवायदरिसणत्थं भण्णति–'तुमं चेव तं सल्लं, अहवा परीसहोदये अप्पाण-

॥ ७२ ॥

प्रत वृत्यंक [८२-८५]

दीप अनुक्रम [८४-८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ४ उद्देशः ॥ ७३ ॥

आशादित्यागः

मेव माहू उवालभति–'तुमं चेव तं सल्लं' तुमं चेव सो जो एयफलाइं कम्माइं कितवां, ण विणट्ठखाणिओ आहट्टु आणिओ, तदंते दुक्खं अणुभवसि, अहवा जो एतं कामभोगेहिं आसं छंदं च न छिंदिहिति पच्छा सो चेव दुक्खं अणुभविहिति, तत्थ दव्वसल्ले उदाहरणं, विज्जस्स पुत्तो ण संधितं पढितो, णिविट्ठो य, से मूढगब्भा, ससुरेण अच्छीणि बंधित्ता गब्भं तो परामुसित्ता मतोत्ति काउं ताहे अंगुलिसत्थएणं छिंदिय छिंदिय चंगोउए ताव अंगमंगाइं संघातिताइं जाव णीहरितो, एवं तीण्णि वारा, अचत्थं लज्जंतेण सत्थगं मुक्कं, पच्छा सो मतो, केइ पुणाई भणंति–जहा तेण तं सत्थगं नीयगब्भे तत्थेव मुक्कं, तेण घट्टं, तेण सा मारिता, भावसल्लो अट्ठविहं कम्मं तस्स नरगादि विवागो, जो पुण सो कामभोगासच्छंदं छेत्ता धीरो कामभोगे अवउज्झइ तस्स भण्णति–'जेण सिया ते न सिया' 'जेणं'ति जेणप्पगारेण कम्मं बंधंति जेहिं हेऊहिं ते ण करणीया तुमे हेतू, भोगपमत्ता पुण इणमेव णावबुज्झंति–जं एवं सल्लमाहट्टु दुक्खं भवति, जेण य ण भवति के?, 'जे जणा मोहपाउडा' जणंतीति जणा मोहो-रागो विग्घो–वक्खोडो अहवा दंसणमोह चरित्तमोहेण पाउडा, जं भणितं छादिता, इह परत्थ य मज्झत्थाएगं वुज्झति, सव्वत्थवि पुरिसपण्णवणत्ति-काउं मोहणिज्जम्म य इत्थीओ गरुयाओत्तिकाउं भण्णति–जो से आसच्छंदाभिभूतो कूराणि कम्माणि करेंतो णरगफलविवागसल्लं आहट्टु तप्फलं अबुज्झमाणे मोहपाउडो लोगो सो थीभि भिसं बहुपगारेहिं वा वहितो पव्वहितो, जं भणितं-वसीकतो,'ते भो वदंति' ते थीहिं वहिता तप्परायणा लोइया भो इति सिस्सामंतणं वदंतित्ति विमत्था भणंती भो 'एताइ जाइं आयतणाइं' आइज्जंति अस्ससंति वा आयतणं तं अप्पसत्थं पसत्थं च, पसत्थं नाणाई अप्पसत्थं विसया इत्थीओ अण्णाणादि, स तु पसत्थ-भावायतणवाहिरो अणायतणाइं आयतणाइं करेति, ताणि य अस्सियंतो 'से दुक्खाए' स इति सो थीवसगो बालो दुक्खाएत्ति–

॥ ७३ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८२-
८५]

दीप
अनुक्रम
[८४-
८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
४ उद्देश
॥ ७४ ॥

संसारदुक्खस्स आयतणं भवति दुक्खाए 'मोहाए'त्ति मोहणिज्जकम्मं वड्डेइ, अहवा मोहोऽत्र विसयासत्तो कज्जं अकज्जं वा ण याणति, जहा सो पिंडारो जोण्हत्तिकाउं मज्झण्णे पासुत्तउट्ठिओ कुरत्थाए छायासु लिकमाणो गच्छंतो, कहिओ पुच्छिओ य हम्ममाणो भण्णति–परदारणिमित्तं वच्चामि, रन्ना मारिओ, 'माराए'त्ति मारिज्जइ, अहवा अतिप्पसंगा अलहमाणो मरति, सुणिज्जंति य बहवे इच्छियइत्थीओ अलभमाणा अग्गिमाइपविट्ठा, अहवा 'पढमे सोयति बेगे बितिए जाव दसमे मरति' अतो माराए, 'णरयाए'त्ति मतो नरएसु उववज्जइ, ततो उव्वट्टित्ता तिरिएसु, नरगतिरिक्खजोणिएहिं अणेगाइं भवग्गहणाइं अणुपरियट्टति, सो एवं तासु गतीसु अडमाणो 'सततं मूढो' सततं-निरंतरं दंसणचरित्तमोहणेणं कम्मेणं मूढो, इमं जिणदेसियं धम्मं नाभिजाणतित्ति, जओ एवं ते 'उदाहु वीरे' उत्तं उत्ततं वा आहु उदाहु, धीरो जाणतो, ण पमाओ अप्पमादो, कहिं अपमाओ ? 'महामोहे' महामोहो णाम स्त्रीनपुंसगवेदा, इत्थी इत्थिवेदेण उदिण्णेण पुरिसं पत्थयति, एवं इतरेवि, बंभदत्तपुरोहियआहरणं, अहवा जा सा सा सा दिट्ठंतो, जहा सा पंचण्ह चोरसयाणं महयदारिया भज्जा जाता, जतो एवं तेण विसयकसायमोहपरिक्खणट्ठा मुहुत्तमवि णप्पमाओ 'अलं कुसलस्स पमाएणं' अलंसद्दो निवारणे अट्ठविहभावकुसे लुणातीति भावकुसलो, पमादो पंचविहो, किं आलंबणं करेंत्ता पमाओ ण कायव्वो ?, भण्णति–'संतिमरणं सपेहाए' समणं संति, जं भणितं-निव्वाणं, मरणं संसार एव, संती य मरणं च संतिमरणं तं, पेहाए णाम पेक्खणा तं संतिमरणं च पेक्खिता, अलं कुसलस्स पमाएणंति वट्टति, अहवा संती-अव्वाबाहं भवति, मरणो उ संसारो, अतो संतिमरणं पेहाए, किं च 'भेउरधम्मं सपेहाए' भिज्जाणधम्मं सरीरं अणिच्चं पेहाए, अलं कुसलस्स पमादेणंति वट्टति, अहवा वाहीए विवागेणं वा भिज्जतीति भेउरं 'णालं पस्स' तव एते कामभोगा भुज्जमाणावि पज्जत्ता न भवंति, एवं पस्स तं,

सीतो
दुःखादि

॥ ७४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[८२-
८५]

दीप
अनुक्रम
[८४-
८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
४ उद्देशः
॥ ७५ ॥

अतिपात-वर्जनं

भणितं च—“नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां, नापगानां महोदधिः । नान्तकृत्सर्वभूतानां, न पुंसां वामलोचना ॥१॥” अयं ताव अपजत्ता विसयसुहत्ति पास, विसयसमुत्थं दुक्खं ण कोयि वारेति ततो तेण अलं तव कामभोगेहिंति वक्कसेसं, अहवा अव्वाबाहसुहं अलं तव सुहाएत्ति, अचिन्तव्वमरणस्स कतो सुहं ?, तेणं अव्वाबाहमेव तवालं सुहाए, दुक्खं च इत्तरमिति, ‘एयं पस्स मुणी’ एतमिति पच्चक्खीकरणं कामभोगीणं दुक्खं महब्भयकरं, भणियं च—“एत्तो व उण्हतरीया अण्णा का वेयणा गणिज्जंती ?। जं कामवाहिगहितो डज्झति किर चंदकिरणेहिं ॥ १ ॥” हिंसादिसु य आसवदारेहिं कामभोगसत्तो पवत्तति, तेसिं च इहेव महब्भयं पास, तंजहा—पुरिसवहगअलियचोरियपरदारियाण मारडंडणजिब्भछेदवंधवहघातातिणि इह लोगे परलोगे णरगादिसु उववातं पास, अतो विसएहिं उवरमा, तेण य दिट्ठं जो उवरमति, सा य अहिंसादी उवरति तासि पसिद्धीए भण्णति—‘णातिवातिज्ज य कंचणं’ ण इति प्रतिषेधे अतिवातणं अतिवातो ‘कंचणं’ति किंचिदपि तसं थावरं वा, एवं मुसावायातातति आसवा भाणियव्वा, जो य हिंसातिआसवद्दारविरतो ‘एस वीरे पसंसिते’ एस एवेगो वीरो—विरायति विदालयति संजमवीरिएणं वीरो पसंसणिज्जो पसंसितो, पढिज्जइ य- ‘णमंसिते’ णमंसणिज्जो णमंसितो—वंदणिज्जो, कतरो वीरो ?, जो भणितो—थासं च छंदं च विगिंच जे पसत्था आलावगा ते सव्वे भाणियव्वा, अप्पसत्थविवज्जियो य जाव णातिवातिज्ज कंचणं, एस वीरे पसंसिते, इमो य वीरो पसंसितो—‘जे ण णिव्विज्जति अदाणाए’ णिव्वेदो णाम अप्पणिंदा, अलब्भमाणा णिव्विंदति अप्पाणं—किं मम एताए दुल्लभलाभाए पव्वज्जाए गहियाए ?, अहवा अण्णे लभंति अहं ण लभामि वराओ, अणिव्वेदे ढंढो अणगारो उदाहरणं, ण से देति ण कुप्पेज्जा, तत्थ आलंबणं “बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमसाइमं । ण तत्थ पंडितो कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो व णो ॥१॥ अहवा

॥ ७५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [८२-८५]

दीप अनुक्रम [८४-८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ५ उद्देश ॥ ७६ ॥

अल्पेऽपि अनिन्दा

मे अंतराइयं कम्मं उदिण्णं, एवं लाभालाभसमचित्तो थोवं लद्धुं ण खिसए थोवं-अपज्जत्तं अहवा कतीइ सित्थाइं णीणिताइं परिमुसिऊणं भणति-सिद्धो ओदणो आणेहि भिक्खं, अथवा ते घेत्तुं हत्थेणं अचणियं काउं भणइ-कया अचणिया, आणेहि भिक्खं, अहवा भणइ-लद्धं लोणं, भिक्खं आणेहि, अहवा भणति-धिरत्थु एरिसाए भिक्खाए, एरिस एगया थेरत्तासेणं एवमादी खिसा, लद्धे अलद्धे वा पडिसेहिओ परिणमिज्जा, पडिसेहिओ-अतित्थावितो, तत्थ ण ठाणं कातुं इच्छइ, ण वा दीणविमाणो भवति, ण वा रुडंतो परिणमति, न वा 'दिट्ठा हि कसेरुमती अणुभूयासि कसेरुमती। पीतं च ते पाणियतं वरि तव णाम न दंसणयं ॥१॥ पडिज्जइ य-'पडिलाभितो परीणमे, णवोवासं चेव कुज्जा' तंजहा-दिण्णं अहो कयत्थं सुलद्धं चेव माणुस्सगं जम्मजीवितफलं एवमादी ण कुज्जा 'एतं मोणं समणुवासे' एतंति जं वुदि मुणिभावो मोणं, सम्मंति, ण पूयासक्कारगारवट्ठाए, ण वा णिदाणोवहतं, गणधरादीहि उसितं वसति अणुवसति अणुवासिज्जासित्तिबेमि ॥ एवमायारे द्वितीयस्य चतुर्थः ॥

संबंधो स एव, लोगणिस्सितेणं संजमो कायव्वो, अणंतरसुत्तं तु 'एतं मोणं समणुवासेज्जा संमं'ति, ण पूयाहेउं, इहवि सम्मं आहारउग्गमो चिंतिज्जइ, परंपरसुत्ते भिक्खायरियाधिगारो वदति-पडिलाभितो परिणमेइ, इहंपि सो चेव भिक्खायरियाहिगारो, तं पुण जेसु रंधणाहिगारो वट्टति तेसु पडिलाभिज्जति, ताणि य अस्सितो विहरति, अणस्सियस्स कतो धम्मसाहणाइं ?, साहणअभावे कतो धम्मो ?, भणियं च-"धम्मं चरमाणस्स पंच णिस्सट्ठाणा पण्णत्ता०" (स्थानांग) ताणि तु साहणाणि वत्थपत्ताहारआसणसयणाणाति, तत्थवि सव्वेसिं आहारो गरुयतरोत्तिकाउं 'जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'जं इति अणुद्दिट्ठस्स उद्देसे, विरूवरूवाणि, जं भणितं-अणेगरूवाणि, तं तु छण्हवि कायाणं किंचि सकायसत्थं, एते काया परोपरसत्थाणि पायं भवंति, ण य अग्गि- ॥ ७६ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्‌वितीय-अध्ययने पंचम-उद्देशक: 'लोकनिश्रा' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[८६-
९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-
९७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देशः
॥ ७७ ॥

अंतरेण जागो कीरति, अग्गिसमारंभे य णियमा छक्कायघातो, लोकतीति लोगो, असंजयलोगस्स पागकम्मसमारंभा, ते किमत्थं कीरति ?, अप्पणो से पुत्ताणं, पढिज्जइ य-'जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं विरूवरूवाणं अट्ठाए तंजहा-अप्पणो से' अप्पनिमित्तं अप्पणो चेव कोइ यागं करेंति, जहा अभणिज्जिओ अणाहा व रंडा एवमादि, अहवा अप्पणो पुत्ताणं च साहारणं, एवं धूयाणवि 'णातीणं'ति पुव्वावरसंबंधाणं णीयल्लगाणं, धीयंति धीयते वा धाइ, रायीणंति सामी चारभडाण वा दासाणं दासीणं कम्मगराणं कम्मगरीणंति एतेसिं कठथं, आदिसति आएसं वा करेति, जं भणितं-पाहुणओ 'पुढो पहेणाए'त्ति पिहु वित्थारे, अणेगप्पगारप-त्थयणत्थे तंजहा-जामातुगाणं मित्ताणं, ते य एते जहुद्दिट्ठा पुत्तादि अण्णेसिं च सहज्जगसहवासादीणं पहेणयाइं दिज्जंति, पहेणंति वा उक्खित्तभत्तंति वा एगट्ठा, सामा-रत्ती सामाए असणं सामासणं सामासणत्थं सामासाए, पादे आसणं पातरासणं पातो असणत्थं पातरासाय, एतेसिं सव्वेसिं पुत्तादीणं, सायं पादो य भत्तं दिज्जइ से, किं च एक्कालियं ?, अतो सामासाए पातरासाए, एतेसिं चेव अप्पातीणं अट्ठा सण्णिधिसंचयो कीरति, सन्निहाणं सन्निही, तत्थ खीरदधियोदणवंजणादीणि विणासिदव्वाइं सन्निहि, तेल्लगुणाईणि अविणासियदव्वाणि संचयो, धणधण्णवत्थाईणि य, संजयणं संजमो, 'इहं'ति मणुस्सलोगे 'एगेसिं च' त्ति ण सव्वेसिं, केयि तद्दिवसनिबद्धमित्तसंतुट्ठा भवंति, 'समुट्ठिते अणगारे'त्ति संमं संगतं वा संजमउत्थाणेण उट्ठितो समुट्ठितो, अणगारो भणितो, आयरंति आयरिज्जते वा आयरिए-खित्तायरियादि, इह तु विरतेण चरित्तारिएण अहीगारो, आयरिया पण्णा जस्स स भवति आयरियपण्णो, आयरिया दिट्ठी जस्स स भवति आयरियदिट्ठी,'अयं संधि'त्ति अयमिति प्रत्यक्षीकरणे संधाणं संधि, जं भणितं-भिक्खाकालो, अकालचारिस्स दोसा भाणियव्वा, उस्सग्गेण ततियपोरुसीए, अववातेण जाव सूरो

यागादि

॥ ७७ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८६-९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देश
॥ ७८ ॥

आमगंधिवर्जनादि

धरति, अहवा नाणदंसणचरित्ताइं भावसंधी ताइं लभित्ता 'से ण आतिए ण आतियावए' अणेसणिज्जं णातिए णातियावए णण्णं–ण अण्णमणुमोदए, अहवा णातिए णातियावइत्ति परकडपरणिट्ठितंसि सइंगालं सधूमं च बिलमिव पण्णगभूतेणं सइं (सयं) न आतिए आइयावए, सो एवं पिंडसंधिवियाणओ अणेसणिज्जविवज्जओ 'सव्वामगंधं परिण्णाय' अहवा कयरो सो संधी जो अणेसणिज्जं णाइयति णातियावयतेत्ति ?, तं पुण अणेसणिज्जं 'सव्वामगंधं परिण्णाय' सभावा ण अविवरीतं आमं, दव्वे भावे य चउभंगो, दव्वामं आमं दव्वं, भावामं उग्गमदोसो, अहवा आमग्गहणा उग्गमकोडी गंधग्गहणा विसोधिकोडी गहिता, एवं दुविहपरिण्णाए परिण्णाय 'निरामगंधो परिव्वए' ण तस्स आमं गंधो वा विज्जती निरामगंधो, सव्वतो वए परिव्वए, सो एवं निरामगंधो परिव्वयंतो 'अदिस्समाणो' न दिस्समाणो अदिस्समाणो 'कयविक्कयेहिं' किणणं कओ विकीणणं विकयो न किणाति विकिणाति वा सो, कयविकये न दिस्सति, कीतकडग्गहणा सेसावि उग्गमदोसा गहिता, उग्गमदोसग्गहणा उप्पायणादोसा एसणादोसा य सूयिया, अहवा ण किणे ण किणावए किणंतं णाणुमोदए, तिण्णि विसोहीकोडीओ गहियाओ, ण हणेइ ण हणावए हणंतं णाणुमोदए तिण्णि आमकोडीओ गहियाओ, ण पये ण पयावए पयंतं नाणुमोदए तिण्णि गंधकोडीओ गहियाओ, अविसोधिकोडीओवि वुच्चंति, एवं णवकोडीपरिसुद्धं विगइंगालं विगतधूमं, एवमादि पिंडदोसे परिहरंतो पिंडणिमित्तं वा अडंतो 'से कालण्णे बलण्णे' कालं जाणइ सुभिक्खदुब्भिक्खं दिवसपमाणं रत्तिपमाणं, कालं वा जं वा जत्थ काले कायव्वं, जो वा जत्थ भिक्खाकालो, काले चरंतस्स उज्जमो सफलो भवति, अकाले विफलं, 'बलण्णो'त्ति अप्पपरकतं बलं जाणति, ताव अडति जाव सकेति पडिनियत्तो भोत्तुं, अतिपरिस्संतो तं न तरति भोत्तुं, जो पुण सति बले काले लाभे य णियत्तति सो किं अण्णेसिं दाहिति ?, ॥ ७८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[८६-९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देशः
॥ ७९ ॥

मात्रज्ञादि

मत्तं जाणाति मातण्णो अप्पणो जस्स वा दायव्वं उभयस्स वा 'अद्धमसणस्स०' एतं साधारणे काले जाव जहिं काले मत्ता, अहवा वत्थुं वत्थुं आसज्ज मत्ता भवति, खित्तं जाणति खित्तण्णो, भिक्खायरियाकुसलो, जेसु वा खेत्तेसु पडिमाए कप्पेण वा हिंडिज्जति दूरं वा पविसज्जति ण दूरं, एवमादी खित्तं जाणति खित्तण्णो, खणण्णो णाम निव्वावारत्ता ण रुचति वीसति कहेति वा जेण अणेसणा भवति, अण्णेण वा कोउएण आगमणेण वा वाउला, विणयण्णो णाम देवतगुरुसमीवे वा जहा तहा परगिहं ण पविसइ, भणियं च–'दवदवस्स ण चरेज्जा, ण य अतिभूमिं गच्छेज्जा, ण दीणो ण गव्वितो; ण इंदियाणि आलोएज्जा, ण गुज्झथाणाइं आभरणादीणि य चिरं निरिक्खए, ण मिहुकहासु उवधारणं देज्जा', एवमादि विणयण्णो, आतपरउभयसमए जो मुणइ स समयण्णो, अणेसणादोसा, पुच्छिओ, को एत्थ दोसो?, सुहं उत्तरं देहिति, किं च 'समणुण्णा परिसंकी' अविय एरिसगं गिहीण वारेंता गिण्हंति असढभावा सुविसुद्धं एसियं समणा,'भावण्णे'त्ति देंतस्स पियमप्पियं भावं जाणइ भावण्णो, अहवा अभोज्जे गमणातिया 'परिग्गहं अमामीणे'ति परिग्गहो णाम अतिरित्तं संजमोवकरणातो जं भंडयं, भणितं च-जं जुज्जति उवगारे उवगरणं तंसि होति उवगरणं' इह तु आहाराधिकारे वट्टमाणे जतियं अणेसणिज्जं किंचि दव्वं तं संजमस्स उवघातोत्तिकाउं जिणेहिं पडिकुट्ठं भवतित्ति, एसणिज्जंपि अतिमत्ताए ण घित्तव्वं, मत्ताजुत्तंपि ण एतं मम गुरुमाईणं ण एतं, 'कालेऽणुट्ठाए' सति य उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसगारपरक्कमे, आह–जति उट्ठाणबलाण एगट्ठा तं तेण बलग्गहणा उट्ठाणग्गहणा य पुणरुत्तं एसणिज्जंति, भण्णति–अव्विवरीयकारणा ण पुणरुत्तं, तत्थ नाणं इहं करणं, कालो बलं खित्तं अव्विवरीयं आयरियव्वं तेण ण पुणरुत्तं, 'अपडिण्णो' णाम अहं एगो उवभुंजेहामि अण्णोवि एतं गुरुमादी भोक्खंति पाहंति वा, एयाए परिण्णाए गिण्हइ, ण आयवडियाए, ॥ ७९ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८६-
९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-
९७]

तेण अपडिण्णो, अहवा अपडिण्णायेसु कुलेसु गिण्हइ, ण य एतं परिण्णं करित्ता गच्छति जहा अमुगकुलाणि गच्छीहामि सो अपडिण्णो, जो विकरणो एगागी सोऽवि णाणादीणं अट्ठाए गेण्हति, 'अयं पिंडसंधी'ति आढवित्ता जाव 'कालेऽणुट्ठाए अपडिण्णो' एतेसिं एगाहियारिएहिं सुत्तेहिं एक्कारस पिंडेसणाओ णिज्जूढाओ। 'दुहओ चित्ता' रागं दोसं च अणेसणिज्जं रागदोसेहिं चिप्पइ भुंजति वा तेण ते दोऽवि छिच्चा-त्रोडित्ता छित्तुं, णियतं जाति णियाति, अहवा दुहतो छेत्ता भोयणे सइंगालं सधूमं उग्गमकोडि-विसोधिकोडिदोसे० य, वत्थग्गहणेणं खोमिया गहिया, पडिग्गहग्गहणेणं सव्वाइं पाताइं सूयिताइं, कंबलग्गहणेणं उण्णियाणि सूयिताइं, पाउरणअत्थुरणपत्ताणिज्जोगो पादेसु, पायपोंछणग्गहणेणं रयहरणं, एवमोहिओ अवग्गहिओ य सव्वो सूयितो भवति, एत्तो वत्थेसणपाणेसणाओ निज्जूढाओ, अवगिज्झतीति उग्गहो पंचविहो, तंजहा–देविंदोग्गहो राउग्गहो गाहावइ० सागारिय० साहम्मिय० एत्थ सव्वाओ उग्गहपडिमाओ गहियाओ, एत्तो चेव निज्जूढाओ, उग्गहकप्पओ एत्थ चेव सुत्ते कीरति, कडासणं सहायि आसणाणि, जं भणितं भत्तट्ठाए, अहवा कडग्गहणा संथारगा गहिता, ते ततिए सिज्जाउद्देसए वण्णिज्जंति, आसणगाहणा सेज्जा सूयिता, एत्तो सुत्ता सेज्जा णिज्जूढा, एतेसिं सव्वेसिं वत्थपादाणं सव्वामगंधं परिण्णाय अदिस्समाणो कयविक्कएहिं से ण किणे ण किणावए किणंतं णाणुजाणए तिविहेण जोगतिय० से कालण्णे एवं सव्वोगरणाणवि जं जत्थ संभवति तं तहा भाणियव्वं, एयाणि पुण आहारादीणि केसु जाएज्जा?, भण्णति–'एतेसु चेव जाएज्जा' 'एते' इति जे ते पुव्वं भणिता जमिणं विरूवरूवेहिं तंजहा अप्पणो से पुत्ताणं एवमादि, एतेसु सिज्जाआहाराति आयट्ठाए णिट्ठियाणि जाएज्जा–मग्गिज्जा, जाएत्ता लद्धा णिरामगंधाणि उवजीविज्जा, सो एवं जायमाणो जता लभे तदा लद्धे अणगारो पुव्वभणितो मात्रा–परिमाणं जहा ण पच्छाकम्मं करेति

प्रत
वृत्यंक
[८६-
९५]
दीप
अनुक्रम
[८८-
९७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देशः
॥ ८१ ॥

एषणाध्यय-
नोद्वारादि

जहा वा ण परिट्ठावाणिया भवति तं च मायं जणिज्जा 'से जहेतं भगवया' 'से'त्ति निद्देसे जहेव एयं–आहारे मत्तापमाणं भणियं भगवया वद्धमाणेणं तहेव इमंपि जाणित्ता आयरियव्वं, अहवा से जहेतं आहारमत्तापरिमाणं एवं वत्थे पत्ते उग्गहे सेज्जासंथारगेसु य सव्वत्थ जाणियव्वं, णेव अतिरित्तउवहिणा भवियव्वं, ण वा अतिरित्तसिज्जासणिएणं, अहवा जं भणितं जं च भणिहिति तं तहेव आयरियव्वं, एवं भगवया पवेदितं, लाभोत्ति ण मज्जेज्जति लाभे सति मदो न कायव्वो, जहा अहं लभामि, सेसा ण लभंति, 'अलाभे व ण सोएज्जा' अहं मंदभग्गो न लभामि, भणियं च–"लभ्यते लभ्यते साधु, साधु एव न लभ्यते। अलब्धे तपसो वृद्धिर्लब्धे देहस्य धारणा ॥ १ ॥ 'बहुं लद्धुं ण णिहे' अपिपदत्थे बहुंपि णिढुं पणीतं वा भुत्त-सेसं ण णिहे, किं पुण अप्पं ?, णिहेत्ति रत्तिं परिवसावेतीति, पगासं अप्पगासं वा, एयाणि आहारादीणि उप्पायंतो परिग्गहा ओसक्केज्ज, अवसक्कणं अपवत्तणं, अहं एतं आहारं वत्थं सयं परिभुंजीहामि, ण अण्णस्स दाहामि, एताओ सयंगाहपरिग्गहाओ अप्पाणं ओसक्के, आयरियसंतियं एतं, अणेसणिज्जं च वज्जेति, मुच्छं वा ण करेति, एवं ओसक्कियं भवति, अतिपसत्तं लक्खणं बहुयंपि लद्धुं ण णिहे, परिग्गहतो अप्पाणं ओसक्केज्जा, जं वत्थपत्तादीणिवि तहेव भण्णिहिति, तेण भण्णइ–'अण्णहा' अण्ण-पगारेणं अण्णहा, वत्थपत्तादीणि अप्पाणि दव्वाणि ण णिहेयव्वाइं, किंतु बहूणि ण णिहेयव्वाइं ?, अहवा 'अण्णहा पासे'ति एयं धम्मोवगरणं, ण तेण विणा सकेति धम्मो णिप्फादयित्तुं, तेण ण ताइं परिहारयति, अहवा जहा घरत्था परिग्गहबुद्धिए ण तहा मएवि, किंतु ?, मम एतं आयरियसंतगं धम्मोवगरणं, जहा अस्सस्स अण्णं भंडं, अहवा समुद्दे ण विणा तरणेण तरिज्जति, पढिज्जइ य–'अण्णतरेण पासाएण परिहरिज्जा' इमं अण्णं इमं च अन्नं अन्नतरं, पासागं णाम णीसरणोवातो, तंजहा–ण मम एतं,

॥ ८१ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८६-
९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-
९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देशः
॥ ८२ ॥

आयरियसंतगं, गिण्हामि परिभुंजामि वा, कोयि परित्ता अद्धाणणिगता वा एहिंति तेसिं दाहामि, नाणादिअट्ठाए वा परिभुंजंति, ण दप्पट्ठा, जिणकप्पियादीवि नाणादिनिमित्तं परिभुंजंति, परिहारो दुविहो–धारणापरिहारो य उवभोगपरिहारो य, दुविहेणवि जहाकालं जहादेसं च परिहरिज्जा 'एस मग्गे' एस पच्चक्खीकरणे, नाणादिमग्गो तस्संधणहेउं पिंडउवगरणसेज्जाउवाहिसंधाया नाणादी य 'आयरिएहिं पवेदितं' णिच्चं अप्पणिज्जे गुरुसु य बहुवयणं, वद्धमाणसामिणा सव्वतित्थगरेहिं वा पवेदितो, साधु आदितो वा वेदितो प्रवेदितो, ण सेच्छया आसत्तिमता वा, जहा बोडिएण धम्मकुचगकडसागरादि सेच्छया गहिता तहा णवि, जह वा सातिमोग्गहेहि बुद्धवयीकरित्ता पगासितं तहा णवि, अतो सत्थगोरवकारणा आयरियग्गहणं, अतो तंमि आयरियपवेदिते मग्गे 'जहित्थ कुसलो' जेणप्पगारेण जह, कुसलो भणितो, तं कुरु तं वा चिट्ठ जहित्थ कुसले, आमलेवेण वा गंधलेवेण वा आहारउवगरणसिज्जासंथारगादि उप्पायंतो अतिरित्तोवहिलेवेण वा परिकम्मणअविहिपरिहरणमुच्छालेवेण वा 'ण लिंपिज्जासि'त्ति, एयं अहं बेमि, ण वा सयं उत्प्रगादित्र, जह परोपदेसातो, परिग्गहातो अप्पाणं(पि) कज्जति पुत्तं, परिग्गहस्स य मूलं पंच कामगुणा, तेण 'पुत्तं कामा दुरतिक्कमा' दुविहा कामा—इच्छाकामा मयणकामा य, इच्छा अप्पसत्था हिरण्णाति, मदणकामा सद्दादि, दुक्खं अतिक्कमिज्जंति दुरतिक्कमा, अहवा कामगुणमुच्छितो लोए, लोयं चेव णिस्साए धम्मं चरमाणेणं कामा दुरतिक्कमा, भणियं च–"अणुसोतपट्ठिते०" बहुजणंमि बहुपावए इंदियाइं अणुसोतवाहीणि, तेसिं पडिसोतं दुक्खं गंतुं, अतो कामा दुरतिक्कमा, ण पडिसक्ककरणा, दुक्खं पडिवूहितं जीवितं अतो अप्पडिवूहणं, तं तु भवग्गहणजीवितं, तं छिण्णं छिण्णं ण सक्कइ वत्थं व लिप्पगं व जह संधेतुं, भणितं च–"असंखयं जीविय मा पमायए०" किं च–"जहीहि विषयान् सौम्य!, त्वरितं यान्ति

मग्गादि

॥ ८२ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८६-९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-९७]

रात्रयः। गताश्वो(श्व)न निवर्त्तते, वह्निज्वाला इवाम्बरम् ॥१॥” अथवा संजमजीवितं दुप्पडिवूहगं कामगुणमज्झमणस्सितेण, कामगुणमुच्छितो लोए बंभवतमणुचरितुं कामगुणरसण्णुणा दुक्खं, वालुयाकवलो वा णिरस्साओ हु संजमो एवमादि, अतो दुप्पडिवूहगं, जं भणितं दुक्करं, सो उ कामेहिं अभिणिविट्ठचित्तो पुरिसो तस्स अवाया–‘कामकामी खलु अयं पुरिसे’ कामा पुव्वभणिता, कामे कामयति कामकामी, सव्वं सव्वण्णुस्स पच्चक्खंति, अतो अयं पुरिसो ‘से सोयती’ति ओहतमणसंकप्पत्ति ‘जूरति’ति इच्छितअत्थअलाभेण, तव्वियोगेण वा, सरीरेण जूरति ‘तप्पति’त्ति कायवायमणोहिं तिहिवि तप्पति, बाहिं अंतो य तप्पति परितप्पति, जता य तेसिं कामाणं इहमेव दोसा तेण कामे चइत्ता उभयलोगअवायदंसी आयतं–दिग्घं पश्यती, दिग्घेण णाणचक्खुणा जं भणितं बहुयावाए कामे ण आसेवति, दिट्ठंतो खुड्डओ ‘सुट्ठु गाइतं०’ सो आययचक्खू निव्वाणसुहं देवलोगं वा पाविहिति, ‘लोगस्सविप्पस्सि’त्ति लोगं विसयासत्तं विविधेहि आगारेहिं आयतचक्खू किस्समाणं पासति, अत्थोववज्जणे कामाणं च अलंभे किस्समाणं, अहवा लोयविपस्सी लोयस्स जाणति अहेभावं, जेहिं कम्मेहिं अहे गम्मइ, जाणि य अहे दुक्खाइं एवमादि, लोयस्स अहेभावं तिरियं उड्ढं च ‘गढिते अणुपरियट्टमाणे’त्ति गढिते कामलोगेसु मुच्छिते गिद्धे अज्झोववण्णे कामसमुत्थेहि वा कम्मेहिं गढिते, जं भणितं–तेहिं अणुगतो सव्वओ परियट्टमाणे अणुपरियट्टमाणे जीवे पस्साहि ‘संधिं विदित्ता इह मच्चिएहिं’ति संधाणं संधी, दव्वे वतिकुड्डादीणं, भावे कम्मछिद्दं, नाणादीण वा, विद्माणे ‘इहे’ति इह मणुस्से नाणादि संधि भवति, ण अण्णत्थ, मरंतीति मच्चिया, एतेसिं संधिं णच्चा यो विसयकसाये वज्जंतो पंचविहे आयारे परक्कमति ‘एस वीरे पसंसिते’ संजमवीरिएण वीरो, पसंसणिज्जो भवति, सूरेत्ति वा वीरेत्ति वा सत्तिएत्ति वा एगट्ठा, किं करेति जेण वीरो ?, भण्णती–जे ‘बद्धे पडिमोयए’

दुष्प्रतिव्यूहता

प्रत वृत्यंक [८६-९५]

दीप अनुक्रम [८८-९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ५ उद्देशः ॥ ८४ ॥

परिमोचनादि

दव्वबंधो पुत्रकलत्रमित्रहिरण्णादीणि, भावे विसयकसायादी, जो एएणं बंधेण अप्पाणं मोएत्ता परा मोएति, एस वीरे पसंसिते जे बद्धे पडीमोयए, णवि जे असंजमवीरियमंते, कहं अप्पाणं परं वा कामेहिं मोयति ?, भण्णति—सरीरे वेरग्गदरिसणेणं, तत्थ इमं निव्वेदसुत्तं 'जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो' अंतो सुक्कसोणितमयं बाहिंपि तहेव, अहवा अब्भिंतरं से कुप्पिमं जो उव्वत्तितुं बाहिरं कुज्जा, जावि य से बाहिरा च्छाया सुयी दीसति सावि असुयीभवति, सोवण्णघडो वा अमिज्झपुण्णो, अवि सो णिप्परिसवत्ता सुयी घडो, ण तु सव्वस्सोयपरिस्सवंतं सरीरमिति, मट्टियघडेण अमिज्झभरिएण अवि णो तुल्लं सरीरगं, अहवा जहा कुट्ठिस्स अंतो मुत्तपुरिसखेलसिंघाणगपित्तसोणियकिमिअंतउदरवासित्ता असुयिं भवति, बाहिंपि पगलंतकुट्ठावेढितसरीरगस्स पुरिसस्स वपु रसियगसोणिताादिएहिं असुइतरं, तं गंधेण अणुसरिन्तेहि मक्खियासहस्सेहिं अणुगतमग्गस्स अप्पावि उव्विश्यति, किमु परो जणो ?, मतगसरीरं वा कुधितं, जहा अंतो तहा बाहिं जहा बाहिं तहा अंतो, जीवंतस्स पूतिसभावं सरीरं ण्हाणगंधआदीहिं वण्णभावणेहिं अच्चत्थं सुयी भवति, अंतो अंतो पूतिदेहंतराइं, अंतो अंतोत्ति वीप्सा,जहा जहा अंतो तहा तहा, बाहिं पूतितरं, जहा तयसोणितमेदअट्ठिमिंजसुक्कमिति, तं जहा अंतो तहा असुइतरं सव्वब्भन्तरं सुक्कं असुइतरं, तं च सरीरस्स उप्पत्ति, अतो को सुयिवादो कामिणं ? का व कामासा ?, अहवा तयमंससोणितजठरअंतमुत्तपुरिसाणि अंतो अंतो, पुतिदेहंतराणि पासिय विरतो, कहं ?, अदिट्ठमवि द्रष्टव्यं, जहा अंतो तहा बाहिं, भण्णति 'पुढो वीसवंताइ' पिहु वित्थारे, दो सोत्ता दो णेत्ता दो घाणा जीहा आसए पाउए, सव्वरोमकूवेहि य, सव्वाइं एयाइं मिसं विविहेहि वा पगारेहिं, पत्तेयं पत्तेयं कण्णमलसिंघाणमलखेलवंतपित्तसुक्कउच्चारकिमिसोयादि श्रवंतु, आगंतुतेहि वा वातखतपमुहेहिं पूयरसियसोणित० किमिए य पुणो २ ॥ ८४ ॥

प्रत वृत्यंक [८६-९५]

दीप अनुक्रम [८८-९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ५ उद्देशः ॥ ८५ ॥

पंडितप्रलिखेनादि

श्रवन्ति, पुढो वीभवंताइं, एत्थ सल्लहत्थविज्जदिट्ठंतो–एत्थ किर अणाहमयगं दब्भेहिं वेढिता पाणिए सत्तदिवसे कुथिएण सणियं सणियं सणियं कुथितमंसं फोडेऊण दरिसिज्जइ, सो य तं पेक्खए जहा अंतो तहा बाहिं, एवं णाउं सरीरे जोव्वणरूवसंपण्णे ण रागं कुज्जा, ण वा इत्थिसरीराइं असुइयाइं कामए, सो एवं 'पंडिते पडिलेहाए' पावा पंका वा डीणो पंडितो, 'पडिलेहाए'त्ति सरीरं असारं असुहं कामभोगे विवागं च से 'मतिमं परिण्णाए'त्ति मती से अत्थी जेण तेण मइमं, दुविहाए परिण्णाए परिण्णाय, किं कायव्वं ?, भण्णति–'मा य हु लालं पच्चासी' अमाणो पडिसेहे च पूरणे, ललतीति लाला, दव्वलाला णिट्ठुहंतस्स भवति, भावलाला भोगभिलासो, पुणो आसती पच्चासी–ण कामभोगे वमित्ता पुणो आतिए, दव्वलालावि तात गरहिता पुणो पिज्जमाणा, किं पुण भावलाला ?, किंच–'मा तिरिच्छमप्पाणमावातए' णिव्वाणसोत्ताणि नाणादीणि तेसिं ण तिरिच्छमप्पाणं आवायए, पच्चत्थं पातये आवायए, जं भणितं नाणादीणं अणुसोतं अप्पाणं आवायए, संसारसोयाणि अण्णाणं मिच्छत्तं अविरई य, ताइं पडिकूलेणं तिरिच्छेण वा उत्तरियव्वाइं, एवमप्पमत्तेण जइयव्वं, पमत्तो इहेव ण संतिं लभति, तंजहा–'कामं कामे खलु अयं पुरिसे' इमं अज्ज करेमि इमं हिज्जो काहामि, अहवा इमं पुव्वं इमं पच्छा, भणियं च–"इमं तावत्करोम्यद्य, श्वः करिष्यामि वा परम्। चिंतयन् कार्यकार्याणि, प्रेत्यार्थं नावबुद्ध्यते ॥ १ ॥" एत्थ दधिघडियावोदृदिट्ठंतो भाणियव्वो, को सो ?—'बहुमादी' तत्थ कसायादिपमत्तो, तत्थ माया गहिता, सावि लोभनिमित्त क्रियते अतो लोभोवि गहितो भवति, बहुगी माया जस्स स भवति बहुमायी, कज्जमाणं कडं तेण कडेण मूढो–आउलीभूतो, भत्तंपि ण भुंजति, भणियं च–"सोउं सोवणकाले०" "कइया वच्चति सत्थो०" गाहा, लोभाभिभूतो ण जाणाती–"किं मे कियं किं च मे किच्चसेसं, किं मे विणट्ठं व हरं व दव्वं। दातव्वलद्धं च ॥ ८५ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८६-
९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-
९७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देशः
॥ ८६ ॥

कृताकृतादि

विचिंतणेण, तेसिं ण संदेहमुवेति मंदे ॥१॥” अहवा पुव्वकएण कम्मेण मूढो कतंकितं–किच्चकिच्चं ण याणती बहुकत्तव्वया, ता मम्मवणिओ दिट्ठंतो, एवं बहुमाणी बहुकोही, से एवं कामकामीभूते बहुमायी कयाकयमूढो ‘पुणो तं करेति’ पुणो विसेसणे, किं विसेसेति ?, एवं ताव स पुव्वकयेण कम्मेण मूढो कम्मफलं वेदेंतो पुणो आसंसयाए मायावी ‘लोभं’ करेतिं नगरादिभवा लोभं करेंति–णिव्वत्तेइ, ‘वेरं वड्ढतीति’ अभिमाणपुव्वगो अमरिसो वेरं तन्निस्सयकसायवसगो हिंसादिपवत्तो अणंतसंसारियं वड्ढेति, भणियं च–“दुःखार्त्तः सेवते कामान् , सेवितास्ते च दुःखदाः । यदि ते न प्रियं दुःखं, प्रसङ्गस्तेषु न क्षमः ॥ १ ॥” ‘जमिणं परिहिज्जति’ जदीति अणुद्दिट्ठस्स गहणं, भण्णति–कतरस्स अणुद्दिट्ठस्स ?, कामंकमस्स बहुमायिणो मूढस्स ‘इमस्स चेव पडिवूहणाए’त्ति इमस्स अस्सेव सरीरगस्स पडिवूहणताए हिंसादिसु पवत्तति किस्सते य, भणियं च लोगेऽवि–“शिश्नोदरकृते पार्थ !, पृथिवीं जेतुमिच्छसि । जय शिश्नोदरं पार्थ !, ततस्ते पृथिवी जिता ॥ १ ॥” अहवा इमस्स चेव परिवूहणताए, कामंकमे बहुमायी पुणो तं करेति एतंपि एयस्स चेव पडिवूहणयाए, अहवा जे इमे मायाइ या पमाया पुणो पुणो अहिज्जंते एतेवि एयस्स चेव जीवियस्स, इमस्सत्ति–इमस्स पंचविहायारस्स बंभचेरस्स वा समंता वूधणा परिवूधणा, कहं णाम एयस्स पुणो पुणो कहिज्जमाणेसु पमायदोसेसु अप्पमाया गुणेसु य पव्वासियपुत्तअप्पाहणियादिट्ठंतेण संजमे परिविंधणा भविज्जा ?, इमं अन्नं संजमपरिविंधणामेव पमायदोसकहणं–‘अमराइ महासड्ढी’ ण मरंति अमरो अणमरो भवित्ता अमर इव अप्पाणं मण्णति भोगासया अत्थउवज्जणपरो, तत्थ उदाहरणं केई भणंति–रायगिहे णगरे मगहसेणा, कस्सइ सत्थवाहस्स अभिगयागतस्स अभिसारिया णिग्गया, सा य तेणऽलेवगहत्थगएणं आयत्ता, सोवेंतेण तेण सव्वं रत्तिं अणाढाइता समाणी पभाते निग्गया, अद्धीतीए ॥ ८६ ॥

प्रत
वृत्यंक
[८६-
९५]

दीप
अनुक्रम
[८८-
९७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
५ उद्देशः
॥ ८७ ॥

अतिजागरितेण य दुम्मणा, अंजलिकारिगा गता समाणी जरासंधेण पुच्छिया–काए अद्धिती दुक्खं वा ? केणय वऽसि अज्ज व सद्धिं पासुत्तत्ति ?, तीए भणति—अमरेण सद्धिं, कहि सो ?, सत्थनिवेसे, पुरिसेहिं गवेसाविओ, तहेव आयन्त्रयं करेइ, पच्छा ताए सब्भावो कहितो, अहवा पज्जोयकालसंदीव उत्तरकुरुगमणं महिलापेच्छणं महिलाय पायपडित्रजणं अंगारवती देवी पुव्वपडियरित्र आगंतुं पसत्थाहगमणं, आयन्त्रयसोहणं, बितियदिवसे तुमंतुमी, पज्जोतपुच्छणं, कोहेण वणियवाहणं पुच्छगं च रयणचोरियउत्ति सुंकभंजणावायचिंतणं ऊरणियागलगंधणं पवेसणं विसज्जणं सोउं हत्थी वा कामगोतं वित्रिता त्रिसंभसुहोवगतं रोयएत्ति, चिरं तओत्रि ण इच्छितो, महती सद्धा जस्स अत्थकामेसु स भवति महासड्ढी 'अट्टमेतं उपेहाए' अट्टो णाम अट्टज्झाणोवगतो रागदोसट्टितो वा तमेवं उवेहाए, पेच्छाहि ताव इहेव दुक्खी, किंनु परलोगे ?, अहवा एवं णच्चा महासड्ढी इहेव दुक्खं तं अट्टज्झाणं, पुव्वावरे उवेहा, सो एवं अट्टो 'अपरिण्णाए कंदति' दुविहाएवि परिण्णाए अपरिण्णायपरिग्गहे अप्पत्ते कंखाए णट्ठे सोएणाकंदति सोयति तिप्पति 'से एवमायाणह' से इति णिद्देसे जं इमं कहितं अचत्थं जाणह आयाणह णच्चा सद्दहित्ता य पमायं जहुद्दिट्ठं वज्जेतुं अप्पमायं आयरंतो, अहवा इमं आयाणह 'जं बेमि तेइच्छं पंडितो पवत्तमाणो' चिगिच्छापंडितो विज्जो, मिसं वतमाणो पवयमाणो, ते वा जहुइए तिगिच्छिए पंडिए पवत्तमाणे बहुजीवे 'हंता' हंता, भूतसंहितं गाहते वा, गहित्ता हणंति, भित्ता पुढविकायं बालाणि वा छित्ता वणस्सतिं मियपुंछमाइ वा लुंपित्ता अणेगविहं, उद्दवइत्ता मारेत्ता तित्तिरादि रसगणिमित्तं हि ते जहुद्दिट्ठा वा गेण्हित्ता हुणंति, 'अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे' अकतं आरोग्गं असण्णिहिअस्स तिगिच्छएहि वा, अहवा अकतपुव्वो एस जोगो अण्णेहि य पयोगो वा जेण लट्ठीकरेमिणिंह, अहवा कयस्स कागं णत्थि अण्णेण, सो संयोगो,

अमराय-
माणः

॥ ८७ ॥

आगम (०१)	“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) श्रुतस्कंध [१], अध्ययन [२], उद्देशक [५], निर्युक्ति: [१९७...], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक ८६-९५]
प्रत वृत्यंक [८६-९५] दीप अनुक्रम [८८-९७]	(see below)

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ६ उद्देशः ॥ ८८ ॥

जं भणितं कम्मबंधो, किं पुण जो सो हंता छित्ता लुंपित्ता उद्दवयित्ता तिगिच्छं करेति सो जहा तिगिच्छो, आतुरो वा हंता
छित्ता परमंसेण अप्पाणं पोसेति 'ण हु एवं अणगारस्स जायति' ण पडिसेहे, हु पादपूरणे, पंचविहआयारजुत्तस्स तत्थ-
ट्ठितस्स निप्पडिकम्मशरीरस्स जायति–ण मे कप्पति, साविक्खस्स तु विसुद्धआलंबणस्स फासुयपडोयारेण जयणाए जाए तिगिच्छा
वा सीसा करेउ वा कारवेउ वा कीरंतं वा समणुमण्णितुं गच्छणिस्सितस्स जायति, अहवा सद्धम्ममायाणह जमहं च बेमि ते, तिगि-
च्छं पंडिते तिगिच्छापंडितो, तिगिच्छापंडिओ णाम कम्मवाहितिगिच्छाकुसलो, ण अरिसादिवाहिकुसलो घेप्पति, सो फासुयएण
पडोयारं करेंति गच्छवासी, इतरो ण करेति चेव साहू, आदितो वा वड्ढमाणो पवतमाणो, अण्णे पुण कुतित्थिया सक्काति वयमवि
कम्मवाहितिगिच्छापंडिता इति पवयमाणा, तंजहा–अणगारवादिणो पुढविमादीहिंसगा ते गिलाणकुड्डिमाईओ उद्दिसित्ता बहुजीवे
हंता छेत्ता भित्ता, सेसं तहेव। आचारे प्रथमाङ्गे लोगविजयणामज्झयणे उद्देसओ पंचमो समत्तो॥ णमो सुयदे-
वयाए, उद्देसत्थाधिगारो लोए असज्जनादी पंचमे भणितं, परिग्गहाओ अप्पाणं ओसक्कइ, इह वा अममीकारए विसयकसायएसु
असंजमे वा पमाए वा, सुत्तस्स सुत्तेण सह भणितं पंचमस्स अवसाणसुत्तेण 'ण हु एवं अणगारस्स जायति जहा अण्णेऽत्थ
पंडिता तिगिच्छआतुरा बहुजीवे हंता छित्ता तिगिच्छं करेंति कारयंति ता ण एवं अणगारे' इच्चेतं जहा भणितं 'से तं संबुज्झ-
माणे' 'से'त्ति णिद्देसे सम्मं बुज्झमाणो, किमिति?, जं भणितं तिगिच्छापगतं लोगविजयअज्झयणे वा चेयणाचेणयओसहेण,
दव्वे वा सम्मं जहा मच्छस्स उदए फलिते अंबे कोतिलाए आसणे सयणे वा, भावसम्मं पसत्थं उदइयादीणं भावाणं अवि-
रोधो, जहा सुभगसुरूवासुजुत्ति अहवा सुभगणामस्स य उच्चगोयस्स य, पसत्थनाणादीणं जत्तिया खाइया भावा तेसिं सव्वेसिं

अममायमाणः ॥ ८८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्‌वितीय-अध्ययने षष्ठ-उद्देशक: 'अममत्व' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[९६-
१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-
१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ६ उद्देशः ॥ ८९ ॥

बोधादि

सम्मं, एवं उवसमियाणं जाव सम्मं मोहणिज्जं उवसमं, एवं खओवसमियाणंपि, जहा नाणचउक्कस्स य, खओवसमियस्स चरित्तस्स, एवमादि सम्मं बुज्झमाणो, बोहो चउव्विहो, णामबोहो ठवणबोहो दव्वबोहो भावबोहो, णामठवणाओ गयाओ, दव्वबोहो जं चेयणातिदव्वे बोहो सो दव्वबोहो, जहाविसयं धारिओ, अगतेण नासाए पक्खित्तेण, भावे अप्पसत्थे तिन्नि तिसट्ठाइं पवातिसयाइं अप्पसत्थभावबुज्झमाणाइं, अपरिग्गाहिता ण किंचिदवि, बुज्झंति तहावि मिच्छादिट्ठी, पसत्थे नाणादि बुज्झमाणे 'आताणीतं समुट्ठाता' दव्वायाणीयं जो जं दव्वं सचित्तादि गिण्हति सो दव्वाताणीउ, जं भणितं–दव्वपयोयणा, अप्पसत्थभावाताणट्ठीया गिहत्था विसयकसायपयोयणा, अन्नउत्थियाण विस्सुता ते अट्ठिया, पसत्थभावादाणट्ठीओ अट्ठविहकम्मनिज्जरट्ठीओ, संमं उत्थाणं समुत्थाणं, दव्वओ जं दव्वं उत्तिट्ठति तं दव्वसमुट्ठाणं, तंजहा–विसमविज्जलासु पडिओ पडणभएण वा वल्लिं लतां वा अवलंब उत्तिट्ठति तं दव्वसमुत्थाणं, भावे अप्पसत्थो तिण्हं तिसट्ठाणं पावाउयसयाणं अप्पणप्पएण उट्ठाणं, अहवा विसयकमायोट्ठाणं, पसत्थभावोट्ठाणं णाणादी, पसत्थेण अहीगारो, तेण उत्थाय 'तम्हा पावं कम्मं' तम्हा इति तम्हा कारणा संबुज्झमाणे आताणीयं समुट्ठाए पावं–हिंसादि जाव मिच्छादंसणसल्लं तं सतं ण कुज्जा णो अण्णेहिं कारवे करेंतंऽपण्णं णाणुमोदए, अणुमोदणा अकरणाकारणेण गहिता, णवए णवभेदेण, तंच पावं–हिंसादि छसु काएसु, सुत्ते संबंधो भाणियव्वो, नाणादितियं च उतारेयव्वं, ते य अवाया नाणादिसहितस्स ण भवंति, रागादिसहितस्स हिंसादिपवत्तस्स भवंति, अवाया किं ?, एगकायं आरभमाणस्स तदारंभे सेसारंभोऽवि, एगतरं आसवपत्तस्स किं एगो भवति सव्वेऽवि ?, भणति–'सिया से एगतरं विप्परामुसति' सिया–कयाई से इति असंजतस्स निद्देसो पमत्तसंजमो वा, एगमवि पुढविकायं किमु सव्वकाए ?, विविधं परामुसति हत्थ- ॥ ८९ ॥

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
२ अध्य०
६ उद्देशः
॥ ९० ॥

सर्वारंभादि

पादकट्ठकलिंचअंगुलिसलागादीहिं समस्तं वट्टणं, जं भणितं–चालणं, किच्छपात्रकरणं परितावणं, पाणव्ववरोवणं उद्दवणे, एवं सो एगमवि समारभमाणो 'छसु अण्णतरं' छडिति संखा, छण्हवि कायाणं समारंभे कप्पति, जं भणितं–वट्टति, दव्वओ कुम्भगार-सालाउदगघडपलोट्टणदिट्ठंतेणं, भावतो अविरतत्ता, पाणातिवातआसवदारविधाता एगजीवअतिघाती एगकायघाती वा, सव्व-जीवातिपाती भवति, पेरितो लोएणं अलियं, ण य तस्स समारंभो तित्थगरेहिं अणुण्णाओ जेसिं वा जीवाणं ते सरीरा तेहिं तं अदत्तं, सावज्जग्गहणेण य परिग्गहो भवति, अहवा तं सद्दातीणं विसयाणं अत्थे समारभति, तप्परिग्गहो य ण रागदोसेहिं विणा भवति, मेहुणरातिभत्ताणिवि विसय एव, अतो छसु अण्णतरंसि, अहवा चउहिं आसवदारेहिं अवगतेहिं कह चउत्थछट्ठवयाण अवट्ठाणं ?, अतो छसु अण्णतरंसि, किंच–सव्वसावज्जजोगविरतस्स एगतरवतभंगे कहं ण सव्वभंगो ?, भणियं वा–"खंडे चक्के सगले चक्के" एवं छसु अण्णतरंति, अहवा सिया एगतरं जो एवं पुढविकायं समारभति अन्नतरं वा तस्स छसु अण्णतरेसु अववातं प्रति ण पडिसिज्झति, तस्स समारंभणे वा तप्पाउग्गाइं कम्माइं बंधित्ता तेसु चेव काएसु सइं असइं च उप्पज्जइ, तत्थ सरीरा-दिहिं दुक्खेहिं कप्पति, जं भणितं–वट्टति, किमत्थं एरिसविवागं कम्मं आरभति ?, भण्णाति–'से सुहत्थी' सुहेण जस्स अट्ठो, जं भणितं–सुहप्पओयणी, तत्थ करिसणादिकम्मेहिं सुहत्थी पुढवीं समारभति ण्हाणाहिनिमित्तं उदगं, एवं सेसकायाणवि भाणि-यव्वं, तं पुण अप्पणो परस्स वा सुहत्थी आरभति, रागादिसहितो असंजतो, पमत्तसंजओवि कोइ सुहत्थी काये आरभति, तंजहा रससुहत्थी सचित्तं लवणं गिण्हति, मट्टियातिकातेण वाऽच्छेण एवमादि, आउंमि अविद्धत्थं आउकायं, उदउल्लेण वा हत्थेण, एवं सेसएसुवि भाणियव्वं, अचत्थं–पुणो पुणो लप्पमाणो लालप्पमाणो, जं भणितं सुहं पत्थेमाणो, स एवं लालप्पमाणो 'सएण ॥ ९० ॥

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः
२ अध्य०
६ उद्देशः
॥ ९१ ॥

सुखार्थित्वादि

दुक्खेणं' सएणंति अप्पणएणं दुक्खं—कम्मोदओ तेण वाहिज्जमाणो परितप्पमाणो तप्पडिसेवाए सुहट्ठी निवट्टति, मोहो णाम हिताहिते निविसेसता, अहवा एरिसे पुरिसे हिते अहितबुद्धी, अहिते हितमारभति, एव कज्जाकज्जे वज्जावज्जे, सो मूढत्ता णाभियाणति जहा अप्पस्स सुहस्स कारणा पुढविकायातिसमारंभेण अणंतकालं संसारे अणुभवति दुक्खं, जहा अत्तट्ठा तहा परट्ठावि, मातापितिमादीणं कारणा पुढविमादी समारभति ततो विपरियासं एति, सो एवं हितपरिण्णाणमूढो 'सएण विप्पमाएणं' अप्पणएणं विविधो विरुद्धो वा पमादो विप्पमादो, कारणे कज्जुवयारा, सएण विप्पमादेण अंजसं—अत्यर्थं, अंजसा विप्पमायकरणे कम्मुणा 'पुढो वयं'ति विच्छिण्णो वयो असुभदीहाउयं अणेगविहं वा वयं पत्तेयं पत्तेयं छसु जीवनिकाएसु आउयं, पुणो पुणो वा वयं पुढोवयं—भिसं कुव्वति, कह तत्थ य सारीरातीएहिं दुक्खेहिं पचति ?, भणति—'जस्सिमे पाणा पव्वहिता' जंमि एते—एगिंदियादिपाणा पव्वहिता, तेहि तेहि पयोयणे य बाधिता, केण ?, असंजतेहिं कुप्पावंडीहि य, परोप्परओ य पुढोवयं कुव्वंति, इति—एवं पडिलेहमाणो, पडिलेहाए पडिलेहित्ता, जं भणियं-जाणित्ता, णो पडिसेहे, अकरणा, केसिं अकरणं ?, पाणाइवायमादीणं कम्माणं, जा एतेसिं अकरणा सा किं भणति ?—'एस पइण्णा पवुच्चति' एसा णाम जा एसा वुत्ता पाणाइवायाईणं अकरणा सा जया दुविहाए परिण्णाए परिण्णाया भवति एसा परिण्णा कम्मोवसंतित्ति वा एगट्ठा, केसिंचि अकंमाणं चोरादिगहियाणं कुलिंगीणं च अणुवाएणं उवसंती भवति, ण परिण्णा, कम्मोवसंती पवुच्चति, जं भणितं णवस्स कम्मस्स अकरणं पोराणस्स खवणं उवसंती वुच्चति, एस एव अच्चंतनिरावरणो महव्वयअणुपालणअहिगारो अणुयत्तति, एव य उवसंती भवति, तत्थ उवसंतलक्खणं—सव्वं पाणाइवायं तिविहं तिविहेण ण करेइ, एवं जाव परिग्गहं, तत्थ अहिंसादीणं परूवेऊणं चत्तारि जहा वेरमणा परिग्गहे न भवति ॥ ९१ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
२ अध्य०
६ उद्देशः
॥ ९२ ॥

ममत्वादि

तहा भण्णति, जहा भण्णति–'जे ममाइतमती' पच्छाणुपुव्वी वा एसा, जे इति अणुद्दिट्ठस्स, कस्स ?, ममीकितं ममाइतं, तंजहा–मम माता मम पिता मम भयिणी मम भाता मम धण्णाति, ममायिते मती ममाइयमती, कहं मम एवंविहा विसया भविज्ञा ?, पत्तेहिवि तस्स रक्खणमती, अत्थि सुहं च, विणट्ठे सोगो, परिग्गहे इच्छा ममीकारमिति, भरहसामिणा आदंसघरे पविट्ठेणं ममीकारमती जढा, जो य एतं ममायिए मतिं जहाति सो जहाति ममाइयं, तंजहा–तत्थ हिरण्णसुवण्णधणधण्णाइ ममाइ तं रज्जं अण्णतरं वा इस्सरियं सरीरं च, अहवा सचित्तअचित्तमीसाइं दव्वाइं ममाइ, तं संखेवत्थो जो तण्हं वोच्छिदति सो परिग्गहं जहति, जो वा ममत्तं छिंदति सो ममाजितव्वं जहति, अण्णउत्थिएहिं जइवि किंचिवि जढं सचित्ताति तहवि सरीरादिसक्कारआहारमुच्छामत्ता उद्देसियभोइत्ता रागदोसाणुगतत्ता य सममत्तं लब्भंति, दव्वोवसंती य सा, ण परिण्णा कम्मोवसंती य, एवं अण्णेसुवि वयेसु आयोज्जं, जो य एवं वतेसु अवट्ठितो भवति 'से हु दिट्ठप्पहे मुणी' दिस्सति दिट्ठं, गम्मति जेण सो पंथो, जेण णाणादीणि मोक्खपहो, विवरीतो अपहो, स जेण दिट्ठो सो दिट्ठपथो, पढिज्जइ य–'दिट्ठभए मुणी' भयं सत्तविहं, कतरो सो णणु मुणी ?, तं–'जस्स णत्थि ममाइतं' उवदेसियसुत्तं, तं परिण्णाय, कमिति ?, पुव्वपगतावेक्खी ममाइयं दुविहाए परिण्णाए णच्चा पच्चक्खाय मेधावी. सो एवं परिजाणए 'विदित्ता लोयं' विदित्ता णाम णच्चा, लोयं–छक्कायलोयं विदित्ता, जो जीवे ण याणति, कसायलोयं वा विदित्ता, तंजहा–'अहे वयति कोवेणं०' विसयलोगं च, तंजहा–किंपाकफलसमाना विषया हि निसेव्यमाणरमणीयाः। पश्चाद् भवन्ति कटुका त्रपुषिफलनिबन्धनैस्तुल्याः ॥ १ ॥ पाणवधआसवलोयस्स य इध परत्थ य अवाए विदित्ता 'वंता लोगसण्णं' वमित्ता–विहाय अवकिरित्ता, असंजयलोयस्स सण्णा-हिंसादिक्रियापवित्ती मिच्छादंसणअभिग्गहा वा, सा य दुक्खं ॥ ९२ ॥

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः
२ अध्य०
६ उद्देशः
॥ ९३ ॥

लोकसंज्ञा-वांतिः

त्रमिज्जति एवं णच्चा 'से मतिमं परक्कमिज्जा' सेत्ति णिद्देसे, मती से अत्थि तेण मतिमं, वंता लोअसण्णं लोउत्तरे धम्मे ठितो अहिंसादिवंतलोगे च परकमिज्जासि, एवं तित्थगरआणाए वेमि, णो स्वेच्छया, अहिगारसमत्तीए एवं वेमि, ण अज्झयणसमत्तीए, एवं परक्कममाणो घडमाणो 'णारतिं' ममाइतमतिं 'सहती वीरे' ण इति पडिसेधे, सधणं मरिसणं, जति णाम कदायि तस्स परकमतो तवणियमसंजमेसु अरती भवेज्जा ततो तं खणमित्तमवि ण सहति, खिप्पमेव ज्झाणेण मणतो निच्छुभति-णिव्विसयं करेति, वीर इति 'विदारयति तत्कर्म, तपसा च विराजते। तपोवीर्येण युक्तश्च, वीरो वीरेण दर्शितः ॥ १ ॥' जहेव संजमे अरतिं ण सहति तहेव विसयकसायादिलक्खणे असंजमे जति कहंचि तस्स रती उप्पज्जति तंपि खणमित्तमवि ण सहति-ण खमति, धम्मज्झाणसहगतो उप्पण्णमित्तं णिकासति, 'जम्हा अविमणे' जम्हा सो इट्ठाणिट्ठेसु पत्तेसु विसएसु धितिबलअस्सितो अविमणो भवति, अहवा जम्हा सो संजमे अरतिं ण सहति असंजमे अ रतिं तेण मज्झत्थो णिच्चमेव अविमणो धीरो 'तम्हादेव विरज्जते' विसएसु, ते य सद्दादि फासपज्जंता, जतो इमं सुत्तं-'सद्दे फासे य०' आदिअन्तग्गहणा मज्झग्गहणं, अहियासणं णाम इट्ठाणिट्ठेसु रागदोसअकरणं, भणियं च-"सद्देसु य भद्दयपावएसु०" अहियासणोवायो 'णिव्विंद णंदीं' णंदी पमोदे रमणे समिद्धीए य इस्सरियविभवकया मणसो तुट्ठी, ततो णिव्विंद, जति अतिक्कंतकाले कस्सवि आसि तत्थ होऊण ण होति पुणो, अहवा जा कुमारजोव्वणादिसु नंदी तं निव्विंदेज्जा, सणंकुमारचक्कवट्टिदिट्ठंतो, 'इह' मणुस्सजीविते असंजतजीविते वा विसयकसायजीविते वा पंचण्हवि अवयाणं अतीतं णिंदति पडुप्पण्णं संवरेति अणागतं पच्चक्खाति, केण आलंबणेण णिव्विंदति तत्थ?, 'मुणी मोणं समायाए' समणेत्ति वा माहणेत्ति वा मुणित्ति वा एगट्ठा, मुणिभावो मोणं, सम्मं संगतं वा समत्थं वा आदाय, ॥ ९३ ॥

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः
२ अध्य०
६ उद्देशः
॥ ९४ ॥

कर्मधूतता

एतं मोणं आदाय किं कायव्वं ताव ? 'धुण कम्मसरीरं' धूण, जं भणितं परिसाडेहि, एगे अणेगादेसो, 'पंतं लूहं सेवंति वीरा' पंतं णाम जं सभावियरसपरिहीणं जहा दोसीणं, लूहं दव्वे णेहविरहितं भावे वीतिंगालं सेवंति—भुंजंति वीरा पुव्वभणिता, सम्मत्तं पस्संति सम्मइंसिणो, जत्थ सम्मत्तं तत्थ नाणंपि, कारगसम्मत्ते चरित्तंपि, तस्स सुत्तेणेव फलं भण्णति—'एस ओहंतरे' एसेति जे भणिता पंतलूहसेवी, दव्वोघो समुद्दो भावोघो संसारो, स भावोघं तरति तारेति वा, अण्णे तरमाणे तिण्णे मुक्के, अहवा बारसविहे कसाए खओवसमिए खविए वा तेण ताव मुक्को विरतेत्ति एगट्ठा, विविहं अक्खाते वियक्खाते वियाहितेत्ति बेमि। तहेव जो एतंमि जहोवदिट्ठे मग्गे ण वट्टति सो किं वत्तव्वो ?, भण्णति—'दुव्वसू मुणी' वसतीति वसा, कत्थ ?, संजमे नाणादितिये वा, दुट्ठे वसु दुव्वसु, जं भणितं कुस्समणो, ण आणाकरो, दुव्वसु जो भगवतो अणाणाए वट्टतीति वक्कसेसं, एत्थ किं दुक्करं ?, भण्णति—से तं संबुज्झमाणो मिच्छत्तमोहिए लोए दुकरं संबोद्धुं, अपडितेण समुत्थाणेण व तेसु अप्पा थावेउं दुकरं एवं ममत्तं छेउं अरतिरतीओ निग्गहेउं सद्दादिविसएसु मज्झत्थं भावेतुं इट्ठाणिट्ठेसु पंतलूहाणि फासेउं, एवं जहोवदिट्ठस्स आणाए दुकरं वसिउं फासेउं संखेवदुकरं परीसहा सोढुं, तत्थ मूलहेऊ कम्मोदओ अतीतकालभावितो दुक्खभीरू अणिरोहसुहण्णिओ पच्चुप्पण्णभारिया दुक्खं मुणिस्स आणाए वसति, सो एवं अणाणाकारी 'तुच्छए' दव्वतुच्छो विभवहीणो तुच्छघडो वा पुलागं धण्णं वा हत्थिखइयं वा सगलं बिल्लं इदिचयं एवमादि दव्वतुच्छगं, भावतुच्छगं भावतुच्छो नाणादितियहीणो बहुसुतो वा चरित्तहीणो, सो एवं चरित्तहीणो 'गिलायति वत्तए' पूयासक्कारपरियारहेउं सुद्धं मग्गं परूवेउं गिलाति, जति मूलगुणतुच्छो तेण मूलगुणे परूपेतुं ग्लायति, को दोसो सण्णिधिमादिसु ?, जह आहारो धम्मसरीरधारणत्थं कीरति तहा सन्नीधीविति, कारणे सन्निहिं करेंतो केणवि

॥ ९४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ अध्य० ६ उद्देशः ॥९५॥

चोतितो तुज्झं सन्निही वट्टति ?, ताहे ग्लायति कहेतुं जहा, ण वट्टति, एवं कोट्टलादिसुवि, आउकायं वा गेण्हंतो केणयि चोदितो, तत्थ ग्लायति, एवं सेसकाएसुवि, एवं सव्वमूलगुणेहिं, उत्तरगुणेहिं वा उदउल्लाति गिण्हमाणो केणयि गीतत्थेण चोइओ ग्लायति, को वा एत्तिल्लए दोसो ?, जति वा एत्तिल्लयं ण सकेति खवेउं तो बहुयं कयं कहं खवेहिति जं अणभवे बद्धं ?, तत्थ कोयि सा बिक्खो कोयि णिद्धंधसो, जहा दट्ठूण य अणगारं णिद्धंधसो भणति–किं चरगादयो समणा न भवंति आउकायादि गिण्हंता ?, साविक्खो पुण 'ओसण्णोवि विहारे०' गाहा, तव्विवरीओ तु सव्वेसु आणाए वट्टमाणो अतुच्छो नाणादीहिं, ण ग्लायति वत्तव्वए पुट्ठो अपुट्ठो वा सुद्धं मग्गं परूवेमाणो, सो एवं परूवेंतो 'अच्चेति लोयसंजोयं' अच्चेतित्ति अतिकामयति, लोयसंजोगं बज्झो हिरण्णसुवण्णमातापितादि भावे रागदोसाति तं अतिक्कमति, 'एस णाए' एस इति जो भणितो अप्पाणं परं च मोक्खं, णाति णाया, जं भणितं उभयत्रातो, एवं सहस्स कधी णायट्ठितो किं कहेति ?, भण्णति—'जं दुक्खं पवेदितं' जं इति अणुद्दिट्ठं दुक्खं कम्मं तं जह बज्झति जो य बंधति जत्थ य तस्स विवागो भवति जह य विवागो भवति जह य न भवति विवागो, पवेतितं तित्थगरगणहरेहिं 'इहे'ति इह मणुस्से पवयणे वा मणुया माणवा 'तस्स दुक्खस्स' तस्स इति तस्स पाणाइवायादिउवचितस्स कम्मबंधस्स 'कुसला' जाणगा जुगे जुगे धम्मकहालद्धिसंपण्णा ससमयपरसमयविऊ उज्जुतविहारा जहावादी तहाकारो जितनिद्दा जितइंदिया जितपरिस्सहा देसकालकमजाणगा गणहरादि जाव संपत्तं सुत्तेण वा धम्मकहाहि वा सुत्ताणुसट्ठिमादीहि कार्हेति, दव्वकुसला भावकुसला पुव्वभणिता, परिण्णा दुविहा 'उदाहरंति' उवदिसंति, तंजहा बंधो बंधहेतु मुक्को मोक्खो मोक्खहेतुश्च 'इति कम्मं परिण्णाय' इति उवपदरिसणे, एवं परिण्णाय जहेतं भणितं तं दुक्खं पवेदितं इह माणवाणं तस्स

देशनायां ग्लानिः

॥९५॥

प्रत वृत्त्यंक [९६-१०४]

दीप अनुक्रम [९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः २ अध्य० ६ उद्देशः ॥ ९६ ॥

सर्वकथनं

कम्मस्स कुसला परिण्णाउं, एवं अट्ठविहकम्मजाणणापरिण्णा वत्त०श, तस्स अस्सवे य, तंजहा- नाणपडिणीययाए दंसणपडिणीययाए० एवमादि णच्चा पच्चक्खाणपरिण्णाए पडिसेहेति, जं भणितं आसवदारेहिं ण वट्टंति, 'सव्वसो'त्ति सव्वप्पगारेहिं, जो जहा बज्झति जच्चिरकालठितियं वा बंधति अहवा केवली सव्वं परिण्णाय कहयति चोद्दसपुव्वी सव्वे पण्णवणिज्जे भावे जाणति, गणहरपरंपरएणं जाव संपण्णं, कहा चउव्विहा, तंजहा-अक्खेवणी विक्खेवणी संवेयणी णिव्वेयणी, ताहे कहेइ सो केरिसओ ?, भणति—'जो अणण्णदंसी' अण्ण इति परिवज्जणे तिण्णि तिसट्ठा पावातियसया अण्णदिट्ठी, अणण्णदरिसी वताइं तत्त्वबुद्धीए पेक्खति, इमं एकं जइणं तत्तबुद्धीए पासति, जो अणण्णदिट्ठी सो नियमा 'अणण्णारामो' ण अण्णत्थारमतीति अणण्णारामो, गतिपच्चागतिलक्खणेणं भण्णति—'जे अणण्णारामो' से णियमा अण्णदिट्ठी, जं भणितं सम्मदिट्ठी, ण य अण्णदिट्ठीए रमति, तहा विसयकसायादिलक्खणे अचरित्ते अतवे ण य रमति, सो एवंविहो अन्नंपि ठावयति केवलीपण्णत्ते धम्मे चउव्विहाए कहाए अरत्तो अदुट्ठो आघवेमाणो पण्णवेमाणो, वीयरागे सुणिउणं संपचयो भविस्सति, तं कहं ?, भण्णति—'जहा पुण्णस्स कत्थति तहा तुच्छस्स' पुण्णो णाम सव्वमणुस्सेसु रिद्धिमां चक्कवट्टी तदणंतरं वासुदेवबलदेवमहामंडलियईसर जाव सत्थवाहादि, तुच्छा तणहारगादि, अहवा पुण्णो जाइसंपण्णाति तव्विवरीओ तुच्छो, अहवा बुद्धिमंतो पुण्णो मंदबुद्धी तुच्छो, जेण आयरेण जेण आलंबणेण पुण्णस्स कहिज्जति तहा तुच्छस्स, गतिपच्चागतिलक्खणेण जहा तुच्छस्स कहिज्जति तहा पुण्णस्स, जं भणितं—जहा तुच्छस्स ण अण्णहेउं० च कधेति तहा पुण्णस्सवि, सोयारं वा प्रति विण्णाणकहाए वायसंपन्ने विवज्जओ, विण्णाणमंतस्स निउणं कहिज्जति थूलबुद्धिस्स जहा परियच्छति तहा कहिज्जति, भणियं च—"निउणं अत्थं०" "तत्थ आलंबणं तुल्लं०" उस्सग्गेणं ॥ ९६ ॥

प्रत वृत्यंक [९६-१०४]

दीप अनुक्रम [९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥ ९७ ॥

अविधिकथनदोषाः

अहवा कोयि आयारकहणेण तुस्सति, कोइ ण, अतीवादरेण तस्स तहेव कहेयव्वं, अहवा रायादि उवसंते बहवो उवसमंति. सुहविहारं भवति, तेण तस्स जाव इच्छति ताव कहिज्जति सरीरउवरोहं मोत्तुं, सेसेसु आवस्सगस्स परिहाणीए ण कहेयव्वं, अतिसेसिओ वा कहेति जो जहा उवसमीहिति, भावं नाउं कहेति, किं एयस्स पियं अप्पियं वा ?, वेरग्गं सिंगारं वा, तहा के अयं पुरिसे कं वा दरिसणं अभिप्पसत्ते ?, जहा य इहलोइयपरलोइयअवायो ण होति कहंतस्स तहा कहेयव्वं, परलोइओ अण्णहेउं पाणहेउं वा उम्मग्गं वा उवदिसति एवमादि, इहलोइओ जम्मं मम्मं कम्मं परिहरियव्वं, ण य तप्पदमयाए जं सो दरिसणं अभिप्पसण्णो तस्सेवेगस्स भूयो भूयो दोसं देइ, सामण्णेण वा दोसे देइ, पुच्छंतस्स वा दोसं दंसेति, जइ राया भणति, लोयसिद्धेण वातेण राया णरगगामी, दशसूना समं चक्रं, दशचक्रसमो ध्वजः। दशध्वजसमा वेश्या, दशवेश्यासमो नृपः ॥ १ ॥' तत्थ इमे दोसा 'अविय हणे' अपि पदार्थसंभावने, अणिट्ठकहाओ एवं मण्णेज्ज—एते सव्वधर्मबाहिरा, जहा रायधम्मं ण याणंति तहा मोक्खधम्मंपि णेव, गेण्हेज्जा अतिकोहेण, अविय हणे अट्ठिणा मुट्ठिणा एवमादि, अवियऽक्कोसेज्ज वा हसिज्ज वा णिस्साहिज्ज वा रुंभेज्ज वा छविछेयं वा करिज्ज, उद्दविज्जा अपि, वत्थादिच्छेदं वा, जहाति, छेदिज्ज वा भिंदिज्ज वा अवहरिज्ज वा, भणियं च—"तत्थेव य निट्ठवणं बंधण णिच्छुभण कडगमद्दो य। णिव्विसयं व नरिंदो करिज्ज संघंपि सो रुट्ठो ॥१॥" भद्दमरुओ वा कोइ वचु(दु)इणीए कट्टियाए उदुरुट्ठो तं चेव करेति, तच्चणिओ उवासओ वा णंदबलाए वुद्धुप्पत्तीए वा, भागवतो भल्लीघरक्खाणेणं, छक्किरियभत्तो वा पेढालउमाधरणेण, तुच्छाणवि दासभयगादीणं कहेमाणो जति भणति, अहम्मेण एरिसा भवंति, कट्ठासणा कुसिज्जा कुभोयणा वा, वण्णतो आयामंडितिया, दरिद्दवण्णगं वा, तं च उवहसति, ताहे सो ण गिण्हेइ, ण वा पुणो एति, साहसिओ वा कोइ अक्कोसेज्ज वा जा ॥ ९७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥ ९८ ॥

अविधिकथनदोषाः

वत्थातितं छिंदिज्ज वा, एवं अविहिकहणाए दोसा भवंति, के दोसा ?, भण्णति–'तत्थवि जाण सेयंति णत्थि' जो सद्देउ तधा कोति धम्मकहालद्धिसंपण्णो तेण कहेयव्वं चउव्विहाए कहाए, जो पुण ण सद्देतु तेण संवेयणिणिव्वेयणीए कहेयव्वा, किं निमित्तं विक्खेवणी ण कहिज्जति ?, भण्णति–मा सो अभिणवसड्ढो परेहिं वुग्गाहिज्जेज्जा तच्चणियगेरुयससरक्खमादीहि, अम्हवि अहिंसा इंदियदमो य वेरग्गं मोक्खो य, पच्छा सो पुव्विं अविकोवितोवि परिणमति, अण्णदरिसीवि होऊण एवं 'एत्थवि जाण सेयंति णत्थि'त्ति, किंच–जति सद्देतु अविकोवितो भणइ परिसामज्झे–इणमेव निग्गंथं पवयणं सच्चं, सेसाणि कुदरिसणाणि मुसा, एत्थवि जाण सेयंति णत्थि, कहं ?, पच्छा तत्थ तच्चभिओवासगो चोदितो, सो य तं न नित्थरइ, पच्छा ओभावणा पवयणस्स, भागवता गरुयसड्ढो वा अवियड्ढणे अणातियमाणे एत्थवि जाण णत्थि सेयंति, केणइ पुच्छिओ भणइ अत्थि अप्पा, ततो परेण चोइओ-अत्थि अप्पा, एगत्ते अन्नत्ते उभयदोसा, एत्थ जाण णत्थि सेयंति, भणिया अविहिकहणा, इदाणिं खित्तं विचार्यते–तत्थ खेत्तं जाणियव्वं, केण भावितं धीयारभावितं तच्चण्णियभावितं वा, भाविते तेसिं अविरुद्धं कहेयव्वं, सामण्णग्गहणेण वा कालं भिक्खावेलादि अपरिहवंतेणं तहा सुभिक्खदुभिक्खं णाउं कहेयव्वं, तहा भावं णाउं कहेयव्वं, तत्थ इमं सुत्तं–'के अयं पुरिसो' के इति पुण्णो तुच्छो वा ?, अहवा किं दारुणमभावो इतरो वा ? जति रायी ततो तस्स दोसे अमुयंतेणं कहेयव्वं, एवं जाव चंडालो, 'कंच णत'त्ति कयरं पवयणं णतो णाम पडिवण्णो, संखं बुद्धं एवमादि, जं पणओ ण तस्स आतीए दोसे कहेइ, मा ते दोसा भविस्संति, अवियड्ढणे अणातियमाणे जदा दरिसणे उग्घाडो भवति तदा तद्दोसा कहिज्जंति, एवं जहोवदिट्ठा सुसंबुज्झमाणा गुणादीहि उववेता कहणा, दोसविसुद्धधम्मकहागुणोववेओ 'एस वीरे पसंसिते' 'एस' इति जो भणितो वीरो पुव्वभणितो पसंम-

॥ ९८ ॥

प्रत वृत्यंक [९६-१०४]

दीप अनुक्रम [९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥ ९९ ॥

बद्धमोचनादि

णिज्जो पसंसिते, अण्णोऽवि अपसत्थसंगामवीरा, ण ते पसंसिता, भाववीरो पसंसितो, जो किं करेति ?, भण्णति—"जे बद्धे पडिमोयए' जे इति अणुदिट्ठस्स गहणं, अट्ठप्रकारेण कम्मेण बद्धे संते पडिमोएइ आयप्पओगेण बद्धे सम्मं उवदेसंतो, कारणे कज्जुवयारे संपयं पडिमोएति, जं भणितं—पडिमोयावेति, तित्थगरो जो य कयत्थो उत्तमो, गणहराति वा थेरा उभयतारा इति, एवं से जहाभणितकहणाविधिजुत्ता 'उड्ढं अहे तिरियं' पण्णवगदिसा पडुच्च उड्ढं वा अहे वा तिरियं वा चउसुवि दिसासु 'से सव्वतो' स इति पुव्वभणितो कहगो, सव्वओ उड्ढं अहे तिरियं दिसासु, ण तस्स कम्मासवो कतोयिवि भवति, 'सव्वपरिण्णाचारि'त्ति सव्वकालं सव्वभावे सव्वआतपदेसेहिं, परिण्णा दुविहा—जाणणापरिण्णा पच्चक्खाणपरिण्णा य, जाणणापरिण्णा दुविहा—केवलिया छाउमत्थिया य, छाउमत्थिगी चउव्विहा, केवलिगी एगविहा, पच्चक्खाणपरिण्णा दुविहा—मूलगुणपच्चक्खाणपरिण्णा उत्तरगुणपच्चक्खाणपरिण्णा य इति, एवं सव्वपरिण्णं सव्वओ परिजाणित्ता चरति सव्वतो सव्वपरिण्णचारी, जं भणितं जाणित्ता असंजमजोगे ण करेति, अहवा अविहिकहणादोसे विहिकहणागुणे य सव्वओ सव्वपरिण्णचारी, णच्चा अविहिकहणं पच्चक्खाइत्ता चरतीति सव्वपरिण्णचारी, सो एवं 'ण लिप्पति' ण पडिसेहे, लिप्पतित्ति जुज्जति, छणणं हिंसा छणणस्स पदं छणणपदं, जं भणितं—हिंसापदं, विहीए कहेंतो ण छणेण लिप्पति, तं णो अक्कुस्सेज्ज वा उद्धंसेज्जेज्ज वा उवहसेज्ज वा नो वत्थादि अवहरिज्ज वा, सो एवं विहीए कहेंतो नाणदंसणचरित्ततवविणयेहिं ण छलिज्जति, तथा तारिसं धम्मं न कहेति जेण पाणभूयाणं छगणा होज्जा, जहा अन्नउत्थिया एगंतेण उद्देसियाभिहाणं पसंसंति विहाराति कारेंति एवमादी, वीरो पुव्वभणितो, किं एत्तियं वीरलक्खणं जो ण लिप्पति छणणपदेण, उदाहु अन्नंपि ?, भण्णति 'से मेहावी' मेहया धावतीति मेधावी, सो बुद्धिमां, जो 'अणुग्घातणस्स' अणति जेणं ॥ ९९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[९६-१०४]

दीप
अनुक्रम
[९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१००॥

बंधमोक्षैपितादि

तं अणं, जं भणितं कम्मं, उग्घायणंति वा उप्पायणंति वा एगट्ठा, 'खेतण्णे' जाणओ, जं भणितं कम्मखवणओ, सो मेहावी किंचं 'जे य बंधपमोक्खमण्णेसी' जे इति अणुद्दिट्ठस्स, बंधो अट्ठविहं कम्मं, भिसं मोक्खो पमोक्खो, अप्पा आसवबंधस्स मोक्खं अण्णेसति बंधपमोक्खअण्णेसी, जं भणितं मग्गति, तस्सेसी तहिं जं एतं भणितं कुसलेण बंधमोक्खविहाणं, सो किं बंधो मोक्खो ?, भण्णति 'कुसले पुण णो बद्धे णो मुक्के' दव्वकुसला भावकुसला तहेव भाणियव्वा, पुण विसेसणे, किं विसेसेइ ?, अन्नेवि कुसला साहू, अयं तु तित्थगरकेवली अधिगतो, सो चउहिं घाइकम्मेहिं मुकत्ता णेव बद्धो भवोवग्गहेहि य बद्धत्ता ण मुक्को, अहवा बज्झब्भंतरसावज्जगंथस्स मुक्कत्ता मुक्को, भवोवग्गहकम्मेहि अमुक्कत्ता ण मुक्को, अहवा अण्णोवि साहू अप्पसत्थेहिं भावेहिं अण्णाणऽविरतमिच्छत्तेहि मुक्का, पसत्थेहिं तु चरित्ततवविणयादीहिं अमुक्का, से जं च आरंभे जं तेण वा बद्धेण वा उवदिट्ठं तं किं अप्पणावि आयिण्णं, जइ वा साहु सिस्सोवदेसो चेव भण्णति, 'से जं च आरंभे' 'से' इति तित्थगरो आरभति आयरति घडति जतति परक्कमति सव्वकम्मक्खयत्थं संजमतवविणये, विहीकरणं च आरभति, तव्विवच्चासं न आरभति, अहवा पाणाइवायमादि अट्ठारसट्ठाणा णारभति, तव्विवच्चासं आरभति, जण्ण कदाइवि आरद्धव्वं तं णारभति हिंसाति, जं वा सो भगवं न आरभति तं णारद्धव्वं, तं भण्णति 'छणं छणं परिण्णाए' छणिं हिंसाए जस्स जेणप्पगारेण छणणं भवति जहा सत्थपरिण्णाए एक्केक्कस्स कायस्स सत्थप्पगारा भणिता तं छणं दुविहाए परिण्णाए, अहवा छणं छणं परियाणाहि पाणवहाति अट्ठारसविहंपि एक्कं छणपदं, वितियं जइ ण छलिज्जसि अविहिकहणाए, एतं परिण्णाय 'लोगसण्णं च' लोयस्स सण्णा लोयसण्णा, जं भणितं लोयसुहं, चसद्दो आयसण्णं च, तं छणणं ण कुज्जा, अप्पोवमेण–'जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।' ण हणति, तस्स एवं संबुज्झ- ॥१००॥

प्रत

वृत्यंक [९६-१०४]

दीप

अनुक्रम [९८-१०८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः २ लोक० ॥१०१॥

माणाति जहाभणितगुणोवड्डियस्स सव्वज्झयणगुणावड्डियस्स वा विजियकसायलोयस्स 'उद्देसो पासगस्स णत्थि' उद्दिस्सति जेण सो उद्देसो, तंजहा-नेरइओ तिरिक्खजोणिओ मणुस्सो देवो, तहा सुही दुक्खी एवमादि, पस्सतीति पस्सगो, किमिति धम्मं, ण अत्थीति ण विज्जति, तव्विवरिओ अयाणओ अपस्सगो य बालो, स बालो पुण दोहि आगलितो बालो, पुण विसेसणे, विसयकसायभिभूतो अण्णाणी बुड्ढो जुवा कुमारो वा बालो, णिहतो रागादीहिं णिहो, 'कामसमणुण्णे' कामा सद्दादि ते इंदियगोयरपत्ते समणुण्णति, जं भणितं रागद्दोसेहिं गच्छति अपत्ते मुच्छेति अतिक्कंते अणुस्सरति 'असमियदुक्खे' समितंति वा सेवितंति वा एगट्ठा, ण समितं असमितं दुक्खं-कम्मं तव्विवागो वा, असमितदुक्खत्ता से 'दुक्खी दुक्खावट्टमेव अणुपरियट्टतित्तिबेमि' दुक्खाणं आवट्टो दुक्खावट्टो दव्वावट्टो, णदीए समुद्दे वा भावावट्टो संसारकंतारंतो, अणेगसो अणुपरियट्टति, अणु पच्छाभावे परि समंता सव्वओ परियट्टति अणुपरियट्टति इति । एवं तित्थगरोवएसा बेमित्ति । इति आचारस्स पढमसुयक्खंधस्स बितियं अज्झयणं लोगविजयओ नाम परिसमाप्तं ॥ उद्देसा ६ ॥

णमो सुयदेवयाए । अज्झयणाभिसंबंधो छज्जीवकायाधिगततत्तस्स विसयकसायलोयं चइत्ता सीयाणि उण्हाणि य सम्मं अहियासिज्जंति पसत्थाणि, अपसत्थाणि य सीयउण्हाणि परिहरेज्जा, एवमादि अज्झयणसंबंधो, दारकतो अत्थहिगारो दुविहो-अज्झयणत्थाधिगारो उद्देसत्थाधिगारो य, अज्झयणत्थाधिगारो सुहदुक्खतितिक्खा, उद्देसत्थाहिगारो चउव्विहो-'पढमे सुत्ता असंजति'त्ति गाहा(१९७-१४९)पढमे सुत्तदोसा तंजहा-जरामच्चुवसोवणीते नरे सततं मूढे, तह य 'माती पमाता पुणरेति गब्भं' जागरगुणा य 'जस्सिमे सद्दा य रूवा य' एवमादि, बितिउद्देसे भावसुया जहा दुक्खं अणुभवंति, जहा कामेसु गिद्धा

उद्देशा भावादि ॥१०१॥

तृतीय-अध्ययनं “शीतोष्णिय” आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१०५-
११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-
११४]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
शीतोष्णीये
१ उद्देशः
॥१०२॥

णिचयं करेती' एवमादि, सेहेण सुहदुक्खसहेण होयव्वं दुक्करं तवचरणं करेयव्वं । इदाणिं मा सासिस्सं एगंतेण दुक्खेण धम्मो, तेण तम्मतपडिसेहणत्थं भण्णति ततिए-ण य दुक्खेण, अकरणयाए व समणोत्ति, कहं ?, भण्णति-'संतिं विदित्ता अतत्तोवहिता पसत्थे, सो भावओ संजतो भवति ण एगंतेण दुक्खेण, अकरणयाए यत्ति 'सहिते दुक्खमाताए तेणेव य पुट्ठो णो झंझाए उद्देसंमि चउत्थे'(१९९-१४९)वक्खति'से वंता कोहं च'तच माणणिमित्तं०पावविरती,वक्खति य 'उवरतसद्दस्स पलियंतकडस्स' एवमादि विदुणो संजमो भवइ, एवं तस्स खवगस्सेणि अणुपविट्ठस्स मोक्खो भवतीति । इदाणिं अज्झयणत्थाधिगारो पुव्वभणितो स एव पुणो कहिज्जति, सुहे असंगता अणुलोमे उवसग्गे तितिक्खिज्ज, ण य दुक्खाओ उव्विइतव्वमिति, अज्झयणाहिगारो णाम-निप्फण्णे सीतं च उण्हं च दो पदा 'णामं ठवणा'.गाहा (१९९–१४९) णामठवणाओ गयाओ, वतिरित्तं दव्वसीतं 'दव्वे सीतल'गाहा (२००–१४९) जं उप्पत्तीए सीतलं दव्वं तं दव्वसीतलं, तत्थ सचेयणं हिमतुसारकरगादि अचेयणं हारादि मिस्सं सचित्तोदगकता जलदा, भणियं च–"दव्वसीतं भावसीतं० पोग्गलाणं सीतगुणो बुद्धीए विधीकतो, ण सो य दव्वो, एवं ताव अजीवेसु, जीवभावगुणो णाम अणेगविहो छव्विहं परूविता उवसमियखइयखयोवसमिया भावा सीया, उण्हं चउव्विहं, वति-रित्तो अग्गी दव्व उण्हो सचित्तो, अचित्तो आदिच्चरस्सी उ, मीसे उण्होदकं अणुव्वत्ततिदंडं, भावउण्हं जो उण्हदव्वगुणो, अहवा पसत्थभावुण्हं खाइयो भावो जेण अट्ठविहं कम्मं डज्झति, अहवा तवो, अप्पसत्थभावुण्हो उदइयभावो, तंजहा—कोहो उण्हो माणो य, अहवा भावसीते इमा विभासा'-'सीतं परीसह पमात' उवसमो विरई सुहं च उण्हं, एतेसिं पच्छिमद्धविभासा परी-सहतवुज्जमकसायसोगवेदारती दुक्खं (२०१–१४९) तस्स परीसहे पडुच्च सीतं च उण्हं च भवति, तंजहा-'इत्थी सक्कार

शांति-
ज्ञानादि
॥१०२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

तृतीय-अध्ययने प्रथमं-उद्देशक: 'भावसुप्त' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१०५-
११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-
११४]

श्रीआचा-
रांग सूत्र
चूर्णिः
॥१०३॥

शीतोष्ण-
विभागः

परिसहो य दो भावसीत' गाहा(२०२-१५०)जं भणितं सुहत्ता सीता भवंति, सेसा वीसं उण्हा. अहवा 'तिव्वपरिणाम' गाहा (२०३-१५०) अहवा अपसत्थसीतो सीतलचरणो पसत्थसीतो उवसंतमोहो खीणमोहो वा, अपसत्थभावुण्हो कोहोदयादि, पसत्थभावुण्हो न धावति, उदिण्णे वा परिसहे अणहियासेमाणो उण्हो, अहियासेमाणो सीतो, पमत्तो उण्हो, अप्पमत्तो सीतो, धम्मे अणुजुत्तो सीयलो, उज्जुत्तो उण्हो, तस्सेगट्ठ इमे भवंति, तंजहा-'सीतीभूतो' गाहा (२०५-१५०) विरतित्ति दारं, विरतो सीतो अविरतो उण्हो, तत्थ गाहा 'अभयकरो जीवाणं' (२०७-१५०) सुखं प्रति पसत्थं भावसीतं भवति, तंजहा-'निव्वाणसुहं' गाहा (२०७-१५१) तं पुण निव्वाणं सव्वदुक्खखयो मुत्तिसुहं च, भवत्थकेवलीणं कामा णियत्तमाणाणं च छउमत्थसंजयाणं 'तणसंथारणिवण्णोऽवि मुणिवरो०' इह सचित्तविसयविरत्तस्स संसारियं सहातिसुहं सीतं, अणुरत्तस्स उण्हंति, दारं सम्मत्तं । एगंतेण विसयकसाया उण्हा, मोहणिज्जं वा सव्वकम्मं, जेण भणितं-'डज्झति तिव्वकसाओ'(२०८-१५१) कोहग्गिणा डज्झति• चत्तारि सीयग्गिगा वा वेदग्गिणा वा, ततोवि उण्हतरो य तवो जो तं उण्हं वेयणिज्जं मोहणिज्जं डहति, सो पुण अहिगयछज्जीवनिकायो सद्धो विसयकसायलोगबाहिरो 'सीउण्हफाससुह' गाहा (२०९-१५१) सीतस्स य उसिणस्स फासो, अहवा फासो दंसमसगफासो गहितो, सरीरपीडागरं दुक्खं, विवरीतं सुहं, परीसहे सहति, कसायसहो कोहस्स उदय-निरोहो उदयपत्तस्स वा विफलं करणं, सेसं कंठ्यं,'सीयाणि य उण्हाणि य' गाहा (२१०-१५१) कंठ्या, सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं, सुत्तं अणंतरेण परंपरेण य०, अणंतरेण 'दुक्खी दुक्खाणमेव' इहत्ति सुत्ता अमुणी भावसुत्तो अन्नाणी अन्नाणं च महादुक्खं, भणियं च—"न ते कष्टतरं मन्ये, जगतो दुःखकारणम् । यथाऽज्ञानं महारोगं, दुरन्तमतिदुर्जयम् ॥ १ ॥ परंपरसुत्ते ॥१०३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१०५-११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-११४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१०४॥

सुत्तजागरौ

'असमियसुक्खे सम्मत्तदंसी' सव्वे य देसे य, देसे नरगतिरियगतियो वोच्छिन्नायो, अहवा चरिमभवमणुस्सस्स णरगतिरियदेवगईओ वोच्छिन्नायो, एवमादि देससमिता जाव भवत्थकेवली, जहा जालाधूमहीणो अग्गी उवसंतो भण्णइ एवं देसोवसंता, सव्वउवसंता सिद्धा, सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं अखलियं अमिलितं जहा अणुओगदारे जाव सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं, स एव अहिगारो, 'सुत्ता अमुणी अ' जहा सुत्तो चउव्विहो, वतिरित्तो दव्वसुत्तो निद्दासुत्तो, भावसुत्तो जो सावज्जआसवपवित्तो विसयकसाएहिं वा सो धंमं प्रति सुत्तो, अहव. अण्णाणी मिच्छद्दिट्ठी अविरतो य भावसुत्तो, विवरीतो जागरो, दव्वसुत्त जाव 'जह सुत्तमुच्छिय' गाहा (२१२-१५२) असहीणो-ण अप्पवसो खित्तचित्तादि सुत्तो, पडितो चेव पावति, मुच्छितो पडंतो पडितो वा, मतो पडंतो पडीओ वा, कंटकादि कूवादिसु तिव्वं अपडिगारं, सुत्तस्स णत्थि पडियारो, तहा हत्थे छिन्ने पादे वा भग्गे वा, मेहावी से ण वा खइओ 'मुणिणो सया जागरंति'त्ति मुणेति जगं तिकालावत्थं मुणी, सया णिच्चं 'जागरंती'ति जागरतीति जागरो, सो चउव्विहो-दव्वे जो णिद्दाजागरो भावे सम्मदिट्ठी संविग्गो जयमाणो, भावनिमित्तं 'दव्वजागर' ताओ गाहाओ भाणियव्वाओ । 'जागरह णरा णिच्चं' दरिसणावरणकम्मोदए जो संविग्गो जयणाजुत्तो सो भावजागरो एव, दव्वओ णाम एगे जागरे ण भावतो चउभंगो, भावजागरो 'एसेव य उवदेसे' गाहा (२१३-१५३) ते चेव दिट्ठंता विवरीता जहा त एव असुत्तअमत्तअमुच्छियादि सत्थावत्था सहीणचित्ता, पलित्ते वा विगादिभए वा पयलाते, जणे णस्सति वा सारभंडाणि वा नीणेति 'पंथादिसु'त्ति पंथं वा जाणाति, उज्जुओ अणुज्जुओ सावाओ निरवाओ वा, अणुभवति णाम पलित्तमादिएसु दुक्खाणि अपावमाणो सुहं अणुभवति, पंचविहे विसए, एस दिट्ठंतो, एवं णिच्चं भावजागरो विसयकसाएहिं अप्प- ॥१०४॥

प्रत
वृत्यंक
[१०५-११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-११४]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः
॥१०५॥

जागरता

मत्तो नाणादिधि जागरिता णरगादिसु दुक्खगब्भसिज्जासु सो ण अणंतसो वसति, इहेव आमोसहिमादी लद्धीओ पाविहिति, ओहिमणकेवलाणि य, परे य मोक्खो, 'इहमेगेसिं णो नातं' आदिसुत्तं, तत्थ नाणं सम्मं च भण्णति, इह भावजागरग्गहणा तिण्णिवि घिप्पंति 'जाणति सहसंमुइयाए'त्ति, इहवि मुणीतेत्ति मुणी नाणदंसणा घिप्पंति, जागरग्गहणा संमत्तचरित्तं एव, जग्गंता भगवंतो अणेगे, एगाएसा भण्णइ 'लोगंसि जाण अहियाए दुक्खं' लोगो छकायलोगो, जाण, ण हिता य अहिताय, दुक्खमिति कम्मं सारीराति वा, दव्वसुत्ताणं इहेव दुक्खं भवति पलित्तवलायादिसु, भावसुत्ताणमवि पाणइवायाइपवित्ताणं इहेव बंधवहघातातिं, परलोगे णरगादिदुक्खाणि, सो एवं भावजागरो 'समत्तं लोगस्स जाणित्ता' दव्वसमे माणारोहिता तुला, भावसमे आतोवमेण सव्वजीवेसु अहिंसओ, अहवा जं इच्छसि अत्तणए तं इच्छ परेवि जणे, एत्तिल्लयं जिणसासणए, तहा अण्णत्थवि भणितं-"श्रूयतां धम्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवोपधार्यताम्।" भण्णति०-अवत्थुवादित्ताभिमतगुणो वा पुव्वावरवाहतत्ता वा उवालंतमन्तवयणं वा अप्पमाणं, इहं पुण जहत्थवादित्वात् अविरुद्धं, अहवा समभावो समता-मित्तादिणिव्विसेसया 'तो समणो जदि सुमणो भावेण य जइ न होइ पावमणो' एवं समयं णच्चा 'एत्थ सत्थोवरए' एत्थंति एत्थं छज्जीवनिकायलोए द्रव्यसत्थं वुत्तं-किंची सकायसत्थं०, भावसत्थंपि भणितं, सत्थाओ उवरओ सत्थोवरओ, जं भणितं-निवित्तो, धम्मजागरियाए जागराहित्ति वक्कसेसं, जस्स जओ जेसिं वा एतं जह भणितं पाणाइवायवेरमणं अत्थि से मुणी भवति, धम्मजागरियाए जागरति, एवं सेसाणिवि वयाणि, अहवा 'एत्थ सत्थोवरए'त्ति जं जं संजमसत्थं ततो ततो उवरतो, तत्थ पाणाइवायादीणि अस्सवदाराणि, तत्थ पाणाइवाए भणितं, एवं सेसाणिवि वत्तव्वाणि सभावणगाणि, एत्थं पंचमस्स इमाओ पंच भावणाओ 'सद्दो जाव ॥१०५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१०५-११०]

दीप अनुक्रम [१०७-११४]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१०६॥

विषयाः

फासो'त्ति ततो भण्णति-'जस्सिमे सद्दा य रूवा य' जस्स जतो जेसिं वा 'इमे'त्ति सव्वलोगप्पतीता सद्दा निजा(सज्जा)ति रूवा कालादि, एवं सेसावि भाणियव्वा, अहवा सव्वावि एते इट्ठा य अणिट्ठा य, अभिमुहं सम्मं अणु आगता अभिसमण्णागया, जं भणितं-सम्मं उवलद्धा, इहलोगेऽवि अहिता सद्दाइविसया, किमु परलोए ?, "सद्देण मओ रूवेण पतंगो महुयरो य गंधेण।" अहवा पुप्फसालिओ सद्दे अज्जुणयचोरो रूवे गंधो गंधप्पिओ रसे सोदासो फासे सच्चई, परलोए नरगादिभयं, जो एते इहलोइए परलोइए य विसयाण विवागे सम्मं उवलभित्ता तेहिंतो णियत्तति 'से आतवि' वेतति, लोगेवि वत्तारो-अहो अणेण चिरस्स अप्पा णातो, पडिपक्खेण ण एसो अप्पयं वेयति, पढिज्जति य-'सो आतवं' अप्पा से अत्थि आतवं, वत्तारोऽवि भवंति-अहो अप्परक्खओ, विवरीयं अणातवं, वेतिज्जइ जेण स वेदो तं वेदयतीति वेदवि 'धम्मवि' धम्मं वेययइ धम्मवी, बंभं वेदयति बंभवी 'पण्णाणेण परियाणति' पण्णायति जेण तं पण्णाणं, परि समंता जाण अवबोहणे, लोगो छक्कायलोगो, सो एवं पण्णाणेहिं छक्कायलोगं च दुविहाए परिण्णाए परियाणमाणो 'मुणीति वच्चे' स वयणिज्जो मुणित्ति वा, समणोत्ति वा माहणोत्ति वा, 'धम्मविदु'त्ति उज्जू धम्मो सभावो सव्वदव्वभावे विदति धम्मविदू, जहवा सुयधम्मं अत्थिकायधम्मं च विदतीति, अंजुत्ति उज्जुं, जं भणितं निरुवहयं, तं च करेति, केण आलंबणेण वएसु अप्पमत्तो जागरति ?, भण्णइ-'आवट्टसोते संगमिणंति जाणाति' दव्वावट्टो णदिमादिसु, भावावट्टो संसार एव, 'रागद्वेषवशाविद्धं, मिथ्यादर्शनदुस्तरम्। जन्मावर्त्ते जगत् सर्वं, प्रमादात् भ्राम्यते भृशम्॥ १॥' सज्जति जेण स संगो-रागदोसा आवट्टस्संगभूता, तेहिं कम्मसंगो भवति, तेण कम्मसंगेण पुणो २ सज्जति, तं आवट्टसोते संगं अभिमुहं जाणाति अभिजाणति, जं भणितं-ण करेति, अहवा संगोत्ति वा विग्घोत्ति वा वक्खोडित्ति वा एगट्ठा, ॥१०६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१०५-
११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-
११४]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१०७॥

शीतोष्ण-सहनादि

तं भावसोतं संगो, तं अभिजाणति, जाणित्ता न करेति, अहवा अमुणित्तं अरिजुत्तं आवट्टसोतसंगंति वट्टति, तं अभिमुहं जाणति, जाणित्ता णायरति, सो एवं सुत्तजागराणं गुणदोसे जाणओ 'सीओसिणचायी' सीतउण्हा पुव्वभणिता, चाएति साहति सक्केइ वासेहि तुट्टाएति वा धाडेति वा एगट्ठा, 'णिग्गंथो' बज्झब्भंतरेण गंथेण निग्गंथो, 'अरतिरतिसहे' रति असंजमे अरति संजमे ते दोवि सहेति 'फरुसयं न वेदेति' फरुसं नाम णेहविरहितं जं तस्स बंधवहघातादि परिस्सहा उप्पज्जंति तेहिं न खुब्भइ इति पुढविव्व सव्वसहो, अहवा फरुसियं-संजमो, ण हि फरुसत्ता संजमे तवसि वा कम्माणि लग्गंति अतो संजमं तवं वा फारुसयं ण वेदेति, जहा भारवाहो अभिक्खणं भारवहणेण जितकरणत्तेण य गुरुयमवि भारं ण वेदयति, ण वा तस्स भारस्स उव्वियति, सो एवं फारुसयं अवेदंतो 'जागर वेरोवरते' जागराहि धम्मजागरियाए निद्दाजागरेण य, अभिमाणसमुत्थो अमरिसो वेरं, सव्वजीवेहिं वेराओ उवरओ वेरोवरओ, अहवा वेरं कम्मं, तं हिंसातितो भवति, कारणे कज्जुयाराओ, हिंसातीतो उवरतो, 'वीरे' भणितो, वेरउवरमा किं भवति ?, भण्णति-'एवं दुक्खा पमोक्खसि' एवमवधारणे वेराओ इह परत्थ य दुक्खं भवति, उवरतो तु स कम्माओ संसाराओ य भिसं विविहप्रकारेहिं वा मुच्चति सुत्तदोसाओ, 'जरामच्चुवसोवणीए' णरो जिज्जति जेण सा जरा, मरणं मच्चू, जराए मच्चुणा य सव्वओ गतो परिगतो, ण तं किंचिट्ठाणं जत्थ ण जिज्जति ण मरति वा, अतो जरामच्चुवसोवणीए, देवलोगे ण होज्जा ?, तत्थवि अंतकाले ण तहा धितिमादीणि भवंति, चवणकाले सव्वस्स जायति 'माल्यग्लानिः कल्पवृक्षप्रकम्पो०' जतो एवं ततो एवं, तेण सव्वं जरामरणपरिगतं जगं, 'सततं' निच्चं नाणावरणदरिसणावरणोदयेण भावसुत्तो मूढो, कम्मक्खयकारणं धम्मं नाभिजाणति, एतेण भावसुत्तदोसेणं 'पासिय आतुरे मो पाणे' सो भावजागरो तेहिं भावसुत्त- ॥१०७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१०५-११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-११४]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥१०८॥

मतिम-च्चादि

जणितेहिं सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं आतुरीभूतो अच्चत्थं तुरति आतुरो, मो इति पदं वक्कपूरणे, पावोत्ति वा, ते तब्भया अप्पमत्तो णिच्चजागरो परिव्रजति, सव्वतो संसाराओ वयति परिव्रजति 'मंता एतं मतिमं' मतिमं पासयंतो णच्चा एतं जं दुक्खं पासिय आतुरमो, अहवा सुत्तदोसा जागरगुणा एतं मंता, मती अस्स अत्थीति मतिमं 'पासहि'त्ति पेक्खाहि, पासित्ता मा सुयाहि, अहवा जो एवं मंता भवति तं मंतिमंति पेच्छाहि—जाणाहि य, 'मंता एवं सहितंति पास' सहितो नाणादीहिं आयहितो व सहितो, मतिमां किं पश्यति ?, भण्णति—'आरंभयं दुक्खमिणंति' आरंभो णाम असंजमो आरंभयं 'दुक्ख'मिति कम्मं 'इद'मिति जं एतं पच्चक्खमिव दीसति हीणमज्झिमउत्तमविसेसेहिं 'णच्चा' जाणित्ता, तेण निरारंभो धम्मजागरियं जागराहि, जो पुण विसयकसायावादितचेता भावकसायी सो 'मायीपमादी पुणरेति' मायी पमायी य मातीप्पमाति, अहवा मायी णियमा पमादी, एवं कोहीवि माणीवि मायीवि लोभीवि, जेण एगंतेण 'उवेहमाणो सद्दरूवेसु' उवेहणा अणाउरो, ण इट्ठाणिट्ठेहिं विसएहिं रागदोसे करेति, अव्वावारउवेहाए उवेहति सव्वविसए 'अज्जू' उज्जू जिइंदिओ संजतो भवति, अण्णहा असंजतो, कसायाविद्धस्स किं संजतत्तं ?, किं णिमित्तं अज्जवं भाविज्जति ?, भण्णति—जम्ममरणभया, अत एव भण्णति 'माराभिसंकी' मरणं मच्चू, खणे खणि मारयतीति मारो आवीचियमारणेण, ततो मारणा मिसं मुच्चति, जं भणितं-ण पुणो जायति मरति वा, पढिज्जति य–मारावसक्की' सो मुणी धम्मजागरियाए जागरमाणो मारावसक्की—मरणं मच्चू वा मारो, जं भणितं पाणाइवातो, ततो अवसक्कति, कम्मसमारंभाओ वा अवसक्कति, कहं मारावसक्की भवति ?, भण्णति—'अप्पमत्तो कामेहिं' ण पमत्तो अपमत्तो, जं भणितं अवहितो, इच्छाकामा मयणकामा वा मा मे छलेहिंत्ति 'उवरतो पावेहिं कम्मेहिं'ति दिट्ठअवायस्स अकुसलाओ उवरमणं उवरमो, तहा पावकम्माणि ॥१०८॥

प्रत
वृत्यंक
[१०५-११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-११४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१०९॥

पर्यवजात-खेदज्ञादि

हिंसादीणि तेहिं उवरतो 'वीरो आयगुत्ते' संजमवीरिएण वीरो भवति, मणोवायकाएहिं आतोवयारं काउं भण्णति अप्पए अप्पणा वा गुत्ते आतगुत्ते, के आतगुत्ते ?, भण्णति-'जे पज्जवजातस्स खेयण्णे' अहवा विसयाधिगारो अनुयत्तति, तंजहा-उवेहमाणो सद्दरूवेसु अप्पमत्ते कामेसु, ते य विसया पज्जाएहिं जायंते, तेण भण्णति-'जो पज्जवजातसत्थस्स,' तत्थ पज्जवा दव्वाणि चेव, भणितं च 'कतिविहा णं भंते ! पज्जवा पण्णत्ता ?,' तत्थ सद्दविसयपाउग्गेहिं सद्दा उप्पज्जंति, तंजहा-वेणुवायअंगुलिसंयोगपज्जवयाओ वेणुसद्दो तहा भेरिदंडसंयोगाओ भेरिसद्दो तालुउट्ठपुडसंयोगाओ भासासद्दो एवं सेसेहिवि आयोज्यन्ते, तेसिं च विसयाणं अरागदोसा सत्थं, जो तस्स विसयपज्जवसत्थस्स खेयण्णो, असत्थं णाम संजमो, ण कस्सइ संजमो सत्थं भवति. अणघातित्ता, अहवा रागदोसमोहातिपज्जवेहिं जातं अट्ठविहं कम्मं, तस्स य सत्थं तवो, जेण तवसा णिज्जरिज्जति 'से असत्थस्स खेतण्णे'त्ति असत्थं-संजमो, जो असत्थस्स खेअण्णे स पज्जवजातसत्थस्स खेत्तण्णे, जं भणितं-जो तवस्स खेतण्णो सो संजमस्स खेतण्णो, जो संजमस्स खेतण्णो सो तवस्स खेतण्णो, तस्स एवं संजमखेतण्णस्स कम्मबंधो नो भवति पुराणं च तवसा खवेइ, खीणे य अकम्मो भवति, तस्स 'अकम्मस्स ववहारो ण विज्जति' ववहरणं ववहारो, जं भणितं होति ववदेसो, तंजहा-नेरइओत्ति वा तिरिक्खजोणिओत्ति वा मणुओत्ति वा देवोत्ति वा, अहवा बालो कुमारो जुवाणु एवमादि, जइया वा णामगोत्तभेदा अकम्मस्स एवमादि ववदेसा ण विज्जंति तेण अकम्मस्स ववहारो ण विज्जति, सकम्मस्स तु विज्जति, कहं ?, 'कम्मुणो उवहि' उवही तिविहो-आतोवही सरीरोवहि कम्मोवहि, तत्थ अप्पा दुप्पउत्तो आयउवधी, ततो कम्मुवही भवति, सरीरोवहीओ ववहरिज्जति, तंजहा-नेरइयसरीरो ववहारेण उ नेरइओ एवमादि, तहा बालकुमाराति, भणियं च-'कर्म्मणो जायते कर्म्म, ततः संजायते भवः। भवा-

॥१०९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१०५-११०]

दीप
अनुक्रम
[१०७-११४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥११०॥

कर्मप्रतिलेखादि

च्छरीरदुःखं च, ततश्चान्यतरो भवः ॥ १ ॥ जतो एवं कम्मोवाही जायति तेण 'कम्मं च पडिलेहाए' 'कम्ममूलं च जं छणं' कम्मं अट्ठविहं च पूरणे, पडिलेहा णाम कम्मसंभवो बंधो य मूलुत्तरपगडि, अहवा पगडिबंधो ठिइबंधो पदेशबंधो अणुभागबंधो, एतं पडिलेहाए, कम्ममूलं च जं छणं, मूलंति वा प्रतिष्ठानंति वा हेतुत्ति वा एगट्ठा, छणणं हिंसा, एवं मुसावायायीवि, रागदोसमोहो वा कम्ममूलं भवति, तप्पदोसणिण्हवादी य कम्मे हेऊ, पढिज्जइ य 'कम्ममाहूय जं छणं' कम्मं आवहतीति कम्मावहं, कम्मं चाणुकरिसणेहिं अणुकरिसयति, कम्मं च पडिलेहे इह य बज्झति, सो एवं पडिलेहिय सव्वं 'समायाए' नाणबुद्धीए पडिलेहित्ता सम्मं आताय, जं भणितं—सम्मं उवदेसं गिण्हित्ता, 'दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणे' दो इति संख्या रागदोसेहिं अदिस्समाणो रागी रागेण दिस्सति एवं दोसीवि, वीतरागो दोहिंवि अंतेहिं न दिस्सति, परिण्णा मेहावी य पुव्वभणिया, 'विदित्ता लोगं वंता लोगसण्णं' विदित्ता सम्मं उवलभित्ता जीवलोयं कसायलोयं वा तव्विवागे य, भणिया विसयकसायसण्णा, जावइया वा लोयसन्ना एताउ वंता एगाए धम्मसण्णाए मइमं परक्कमिज्जासित्ति बेमि 'स' इति स सीतोसिणच्चाई सेहो परक्कमिज्जा, परिक्कमिज्जासि घडिज्जासि जोत्तेज्जासि, सीहो वा, ण पच्छतावं अवलंबिज्जा, सो ण सीहत्ताए निक्खंतो सियालत्ताए विहरति, सियालत्ताए निक्खंतो सीहत्ताए विहरति, भङ्गा चत्वारि, बेमि, एवं सीओसणीयतृतीयाध्ययनस्य प्रथमः ॥

उद्देसत्थाभिसंबंधो स एव, बितिए भावसुत्तफलं दुहं अणुभवति, अणंतरसुत्ते 'मतिमं परक्कमिज्जासि'त्ति, इहवि 'जातिं च वुड्ढिं च इहऽज्ज पासे (४-१५८) पासंति बुद्धीए, परंपरसुत्ते 'विदित्ता लोयं वंता लोयसण्णं' विदित्ताण पच्छा उट्ठाय, इहवि जातिं च वुड्ढिं च इहऽय्य जाया संजाणाहि य, तत्थ जणणं जायते वा जाति, जं भणितं-पसूयि, वड्ढणं वड्ढते वा वुड्ढी, जं भणितं ॥११०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

तृतीय-अध्ययने द्वितीय-उद्देशक: 'दु:खानुभव' आरब्ध:,

प्रत वृत्यंक [१११-११४]

दीप अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१११॥

जातिदर्शनादि

जरा, तत्थ य जं वुत्तं बितिए दुक्खं अणुभवंति, तंजहा–जातिं च वुड्ढिं च, भणितं च–“जातमाणस्स जं दुक्खं, मरमाणस्स जंतुणो। तेण दुक्खेण संमूढो, जातिं ण सरति अप्पणो ॥१॥ एवमादि, ‘इधे’ति इह माणुस्से ‘अज्जे’ति णाणुप्पत्तीए आदितो भगवं गोतमं आह, जातिं च वुड्ढिं च अज्जेव पस्सामो, थेरा दट्ठूण य संबुज्झे बहुविग्घाणि सेयाणि, अहवा ‘अज्ज’ इति आमंत्रणं हे आयरिय! खेत्तओ जाइओ कुलाओ, पासाहि णाम पेक्खाहि, जातित्ति गब्भसंपीलणा, एस चेव दुक्खं, वुड्ढित्ते चंकमणातिपयोगेहि सव्वया तातिं दुक्खं पास, भणितं च–“दसमं च दसं पत्तो०”एवं पस्सित्ता तब्भया भूतेहिं जाण पडिलेह सातं, साता भणिता, जेण णामं जाणमाणो अप्पोवमेण सव्वभूयाणि सुहप्पियाणि, एवं नच्चा तेसिं पडिलेह सातं–सुहं, सातविवरीतमसातं, जह तुज्झ सातं पितं अस्सातं अप्पितं एवं अण्णस्सवि, एवं णच्चा अण्णस्स अस्सातं न कुज्जा, अतो जम्मातिदुःखं ण पाविहिसि, भणियं च-“यथेष्टविषयात्सातमनिष्टादितरत् तत्र। अन्यतरो(अपरे)ऽपि विदित्वैवं,न कुर्यादप्रियं परे॥१॥”जम्हा एवं ‘तम्हा तिविज्जे परमंति णच्चा’ विज्जत्ति हे विद्वन्! अहवा अतिविज्जू, परं माणं जस्स तं परमं, तं च सम्मदंसणादि, सम्मदंसणनाणाओवि चरित्तं, भणियं च–“सुयनाणम्मिवि जीवो वट्टंतो सो ण पाउणइ मुक्खं। जह छेतलद्धणिज्जामओवि० ॥ १ ॥” चरित्तस्स परं निव्वाणं, अहवा सम्मदंसणं परं, भणितं च–“भट्ठेण चरित्ताओ सुट्ठुयरं दंसणं गहेयव्वं। सिज्झंति चरणरहिया दंसणरहिया ण सिज्झंति ॥१॥” सो एवं ‘सम्मदंसी ण करेति पावं’ पंसेति पातेति वा पावं, तं च हिंसादि, तस्स तु मूलहेऊ रागदोसमोहा, तेहिवि गरुयतरा णेहपासा इतिकाउं भण्णति—‘उम्मुंच पासं इह’ तुज्झ तं उभयं वा मुंच उम्मुंच, दव्वपासा रज्जुमादि विसयकसाया भावपासा, ‘इहेत्ति’ इह माणुस्से, तत्थ नरदेवेसु अणंताणुबंधिणो कसाया कोइ मुंचति, तिरिक्खजोणिएसु जाव बितियकसाया,

॥१११॥

प्रत वृत्यंक [१११-११४]

दीप अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥११२॥

पाशोन्मोचनादि

मणुस्सेहिं सव्वे मुंचतित्तिकाउं भण्णति—उम्मुंच पासं इह मच्चिएहिं, अहवा पुत्रकलत्रमित्रादिपासे विसयकसाए य उम्मुंच इह मच्चियेसु, किमत्थं कामातिपासा मुंचंति ?, भण्णति-सो कामभोगलालसो तेसिं आदाणहेऊ हिंसादीणि पावाणि आरंभति, अतो सो 'आरंभजीवीसुभयाणुपस्सी' आरंभेण जीवतीति, तंजहा-इमं छिंदह इमं भिंदह इमं मारेध सो एवं आरंभजीवी, महारंभपरिग्गहो इहेव बंधवहरोधमरणावसाणाइं भयाइं अणुपस्सति, अणुगतो कम्मेहिं पस्सति अणुपस्सति, जं भणितं-अणुभवति, जहा चोरादि, परलोगे णरगादिभयाणि, किं एवं आरंभपरिग्गहेण परे अणेगदोसा ?, भण्णति—'कामेसु गिद्धा णिचयं करेंति' इच्छाकामा मयणकामा य, गिद्धा मुच्छिया अहिओ चओ णिचयो, दव्वे हिरण्णादि तन्निमित्तं एव भावकम्मणिचयं दिग्घसंसारियं तच्चिता तम्मणो करेति, पाउसे उण्णया महामेहा सस्साणि णिप्फाइंति सम्मं समत्थं वा सिंचमाणो, समणपंडिया हिंसादीहिं आसवदारेहिं अणिवारितप्पाणो तं कम्मणिचयं पुणो २ पासंति तेण गुरुसंभारकडेण आगरिसिज्जमाणा पुणो २ एंति गब्भगतदुक्खाणि, वक्कसेसेणं, सो एवं अविरतो 'अवि से हासमासेज्जा' अवि सो इमिणावि हंता हंता, णंदि पमोदो हरिसो एगट्ठा, किं पुण मंसातिउवभोगत्थं जो मारित्ता णंदी मण्णति ?, तत्थ कालासवेसिकपुत्तो जंबुयं हंता णंदिं मण्णयंतो, एवं मुसावायं भासित्ता, तहा अदत्तादाणं, मेहुणपरिग्गहेवि णंदिं मण्णति, किं पुण उवभोगत्थं ?, तच्च तस्स सहासेणावि कतं पावं अलं बालस्स संगाय, जं भणितं-पज्जत्तं, संगोत्ति नरगातिगमणं संगाय, जं भणियं कम्मबंधाय, एत्थ लोइयं उदाहरणं-हसता किल संबेन, दुर्वासाः कोपितो ऋषिः। तेन विष्णुकुलं दग्धं, हसंतं पितृघातकम् ॥१॥" किमु अलं संगेण ?, भण्णति-'वेरं वड्डेइ अप्पणो' भावकम्मंपि बद्धासओविव वेरी सुचिरभावितं पावफलं निज्झाएति अतो वेरं, जओ य एवं 'तम्हाऽतिविज्जं परमंति ॥११२॥

प्रत वृत्यंक [१११-११४]

दीप अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचा-गंग सूत्र-चूर्णिः ॥११३॥

अग्रमूलादि

णच्चा' तम्हा वेरउवरमा विद्वन् परमत्थोवकरणं वेरउवरमो णच्चा–जाणित्ता, आतंको दव्वआतंका भावातंका य पुव्वभणिता, तं आतंकं पासति आतंकदंसि ण करेति पावं- हिंसाति, कहं पुण ण करेति ?, 'अग्गं च मूलं च' अग्गे भवं अग्गं दव्वग्गं रुक्ख-पव्वतादीणं, दव्वमूलमवि रुक्खातिमूलं, अत्थि पुण कोयि रुक्खो मूलच्छिण्णो ण विणस्सति जहा खंधवीया सल्लइमादि, कोयि अच्छिण्णोऽवि णस्सइ जहा तालो, भावग्गं भावमूलं च उदइयभावनिप्फण्णं, तंजहा--चत्तारि घाइकम्माइं मूलं केवलिकम्माइं अग्गं, एयं अग्गं च मूलं च विगिंच वीरे, अहवा अट्ठ मूलपगडीओ अग्गं. मिच्छत्तपंचगं वा मूलं सेसा अंसा अग्गं, अहवा मिच्छत्तं बारस-कसायायमूलं सेसा अंसा अग्गं, मोहणिज्जं वा मूलं सेसप्पगडीओ अग्गं, विगिंचणा णाम उज्झित्ता पिहीकरित्ता, पढिज्जइ य–मूलं च अग्गं च वियत्तु वीरो' तत्थ मूलो असंजमो कम्मं वा, अग्गं संजमो तवो वा, अहवा बंधो मूलं मोक्खो अग्गो, भदंतणागज्जु-णिया तु पढंति–मूलं च वियेत्तु वीरे, कम्मासवा वेति विमोक्खणं च' अविरता अस्सवे जीवा विरता णिज्जरंतित्ति, इच्चेवं तवसा विगिंच कम्माणि 'पलिछिंदिया णाणि कम्मदंसी' संजमेण नरगादीणि कम्मबंधणाणि समंता छिंदिय पलिछिंदिय, सो एवं पलिच्छित्ता सो तवसा वीगिंचति कम्माणि णिक्कमदंसी, ण तस्स कम्मं विज्जतीति णिक्कम्मा, को सो ?, मोक्खो, णिक्कम्माणं पस्सतीति णिकम्मदंसी, तदत्थं घडति उज्जमइ वा, णिक्कम्माणं वा दरिसेति णिकम्मदरिसी–सिद्धदरिसि मोक्खदरिसी वा, 'एस मरणा पमुच्चति' एसोत्ति भणितो णिक्कम्मदरिसी भविता पच्छाऽऽविजिगमरणा सव्वो वा संसारो मरणं ततो मिसं मुच्चति पमुच्चति, जो एवं मरणातो पमुच्चति मोएति वा अण्णेसिं ते 'से हु दिट्ठपहे मुणी' सो इति से मूरुजाणओ छित्ता वा मरणा मोयमाणो मुच्चमाणो वा गम्मति जेण सो पंथो नाणादि स एवेगो मोक्खदिट्ठपहो भवति, अहवा दिट्ठवहे दिट्ठो वहो जेणेव अहवा ॥११३॥

प्रत

वृत्यंक [१११-११४]

दीप

अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥११४॥

दृष्टपथादि

विवागो य सो दिट्ठवहो तं दट्टूण ण करेति, अहवा से हु दिट्ठभए मुणी, दिट्ठं जेण संसारियं जरामच्चुवावि भयं सारीरं माणसं च अप्पियसंवासाति परआतउभयसमुत्थं स एवेगो लोगंसि परमदंसी, लोगो तिविहो–उड्ढादि, छज्जीवकायलोगो वा, परो–संजमो मोक्खो वा परं पस्सतीति परमदंसी, सीतोसिणच्चाइ साधुत्ति वत्तति, जम्मातिदुक्खभीरू ‘विवित्तजीवी उवसंते’ अणेसणाति दोसेहिं विवित्तं आहारति, दव्वविवित्तजीवी इत्थिपसुपंडगसंसत्तिविरहियासु वसहीसु वसमाणो, भावविवित्तजीवी रागदोसा भावित्ता जीवी असंकिलिट्ठतवसंजमजीवी वा उवसंतो इंदियनोइंदिएहिं ‘समिते’ इरियातिसमिते ‘सहिते’ नाणादि सहितो, अहवा विवित्तजीवित्तेण उवसमेण समितीहि य समयागतत्था सहितो ‘सता’ णिच्चं स तेहिं चेव समितिमाइयेसु ‘जते’त्ति जाति, केच्चिरकालं जते ?, भण्णति–जाव मच्चूकालो ताव ‘कालकंखी पडिव्वए’ य पंडियमरणकालं कंखमाणो समंता गामनगरादीणि वये परिव्वये, जं भणितं–जावज्जीवाए सीतउसिणच्चाई अहियासंतो परिव्वए, किमत्थं एसो पयत्तो जावज्जीवाए अणुपालिज्जइ ?, न तु अप्पेण कालेण तवसा कम्माणि खविज्जंति ?, भण्णति–‘बहुं च खलु पावं कम्मं’ बहुमिति मूलुत्तरपगतिविहाणं दिग्घकालट्ठितीयं तं च भगवं जाणइ, जहा ण एतं अप्पेण कालेण अवेति, तेण तक्खवणत्थं भण्णति कालकंखी परिव्वएत्ति ‘सच्चंसि धितिं कुव्वह’त्ति सब्भो हितं सच्चं संजमो वा सच्चं तत्थ करेह, अणलियं वा सच्चं, जावज्जीवाए संजमं अणुपालिस्सामि परिण्णा य जहापरिण्णं अणुपालंतेण सच्चं, अण्णहा अलियं, तेण सच्चंसि धितिं कुव्वमेव, अहवा ‘वीतरागा हि सर्वज्ञा, मिथ्या न ब्रुवते क्वचित्। आगमो ह्याप्तवचनं, आप्तं दोषक्षयाद्विदुः ॥ १ ॥ वीतरागोऽनृतं वाक्यं, न ब्रुयाद् हेत्वसंभवात्।” अतो सच्चं तित्थगरवचनं, सच्चं तंमि धितिं कुव्वह सिस्सामंतणं, किंच ‘एत्थोवरते’त्ति सच्चपडिपक्खे अलिए सच्चाधिट्ठितव्रताण वा ॥११४॥

प्रत

वृत्यंक [१११-११४]

दीप

अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥११५॥

पडिपक्खे, उवरतो णिव्वित्तो मेहावी भणितो, सव्वं–अपरिसेसं पावं–अट्ठविहं कम्मं भवं वा झोसेइ, जं भणितं सोसेति, भणितो अप्पमादो, तेण कसायादिपमादेण पमत्तो 'अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे' अणेगाणि चित्ताणि जस्स स भवति अणेगचित्ते अत्थोवज्जणे ताव 'कइया वच्चति सत्थो॰' दधिघडियादरिद्देण कविलेण य दिट्ठंतो, 'अयं'ति जो पमत्तो, पुरिसजणो पुरिसो, दव्वकेयणं चालणि परिपूणओ वा एवमादि दव्वकेयणं, अरिहतित्ति इच्छति, भावकेयणं इच्छा, सा ण सक्का बहुएण विहाणेण पूरेउं, भणितं च–"जहा लाभो तहा लोभो॰" गाहा, न शयानो जयेन्निद्रां, न भुंजानो जयेत् क्षुधाम्। न काममानः कामानां, लाभेनेह प्रशाम्यति ॥१॥" एवं से अणेगचित्ते इमेहिं उवाएहि अत्थं उवज्जिणति, तंजहा–'अण्णवहाए' अण्णो णाम परो अबंधु अणुस्सितो वा, जहा चोरा धणियं मारेत्ता तं धणं गिण्हंति, रायाणो संगामाइएसु परे मारेंति, परितावणं च कप्पणपकप्पणकसप्पहाराईहिं दासीदासभिच्चऽबलादीणं परिग्गहो, जं भणितं सच्छंदनिरोहो, कोयि जणवयवहाए, जह मिच्छादी करेंति, पररट्ठमद्दणे वा रायाणो य जणवयं परितावयंति, बंधघातादीहिं परितावेंति जणवयं अवराहे वा, 'जणवयपरिग्गहाए'त्ति ममेतं रज्जं रट्ठं वा, एवं परज्जंपि परिगिण्हंति विक्कमेण, एरिसाणिवि कोइ कम्माइं करित्ता पव्वाति ?, आमं, तंजहा 'आसेवित्ता एयमट्ठं'ति जो एसो जणवयवहाति भणितो इच्चेयं आसेवित्ता एगे समुट्ठिता भरहाति संजमसमुट्ठाणेणं सम्मं उट्ठिता तेण भवग्गहणेणं सिद्धिं पत्ता, एवं चेव अज्जुणपभवगादीणं च पुव्वखरकम्माणं सिक्खगाणं समासासो आलंबणं च 'तम्हा तं बितियं' संजमसमुट्ठाणेण उत्थाय कामभोगहिंसादीणि वा आसवदाराणि अहवा बितियं णाम पुणो २ 'त'मिति विसयसुहं असंजमं वा आसेवणं–करणं, सहस्ससोवि आसेविज्जमाणाणं विसयाणं तित्तिअभावे 'णिस्सारं पासिय नाणी' णाणी णाम जो विसए जहावट्ठिते पासति, 'किंपाकफल-

उपरतादि

॥११५॥

प्रत वृत्यंक [१११-११४]

दीप अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥११६॥

समाना विषया हि निषेव्यमानरमणीयाः। पश्चाद्भवन्ति कटुकास्त्रपुषिफलनिबन्धनैस्तुल्याः ॥१॥ चुडलिविव मुंचमाणगरुया, अहवा 'णिस्सारं' माणुस्सं जलबुब्बुदसमाणं तं पासिय, ननु संसाराणि विसयसुहाणि मणुयाणं देवाणं च, मणुस्सेसु चक्कवट्टिबलदेववासुदेवादीणं, सुराणं इंदसामाणियादीणं, भण्णति अणिच्चत्ता णिस्सारा, अतो य 'उववातं चयणं च णच्चा' उपपतनं उववातो, जं भणितं—जम्मं, चयणं णाम मरणं, ण य तेल्लोकेवि तं ठाणं अत्थि जत्थ उववातो चयणं वा ण भवति, तेणं चयणोववातजुत्तत्ता संसारो निस्सारो, अच्चंतसुहो ण भवति, जतो एवं तेण जम्ममरणभीरू णिच्चं अप्पमत्तो 'अणण्णं चरति परममाहणे' अण इति परिवज्जणे ण अण्णं अणण्णं अतुल्लं वा नाणाइ मोक्खमग्गं चरति समणोत्ति वा माहणोत्ति वा एगट्ठा, एवं अणण्णं चरमाणो माहणो ण हणे ण हणावए हणंतं नाणुजाणए, अहवा अत एव सो अणण्णं संजमं चरति जेण न हणे ण हणावए, समं अतुल्लं अणण्णचरित्तपालणत्थमेव पंच महाव्रताणि, तत्थ आदि अहिंसा, तप्पसिद्धीए भण्णति—'से ण छणे' ण किंचिवि सत्थं जोगतियकरणत्तिएणं ण हणे ण हणावए हणंतं णाणुमोदए, चउत्थव्रतपसिद्धीए भण्णति—'णिव्विंदधा णंदी' अविमणे णंदि पमोदो, णिच्छितं विंद णिव्विंद, सव्वहिं असंजमे जो णंदी विसएसु आतसरीरे वा पुत्रकलत्रादिसु वा णिव्विद—गरहह, एवं णिच्छितं विंद जह एते सद्दादि किंपाकफलसमाना, तेसिं च विसयाणं फरिसो गरुउत्ति अतो तप्पडिवज्जणत्थं आरभ्यते, 'अरते पयासु' पयांति पजणेंति वा पया, जं भणितं इत्थीओ, तासु तिविहेण अरज्जमाणो णिव्विज्ज णंदी, अदत्तादाणपरिग्गहावि इत्थिणिमित्तमेव सेविज्जंति, एगग्गहणे गहणं, उत्तमधम्माणुपालणत्थं च 'अणोमदंसी' ओमं णाम ऊणं ण ओमं अणोमं दरिसणं, जं भणितं-उत्तमसम्मदिट्ठी, अणोमाणि वा नाणादीणि पासति अणोमदंसी, ताणि य उत्तमाणि आरभति, अहवा तहा तहा अप्पाणं

णिस्सारत्वादि

॥११६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१११-
११४]

दीप
अनुक्रम
[११५-
१२४]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥११७॥

दंसेति जहा अण्णेहिं ऊणो ण भवति,'सण्णो' अणुण्णाओ, अहियं सण्णो णिसण्णो, पावं हिंसादिसु पावकम्मेसु कायव्वेसु य णियतं सन्नादि
णिच्छितं वा सण्णो णिसण्णो, जं भणितं-तेसु अणायरो, निसण्णाणि वा जस्स पावाइं कम्माइं स भवति णिसण्णो, अहवा अणु-
व्वाणं अणुवचये पुव्वकम्मेहिं णिसण्णेहिं, जं भणितं खवणाविक्खेहिं, पढिज्जइ य 'तेसु कम्मेसु पावं कोहादि कसाया, अत एव
भण्णति-'कोहादि माणं हणियाद वीरे' कोहादिग्गहणा कम्मदरिसणं, एवं कोहादिकसाया, कोहपुव्वगो य माणो तेण कोहादि,
कहं ?, जातिमंतो हीणजाती भणितो पुव्वं ता कुज्झति, पच्छा मज्जति, मम एसो जातिं कुलं वा णिंदति अतो कोहादि, अणं-
ताणुबंधादि एक्केक्को चउव्विहो, सव्वे हणाहि, अणिसण्णकम्मस्स कोहातिपावकम्मपवत्तस्स किं भवति ?, भण्णति-'लोभस्स'
पावलोभे वट्टमाणस्स महंतो णरगो भवति, ठितिपरिणामेहिं महंतो, इह तु ठिती विवक्खिया, वेयणा वा, अप्पइट्ठाणो खित्ततो
सव्वखुड्डो, ठितिवेयणाहिं महंतो, जहा लोभो तहा सेसेहिवि, पायसो लोभेण महंतो णरगो णिव्वत्तिज्जति, जेण उरगा पंचमिं
जंति लोभुक्कडत्ता य मच्छा मणुगा य सत्तमिं, अहवा एगग्गहणं०, अणेगविसाति एगवहाती य महंतणरगभीतो णिस्सारं माणुसं
पस्समाणो अणण्णधम्मं चरमाणो छणणउवरतो णिव्विंदमाणेण अणोमदंसिणा णिसण्णपावेण णरगादिभयभीतो 'तम्हा ही वीरे'
ही पादपूरणे, तम्हा इति जं एतं भणितं, धीरो पुव्वभणितो, विरतो नाविरत्ता, जं भणितं विरतिं कुरु, वधो हिंसादिग्गहणा सेसेहिवि,
सो एवं पिहितस्स वोच्छिज्जा, सो तं दव्वेण दिसादि भावे रागादि हिंसाति वा, लहुभूतं अप्पाणं कामइत्ति इच्छाकामा गहिता,
लहु संजमो अनुद्धतो वा, अहवा उड्ढगतिसाभव्वेवि जीवो कम्मगुरुत्ता मट्टियालित्तअलाउदिट्ठंतसामत्थेण उड्ढं जाति अमुक्के,
लहुभूतो जाति खीणकम्मा अतो तं लहुभूतं, पढिज्जइ य 'छिंदिज्जा सोतं न हु भूतगामं' भूतग्गामो चोद्दसविहो तं ईरियाइजुत्तो ॥११७॥

प्रत वृत्यंक [१११-११४]

दीप अनुक्रम [११५-१२४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥११८॥

ग्रन्थादि

ण छिंदिज्जा सोपयोगो वक्खमाणो, तंजहा—अभिक्खमे य पडिकमे, सो एवं पावजागरो लहुभूतगामी जतो भावसुत्ता दुक्खं अणुभवंति, अतो 'गंथं' गंथणं गंथो, सो य दव्वे भावे य, तं जाणणापरिण्णाए ममंततो णचा, जं भणितं सव्वप्पगारेसु, 'इह' पवयणे, अज्जेव ण चिरा, वीरो भणितो,'सोतं' तस्सेव अट्ठप्पगारस्स कम्मस्स हिंसादि पगाहिता, ते पचक्खाणपरिण्णाए परिण्णाय, चरे इति धम्मं, दंतो इंदियनोइंदिएहिं, उम्मग्गणं उम्मग्गो, जं भणितं उत्तरणं, चम्मच्छादितदहकच्छभदिट्ठंतो दव्वुम्मग्गे, भावुम्मग्गे 'माणुसत्तं सुती सद्धा, संजमंमि य विरियं'। णाणाइतियं वा, अहवा नाणं दरिसणं च अण्णत्थवि भवती, चरित्तं अमाणुस्सेसु ण भवति, अतो चरित्तं भावुम्मग्गो, 'इहे'ति इह मणुस्सेसु 'णो पाणिणं पाणे' छव्विहो पाणो अस्स संतीति पाणी, तेहिं वा विज्जंति, तेसिं पाणिणं पाणसमारंभो घातणा, सो य जोगत्तियकरणत्तिएणं ण कायव्वो इति, एवं बेमि। एवं सीतोसणिज्जस्स द्वितीय उद्देशकः॥

उद्देसम्बन्धो जातिवुड्ढिओ दुक्खं, तब्भया सीतउण्हसहेण भवितव्वं, इह तु अतिपसत्थलक्खणमितिकाउं भण्णति 'संधि लोयस्स जाणित्ता' सुत्तस्स सुत्तेण 'णो पाणिणं पाणे' चरित्तं गहितं, इह हि तदेव चरित्तं संधिचि, दव्वसंधी कुड्डभेदो वतिभेदो वा, भावसंधी कम्मविवरो, जं भणितं संजमावरणोवसमो, जहा वद्धो णियलसंधि चारगसंधि वा कडगवतीसंधी वा लद्धूण णस्संतस्स सेयं भवति, एवं कम्मनियलबद्धस्स भवचारगाओ खयोवसमं सेवित्ता अप्पमाओ सेओ, अहवा साहणं संधी, जं भणितं कारणं, नाणादीणि निव्वाणसाहणाणि, लोकतीति लोगो, नचा उवलद्धा य नाणादितियं, 'आततो बहिता' जह अप्पणो अप्पियं दुक्खं एवं बहिद्धावि अप्पवतिरित्ताणं 'जह मम ण पियं दुक्खं०' अतो एवं 'तम्हा ण हंता णो घातए' ण सयं हंता णो अण्णेहिं ॥११८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

तृतीय-अध्ययने तृतीय-उद्देशक: 'अक्रिया' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[११५-
१२०]

दीप
अनुक्रम
[१२५-
१३३]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥११९॥

अवातादि

घातावए, उद्दिस्सभोइणो कुतित्थिया जतिवि केयि थूले सत्ते सयंपागातीहिं ण हणंति तहावि अन्नेहिं घातावेंति. एवं जाव राइणो
भोयणं, एवं सम्मं आसवनिरोहेणं समणो भवति, णिव्वाणं च वा, जतो भण्णति-'जमिणं अण्णमण्णं' 'जं' इति अणुद्दिट्ठस्स
इदमिती पच्चक्खं, अण्णो य अण्णो अण्णमण्णो, वितिगिच्छा णाम संका भयं लज्जा वा, एता पेहाए पावं-हिंसाति पयणपयावणापरि-
ग्गहातिलक्खणं, किमिति परिपण्हे खेदं य, एत्थ खेदं, तंमि तत्थ, मुणिस्स कारणं-अट्ठो हणातीति मुणिकारणाणि ताणि, तत्थ
ण संति सुण्ण वा, तिण्णो परमत्थमच्चओ णिस्सभावं जगं णच्चावि काणिवि अट्टंतराणि कम्माणि ण सयं करेंति सयंपागरुक्ख-
छेयादि, संखाणं तु पत्ताणं उवभोगो, एवं इच्छंतोऽवि लोगसंकयाण महसापदारमसलक्खणाइं (?) करेंति, ण तत्थ मुणिकारणं
सिया, सिस्सो वा पुच्छति-जमिणं अण्णमण्णंपि तंजहा लज्जाए वा भएण वा गारवेण वा आहाकम्मातिणि परिहरति पडिलेहणा-
तिणि ण करेति मासखवणाति वा करेति आतावेति वा अण्णतरं वा किंचिं तवोकम्मं णातं करेति तत्थवि ताव मुणिकारणं ण
अत्थि, किमंग पुण जो नाणदंसणसहितो हिंसादि जाव मिच्छादंसणसल्लं एगतो परिसागतो वा परिहरति, जतो एवं अण्णमण्णं
अकुव्वतोऽवि पावं भवति, सम्मदिट्ठीणं ण भवति, तेण 'समयं तत्थ उवेहाए' समभावं जहेव दिस्समाणो परेहिं हिंसादीणि
आसवादीणि परिहरति तहा अदिस्समाणोऽवि अतो समता, अहवा समता 'णत्थि य सि कोयि वेसो॰' अहवा तवेण नाणाधिवो
वा पुव्वं वा जातिसंपण्णो आसी सेसमाधूहिं समत्तं 'नत्थे'ति तहि धम्मे उवेच्च इक्खा उविक्खा एताए सम्मत्तउविक्खाए 'अप्पाणं
विप्पसादए' पसतं साहू वा मातए विविहं पसायए विप्पसातए, समभावे इंदियपणिहाणे अ धम्माते य पसायये, अहवा अप्पणा
परमं एत्थ विप्पसातए, णत्थि एतस्स अणण्णपरमं, किं तं ?, चरित्तं, नाणे भणिते सम्मदिट्ठी भणिता, एवं तेण अणण्णपरमं ॥११९॥

प्रत वृत्यंक [११५-१२०]

दीप अनुक्रम [१२५-१३३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१२०॥

चारित्तं अणण्णपरमं नाणं 'णो पमायए कयायिवि'त्ति दियावि राओऽवि, अहवा अणण्णपरमे णाणी ण पमायए सव्वावस्सएसु, अप्पमायविही 'आतगुत्ते सता' इंदिएहिं आयोवयारं काउं भण्णइ-आतगुत्ते सया-णिच्चं, वीरो भणितो 'जातामाताएहिं, जेण संजमजत्ता भवति तम्मत्तेण सरीरं जावए, अतिणिद्धेण अतिप्पमाणेण वा आहारेणं नो इंदियगुत्ती भवति, भणियं च-"अतिणिद्धेण चलिज्जंति०" 'जावए' इति ण एगंतेण दुक्खेण धम्मो भवति, ण वा तस्स अकरणेणंति, तं तु णियतमणियतं वा, सरीरधारणत्थं तं कुज्जा आहारं जेण जप्पं भवति,"आहाराद्यर्थं कर्म्म कुर्यादनिन्द्यं, कुर्यादाहारं तु प्राणसंधारणार्थम्। प्राणाः संधार्यास्तत्त्वजिज्ञासनार्थं, तत्त्वं जिज्ञास्यं येन दुःखाद्विमुच्ये ॥१॥" कहं आतगुत्ते? 'विरागं रूवेहिं गच्छेज्जा' विरम(ज)णं विरागो, रूवं अतीव अक्खिवति तो तग्गहणं, अहवा विरूवस्स सद्दातिविसएसु रूवं विणिंदति, जहा पुप्फसालसुयस्स, महा पाधण्णे, इह पाधण्णे घेप्पइ, जाणि रूवाणि ताणि महंताणि दिव्वाणि मज्झिमाणि मणुस्साणं खुड्डाणि तिरिक्खजोणियाणं, अहवा आदिअंतग्गहणेण मज्झग्गहणं, एक्केक्कं तिविहं, तत्थ मणुस्साणि जाणि उक्कोसाणि ताणि महंताणि, काणखुज्जाकोढियादि खुड्डाणि, सेसाणि मज्झाणि, एवं दिव्वाणि तिरियाणिवि, तिविहाणिवि बुद्धिअविक्खाइं, एवं सेसविसएहिं आयोज्जं, 'भदंतनागज्जुणिया विसयपंचगंमिवि निथं तिथं भावतो मुच्च जाणित्ता से ण लिप्पति दोसुवि' किं आलंबणं? 'आगतिं गतिं' तेसिं चउहिवि गईहिं पंचविहा गई गई, एसु एक्केकीए गईए चत्तारि त दुक्खाणि य भाणियव्वाणि चउगइसमासेण, पंचमगइसुहं च, सो एवं संसारगतिदुक्खभीतो मोक्खगतिसुहगवेसी रूवातिसु विसयेसु 'दोहिवि अंतेहिं अदिस्समाणे' दुण्णि रागो दोसो य, तासु यो वट्टति सो दिस्सति, तंजहा-रत्तो दुट्ठो वा, सो एवं रागदोसेहिं अवट्टमाणो चउग्गइए संसारे 'से ण छिज्जति' तत्थ हत्थपादकन्ननासा-

अप्रमादादि ॥१२०॥

प्रत वृत्यंक [११५-१२०]

दीप अनुक्रम [१२५-१३३]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१२१॥

सिरातिच्छेदो भेदो कंटगसूयीसूलग्गातिएहिं गिहात्रिएहिं ण डज्झति कडगअग्गिणा वा एवमादि, ण हम्मंति कसादिएहिं, भणियं च–“यस्य हस्तौ च पादौ च, जिह्वाग्रं च सुसंयतम्। इंद्रियाणि च गुप्तानि, राजा तस्य करोति किम् ॥१॥” ‘कंचणं’ति केणइ कयाइत्रि, ‘सव्वलोगो’त्ति खेत्तं भणितं, भणियं च–“स णो बहूणि हत्थछेयणाणि जात्र पियविप्पयोगे पाविस्सइ, निव्वाणे य असरीरत्तं लभित्ता से ण छिज्जति” इति, एवं पडुप्पण्णेसु सद्दातिसु विसएसु दोहिंवि अंतेहिं अदिस्समाणे, पडुप्पण्णेसु विसएसु गुणो भणितो, अतिक्कंतेसु रूवादिसु विसएसु निरोहो कायव्वोत्ति भण्णइ ‘अवरेण पुव्वं ण सरंति एगे’ णत्थि एयस्स परंति अपरो, को सो?, संजमो तवो वा, तेण अपरेण संजमेण तवसा वा गच्छित्ता ण पुव्वविसयसरणं करेति, भणियं च–“णो पुव्वरतपुव्वकीलियाइं सरेज्जा” जहा सुहसंजोगो तवासी, तं अणिट्ठं विसयसंपयोगंपि ण सरति, जं भणितं–उव्विज्जति णो णाम, रागद्दोसविरहिए, एवं अणागएसुवि दिव्वमाणुस्सविसयसंपओगे नाभिलसति, जहा पुव्वभवे वासुदेवबंभदत्ता, दुक्खाणि विसच्चवणगब्भवासादि तेसिं हेतुं न सरति, जं भणितं–तेसु न विरज्जति, अहवावि सो पुच्छति ‘अवरेण पुव्वं’ अवराओ जम्माओ पुव्वजम्मणं ण सरति, परे कुतित्थिया किमस्सऽतीतं? केवतिओ से कालो अतीतो? केवइओ अणागतो? केवइयाणि सरीराणि वा अतीताणि? केवइयाइं वा अणागताइं?, भण्णति–किं एत्थ चित्तं अति असव्वण्णू ण याणति, लोगुत्तरा भासंति–‘एगे इह माणवा तु’ एगे णाम ण सव्वे, केवलिणो, जे एगे केवलनाणे ठिता रागदोसमुक्का वा एगे, किं भासंति?, ‘जमस्सऽतीतं’ अणातिनिहणत्ता जीवस्स जावइओ कालो अतीतो तावतियो आगमेस्सोवि, तहा सरीराणि जम्माणि दुक्खं संपयोगो अभव्वाणं, भव्वाण केसिंचि, केइ पढंति–‘किह से अतीतं किह आगमिस्सं’ ण सरंति–ण याणंति अप्पणोऽवि, किन्तु अण्णेसिं?, एगे कुतित्थिया किमिति

छिदाद्यभावः ॥१२१॥

प्रत
वृत्यंक
[११५-१२०]

दीप
अनुक्रम
[१२५-१३३]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः
॥१२२॥

अतीतादि

परिपण्हे, केणप्पगारेण जं अतिकंतं-अतीतं कहं वा आगमिस्सं ?, भण्णति-‘भासंति एगे जह से अतीतं तहा आगमिस्सं’ ‘जहे’ति जेणप्पगारेण जहेव तस्स रागमोहसमुत्थेसु कम्मेसु बाहिस्संतस्स जं अतिकंतं-संसारस्य अतीतं तहा अणागतमवि अवस्सपमादेण कम्माणि उवचिणित्ता इट्ठाणिट्ठविसये अणुभवंतस्स संसारो अतीतो तहा अणागतोवि, तत्थ अणेगसोऽवि इट्ठेहिं विसएहिं आसेविएहिं ण तित्तो, एतेण अणुमाणेणं अणागतेवि तित्तिं ण जाहिति, अतो भण्णति-तत्तो तत्थ अतीतो अट्ठो-सद्दातिविसयसंपयोगो तं अतीतं अट्ठं ण अणुसरति, अवि दिव्वे चक्कवट्टिभोगे वा, तहेव अणागतेवि, तं एवं विसयसंपयोगेणं अधिगं गच्छति अधिगच्छति-णियच्छति, जं भणितं-ण पत्थेति, तत्थ आगमिस्सो अत्थो दिव्वो माणुस्सो वा, तहागता णाम खीणरागदोसमोहा केवलजीवसभावत्था, जेण प्रकारेण तेसिं चउकम्मविणिमुक्कं केवलं जीवदव्वं भवति तेण प्रकारेण ते गता तधागता, तेसिं ताव वीतरागत्ता णातीतमट्ठा ण य आगमिस्सं, जे अण्णे रागादि णिग्गहेंति तेवि तधागता एव लब्भंतीति, णातीतमट्ठं, तु विसेसणे, किं विसेसेइ ? जहेव उसभादितित्थगरा गता तहा चिट्ठमाणोवि गतो तधागतो, तस्सिस्सावि तहा गच्छंति तु, तहा अणेगे एगादेसा भण्णति ‘विधूतकप्पे’ विविहं धूतं विधूतं, कप्पइत्ति कप्पो, जं भणितं आयारो, विधुणिज्जति जेण अट्ठविहो कम्मरयो स विधूतकप्पो, जं भणितं विधुतायारो, सो विधूतकप्पो एतं अणुपविसति, अहवा विधूतं जेसिं तवसा कम्मं ते विधूतकप्पा, विधूतपदो वा, कप्पोत्ति अणुमाने विधूततुल्लो विधूतकप्पो वट्टए उवमाए,‘एयाणुपस्सि’ एतं पस्सतीति, भणितं-अवरेण पुव्वं सव्वं वा जं भणितं वक्खमाणं च सो एयं अणुपस्समाणो णियमा ‘णिज्झोसइत्ता’ णिज्झोसेति, जं भणितं खवेइ खवेहित्ति वा, सो एवं अणुपस्समाणो ज्झोसित्ता जं भणितं खवेति,‘काऽरतो ? के आणंदे’ इह इमेण जीवेण अतिकंतकाले सव्वे अणिट्ठा ॥१२२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[११५-१२०]

दीप
अनुक्रम
[१२५-१३३]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१२३॥

अरत्याद्यभावः

विसया अणंतसो पत्ता, एवं अणुपस्सतो संजमे अवट्ठियस्स अणिट्ठविसएहि पुट्ठो परिस्सहे सहति, का अरती?, जं जीवेणं सव्वदुक्खाइं अणंतसो पत्ताइं, तहा इट्ठविसएहिं पत्तेहिं के आणंदे?, भणितं च-"न तृप्तोऽसि यदा कामैः, सेवितैरप्यनेकशः। स नाम तेषु वृत्तेऽन्तो, यतो वैराग्यमाप्नुहि ॥ १ ॥" 'णंदि' रमणं णंदि, पमोदणं वा णंदि, पुव्वरते सरित्ता पमोदो माणस एव, अहवा अतिकंतेसु बहुसो अणुसरिज्जंतेसु किं पस्सति?, अतो तेसु का रती के आणंदे?, एवं अणागएसुवि, पडुप्पन्ने पडुच्च भणति, 'एत्थंपि अगरहे चरे' रागदोसेहिं अगरहो तन्निमित्तं जह ण गरहिज्जति दुस्सिति वा, चर गतिइ भक्खणे य, गतिइ इरियाइसमिओ भक्खणे उग्गमाइसुद्धं आहाराति, तवं वा चरति, रागद्दोसगहितलक्खणं हासो, अतो 'सव्वहासं परिचज्ज' हसणं हासो सव्वो तिसुवि कालेसु विसयप्पमादो तं परिचज्ज 'अल्लीणो' तिविहाए गुत्तीए 'परिव्वए' धम्मं आयरियं वा, अल्लीणो तिविहाए गुत्तीए गुत्तो सम्मं संचये, अहवा मोक्ख अणियतचरत्थं वा समंता मोहं च, ये सुहदुक्खति तिक्खाए विरागे य वट्टंति, एवं तस्य नायोवट्ठितस्स जइ अणुलोमपडिलोमा उवसग्गा उप्पज्जेज्जा ततो ण तेण मित्तनातगादीणं सरितव्वं, ते ममं पूयेत्ता, ते च मे परित्ताणं करेज्जा, अमित्तेहि वा हिज्जमाणस्स तत्थेवं भावेयव्वं-ण मे धम्मवज्जं मित्तं, अमित्तं वा अत्थि, जतो भणति-'पुरिसा! तुममेव तुमं' पुण्णो सुहदुक्खाणं पुरिसो पुरि सयणा वा पुरिसो 'तुम'मिति साधुरेव अप्पाणं आमंतेति, अण्णतरे च परिस्सहोवसग्गोदये बंधवे कंदमाणो परेण चोइज्जति-'पुरिसा! तुममेव बहिता अप्पाणं मोत्तुं जे अण्णे मित्ता पुव्वसंथुता पच्छासंथुता वा अप्पेण अपमत्तो अप्पा मित्तो, अमित्तो वा पमत्ते, मित्त अमित्तेहि य अहियत्ता मित्ता, जं पुव्वउवचियं सुहं उप्पज्जइ जीवस्स तत्थ अप्पा चेव मित्तभूतो आसी, दुक्खे अमित्तभूतो, जो इमो बाहिरो मित्तामित्तविसेसो एसो ववहारणयस्स, णिच्छयणयस्स अप्पेण अप्पा मित्तो ॥१२३॥

प्रत वृत्यंक [११५-१२०]

दीप अनुक्रम [१२५-१३३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१२४॥

उच्चालयितादि

अमित्तो वा, अण्णतरो एगभवग्गहणाओ मारेति अप्पा दुप्पत्थिओ अणेगाइं भवाइं मारेति, जेवि बाहिरा मित्ता तेऽवि धम्मभावसंतस्स विग्घकरा इतिकाउं अमित्ता एव णायव्वा, जो णिव्वाणनिमित्तं अप्पमत्ते सो अप्पेण अप्पाणं मित्तं, तहावि ण याणसि, तो भण्णति–'जं जाणेज्जा उच्चालइतं' गतिपच्चागतिलक्खणेणं, 'ज'मिति अणुद्दिट्ठस्स, जाणिज्जासि–बुज्झेज्जासि विसए उच्चालिते, जं भणितं–णासेवति, कम्माणि वा अप्पपदेसेहिं सह अणातिसंतानसंबद्धाणि उच्चालेति, एवं जं जाणिज्ज उच्चालइयं तं जाणेज्ज दूरालइतं, दूरे आलयो जस्स लोगग्गे, जं जाणिज्ज दूरालइयं तं जाणिज्ज उच्चालइयं, पढमं उच्चालइया पच्छा दूरालइता भवति, जं भणितं–अविणासी जीवो, कहं उच्चालेइ ?–पुरिसो आत्मानमेव अभिणिगिज्झ अप्पाणं मोक्खअभिमुहं अधियगिज्झ अधिणिगिज्झ, एवमवधारणे, दुक्खं–कम्मं साधु भिसं च मोक्खेसि पमोक्खेसि, एवं कम्माणि उच्चालिज्जंति, कहं अप्पणिग्गहं करेति ?, ततो भण्णाति–'पुरिसा सच्चमेव' सच्चो णाम संजमो सत्तरसविहो तं समभियाणहि, जं भणितं तं समायर, अहवा सच्चेण सेसाणिवि वयाणि पालिज्जंति, कहं ?, जो आयरिससगासे पंच महव्वयाइं आरुभित्ता णाणुपालेइ सो परिण्णालोवेण असच्चो भवति, दुवालसंगं वा प्रवचनं सच्चं, तस्स सच्चस्स आणाए उवट्ठितो धम्मं, मेहाए धावतीति मेधावी, मारणं मारयति मारो, जं भणितं संसारो तं तरति, सो एवं सहिते धम्मसमायाए, तेण तित्थगरभासितेण अ सच्चेण सहितो तप्पुव्वगं चरित्तं धम्मं आदाय 'सेयं समणुपस्सति' सेयं इति पसंसे अत्थे, सयंति तमिति सेओ, जं भणितं मोक्खं, तं अणुपस्सति, अणु पच्छा तित्थयरेहिं दिट्ठं पस्सइ तदुवदेसेण तं पुण, सेसं पुव्वुत्तं, तंजहा–सव्वट्ठासं परिच्चज्ज अझीणगुत्तो आतमिवेण उवट्ठितो एवं अणुपस्सति, अप्पमत्तो भणिओ तग्गुणा य, इदाणिं पमादो, जो पुण सीउण्हाइं ण अहियासेति भावसुत्तो 'दुहओ जीवित०' दुहतोति रागेण दोसेण, अहवा ॥१२४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[११५-१२०]

दीप
अनुक्रम
[१२५-१३३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१२५॥

अप्पणो परस्स य, जीवितपरिवंदणमाणणा पुव्वभणिता, 'जंसि एगे पमादेंति' एवं रागदोसाभिभूता अत्तट्ठा परट्ठा वा परिवंद- प्रमादादिः
णातिणिमित्तं, जंसि एगे असंजता पमातं करेंति अप्पणो परेसिं च, जो लोगुत्तरा वा पासत्थाति जे दुहतो परिवंदण० धम्मे पमादेंति
ण ते दुक्खक्खयं करेंति, पडिपक्खभूता अप्पमायिणो, ते तु 'सहिते धम्ममादायि' णाणदरिसणसहितो चरित्तधम्मं आदाय,
जं भणितं घेत्तुं 'पुट्ठो णो झंझाए' सीतोसिणेहिं परिसहेहिं, झंझा णाम वाउलो, सीतेहिं रागझंझा उण्हेहिं पत्तेहिं दोसझंझा, एवं
अण्णेसुवि इट्ठाणिट्ठेसु झंझणा कायव्वा, पढिज्जइ य-'सहिते दुक्खमत्ताए' मीयत इति मत्ता, जं भणितं परिमाणं, ताए दुक्ख-
मायाए अप्पाए वा महतीए वा अवि जीवितभेदकारिणीए पुट्ठो णो झंझाए-कोवं माणं वा ण कुज्जा, ण व सुहझंझं पत्थेति, 'पासिमं
दविए' पस्सतीति पासिमं, किं एतं ?, जं भणितं—संधिं लोगस्स जात णो झंझाएत्ति एतं पस्सति, दवियो रागदोसविमुक्को,
लोकतीति लोगो, आलोकतीति आलोको, लोगालोगो, जो जेहिं णाए वट्टति सो तेणप्पगारेण आलोकति, जं भणितं-दिस्सति,
तंजहा-नारइयत्तेण, एवं सेसेसुवि पिहिप्पिहेहि सरीरवियप्पेहिं आलोकति सरीरे, पगतो वंचो पवंचो सुहुमपज्जत्तासुरूवसुहाति
सेतरा एवमादि० पवंचो तओ लोगालोगपवंचाउ साधु आदितो भिसं मुच्चति, सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगारे वीतरागत्ता सव्व-
ण्णुत्ता य णिव्विसंकं। सीतोसणिज्जस्स तृतीयोद्देशकः ३-३॥

णिज्जुत्तीए भणितो संबंधो, परंपरेण जागर वेरोवरते जातिं च वुड्ढिं वा विदित्ता णिकम्मदंसी जो लोगालोगा पमुच्चति, स
पुण एवं मुच्चति-'से वंता कोहं च' से इति णिद्देसे सीतोसिणचाई निग्गंथे वंता कोहं माणं मायं लोभं च, कोहमाणमायालोभा
इति वत्तव्वे पिहसुत्तकरणं दरिसति अणंताणुबंधाइ एक्केको चउव्विहो, जया तेसिं उवसमं करेति तदा एक्केकं चेव उवसामेति, ण ॥१२६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

तृतीय-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशकः 'कषायवमन' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[१२१-१२५]

दीप
अनुक्रम
[१३४-१३८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१२६॥

पश्यद्दर्शनादि

जुगवं, वमणंति वा विरेयणंति वा विगिंचणंति वा विसोहणंति वा एगट्ठा, दव्वे मदणफलादि जं वा वमिज्जति, भावे कसायवमणं, 'एतं पासगस्स दंसणं' एतमिति जं भणितं तंजहा–से वंता०, पस्सतीति पासगो, जं भणितं तित्थगरो, ण तु अण्णे पस्सगे, दिस्सति जेण पस्सति वा तं दरिसणं, जं भणितं उवदेसो, सो पासंतो जाणइवि, कहं जाणइ?, किं एगं अत्थं जाणति अहऽणेगे?, भण्णति–'जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ' जो एगं जीवद्रव्यं अजीवदव्वं वा अतीतानागतवट्टमाणेहिं सव्वपज्जएहिं जाणइ, सिस्सो वा पुच्छति–भगवं! जो एगं जाणइ सो सव्वं जाणइ?, आमं, एत्थ जीवपज्जवा अजीवपज्जवा य भाणियव्वा, एवं जाणमाणो सव्वण्णू सिस्साणं पमाददोसे अप्पमादगुणे य परिकहेइ, तंजहा-'सव्वतो पमत्तस्स भयं' दव्वादिसव्वप्पगारेहिं, दव्वओ सव्वओ आतप्पदेसेहिं गिण्हति, खित्ततो छद्दिसिं, कालतो अणुसमयं, भावतो अट्ठारसहिं ठाणेहिं पंचविहेण वा पमादेण, भयं–कम्मं, तदेव सव्वओ बज्झति, चोरदृष्टान्तेण वा इह परत्थ य सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वतो अपमत्तस्स णत्थित्ति चउकाओ-अप्पमत्तत्तादेव दव्वाइचउकाओ अप्पमत्तस्स णत्थि भयं, गच्छतो चिट्ठतो भुंजमाणस्स वा, जे तं गच्छे जे तं चिट्ठे जे तं भुंजे ण तस्स किंचि भयं भवति, भणितं च–"यस्य हस्तौ च पादौ च, जिह्वाग्रं च सुसंयतम्।" कसायाधिगारो वट्टति, तं दुविहं वमणं, तंजहा–उवसामणावमणं खवणावमणं च, तत्थ उवसामिण पढमं भण्णति, उवसमणंति वा णामणं वा एगट्ठा, जओ भण्णइ–'जे एगं नामे से बहुं नामे' दव्वनामणा रुक्खादीणं, नामेति, ण उ भज्जती, जहा नदीपूरेण गुम्मलताओ नामियाओऽवि पुणो उन्नमंति, भावणामगासु जो एगं अणंताणुबंधिं कोहं णामेति सो बहुं णामिति, बहुत्ति सेसा सत्तवीसं कम्मंसा मोहणिज्जस्स, अहवा पदेसओ ठितिओ वा बहुं णामेति, तंजहा–अणदंसनपुंसग० उवसामगसेढी रतेयव्वा। इदाणिं खवणा, सा य णाणपुव्वियं किरियं आयरंतस्स भवति, अतो

॥१२६॥

प्रत
वृत्यंक
[१२१-१२५]

दीप
अनुक्रम
[१३४-१३८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१२७॥

लोकसंयोगवमनादि

'दुक्खं लोगस्स जाणित्ता' दुक्खं-कम्मं छक्कायलोगस्स जाणित्ता जह वा उवलभित्ता एवं णच्चा तं दुक्खहेउं 'वंता लोगस्स संजोगं' वंता नाम खविता कम्मलोगस्स संयोगं जेण कम्मलोगेण भवलोगेण वा संजुज्जति तं वंता लोगसंजोगं 'जंति वीरा महाजाणं' जंति-गच्छंति वीरा भणिता पुव्वं महाजाणं-पहाणं चरित्तं, महतो वा कम्मस्स जायस्स खवणेण जाणं महाजाणं, जं भणितं-अपुणरावत्तगं, 'परेण परं'ति खवगसेढिगमो दरिसितो, अहवा 'परेण परं'ति 'जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति, एते णं कस्स तेयलेस्सं वीतीवतंति ?, मासपरियाए जाव तेण परं सुक्के सुक्काभिजाते' एवं परेण परं जंति, कतरे ते ?, जे विसयकसायासंजमजीविते 'णावकंखंति' जीवइ जीविज्जइ वा जेण तं, तण्ण अवकंखंति, मरणं वा, अणेगे एगादेसा भणति, 'एवं(गं) विगिंचमाणे पुढो विगिंचति' एगं अणंताणुबंधि कोहं सव्वआयप्पदेसेहिं विगिंचितो, धिगिंचिणंति वा विवेगोत्ति वा खवणत्ति वा एगट्ठा, पिधु-वित्थारे, पुढोत्ति मिच्छत्तसत्तगं णियमा विगिंचति, जो बद्धाउयो सोवि ण अतिक्कमिति तिन्नि भवे, अबद्धाउओ पुण सत्तावीसं मोहणिज्जस्स कम्मंसे नियमा खवेति, चत्तारि वा घातिकम्माणि, सिज्झमाणसमए वा चत्तारि केवलिकम्माणि विगिंचति, खवगसेढी परूवेयव्वा, एत्थ 'अण मिच्छ मीस सम्मं०,' सो य सद्धासंवेगजुत्तो खवेति तेण भण्णइ-'सड्डी आणाए' तस्स वा खीणावरणस्स समासे धम्मं सोच्चा संजमं पडिवज्जइ सड्डी आणाए, सद्धा णाम मोक्खाभिलासो, तदट्ठं च तवनियमसंजमा, आणा णाम सुयनाणं, आणापुव्वगं से मेहया धावतीति मेधावी, 'लोयं वाऽऽणाए'त्ति छज्जीवकायलोयं वा आणाए 'अभिसमिच्चा' जं भणितं णच्चा, छक्कायलोगस्स जाणणा सद्दहणा देसणा 'अकुतोभयं'ति छक्कायलोयस्स ण कुतोऽवि भयं करेति, तस्सवि य कम्मलोगं खवेंतस्स कुतोऽवि णत्थि भयं, खवितकम्मंसे मोक्खं गयस्स अकुतो भयं भवति, अभिसमिच्चावि वदति कुतो भयं ॥१२७॥

प्रत वृत्यंक [१२१-१२५]

दीप अनुक्रम [१३४-१३८]

भवति ?, सत्थाओ, तेण तं सत्थं णच्चा परिहरियव्वं, सत्थं अधिकृत्य भण्णति, 'अत्थि सत्थं परेण परं' परेणवि परं परंपरं तिण्हा तिण्हतरं, लोयविसेसा करेंति, विरियविसेसा य तव्विसेसो, विसंपि किंचि संजोतिमं छहिं मासेहिं मारेति, परं पुण तालपुडमित्तेण मारेति, लवणंपि किंचि चिरेण किंचि आसु, णेहोऽवि घृततेल्लवसा परा, एवं खारअंबिलादिदव्वसत्थविभासा, भावसत्थंपि परिणामविसेसा तिव्वं तिव्वतरं च भवति, सव्वं च एतं जहा जहा परं तहा तहा दुक्खमावहति, परोप्परं वा दुक्खमावहति, किंची सकायसत्थं किंची तद्विधं मणा, असत्थं परेण परं सत्तरसविहो संजमो, सो परेण परं ण भवति, पुढविकायसंजमेण ण कोयि पुढविकायिओ सत्तो जस्स मंदा दया कीरति जस्स वा उक्कोसा जहा भणिता, जहा तालपुडादीणं दव्वसत्थाणं वीरियविसेसो दिट्ठो ण एवं पुढविकाइयाइयाणं अण्णस्स अप्पा दया कीरति अण्णस्स महती, सव्वाविसेसेण तेसु संजए, से सुहुमं वा बायरं वा, एवं सेसेसुवि जाण, मणसंजमे वयसंजमे कायसंजमे निविट्ठस्सवि योगस्स विसेसेण णिग्गहो कायव्वो, भावसत्थं कहं परं परं दुहावहं भवति ?, वुच्चइ-'जे कोहदंसी' कोहं पस्सति कोहदंसी, जं भणितं कुज्झति, कोहा दरिसयतीति, जहा 'रुट्ठस्स खरा दिट्ठी उप्पलधवला पसन्तचित्तस्स' एवं सव्वत्थ 'जाव दुक्खं' अहवा जे कोहं जाणति स माणं जाणति जाव दुक्खं, अहवा खमणाधिगारे अणुअत्तमाणे भण्णति-'जे कोहदंसी से माणंदंसी' जं भणितं परिवाडेति, जो कोहं खवेति सो सेसेवि, जतो एवं परेण परं सत्थं दुक्खेणावहति असत्थं परेण परं सुहं आवहति तेण 'अभिनिवट्टेज्ज तं कोहं च माणं च' निव्वट्टनंति वा छिण्णणत्ति वा एगट्ठा, लोगेवि जहा एगेणप्पहारेण हत्थो निव्वट्टितो पादो वा, जं भणितं-छिण्णा, एवं जाव दुक्खं च, 'एतं पासगस्स दंसणं' जं भणितं उवदेसो 'उवरयसत्थस्स' कसायसत्थाउ, जं वा जस्स सत्थं ततो उवरतस्स 'पलियंतकडस्स' परियंतकरस्सत्ति ॥१२८॥

प्रत
वृत्यंक
[१२१-
१२५]

दीप
अनुक्रम
[१३४-
१३८]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णि:
४ अध्य०
१ उद्देश:
॥१२९॥

परशस्त्रादि

वत्तव्वे रलयो एगत्ता पलियंतकडिति वुच्चति, सव्वओ कम्माणं परियंतं करेंति, पलियते वा जेण तासु गईसु सुहदुःखेसु वा तं पलियं—कम्मं तस्स अंतकरो, आदाणं सयं आदत्ते, आदीयते वा कम्मं, सयं कतं सकतं, जेण पुरे संसारो ?, भण्णति—णत्थित्ति बेमि, कहं ?, ण च्चिय अणिंधणो अग्गी दिप्पति, ण वा दड्ढे बीये अंकुरुप्पत्ती भवति, दग्धे बीजे यथाऽत्यन्तं, प्रादुर्भवति नाङ्कुरः। कर्म्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति भवाङ्कुरः ॥१॥ इति श्रीआचारांगे सीतोसणिज्जं णाम तइयमज्झयणं सम्मत्तं ३।

अत्थाधिगारो स एव, जीवाजीवाभिगमा सम्मदंसणं, नवि सोतं च अणुयत्तइ, बितिए अज्झयणे परिण्णाए थिरीकतं, ततिए भावसुत्तदोसा भावजागरणा सीतोसिणज्झस्स गुणा ण य एगंतेण दुक्खेण धम्मो सुहेण वा कसायवमणं च, एवं च सहमाणस्स सम्मत्तं भवतीति सम्मत्तअवसरो, किं ?, जं एतं भणितं एतं सम्मं वुच्चति, एतंपि सम्मं, इह तु तिण्णि तिसट्ठाणि पावातियसयाणि परूवित्ता समए ठाविज्जति, जहा वा चातुस्सालमज्झगतो दीवो तं सव्वं उज्जोवेति एवं एतं अज्झयणाणं मज्झगतं सव्वं आयारं अवभासति, अह पुण पव्वइयमेत्तस्स परउत्थिया णिंदिज्जंति तो कदायि अपुट्ठधम्मो सेहो इमे अतुक्कोसपरपरिवायरतित्तिकाउं विप्परिणामिज्ज, एसो अज्झयणसंबंधो, सुत्तस्स सुत्तेणं—किमत्थि कम्मोवहि ? णत्थि'त्ति, तं च दुक्खं सद्दहिज्जति, तं च सद्दहमाणस्स सम्मत्तं भवति, एस सुत्तेण संबंधो, एतेण संबंधेण आगतस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुओगद्दारा परूवित्ता अत्थाहिगारो दुविहो—उद्देसत्थाहिगारो अज्झयणत्थाहिगारो य, तत्थ उद्देसत्थाहिगारो 'पढमे' त्यादि (२१२, २१३-१७५) पढमे सम्मावातो, बितिए अण्णउत्थिया परिच्छिज्जंति, ततिए अणवज्जतवो वण्णिज्जइ, चउत्थे सुत्तेण तवेण य आवीलेयव्वं सरीरं अट्ठविहं च कम्मं, अज्झयणत्थाहिगारो सम्मत्तो, णिक्खेवो तिविहो—णामणिप्फण्णो० 'णामं ठवणा सम्मं' (२१६-१७५) ॥१२९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

चतुर्थ-अध्ययनं ‘सम्यक्त्व’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१२६-१२९]
दीप
अनुक्रम
[१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१३०॥

द्रव्यादिसम्यक्

नामसम्मत्तं ठवणसम्मत्तं दव्वसम्मत्तं भावसम्मत्तं, णामठवणाओ गयाओ, दव्वसंमे इमा गाहा ‘अह दव्वसम्मं’(२१७–१७५) आणुलोमियं जं जस्स द्रव्यं इच्छाणुलोमं वट्टति तं दव्वसम्मं, जह इच्छति तहेव भवति, ‘कतसंखतसंजुत्तं’अद्धगाहा ॥ कतं जहा रधो सलक्खणनिव्वत्तणाविसेसा सम्मं भवति, जस्स वा सो कतो तस्स अहीणकालकतत्ता सुकतत्ता य सम्मं भवति, ‘संखतं’ति कारियं पडाति पुणण्णवं भवतित्ति दव्वं सम्मं, ‘जुत्तं’ति खीरसक्कराणं संगमं जहा तहा अण्णं अविरोधितं दव्वसम्मं, विवरीतं असम्म जहा तिल्लदहीणं, पयुत्तंति जस्स जेण दव्वेण पयुत्तेण संमं भवति जहा रोगियस्स ओसहेण तिसितस्स पाणेण भुक्खियस्स ओदणेण अण्णहा असम्मं, जं वा दव्वं लाभएण पयुत्तं लाभकरं भवति तं सम्मं, सेसमसम्मं, विजढपि किंचि सम्मं भवति, विवरीतमसम्मं, भिन्नं कागादीणं सम्मं भवति, वड्डतस्स. असम्मं, गंडिणो वा गंडे भिन्ने सम्मं इहरहा असम्मं, भावसम्मं तिविहं ‘तिविहं तु भावसम्मं’ गाहा (२१८–१७६) नाणसम्मं दुविहं–खइयं च खओवसमियं च, दंसणसम्मं तिविहं–वेइयं च खइयं च खओवसमियं च, एवं चारित्तंपि, जति तिण्हवि एतेसिं भावसम्मं तो अविसेसो, कम्हा दरिसणस्सेव सम्मत्तसद्दो ?, रूढो, तं च इह अज्झयणे वन्निज्जति, णेतराणि ?, भण्णति, तप्पुव्वाणि इतराणि, णवि मिच्छदिट्ठिस्स सम्मं नाणचरित्ताणि, एत्थ दिट्ठंतो दोहिं रायकुमारएहिं अंधेण अणंधेण य, ‘कुणमाणोऽविय किरियं’ गाहा (२१९–१७६) दोवि लेहकलं गाहिता, जाओ अंधपाउग्गाउ गंधव्वाइओ कलाओ, अणंधो ईसत्थं सिक्खति, सो य अंधो सए पुरिसे पुच्छइ–सो किं करेति ?, ईसत्थं सिक्खतीति, पितरं तन्निमित्तं विण्णवेइ–अहंपि सिक्खामि, तेण वुच्चति–तव जातिअंधस्स किं ईसत्थेणं ?, पडिसिज्झमाणोऽवि ण ट्ठाइति, तेण ईसत्थायरिया उवणीता, संधामुट्ठिए खिविति, सो य सचक्खुओ जाहे विज्झगातिं विंधति ताहे आयरिएहिं अन्नेहिं य पास- ॥१३०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

चतुर्थ-अध्ययने प्रथम-उद्देशक: ‘सम्यग्वाद’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१२६-१२९]

दीप
अनुक्रम
[१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१३१॥

अनंधजयः

ट्ठिएहिं पसंसिज्जइ, किं पसंसिज्जइत्ति अंधो सए पुरिसे पुच्छइ, सो किं एसो साहुकारिज्जइत्ति, कहिते भण्णइ–तुज्झेऽवि मम लक्खदेसे सद्दं करेह, पच्छा सद्दवेधी जातो, जोव्वणत्थो य जातो, तं रायाणं परबलेण अभिभूतं जुद्धाय णिप्फिडंतं भणइ–मम बलं देह, अह णं पराजिणामित्ति, दिण्णे बले वम्मियकवइतो लग्गो, तं च से बलं भग्गं, ताहे सो परबलेण वेढितो, तहावि जत्थ सद्दं सुणेइ तं तं विंधति, रन्ना पुच्छितं–को एस जुज्झति?, जातिअंधो सद्देण विंधइत्ति, मा सिट्ठिसद्दं करेह, तुण्हिक्का अच्छियह, तेहिंवि तहेव कयं, गहिओ य, सो एवं वराओ 'कुणमाणोऽवि य किरियं' गाहा, ताहे सो सचक्खू वत्तं सोतुं पितरं आपुच्छित्ता तं परबलं पराजिणति, पच्छा रण्णो से तुट्ठेण पट्टो बद्धो, एस दिट्ठंतो, इमो अत्थोवणओ–'कुणमाणोऽवि णिवत्तिं' गाहा (२२०–१७८) जो जेसिं भणितो तंजहा पंच णियमा धुवगुणा वा, केसिंचि पंचग्गितावआयावणादि, दुक्खस्स दिन्तावि उरं मिच्छादिट्ठी ण सिज्झंति, 'तम्हा कम्माणीयं जेतु' गाहा (२२१–१७८) सिद्धं, कहं संमत्ते नाणचरित्ताइं सफलाइं?, भण्णंति–'सम्मत्तुप्पत्ती' गाहा (२२३–२२३) जहा दोन्नि मिच्छादिट्ठी पुरिसा आरामगते विहारगते वा साहू पासंति, के एतेत्ति एगो पुच्छइ, तेण वा अन्नेण वा धम्मं कहेंति, साहुणोत्ति सिट्ठा, पुच्छिस्सामि णं धम्मं, ण ताव पुच्छति, सो इतरो असंखेज्जगुणनिज्जरतो, ततिओ इदाणिं चेव पुच्छामि तस्स समीवं उवगच्छति, सो वितियाओ असंखेज्जगुणणिज्जरतो, चउत्थो पुच्छति, सो ततियातो असंखिज्जगुणनिज्जरओ, पंचमओ कहिए धम्मे संमत्तं पडिवज्जइ, चउत्थाओ असंखिज्ज०, छट्ठो सम्मत्तं पडिवज्जमाणो पंचमाओ असंखिज्जगुण०, सम्मत्तुप्पत्ती गता। इदाणिं सम्मदिट्ठीणो–तत्थ एगस्स चिंता विरताविरतिं पडिवज्जामि सो इतराओ असंखिज्जगुणणिज्जरओ, एवं दोन्निवि संजता संता तत्थेगो संजमाभिमुहो अण्णो पडिवज्जइ, अन्नो पुव्वपडिवन्नओ, दोन्नि पुव्वपडिवन्नआ ॥१३१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१२६-
१२९]

दीप
अनुक्रम
[१३९-
१४२]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१३२॥

संजता, तत्थ एगो मिच्छत्तपंचगस्स खवणमुहो, एगो खवेति, एसो अणंतकम्मंसो वुच्चति, अन्नो दंसणमोहणिज्जखवणाभिमुहो,
अन्नो खवेति, अण्णस्स खीणो, अन्नो उवसामगसेढीए अभिमुहो, अण्णो उवसामेति, अण्णस्स अट्ठावीसतिविहंपि उवसंतं, एवं
खवणाएवि तिन्नि गमा, अवरो सजोगिकेवली, ततोऽवि सेलेसिं पडिवण्णो असंखिज्जगुणनिज्जराए वट्ठति, तव्विवरीतो कालो
संखिज्जगुणाए सेढीए जावतियं कम्मं जच्चिरेण वा कालेण सेलेसिं पडिवण्णो खवेति ततियं कम्मं सजोगिकेवली संखिज्जगुणेण
कालेण खवेति, एवं जाव पुच्छिउंकामो अपुच्छिउंकामो य, एवं दंसणवतो तवनाणचरणाणि सफलाणि भवंति, जो पुण आहारो-
वधिवसहिणिमित्तं तवनाणचरणाणि करेति बाहिरब्भंतरो तवोऽवि भासियव्वो सव्वो, सम्मद्दिट्ठिस्सवि आहारादिनिमित्तं कीर-
माणो निप्फलो भवति, किमंग पुण अण्णउत्थिया गिहित्था य विसयकसायातिसत्ता हिंसातिसत्ता य संसारमोक्खं ण काहिंति?,
तत्थ उदाहरणं—सुत्तफासियगाहाओ पढमुद्देसए इमाओ दोन्नि 'जे जिणवरा अतीता' गाहा (२२५–१७९) 'छज्जीवनिकाय'
गाहा (२२६–१७९) 'खुड्डगपायसमासा' गाहा (२२७–१८७) बितियस्स चरिमसुत्ते 'जह खलु झुसिरं कट्ठं तहा णिज्जु-
त्तीए चेव सव्वं भासिज्जति, पाडलिपुत्तं नयरं, तत्थ जियसत्तू राया, रोहगुत्तो अमच्चो सावओ, राया अत्थाणितवरगतो कयाइ
धम्मवीमंसं करेइ—कस्स धम्मो सोभणो?, जो जस्स कत्थि (कुला) गतो सो तं पसंसइ, रोहगुत्तो तुण्हिक्को अच्छमाणो रण्णा
भणिओ—तुमं पुण तुण्हिक्को अच्छसे, पुणो पुच्छियं तो भणइ—जो जस्स रोयति सो तं धम्मं पसंसइ, वीमंसिज्जतु, तुमं चेव परि-
क्खाहित्ति, तेण पातओ कतो 'सकुंडलं वा वयणं णव'त्ति, पासंडिणो सव्वे सद्दावेउं वुत्ता, जो एतं भिंदति तस्स राया जहिच्छियं
दाणं देति, भत्तिगतो य भवति, ते पातयं घेत्तुं सत्तमे दिवसे अत्थाणीयवरगयस्स रण्णो उवट्ठिता, पढमं परिव्वायो उवट्ठितो, पच्छा ॥१३२॥

निर्जरा-
श्रेणिः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१२६-१२९]

दीप
अनुक्रम
[१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१३३॥

आर्द्रशुष्कगोलकादि

तावसो, पच्छा रत्तपडिओ, मालाविहारो जत्थ णिच्चं मल्लं कीरति, आरहतो पुण णागतोत्ति, रण्णा पुच्छितो अमच्चो भणइ–गविसिस्सामि, तेण पुरिसा संदिट्ठा, तेहि य चेल्लओ भिक्खायरियं दोसीणस्स हिंडमाणो दट्ठुं गहितो, पायओ य से अक्खाओ, सो भणइ–'खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स' गाहा (२३१–१८८) भिण्णो पातउत्ति, थूललक्खेणं बालेण एतं रण्णाऽभिसद्दहितो, पच्छा रण्णा वुच्चति–देहिहितं मम खुड्डया धम्मं कहेह, तेण य चेडरूवत्तणेण दोन्नि चिक्खल्लगोलया पुव्वगहिता, सो ते कुड्डे आवडेऊण पुणो संठितो, रण्णा पुच्छितो भणातु, एसेव धम्मो कहिओ। 'उल्लो सुक्को य' गाहा (२३२–१८८) 'एवं लग्गंति' गाहा (२३३–१८८) राया सावओ जाओ, अहवा खुड्डओ गतो चेव, रोहगुत्तो भणइ–सव्वे एते भणन्ति–ण अम्हं न वट्टति पुलोएउं, किंतु वक्खेवदोसा ण णिद्दिट्ठत्ति, एगो भणइ–भिक्खालोभेण, एगो भणति–चेडरूवत्तक्खेवेणं, अण्णो भणति–विहारपूयावक्खेवेणं, तेण ते सव्वे अवीयरागा, जो पुण भणति–खंतस्स दंतस्स जिइदियस्स एसो वीयरागमग्गे ठितो, एयस्स मोक्खो अत्थि, दिट्ठंतो दोहिं गोलएहिं, सुक्खेण उल्लेण 'सुक्खो उल्ले य' गाहा॥ सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं, 'से बेमि जे अईया' से णिद्देसे समारस्स आएसा तं बेमि, तमिति सम्मत्तं, अहवा एक्केक्को गणहरो सीसेहिं उवासिज्जमाणो तं बेमि सम्मत्तं, जं णिक्खेवणिज्जुत्तीए वुत्तं तं बेमि, 'जे य अतीता' 'जे' इति अणुद्दिट्ठस्स गहणं, अतीतद्धाए अणंता अतीता, जे इति पडुप्पण्णा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु, जहिं काले भवा वा तहिं काले पन्नरससु कम्मभूमीसु, अत्थि तित्थगरा अणागता, अणागतद्धाए अणंता, सव्वे अपरिसेसा एवमाइक्खंति, वट्टमाणग्गहणेण अतीताणागतावि सूयिता काला, अतीते एवमाइक्खंसु अणागए एवमाइक्खिस्संति जाव पण्णवेस्संति, सव्वे य जाव सव्वे अपरिसेसिता जम्हा आणवंति वा, जाव जम्हा सुभासुभेसु कम्मेसु ण हंत- ॥१३३॥

प्रत वृत्यंक [१२६-१२९]

दीप अनुक्रम [१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१३४॥

हननाभियोगादि

व्वा, कप्पदप्पादीहिं सज्झं अभियोगो, आणापरिग्गहो ममीकारो, तंजहा–मम दासो मम भिच्चो एवमादि, आणापरिग्गहाणं विसेसो, अपरिग्गहितोवि आणप्पति, परिग्गहो सामिकरणमेव, ण परितावेयव्वोति अहणंतोऽवि अंगुलिसूयिमादीहिं परितावेति, मणपरितावणा वा, उद्दवणा मारणं, एतं सतं न करेति अण्णेहिं ण कारवेति कीरंतं न समणुजाणति जाव रायिभोयणंति, 'एस धम्मे सुद्धे' सुद्धो णाम णिम्मलो भवति, जे अण्णे तु केसिंचि सत्ताणं दयं करेंति तहा धीयारवद्(बं)धुए गोणीपोयं परिहरंति छगलादि मारेंति, एवं असुद्धे, अतं तु रागादिरहितत्ता सव्वं अविसेसं अहिंसाओ य सुद्धो, णितिया पंचसु महाविदेहेसु णिच्चावत्थितत्ता णितियो सम्मत्तो भवति सासतो, णितिउत्ति वा सासतोति वा एगट्ठा, अहवा णिच्चं सासतो, णिच्चं भवित्ता अणुभवति, भवियत्ता वा अभवियत्ताविणिच्चं भवति जहा घडअभावो, अतं तु निच्चकालवत्थायित्ता णिच्चो सासयो य 'समिच्च छज्जीवनिकायलोगं' समिच्चत्ति वा जाणित्तु वा एगट्ठा, खित्तं–आगासं खित्तं जाणतीति खेत्तण्णो, तं तु आहारभूतं दव्वकालभावाणं, अमुत्तं च पवुच्चति, अमुत्ताणि खित्तं च जाणंतो पाएण दव्वादीणि जाणइ, जो वा संसारियाणि दुक्खाणि जाणति सो खेत्तण्णो, पंडितो वा, भिसं साधु आदितो वेदितो पवेदितो, उट्ठितो उट्ठिया संजता, उट्ठियाणं कहं पवेदिज्जति?, नणु मज्झिमयाणं पाससामितित्थगरसंतगाणं, अहवा उट्ठिएसु अणिसण्णेसु, अणुट्ठिएसु णिसण्णेसु, एक्कारसण्हं गणहराणं अणुत्थियाणं चेव पवेदितं, उवट्ठिता णाम जे धम्मसुस्सूसा, केति धम्मुट्ठाणेण उट्ठितावि ण उवट्ठंति जहा पत्तेयबुद्धा, अणुवट्ठिए कहिज्जति जहा इंदणागस्स, उवरयदंडेसु वा, न रतो उवरतो सव्वदंडेहिं अणुवरता असंजता, तेसिंपि पवेदिज्जति, किह दंडेहिं उवरतिं करिज्ज?, पंचधा दंडगा, दव्वभवसंयोगरएसु वा, असंजोगरएसु वा, संजोगरतो गिहत्थो, असंजोगो संजमो तहिं रता 'तच्चं चेत' तद् द्रव्यं सद्भूतं एतं, जं भणितं सव्वे पाणा ण हंतव्वा, एतं वा ॥१३४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१२६-१२९]

दीप
अनुक्रम
[१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१३५॥

रोचक सम्यक्त्वादि

सम्मद्दंसणं, कयरं ?, कारगं, 'अस्सिं चेतं पवुचति' अस्मिन् आरुहते पवयणे साधु आदितो वा वुच्चती पवुचति, तं इयं तत्तेसु अत्थेसु सद्धाणलक्खणं रोयगसम्मद्दंसणं, तप्पुव्वगं च कारगसम्मद्दंसणं 'तं आनिइत्तु ण णिहे' ण छातए, जहारोयितपइण्णा, न णिक्खिवे, णिक्खेवणं छड्डणं जहा तच्चनियाणं आयरियसमीवे सिक्खावयाणि खिविता उप्पव्वज्जेति पुणो आगतो गिण्हइ, तहा ण णिक्खीवे, जावज्जीवं अणुपालए, 'जाणित्तु धम्मं' जहावत्थितं तहेव सुतधम्मं चरित्तधम्मं च ण णिक्खिवेइत्ति वट्टति, 'दिट्ठेहिं णिव्वेदं गच्छिज्जा' इट्ठाणिट्ठरूवविसया, सद्देहिं सुत्तेहिं गंधेहिं अग्घातेहिं रसेहिं अस्सातितेहिं फासेहिं पुट्ठेहिं णिव्वेदो सो चेव, सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमंति, अतो तेसु को रागो दोसो वा ?, एवं सेसविसएहिवि, जं लोगो एसति सा लोगेसणा, भणितं च लोगेवि—'शिश्नोदरकृते पार्थ !, पृथिविं जेतुमिच्छति०' 'जस्स णत्थि इमा णाति' जस्स साहुस्स णाणं णाती, जं भणितं तं अन्नतरइंदियरागदोसोवयोगो जस्सिमा णत्थि अन्ना केणप्पगारेण रागदोसणाती भविस्सति ?, अहवा सव्वे पाणा ण हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा, जस्स वा णाती णत्थि तस्सण्णआरंभपरिग्गहपवित्तेसु पासंडेसु णाती कतो सिता ?, जीवाजीवाति पदत्थे ण याणति सो किं अण्णं जाणिस्सतीति, कतरा सा णाती ?—'जं दिट्ठं सुतं' केवलदरिसणेण दिट्ठं, सुतं दुवालसंगं गणिपिडगं तं, आयरियाओ सुतमेतं णाम जह मम दुक्खमसातं तहा अण्णेसिं मतं, विविहं विसिट्ठं वा णाणं विण्णाणं, परतो सुणित्ता सयं वा चिन्तिता एवं विण्णाणं 'जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव' अहवा जस्स णत्थि इमा णाती अण्णा तस्स कुतो सिया ?, जं लोए परिकहिज्जइ सदिति पच्चक्खं सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झयारे तं चेव गणहरातिएहिं परिकहिज्जइ, तंजहा—सव्वे पाणा ण हंतव्वा, जे पुण हणंति जाव उद्दवंति ते 'समेमाणा पलेमाणा' समेमाणा माणुस्सेण, पलेमाणा तेणेव, अहवा सद्दाइएहिं ॥१३५॥

प्रत
वृत्यंक
[१२६-१२९]

दीप
अनुक्रम
[१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१३६॥

समेमाणा पलेमाणा, जं भणितं नस्समाणा,'पुणो जाइं' तंजहा–एगिंदियजाइं बेइंदियजाइं तेइंदियजाइं चउरिंदियजाइं पंचिंदियजातिं, अहवा जणणं जाती तधा कितं कम्मं तं पुणो पुणो पगप्पंति–पगरिंति, अयमपरो विकल्पः–सम्मत्ते वण्णिज्जमाणे तत्थिरीकरणत्थं भण्णति–'दिट्ठेहि णिव्वेगं गच्छिज्जा' दिट्ठा णाम पुव्वं कुसत्थाणं मताइं दिट्ठाइं, तेसु कहं णिव्वेदं गच्छिज्ज ?, एते असवण्णुपणीतत्ता पुव्वावरविरुद्धभासी मायिणो णिव्वाणं न गच्छंति, एवं तेसु णिव्वेदं गच्छिज्जा, न य अभिणवपव्वइयं विपरिणामेज्ज, तत्थ णो य लोएसणं चरे, मिच्छत्तलोएसणा ण तेसिं सद्दहे, तत्थ आलंबणं 'जस्स णत्थि इमा णाती' इमा केवलणाणसुयणाणणाती तस्स पुव्वावरबाहत्ता कुणाणाण णाती कुतो सिया ?, दिट्ठं सुतं सुतं दिट्ठं, वचसा संमं आयारकिरियाकरणं सुतं परोवदेसेणं सुतं साभिप्पाएणं जहा ममेतं मतं, एतेसिमेव तिण्हं प्रकाराणं अण्णतरेण विसिट्ठं विविहं वा णाणं, लोगो छज्जीवनिकायलोगो, किं ?, कहिज्जइ, समेमाणा पलेमाणा, तेणेव कुदरिसणेणं अण्णोण्णेण वा पलेमाणा, ततो अभिग्गहितकुदरिसणाओ पुणो पुणो जातिं, जाई संसारो, कम्मं वा पगप्पेंति–पकुव्वंति, मोक्खत्थमुत्थिता वा ण मुचंति, अहवा 'दिट्ठेहिं णिव्वेगं गच्छिज्जा' दिट्ठा णाम पुव्वावरसंथुता बंधवा जहेते इहंपि णो जणवयातिंदुक्खपरित्ताणाए किं पुण परलोए ?, एवं तेसु णिव्वेगं गच्छे,'णो य लोगेसणं' लोगो णाम सयणो, अहवा लोग इव लोगो ण णिच्छयतो कोयि सयणो, भणियं च–'पुत्तोऽपि अभिप्पायं पिउणो एस मग्गए वा तु' सो सयणलोगो जइ इच्छति उप्पव्वावेतुं तं तस्स एसणं ण चरे, तत्थ आलंबणं 'जस्स णत्थि इमा णाति' जस्स इहलोगे बंधवा ण भवंति दुक्खपरित्ताणाए अस्स अण्णेसु जातिसु कइं दुक्खं अवणेस्संति ?, तत्थ उदाहरणं–कालसोयरियपुत्तो, जं दिट्ठं तु तं तहेव 'समेमाणा पलेमाणा' समेमाणा-समागच्छंता, तंजहा–पुत्तत्तेण भातित्तेण भइणित्तेण, एवं ते समागमं काउं किंचिकालं

जात्यादि ॥१३६॥

प्रत

वृत्यंक [१२६-१२९]

दीप

अनुक्रम [१३९-१४२]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१३७॥

पलायनादि आश्रवपरिश्रवता

वसित्ता ‘पलेमाणा’ विमुच्चमाणा पुढो पुढो जाइं पगप्पेंति-पिहप्पिहं अणेगाओ गतिओ गच्छंति, सकम्मेण पिहप्पिहा जातीयो कप्पेंति-पकुव्वंति, जह सउणगणा बहवे समागता पादवे रत्तिं वसिऊण किंचि कालं पगि जाव पुणो पवजंति, ‘पुणो पुणो पुणो वा जातिं तंजहा-एगिंदियजाइं जाव पंचिंदियजाइं, अणंतसंसारं, पमत्तदोसा भणिता, तब्भया ‘अहो य रातो य’ अविस्सामं जताहि-घडाहि, एवं अवधारणे, जम्हा एते पमत्तदोसा तम्हा जत, वीरो भणितो आयपरउवदेसओ ‘सता आगतं’ णिच्चं आगतं पण्णाणं जस्स खणलवपडिबुज्झयणा णिच्चं अप्पमाएण उवउत्तो ‘पमत्ते बहिता पास’ जे विसयकसायपमत्ता असंजया गिहत्था अन्न-उत्थिया बहिया धम्ममते! एवं पस्स, ‘अप्पमत्ते सता परक्कमेज्जासि’त्ति बेमि। कहं णाम रागादिदोसेसु लंछणा ण होज्जा?, पराणं परक्कमे, एत्थ तेल्लथालपुरिसेण दिट्ठंतो, जहा सो अप्पमायगुणा मरणं ण पत्तो एवं साहूवि सिज्झिस्सइ, चउत्थज्झयणस्स पढमो उद्देसओ सम्मत्तो ४-१ ॥

उद्देसत्थाधिगारो निज्जुत्तीए वुत्तो, सुत्तस्स सुत्तेण सम्मत्ते अहिंसाइलक्खणे वतिरित्ते सचरित्ते अप्पमादो कायव्वो, अहवा ‘अप्पमत्ते परक्कमिज्जासित्ति बेमि’ पमत्तो य आसवति, अण्णहा णिस्सवतीति, अतो पुच्छा ‘जे आसवगा ते परिसवगा?’ अहवा सम्मत्तं अधिकितं, तं तु भूतत्थेण अभिगतो जीवपदत्थो पढमे अज्झयणे वण्णिओ, इह आसवो वन्निज्जइ निज्जरा य, आसवग्गहणा य पुण्णं पावं बंधो य सूइओ भवति, निज्जरगहणा य मोक्खो य, जओ भण्णति-‘जे आसवा ते परिसवा’ गतिपच्चागतिलक्खणं, दव्वासवो नदीसरादी भावासवो कम्मं, दव्वपरिसवो चालणी झरणाणि, भावपरिसवो कम्मखवणा, एत्थ दुविहा पुच्छा-अणुयोग-पुच्छा अणणुओगपुच्छा य, अणणुयोगपुच्छा ताव जे चेव आसवा ते चेव परिस्सवा?, का भावणा?, जे चेव आसवा हिंसाति ॥१३७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

चतुर्थ-अध्ययने द्वितीय-उद्देशक: ‘धर्मप्रवादी-परीक्षा’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१३०-१३३]

दीप
अनुक्रम
[१४३-१४६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥१३८॥

त एव परिस्सवा अहिंसाति ?, भण्णति–णो, अणुयोगपुच्छाओ, जे आसवगा ते परिस्सवगा, जे आसवगा ते अस्सवा, अणासवा परिस्सवा, अणासवा अपरिस्सवा, अहवा सआसवा परिस्सवा १ सआसवा अपरिस्सवा २, अणासवा परिस्सवा ३ अणासवा अपरिस्सवा ४, अहवा सआसवा अपरिस्सवा बितिया चउभंगी उच्चारेयव्वा, तमेव एकं वज्जित्ता सेसगा भवंति। तत्थ 'जे अस्सवा ते परिस्सवा' परिमाणतो क्रियाविसेसतो उवचयओ अवचयाओ भवंति, तत्थ परिमाणतो जावइया असंबुद्धस्स आसवहेऊ तावइया तव्विवरीता संबुद्धस्स णिज्जराहेऊ भवंति, जं भणितं–जत्तियाइं असंजमट्ठाणाइं तत्तियाइं संजमट्ठाणाइं, भणियं च–यथा प्रकारा यावन्तः, संसारावेशहेतवः। तावंतस्तद्विपर्यासा, निर्वाणसुखहेतवः॥१॥ क्रियाविसेसतोवि, जच्चेव असंजयस्स चिट्ठातिकिरिया अस्सवाय भवति सा चेव संजयस्स णिज्जराये, भणितं च–"तह य णिकुंटितपादो मज्जारं मूसगं०" साहू पुण इरियासमितो णिज्जरतो, उवचयअवचयओवि संपराइयं अहिकिच्च जे चेव अस्सवंति ते चेव परिस्सवंति पढमो भंगो, बितिओ य अपरिस्सवो इति अवत्थु, ततिओ अणासवो सेलेसिं पडिवण्णो, चउत्थो अणासवा अपरिस्सवा सिद्धा, एते य पदे य संबुज्झकरे य वुत्ता, अस्सवं निज्जरं च अधिकृत्य तिण्णि भंगा, चेवसद्दा अण्णे य, जीवअजीवबंधमोक्खा, अहवा अण्णे अत्थ जे बंधमोक्खस्स य गतिं ण यागंति. सम्मं संगतं पसत्थं वा बुज्झमाणा लोयं वा लोगो छज्जीवनिकायलोगो मणुस्सलोगो वा तं आणाए अभिसमिच्च, जं भणितं णच्चा, पुढो वित्थरेणं पवेदितं, तंजहा–अस्सवे ताव णाणपडिणियत्ताए दंसणपडिणिययत्ताए, एवं जधा अंतराइयस्स हेतू, निज्जरावि तवो बारसविहो, अहवा 'पुढो'त्ति सामित्तेण को कित्तियं बंधति णिज्जरिति वा ?, एवं जीववियप्पो जाव मोक्खत्ति, अणंतरसिद्धपरंपरसिद्धतित्थसिद्धअतित्थसिद्ध एवमादि, अहवा 'पुढो'त्ति अतीताणागयवट्टमाणेहिं सव्वतित्थगरेहिं जीवाजीवादिपयत्था

पलायनादि आश्रवपरिश्रवता

॥१३८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत

वृत्यंक

[१३०-

१३३]

दीप

अनुक्रम

[१४३-

१४६]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१३९॥

प्रतिपन्न-
संसारादि

परूविता, परूवितं पण्णवितंति एगट्ठा, एवं एयाणि पदाणि संबुज्झमाणो अण्णेसिंपि अक्खाति, अबुज्झमाणो किं आघाहिति?, णाणं से अत्थीति नाणी 'इहे'ति इहं प्रवचने मणुस्सलोए वा, केसिंचि माणवाणं, जं भणितं–मणुस्साणं, अहवा माणवा जीवत्ति जीवाणं अक्खाति, किं अक्खाति?,'जे आसवगा ते परिस्सवगा','संसारपडिवण्णाणं' छउमत्थाणं केवलीणं, तत्थ नेरइयाण ण केवलं चरित्ताचरित्तं चरित्तं च, देवेहिवि णत्थि, चरित्तं तिरिएसु णत्थि अतो मणुस्साणं अक्खातं, तेसुवि उट्ठितेसु वा अव सोतविएसु वा, इह तु विसेसणे 'संबुज्झमाणाणं' सम्मं बोधिः संबोधिः, सा य तिविहा–नाणाति, उवट्ठितादी जति संबुज्झंति ततो तेसिं कहेति, मुणिसुव्वतसामितित्थगरदिट्ठंतो, विसिट्ठनाणपत्ताणं जं भणितं मेहावीणं, अहवा विन्नायति जेण तं विण्णाणं, किं त?, मणो, जं भणितं–समणाणं पत्ताणं, बोहिनाणियोः को विसेसो?, बोही तिविहा, विन्नाणं नाणविसेसो, भदन्तणा-गज्जुणिया पढंति–'आघाति धम्मं खलु से जीवाणं संसारपडिवण्णाणं मणुस्सभवत्थाणं आरंभविणियाणं दुक्खुव्वेयसुहेसगाणं धम्मसवणगवेसगाणं निक्खित्तसत्थाणं सुस्सूसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विण्णाणपत्ताणं' तं एवं धम्मं कहिज्जमाणं सप्पभावजुत्तं, अविय 'अट्ठावि संता अदुवा पमत्ता' पडिवज्जंतित्ति वक्कसेसं, दव्वभावअट्ठो पुव्वभणितो, भावअट्ठोऽवि पडिवज्जइ जहा चिलातपुत्तो, पमत्ता विसयमज्ञातिपमातेण पमत्तावि पडिवज्जंति, जहा सालभद्दसिवभूतिमादि, किं पुण जे अणट्टा?, जं भणितं-विसयनिरासा, जह इंदणागसिवादिया, अहवा अट्ठादुक्खिता तेऽवि पडिवज्जंति वेयणाभिभूतादि पमत्ता सुहिता, पत्तिया मणुस्सा सुहिता वा दुहिता वा, अहवा तं एवं अक्खातं धम्मं अपडिवज्जमाणा अट्टा रागदोसेहिं पमत्ता विसएहिं अण्णउत्थियगिहत्था पासत्थादओ वा संसारमेव विसंति 'अहासच्चमिणंति बेमि' अहासच्चं इदमिति–सुयधम्मं चरित्तधम्मं च, से बेमित्ति किं? भणितं वक्खमाणं ॥१३९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१३०-१३३]

दीप
अनुक्रम
[१४३-१४६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१४०॥

उपक्रमादि

च, एवं दुल्लभं सम्मत्तं लद्धा चरित्तं च ण पमाओ कायव्वो, 'नाणागमो मच्चुमुहस्स उवत्थि' अहवा ते अट्टे पमत्ते य एवं परिगणित्ता सहसेव संबुज्झति 'नाणागमो मच्चुमुहस्स' अहवा अट्टावि संता अदुवा पमत्ता अहासच्चमिणं धम्मं आयरंतीति वक्कसेसं, किं कारणं ? 'नाणागमो मच्चुमुहस्स' उवक्कमेणं णिरुवक्कमेण वा, तत्थ उवक्कमो डंडकससत्थरज्जू०, जाव पालणं णिरुवक्कमो, उभयहावि नाणागमो मच्चुमुहस्स, जे तु अट्टा पमत्ता अहा सच्चं धम्मं ण बुज्झंति ते 'इच्छापणीता' विसयकसायादि अप्पसत्थिच्छा जेसिं सावज्जकम्मेसु इच्छा फुरति ते इच्छापणीता, अहवा इच्छाए पेरिता 'वंका णिएता' वंको-असंमो णिकेतो-गेहं माता गिहभूता, भंडआरंभथंभकुंभेहिं वक्कमा णिकेतभूता, वंको वा तेसिं णिकेतो, अहासच्चं धम्मं ण पडिवज्जतीति वट्टति, काले गहिता कालगहिता, कतरेण ?, मच्चुकालेणं, अहवा अमुगे काले धम्मं चरिस्सामि मज्झिमे अन्तिमे वा वये, दव्वणिचयो हिरण्णाति भावणिचयो कम्मं तहिं णिविट्ठा, जं भणितं तत्थ ट्ठिता, ततो कम्मणिचयायो 'पुढो पुढो जाइं कप्पेंति' पिहु वित्थारे बहुविहं जाइं एगिंदियजातिं बेइंदियजाइ जाव पंचिंदियजाइं, अहवा पुढो-पुणो २ जातिं पगरेंति, पढिज्जति य-'एत्थ मोहे पुणो २' एत्थंति कम्ममोहे संसारमोहे वा पुणो पुणो मिच्छत्तअविरतिपमादयोगेहिं मोहं समज्जिणंति, पढिज्जइ य 'पुढो पुढो जाइं कप्पेंति' जे अण्णउत्थिया वंकाणिकेता मिच्छत्तनिकेता ते पुढो पुढोससिद्धंतजातियो पगप्पेंति-जंपंति, 'इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवति' 'इहे'ति इह मानुष्ये मिच्छत्तलोगे वा एगेसिं 'तत्थ तत्थे'ति तहिं तहिं मिच्छत्तकसायविसयाभिभूते दरिसणे संथुति संथवो, किं पुण विसेसाणं पत्ताणं उवभोगो ?, सत्थागमातिपरिग्गहि उद्देसिए ण दोसं इच्छंति, उद्देसयं प्रति पायसो तित्थियाणं संथवो, एवं ण्हाणादिदेहिं सक्कारेसु, लोगायतिया णं भणंति-'पिब मो(खा)द च साधु सोभणे' एवमादि, सावज्जजोगेसु ॥१४०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१३०-१३३]

दीप अनुक्रम [१४३-१४६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१४१॥

स्पर्शप्रतिवेदनादि

संथवंति, जं भणितं-संजुज्जंति, ते एवं मिच्छादिट्ठी जहा जहा भाविणी तहा तहा गतिसु उववज्जंति, 'अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंन्ति' अहवा पुढो पुढो जाइं पगप्पेंति, जं वुत्तं जारिसं जाइं पगप्पेंति तारिसं तारिसं जाइं पप्प इहमेगेसिं संथवो भवति, इह संसारे संथुति संथवो, अप्पसत्थो नेरइओ नेरइयत्तेण, संथुवति णाम निद्दिसिज्जति एवमादि, पसत्थं तु देवो देवत्तेण, अहवा समागमो संथवो, पुणरवि ते संसारे संसरंति, अण्णमण्णस्स माइत्ताए पतित्ताए संथुविहिंति, ते एवं संसारिणो जत्थ जत्थ उववज्जंति तत्थ तत्थ 'अधोववाइए' अध इति अणंतरे, अह ते सकम्मनिद्दिट्ठं अण्णतरं गतिं गया, उववाते जाता उववाइया फुसंति, जं भणितं-वेदेंति, अहवा फरिसो नियमेण सव्वेसिं अत्थि, रसातिविसया केसिंचि अत्थि केसिंचि नत्थि, तत्थ नेरइएहिं फासा सीता उसिणा य, असिपत्तकरकयकुंभीपागादि, एवं तिरियमाणुएहिंवि जहा सकम्मविहिते इट्ठाणिट्ठे, अहवा बहूणि हत्थछेयणाणि जाव तालणाईणि पाविहिंति, सीसो पुच्छति-ते भगवं! ता वंकनिकेयणिच्चयणिविट्ठा पुढो पुढो जायओ पगप्पेंता तत्थ तत्थ संथवे करेमाणा अधोववातिए फासे वेदेमाणा सव्वे समवेयणा भवंति?, णो तिणट्ठे समट्ठे, कहं?, 'चिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं' चिट्ठंति वा गाढंति वा एगट्ठा, जेत्तिया अज्झवसाया चिट्ठं हिंसातिकूरकम्मेसु पवज्जंति, विविहं परिचिट्ठंति, णरगेसु जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तेण परं समयाहिया जाव तेत्तीसं सागरोवमाइं चिट्ठंति, 'चिट्ठं चिट्ठतरं'ति एत्थ इमाओ दो कारगगाहाओ 'अस्सण्णी खलु पढमं०' जहा ठिती तहा वेयणा, विणा चिट्ठं कूरेहिं जहा जहा तस्स हिंसादीणि ण अतिकूराइं कम्माइं भवन्ति, तंजहा-असण्णी खलु पढमं, एवं सन्निणोवि जहा जहा मंदज्झवमाणा भवंति तहा तहा नेरइयाउहेऊसु वट्टमाणावि ण चिट्ठंति, न दिग्घकालट्ठिईएसु नरएसु उववज्जंति, ण वा अतिचिट्ठं वेदणावेदणं, एवं तिरियमणुय०, एवं सुभकम्मेसुवि चिट्ठं अकूरेहिं चिट्ठं परिचिट्ठंति, 'एगे

॥१४१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१३०-१३३]

दीप अनुक्रम [१४३-१४६]

ज्ञान्यादि

वदंति अदुवावि नाणी' के एवं वट्टंति चिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं ?, जं भणितं–सेवेति, जे अतीता ते भण्णंति, 'एगे वदंति अदुवावि' एगे सम्मद्दिट्ठी अदुवा–अहवा णाणी-सो चेव सम्मद्दिट्ठी नाणी वदंति अदुवावि एगे, गतिप्रत्यागति०, सम्मद्दिट्ठी एवं वदंति त एव नाणी, अहवा एगेत्ति एगनाणी अदुवा विनाणी–अणेगनाणिणो तस्सिस्सा, को अभिप्पाओ ?, जहा केवली पण्णवेइ तहा चोद्दसपुव्वीवि, अहवा एगे रायविप्पमुक्को सो चेव नाणी, अहवा एगे एकिया मिच्छादिट्ठी, किं वट्टंति ?–'आवंति केआवंति' आवंति यावंतेत्ति वुत्तं भवति, केयावंति–जावंतिया केई, लोए मणुस्सलोए पासंडलोए वा समणा परतित्थिया अब्भत्ता वा माहणा धीयारा पुढो वा तं पिहप्पिहं परोप्परविरुद्धं विकप्पसो वा 'से दिट्ठं च णे' जे तेसिं तित्थगरा ते भणंति–दिट्ठं, अम्ह सुतं, तस्सिस्सेहिं मतं अभिप्पेतं, किंचि दिट्ठं सुतंपि नाभिप्रेतं भवति, एतेहिं तिहिवि पगारेहिं णाते विण्णातं, अहवा दिट्ठंति वा सुतंति वा विण्णायंति वा एगट्ठा, उड्ढं अहं तिरियदिसासु पण्णवगदिसाए 'से सव्वओ' दिसिविदिसासु सुपडिलेहितं–सुदिट्ठं 'सव्वे पाणा' सव्वे इति अपरिसेसा, परेसिं प्रायसो किमिगमादी जीवा, तेऽवि किर पंचिंदिया, केसिंचि वणस्सतिमादि, तेवि पंचिंदिया एव, ते सव्वे सव्वहा सव्वकालं हंतव्वा जाव उद्वेयव्वा, कहं ते धम्मट्ठिता पाणा हंतव्वा इति भणति ?, भण्णति–जे उद्देसियं ण पडिसिद्धंति, तप्फलं च वण्णेंति, अतो जे पाणा हणंति ते अणुणायंति, जति उद्देसियं पडिसिद्धं होंतं तो तव्वहो पडिसिद्धो होंतो, माहणा पुण धम्मं उद्दिस्स जण्णनिमित्तं एवमाइक्खंति एवं भासंति हंतव्वा जाव उद्वेयव्वा, एतं पुव्वभणितं, चोदिता वा परेहिं एवं भण्णंति–'एत्थवि जाण णत्थित्थ दोसो' अपि पदत्थे जहा अणुद्देसिए तहा उद्देसिएवि तिकरणसुद्धत्ता णत्थि अणुण्णादोसो, अणारियवयणमेतं, एवं मुणित्ता तत्थ जे ते आयरिया समणा य माहणा य ते एवमाइक्खंति एवं भासंति, कतरेति ?, नाणदंसणच- ॥१४२॥

प्रत वृत्यंक [१३०-१३३]

दीप अनुक्रम [१४३-१४६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१४३॥

रित्तआयरिया 'सि'त्ति णिद्देसे तं एवंविहं दरिसणदुदिट्ठं च मे दुस्सुतं च मे दुण्णायं च मे दुव्विण्णायं च मे जण्णं तुज्झे एवं आइक्खह एवं पण्णवेह एवं परूवेह जाव उद्दवेयव्वा, एत्थवि जाणेह अत्थित्थ दोसो, अहवा एत्थंपित्ति जह एत्थं पाणातिवाए तहा जाव परिग्गहे, वयं पुण एवमाइक्खामो एवं पण्णवेमो एवं परूवेमो सव्वे पाणा सव्वे भूता ण हंतव्वा ण उद्दवेयव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परितावेयव्वा ण परिवेत्तव्वा, एत्थवि जाणं नत्थित्थ दोसो, आयरियवयणमेयं, एते वुच्चमाणा ण पडिवज्जेज्जा तत्थ उविक्खा कायव्वा, ण असंखडेयव्वं, ते य उट्ठरुट्ठा जीवितातो ववरोविज्जा, जया तु विदुपरिसाए तता 'पुवं णिकाय समयं' पुव्वं णिकायेऊण समयपुव्वगमेव सवहं कारवित्ता जहा तुज्झेहिं सब्भावो अक्खातव्वो, पासणिये वा पुव्वं णिकायेतव्वा, अहवा पुव्वं छंति णियागं जं तेसिं अप्पणगं जो तेसिं समयो एक्केकं प्रतिपक्खे पत्तेयं 'हंभो समणो माहणो' हे हरे हंभो आमन्तणे समणा पासंडी माहणा-धियारा, किं सातं दुक्खं उदाधु अस्सातं ? सातं पियं अस्सातं अप्पियं ?, जति ते भणेज्जा-अम्ह दुक्खं सातं, तो वत्तव्वा जो णाम तुज्झं आहारवसहिसयणासणादीणि सुहकारणाणि देति सो णाम तुज्झं सुक्खं उप्पातेति, भवतो ण दातव्वं, दुक्खं च उप्पायंतो सुहं उप्पाएति, अध एवं बूया ण णो सातं दुक्खं, सुहं अम्हं सातं, जं भणितं-पियं, ते एवं वाइणो 'समित्ता पडिवण्णे बूया' सम्मं पडिवण्णो समियापडिवण्णो, को सो ?, साहू, ते एवं बूया-जहा तुज्झं दुक्खं अस्सातं एवमेव सव्वेसिं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं, अहवा ते चेव सम्मं पडिवण्णा भवंति. किमिती ?, जहा अम्हं सुहं सातं दुक्खं अस्सातं, ते कुतो तुज्झं अट्ठाए पचंति तेसिं पाणाणं, अहवा सव्वलोए सव्वेसिं पाणाणं भूयाणं तं मरणदुक्खं अस्सातं, तेण णिव्वुई ण भवति, तं अपरिणिव्वाणं महब्भयंति, 'मरणतुल्लं भयं णत्थी'ति अतो महब्भयं दुक्खंति, तदेव मरणं परितावणाति वा, एवं एते संदिट्ठीएण हेउणा निग्गहिता

दुच्चतादि ॥१४३॥

प्रत वृत्यंक [१३०-१३३]

दीप अनुक्रम [१४३-१४६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ४ अध्य० ३ उद्देशः ॥१४४॥

परिसाए परिगता ण किंचि उत्तरं, ण सक्केंति वा हेउं, मिच्छत्तपडिघाते य सम्मत्तं थिरं भवति, अतो परं उवालंभो, एवं बेमि॥ चतुर्थ्याध्ययनस्य द्वितीयोद्देशकः॥

उद्देशाभिसंबंधो–एवं सम्मत्ते थिरीभूते अणवज्जतवे पराकमितव्वं, तेण य सम्मत्तसहगतेणं तत्र सक्खियं सुचति, तेण ततिए अणवज्जतवो, एस उद्देसाभिसंबंधो, सुत्तस्स सुत्तेण सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं च महब्भयं दुक्खं'ति, एत पस्स व अन्नउत्थियाणं उवदेसो दिण्णो, इहवि सो चेव उवएसो विसिस्स दिज्जति, 'उवेय वेतं बहिता य लोगं' पाणा भूता वा जीवलोगो तं इहावि उवेह, उव सामिप्पे इक्ख दरिसणे, इहेव इक्खाहि, अहवा उवेहाहि एतंति जं उवक्कमो, बहिता सम्मत्तनाणचरित्ताणं लोगो मिच्छत्तलोगो तिन्नि तिसट्ठाणि पावातियसयाइं तदुवासिणो य, अहवा उवेहा अव्वावारउवेहा, एतेसिं अभिगमणपज्जुवासणादिसु, जं भणितं अणादरणं, तम्मतेसु बुद्धिं ण कुज्जा ण वा तप्पूयं अभिलसे, जो एते उवेहति 'से सव्वलोयंसि' से इति णिद्देसे, लोगो मणुस्सा वा पासंडा वा 'विण्णु'त्ति जाणगो, सव्वलोए जे केवि भूया तेसिं अग्गाणीए 'अणुवीयि पास' अणुविचिंत्य २ अणुवीयि, एवं अणुचिंतिऊणं पेक्खमाणो, णिक्खित्तो दंडो जेहिं ते णिक्खित्तदंडो, दंडो घातो भणितं, तत्थ दव्वदंडो सत्थग्गिविसमादि, भावे दुप्पउत्ते मणो, 'ये केयि सत्ता पलियं जहंति' णिक्खित्तदंडो होऊण पलियं जहित्ता मोक्खं गच्छंति, कतरे ते सत्ता?, णरा ण अण्णे, तेवि 'मुयच्चे' जे णरा मुतच्चा ते णरा पलियं चयंति, अच्चीयते तमिति अच्चा तं च शरीरं, ण्हायंति सक्कारं प्रति मुता इव जस्स अच्चा स भवति मुतच्चा, अहवा अच्ची लेस्सा सामता, जं भणितं अप्पसत्था मुता, अणवज्जे तवे कीरमाणे वा पमुदितलेस्सा ते ण संकिस्संति, अतो नरे मुतच्चे 'धम्मविउत्ति' अह सुयधम्मं अत्थिकायधम्मं च बंधमोक्खधम्मं वा धम्मं ॥१४४॥

लोकविज्ञत्वादि

चतुर्थ-अध्ययने तृतीय-उद्देशक: 'अनवद्यतप' आरब्ध

प्रत
वृत्यंक
[१३४-१३६]

दीप
अनुक्रम
[१४७-१४९]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१४५॥

कुशलादि

विदतीति धम्मविदः, इति उवप्पदरिसणा 'अंजु'त्ति उज्जू , किं ?, आरंभणिक्खित्तदंडा मुतच्चा धम्ममारचयति, णणु आरंभजं दुक्खं, आरंभाज्ञातं आरंभजं, असंजमातो जं भणितं परिग्गहा, तच्चेव दुक्खं–कम्मं, एगग्गहणे गहणं तज्जातियाणंति आरंभग्गहणा अण्णेवि आसवा, एवं णच्चा णिक्खित्तदंडो भवति 'एवमाहु' जं आदीये भणितं आहु–एवं भणिंसु सम्मत्तं पस्सतीति सम्मदंसी, ते सव्वे पावातिया धम्मकुसला परिण्णमुदाहरंति सव्वे अतीतानागतवट्टमाणा तित्थगरा, पवदंतीति पावातिया, जं भणितं–बंभकम्मं, कुसला जाणगा, कुसा दव्वे य भावे य, दव्वकुसे लुणाति दव्वकुसलो, भावकुसला कम्मं, तं दुक्खक्खयट्ठाए लुणाति, जाणगपरिण्णाय जाणिय कुसला पच्चक्खाणपरिण्णमुदाहरंति, अहवा सव्वे ते पावाइया तिण्णि तिसट्ठा जे मोक्खवायिणो ते अप्पणप्पए दरिसणे बंधकुसला, कुसलत्ति जाणणापरिण्णा गहिता, जहा संसारो भवति, इत्थी पुरिसा नपुंसगणरगादि, परिण्णागहणा पच्चक्खाणपरिण्णा गहिता, णहि बंधे अपरिण्णाए मोक्खो परिण्णाओ भवंति, जेण सव्वकम्मक्खया मोक्खो,'इह आणाकंखी पंडिते' इह पासंडेसु आणा उवदेसो तं सए सए दरिसणे कंखंति, अहवा कुदिट्ठीउ अवत्थुमेव, कहं ?, इह अप्पाणं अण्णाणं चेव, तेण कुदिट्ठिओ आणं प्रति अवत्थुमेव, जे कुसला परिण्णमुदाहरंति ते इह आणाकंखी पंडिते प्रतिवचने मोक्खकंखी, तदट्ठं च अणवज्जतवं उट्ठिता, आणाकंखी आयरियउवदेसे, पावा डीणा पंडिता, ण कुदरिसणाण आणं कंखंति, णिस्संकितातित्ति, अणिहो रागदोसमोहे, अणिहेता विसयकसायमल्लेहिं वा, अहवा पडिलोमअणुलोमेहिं परीसहउवसग्गेहिं रंगमल्लच्छसंगासा, मल्लावि केयि अपंडिया भवंति, केयि पडिहयावि पुणो पच्चुद्धारं करेंति, निरुज्जमाओ अवत्थुमेव, भावमल्लावि केयि णिच्चं अप्पमत्ता, अणहितावि पुणो उज्जमंति, सेसा अवत्थुमेव, कहं रागादीहिं ण णिहंणति ?, एगमप्पाणं एक्को अचितयो अप्पाणं समं पेहाए उवेहाए, किं सम्मं पेक्खंति–एकः प्रकुरुते कर्म्म, भुंक्ते एकश्च ॥१४५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१३४-१३६]

दीप
अनुक्रम
[१४७-१४९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥१४६॥

कुशलादि

तत्फलम्। जायत्येको म्रियत्येको, एको याति भवान्तरम् ॥१॥ अहवा सरीरातोऽवि अण्णो अहं, एवं णच्चा सरीरसंगो न कायव्वो, जतो भण्णति 'धुणे सरीरं' दव्वेणं वण्णाति, भावे कम्मावकरिसणं, सीर्यत इति शरीरं, कतरं?, कम्मं शरीरं, तद्गुणणनिमित्तमेव सरीरे उवयारं काउं भण्णति 'किसेहि अप्पाणं' किसं कुरु सरीरं अप्पाणं बाहिरब्भंतरेण तवसा पंतलूहअभिग्गहितेण अणवज्जेण तवसा, जहा जहा सम्मं उदत्तेण तवसा सरीरगंपि किसीभवति, तं च ण सहसादेव किसी कायव्वं जेण अकाले प्राणेहि विमुच्चति, अतो भण्णति 'जरेहि अप्पाणं' अणुपुव्वेणं शरीरं किसीकरेंतो जरं णेहि अप्पाणं, अहवा ओरालियसरीरधुणणा कम्मशरीरं किसं कुरु, जं भणितं-तणुयीकरेहि 'अप्पाणं' सव्वकम्मसरीरअप्पाणं जरेहि, जं भणितं-खवयाहि, अहवा धुणणंति वा करीसणंति वा एगट्ठा, दव्वकिसो सरीरेण वण्णेण वा, अप्पसत्थभावकिसो जस्स नाणादीणि किसाणि, पसत्थभावकिसो जस्स अण्णाणातिणि किसाणि, भणियं च-"किसे णाम एगे किसे, किसे णामं एगे बलिए, बलिए णामं एगे किसे चउभंगो, दव्वकिसेणं भावकिसेण य अहिगारो, जरेहि सरीरमप्पाणं जरेहि तवसा, निज्जरणा कम्मनिज्जरा भवति, तत्थ द्रव्यजरा जिण्णं कट्ठं जिण्णा सुरा जिण्णं शरीरं सम्मं आहारो जिण्णो अजिण्णो सूलातिरुपाकरोति—भवति, भावजरा कम्मक्खओ, ततो निव्वाणं, कम्मअजिण्णोदया तु णरगादिरोगो उप्पज्जइ, एत्थ धूणणकसीकरणजरणेहिं दिट्ठंतो, 'जहा जुण्णाइं कट्ठाइं०' जेणप्पगारेण जहा जिण्णाणं वाढिकयेणं, ण तु तरुणसुक्काणि, ताणि समारत्ता ण लहुं डज्झंति, अतो जिण्णो रुक्खो जरासुक्को दव्वग्गिना शीघ्रं दह्यते, हव्वं वहतीति हव्ववाहो, भिसं मथेति, एस दिट्ठंतो-सुत्तेणेव, एयस्स उवणयो एवं अत्तसमाहितो, एवं अवधारणे, एवं कम्मं दिट्ठं अण्णाणातिसारातो णिस्सारीभूतं तवग्गिणा अमुं डज्झति, सो केरिसो जेण डज्झति ?-'एवं अत्तसमाहिते' अप्पा समाहितो जस्स नाणा- ॥१४६॥

प्रत
वृत्यंक
[१३४-
१३६]

दीप
अनुक्रम
[१४७-
१४९]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१४७॥

कुशलादि

दिसु अप्पए वा जस्स समाहिताणि णाणातीणि सो भवति २ सुविसुद्धासु वा लिस्सासु आता जस्स आहितो, जं भणितं आरोवितो, एवं वा अत्तसमाहितो, अणिहो पुव्वभणितो, सो एवं अत्तसमाहितो अणिहो कम्मखवणत्थमुत्थितो संवरितासवो 'विकिंच कोहं'ति छड्डेहि, एवं एगग्गहे ग्रहणं माणमायालोभाण, जा सव्वं चरित्तमोहणिज्जं दंसणमोहणिज्जं च, मोहणिज्जे विसुद्धे अत्थतो सेसा कम्मप्पगडीओ विसोहियाओ भवंति,'अविकंपमाण' मंदर इव वातवेगेण तहा, मिच्छादरिसणवातवेगेण सम्मदरिसणाओ अविकंपमाणो, विसयकसायवातेहिं चरित्ताओ, दुक्खं चिरं अप्पमाओ काउं, तं च ण चिरं, कहं?,'इमं निरुद्धाइयं' 'इयं'ति माणुस्सगं, णिरुद्धं णाम वरिससयाओ उद्धं न जीविज्जति, 'सम्मं पेहाए' सपेहाए, किं सम्मं पेक्खति?, जइ ताव नेरइयस्स जंतुणो, अहवा चरिमसरीरस्स ण पुणो आउगं भवतीति, तंपि समए समए णिज्जरमाणेहिं निरुद्धमितिकाउं केचिरं एतं तवचरणदुक्खं भविस्सति?, अहवा सव्वआसवनिरोहो निरुद्धं काउं २, अहवा संजयाणं इमेण निरुद्धेण आउएण, जं भणियं परिमितेण, उवचितं एतं 'दुक्खं च जाण' दुक्खमिति कम्मं एतं जाणीहि, अथवा 'आगमिस्सं'ति इमाओ भवाओ णरगादिसु उववन्नस्स आगमिस्सं, अहवा इह परत्थ य आगमिस्सं, तं पंचविहं दुक्खं सोइंदियस्स० ते, तस्स फासो सव्वत्थत्तिकाउं भण्णति 'पुढो फासाइं च फासे' पृथु वित्थारे अणेगप्पगाराइं फासाइं फुसंति तंजहा हत्थच्छिज्जादि, अहवा सीया उसिणा य फासा रोगफासा वा, अहवा पिहप्पिहं इट्ठा अणिट्ठा य च सद्दा, इंदियाणुवातेण सद्दातिविसए अणिरुद्धअस्सवा फासेंति, जं भणितं वेदेंति, अहवा दुक्खं जाणित्ता, अहवाऽऽगमेस्सं पुढो फासाइं फासेंति पिहप्पिहं बावीसं परीसहे फासेहि—अधियासेहि, एवं ते दुक्खं आगमिस्सं ण भविस्सति, काओ आलंबणाओ पुढो फासाइं फासे?—'लोयं च पास विफंदमाणं' लोगो सव्वो जीवलोगो मणु- ॥१४७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१३४-
१३६]

दीप
अनुक्रम
[१४७-
१४९]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
४ उद्देशः
॥१४८॥

निर्वृतादि

स्साई विविहं अणेगप्पगारं फंदमाणं विफंदमाणं विसयणिमित्तं किसिपसुवाणिज्जसेवाभारवहणादिएसु, एवं कामभोगतिसितगिद्धमु-च्छित्त उम्मत्तो वा फासे फंदमाणो, 'जे णिव्वुडा पावेहिं' जे इति अणुद्दिट्ठस्स णिव्वुडा णाम विसयकसाए विरागादि मिच्छा-दंसणपावावगमातो य सीतीभूता, तत्थ पावं रागादी य तिन्नि, मिच्छत्तातियावि तिण्णि, पण गंधा, विसयकसायहिंसातिया य आसधा पावं, तेसु णिव्वुडा, जं भणितं–ण वट्टति, 'अणियाणा' नियाणं बंधणो, दव्वणियाणं कलत्तसयणासणधणादीणि णिग-डाणि वा, भावणिदाणं रागादि बंधहेऊ, दुविहेणावि णिदाणेण अणिदाणा, ते विविहं आहिता वियाहिता, जेण एवं सम्मं पउ-त्तेण तवसा अणिदाणत्तं भवति तेण भण्णति 'तम्हा' इति कारणा इति आमंतणे एवं जाणंतो सद्दहंतो य विज्जं भवति हे विद्वन्!, ण पडिसेहे, जहा 'असंजलंत'त्ति संजलिततो, जं भणितं रुस्सियंतो, एवं माणमायलोभेसुवि, ण पडिसंजले, जहा गंतूण कोति पुणो एति सो वुच्चति पडियागतो, एवं संजलिऊण पुव्विं पडिसंजलिज्ज, बहिता लोगविसयाणं वट्टमाणो संजमतवणियमसंवरेसु ठितिमां भविज्जासित्तिबेमि ॥ चतुर्थाध्ययनस्य तृतीय उद्देशकः ॥

उद्देसत्थाधिगारो णिज्जुत्तीए वुत्तो, जहा ततिए अणवज्जतवो, चउत्थे तेण च तवसा आवीलेयव्वं कम्मं 'उद्देसंमि चउत्थे कम्मं आवीलए सुग्गतवेणं', सुतग्गहणा सुयमेव गहितं, तवग्गहणा सेसतवभेदो दर्शितो, तत्पुरुषसमासो वा, सुत्तसंबंधो परंपर-सुत्तसंबंधो य अणंतरसुत्तसंबंधो य, 'ण पडिसंजलणे' केहिं ण पडिसंजले जहा असंजतत्ते सरीरसंबंधघडामित्तं रसायणव्यायामा-दीहिं संजलितं वा ण एवं तहा पडिसंजले, इहेवि सरीरं आवीलए, जिहंदियस्स तु मणो तं जाव झीणं, विसेसेणं अब्भुज्जयमरणे, अहवा पुव्वं सुएण सुतअणुपरोधाइतवेण, अब्भुज्जयमरणकाले तु संलेहणापुव्वएण तवसा, तदणुपरोधाच्च सुतेण झाणेण, परंपर- ॥१४८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

चतुर्थ-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशक: ‘संक्षेप वचन’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१३७-१३९]

दीप
अनुक्रम
[१५०-१५२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१४९॥

आपील-नादि

सुत्तसंबंधो 'जे णिव्वुडा' णिव्वुडो भवित्ता संवरितासवो आवीलए पवीलए, दव्वावीलणा जहा अल्लकासायि आवीलित्ता मुचति, भावे सुततवेणं आवीलए सरीरं कम्मं च, मिसं पीलणे पवीलणे पवीलणा, जहा वगो ताव णिपीलिज्जति जाव णिस्सेसो पुव्वो णिव्वुडो भवति, अण्णहा ण रुज्झति, भावे सुततवेहिं णिप्पीलए, जहा अहिगं दाहो निदाहो तध अधिगं पीलणा णिप्पीलणा, दव्वे वत्थइक्खुमादि भावे असेसं कम्मं जीवाओ णिप्पीलए, अहवा ईसी पीलणं आवीलणा जाव सेहे, तेण परंपरवीलणं, संलेहणाकाले णिप्पीलणं दुविहस्सवि सरीरस्स, अहवा आवीलणं जाव वीतरागो, उवसामेंतो य पीलेति 'जहित्ता पुव्वसंयोगं' एवं चेव पुव्वं भणियव्वं जहित्ता पुव्वसंजोगं पच्छा आवीलए, भण्णति लोगे दिट्ठंतो, जहा आहारपत्तं आहारेति, स एव अत्थो, एवं जहित्ता पुव्वमायतणं आवीलेयव्वं, आवीलेयव्वं वा जहित्ता पुव्वमायतणं, अतो दोसो, तत्थ पुव्वमायतणं सयणगिहाति असंजमो वा, तस्सवि 'अप्पा रागादीया०'गाहा, तदेव पुव्वमायतणं छड्डित्ता आवीलए ण केवलं लिंगमत्तधारी 'हेचा उवसमा' 'इहे'ति इहं प्रवचने हेचा–आगंतु उवसमो इंदियदमो णोइंदियदमो वा, आवीले इति वट्टति, उवसंतस्स य अचिरा कम्मक्खओ भवति, 'तम्हा अविमणे वीरे' तम्हा कारणा विगतो मणो जस्स स भवति विगतमणो, जं भणितं–अरतिसोगभयं समावण्णो, ण विमणो अविमणो, वीरो पुव्वभणितो, अविमणत्तातो य सारते सहिते समिते, अच्चत्थं रतो सुआरतो, सारतो तवे धम्मे वेरग्गे अप्पमाए य णाणातितिए समितिगुत्तीसु य, अत्थि पुण कोयि दव्वाययणं अजहित्ता आवीलेति जहा भरहो, तवणियमसीलभावणा वीसं जिणणाम हेतू य, एतेसु रतो, णीलवणगतो व मातंगो० पमुदितो तवे सदा आवीलए, ण अड्डवसट्टो भविज्ज पराभियोगेण वा, सहितो णाणातितिएणं, समितो समीतीहिं 'सदा' इति जावज्जीवं, जते इति आतोवदेसो, एवं पुणो २ आवीलए हेचा उवसमं अविमणे सारते, ॥१४९॥

प्रत
वृत्यंक
[१३७-१३९]

दीप
अनुक्रम
[१५०-१५२]

स एव अत्थो अणेगसो अधिज्जमाणो पिट्ठपेसणो निरत्थगो ?, भण्णति, '**दुरणुचरो मग्गो वीराणं**' पच्छा चरति अणुचरतीति दुक्खं अणुचरतीति दुरणुचरो, मग्गो पंथो, णिच्चं, अप्पणिज्जे य गुरुसु य बहुवयणं तेण वीराणं, सामिस्स मग्गो, सव्वतित्थगराणं वा, केण दुरणुचरो ?—जेण अणियट्टगामी, ते जहा रोचिते विसए छड्डित्ता पुणो न आकंखंति, वीरा तवणियमसंजमेसु ण विसीतंति अणियट्टकामी, तस्सिस्साथि वीरा एव, जतो य एसो दुरणुचरो वीरपुरिसअक्कंतो मग्गो तेण पुणो २ सिस्सोच्छाहणं कीरति–'आवीलए', एवमादि, '**विगिंच मंससोणितं**' विगिंच—उज्झ, किं आयुधेणं छिंदिय विगिंचियव्वं ?, मंसं सोणितं उदाहु सिरादीणि, ण सोणितमेव केवलं, ण तु मंसं, तं च ण, एवं सरीराधिट्ठाणा धम्मस्स, सुततवेण पुव्वोवचितं विगिंच, णिब्बलं आहारए जेण सोणित उवचयमेव ण भवति, सोणिते य अवचिते तप्पुवगत्ता प्रायेण मंसं अवचितमेव भवति, तस्स अवचएण मेतो अव चिज्जति जाव सुक्कं, अंतो य आहारो भवति, जो एवं आवीलेति नाणातिजुत्ताणं वीराणं मग्गं पडिवण्णो '**एस पुरिसो दविए वीरो**' एसो जो भणितो पुरि सयणा पुरिसो दवियो—रागदोसविमुक्को वीरो पुव्वभणितो, एस चेव आदाणिओ, आदेयो आदाणिओ, जं भणितं गेज्झो, अहवा जो हितो, आयहितो आताणियो, अहवा आदाणाणि नाणादीणि, आदाणप्पयोजणी आदाणट्ठिओ वा, विविधं अक्खाओ वियाहितो, सो पुरिसो सो दवितो सो वीरो सो आदाणिओ, कतरो ?, '**जे धुणाति समुस्सयं**' दव्वसमुस्सओ सरीरं, भावे कोहमाणमायालोभा, सव्वो वा मोहो, भणिता अप्पमत्ता, विवरीता पमत्ता, केयि आताणियावि भवित्ता वसित्ता बंभचेरेणं आधार एव तत्थ केयि आचारमंतो भवित्ता '**णेत्तेहिं पलिछिण्णेहिं**' णयंतीति णेताणि चक्खूमादीणि, कहं चक्खुवज्जाणि णेताणि ?, णणु मदेणाविंधति गंधेण पिवीलिया गुलमभिसंसप्पति रसो तत्थेव, फरिसो अंधो रज्जुए गच्छति, पातफरि- ॥१५०॥

प्रत
वृत्यंक
[१३७-
१३९]

दीप
अनुक्रम
[१५०-
१५२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१५१॥

आदान श्रोतआदि

सेण वा पहे गच्छति, भावे नाणादीणि मोक्खं णयंतीति, जेसिं संजतत्ते दव्वे ताणि पोताणि छिण्णाति आसी, जं भणितं जिताणि, त एव केयि परीसहोदया भावणितेहिं छिण्णेहिं किन्नु सो तेहिं मुच्छित्ता जाव अज्झोववण्णा 'आताणसोयगढिता' आताणं– कम्मं संसारबीयभूयं तस्स सोताणि रागातीणि तिण्णि, दोहि आगलितो बालो, 'अवोच्छिन्नबंधणो' दव्वबंधणं सयणधणादि, भावे 'रागातीया तिन्नि०'गाहा, 'अणभिक्कंतसंजोए' अभिमुहं कंतो अभिक्कंतो ण अभिक्कंतो अणभिक्कंतो जं जोगो दव्वे, धणध-अमित्तबंधवा खित्तं दुपयाति कुवियदुस्साति अह दव्वे संजोगो, रागदोसादीयो भावे, सो य मज्झिमे पच्छिमे वा वये अभिक्कमिज्जति, णाभिक्कंतो अणभिक्कंतो 'अंधतमस्सऽवियाणतो' अंधस्स तमस्स, तदिति जंति वसित्ता बंभचेरंसि आताणसोयगढिते अण-भिक्कंतसंजोए पुणरवि गिहे आवसति, एतं तस्स अवियाणणा, तत्थ अवाया भवंति, पढिज्जइ य 'तमंसि अवियाणतो' तमंसि तमपडलमोहपलिच्छन्नस्स असंजमअवाए अयाणगस्स, एवं तस्स उप्पथप्रतिपन्नस्स तित्थगरआणाए अवद्रुमाणस्स बहुस्सुयस्सावि संतस्स 'आणाए लंभो णत्थित्ति बेमि' आणा सुतं तस्स लंभो–णिज्जरा ततो मोक्खो, से तस्स आणालंभो नत्थि, अहवा 'सवणे नाणे विन्नाणे०'उत्तरुत्तरलंभो, सो तस्स बंभचरणे अणभिक्कंतसंजोगस्स णत्थि, भणिता प्रमादिनो, तव्विवरीआ अप्रमादिनो, तिसुवि कालेसु विसयणिरासा, जतो सुत्तं 'जस्स णत्थि पुरे पच्छा मज्झे वा' जस्स जओ जेसिं वा पुरा णाम पुव्वं सुत्तेसु विसएसु पुव्वतरपुव्वकीलिताणुस्सरणं, पच्छा णाम एस्सकाले सुए परुं परारिं वा भोक्खामि, परलोइए दिव्वमाणुस्सेहिं णिदाणं करेति, जस्स अतिक्कंते अणागते वा काले विसयासंसा णत्थि तस्स परमणिरुद्धत्ता वट्टमाणकाले मज्झे कुतो सिया?, न सिया विसयासेत्ति-वक्कसेसो 'से हु पण्णाणमंते बुद्धे' म इति विसयनिरासो हु पादपूरणे पण्णा अस्स अत्थीति णिच्छयणयस्स लोगो पण्णाण- ॥१५१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१३७-
१३९]

दीप
अनुक्रम
[१५०-
१५२]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१५२॥

मंतो सो सम्मद्दिट्ठी, पुढो य जो 'आरंभोवरतो' आरंभो णाम असंजमो ततो उवरतो, अहवा विसयकसायनिमित्तं आरंभे पव- सम्यक्
त्तति, तं जस्स णत्थि पुरे पुच्छा वा सो पाय आरंभाओ उवरमति, एतदेव य तस्स सम्मत्तं 'एतं च सम्मं पासह' उभेवि पेक्खध- पश्यता
उवलभधा, जं वुत्तं वुत्तमाणं वा, तंजहा 'जेण बंधं वधं घोरं परितावं च दारुणं' बंधा णिगलादीहिं, वधो कसातिएहिं, घोरं-
दारुणं, जं भणितं निरविक्खं, समंता तावो परितावो, बंधवहाणं एगदेसेऽवि तावो भवति, परितावो तु सव्वसरीरदाहातिसु, जतो
मरणंपि भविज्जा, अहवा वधो तालणे मालणे य, तालणे ताव दंडेहि तालितो, वहितो वा, परितावो तु माणस एव, वयंति य-
'किं एवं परितप्पसि' तं आरंभअसंवुडो सो ताइं करेंति जेण बंधं वहं घोरं०, तं च सोतं बज्झं अब्भंतरं च, बाहिरं मातापितादि
अब्भितरं 'रागादियाण' गाहा, बज्झसोयणिमित्तमेव अंतो सोताणि अयं कुणति, तं 'पलिछिंदियाणं' जं भणितं तोडित्ता,
'णिक्कम्मदंसि'त्ति णत्थि अस्स कम्मं तहिं वा कम्मं णिक्कम्मा, को सो ?, मोक्खो, तं णिक्कम्माणं पश्यतीति, ण मोक्खं अंतरेण
अन्नं किंचि पस्सइ, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तम्मेत्तं तस्स हेऊ य पस्सति, जं भणितं साधिति, लोगे विस्तारो भवति, ण एसो किंचि
अण्णं पस्सति, कोऽभिप्पायो ?-दिट्ठेऽवि अणातरो, एवं सो निक्कम्मं चेव एक्कं पेक्खति तस्साहणाणि य, सेसं पेक्खंतोऽवि ण
पेक्खति, णिक्कम्मंसो वा जया भवति तता पेक्खति, जं भणितं-खीणावरणो, तं कत्थ पासति ? कत्थ वा णिक्कम्मादरिसी भवति ?-
'इह मच्चिएसु' मरंतीति मच्चुया, मणुस्सेसु चेव एगे सुणिक्कम्मदरिसी भवति, इह वा प्रवचने, सो एवं णिक्कम्मदरिसी कम्मुणा
सफलं दट्ठुं, जं भणितं अवंझं, 'पावाणं च खलु कम्माणं पुव्विं दुच्चिन्नाणं०' अहवा सुहाणि सुहमेव फलंति, असुभाणि असुभ-
मेव 'ततो' इति कम्मअस्स वा 'णिज्जाति' विरमति, वेदेइ जेण सो वेदो-सुत्तं, वेदं विदंति वेदवी, भणितं सम्मत्तं, इदाणिं ॥१५२॥

प्रत
वृत्यंक
[१३७-
१३९]

दीप
अनुक्रम
[१५०-
१५२]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१५३॥

युद्धवीरादि

तप्फलं–'जे खलु भो! धीरा' 'जे'त्ति णिद्देसे खलु विसेसणे, किं विसेसयति ?, जुद्धवीरा तवोवीरा ' भो !' इति आमंतेण, समिता ईरियातितिहिं सहिता णाणादीहिं 'सव्वता' सव्वकालं जया समितिगुत्तीसु, संथदं णाम संथडं, जं भणितं–निरंतरं, नित्य-कालोवउत्ता, पुव्वावरवित्थरदंसणा वा संथडदंसिणो, अप्पणा उवरता पावकम्मेहिं आतोवरता, जं भणितं न पराभियोगेणं ण वा इस्सरपुरिसवसा 'अहा तहा लोगं उवेहमाणो' जहावट्ठितं कम्मलोगं भवलोगं उविक्खमाणा, जं भणितं अहातच्चं पेक्खन्ताणं सम्मत्तपभावणत्थमेव 'पाईणं जाव उडीणं' रीयंतामिति वाक्यशेषः, अहवा सव्वासु इति सव्वंमि विपरिचिट्ठंसु, इति पदरिसणत्थं, एवं अणियवयणं सच्चं, अहवा सच्चोत्ति संजमो वुत्तो, तित्थगरभासियं वा सम्मत्तं वा भवे सच्चं, विसेसेणं अतिसएण वा चिट्ठिंसु विपरिचिट्ठंसु, अतीतकालग्गहणा तिकाला सूयिता, अतीतकाले अणंता विपरिचिट्ठिंसु वट्टमाणे संखिज्ञा पंचसु भरहेसु पंचसु एवरएसु पंचसु महाविदेहेसु, अणागतेऽवि काले परिचिट्ठिस्संति, मा तुम चिंतेहि अहं एक्को दुक्करं तवसंजमं करेमित्ति, एवं तेसिं भगवंताणं गुणजाइयाणं साहिस्सामो, जं भणितं अक्खाइस्सामो, अहवा साहिस्सामि पसंसिस्सामि परूविस्सामि, किंच–न सम्म-इंसणं मुइत्ता अन्नं लोगेऽवि कज्जं निच्चं अत्थि, सम्मं नाणं च तवसंजमे विरायति पावकम्माइं, संजमवीरियजुत्तो वा वीरो विरतो वा पावातो, तेण वीरा समिता सहिता जता पुव्वभणिता संथडं णाम निरंतरं, दव्वादि दव्वओ णं केवली सव्वदव्वाइं जाव सव्वभावे सेसं तहेव, जाव अधा तहा, तेसिं एवंगुणजातीयाणं, अणेगे एगादेसेणं पुच्छा 'किमत्थि उवाही पासगस्स !' किमिति परि-पण्हे, जहभणितेसु समत्तातिगुणेसु वट्टमाणस्स उवही द्रव्यभावे पासगो–जाणगो, 'अह णत्थि' पुच्छावागरणं ण विज्जति जेण पुणो संसरेज्ञा इति, गतो अणुगमो, इदाणिं णया, 'णायम्मि गिण्हियव्वे अगिण्हियव्वम्मि चेव अत्थम्मि,' गाहा 'सव्वेसिंपि ॥१५३॥

प्रत
वृत्यंक
[१४०-१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१५४॥

उद्देशार्थाधि

णयाणं' गाहा ॥ एयाओ गाहाओ पढितसिद्धाओ चेव ॥ समाप्तं चतुर्थमध्ययनं सम्यक्त्वाख्यं समाप्तम् ॥

अज्झयणसंबंधो–सम्मत्तं वण्णितं, तं चेव सव्वलोगसारं, तप्पुव्वयाणि य नाणचरित्ताइं, तत्थ णाणं तदंतग्गतमेव, इदाणिं चरित्तं वण्णिज्जति, अहवा जेण सम्मत्तचरित्ता वण्णिज्जंति तदेव नाणं, सुत्तसंबंधो 'अग्घाति नाणं वीराणं सहिताणं' चरित्तं गहितं, चरित्तपालणत्थमेव अचरित्तीणं इह दोसा वण्णिज्जंति, तंजहा–'आवंती केआवंती', भणितो संबंधो, दारकमं दरिसित्ता अत्थाधिगारो दुविहो–उद्देसत्थाहिगारो अज्झयणत्थाहिगारो य, तत्थ अज्झयणत्थाहिगारो लोयसारता विचिंतियव्वा, उद्देसत्थाहिगारो अणेगविहो, पढमे हिंसारंभं वण्णति, यमत्थं च हिंसादीणि कम्माणि करेति ते विसए वण्णेति, इट्ठाणिट्ठे रागदोसे हेऊ, विसयणिमित्तमेव एगेसिं एगचरियं वण्णेति तिन्नि अहिगारा, बितिए 'विरओ मुणी भवति'त्ति, कुतो विरतो?, हिंसाविसयादिएहिं अप्पसत्थेगचरित्ताओ य, तंजहा–एत्थोवरए तज्झोसमाणे अविरतवादी परिग्गहितो य, एतदेव एतेसिं महब्भयं, ततिए एसो अपरिग्गहोत्ति, तंजहा–आवंती एतेसु चेव अपरिग्गहावंती णिच्छिन्नकामभोगत्ति मुणी से भवे अकामे अझंझे, चउत्थे अव्वत्तस्सेगचरस्स पच्चवाया दरिसिया, तंजहा–दुज्जातं दुप्परकंतं, पंचमे हरतोवमा 'से नेमि निसज्जताविं हरतो तवसंजमगुत्ते'त्ति ते पास सव्वतो गुत्ते, 'णिस्संगत्त'त्ति 'सड्ढिस्स णं समणुण्णस्स संपव्वयमाणस्स' एवमादि, छट्ठे उम्मग्गो वज्जेयव्वो, तंजहा–आणाए अणुवट्ठिता, 'रागदोसे'त्ति उड्ढसोता अधसोता तिरियंसोता वियाहिता, णामनिप्फण्णे दुविहो णिक्खेवो–आदाणपदणामणिक्खेवो य गुणणिप्फण्णणामणिक्खेवो य, आदाणपदेणं आवंती वुच्चति, तेण ण अत्थाधिगारो, गुणणिप्फण्णे लोगसारविजयत्ति णामं तेण लोगसारविजएहिं अहिगारो, लोगस्स चउव्विहो णिक्खेवो पुव्वं भणितो, सारो चउव्विहो णामादि, तत्थ दव्वसारो सामित्तकरणअधियरणेसु ॥१५४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

पंचम-अध्ययनं 'लोक्सार' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१४०-
१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-
१५८]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१५५॥

सारादि

एगत्तपुहुत्तेण, सामित्ते एगत्ते घतस्स मंडो सारो, बहुत्ते रुक्खाणं सारो, करणे मणिसारेणाभरणेण सोभती राया, बहुत्ते मणिसारेहिं सोभति, अहिगरणे एगत्ते संथडदहिंमि कुसुमं उट्ठितं, बहुत्वे संसारेसु कुलेसु दिव्वं पडति, अहवा दव्वसारे इमा गाहा सत्तहिं पदेहिं अणुगंतव्वा 'सवस्सथूलभारिग' (२३९-१९७) पुव्वद्धस्स पच्छिमद्धेणं विभासा, तंजहा-सव्वस्सं जहा कोडिसारं कुलं, थुल्लसारं भेंडं एरंडकट्ठं वा, जस्स वा जं सरीरं थुल्लं ण किंचि विण्णाणं अत्थि सो थुल्लसार एव, केवलं भारसारो पत्थरो वइराति, मज्झसारो खइरो, देससारो वंझो(अंबो) जं भणितं-तयासारो, पहाणसारो जत्थ पहाणो सच्चित्ताचित्तमीसाणं दव्वाणं, सचित्ते पहाणो दुपयाणं भगवं तित्थगरो तदणंतरं चक्की तस्याप्यनन्तरं वासुदेवबलदेवा, चतुष्पदाणं सीहो, अपदाणं चंदणरुक्खो, अचित्ताणं वेरुलिओ, मीसयाणं स एव आभरणभूसितो गिहवासे तित्थगरो, सरीराणं ओरालियं सारभूतं, जेण सिज्झति, कसिणं वा सुहं अहिगच्छिज्जइ, भावे 'फलसाहणता'गाहा (२४०-१९७) भावे फलसाहणता सारभूता, तत्थ फले कम्मक्खयो, कम्मक्खयस्स फलं सिद्धी अव्वाबाहसुहं, तस्स 'साहणता नाणदंसण' अद्धगाहा, चउसुवि एगत्तं, कम्हा भावसारेण अहियारो ?, भण्णति-'लोयम्मि कुसमएसु य' गाहा (२४१-१९७) लोगो ताव ब्रवीति-तिण्हं आश्रमाणां गिहाश्रम एव प्रधानो, सो सेसअस्समेहिं उवजीविज्जइ, ततो य तेसिं उप्पत्ती, कुसमया तिण्णि तिसट्ठा कामपरिग्गहकलंकलग्गा, संखा ताव पत्ताण उवभोगो, तावसावि कामे सेवंति, भिक्खुगा विहाराहारसरीरसक्कारकलंकलग्गा. तहावि कालदोसेण ते पुज्जंति, दोहिं ठाणेहिं दुस्समं ओगाढं जाणिज्जा, तंजहा-अधम्मे धम्मसण्णा० असाहू पुज्जंति' अतो ते निस्सारत्ता ण आश्रयितव्याः, सारो तु आश्रयितव्य, सो इह परत्थ य हितो, सो य नाणदंसणतवचरणगुणा हितट्ठाए, जतो एवं तेण 'जहिऊण संकं' गाहा (२४२-१९७) संकंति वा कंखंति वा, ॥१५५॥

पंचम-अध्ययने प्रथम-उद्देशकः 'एकचर' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[१४०-१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१५६॥

तत्त्वार्थश्रद्धादि

अहवा संगपदं तं जहिऊण इमं सारपदं गहेयव्वं, किं तं ?, सम्मत्तं चरित्तं च, तत्ताणं अत्थाणं सद्दहणं, तत्तं जीवादि, जेण भण्णति–जीवत्थिय परमपदं, अजीवावि अत्थ परमपयं, एवं नव पयत्था, चरित्तंपि संवरपदत्थे पविसति, तत्थ जयणाए संवरो भवति, रागदोसवज्जणे जतंति, जहा 'सद्देसु य भद्दयपावएसु जाव फासेसु' आह–भणितं भगवया भावसारो चउव्विहो, तं किं एयाणि तुल्याणि अह एतेसिंपि किंपि सारभूतं अत्थि ?, अतो पुच्छा–'लोगस्स य को सारो' गाहा (२४३–१९८) वागरणगाहा (२४४–१९८) सुत्तेणेव–लोगस्स धम्मो सारो, कतरो ?, जइणो, तस्स विण्णाणं सारो, जेण णज्जति सेसं कंठयं तत्थ उत्तरुत्तरसारतो 'कम्मविवेगो असरीरया य' गाहा, भणितो सारो, इदाणिं विजतो वण्यंते, जं भणितं–मग्गणा, सो जहा लोगविजये, गतो णामनिप्फण्णो। इदाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्तीए, सावि जत्थ 'इहमेगेसिं एगचरिया भवति' 'चारो चरिया वयणं' गाहा, चारोत्ति वा चरियत्ति वा एगट्ठा, वंजणणाणत्तं, तेण चारे णिक्खित्ते चरिया णिक्खित्ता एव भवति, चारो छव्विहो–णामाति, दव्वे वतिरित्तो चारो अणेगविहो, तत्थ जले थले वा दारुसंकमो कीरति, थले णगरदुवारविसमेसु सगडरथमादिया दव्वचारा, जले संकमो कीरति, फलएण वा रज्जूएण वा णावाए वा चरति, खेत्ते जावइयं खेत्तं चरंति, काले जावतिएण वा कालेणं, भावचारो पसत्थो अप्पसत्थो य, 'भावम्मि नाणदंसण' अद्धगाहा (२४६–२०२) अप्पसत्थो अन्नउत्थियगिहत्थाणं, पसत्थो साहूणं 'लोगे चउविहम्मि' गाहा (२४७–२०३) चउव्विहो कसायलोगो, तत्थ कहं चरियव्वं साहुणा ?, 'होतितित्ति(धिई) अहिगारो' अक्कुस्समाणेण वा आहणिज्जमाणेण वा ण रुस्सियव्वं, ण माणो कत्तव्यो, अलाभपरीसहेण वा बाहिज्जमाणेण ण माइट्ठाणेण ओभासियव्वं, अन्नउत्थियपूयाओ वा दट्ठुं ण तासु मुच्छियव्वं, एवं सव्वत्थ धिती भावितव्वा, नाणचरणेसु उज्जमियव्वं, तवोकिलंतेण धिती ॥१५६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१४०-१४५]

दीप अनुक्रम [१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१५७॥

लोगविपरामर्शादि

कायव्वा, हिंसातिसु पावकम्मेसु उवरती कायव्वा, अणियतवासिणा भवितव्वं, हरतभूतेण परतित्थिएहिं चोइज्जमाणेण अक्खोभेण नाणंतरादिसु णिकंखितातिणा भवितव्वं, सारपदजुत्तेण भवित्ता उम्मग्गा वज्जेयव्वा, पिंडत्थो रागदोसविमुक्केण भवितव्वं, 'आवंती केयावंती' अभिज्ञत्ताए जावति, असंजता इति वुत्तं भवति, 'केआवंते'त्ति जावतिया तीतानागतवट्टमाणा केयि असंजता मणुस्सा सव्वजीवा वा 'लोगंसि विप्परामुसंति' लोए सव्वलोए वा परामुसिज्जंति, लोगे वा छकायलोए परामुसंति, लोए वा गिहत्थअन्नउत्थियलोए विविहं परामुसंति, जं भणितं–घातंति, अहवा परामुसणं आरंभो, जं भणियं–एतेसु चेव आरभति, एत्थ सक्खी भदंतनागार्जुनाः, पढंति–'जावंति केयि लोए छक्कायं समारभंति' अतो परामुसणं आरंभो, तत्थ आरंभमाणा केयि केयि संघातं जुंजंति, केयि परिताविज्जंति, केइ उद्दविज्जंति, जोगतिगकरणतिगेण, ते पुण समासओ 'अट्ठाए वा' अर्थधर्म्मकामनिमित्तं पुढविं समारभंति, करिसगादि, धम्मणिमित्तं सोयि मट्टियाति कामनिमित्तं मुरवादि, एवं छसु काएसु जोएयव्वं, सरणिपाणियं दगसोगरियादि 'ण्हाणं मदद्पगरं०'२, इट्टियागार लोहागार अग्गिहोओ वा तेऊ ३, एवं वाउवणप्फतितसेसु, एवं मुसावातादि ४, आतपरउभयहेतुं अट्ठा, सेसं अणट्ठाए, केवलं वेराभागी भवति, ते एवं अट्ठाए अणट्ठाए य आरंभप्रवृत्त्या जोगत्रिककरणत्रिकेण 'एतेसु चेव विपरामुसंति' एतेसुत्ति एतेसु छसु जीवनिकाएसु विपरामुसंति, जं भणितं आरभंति, अहवा एतेसु चेव उववज्जित्तु अप्पाणं विविधेहिं विपरामुसावेंति, जं वा छकायवहोचितं कम्मं, तेसु चेव काएसु उववज्जित्ता तेहिं पगारेहिं उद्दविज्जमाणा परामुसंति य, दुक्खं भवति, सो किं एवंविहाणि कम्माणि करेंति जाइं काएहिं विपचंति ?, ततो वुच्चति–'गुरू से कामा' गुरु इव दुच्चया दुक्खं अप्पसत्थेहिं लंघिज्जंति, जो जस्स अणतिक्कमणिज्जो सो तस्स गुरू, मारियाउत्ति वा वुच्चति, कामा– ॥१५७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [१४०-१४५]

दीप अनुक्रम [१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१५८॥

कामगुरुत्वादि

सद्दादि ते तस्स दुच्चया भवंति जेण तदत्थं काएसु पवत्तति, जतो य सो गुरुकामो भवति तम्हा सो तन्निमित्तं पावं उवचिणाति, पावोदया 'ततो से माइस्स अंतो' तत इति तम्हा 'मां मारयते यस्मान्ममारिभूतश्च मारयति वाऽन्तो अनुसमयं मरणादपि कर्म्म भवो वा भवेन्मारः ॥ १ ॥' अंतो इति अभ्यन्तरे, जतो य सो मारस्स अंतो वट्टति, ततो इति तम्हा 'से'त्ति निद्देसे, कस्स ?, तस्स कामगुरुस्स, दूरे णिव्वाणस्स, अहवा जो छक्कायसमारंभे वट्टति तप्पडिपक्खो जस्स अगुरू कामा, सो किं संसारस्स अंतो ?, पेहित्ता पुच्छा,'णेव से अंतो' अब्भिंतरतो, दूरे, णिव्वाणे जेण चरित्तं लद्धं होति ण सो कम्मसंसारस्स अंतो वट्टति, जम्हा बारसविहे कसाए दूरेति, दूरेवि ण भवति, जेण उक्कोसेण सत्तट्ठ भवग्गहणाइ नाइक्कमति, जंबुस्वामी वा पुच्छति–जेण एतं अज्झयणं आयारो वा पणीतं सो तहिं काले संसारस्स किं अंतो बाहिं वा आसी ?, ततो भणति–'णेव सो अंतो, णेव सो बाहिं' अंतो ण भवति जेण लद्धिघातीणि चत्तारि खीणाणि, जेण केवलिकम्माइं चत्तारि चरिमसमयावेक्खीणि भवंति तेण दूरे ण भवति, एवं संसारस्स णेव अंतो णेव दूरेण वट्टमाणो 'सो पासति फुसियमिव' स इति भगवं फुसितंति उदयबिन्दु कुसग्गे लंबति अण्णस्स अणागमे किंचि तत्थेव सुक्खति, किंचि पदुप्पडु णिवतति वातेरितं, भिसं नुण्णं पनुण्णं, पततीति पनुण्णं, णियतं अधिगं वा पतति णिपतति, तवणियमतवा णिवतति, वायतीति वातो, ईरितं–कंपितं, वातेण ईरितं वातेरितं, तथा गोणाति पुरिसेण वा एवमादि, णवि तस्स ताए अवत्थाए चिरं अवत्थाणं भवति, तस्स सुगुरुयत्ताए उवक्कमेण वा अवस्सं निवतितव्वं 'एवं बालस्स' एवमवधारणे, दोहि आगलितो बालो, जीविज्जइ जेण तं जीवितं, सोवक्कमं इतरं च, तत्थ निरुवक्कमं भगवतो तित्थगराईणं, सोवक्कमं सेसाणं, तत्थ वा सततं परमायुं, वाघातिमं तु गब्भम्मि मरति कोयी, कोयी पुण जातमित्तओ मरति, मरन्तो मारेति मातरं कोयि, ॥१५८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१४०-१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१५९॥

कोति मरंतीए समं तीए 'मंदस्स अवियाणतो' मंदो सरीरे बुद्धीए य, एक्केक्को उवचये अवचये य, इह तु भावमंदोऽवचये द्रष्टव्यः, जतो वुच्चति–'अवियाणतो' किंति ?, कूरकम्मफलविवागं, पंडियाणवि एवं सोवक्कमाणि आउगाणि, तेऽवि कुसग्गजलबिंदुउवमाए बहुयातो रातीओ णाउं सता जतंति, भणियं च–'धम्मं आयरमाणस्स, सफला जंति राइओ०' लोगोऽवि एवं जाणति–'जह जीवितं अणिच्चं०' तं च ण सम्मं णातं भवति, कहं ?, जतो–'कूराणि कम्माणि बालो' णिद्दयाणि णिरणुक्कोसाणि कूराणि हिंसाति अट्ठारसठाणाइं भिसं कुव्वमाणे, अहवा कायमाणमाणि, बालो पुव्वभणितो, तत्थ कूरकम्मनिवत्तितेण 'तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमेति' दुक्खं–कम्मं, मूढो तंमि हू(तम्मि हूओ)सो तासु तासु गतीसु उववज्ज विप्परियासमेति, तंजहा–जम्मातो मरणं, मणुस्सा णरगं, णरगावि तिरियत्तं, सुहा दुक्खं एवमादिविवज्जासं, सुहत्थीवि कूराणि कम्माणि काउं दुक्खं अणुभवति, अहवा मूढोत्ति वा बालोत्ति वा एगट्ठा, तेण दुक्खेण बाले विप्परियासो सो 'मोहेण गब्भं मरणाति एति' आदिरंतेण सहेतो मोहग्गहणा रागदोसग्गहणं, तेहिंतो कम्मं, ततो गब्भं मरणाति एति, पढंति य 'मरणादुवेति' पुव्वं मरणं पच्छा गब्भो ततो पाववुड्ढी ततो भूयो हिंसादिकूरकम्मपवत्ति ततो कम्मस्स भरो भरणा णरगदुक्खाणि, जतो वुच्चति 'एत्थ मोहे पुणो २' एत्थ मोहे'ति एत्थ कम्मसंभारे मोहे पुणो जाती पुणो मच्चू पुणो दुक्खं जाव अणादियं अणवयग्गं, अहवा 'एत्थ मोहे'त्ति एत्थ संसारे हिंडमाणस्स तासु तासु गईसु पुणो पुणो कम्मबंधो भवति, एयं संसारियं दुक्खं पेच्छिऊण एत्थ मोहे पुणो पुणो ण भविज्जामो इति 'संसयं परियाणतो' संसेतीति संसयो, सो य अण्णाणे मरणे य, तत्थ अण्णाणे दो अत्थि अस्थित्ता बुद्धिं संसयति, मरणसंसये मरणमेव, लोगेवि वत्तारो भवंति–मरणसंसये वट्टति, संदेहे वा, परिण्णा दुविहा–जाणणापरिण्णा पच्चक्खाणपरिण्णा य, तं

मंदत्वादि

॥१५९॥

प्रत
वृत्यंक
[१४०-१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१६०॥

संसारपरिज्ञादि

एयं अण्णाणसंसयं जाणणापरिण्णया परिण्णाय, कहं परियाणति ?, जहेताणि मिच्छाणाणाणि पुव्वावरविरुद्धत्ता संदेहजणयाणि काउं संसयभूयाणि चेव भवंति, जस्स य एगमवि पदं ण सम्मं उवलद्धं तस्स जहत्थमवि घुणक्खरं वा अणुवलद्धमेव भवति, तं एवं सम्मं नाणेण अण्णाणसंसयं अतत्तमिति परिणाय पच्चक्खाणपरिण्णाय परियाणिज्जा–तत्तबुद्धिं ततो पडिसेवए, मरणसंसयंपि अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा दुविहाए परिण्णाए परियाणिज्जा, जं भणितं–जाणित्ता ण करिज्जा, तं एवं दुविहमवि संसयं दुविहाए परिण्णाए परियाणित्ता संसारे परिण्णाते भवति, ‘दव्वे खित्ते काले भावे य भवे य होति संसारो। तस्स पुण हेतुभूतं संसारे कम्ममट्ठविहं ॥१॥’ तं जाणणापरिण्णाए असंदिद्धं णच्चा पच्चक्खाणपरिण्णाए सव्वं पाणाइवायं परियाणासित्ति, भणियं च–‘ममत्तं परियाणामि०’ परिण्णाओ णाम णच्चापच्चक्खायओ, संसयं परियाणतो जाणणापरिण्णाए अवियाणतो पच्चक्खाणपरिण्णाए अपडिसिद्धस्स संसारे अपरिण्णाए, जाणणापरिण्णाएण संसारो दुक्खाणि य परिण्णाताणि भवंति, पच्चक्खाणअपरिण्णाएवि ‘ण सा गती अत्थि जत्थ असौ ण उववज्जति०’अप्पच्चक्खायअस्सवदारो, एवं मुसावातं अपरिजाणतो, अदिन्नं, परिग्गहंति, मेहुणंति जेण दुरणुचरं तेणं पिहं सुत्तं आरद्धं–‘जे छेए से सागारियं ण सेवे’ ण य एयं दुकरं जं चउवयाणि अणुपालिज्जंति, वक्खति य–तदेवेगेसिं महब्भयं एवं दुकरं तं बंभचरियं जं अणुपालिज्जति, अतो भणति–‘जे छेए सागारियं ण से सेवे’ जे इति अणुदिट्ठस्स निद्देसे छेओ अणुवहओ, णत्थि से किंचि वयणिज्जं, भमं हणित्तावि पमातिएवि, अगारेहिं सह भवतीति सागारियं–मेहुणं, ससमयवण्णो वा जो उत्तमो साहूवादी वा सागारियं ण सेवति जोगत्तियकरणतिएणं, पाएणं तन्निमित्तं सेसअस्सवेहिवि पवत्तति, भणियं च–‘मूलमेतमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं०’ तं च गिहीणं कुच्छितं अतिप्पियं च, पासंडीणं कुच्छितं अतिप्पियं च, एगेसिं-

॥१६०॥

प्रत
वृत्यंक
[१४०-
१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-
१५८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१६१॥

द्वितीय-बालता

हिड्डादीणं जेण वुच्चति 'कट्टुमेव' करित्ता, एवमवधारणे, किमवधारयितव्यं ?, एवं करित्ता रहिते मेहुणसंसग्गा, अव परिवर्जने, अवयाणति, जं भणितं–ण्हवति, तं कहं तुमं एवं करेसित्ति चोदितो परेणं ण अहं एवं करोमि अवयाणति अवयाणंति वा वुच्चति, लोयसिद्धत्ता चोदितो रुस्सति, तं वा अप्पाणगं दोसं तस्स उपरि च्छुब्भति, पढिज्जइ य–'तमेवाविग्राणतो' ण अहं एतं कहंपि जाणामि, णागाजुंनीयास्तु पढंति–'जे खलु विसएसु वतिसेवित्ता नालोएति, परेणं वा पुट्ठे णिण्हवति, अहवा तं परं सएणेव दोसेण पाविट्ठतरएण वा उवलिंपिज्जा, एवं हिंसादीणिवि कट्टु मंडुक्कलियाक्कमओ व तस्स अविजाणतो 'वितिया मंदस्स बालया', अप्पमिति अवचयंमि थुल्लमिति उवचयंमि, मंदो तु दोसुवि, पगतं, भणितो तु देहमंदो, उभये वा विबलता बालया, एगा ताव तस्स बालता किच्चं सागारियंति, वितिया जं णालोएति, ण वा अकरणाए अब्भुट्ठित्ता पायच्छित्तं पडिवज्जति, णिण्हवतो वा अलियवेरमणभंगा वितिया, जो पुण सम्मं आलोएति जाव अकरणाए अब्भुट्ठेति तस्स एगा बालया भवति, अहवेतं विसयणिमित्तं आसेविज्जति, तेवि ण ते विसए 'लद्धो हुरत्थाए' लद्धो णामं पडुप्पन्नो हुरत्था णाम देसीभासातो बहिद्धा, लद्धेवि ताव किं पुण अलद्धेवि ? जहा चित्तो खुड्डए वा, कस्स बहिद्धा ?, धम्मस्स, णवि तं आसेवंतस्स धम्मो भवति, तेण एते धम्मोवरोधगत्तिकाउं साहू चरित्तातो चित्ताओ वा बाहिं कुज्जा, 'पडिलेहा' एते एवंविधा पच्चुवाइत्ति विक्खाए आगमित्ता 'आणविज्ज' तित्थगरआणाए आणविज्जा 'अणासेवयाएत्ति बेमि' अणासेवणं, जं भणियं—तं अकरणं, को दोसो विसयासेवणाएत्ति ?, अतो वुच्चति–'पासह एगे रूवेसु गिद्धे' ओहाणुप्पेहिणो इतरे वा वुच्चंति पासध, एगेत्ति ण सव्वे, रूवग्गहणा सेसिंदियगाण गहणं, रूव तत्थ पहाणं हारितं च तेण तग्गहणं, अहवा रूव इति सव्वविसयाणं मुत्तिमत्तं अक्खातं भवति, गिद्धा–मुच्छिता,

॥१६१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१४०-१४५]
दीप
अनुक्रम
[१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१६२॥ | मोहावृत्तिः

समंता णिज्जमाणा परिणिज्जमाणा, इह लोगेवि महामोहा पारदारिया अकोसवहबंधपहणणाईहि य दुक्खेहिं बाहिज्जंते, पासाहि बज्झरतियेसु बज्झे परिणिज्जमाणे, अहवा विसयसोतेहिं वुज्झमाणे रागदोसबद्धे तत्थेव तत्थेव परिणिज्जमाणे, कोयि रज्जित्ता दुस्सति, पुणो रज्जति, एवं जहेणं बाहेति मोहे, जेण वा कम्मेण संसारसमुद्दे परिणिज्जंति, तंजहा–पुणो मच्चू पुणो मोहो 'एत्थ मोहे पुणो पुणो' एत्थ संसारमोहे पुणो २, जायंति, एत्थ वा संसारे भमंताणं मोहो पुणो पुणो भवति, जं भणितं–कम्मबंधो, अहवा दंसणनाणमोहे भवति, जेण तस्स तप्पच्चणीयत्तणतो लोयसारलंभो ण भवति, पढिज्जइ य–'तत्थ फासे पुणो पुणो' दुक्खा फासे एवं जाव सद्दे, तं एवंविहाणि विसयनिमित्तं दुक्खं पावंति आरंभे य पवत्तंति, जतो पढिज्जति–'आवंती केआवंती' अहवा कतरे तेसु तेसु गिद्धा आवंति जावंति केयि वुत्तं भवति, आरंभेणं जीवतीति आरंभजीवी असंजया-'आदाणं णिक्खेवो–भासुस्सग्गो' 'अद्धाणगमणाति, सव्वे पमत्तजोगा समणस्स होंति आरंभो' 'एतेसु'त्ति एतेसु छसु जीवनिकायेसु आरंभेण जीवंति तदुवरोहेण, जं भणितं असंजमेणं, जेसु अण्णे मुसावातादि अस्सवा, तेवि एसु चेव प्रायसो काएसु णिपतंति, 'एत्थवि बाल'त्ति एत्थंति एत्थं संजमे आरंभे वा परि समंता विसए लभित्ता तव्विप्पयोगे वा परितप्पति, पढिज्जइ य–'परिपच्चमाणे' णरगउववाते परियायं एति परिपच्चति, जं भणितं–अवरज्झति, रमति हिंसातिएसु पावकम्मेसु सज्जति रज्जति, तंजहा–मियव्वाए कोयि रमति, अघातेंतावि केयि रमंति, तंजहा–सुट्ठु हतो सुट्ठु मारिउत्ति, एवमादि परवयणणंदिणो, एवं अलिएवि वुच्चावेंति, चोरियंपि सति चित्ते करेंति, एवं अवत्थ विभासा, 'असरणं सरणं'ति मन्नति, जहा सो कोंकणगदारओ, विसयणिमित्तं च केयि पव्वज्जं अब्भुवेंतावि ताओ ताओ मायाओ करेंति, जत्थ सुत्तं 'इहमेगेसिं एगचरिया' इहेति इह पासंडिएसु, चरणं चरिया सा य भणिता, एगस्स बहूणं ॥१६२॥

प्रत वृत्यंक [१४०-१४५]

दीप अनुक्रम [१५३-१५८]

अप्रशस्तैकता

वा एगणिच्छयाणं चरिया, जहा चोराणं, सा दुविहा—पसत्था अप्पसत्था य, तत्थ पसत्था दव्वओ एगस्स अणेगेसिं वा रागदोसरहियत्ता एगचरिया भवति, थेरकप्पिओ कारणिओ एगो होज्जा अहव्वाणो, इहरा अणेगा, भावतो पुण तेसिं रागदोसरहियाणं, णियमा पडिमापडिवन्नो दव्वओवि भावओवि एक्को, गच्छणिग्गता भणिता, अप्पसत्थदव्वेगचरियाए आहरणं, एक्कम्मि गामे एक्को कुट्टी उड्डसरीरो छट्ठंछट्ठेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेणं तस्स गामस्स णिग्गमपहे आतवेति, बितियोवि तस्स एगचरो तस्स गामस्स अदूरसामंते गिरिगहणे आयावेति अट्ठमंअट्ठमेण, तस्स गामदुवारातात्रगस्स गामो आउट्टो वंदति आहारातीहिं णिमंतेति दुक्कारकारओत्ति, भणितं तेण–ण अहं दुक्करकारओ, गिरिणिज्झरवासी दुक्करकारओ, ततो ते गामिल्लगा तं गंतुं पूएंति आहारादीहिं, दुक्करं च परगुणा भणितुंति तंपि पूइंति, एवं तेसिं एगचरिता, अण्णे भण्णंति-एक्को दगसोयरियो अण्णेण सह समं मंतेत्ता पुव्वदेसाओ पासंडिगब्भं महुरं आगम्म तीसे दाहिणपासे नारायणकोट्ठे ठितो, छट्ठातिपारणए गोमयं मायिट्ठाणेणं भक्खयति, इत्थिसद्दं च णावलति, जति णाम कंचि वेदपारगं आलवति तंपि चिर उवासिंतो रहस्से, सेसं तु णममाणं हत्थभमुहाकंपातिएहिं, एवं कुकुडेण आगंपितो लोगो वत्थअण्णपाणातिएहिं पूएति, अण्णो य से बितिज्जओ आगम्म उत्तरिल्ले णारायणकोट्ठे ठितो, ते हिंडंता अण्णोण्णं पणमंति, अण्णोण्णस्स य एगओ एगमेगं पसंसंति, एवं ते एगचरिया, ते लोगं भक्खेत्ता, 'से बहुकोहे' अवंदिता पमादेण परेसिं वा दिज्जमाणे पसंसिज्जमाणेसु वा परेसु बहुकोहं गच्छंति, यदुक्तं भवति–पुणो पुणो कुज्झंति, एवं अवंदितो अपूयंतो वा माणं करेति, कुरुकुयादीहिं कज्जेहिं बहुमायित्तं, सव्वं एतं आहारातिलोभेण करेंति, कोहादिएहिं चेव 'बहुरतो' उवचिणन्ति कम्ममयं, बोडियमादीवी रजेण दिद्धसरीरा लोयरंजणट्ठं पंसुच्छारेसु य सुयंति, 'बहुणडे' णडेव बहुवेसे करेति, ॥१६३॥

प्रत वृत्यंक [१४०-१४५]

दीप अनुक्रम [१५३-१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१६४॥

कुची जडी शिखी मुंडी 'बहुसंकप्प'त्ति पूया आहार सग्गे य मोक्खे य पत्थेति, अहवा गिहीणं एगेसिं एगचरिया, जहा गंठिभेदाणं, तेसिंपि भाणियव्वं 'बहुकोहे जाव बहुसंकप्पे'ति, बहुं वा कुज्झति कतगकोहेणं इतरेण वा, ककं च करित्ता माणमाया जुत्ती सुवण्णगादीणं पंथे पाडेंति, सव्वं एतं लोभा, बहुरओ–बहुकम्मबंधो, बहुणडे वत्थाभरणमादिएहिं, बहुसंकप्पे पुत्तदारादिभएण बहु तावेस पाणातिसंकप्पा, एवं अन्नेसिंपि चोरचारियसत्थिछगादीणं एगचरिया विभासियव्वा, ते पुण सरिसत्ति परूविता, इह तु कुलिंगेगचरियाए अहिगारो, सो एवं एगचारी 'आसवक्की वसत्ति' आसवेसु वीसत्थो आसवक्की (वसत्ती) अहवा आसवे अणुसंचरति आसव० 'पलिच्छण्णे' 'प्रलीयते भयं येन, यच्च भूत्वा प्रलीयते। प्रलीनमुच्यते कर्म्म, भृशं लीनं यदात्मनि ॥१॥' 'उट्ठितवादं पवदमाणे' कत्थ उट्ठिता?, धम्मे, वयमवि पव्वयिता, एवं भिसं वयंति पवदमाणा, उट्ठित्तावि मोक्खगमणाए परिण्णाओ पडंति–पवतंति, लिंगत्थावि केयि नाणादीहिंतो पडंति, उट्ठितवादं वदंति, एवं ते हिंसगविसयारंभा एते संधिं अबुज्झमाणा, जहा मणुस्सेसु चेव कम्मक्खयो' भवति ण अण्णत्थ, केवलं लोगपडिवायसंकाए सए सासणे पडिसिद्धाणिवि आयरंति, जत्थ इमं सुत्तं 'मा मे केइ दक्खू' मा मे कोयि पेक्खिहिति, अतो छण्णं आसेवति, छण्णेवी उव्विग्ग एव भवति, मा मे कोवि पेक्खिहिति णिच्चुव्विग्गो 'अण्णाणपमायदोसेणं' अण्णाणाणि–कुसासणाणि सक्कमन्नादीणि, तेहिं गाढरूढतत्तभावितमतं, अहवा 'णत्थि ण णिच्चो ण कुणति०' अन्नाणमिति दंसणमोहणिज्जं गहितं, पमातग्गहणा चरित्तमोहणिज्जं, पंचविहो वा पमादो, सो एवं अण्णाणदोसा पमायदोसातो वा 'सततं मूढे' सततमिति णिच्चं, मोहो अण्णाणं दंसणमोहो वा, 'धम्मं' सुयधम्मं चरित्तधम्मं च जेण कसिणं कम्मं खविज्जति, एवं ते हिंसगविसयारंभगा एगचरियावि होंतगा धम्मं णाभियाणंति, 'अट्टापया' विसय-

बहुक्रोधादि ॥१६४॥

प्रत
वृत्यंक
[१४०-
१४५]

दीप
अनुक्रम
[१५३-
१५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥१६५॥

विद्यामोक्षादि

कसाएहिं अट्टा, पजायंतंत्ति पया, कतरे ते ?, मणुस्सा, अहवा मणुअवच्चा माणवा तेसिं आमंतणं, सेसा चरित्तलंभं प्रति अवत्थुमेव, 'कम्मअकोविता' कहं कम्मं बज्झति मुच्चति वा ?,'अणुवरत'त्ति अपडिविरता अस्सवातो 'विज्जा पलिमोक्खमाहु' परि समंता लयो एकत्ता पलिमोक्खो भवति, आहु-भणंति, भंतेहिं विसणिग्घातदिट्ठंता विज्जाये पलिमोक्खं इच्छंति, जहा संखाति, तं किं सच्चं ?, ण सच्चं, वुच्चति 'आवट्टं अणुपरियट्टंतिबेमि' भावावट्टो-संसारो तं अणुपरियट्टंति जाव अणंताइं, इति पंचमज्झयणस्स प्रथमोद्देशकः ॥

संबंधो संसाराधिगारो अणुवट्टति, स एव संसाराधिगारो अणुअट्टति, तत्थ पायसो पढमे उद्देसए गिहिणो आतीए वुत्ता, जतो एगचरियाओ आरंभकुलिंगिणो भणिता, ते सव्वेवि एते अविरतत्ता बाला, तप्पडिपक्खभूता विरता, भणितं विरतो मुणित्ति, बितिए सुतं-'आवंती केआवंती' जावंति केवि वुच्चंति एवं ब्रुवंति लोगंमि मणुस्सलोए अणारंभजीवि 'आआणा णिक्खेवे' 'भासुस्सग्गे य' गाहा, अणारंभो णाम संजमो, अणारंभजीवणसीला, एतेसु चेव छक्काएसु आरंभेण ण जीवंति, अहवा इंदियविसयकसाएसु आरंभजीवी, तव्विवरीयजीवणसीला अणारंभजीवी, जं भणितं-संजता,'एत्थोवरए'एत्थंति-एत्थं हिंसादि आरंभा, एत्थ आरुहते धम्मे तं 'जोसमाणे' जं भणितं पीतीए आसेवमाणे 'अयं संधी'ति संधणं संधी, भावसंधी कम्मविवरं णाणाईणि य 'अदक्खु'त्ति, एतं संधिं दट्ठुं झोयसतीति वट्टति, जं भणितं—सारपदमासेवमाणस्स 'जे' इति अणुदिट्ठस्स, नाणादीणि व दक्खुत्ति, एतं संधिं दट्ठुं झोसयतीति जं भणितं, सारपदमासेवमाणस्स जे इति, 'इमस्स' ओरालियस्स विग्गहो-सरीरं, ता तेयाकम्माणि तदंतग्गताणि, ण वेउव्वियआहारस्स कलहाति, वुग्गहस्स वा अयं खणेत्ति, तत्थ खेत्तकालरिजुकम्मखवणा चत्तारि ॥१६५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

पंचम-अध्ययने द्वितीय-उद्देशक: 'विरत मुनि' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१४६-
१५०]

दीप
अनुक्रम
[१५९-
१६३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१६६॥

आर्यमार्गादि

खणा इति णिव्वेसकालो, अव्विसणसीलो अण्णेसी, जं भणितं—गवेसति, एतं खणं अण्णिसित्ता किं कायव्वं ?, अतो वुचति— 'एस मग्गे आयरिए' एस इति एस णाणादितिगसारमग्गो णाणदंसणारिएहिं साहु आदितो वा वेदितो पवेदितो, एत्थ नाणादिआरियपवेइयमग्गे उट्ठितो गिहादीणि परिचइत्ता सारपदं आदाय मोक्खणिमित्तं उट्ठितो ण पमायए, पमातो पंचविहो, तत्थ चरित्तसक्खियाणि अहिंसाईणि, तत्थ अप्पोवमेण अण्णेसिंपि अहिंसा कायव्वा, तत्थ इमं सुत्तं—'जाणित्तु दुक्खं पत्तेयसायं' णच्चा दुक्खं सारीरादि, एगेगं प्रति पत्तेयं, सव्वंपि एतं सारीरातिदुक्खं पत्तेयं भवति, जं भणितं—असाधारणं, सातं णाम सुहं, अत्थोवणओ उ दट्ठव्वो सातमवि पत्तेगमेव भवति, कहं पत्तेगे सुहदुक्खे ?, जहा तव पियअप्पिये सुहदुक्खे एवं अण्णस्सावि, अतो दुक्खं अण्णस्स ण कायव्वं, तं च सातासाताणं पोग्गलक्खणं सत्ताणं भवति, अतो सुत्तं-'पुढोछंदा' छंदो णाम इच्छा, जहा कस्सयि मज्जं सुहं तदेव चऽण्णस्स असुहं, तहा खीरभोयणं कंजियपियणं वा, एवमादि,'एगस्स पिया च्छासी मासी अण्णस्स वेसरी' णाणाति भावसंधी भवति, छेदंपि सुहं मण्णति जहा गण्डुगंडभेदं, अग्गिपवेसादीणि य, तत्थ अण्णे सुहं दुक्खं मण्णंति, जहा बद्धा सुस्सूसमाणा, तहा अणिट्ठदारओ राया बज्झसाणाईणि, एवमादि दुक्खे सुहाभिसंधी, सुहे य दुक्खाभिप्पाओ पुढोछंदाणं माणवाणं, अहवा पुढोछंदाणं—पुढोसंकप्पाणं, अणिवारितच्छंदाणं, जं भणितं—बहुइच्छाणं, पुढो चेव दुक्खं भवति, किं तं ?, सम्मं अणंतसंसारियं, विरतो पुण पत्तेयं पत्तेयं सातासातं णच्चा अणारंभजीवी 'से अविहिंसमाणे' से विरते ण हिंसमाणो जहा अविहिंसमाणो तहा अवदमाणो मुसावादं जाव अपरिग्गहेमाणे इच्चेवं विरतेण आणारंभजीविणा तवो अधिट्ठायव्वो, तत्थ उवदेसो 'पुढो फासे' अहवा जति तं विरतं परीसहा फुसिज्जा तत्थ सुत्तं 'पुढो फासे विप्प०'पुट्ठो पत्तो, केण ?—सीतउण्हदंसमसगव- ॥१६६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१४६-
१५०]

दीप
अनुक्रम
[१५९-
१६३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१६७॥

समता-पर्यायादि

हातिणा परीसहातियेहिं, फासग्गहणा सेसग्गहो कतो, सेसावि परीसहा उवसग्गा परीग्गहिता भवंति, विविधपगारेहिं णोल्लए विप्पणोल्लए, 'एस समिताए परियाए वियाहिते' समगमणं समिया, पारगमणं परियाए, विविहं आहिते वियाहिते, आह–भणितं भगवया सव्वपरीसहोवसग्गाणं फरिसं समणुण्णातं, तं किं जुत्ताहारविहारस्स रोगपरीसहा फुसंति ?, जतो पुच्छा–'जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं' जे इति अणुद्दिट्ठस्सग्गहणं, ण सत्ता असत्ता, पावं चरित्तमोहणिज्जं, तं जेसिं खओवसमं न गतं ते असत्ता, हिंसादिसु वा पावकम्मेसु असत्ता, 'उदाहु' त्ति उदीरितवान् रोगा वक्खमाणा गंडि०, 'अदुवा आतंका' आसुघादिणो सूलाति 'फुसंति' पावंति वागरणं 'इति उदाहु' इति परिदरिसणे, उज्जतं आहु उदाहरितवां वीरो तित्थगरो अण्णतरो वा आयरियविसेसो, किं उदाहु ?, चरित्तमोहस्स कम्मखओवसमेणं चरित्तं लब्भति, वेयणिज्जस्स उदयेणं रोगा भवंति, ते य केवलिणोऽवि भवंति, अतो अमग्गणा एसा, ते एवं जति उद्विज्जिज्ज अतो ते फासे पुट्ठो विप्पणोल्लेज्जा, सणंकुमाररायाा दिट्ठंतो, 'ते' इति ते रोगातंके अण्णे वा परीसहोवसग्गे, विविहं पणोल्लए विप्पणोल्लए, कहं ?, ते तु उप्पण्णा संता सरीरव्वयं करिज्जा तहावि ते सोढव्वा, इमेण आलंबणेण–'से पुव्वं एतं पच्छाऽवेतं' से इति णिद्देसे, पुव्वं णाम वड्ढमाणपरिग्गहाओ, जहिं सिस्सो पण्णविज्जति ततो कालतो जं पढमं तं पुव्वतो, जं अग्गतो तं पच्छा, तवचरणआरंभकालाओ वा, तहा रोगातंकादयः काया वा, अहवा पुव्वं असंजतत्तं पच्छा संजतत्तं, तहा पुव्वे पच्छिमे वा वये 'एतं' ति ओरालियं, भिदुरस्स भावो भेउरधम्मं, ण भिज्जमाणं–कतोयिवि भेदं ण देति, विविहं धंसति विद्धंसति, विद्धंसणधम्मं अभिज्जमाणं जिण्णसगडं विद्धंसति, रुक्खं पत्तं, साडो वा सडवणम्मि, ऊसाणुगतं कुड्डं वा, पडणधम्मं अवस्सं एतेण मएण अमतेण वा पडियव्वं, आदियंतत्ता अधुवं—अणियतं, ण सासतं भवतीति असासतं, इट्ठाहाराओ चिज्जति

॥१६७॥

प्रत
वृत्यंक
[१४६-
१५०]

दीप
अनुक्रम
[१५९-
१६३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥१६८॥

चयापचयादि

तदभावा अवचिज्जति अतो चयावचयियं, अहवा जाव चत्तालीसगो ताव चिज्जति, ततो परेण अवचिज्जति, अतो चयावचयियं, अहवा गब्भकोमारजोव्वणातीएहिं विविधेहिं परिणामविसेसेहिं परिणामसभावं विपरिणामधम्मं 'पस्सध एतं' पस्सह, जं भणितं-तं पुव्वंपि एतं पच्छाऽवेतं जाव विप्परिणामधम्मी, एवं दट्टूण भिज्जमाणे वा जाव विप्परिणममाणे वा ण संगो भवति, अहवा सुत्तविभागो कीरति-'पस्सध एतं रूवसंधिं' पस्सहेति बुज्झह एतं जं उवकमे 'रूव'मिति सव्वेंदियावड्डाणं सरीरं, रूवेण संधिं २, कारणे कज्जुवयारो, तेण अणिच्चेण रूवेण नाणाति भावसंधी भवति, वेरग्गपुव्वगो वा चरित्तसंधी भवति, संगतं सम्मं वा उपेक्खमाणस्स, किमिति ?,'अणिच्चं खलु जाणिज्जा''एगस्सायतणरतस्स' आयरंति तमिति आययणं, दव्वे सभादि भावे नाणातीणि, रागदोसरहियत्ता एगो, एगस्स आययणं चरित्तं वेरग्गं वा, तत्थ दव्वतो एगस्स अणेगाणं वा, भावतो एगस्सेव, एगायतणरतो, 'इह विप्पमुक्कस्स' इह सरीरातिममीकारविप्पमुक्कस्स, इह च प्रवचने एवं विप्रमुक्तस्य, 'णत्थि मग्गो' णत्थि-न विज्जति, णरगातिगतिं जो जेण पावेण गच्छति सो तस्स मग्गो भवति, सो तु असरीरत्ता अकम्मत्ता य ण संसारगतीसु गच्छति अतो णत्थि मग्गो 'विरतस्सत्तिबेमि' विरतो मुणित्ति जं भणितं तं दरिसितं। इदाणिं अविरतो विरतवादी पारिग्गहिओ वुच्चति, तंजहा-'आवंती केयावंती' जावंती केयी 'लोगे परिग्गहावंती' ते एवंविहेण परिग्गहेण परिग्गहवंता वुच्चंति, तंजहा-'से अप्पं वा बहुं वा' तत्थ अप्पं बहुं वा भावो गहितो, अणुं वा थूलं वा दव्वं गहितं, एत्थ भंगा-दव्वओ णाम एगं अप्पं णो भावतो, भावतो णाम०, एवं चत्तारि भंगा, तत्थ दव्वतो अप्पं ण भावतो वइरं, अग्घं प्रति महंतं भवति, बितियभंगो तिणभारो एरंडकट्ठभारो वा, दव्वओ भावओ य अप्पं कवड्डगादि, उभयतो अणप्पं महग्घं थूलं च जहा गोसीसचंदणक्खोडी हरिचंदण-

॥१६८॥

प्रत वृत्यंक [१४६-१५०]

दीप अनुक्रम [१५९-१६३]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥१६९॥

परिग्रह-वर्जनादि

क्खोडी वा, सेयचंदणं हरिचन्दणं भण्णति, सव्वं चेतं समासतो चेतणं अचेतणं च, अहवा परिग्गहो चउव्विहो, तंजहा-दव्वओ क्षेत्रओ कालओ भावओ, एतेसु चेव छसु जीवनिकाएसु, अहवा अप्पबहुमुल्लचित्तमंतमचित्तेसु मुच्छणा परिग्गहवंतो भवंति, जइ चेव अविरतो विरतो वा दव्वायाणादी परिगेण्हंतो परिग्गहवां भवति तहा सेसेसुवि वतेसु एगदेसावराधा सव्वावराधी भवति, अणिवारितअस्सवातो, आह-जइ अप्पबहुअणुथूलचेयणाचेयणदव्वआदाणातो परिग्गहो भवति तेण जे इमे सरीरमत्तपरीग्गहा पाणिपुडभोइणो ते णाम अपरिग्गहा, तंजहा-उडुंडगबोडियासरक्खमादि, तेसिं अप्पादिपरिग्गहवियप्पा णत्थि, तं च अपरिग्गहं दट्ठुं सेसाणिवि वयाणि तेसिं भविस्संति, वयित्ते य संजमो, ततो मोक्खो, तं च ण भवति, जम्हा 'एतदेवेगेसिं' महब्भयं भवति जे बोडिया आउक्काइयरसगाति वहेंति तेसिं तदेव सरीरं महब्भयं भवति, जेविय आउक्कायउद्देसियादि परिगिण्हंति जाव निज्झाइणो तेऽवि अपडिलेहियं भुंजंति, अपडिलेहिए य ठाणादीणि करेंति, अहवा जाणणा पच्चक्खाणपरिण्णा य णत्थि, तेसिं दुविहाए परिण्णाए अपरिण्णयाणं मिच्छादंसणा अचरित्ताओ य 'एतदेव एगेसिं' एतदेव शरीरं केसिंचि अविरताणं विरतवादीणं मुच्छापरिग्गहो महंतो कम्मबंधो य दुग्गतिगमणाय भवति, किंच-जति ताव सरीरमित्तपरिग्गहाओ मम हत्थो मम पादो मम शरीरंति महब्भयं भवति, किं पुण जे पासंडिणो गामखित्तविहारावसहे य परिगिण्हंति?, 'लोगवित्तं च णं उवेहाए' तत्थ लोगो-गिहीणो, तेसिं वित्तं-धणधन्नाइ चणमिति पूरणे तं उविक्ख, किमिति?, जहा लोगस्स मुच्छापरिग्गहाइ वित्तं महब्भयं, तहा उडुंडगादीणं संगिता सरीरमेव महब्भयं, केसिंचि करगकुचातिउवगरणंपि, अहवा लोगे वित्तं च णं लोगचरित्तं, जहा लोगो धणआहारसरीरातिमुच्छितो तहा उडुंडगातीवि सरीरमुच्छातो तव्विधा अतो असंजता, किं पुण जे गामादिपरिग्गहा गिहिविचऽविसिट्ठा?, एगे पुण णिदाणो-

॥१६९॥

प्रत
वृत्यंक
[१४६-
१५०]

दीप
अनुक्रम
[१५९-
१६३]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१७०॥

संगादि

वहतत्ता, जम्हा चेतं सरीरमेगं केसिंचि महब्भयं तेण 'एते संगे अवियाणतो' एते इति एतं सरीरमेव मुच्छापरिग्गहो लोगं वा, जहा संगोत्ति वा विग्घोत्ति वा वक्खोडित्ति वा एगट्ठा, रागादयो कम्मबंधो वा, कस्स सो संगो ?–अवियाणतो धम्मोवायं च आह–एतदेव महब्भयं सरीरं लोगे वित्तं च, एगेसिं भण्डगमित्तंपि तेण सरीरधारणा आयारभंडगमेत्तधारणा य, भवताणवि समाणो दोसो, तं च ण भवति, जम्हा 'एतंपि संगं पासह' एतं सरीरं भंडगं च संगित्ता महब्भयं भवति अयाणगस्स ण तु याणगस्स, वइरित्तसरीरस्स संजमस्साहणा उवहिहारणाओ य, भणियं च–आसस्सास्सभंडं०, भणिया अविरता तद्दोसा य, संपयं विरता भण्णंति, से सुपडिबुद्धं जं वुत्तं एतदेवेगेसिं लोयवित्तं च 'एतं सम्मंति पासहा' एवमेयं, ण अण्णहा, जं च वक्खति 'एतेसु चेव बंभचेरंति', एतं सव्वं 'सुपडिबुद्धं' सुट्ठु पडिबुद्धं, च पूरणे, मम–मे 'सूवणीतं' उवणीतं उवदरिसियं सुट्ठु साहू चेव उवणीतं सूवणीतं पच्चक्खनाणीहिं सुदिट्ठिएहिं हेऊहिं सिस्साणं उवणीतं, पढिज्जइ य–'सुतं अणुविचिंतेति णच्चा'सुतेण २ अणुविचिंतित्ता गणधरेहिं णच्चा विरतगुणे अविरतदोसे य 'पुरिसा परक्कम चक्खू' पुरि सयणा पुरिसो, पस्सति जेण तं चक्खुं, जं भणितं–परमं नाणं, तवे संजमे य विविहं परक्कम्म विपरक्कम्मा, जे य एवं तवे संजमे परक्कमंति, 'एतेसु चेव बंभचेरंति बेमि', अहवा परं–केवलनाणं तं जस्स चक्खुं परमचक्खु ते पुरिसा परचक्खुसो तवे संजमे य परक्कमं एवं वुयिता, तंजहा–एतदेवेगेसिं लोगवित्तं च, इमं च अन्नं वुयितं ता 'एतेसु चेव बंभचेरं'ति, एतेत्ति छकाया, तं एतेसु संजमतवो बंभचेरं भवतीति बेमित्ति, आयरिय–उवत्थसंजमो गुरुकुलवासं वा बंभचेरं, अहवा एतेसु चेव आरंभपरिग्गहेसु भावओ विप्पमुक्कं बंभचेरंति, अहवा जो एवं परमचक्खू तवे संजमे य परक्कमति एतेसु चेव बंभचेरंति, सिरं उग्घाडित्ता जहागदितत्थं बेमि, ण सिच्छया, जेण भणितं 'से सुतं

॥१७०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१४६-१५०]

दीप अनुक्रम [१५९-१६३]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१७१॥

च मे' गणधरो सिस्साणं अक्खाति–से सुतं च मे, तित्थगराओ अ अत्थतो, चसद्दा ग्रथितं मे सुत्ततो, अहवा सुयं सुयमेव, 'अज्झत्थितं' ऊहितं गुणितं चिंतितंति एगट्ठा, मुणित्ता मए चिंतितं, किमिति ?–'बंधमोक्खो तुज्झ अब्भत्थेव' वज्झति जेण सो बंधो, 'एत्थं'ति अप्पए चेव, तत्थ बंधहेऊ 'रागाईया तिण्णि तु' गाहा, ते अप्पाणं ण वतिरित्ता वट्टंति, अतो बंधो, तओ अप्पए चेव, ते चेव विवरीया मोक्खहेऊ भवंति, तेऽवि अप्पए चेव, मम ताव परतो सोच्चा चिंतंतस्स एवं अब्भत्थितं–जहा बंध पमोक्खो अप्पए चेव, तुमंपि एत्तो सोच्चा एवं अणुचिंतेहि, अहवा जे चेव आरंभपरिग्गहा एतेसु चेव णियतं तस्स बंधपमोक्खो अज्झत्थे वा, जतो एवं तेण 'एत्थ विरते अणगारे' एत्थंति एयाओ आरंभपरिग्गहाओ एयाओ वा अप्पसत्थाज्झत्थाओ, णत्थि अगारं अणगारो, दिग्घकालं जावज्जीवाए, तितिक्खतित्ति वा सहतित्ति वा एगट्ठा, परीसहे उवसग्गे य, 'पमत्ते बहिता' पमत्ता–असंजता आरंभपरिग्गहिता कुलिंगिणो य 'बहिया' इति तिविहस्स लोगसारस्स, एवं दट्ठूण अप्पमत्तो तु सिज्झेज्जा, अप्पमाओ संजमअणुपालणत्थं पयत्तो, अहवा पंचविहपमायवइरित्तो अप्पमत्तो, अहवा जतणअप्पमत्तो य कसायअप्पमत्तो य, जयणअप्पमत्तो संजमअणुपालणट्ठाए ईरियातिउवउत्तो, कसायअप्पमत्तो जस्स कसाया खीणा उवसंता वा, तं एतं अप्पमायं दुविहाए सिक्खाए सुट्ठु 'एतं मोणं' एतंति दुविहसिक्खासिक्खणं अहवा निरारंभपरिग्गहत्तं, एतं मोणं सम्मं अणुपालिज्जासित्ति बेमि। पंचमस्याध्ययनस्य द्वितीयोद्देशकः ॥

उद्देसत्थाधिगारो भणितो, बितिए अविरयवादी परिग्गहिओ, इह तु तव्विवरीतो अपरिग्गहो, सुत्तस्स सुत्तेण–अप्पमत्ते परिवएज्जासित्ति बेमि, अपरिग्गहो आरंभवज्जणं लोगसाराणुचारी, इह तु सो चेव परिग्गहो पडिसिज्झति, जतो सुत्तं 'आवंती ॥१७१॥

आत्मनो बन्धत्वादि

पंचम-अध्ययने तृतीय-उद्देशक: 'अपरिग्रह' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१५१-
१५५]

दीप
अनुक्रम
[१६४-
१६८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
५ लोक०
३ उद्देशः
॥१७२॥

अनारंभजीवितादि

केआवंती अणारंभजीवी केयि लोगे अपरिग्गहवंतो' जं भणितं-संजता, सव्वे ते एतेसु चेव काएसु अपरिग्गहावंति, अहवा जे भणिता परिग्गहप्पगारा 'से अप्पं वा जाव चित्तमंतं वा' एएसु चेव णिम्ममत्ता अपरिग्गहावंति, दव्वातिपरिग्गहणिम्ममा वा कथ्यंते अपरिग्गहजुत्ता 'सोच्चा वई मेहावी' सोच्चा-सुणित्ता वई-वयणं मेहावी सिस्सामंतणं, मेहावीण वा वयणं, मेहावी तित्थगरगणधरा 'पंडिताण णिसामिया' पापाडीना पंडिता तेसिमेव तित्थगराणं पंडिताणं, मेहाविपंडिताणं को पतिविसेसो ?, भण्णति-पढमं अपरिग्गहमेहावी भणितो, पापाडीणो पंडितो, मेरामेहावी परिग्गहितो, अहवा कोयि केवलमेव गंथमेहावी भवति, ण तु जहातहं पंडितो, इमो पुण उभयमेहावी तेण ण पुणरुत्तं, णिसामिया णाम सुणित्ता, सोच्चाणिसामणाणं को विसेसो ?, सोच्चा किंचि केवलं सुत्तमेव, ण पुव्वावरेण ऊहित्ता हितपट्ठवियं, इमं पुण सोच्चा हितपट्ठवितं, अहवा सोच्चा मेहावी वयणंति तित्थगरवयणं, तं पंडितेहिं भण्णमाणं गणहरादीहिं णिसामिया, एवं ताव सोच्चा एगेसिं लोगसारलंभो भवति, अण्णेसिं अभिसमिच्चा जहा पत्तेयबुद्धाणं, किं सोच्चा ?-धम्मं, सो कहं पवेदितो केण वा इति ?, भण्णति-'समियाए धम्मे' समं केवलनाणेण दट्ठुं, 'अहवा जहा पुण्णस्स कत्थति तहा तुच्छस्स कत्थति' एवं समियाण नाणदंसणचरित्तारियेहिं साधु आदितो वा वेदितो पवेदितो, अण्णेहिवि साभिप्पायसिद्धा धम्मा पवेदिता अतो भगवं आह-'जह एत्थ मए' अहवा लोगसाराहिगारो अणुयत्तति, सो अन्नत्थवि किं अत्थि णत्थित्ति पुच्छिते सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झयारे एवं वदासी-अन्नेऽवि लोगसारा अयाणगा कुधम्मे उवदिसंति, इमो पुण विसेसो 'जहेत्थ एए संधी' जेणप्पगारेण जहा, एत्थंति एत्थ मदीए सासणे मोक्खमग्गविहीए मणुस्सलोए पासंडलोए वा, संधणं संधी, नाणादीणं कम्मिणकम्मक्खयसंधिभूयाणि भवंति, तहिं तस्स संधणं भवति, जं भणितं- ॥१७२॥

प्रत वृत्यंक [१५१-१५५]

दीप अनुक्रम [१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१७३॥

दुर्जोषितत्वादि

तं लंभो, जुषी प्रीतिसेवणयोः, जुसिता पालिता जाव आणाए अणुपालिता, 'एव मन्नत्थ' एवमवधारणे अण्णत्थत्ति-सक्कआजीवगचरगपरिव्वायगपभीतीसु, तेसु सारंभपरिग्गहा सुहपसुत्ता जतिवि वत्थिणिग्गहं करेंति तहावि उद्देसियभोयणा जिब्भिदियं अदन्तं तेसिं, सच्चित्ताहारगा य, जहा एत्थ मए गुत्तिसमितिभावणाहिं विसयकसायातिणिग्गहो य सातिरेयाणि दुवालसवासाइं दुक्करचरिओवगतेण फुसिते एवं अन्नत्थ न, फुसिते दुज्झोसएत्ति वा एगट्ठं, भणितं च-'णालस्सेण समं सोक्खं, ण विज्जा सव्वणिद्दया। ण वेरग्गं ममत्तेणं, णालंभेसु दयालुया ॥ १ ॥' अतो ममीकाराओ सारंभतो य आयत्थे दुज्झोसए, अहवा ते मोक्खोवायं चेव ण याणंति, तेण कहं झोसेस्संति ?, किंच 'जं अण्णाणी कम्मं खवेति०', अहवा जहा मए एत्थ संधी झोसेध, एवं णणु गव्वो भवति जहा वद्धमाणेणं सीहणातो कओ, तं च ण, एवं सिक्खगउच्छाहणा, भणियं च-"आविः परिषदि धर्म्मं काञ्चनसिंहासने वाणस्य (मुनेः) योजननिर्हारिवो योऽभूनोच्चैः कथं स सिंहनिनादः? ॥१॥" अतो वुच्चति 'तम्हा बेमि णो णिहिज्ज' जम्हा अहं अण्णायचरियाए घोरं तवं अकासी तम्हा बेमि णो णिहेज्जा, णिहणंति वा गूहणंति वा छायणंति वा एगट्ठा, कयरं ?-'वीरियं' संजमवीरियं, तं च वीरियं च 'अणिगूहियबलवीरियो०'गाहा, कयरो सो जे ण गूहति वीरियं ?, वुच्चति, 'जे पुव्वुट्ठाती नो पच्छाणिवाती' जे इति अणुद्दिट्ठस्स, उट्ठाणं सट्ठाणं संवेगो संपवज्जा अब्भुवगमो, णो इति पडिसेहे, पच्छा णाम पव्वज्जपवित्तस्स जं सेसं तं पच्छा जाव आयुभेए, जधेव उट्ठिता तहेव विसेसेण वड्डमाणपरिणामा जाव आतुसेसं विहरंति, जहा गणहरा सीहत्ताए णिक्खंता सीहत्ताए विहरंति, सो पुव्वुट्ठाती णो पच्छाणिवाती पढमभंगो, आह-कोयि सीहत्ता णिक्खम्म सियालत्ताए विहरंति ?, आमं, इह केइ कलत्तपुत्तमित्तातित तणं व छड्डित्ता पुणो विहाराओ पडंति, जहा सेलतो, कोयि लिंगाओवि पडति, नन्दिसेणकुमारो

॥१७३॥

प्रत वृत्यंक [१५१-१५५]

दीप अनुक्रम [१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥१७४॥

उत्थान-निपातादि

व, केई दरिसणाओवि पडंति जमालीव, केई दुहओवि पडंति, अतो पुव्वुट्ठाती पच्छाणिवाती बितियभंगो, जो न पुव्वुट्ठाई णो पच्छाणिवाती सो धरत्थी, आह—जे इमे सक्काजीवगापभिति गिहदाराइं छड्डेत्ता जहा व सधम्मचेट्ठिता एते एत्थं भंगत्तिये कत्थ ?, वुच्चति ततिए, कहं ?, ते जेण 'सेत्ति तारिसए' सेत्ति से अण्णउत्थिए अन्नउत्थियगणो वा तेसु भगवतो अणाणाए रज्जंपि चइत्ता(पव्वइए)ण य अणुट्ठियस्स णिवातो भवति, गामातिपरिग्गहाओ य, तारिसए चेव जारिसए चेव पुव्वं आसी उदिक्खिता, अहवा सुविसुद्धदिट्ठंतेणं जारिसगा चेव गिहत्था सचित्ताहारासेवि तारिसए चेव, उदायिमारगप्रभृतयोवि एत्थं चेव भंगे, जेऽवि णिण्हगविसेसं अजाणंता तेसिंतिए णिक्खमंति तेऽवि तारिसए चेव, जेण ताण मिच्छत्तं, मिच्छत्ते व कतो उवरिं ?, 'जे परिण्णाय लोगमण्णेसयंति' अकारस्स लोवा जे अपरिण्णाय लोगं—छज्जीवकायलोगं अणु एसति अण्णेसति, काए वित्तिणिमित्तं आरभंति, पढिज्जइ य—'लोगमणुस्सिते' परिण्याय—पच्चक्खाय पयणपयावणाति विसेसेण पुणरवि तदत्थं लोगं अस्सिता, अहवा पयणपयावणाति॰ आरंभलोगो तंसि आसिया, अहवा बितियभंगोवि तइयभंगतुल्लत्तिकाउं तेवि तारिसए चेव, कहं ?, जे दुविहाए परिण्णाए परिण्णाय गिहत्थलोगं संथवंतीति छकायलोयं वा अण्णेसति 'एतं निदाय मुणिणा पवेदिता' किं तं ?, णणु भणितं जो सो लोगं परिण्णाय पुणो अण्णेसति एतं कारणं—णिदाणं णच्चा, भणियं च—"तत्थ जे ते सन्निभूया ते णिदाणवेयणं वेदिन्ति" मुणिणा पवेइयं तित्थगरेणं, साहु आदितो वा वेदितं, जहा एवं पव्वइयावि संता गिहत्थतुल्ला एव भवंति, तेण 'इह आणाकंखी पंडिए अणिहे' एत्थं पवयणे सरीरविसएसु अरत्तो आणं कंखति, सा य का ?—सुतं, जं वा आयरिया आणविस्संति, पावाड्डीणो पंडितो, अणिहितो रागातिएहिं, केवलं सरीरधारत्थं आहारयति सगडअक्खअब्भंगदिट्ठंतो, कसिणं कम्मसंलेहणं कुज्जा

॥१७४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [१५१-१५५]

दीप अनुक्रम [१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१७५॥

‘पुव्वावररातं’ पुव्वरायं अवररत्तं जयमाणो, तत्थ आदिमे दो जामे पुव्वरायं, पच्छिमे अवररायं, तत्थ थेरकप्पं पति पुव्वरायं एगजामं जग्गति पच्छिमे रत्तेवि एगं, मज्झे दो यामे सुयति, तत्थवि मत्तितो जागरति, सुयंतोऽवि जणयाए सुयति, णिक्खमपवेसेसु य जयणं करेति, जो एवं अचक्खुविसएवि जतणं करेति सो दिवसओ पुव्वण्हअवरण्हमज्झण्हेसु परे व जयति, जिणकप्पिया ततियजामे सोतुं सत्तसु जामेसु जयंति, एवमवधारणे, अवहितमेव जयंति, जं भणितं–सुयंतावि जव्वसा जतेंति, सोच्चा वइं मेधावी पंडिताणं, णिसामियत्ति अहिगारो अणुयत्तति, एवं पुव्वरत्तअवरत्तसमएसु लोगसारं जोसिज्झासि, तंजहा—‘सत्ता सीलं सपेहाए’ सया सव्वं कालं, तत्थ सीलं सभावो, अट्ठारस वा सीलंगसहस्साणि सीलं, सो साहुसहावो, अहवा ‘महाव्रतसमाधानं, तथैवेंद्रियसंवरः। त्रिदंडविरतित्वं च, कषायाणां च निग्रहः॥१॥ सीलं इति बुवे, सीलं ण हावए जावज्जीवं, पुव्वरत्तावरत्तेसु जागरित्ता पच्छा सुयति, एवमण्णेसुवि इरियादिएसु सीलेसु जहारोयितवाही होज्जाहि सम्मं पेक्ख, जं भणियं–सता सीलो, अहवा सुत्तेणेव सीलं भवति–‘सुणिता भवे अकामे अझंझे’ जेण सम्मं पेहा भवति तं अवियत्ता सुणियत्ति तस्सेव अत्थे सुणित्ता अकामसीलो अझंझसीलो, अहवा इह आणाकंखित्ति भणियं, तं आणं पुव्वरत्तावरत्ते जागरित्ता सदा सीले, सुणितभावे सुणियत्ति अत्थं सुणित्ता, अप्पसत्थिच्छाकामे पडुच्च भवे अकामे, जं भणितं—अलुद्दे, अझंझे, जं भणितं–अकोहे, आदिअंतग्गहणा मद्दवत्थो अवंकोऽवि भवे, पिंडत्थो तु सुणित्ता धम्मं भावं च अकामे अझंझेत्ति, उत्तरगुणा गहिता, एवं मूलगुणेहिवि सुणिय भवे अहिंसगो सच्चावादी जाव य अपरिग्गहोत्ति, आह–तुज्झेहि संदिट्ठं–तम्हा बेमि ण णिहेज्ज वीरियं, अणिगूहियबलवीरिएण परक्कमियव्वं, तवेव य परक्कममाणो तहावि कम्मरयं निरवसेसं न सक्कामो उम्मूलेतुं, अन्नंपि ता किंचि कहेहि सारपदलंभट्ठाए, अवि

पूर्वापररात्रयजना

॥१७५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१५१-१५५]

दीप अनुक्रम [१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णि: ॥१७६॥

युद्धार्हत्वादि

सीहेणावि समं जुज्झेज्जामो सरीरपरिच्चागं वा करिज्जामो, भण्णति, णणु कज्जमाणे कडे खविज्जमाणे खविते, जं च भणसे सारपदलंभत्थं अवि सीहेणावि समं जुज्झेज्जामो, अतो भण्णति–‘इमेण चेव जुज्झाहि’ इमेणंति इमेण इतिवातिणा ओरालियसरीरेण अट्ठहिं कम्मरिउहिं सह, आराहणपडागहरणत्थं, जं च भणिसि णिव्वाणत्थं अहं पाणे परिच्चयामीति तत्थ ‘जुज्झारिहं खलु दुल्लभं’ एतं ओरालियसरीरं भावजुद्धारिहं दुल्लभं, तं कहं ?–‘माणुस्सखित्तजाई०’गाहा ‘जाव जरा ण पीलेति वाही जाव०’ अतो परिपालेयव्वं, तत्थ संगामजुद्धं अणारियं, परीसहरिउजुद्धं तु आयरियं, एतं च दुल्लभं तेण जुज्झाहि, तज्जुद्धमेव उ कहं ?, वुच्चति–‘जहित्थ कुसले’, दव्वकुसला पुव्वभणिता, भावकुसलो साहू, परिण्णा दुविहा, विवेजणं विवेगो, सो दव्वे भावे य, दव्वे विवेगो कलत्तमित्ताणं, अंते य सरीरस्स, भावविवेगो णिम्ममत्तं, ततो तवसा कम्मनिज्जरविवेगो भवति, जं भणितं–लोगसारफललंभो, जो तु एवं दुल्लभं लोगसारं लद्धा पमाएति से ‘चुते हि बालो गब्भाति रज्जति’ जो सो पुव्वुट्ठाती पच्छाणिवाती से चुते बाले, कुतो चुते ?, धम्माओ माणुस्साओ वा, गब्भातिसु दुक्खविसेसेसु, ते य गब्भाति पसवकोमारजोव्वणमज्झिममरणणरगदुक्खावसाणो संसारपवंचो, अहवा गब्भजम्ममरणणरगदुक्खेसुत्ति एतेसु गर्भादिसु देहविगप्पेसु संसारविगप्पेसु वा, रज्जति वा पच्चति वा उज्झति वा एगट्ठा, पढिज्जइ ‘गब्भादि रज्जति’ जं भणितं–गब्भातिसु गच्छति, गब्भादिसंसारणिवत्तेसु वा कामेसु रज्जति, एतं कत्थ उवदिट्ठं इतो चुए बाले ?, जं वा हिट्ठा भणितं ?, णणु ‘अस्सिं चेतं’ अस्मिन्नारुहते प्रवचने भिसं वुच्चति प्रवुच्चति, ‘रूवंसि वा’ रूवप्रधानविषयाः तेण तग्गहणं, उक्तं च–“चाक्षुषा चक्षुषा येन, विषया रूपिणिस्सिता। रूपत्रेष्ठाश्च सर्वेऽपि, रूपस्य ग्रहणं ततः ॥१॥” ‘छणंसि’त्ति हिंसातिआसवा छणा तेसु छणेसु, छणु हिंसाए, तेण अलीयातीणं गहणं णत्थि, णणु भणितं– ॥१७६॥

प्रत वृत्यंक [१५१-१५५]

दीप अनुक्रम [१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१७७॥

रूपक्षणविरतिप्रभृतिः

सोलसवरिसो, बितितो सुतेण अव्वत्तो वएण वत्तो, सो जतिवि साहस्समल्लो तहावि तस्स ण कप्पति, तस्सेगचारिस्स तिविहा सिवा तत्थेगतरंपि परामुसति छसु सो बालो, रूवेसु सज्जमाणो अविरतो कम्मं उवचिणित्ता चुते बाले गब्भादि, तेण साहु भणितं अस्सिं चेतं पवुचति रूवंसि य, जो एवं रूवछणविरतो 'से हु संविद्धभए मुणी' स इति सो सोइंदियहिंसादिविरतो य खलु (हु)विसेसणे स एवेगे ण अण्णो 'व्यथ भयचलणयोः' जेण अट्ठविहकम्मगंठिभयं जम्ममरणभयं वा सम्मत्तं विद्धं स भवति संविद्धभए मुणी, वहितंति वा चालियंति वा (खोभियंति वा) एगट्ठा, सत्तविहं वा जेण भयं संविद्धं, अहवा संविद्धपहे, तत्थ संविद्धमिति सण्णातं, पधो नाणादि, सो जस्स संविद्धो स भवति संविद्धपहे, जं भणितं-सम्मं उवलद्धो, मुणी भणितो, 'अण्णहा लोगं उवेहमाणे' अण्णेणप्पगारेण अन्नहा, विसयकसायाभिभूतो लोगो हिंसादिसु कम्मेसु पवत्तति, पासंडिणोवि पयणपयावणउद्देसियसचित्ताहाराओ वा अनिवृत्तो, लोगं उविक्खमाणो 'इयं कम्मपरिण्णाया' इति एवं कम्मबंधं जाणणापरिण्णाए परिण्णाय पच्चक्खाणपरिण्णाए तस्स हेऊ पच्चक्खाय सव्वेहिं पगारेहि सव्वसो सव्वस एव 'से ण हिंसति' सव्वेहिं चेट्ठपगारेहिं कायवायमणेण वा तिविहंतिविहेण जाव राइभत्त 'संजमति'त्ति सत्तरसविहेणं संजमेणं 'नो पगब्भति' असंजमकम्मेसु णो गब्भं आयाति, रहस्सेव अप्पपंचमाणं सक्खीणं लज्जमाणेणं ण आयरति, ण य जाइमयादीहिं माणं करोति, एवं ण कुज्झति ण लुब्भति, ण वा अपम्मत्तमप्पाणं मन्नमाणो पगब्भति, तत्थ इमो आलंबणविसेसो, तंजहा-'उवेहमाणो पत्तेयं सायं' जीवाणं जीवाणं जीवा नेरइयादि एते तं प्रति पत्तेयं, पत्तेयमिति वीप्सा, जत्थ जं एगस्स सुहं तं अण्णस्स सुहं, अह पुत्तसोक्खाओ जणगसोक्खं भवति, ततो भण्णति-तत्थेगस्स सारीरं सोक्खं एगस्स माणसं, अहवा समाणाभिहाणेवि सुहस्साभिसंबंधो तो जं अण्णस्स सुहं तं अण्णस्स ॥१७७॥

प्रत
वृत्यंक
[१५१-१५५]

दीप
अनुक्रम
[१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१७८॥

अनारंभादि

ण भवति, अतो पत्तेयं सुहं, एवं दुक्खमवि, भिसं इक्खमाणो उज्जतं वा पेक्खमाणो उपेक्खमाणो, उवदेसो चेव, सो एवं उवेहमाणो 'वण्णादेसि णारभे' वण्णिज्जति जेण वण्णो, जं भणितं-तवसोयसंजमो एव, आयजसा, आतं जसं उवजीवंति, तत्थ जे सम्मं उवजीवंति ते आतजसं उवजीवंति, तस्स वण्णस्स हेऊ णारभे किंचिदपि सव्वलोए, आरंभो णाम घातो, जं चारंभमाणस्स घातो भवति सत्ताणं तं ण आरभे, लोगो तिविहो—उड्डाइ, कायलोगो वा, अहवा ण किंचित्ति सद्दसिलोगट्ठयाए किंचि आतावणं वा वेदावच्चं वा अन्नतरं वा अतिसेसं आरभिज्जा, तंजहा-प्रावचनी धर्म्मकथी वादी नैमित्तिकस्तपस्वी च। विज्ञा सिद्धः ख्यातः कविरपि चोद्भावकास्त्वष्टौ ॥ १ ॥' अहवा 'वण्णो'त्ति रूवं वुच्चति, तस्स अट्ठाए ण किंचि वमणविरयेणसिणेहोसवणणअब्भंगुव्वलणअंगारणादीया हत्थपादधोवणं वा आरभे, 'सव्वलोगे'त्ति जहा अप्पणो तहा अन्नेसिंपि णारभे, णारंभावेति आरंभंतंपि अन्नं न समणुजाणति, 'एगप्पमुहे' एगं अस्स मुहं एगचित्तो-एगमणो सारपदाभिमुहो 'विदिसप्पतिण्णो' दिस्सति जेण सा दिसा तं विदिसं भिसं तिण्णो विदिसप्पतिण्णो, तत्थ सम्मत्तनाणचरित्ताणि दिसा, तव्वतिरित्ता विदिसा, सम्मत्ते तानि तिण्णि तिसट्ठाणि पावातियसताणि विदिसा, नाणस्सवि भारहरामायणाईणि विदिसा, चरित्ते विसयकसाया रागादीया तिण्णि० गाहा, एवमादि विदिसाओ ताओ पतिण्णो, उवएससएवि' णिव्विण्णचारी अरए पदासु' णिव्विण्णो चरति णिव्विण्णचारी, सो य बाहिरब्भंतरेसु वत्थूसुं णिव्वेदो भवति, बाहिरेसु सयणातिसु णिव्विज्जति, तंजहा-'पुत्तोऽवि अभिप्पायं०' माता भवित्ता धूता भवति, एवमादि, चिरभवेवि णिव्विज्जति, 'होऊण पुणो०' सरीराओवि सुसंधिता संधी भवति, जहा सणंकुमारचक्कवट्टिस्स, अहवा सव्वलोगेऽवि रागस्स मूलत्थाणं इत्थीओ ताहिंतो णिव्विंदति, जत्थ इमं सुत्तं 'अरए पदासु' अहवा णिव्विण्णचारिस्स एतं ॥१७८॥

प्रत वृत्यंक [१५१-१५५]

दीप अनुक्रम [१६४-१६८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१७९॥

प्रजाविरत्यादि

लक्खणं 'अरते पयासु' ण रतो अरतो पयणणधम्मी पसवधम्मी पजायंति वा पया-इत्थिओ णिव्वेदपुव्वगमेव तासिं अरतो, तंजहा-एता हसंति च रुदंति च अर्थहेतोर्विश्वासयंति च नरं च न विश्वसंति। तस्मान्नरेण कुलशीलसमन्वितेन, नार्यः स्मशानसुमना इव वर्जनीयाः ॥ १ ॥' तथा 'मूलमेतमधम्मस्स०' 'महाजातार्हि वरितो०''स वसुमं' स इति णिव्विण्णचारी अरए पदासु वसंति तंमि गुणा इति वसु तं च वसु धणं भावे संजमो जस्स अत्थि सो वसुमं, सव्वं सम्मं अणुआगतं पण्णाणं जस्स स भवति सव्वसमण्णागतपण्णाणे, आयरियपरंपरएणं आगतं साहु वादिओ वा आगतं समण्णागतं, पगयं नाणं पण्णाणं, वसुमा चेव एगो समण्णागतपण्णाणो 'ण करणिज्जं पावं कम्मं' हिंसादि, तण्णो अण्णेसिं सयाणं करिज्जा, सो एवं वसुमं सव्वसमण्णागतपण्णाणोतेण पण्णाणेणं 'जं मोणंति पासह तं सम्मंति पासह' संजमभावो मोणं, णिच्छयणयस्स जो चरित्ती सो सम्मद्दिट्ठी, अतो वुच्चति-जं सम्मत्तं, तत्थ णियमा णाणं, जत्थ नाणं तत्थ णियमा सम्मत्तं, अतो तदुभयमवि सम्मत्तं, अपरिग्गाहिता इति णिव्विण्णकामया व वट्टति, तं एतं जहा भणितं-'ण इमं सक्कं सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं' अहवा जं एतं सव्वलोगसारभूतं णिरारंभत्तं अपरिग्गहत्तं च तं कम्हा अण्णेऽवि एवं न पडिवज्जंति ?, तेण वुच्चति-ण इमं सक्कं०, सिढिला णाम तवसंजमे य ण जावजीवं परीसहजयत्तं ददधिति, अद्दिज्जमाणा, जं भणितं-सिणेहमाणेणं, दव्वे उदगउल्लो, भावे मे माया मे पिता मे जाव चियत्तोवगरणपरवज्जणा, एत्थ अभिसंगता सड्ढी भवंति, जहा प्रसन्नचन्द्रो रायरिसी, अहवा अद्दि० अभिभवपरीसहेहिं अभिभूयमाणेणं 'गुणासातेणं'ति गुणा-सद्दाति ते गुणे सादयति गुणासाता, जं भणितं-सुहा, वंको णाम असंजमो माया वा वंकं समायरतीति, अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं आसेवित्ता णालोवेति, गिलाणकुडंगं वा पविसितुं ओभासति, ण वा तवे उज्जमति, पमत्ते हि कसायादि- ॥१७९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१५१-
१५५]

दीप
अनुक्रम
[१६४-
१६८]

पमाएणं, पव्वइएवि भवित्ता एरिसेहिं ण आसेविज्जति, किं पुण 'गारमावसंतेहिं ?' अगारंति वा गिहंति वा एगट्ठा, आदिअक्खरलोवतो गारं भवति, गारमावसंतेहिं गिहत्थअन्नउत्थिएहिं, लोगिताणं गिहस्स तुल्लो अण्णो अस्समो णत्थि, इध ण तहा गारमावसंतेहिं, कतुमिति वकसेसं, जो पुण ण सिढिलो णो अद्दितो णो गुणासातो वंको अपमत्तो णागारं वसति, जं भणितं अणगारो, सो एवं 'मुणी मोणं समानाए' मुणातीति मुणी, मुणिभावो मोणं, सम्मं सम्मत्तं वा आदाय, जं भणितं–गहिया, तप्पुव्वएण वा तवसा 'हुणे सरीरगं' कतरं ?, ओरालियं कम्मगं, सरीरधुवणत्थं, तद्धुणणणिमित्तं वा 'पंतं लूहं सेवंति' पंतं दोसीणीभूतं तंपि लूहं, एवं उवहिंपि पंतं दढदुब्बलं उज्झियधम्मितं सेज्जा सुण्णगारादि फलगाति संथारगा, अहवा पंतमिति सेज्जाउवही गहितो, लूहं दव्वभावे, दव्वे लुक्खाहारं सेवति, भावलूहं वीतिंगालं, विदारयति यत्कर्म्म, तपसा च विराजति। तपोवीर्येण युक्तश्च, वीरो वीरेण कीर्त्यते ॥ १ ॥ सम्मत्तदंसिणो, अणेगे हि एगादेसाओ भण्णति–'एस ओहंतरे मुणी तिण्णे' एस इति जो एतं जहभणितं धारयति, अहवा जो असिढिलो जाव लूहं सेवति वीरो सम्मत्तदंसी, दव्वओघो समुद्दो भावे कम्मा उदइओ वा भावो, तरमाणो तिण्णेत्तिकाउं, तं ओहं जो तरति तरिस्सति वा सो ओहंतरो, मुत्तेत्ति मुत्तो, तेण णाहिगारो, भावे तु सावसेसकम्मा मुंचमाणो मुत्त एव, विरतो संजतो, विसेसेण आहितो वियाहितो इति–एवं बेमि सारपदं इच्छंता सद्दहह आयरह इति पंचमाध्ययनस्य तृतीयोद्देशकः ॥

उद्देसत्थाहिगारो अवत्तस्स एगचरस्स पच्चवाया चउत्थंमि, तत्थ सुत्तेण वयेण य वत्तावत्ते चत्तारि भंगा, सुते ण जेण आयारो अधीतो, अहवा जेण पढिएण एगल्लविहारपडिमाजोग्गा भवंति तं ण ताव अहिज्जति, वयेण अट्ठ वरिसाणी आरब्भ जाव

पंचम-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशकः 'अव्यक्त' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[१५६-१५९]

दीप
अनुक्रम
[१६९-१७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१८१॥

एकचर-दोषाः

पच्चवाया–आयाए पवयणे चरित्ते य, ततिए सुनेण वत्तो वतेण अवत्तो, तस्स तिविहा विराहणा, वालोत्तिकाउं परिभविज्जति तेण कुलिंगादीहिं, दोहिवि वत्तस्स सेच्छा पडिमं वा पडिवज्जतु अब्भुज्जततवं धारेउ वा अब्भुज्जतं मरणं वा, सेसस्स णिक्कारणे ण वट्टति, भणियं च–'साहम्मिएहि संबुद्धतेहिं एगाणियो तु जो विहरे। आयंकपउरताए छकायवहो तु भइयव्वो ॥ १ ॥' एसो अत्थतो संबंधो, सुत्तस्स सुत्तेणं–'तिण्णे मुत्ते वियाहितो तहा णदिं तरमाणो समत्थो अप्पगं तारेउं अन्नंपि तरयं कट्ठेण वा घेत्तुं तारेति, एवं तित्थगरा सयं तरंता अन्नंपि तारेंति, अहवा गोजूथे उत्तरमाणे तस्स अंतरंतरेसु जेवि ण लग्गंति तेवि मंदवेगीकतेण उत्तरंति, एवं साहुसमुदाएवि केयि पुरिसा सारणवीयीहिं चोतिया, सो एवं तरमाणो तिण्णो मुच्चमाणो मुक्को सव्वगंथविरतो इहवि अ संवण्णिज्जति, जेण वुच्चति 'गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स' जतो चलति सो गामो, तेण परं जो अण्णो गामो सो अणुगामो, अहवा गच्छतो जो अणुलोमो सो अणुगामो, जं भणितं–अणुपहे अन्नहगं वा पडुच्च गामाणुगामि, हेमंतगिम्हासु दोसु रिज्जति, जति दोहिं वा पादेहिं रिज्जति दूइज्जति दूइज्जं, दुट्ठं जातं दुज्जातं सारपदणिस्सारजातातो दुज्जातं, जहा एगो साहू कारणिओ, पउत्थभोइयघरे अणुण्णवित्तु भोयणायोट्ठितो, ताओ चत्तारि जणीओ सामत्थेतुं एक्कमिकं जामं उवसग्गेंति, सो णिच्छति, एया अण्णोण्णाए साहेंति, विसयवियक्खणोत्ति य साहेंति, कत्तिया एवं अहियासेस्संतित्ति, एवमादि दुज्जातं, 'आहारे गतीये य' आहारे एगागी वइयादिसु ताव अणिवारितेण भुत्तं जाव तस्स छद्दी वा विसूयिगा वा जाता एवमादि आहारे दुप्परक्कंतं, गतीयेवि अण्णेण अपडिचोइज्जमाणो अप्पादीणि आलोएमाणो गच्छंतो आतविराहणं वा संजमविराहणं वा पाविज्ज, आतविराहणाए अहरदत्तो साहू दिट्ठंतो, जहा सो तए वाणमंतरीए वियरओदगं अतिदूरं उल्लंघेमाणो उरुच्छिन्नो ता एवमादि गतिदुप्परक्कंतं, तं गंतुं 'अवियत्तस्स भिक्खुणो' ॥१८१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१५६-१५९]

दीप अनुक्रम [१६९-१७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१८२॥

व्यक्ताव्यक्तादि

वयसा सुएण य वत्तावत्ते चउरो भंगा, सुएणं अव्वत्तो जस्स आयारपगप्पो अत्थतो ण गतो गच्छवासीणं, गच्छनिग्गयाणं तीसवरिसहिट्ठो, एते अवत्ता, वत्ता सुयवयेहिं चत्तारि भंगा जोएयव्वा, वयसुए य अवत्ताणं बहुगाणंपि वत्तरहियाणं दोसो–आता पवयणं संजमं, अण्णो पुण सुतेण अव्वत्तो वयेण सोलसवरिसेहिं उत्तिण्णो जतिवि साहस्समल्लो तस्सवि दोसो, अवरो सुतेण वत्तो आयारपगप्पो पढितो सुत्ततोऽवि अत्थतो, ण वएण वत्ते, तस्सवि एगचरस्स दोसो, सुतेण वतेणवि वत्तो, जिणकप्पे यो परिहारियो अहालंदियो, जो वा तेसिं परिकम्मं करेंति, एतवतिरित्ता जतिवि उभयवित्ता 'साहम्मिएहि संबुज्झतेहिंति' गाहा, तस्स परं कारणियस्स अणुण्णा जाव कारणं, एवं तेसिं गणा गच्छमाणाणं इमेहिं दिट्ठंता दिज्जंति 'जह सायरंमि मीणा संखोभं सायरस्स असहंता०' गाहा, 'जहा दियापोतमपत्तजातं०' गाहा, गच्छंमि केइ पुरिसा सारणवीयीहि चोदिता संता। णितिं ततो सुहकामी णिग्गयमेत्ता विणस्संति॥१॥' एवं तस्स अवियत्तस्स दुज्जातं दुप्परक्कंतं 'वयसावि एगे बुयिता कुप्पंति माणवा' वयसा–वायाए एते अव्वत्ता एगचरा अणेगचरा वा वुयिता–भणिता कुप्पंति–कुज्झंति वकंति लुब्भंति, केरिसाए वायाए कुप्पंति ?–जहा के इमे ? अम्हं एए चेव दट्ठव्वा तिवग्गे वंभणाति, तिवग्गपरिचारग सुद्दा पव्वयंति ?, एवं थंभे मायाएवि लोभेऽवि जोएयव्वं, अविसद्दा कायेणावि पुट्ठा कुप्पंति, वत्ता पुण वयसा कायेणवि पुट्ठा ण कुप्पंति, जहा खंभो णिकंपो, इमेण य अव्वत्तदोसा 'उण्णयमाणे य णरे महता मोहेण मुज्झति' एगचरो अवत्तो उन्नमिज्जमाणे य कहिंचि कयिवया सिलोगा कड्डित्ता, गिहत्थत्तणे वा कलावगा सुत्ता, फुडवको वा संभावणे, केयि उप्पासणबुद्धीये भणंति तं–अहो पव्वइओ धम्मकही, ण एरिसो अत्थि अण्णो, णज्जति जहा बंभणस्स वाया सक्कतअभिधारणजुत्ता, पायते वा महाकव्वाइं जाणमाणो, उन्नामियाति अंगुलिं उक्खिवित्ता ॥१८२॥

प्रत वृत्यंक [१५६-१५९]

दीप अनुक्रम [१६९-१७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१८३॥

मानादयो दोषाः

बेति–को अन्नो मम तुल्लो?–गिहत्थत्ते मम कित्ती आसी, अहवा सब्भावितो बंभणो खत्तियो कलायरितो वा णारायणसरिसो वा बलरूवेण इब्भपुत्तो वा आसी, एवमादीएहिं उण्णामितो सो महंतेणं दंसणचरित्तमोहेण मुज्झति, अहवा वुज्झति असंजमेण ण संसरंतेणं ‘संबाहा बहवे भुज्जो २ दुरतिक्कमा’ ‘बाधृ लोडने’ सव्वतो समत्तं समूहेण वा बाहंति संबाहंति, के य ते ?, परीसहोवसग्गा, तस्स अवत्तस्स एगचरस्स, दुप्पभिति बहुलत्तं, भुज्जो २ पुण २ दुरतिकमा–दुरधियासया, अहवा संवाहा अणुलोमा बाहिंति इत्थि पुरिसगादि, ते दुरहियासा अयाणतो ण याणति एवमेते अहियासिव्वा, दोसे य ण याणति, परीसहउवसग्गेहिं णिहयस्स, अहियासियफलं च ण पासति, जतो एवं आह–‘एयं ते मा होउ, एतं कुसलस्स दंसणं’ एतं ते मा होउ मणसावि जहा अहं एगागी विहरामि, एतं कुसलस्स दंसणं, सुहम्मो जंबु आह, इमं जं उवदिट्ठं एयं कुसलस्स–वद्धमाणसामिस्स दंसणं, जहा एते अवत्तस्स एगचरगस्स दोसा, अविय ‘नाणस्स होति भागी०’ गाहा, अमुयंतस्स तस्स आयरियं उवरिं हरएण उवमा कीरिहिति, कहं णज्जति जं कुसलस्स एतं दंसणं ?, जतो–‘अत्थं भासति अरहा०’गाहा, अहवा कुसलस्स एतं दरिसणं जहा अवत्तेण ण चरियव्वं जो वत्तो सो जणो रीयति, थेरकप्पिया वत्तसहिया रीयंति, तम्हा ‘तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीये’ आयरियाधिगारो अणुयत्तति, दव्वे तद्दिट्ठीए पंथं मोत्तुं अन्नत्थ दिट्ठिं ण पाडेति जुयंतरपलोयणाए, अतद्दिट्ठिस्स दोसा कूवादिएसु पडिज्ज अप्फिडिज्ज वा, भावतद्दिट्ठीए आयरियस्स उवदेसदरिसणेण विहरति, सुत्तत्थगहणं कायव्वं, जति भव्वायरितो तो देसदरिसणं, ताहे पव्वावेत्तुं आयरिओ भणइ–एस तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए, मुत्ती णाम सरीरं, दव्वमुत्ती सरीरं चेव, भावमुत्ती जं उवदेसं देति अणुपालिति वा, सरीरप्पमाणप्पितदिट्ठी वा तद्दिट्ठी तम्मुत्ती ‘तप्पुरकारि’त्ति तदेव मुत्तिं दिट्ठिं पहं वा पुरकरेति आयरियपूयं च ‘तस्सण्णी तण्णाणोवयुत्तो ॥१८३॥

प्रत वृत्यंक [१५६-१५९]

दीप अनुक्रम [१६९-१७२]

तण्णिवेसी' तच्चित्तो वा आयरियअहिगारो अणुयत्तइ, दव्वणिवेसणे घरे वासो देवदत्तस्स, भावे आयरियकुले णिवासो, आयरिय-
समीवे वा, चोयओ भणति–आयरियसमीवे वसंताणं दुज्जातं दुप्परिक्कंतं ण भवति इरियावहिगमादी वा ?, आयरिओ आह–जहा
ण भवति तहा भणामि, तत्थ सुत्तं 'जयं विहारी चित्तणिवाई पंथणिज्झाई' कहं ?, तदुभयसुत्तं 'पडिलेह०'गाहा, गच्छंतस्स
गच्छस्स जो तिहिं उवउत्तो सो पुरतो गच्छति, इरियासु उवउत्तो खेत्तपडिलेहया सव्वं च विधिं दरिसिंति, अहवा जतं–अतुरियं
अविलंबिताए गईए गच्छति, तुरितो ण पेक्खति रियादि, विलंबिए सेसजोगहाणी, वत्ता चक्खुंमि णिहाय पंथं णिरिक्खति, अहवा
जतंविहारी चित्तणिधायी पंथंमि चेव, सो एवं चक्कमंतो जीवे दट्ठूण 'पलीवाहरे' प्रतीपं आहरे जंतुं दृष्ट्वा संकोचए देसीभासाए,
एताओ सुत्ताओ तिन्नि इरियाउग्गमेसणा णिग्गता, 'पासिय पाणे गच्छिज्जा' पाणे पच्चुविक्ख गच्छति, जुयंतरदिट्ठीदिट्ठे य
पाणे साहुणा एवं करेयव्वं–'से अभिक्कममाणे' अभिमुहुक्खे क्रमु पादविक्षेपे, वोलेऊण पाणे ठवेति पादं, 'पडिक्कममाणे' पतीवं
गच्छेत एवं दट्ठुं पाणे, सर्वप्रकारेण जहा सत्ताणं आबाहा ण भवति तहा कुर्या, 'संकुचेमाणे पसारेमाणे' कुच फंदणे, सम्मत्तं
कुंचेमाणे संकुंचेमाणे, 'प्रसृग् पसारणे' णिसण्णो तुयट्टो वा पमज्जित्ता जतो कुक्कुडिवियंभितेणं संकुचे पसारए वा, गमणागमणवज्जं विणि-
यट्टणं जाव ते सत्ता गता ताव विणियट्टमाणो गच्छति, 'संपलिज्जमाणे' सरीरे जे सत्ता लग्गा ते संजतामेव पलिमज्जति, एगता ण
सव्वता, कायं–सरीरं कायजोगं गुणा–नाणादि ३ 'समियस्स रीयतो' जं भणितं समितिसहितस्स 'संफासा समणुचिण्णा'
संफरिसा अणुचिण्णा, जं भणितं–संघट्टणं, एगतिया पाणा उद्दायंति, कदायि इहलोयचेतणविज्जापडितं, सेलेसिपडिवण्णस्स जे
सत्ता संफरिसं पप्प उद्दायंति मसगाति तत्थ कम्मबंधो णत्थि, सजोगिस्स कम्मबंधो दो समया, जो अप्पमत्तो उवद्दवेति तस्स

प्रत
वृत्यंक
[१५६-१५९]

दीप
अनुक्रम
[१६९-१७२]

जहन्नणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अट्ठ मुहुत्ता, जो पुण पमत्तो ण य आउट्टियाए तस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अट्ठ संवच्छराइं, जो पुण आउट्टियाए पाणे उद्दवेति तवो वा छेदे वा, वियावडं वा करेति, वेयावडियं कम्मं खवणीयं विदारणीयं, वेयावडियं इह भवे खिज्जति, अणाउट्टीकतं इहलोयवेयणाए वेतेति, आउट्टिकतं 'परिण्णाय विवेग'मिति परिण्णा णाम मिच्छत्तं, 'एवं से अप्पमत्तेण' एवमवधारणे 'से'त्ति भगवं तित्थगराणं पमाएणं उवचितस्स कम्मस्स विवेगकत्तेति वेदवी, तित्थगर एव कित्तयति विवेगं, दुवालसंगं वा प्रवचनं वेदो, तं जे वेदयति स वेदवी। इदाणिं वत्तो 'से पभूतदंसी' सेत्ति वेदवी, पभूतं दरिसणं जस्स स भवति पभूतदंसी, पभूतं परिण्णाणं जस्स स भवति पभूतपरिण्णाणे, पभूतं-बहुगं दरिसणं पभूतपन्नाणं, अहवा पभूतं खाइतं दरिसणं, पभूतं पण्णाणं खाइयं णाणं, उवसंता कसायादीहिं, चरित्ते वा उवसंते, समितो इरियादीहिं, सहिते नाणादीहिं, सदा णिच्चं 'जते' चक्कवालसामायारी एसा विभासियव्वा, सो एवंगुणजाइओ दट्ठुं अण्णउत्थिए विप्पडिवेदेति-जाणेति-अहं सम्मदिट्ठी, एते मिच्छादिट्ठी, अहवा विविहं अप्पाणं पवेदेति, जं भणितं-जाणति, कहं ?, सण्णागतमादि दट्ठुं अप्पाणं अवसस्स बंधुमज्झे वलामहं; मच्चुणोवणीतस्स सो सुबहुयोवि अत्थो किं कुवियवावडो कुणति ? अहवा किमेस जणो करिस्सति ?, रोगाभिभूयस्स ण ताणाए सरणाए वा भविस्सति, इह परलोगे वा, अहवा तेहिं उप्पव्वाविज्जंति उ चिंतिज्ञा-किं पुण मं एते उप्पव्वाविंति ?, मम करिज्जा ण वा, संसाराओ वा किं उत्तारेंति ?, णिबोलिंति, अहवा भिक्खायरियाए सण्णाभूमीए वा गच्छंतं आयाविंतं वा राया वा रायामच्चो वा धणेण भोगेहिं वा उवणिमंतेज्जा 'विप्पडिवेदेति' किमेस जणो थणं वा करिस्सति ?, 'एस परमारामे' एसेव तस्स, एसे स परमारामो, परम इति उक्किट्ठं आ मज्जाया परमकिड्डाए, एता-एता इहं लोए खाताओ इत्थीओ, एया ॥१८५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१५६-
१५९]

दीप
अनुक्रम
[१६९-
१७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥१८६॥

उद्बाधनोपायाः

परमकरणीया एया परमसुहा ‘गवामतिरसः स्वर्गः, स्वर्गस्यातिरसः स्त्रियः’ अहवा मणुस्सा कामा अणिचा वंतासवा पित्तासवत्ति सोचा परं अणुत्तरं कुरु इत्थीसु—ण एता मम सासता,‘एता हसंति च०’ एवमासां संदरिसणाओ मोहो भवति तम्हा अभिसंगो दिट्ठो, केण एतं कहितं जं वुच्चमाणं? ‘मुणिणा हु एतं पवेदितं’ किमिति?—‘उब्बाहिज्जमाणो गामधम्मेहिं’ अचत्थं बाहिज्जमाणो गामो—इंदियगामो माउगामो य, किं कुज्जा उब्बाहिज्जमाणे? ‘अवि निब्बलासए’ निब्बलाणि दव्वाणि असती णिब्बलासए, ताणि पुण णिप्फावकोद्दवकूरतकाईणि, अहवा जाणि सरीरं निब्बलंति ताणि जो असति स भवति णिब्बलासतो, सरीरे य निब्बलिज्जमाणे मोहोवि णिब्बलिज्जति, आयंबिलं वा आहारेइ, अवि ओमोदरियं, तंपि णिब्बलं आयंबिलं वा ओमं करेइ जाव एगूणतीसाओ आरद्ध लंबमाणोत्ति, जति तहावि ण उवसमति ताहे चउत्थं काउं जाव छम्मासे अवि आहारं वोच्छिंदिज्जा, तहवि ण ठाति पच्छा ‘अवि उड्ढट्ठाणं’ रत्तिं एक्कं दोन्नि तिन्नि चत्तारि वा जामे ठाति दिवसं वा, ‘अवि गामाणुगामं दूतिज्जउ’ दिज्जति उवहिं उप्पायंताण वा, सव्वत्थ णिब्बलासगा ओमोदरियाओ करेति, सव्वहा अट्ठायंते संलेहणं काउं भत्तं पच्चक्खाइ, एवं ता अबहुसुयस्स मोहतिगिच्छा, बहुसुत्तो पुण वायणं दवाविज्जइ, सेट्ठिकप्पट्ठदिट्ठंतो, सव्वत्थवि य अह विजहे इत्थीसु मणं, संकप्पप्पभवो किल कामो भवति, भणियं च—‘काम! जानामि ते मूलं, संकल्पात्किल जायसे। संकल्पं न करिष्यामि, तेन मे न भविष्यसि ॥१॥’ इमाओ य आलंबणाओ इत्थीओ वज्जणिज्जा भवंति, तंजहा ‘पुव्वं दंडा पच्छा फासा’ सत्था दंडा, दम्मन्ति जेण सो दंडो, तेण पुण इह परत्थ य, इह ताव पुव्वं पहारा कस्साति लंभंति पच्छा फासा संवाएणावतासणालिंगणचुंबणादि, तत्थ दिट्ठंतो—एगस्स रन्नो महादेवीए धूया संपत्तजोव्वणा ओलोयणवरगया अच्छति, तीए तंबोलगं निच्छूढ, इंददत्तो य इब्भ-

॥१८६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१५६-१५९]

दीप
अनुक्रम
[१६९-१७२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१८७॥

दंडस्पर्शयोः पूर्वापरीभावः

सुओ तेण ठ्ठाणेणं वोलेइ, सो य ताए ण दिट्ठो, तेण एतं पडंतं तं रायकण्णं पलोएउं हत्थेण पडिच्छितुं मुहे च्छूढं, तीएवि दिट्ठो ओरालियसरीरोत्ति, रायपुरिसेहि य घेत्तुं पिट्टित्ता रण्णो य णीओ पासं, सिट्ठे रण्णा विज्झडावेउं वज्झो आणत्तो, पच्छा सा दारिया तं चेडिसगासाओ सोउं मुच्छिता, आसत्था संती माताए पुच्छिया--एस ते रोयति ?, रोयतित्ति वुत्ते रण्णो णिवेदिते तस्स चेव सा दिण्णा, तेण फरिसिता, एवं पुव्वं दंडा पच्छा फासा, परलोएवि अग्गिवण्णाओ इत्थीओ अवतासाविज्जंति, एवं पुव्वं दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा, पारदारिया गहिता संता संसट्ठा वा कण्णणासोट्ठसीहपुच्छिता कीरंति मारिज्जंति य, परलोए तहेव निरयपालेहि य णरगवेदणाहि य दंडिज्जइ, इमाओ य आलंबणाओ इत्थीओ वज्झाओ, 'इच्चेते कलहसंगकरा भवंति' इति एते कामा इत्थिसंथवा वा कलहकरा जहा सीयाए दोवईए य, एवमादी कलहकरा, कलह एव संगो, अहवा कलहो--दोसो संगो--रागो, अहवा संगंति सिंगं वुचति, सिंगभूतं च मोहणिज्जं कम्मं, तस्सवि इत्थीओ सिंगभूता 'पडिलेहाए आगमित्ता' पवित्तस्स निवित्तस्स य गुणदोसे पडिलेहाए सुयनाणपडिलेहाए आगमित्ता जं भणितं--णच्चा, तित्थगराणाए 'आणविज्ज अणासेवणताएत्ति बेमि' इमो अण्णो परिहरणोवातो, दुक्खं ताओ परिहरिज्जंतित्तिकाउं, तेण एसो गतोवि अहिगारो पुणो आरब्भति, पियपुत्तअप्पाहणिया वा, तंजहा--'से णो काहीए' जातिकहं कुलकहं णेवत्थकहं सिंगारकहं, धम्मोवि तासिं रहसे ण कहेयव्वो, जेसु दोसो उप्पज्जइ, पुरिसाणं च सिंगारकहा ण कहेयव्वा, कलिया कहेयव्वा, कलियाकहा णरवाहणादि, पासणितत्तंपि ण करेति, कयरा अम्ह सा भवति सुमंडिता वा कलाकुसला वा, आहदेसु पासणितत्तं करेइ, सुमिणे वा पुच्छिओ वागरेइ, अण्णतरं वा अट्ठावतं, जहा एकाए गणियाए दीणारिकेण चंपएण चंपगमाला बज्झति, रायपुत्ता देंति, पच्छा सा एगेण इब्भेण वाहिता, ॥१८७॥

प्रत वृत्यंक [१५६-१५९]

दीप अनुक्रम [१६९-१७२]

प्राश्निकादि निषेधः

गया, चिंतेइ–सो मए सद्धिं अच्छितुकामो, पच्छा तस्स घरे चंपगपुप्फेहिं पुंजपुंजेहि अच्चणिया कया, आसणे दिण्णे वीणं सो भज्जाए समं वाएइ, को अम्हं कुसलोत्ति पसिणं पुच्छिता, विलक्खीभूया गया, संपसारता णामा उवसमंतिया, काति कस्सति साहुस्स अद्धिर्ति करेज्ज, पुच्छिया भणइ–भत्तारो मे अन्नं परिणेइ, धूया वा न, कुमारी वेस्सा वा, अह पच्छा सो तीसे वसीकरणादि देति, सावि तं अणुयत्तइ, तेहिं दोसो होज्जा, तेण णो संपसारए, एरिसा मम भाउज्जा भइणी भज्जा वा हवइ, इतरहेव गमणागमणसंबंधसंथवेहिं ममीकारं करेइ, कतकिरियो णाम कते कते किरियं करेइ, मंडितुं पुच्छितो–किमहं सोभामि ?, अपुच्छिओ वा भणति–अहो सोभसि, न वा सोभसि, एवं करेह तो सोभिस्ससि, दट्ठुं वा ता भावओ रोसितो, सुट्ठु सा ते धूता तस्स दिण्णा, ण दिण्णा वा, एवं संजमदोसो, एवं पुट्ठेण अपुट्ठेण वा पासणियातिएसु वइगुत्तेण पडिसेहेयव्वं–ण एरिसं सोतुंपि वट्टति, कओ पुण उवदिसितुं ?, आयरिओ वा अज्झप्पं णाम सुत्तं अत्थो वा तत्थ उवउत्तो णिच्चं तदप्पितमणा अज्झप्पेण संवुडो परिवज्जते तमेव मेहुणं तदणुपसंगेण य अण्णे हिंसातिए, ता 'मोणं' मुणिभावो मोणं, सम्मं नाम ण आससप्पयोगादीहि उवहतं, अणुवासिज्जासि, अहवा तित्थगरादीहिं वासियं अणुवसिज्जासित्ति बेमि। पञ्चमाध्ययनस्य चतुर्थः उद्देशकः॥

उद्देसत्थाहिगारो गुरुकुले वसंतो आयरिओ हरयतुल्लो पंचविहायारजुत्तो नाणादीहिं कारणेहिं साहूहिं सावएहि य सम्मं उवासिज्जति, आयारो पूर्वमधिकृत एव, स एव च सारो, गहियसारो य णाणाति णिव्वाणपज्जवसाणसारत्थिएहिं उवासिज्जति, अयं ता अज्झयणसंबंधो, सुत्तस्स सुत्तेण संबंधो एतं जहा भणितं–मोणं अणुवसमाणो आयरिओ भवति, भणियं च 'नाणस्स होइ भागी०' सो य बहुस्सुओ एवंविहो भवति, तंजहा–'से बेमि' (सू. १६९) 'से'त्ति णिद्देसे, अहवा सोऽहं एवंविह आयरियविसेसं उव ॥१८८॥

पंचम-अध्ययने पंचम-उद्देशकः 'ह्रद-उपमा' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[१६०-
१६५]

दीप
अनुक्रम
[१७३-
१७८]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१८९॥

ह्रदसाम्यं

लभ्य वेमि, तत्थ वतिरित्तो दव्वहरतो, परिगलणसोतो णाम एगो णो परियागलणसोतो पउमद्दहाति, परियागऊणसोतो णाम एगो णो परिगलणसोतो जहा लवणसमुद्दो, एगो परिगलणसोतोऽवि परियागलणसोतोऽवि जहा णीलवंतद्दहातिगंगाकुड एवमादि, एगो णो परिगलणसोतो णो परियागलणसोतो जहा बाहिरया समुद्दया सासयपुक्खरिणीओ वा, एवं सोतप्पवहे णाम एगे नोसोयपडियच्छए, सोतप्पडियच्छे णामेगे णो सोतप्पवहे, एवं सेसावि भंगा, पडिपुण्णो णाम आईयाराइपुण्णो, जे वा हरयगुणा तेहिं पडिपुण्णो, पसण्णतो यो जलएहिं उवसोभितो चिट्ठति 'समंसि भोमे चिट्ठती'ति णिच्चकालं सगुणेहि य पडिपुण्णो चिट्ठति, ण कयाइ सुण्णो जलजेहिं, उवसोभितो अणुतीरतरूहि य पत्तपुप्फफलच्छायोवएहिं 'समभोमे' समे भूमीभागे, ण गिरिसिहरे ण वा विसमे, सुहउयारउत्तारो य, ण सावएहिं सीहाइएहिं अनभिगम्मो, उवसंतरए अणेगपुरिसउवेहे, पसण्णपंको णिप्पंको वा सैवालरहितो, एगे भणंति—पउमातिरहितोवि, तत्थ सुहं दिस्संति पंककंटइणो जालाणिगला वा, यति आगासेण पक्खी गच्छति तस्सवि च्छाया दिस्सति, उवसंतरयत्ताओ य मच्छकच्छभे सारक्खति, ते ढंकादि जालगलातिए य दट्ठुं ण मज्जंति, तले वा लग्गंति, सारक्खमाणो इव सारक्खमाणो, से चिट्ठति, ण सव्वो णिग्गलते, 'सोयमज्झि'त्ति ततियो हरतो जत्थ सोताणि आगलंति परिआगलंति य तम्हा ण खिज्जइ पेज्जमाणो य दुपयचउप्पदापदेहि विगेहि य, एस दिट्ठंतो, अयं अत्थोवणओ—एवं सो गुरुकुलवासी आयरिओ जुत्तो पडिपुण्णो अट्ठविहाए गणिसंपयाए, तत्थ पढमो सोतप्पवहो ण तु सोयपडिच्छतो तित्थगरो, बितियो जिणकप्पिओ, ततिओ गणहराई, चउत्थो पत्तेयबुद्धो य, ततिएण अहिगारो, पडिपुण्णो सो य आयरियगुणेहिं चिट्ठति, माणा अवट्ठितायारो जगं जगं समासज्ज पडिपुण्णो, समभोमेत्ति आयरियभूमीए माहुभाविते खित्ते पउरण्णपाणसुहविहारे सुह-

॥१८९॥

प्रत
वृत्यंक
[१६०-१६५]

दीप
अनुक्रम
[१७३-१७८]

प्रतिपूर्णतादि

णिक्खमणपवेसे, इहरहा च ण सकति चोरादीहिं तत्थ गंतुं, जे तु पड्डिउक्कामा, अहवा सुत्तस्स तेणेव उवसंथारो पडिपुण्णो 'से पास सव्वओ गुत्तो' सेत्ति णिद्देसे, पस्सत्ति–बुज्झत्ति, सव्वओ गुत्तेत्ति–सव्वेहिं पडिपुण्णादीहिं हरदगुणेहिं उवसंथायरेयव्वो सव्वेहि इंदिएहिं गुत्ते य, से जाण लोए०, तत्थ महेसिणो गणहरा सोयमज्झट्ठिया, 'जे य पण्णाणमंता पबुद्धा' मिसं नाणमंता चोद्दसपुव्वधरा जे अण्णे गणहरवज्जा परंपरएण आगया आयरिया जाव अज्जकालं, बुद्धा ओहिमणपज्जवनाणिणो सुयधम्मे वा बुद्धा जे जहिं काले, ण पुण अव्वत्ता एगचरा वा वत्ता, जेऽवि ण जिणमादिट्ठा णाणाइं पावंति गुरुकुले वसंता ते सामायारीकुसला भवंति 'आरंभोवरय'त्ति अण्णाणकसायणोकसाय असंजमो वा आरंभो, उवरया णाम विरता, जे आरंभउवरता 'एतं संमंति पासह, 'कालकंखी परिव्वए' कालो णाम समाहिमरणकालो तस्स कालस्स कंखाए एवंविहसारजुत्ता गुरुकुलवासिणो सव्वओ वयंतीत्ति, बेमित्ति करणं अज्झायअज्झयणसुयखंधअंगपरिसमत्तीए भवति, इह उ पगरणसमत्तीए दट्ठव्वं, गतं आयरियपगरणं, इदाणिं सिस्सपगरणं आरब्भति, तत्थ अत्था तिविहा–सुरहिगमा दुरहिगमा अणहिगमा य श्रोतारं प्रति, तत्थ सुरहिगमेण अहिगारो, अणहिगमावि अवत्थू, दुरहिगमेसु तु 'वितिगिच्छासमावण्णेणं' (सू. १६२) तत्थ ताव दरिसणे संका भवति, जइ धम्मत्थिकायो गतिलक्खणो तेण णिच्चमेव गई भवतु, अधम्मत्थिकायो ट्ठिति तो य निच्चठाणं किं न भवति ?, आयरिओ भणइ–धम्मत्थिकायो न रज्जू जहा तहा कड्ढति, किंतु गतिपरिणतस्स उवग्गहे वट्टति मच्छजलवत्, एवं आगासत्थिकाएवि, जीवाइसु वा णवसु पदत्थेसु परियट्टंतस्स वा पडिपुच्छं अणुप्पेहं धम्मं वा कहेंतस्स एगपदे अणेगेसु वा वितिगिच्छा उप्पज्जेज्जा, किं अयं अत्थो एवं अन्नहित्ति, एवं संकिते ण लभते समाहिं, समाही णाम एगग्गं, तिविहा वा समाही, तत्थ सम्मद्दंसणसमाहीए अहिगारो, ते

॥१९०॥

आगम (०१)	“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) श्रुतस्कंध [१], अध्ययन [५], उद्देशक [५], निर्युक्ति: [२४९...], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक १६०-१६५]

प्रत
वृत्यंक
[१६०-१६५]

दीप
अनुक्रम
[१७३-१७८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥१९१॥

सिता-सितादि

पुण सिस्सा दुविहा—सिता य असिता, तत्थ सिता बद्धा, जं भणितं गृहस्था, असिया साहू, अबद्धा कलत्तातिपासेहिं, तेण हरतोत्रमेण आयरिएण कहिज्जंतं सियावि अणुगच्छंति असितावि, अणुलोमं गच्छंति अणुगच्छंति, एगदा कदा किंचि ण अणुगच्छंति एवं सेहतरावि केयि परियच्छंति, ते परियच्छया पायपडिया भणंति—अहो सुभासियं पेसलं च भणियं, तत्थ गाढं च अणणुगच्छमाणोवि चिंतेति—किं मण्णे आयरिया अणुयत्तीए भणंति ?, उदाहु परियच्छंतो भणंति, सो य पुण कदायि खमओ होज्ज पयणुकसाओ वा आयट्ठिओ चिरपव्वइओ साहू किं मन्ने अहं भवसिद्धीओ अभवसिद्धीओ ?, संजमभावोऽवि मे णत्थि जं अहं एतं फुडवियडकहिज्जंतं नाणुगच्छामि, तस्स सम्मत्तथिरीकरणत्थं आयरिओ भणइ—णियमा तुमं भवसिद्धीए, अभवियस्स एवं संकावि ण भवति—किं अहं भविओ अभविओ वा ?, किंच—‘बारसविहे कसाए खविए उवसामिए य जोगेहिं’ संजमो लब्भति, सो य ते लद्धो, तहेव दरिसणचरित्रमोहणीये तव खयोवसमं गते जेण सि सम्मत्तचरित्ताइं पडिवण्णो, जं पुण सम्मत्तेऽवि वट्टमाणो कहिज्जमाणं ण पडिवुज्झसि तं णाणावरणिज्जं ते कम्मं ण सुट्ठु खओवसमं गतं, जस्स उदएणं णिउणे पदत्थे ण बुज्झसि तत्थ इमं आलंबणं—‘**तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेदितं**’ (सू. १६३) अहवा सो तेसु अणुगच्छमाणेसु अणणुगच्छमाणो कहं ण णिव्विज्जे ? दरिसणातो ततो वा अधीतयातो, तत्थ इमं आलंबणं—‘**तमेव सच्चं णिस्संकं**’ अत्थि णं भंते ! समणावि णिग्गंथा संकामोहणिज्जं कम्मं वेदेंता०’ आलावो विभासितव्वो, तथा ‘वीतरागा हि सर्वज्ञा, मिथ्या न ब्रुवते वचः’ (यस्मात् तस्माद्वचस्तेषां, सत्यं भूतार्थदर्शनम् ॥१॥) एवमादीहि आलंबणेहि ण णिव्विज्जति, सा पुण तस्स वितिगिच्छा पव्वइयस्स भवति पव्वयंतस्स वा तेण वुच्चति—‘**सड्डिस्स णं समणुण्णस्स संपव्वयमाणस्स**’(सू. १६४) सड्ढा अस्स अत्थित्ति, समणुण्णो णाम पव्वज्जारुहो, समावयंतस्स ॥१९१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१६०-
१६५]

दीप
अनुक्रम
[१७३-
१७८]

संगतं वा जं तस्स, समियंति मण्णमाणस्स, संविग्गभावितो संविग्गाणं चेव सगासे पव्वइओ, एगदा कयाइ, अहवा एगभावो एगता पव्वज्जा, एगता गिहत्थेहि कसाएहि वा असंकप्पो, बितियस्स समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया भवति, सो संविग्ग-सावओ णिण्हगसगासे पव्वइओ, महुराकुंडइलाण वा, पच्छा णेण णातं, अविकोविओ वा उस्सन्नसगासे, पच्छा सो समोसरणा-दिसु पंथे वा मेलीणो पुच्छिओ दुट्ठु ते कतंति, जइ लक्खणा चेव पडिकमति तो से सो चेव परिताओ, अह पुण सयं ठाणं गंतुं परेहि वा चोदितो अच्छइ थोवं वा बहुयं वा कालं तो पुण उवट्ठाविज्जइ, ततिओ संविग्गभाविओ चेव असंविग्गाणं चेवंतेण पव्वयति, संकितो पुण मा हु एते णिण्हगा भवेज्जा, पव्वयामि ताव पच्छा जं भविस्सति, संविग्गेहिं संमिलीहामि, एवं पव्वइओ पच्छा यऽणेण णातं जहा एया णिण्हगा समोसरणादि सेसेसु संजएसु संभिज्जमाणे, पण्णवणाए वा आयारेण वा पच्छा आलोयए, पुणो उवट्ठाविज्जइ, चउत्थो भिन्नदंसणोऽभिसंकितचित्ताण चेव सगासे पव्वइओ, तं चेव से रुचितं, एवं दुहतोवि असमिता जाता ओसण्णाण वा, एते चेव चत्तारि भंगा दोसु ठाणेसु समोयारिज्जंति, तंजहा–समियाए य असमियाए य, आदिल्ला दोण्णि समि-याए इतरे असमियाए, तत्थ सुत्तं 'समितंति मण्णमाणस्स समिया वा असमिया वा होइ उवेहाए' इक्ख दरिसणे, उविच्च इक्खा उविक्खा, पढमस्स उवेहमाणस्स, बितिए पुण ते णिण्हए णाऊणं जं तव्वावारे उवेहं करेति, जं भणंतु तं भणंतु जं करेंतु तं करेंतु वा, जाव विसुद्धदंसणे साहू पासामि ताव आभोगं करेइ, मा मे एते णिच्छुभिस्संति, अहं च अव्वत्तो अज्जवि, ताहे सो पण्ण-विज्जंतो वा असमाणेसु उवेहं करेति, तस्स एवं सा असमिया एवं भवति उवेहाए, बितियविगप्पे तु असमियंति मण्णमाणस्स समिया वा असमिया वा समिया होइ उवेहाए, असमिया चेव भवति विकोविज्जमाणस्सवि सम्मदिट्ठिएहिं तेसिं पवयणे उविक्ख-

प्रत वृत्यंक [१६०-१६५]

दीप अनुक्रम [१७३-१७८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१९३॥

उपेक्षादि

माणस्स, जं भणितं असद्दहमाणस्स, ततियस्सवि संविग्गा एतेत्ति णचावि जया तस्स पडिकमियव्वे उवेहं करेंति तदा असमिया भवति, चउत्थो असमिओ चेव, तत्थ जो सो हरतो धम्मो आयरिओ तस्सिसो वा अत्तपारो (पण्णो) उवेहमाणो अणुवेहमाणो, जं भणितं-अपरिबुज्झमाणो, एवं उवेह, एवं एयस्स, एवं बुज्झ समियाएत्ति, अरूसंतो-अफरुसं भणंतं टंकणदिट्ठंतेण तात्र णाहेति जाव परिच्चाति, तदा तस्स ठाणस्स तं भवति णयणं, भणंति 'जट्ट चल्ल'त्ति, अगिलाए काले काले य पढमबितियादिपरीसहेहि अगिलायमाणस्स स एव अत्थो पुणो पुणो उव्वेहंतस्स '(तत्थ तत्थ) संधी झोसितो भवति''तत्थ तत्थे'ति वीप्सा, तत्थ तत्थ नाणंतरे दंसण० चरित्तंतरे लिंगंतरे वा संधाणं संधी दरिसणसंधिमेव, अयं 'जुषी प्रीतिसेवनयोः' अहवा, अहवा पदपादसिलोगगाहावृत्तउद्देसअज्झयणसुयक्खंधअंगसंधिरिति, जुसितं जं भणितं आसेवितं, सद्दहिता पत्तीता भवंति, अथवा सूत्रमिति संधितास्स, एवं सद्दहमाणस्स 'से उट्ठियस्स ठियस्स गतिं समणुण्ण' सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठितस्स गुरुकुले वसंतो गतिं समणुपस्सह, किं गतिं गतो ?, जहा कोयि रायसेवगो रायाणं आराहित्ता पट्टबंधं पत्तो, तत्थ लोए वत्तारो भवंति-पेह अमुगो कं गतिं गओ ?, एवं अब्भिंतरइस्सरियत्तणेण महाविज्जाए वा, इह हि आयरियकुलावासे वसंतो 'णीयं सेज्जं गतिं ठाणं णियमा(णीयं च आ)सणाणि या' एवं वट्टमाणो 'पूज्जा य से पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुता।' सो अचिरयकालेण आयरियपदं पावति पट्टबंधठाणीयं, अतो वुच्चति-उट्ठितस्स ट्ठितस्स, अच्चाओवि रिद्धिओ पावंति, सिद्धिगतिं देवलोगं वा, एवं पावित्ता पंचविहे आयारे परिकमियव्वं,'एत्थवि बालभावे' बाला, जं भणितं मूढा संकिया, यत्थ संकियभावे य अप्पाणं णो दरिसिज्जा, जोवि अण्णो बालभावो, तंजहा-भारहरामायणादि तेहिं पुव्वं भावियपुव्वो कुप्पावयणेसु वा वइसेसियबुद्धवयणमादिकविलादिएसु अविरतअवतअसंजयाण वतादिसु ॥१९३॥

प्रत
वृत्यंक
[१६०-१६५]

दीप
अनुक्रम
[१७३-१७८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥१९४॥

बाल-भावादि

वा अगुत्तिअसमितिसु वा अहवा अत्तो एगचरियाते णिण्हगत्ते एवमादि बालियभावो, निच्चता अप्पणो णत्थि पाणाइवाओ अपुण्णत्ता य, आगासदेसे वा णवि रुक्खोत्ति छेदो डाहे वा, अवतट्ठितस्स आगासस्स डाहच्छेदा ण भवंति, जहा णिच्चत्ता अप्पणो णत्थि पाणाइवाओ, तस्स अभावे न पुरिसस्स सीसंपि छिंदिता, बालियभावे अप्पाणं ण दंसेति, भणियं च—"न जायते न म्रियते" एवमादि, तम्हा हंतव्वं परियावेयव्वं उद्दवेयव्वं, ततो वुच्चति 'तुमंसि णाम तं चेव'(सू. १६५)तुमंसित्ति जो तुमं पत्रादी तहिं चेव अविरतित्ति, अहवा तुमंसि तंमि चेव काए अतिगतो असइं अदुवा अणंतखुत्तो हंमिहिसि, अन्नेहि वा जाव उद्दवेयव्वंति, अहवा छसु अण्णतरंसि कप्पति तेहिं चेव, एवं मुसावाए अलियं भासियव्वंति मण्णसि, एवं जाव परिग्गहे, अहवा तुमंसि णाम तंमि चेव अण्णुण्णमिच्छत्तविसयकसायभावे, तेण 'अंजु चेयं' अंजुरिति ऋजु—साधु, च पूरणे, एतं पदं हंतव्वादि पडिबुज्झतीए साहु, अहवा अज्जवभावेण, ण सढयाए भएण वा, तम्हा 'ण हंता णवि घातए' ण हंतव्वा सतं, घातएत्ति कारावणं च अणुमोदणा य दोऽवि गहियाइं भवंति, एवं 'अणुवेयणं अप्पाणेणं' अणु पच्छाभावे, अणुवेदणं अणुसंवेदणं, को अत्थो ?—जहा तुमो वेदावितो तहेव वेतितव्वं, अहवा समंता वेदिज्जइ अणुवेदिज्जइ, अप्पाणंति अप्पणा ते अणुसंवेदिज्जंति, ण तु अण्णेसिं वेतेसंति 'जंति हंतव्वं णाभिपत्थए' जंति जम्हा कारणा, हंतव्वं—मारेयव्वमिति, ण पडिसेहे, अभिमुहं पत्थए २। वितिगिच्छाहिगारो अणुयत्तइ, इमा वितिगिच्छा चेव सिस्सस्स—किं दव्वा गुणा अणण्णे अहवातो अण्णे ?, अहवा अणुसंवेदणीयं, भणियं च—अप्पाणेणं, वेदणाए णाणमेव, तं किं णाणं णाउं एगत्ते अण्णत्ते संतो संदेहो, लोगेऽवि केइ अण्णं दव्वं गुणेहिं इच्छंति केयि अणण्णं, अतो संसयाओ पुच्छा, जे आता से विण्णाता (सू. १६६) पुच्छाणुलोममेव वागरणं, जे आता से विण्णाता, णवि अप्पा नाणविन्ना- ॥१९४॥

प्रत वृत्यंक [१६०-१६५]

दीप अनुक्रम [१७३-१७८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ||१९५||

आत्म-प्रज्ञानादि

णविरहितो कोइ, जहा अणुण्हो अग्गी णत्थि, ण य उण्हं अग्गीओ अत्थंतरं, तेण अग्गी वुत्ते उण्हं वुत्तमेव भवति, तहा आता इति वुत्ते विण्णाणं भणितमेव भवति, विण्णाणे भणिते अप्पा भणितमेव भवति, एवं एतं गतिपच्चागतिलक्खणेणं, तंजहा–जीवे भंते! जीवे? जीवे २?, अण्णे भणंति–किं जे आता से विण्णाया? जे विण्णाया से आता? पुच्छा, वागरणं तु जेण वियाणति से आता, केण वियाणति?, नाणेणं पंचविहेणं वियाणति, तं च नाणं अप्पा चेव, ण ततो अत्थंतरं अप्पा, आह–जइ एवं तेण णाणबहुत्ते अप्पबहुत्तं एकेके अप्पाए, एवं दरिसणबहुत्तेवि अप्पबहुत्तं, जावतिया वा आभिणिबोहियनाणभेदा, एवं सुयनाण-ओहिनाणमणपज्जवनाणभेदा तत्तिया जीवा, तत्थ इमं अप्पबहुत्तसंकाए पडिसेधत्थं सिस्स! सुत्तं भण्णति–'तं पडुच्च पडिसंखाए' पडुच्चत्ति जं जं नाणं परिणमति अयं अप्पा तं तं पप्प तप्पक्खो भवति, अहवा घडपडादिणो य बहवो अप्पवत्तं पवत्तं, अणिट्ठं च एतं, जेण वुच्चति पडुच्च संखाए, जता घडणाणेण उवउत्तो भवति अप्पा तता व घडणेयं प्रति घडणाणमेव भवति अप्पा, एवं पडरहअस्सनाणमिति, सोतातिउवओगो वा जहा सोओवउत्तो अप्पा सोइंदियं भवति, एवं जाव फरिसिंदियमिति, भणियं च– "जं जं जे जे भावे परिणमइ" अतो य उप्पायवयधुवत्तं भवति जीवस्स, एतं पडुच्च पडिसंखाए, सव्वत्थावगं सुत्तं एयं, जं जं भवं नेरइयाइ भावं च उदइयादि धावगलावगादिकिरियाओ पडुच्च तद्क्खो भवति, पडनाणं च परिणतो पडनाणत्ते, ण उ घडाइ-उवओगा य पडनाणकाले, अघडनाणकाले य अघडियमेव, एवं सव्वदव्वाणं पडुच्च पडिसंखा उप्पातादयो आयोज्जा, तंजहा–सुवण्णं कुंडलत्तेण उप्पण्णं, गंथत्तेण विगतं, सुवण्णत्तेण अवट्ठितं, तहा परमाणू कालगत्तेण उप्पण्णो नीलगत्तेण विगतो, द्रव्यतया अवट्ठितो, एवं पयोगवीससापरिणामा योज्जा, 'एस आतावातो' अप्पणो अप्पणो वातो आतावातो, दव्वे नाणे वा आतोवयारं ||१९६||

प्रत
वृत्यंक
[१६६-१७१]

दीप
अनुक्रम
[१७९-१८५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ५ अध्य० ६ उद्देशः ॥१९६॥

काउं वुच्चति-एस आतावाते, सम्मं परियाए, परियाए णाम पज्जाओ, विविहं विसिट्ठं वा आहितो विआहितो, एवं उट्ठियस्स ट्ठियस्स गइं समणुपस्सह सिद्धान्तगतिं वा। पंचमस्याध्ययनस्य पंचमोद्देशकः ॥

एस एवाधिगारो-तिण्णि तिसट्ठा कुप्पावणियसया वज्जेयव्वा, गिहत्था अन्नउत्थिया वज्जेयव्वा, रागदोसा वज्जेयव्वा, अणंतरसुत्तसंबंधो तु सम्मं परियाओ वक्खाओ, इमंपि सम्मं वक्खति-अणाणा अणुवदेसो (सू. १६७) जं भणितं-अणुवयारो, तव्विवरीया आणा, अतो ताए अणाणाए सोवत्थाणं, सुट्ठुवट्ठाणं आणाए, अणुवट्ठाणं अणुज्जमो, एतं ते मा होतु, एतेण दोग्गइं गम्मइ तेण णिवारिज्जसि, तव्विवज्जयं कुरु, को य सो तव्विवज्जओ?, अणाणाए निरुवट्ठाणं, 'एतं कुसलस्स दंसणं' एतमिति जं भणितं, तद्दिट्ठीते-कुसलदरिसणदिट्ठीए, मुत्ती—सरीरं, तप्पुरक्कारो तस्सण्णि तंणिवेसणा पुव्वभणिता, 'अभिभूय अदक्खू परीसहे (सू. १६८) अभिभूय चत्तारि घाइकम्माइं अभिभूता, अदक्खू-एवं दिट्ठं भगवया, अणभिभूते तेहिं चेव परीसहोवसग्गेहिं अन्नतित्थिएहि य, पभु णिरालंबणं निरालंबणभावो, पभू णिरालंबणयाएत्ति, आलंबणं मोक्खो तस्स च आलंबणस्स पभू, अण्णं च निरालंबणं काउं पभू, 'से अहं अबहिमणो' जे इति णिद्देसो, अहमेव सो जो अबहिमणो-ण णिग्गयमणो संजमाओ सासणाओ वा पंचविहायारपयाओ वा अबहिल्लेसो, जति अण्णउत्थियाणं वेउव्वियाइरिद्धिओ पासति तहावि न बहीमणो भवति, छलवाते वा णिग्गहीतो ण बहिलेसी भवति, 'पवाएण पवायं जाणिज्जा,' पगतो वादो पवादो, अप्पएणं पवाएणं तिण्णि तिसट्ठाणि पावादियसयाणि जाणिज्जा-परिक्खिज्जा, परोप्परविरुद्धाणि एयाणि, तंजहा-ईसरेण कडे, अंडाओ, अग्गिसोमीयं, लोगमादीकतं, एवं परोप्परविरुद्धे पावादिए णच्चा सएण पवाएण णिगिण्हइ, णणु एवं परसिद्धंतदोसक्कहाए रागदोसा, भण्णति, जहा उप्पहमग्गं दरिसें-

आज्ञानाज्ञादि

॥१९६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

पंचम-अध्ययने षष्ठ-उद्देशक: ‘उन्मार्गवर्जन’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१६६-१७१]

दीप
अनुक्रम
[१७९-१८५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥१९७॥

कुवादादि

तस्स ण दोसो भवति, जहा अपत्थभोयणातो आतुरं णिवारंतस्स ण दोसो, एवं सएणं पवादेणं परवादे दुट्ठे दरिसेंतस्स ण रागदोसो भवति, ते पुण सो कुवादे कहं जाणइ ?, पुच्छति, सहसंमुइताते परवागरणेणं अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा, एतेहिं तिहिं कारणेहिं णच्चा 'णिद्देसं णादिवत्तिज्जा'दि (सू. १६९.) दिसणं देसो णिद्देसो, णातिवत्तए णातिचरति, मेहावी पुव्वभणितो, सयं भगवया सुट्ठु पडिलेहितं—विण्णायं, तमेव सिद्धंतं भागवतं तिण्हं उवलद्धिकारणाणं अण्णयरेणं उवलद्धिकारणेणं अभिसमागम्म,'सव्वतो सव्वताए' सव्वतो इति दव्वखित्तकालभावा, सव्वत्ताए सव्वभावेणं, बाहिएणवि अब्भितरएणवि कारणेणं, सम्मं एतं समभिणच्चा—समभिजाणिय,'इह आरामं परिण्णाय' इहेति इह सासणे, आ मज्जाताए, जावज्जीवं, आरामो तवणियमसंजमे वेरग्गे य परीसहोवसग्गे जओ रमति, दुविहाए परिण्णाए परिजाणणाए जाणित्ता पच्चक्खाणजाणणाए अणारामं पडिसेहित्ता तप्पडिपक्खभूते रमति, अच्चत्थं नाणादिसु लीणो अल्लीणगुत्तो सोइंदिएहिं, सव्वतो वते परिव्वए,'णिट्ठियट्ठी वीरे आगमेणं' ण एतीति णिट्ठितो, वीरो भणितो, आगमो अत्थो, तेणं पंचविहं सारं आगममाणे—उवलभमाणे आयरियमाणे, सुट्ठु परक्कमिज्जासि सोभणं वा परक्कमिज्जासित्तिबेमि, एवं आणाए णच्चा कम्मसुत्ताइं णिरुंधियव्वाइं, ताणि पुण सोयाणि कुतो भवंतित्ति ?, वुच्चति—उड्ढं (गा० १३) सोइंदियविसयकसाया य सोयाणि, उड्ढं कंखंति विसए दिव्वे णियाणं वा करेति, एवं अहे भवणवासी, तिरियं वाणमंतरा मणुस्सए कामे पत्थेइ णियाणं वा करेइ जहा बंभदत्तेणं, पण्णवगं वा पडुच्च उड्ढसोता चंदाइच्चगहताराविज्जुगज्जियादि तहा य गिरिसिहरपब्भारणितंबादिसु, अहो णदिपरिक्खिवगुहालेणादिसु, एते सोता वियक्खाता, जम्हा संगंति पासहा तम्हा तिविहप्पगारो सोयगणो, अभिहितो संगो, कम्मसंगं पस्स-बुज्झह, भणियं च—"सव्वओ पमत्तस्स भयं", सो य संगो रागद्दोसविसयकसायअट्टस्स ॥१९७॥

प्रत
वृत्यंक
[१६६-१७१]

दीप
अनुक्रम
[१७९-१८५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥१९८॥

भवति अतो भण्णति–“अट्टमेयं उवेहाए’(सू. १७०)रागदोसवसट्टं कम्मबंधगंठिं उवेहित्ता तेहिं अस्सवेहिं विवेगं कड्डेति, विवेगो णाम अस्सवदारपरिच्चाओ, पुव्वोवचियस्स कम्मस्स जहा विवेगो भवति तं पगारं करेति, वेदं वेदति वेदवी, तित्थगर एव, एगे आहु–‘एत्थ विरमिज्ज वेदवी’ ‘एताओ आसवदारगणाउ गाहोवदिट्ठाओ विरमज्ज वेदवी, विणएत्तु सोतं णिक्खम्म’ सद्दादीणि ताणि, ण सक्का सव्वहा उच्छिदेउं जे तेसु रागदोसोवाते ण कुज्जा, एगे आहु–‘विणएत्ता सोयं णिक्खम्म एस महं’ एस इति, जो य णिक्खंतो, महा पाहण्णे, मतीए वा, सासणे जं भणितं, णत्थि से कम्मआसवो, घाइकम्मक्खयाओ य अकम्मा भवित्ता जाणति पासइ कसिणं लोयं, जो जहा उड्डं सोयादीहि सो तहिं बज्झइ, कम्मबंधकडुयं च फलविवागं जाणइ पासइ, पडिलेहाए, स चेव नाणपडिलेहा, आणत्ति वा नाणत्ति वा पडिलेहित्ति वा एगट्ठा, णावकंखंति अतीते पुव्वरयकीलिगादि, अणागतेवि णिदाणकरणाइ, वट्टमाणे सद्दावसाए, णावकंखंति–न रागदोसेसु वट्टंति,‘आगतिं गतिं परिण्णाय’ आगति चउव्विहा, गई पंचविहा, जाणणापरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए तप्पायोग्गाइं परिहरति, एयाए चेव दुविहाए परिण्णाए ‘अच्चेति जाइमरणस्स वट्टमग्गं’ (सू. १७१) अतीव अतीति अच्चेतीति, जाई मरणं च जाईमरणं संसार एव जाइमरणं तस्स वट्टमग्गो पंथो, तत्थ वियप्पितसंमारपियविप्पयोगदारिद्दोभग्गादिसारीरादिदुक्खवट्टमग्गो संसारसोतं उत्तरइ, तं कहं अच्चेति ? कयरे च ते?–‘सवे सरा णियट्टंति ?, वक्खायरतो सुत्ते अत्थे य, भणियं च–‘जह जह सुयमोगाहइ०’ अपुव्वगहणं स्नतियं भवति, सव्वे सरा, सयं इंदियविसयं पप्प सरंति–धावंति, अतो ते तहिं वक्खायरए साहुंमि णियट्टंति, तव्विवागवियाणएहिं ‘सद्देण मत्तो०’कुत्थियपत्ताता वा सरा, ते वक्खायरते साहुंमि णियट्टंति–पडिहणंति, ण सक्केंति तं विप्परिणामेउं, किं पुण तं ?, वक्खति–धम्मत्थियकायाइ पंच अत्थि

विवेकादि ॥१९८॥

प्रत
वृत्यंक
[१६६-
१७१]

दीप
अनुक्रम
[१७९-
१८५]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥१९९॥

काया, जीवं ता अहिकिच वुचति–सव्वे सरा नियट्टंति, सव्वे पवाया तत्थ णियट्टंति, किमिति ?–'तक्का जत्थ ण विज्जइ' तक्का णाम मीमांसा, हेऊ मग्गो, ण य हेऊहिं परिक्खमाणो अप्पा सक्खं उवलब्भति घडो वा, जम्हा य एसो तक्कागेज्झो ण भवति तेण अत्थ चउव्विहावि मती ण गाहिता, उप्पत्ति उग्गहादि वा मती, केवलपच्चक्खो, 'ओओ अपतिट्ठाणस्स खेयण्णो' ओयेत्ति–एग एव जीवो अण्णं सरीरादि, अहवा केवलणाणं ओयं, अपइट्ठाणस्स खेयण्णोति सो य अप्पइट्ठाणो–सिद्धो, 'से ण दीहे ण हस्से ण वट्टे ण तंसे ण चउरंसे ण पडिमंडले' एतं संठाणं, 'ण किण्हे जाव सुक्किल्ले' एतं रूवं गहितं, 'ण सुब्भिगंधे ण दुब्भिगंधे' गंधो गहितो, 'ण तित्ते ण कडुए ण अंबिले ण महुरे' रसो गहितो, 'ण कक्खडे जाव ण लुक्खे' फासो गहितो, काउग्गहणेणं लेसाओ गहिताओ, अहवा ण काऊत्ति ण कायव्वं, जहा वेदिगाणं एगो पुरिसो खीणकिलेसो अणुपविसति, आइच्चरस्सीओ वा अंसुमंति, एवं 'णवि रूहि''त्ति रुह बीजजम्मणि, ण पुण जणेइ अग्गीदड्ढबीयं वा, ण संगे इति जहा आजीवणगे, "पुणो किड्डापदोसेणं से तत्थ अवरज्झति" 'ण इत्थिवेदगो' 'ण अण्णह'त्ति ण णपुंसवेदगो, किंतु केवलं 'परिण्णो सव्वओ' समंता जाणइ परिण्णा सव्वतो सव्वालक्खणो, (उवमा) ण विज्जति, जहा इदिएहिं एगदेसेणं णच्चति, णाणदरिसणमतो, उवमा ण विज्जति, जहा कंतीए चंदेण मुहस्स उवमा कीरति एवं ण संसारिएणं केणइ भावेणं सिद्धस्स सक्कति उवमं काउं तस्सुक्खस्स वा, भणियं च–"इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं" केवलं तु अरूवी, सतो भावो सत्ता, ण एवं अभावो पावति, 'अपदस्स पदं णत्थि'त्ति वुच्चति, अपदो हि दीहजाइओ, तस्स गच्छओ दीहं वट्टं परिमंडलं वा पदं णत्थि, एवं णिव्वाणस्स उवमा णत्थि, से ण सद्दे ण रूवे ण०' (सू. १७२) पुव्वभणितं तु, मुत्तदव्वाणं सदाइमंतं भवति, सो य तव्विहम्मिते, तस्स सदाइमत्तं ण विज्जति, इति परिस-

स्वरनिवृ-
त्त्यादि

॥१९९॥

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ||२००||

मत्तीए, एतावंतितित्ति तस्स परियाता एतावंति य परियायसेसा इति ॥ **लोगसारविजओ णाम पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥**

धूनना

संबंधो लोगसारे ट्ठितो कम्मं धुणति (२४९-२५०) पढमे णियगविहुणणा, जहा अतारिसे मुणी, बितिते कम्माण विहुणणा 'सुब्भि अहवा दुब्भि अहवा तत्थ भेरवा', ततिए उवगरणसरीराणं,धु णाति भिक्खू अचेलो परिवसितो तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवति-सुत्तं जाइस्सामि, सरीरे किसावाहा, चउत्थे गारवतिगस्स विहुणणा, **नियट्टमाणावि एगे आयारगोयर०** उवसग्गासंमाणो य पंचमे, संतेगतिया जेण लूसगा भवंति, अणुओगदारा चत्तारि, णामणिप्फण्णो धुवं, दव्वधुवं जं धुवति जहा चरंडी पसमगादि धुवति, हत्थीयो रुक्खं धुणति वाओ वा, फाली वा तत्थेव मले, भावधुणणा कम्मं तवसा धूयइत्ति, णामणिप्फण्णो गतो। सुत्तालावए सुत्तं **ओबज्झमाणो** (सू. १७२) संबुज्झमाणो णिबुज्झमाणो पबुज्झमाणो सत्थपरिण्णाओ आरब्भ जं भणितं जं च वक्खमाणं अणुत्तरं लोगसारं, तिविहं वा बोहिं, **'इह माणवेसु'** इहेति इह सासणे, इहं वा चरित्ते, माणवेसु आघाइं—अक्खाति, णरे, णराणं चेव, तिरिया ण सक्केंति अक्खाइउं, केरिसो अक्खाति ?, जस्स इमाओ जोणीओ, जाइओत्ति पगारा, ते य जीवादी णवपयथा अन्नतित्थियजाईओ वा, अहवा एगिंदियजाईमाईओ, सव्वग्गहणा दव्वखेत्तकालभावेसु अग्घाति, सेसाणि य संतपदपरूवणादीणि जहासम्भवंति, पडिलेहियाओ ताओ सुट्ठु पडिलेहियाओ सुपडिलेहियाओ, अग्घाति—अक्खाति, सेत्ति णिद्देसे णाणंति जहत्थोवलंभं, तं केरिसं ?, रलतोरेकत्वे (उवलंभे कायव्वे) असरिसं, तं च पंचविहं, अहवा असरिसं केवलणाणं तेण असरिसमेव सुयनाणं कधेति, दंसणं चरित्तं तवं विणयं च कहेइ आयरिओ, किट्टतेत्ति वा कहेतेत्ति वा एगट्ठा, अहवा आइक्खचविभागेहिं, किट्टतेत्ति पवेदेति, कीर्तिग्रहणा आइक्खति, व्रतसमितिकषायाणां धारण रक्षण, आयरिया विभागेहिं तेसिं चेव भेदं ||२००||

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

षष्ठ-अध्ययनं 'द्युत' आरब्ध:,

षष्ठं-अध्ययने प्रथम-उद्देशक: 'स्वजन विधुनन' आरब्ध:,

प्रत वृत्यंक [१७२-१८०]

दीप अनुक्रम [१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२०१॥

उत्थितादि

किट्टंति वत्ताणं धारणं पवेयणं तत्फलं नाणादिसु पजोएज्ञा, कस्स पुण सोवाते वा कहयंति ?, तेसिं चेव पराणं समुट्ठियाणं, समुट्ठाणं दव्वे भावे य, दव्वे पुरिसा अणुट्ठिता, इत्थियाओ उट्ठियाओ, भावे दोवि उट्ठियाइं उट्ठेउकामाणि वा, णिक्खित्तसत्थेसु, सत्थं छुरियादिव्वावारो, छिंदणा भिंदणा, अहवा णिक्खित्तदंडाणं पंच रायककुहा आरोहिता, जे य णिक्खमिउकामा तेसिं विसेसेण कहयंति, नाणादि ३ समाहियाणं, तिविहाय पज्जुवासणाए, कोति निक्खित्तदंडो ण य समाहितो जहा ओहाणुप्पेही अणुवयुत्तो वा, पण्णाणमंताणं—बुद्धिसंपण्णाणं, इतरे सुत्तत्थहाणी, ण य गिण्हंति, सति सण्णित्ते आयरियाणं इह गहणो, इह प्रवचने, मोत्तिमग्गो मुत्तिए मग्गो २ मुत्तेहिं वा अणुचिण्णो मग्गो सो, इणमेव णिग्गंथं पावयणं नाणादि वा मुत्तिमग्गो, मुत्तिनाम णिव्वाणं, जं भणितं सिद्धी, एवं एगे महावीरा, एवं एगे सुणित्ता, अविसद्दा असुणित्तावि पत्तेयबुद्धजाइस्सरणादि, अविय "दोहिं ठाणेहिं आता धम्मं लभिज्ञा-सोचा य अभिसमिच्चा य" वीरा भणिता, 'विपरकमंति' विविधेहिं पगारेहि जयंति-परकमंति, विधुणंति, अहवा परो-संजमो मोक्खो वा तत्थ परकमंति, परीसहा वा परकमंति, 'पासह एगे विसीदमाणे' पासहत्ति पस्सह, एगे पासत्थादि, सेलगवत् सीयंति, अहवा विविहं सीयंति नाणादि ३, जेहिं इह अप्पीकता पण्णा ते अत्तपन्ना ण अत्तपण्णा अणत्तपण्णा अपत्तपण्णा वा, अहवा अत्ता-इट्ठा अम्हत्तेण अप्पणो हितकरी पण्णा, किह पुण ते विसीदंति ?, जहा वा उवसग्गपरिण्णाए पडिलोमउवसग्गेहि य, कीवा वसगता केति सलिंगेसु चेव वट्टंता पाणाइवायाइसु वट्टंति, ते णो पुणो अभिलषंति माणुसादि, एतत्थं 'सोहं बेमि' सेत्ति णिद्देसे जहात्ति ओवम्मे 'कुम्मो'त्ति कच्छभो, हरतीति हरतो, किं हरति ?, बाहिरमलं, विविहं णिवेसियं चित्तं कच्छभस्स सयणादिसु हरते य, केरिसो पुण सो हरतो ?, घणसेवालेण वा पउमपत्तेहि वा पच्छन्नपलासो, जतिवि तत्थ दुपद- ॥२०१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२०२॥

कूर्मदृष्टान्तादि

चउप्पदा चरंति तोवि ण भिज्जइ, तस्स य कहिंचि देसे छिद्दं अत्थि, तेण सो कुम्मो जहिच्छाए एवं उम्मग्गं लद्धुं, उम्मग्गं णाम उमग्गणा छिद्दं, तस्स य चित्तं जायं-कहं णाम सव्वं सयणपरियणं इह आणेमित्ति एवेति, ण य तं उम्मग्गं लभति, एस दिट्ठंतो, अयं अत्थोवणतो-जीवो कुम्मत्थाणीतो, संसारत्थाणीओ हतो, पलासत्थाणीया कम्मा, उम्मग्गं माणुस्सादि ४ समतादि ३ साहू वा, ततो असंजमहरयाओ उत्तिण्णो विधुणणं काउमारद्धो, पुणो कीवो वसगतो गिहिगतो, णिव्विण्णो वि ण सक्केति संजमत्थं उम्मग्गं लभिउं, इमं अण्णं विसीदंताणं अणत्तपत्ताणं उदाहरणं-'भंजगा इव सण्णिवेसं' जं अुत्ति भूमीई ते जाता भंजगा, जहेति सण्णि विसं सत्थाणं छिज्जंतावि ण जहंति, एवं गिहवासदुःखेणं दारिद्दादिणा अभिभूतावि संता ण सक्केति पव्वइउं, किमंग पुण रायादी ?, अहवा दोण्हवि इमो उवसंधारोत्ति-'एवं एगे अणेगगोत्तेसु कुलेसु' एवमवधारणे, एगे ण सव्वे, अणेगगोत्तेसु मरुगादिसु, अहवा उच्चणीयेसु, उप्पवतिया समाणा रूवेसु गिद्धा सएसु पराएसु य, अद्धा(ड्ढा)ए गहिए चिंतइ-अहो अहं रूवस्सी, सद्दादिसु वा सत्ता रागदोसगता मातापित्ति एवमादिसु वा, तस्स असुहकम्मोदयस्स दोसेण णरगादिसु उववण्णा, ते वेयणाभिदुता कलुणं थणंति वा कंदंति वा सोयंति वा एगट्ठा, 'णिताणातो वा ते ण लभंति मोक्खं' णिदा बंधणे, णिदाणं कम्मं, अहवा कसाया णेहफासा, तेहिं णो लभंति मोक्खं, मोक्खो संजमो, एवं ते भोगणिमित्तं उण्णिक्खंता समाणा इमेहिं रोगायंकेहिं ण लभंति भोगा भोत्तुं, 'अह पास तेहिं तेहिं कुलेहिं जाता' अहत्ति अणंतरं, पास तेसु तेसु कुलेसु उच्चणीएसु, जाता संभूता, तंमि भवे अन्नंमि वा गंडी गलगंडीमादि, कोढी, कोढ अट्ठारसविहं, रायंसि खयवाही, अवमारितं अवफेरि, काणो देसकाणो, अण्णेसिं अंधलओ, झिमितो अलसयवाही, कूणि हत्थेण पाएण वा, कुज्जिता वामणो, उदरी जलोदरं, मूती मूयत्तं, सुतिया सूणसरीरा, गिलासिणी अग्गीउ वाही,

॥२०२॥

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२०३॥

चेवइ वलगत्तया, पीढसप्पी हत्थेहिं कट्ठे घेत्तुं चङ्कमंती, सिलवती पादा सिलीभवंति, मधुमेहणी वत्थिरोगो, ‘सोलस एते रोगायंका’ सोलसत्ति संख्या, एतेत्ति प्रत्येकं जे भणिता लभंते रोगा, एते चेव सोलस अक्खाया—कहिता अणुपुव्वसो—कमेणं, अणुपुव्वसो वा कस्सइ गब्भे कस्सइ जायस्स, कम्मुदओ वा अणुपुव्वो, अहवा रोगा वाइयादि ४, संयोगे सोलसभंगा, अहवा णं फुसंति— पावंति आगता अंगं संकामेन्ति आयंका, ते य सासकासादि, फासा दंसमसगादी सीयादयो वा, असमिते य णाम अप्पत्तपुव्वा, अहवा असममिता असमिता, असमिता णाम विसमा—तिव्वमंदमज्झा, अहवा फासा य असमंजसा—उल्लत्थपल्लत्था, अणिट्ठा य णाणापगारा, जया सीतं मग्गिज्जति तता उण्हं भवति, एवं सेसयावि आयोज्जं, ‘मरणं तत्थ सपेहाए’ मरणं तत्थ समिक्खिज्ज, वसद्दा जं मरणं च रोगायंका, अवि घातं उवहारादीहिं मारिज्जंति, अत्थि केति सुत्ता चेव मरंति, गब्भंमि मरंति केइ, कोयि पुण जायमित्तओ मरति, मारेति मायरं कोयि, मरंतीए समं तीए जातस्स धुवं मरणं, तम्हा उम्मग्गं लभिऊण पुणो तहिं चेव रोगायंकेहिं सुअं परियट्टियव्वं, अहवा सव्वस्स अंते मरणं भवति, कोइ भणिज्जा—देवाणं णत्थि मरणं, तत्थ णिदरिसणं पुरिल्लसुत्तं भविस्सति, जंमणमरणग्गहणेण तिरियमणुया गहिया, सव्वा देवा नारगा य, मरणंताण य अंधलतिरियमादीणं दुक्खं उप्पज्जति, किमंग पुण देवाणं ?, तत्थ सुत्तं—‘उववायं चयणं च णच्चा’ उववायायाओ चयणं, दोण्हं मरणं तिरियमणुयाणं, उव्वट्टणा नेरइयभवणवासिवाणमंतराणं, उववाओ सव्वदेवाणं, चयणं जोइसियवेमाणियाणं, जति ता अंधलगमादीणं अद्धिती दुक्खं च मरणाओ उप्पज्जति, कथं देवचक्कवट्टीमादीणं चवणमरणकाले दुक्खं ण भविस्सइ ?, जम्हा एते पज्जाया सपेहाए, रोगायंकमरणोववायचयणादीणं, राया भवित्ता दासो भवति, ‘पलिपागं च’ पलियं कम्मं पलिपागो कम्मस्स जाव न भवति तं सपेहाए ‘तं सुणेह जहा’ ॥२०३॥

रोगातंकादि

प्रत
वृत्यंक
[१७२-
१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-
१९३]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२०४॥

अंधादि

तमिति कम्मस्स णिद्देसे, सुणेध जहा तत्थ णं जहा तहा, अहवा जहा कम्माणि तहा विवागो, 'संति पाणा अंधा' अगमा नरएसु णिच्चंधतारतिमिसेसु अपेच्छंता, एगिंदियविगलिंदिया वा, जेसिंपि चक्खुइंदियं अत्थि तेवि बुद्धीविहीणा एवं चेव दट्ठव्वा, भावे वा मिच्छदिट्ठी, अंधा तमं पविट्ठा० आलावतो, तमंपि दुविहं–दव्वतमं अंधगारो, भावतमं मिच्छत्तादिओ, 'तमेव सइं असइं' कम्मं सइं किच्चा से असइं–अणेगसो 'अतियच्च' पविसित्ता असुभत्थाणाइं उच्चावते फासे अणेगप्पगारे सीतउसिणे सुभासुभादओ अहवा दीहकालट्ठिइओ उच्चावया सातासाता, महती ठिती कायट्ठिती भवट्ठिती वा दीहकालिया पडिवेदेंति, 'बुद्धेहिं एयं पवेदियं' णिच्चं आत्मनि गुरुषु बहुवचनं, नाणादिबुद्धेहिं तित्थगरादीएहिं, णाणमणेलिसं, साधु आदितो वा वेदियं पवेदियं, जहा उद्दिट्ठ-कमेणं जं च वक्खति 'संति पाणा वासगा रसगा' वासंतीति वासगा–भासालद्धीसंपण्णा बेइंदियादि वासगा, रसगा णाम जे जिब्भिंदियलद्धिसंपन्ना, तित्ता तित्तादिरसे उवलभंति, किमिगजलोगराजगादी, केयि रसगा चेव ण तु वासा, एगिंदिया ण वासगा ण रसगा, बेंदियत्तेऽवि सति केइ णिव्वासिया ण वासगा भवंति, रसआसादलद्धी पुण सव्वेसिं, सावि कस्सइ उवहम्मति, एवं जस्स जति इदिया ते भावेयव्वा जाव पंचिंदियतिरिया, तेसिंपि केसिंचि उवहताणि इंदियाणि, बुद्धि सरीरं वा, अहवा 'बुद्धेहिं एयं पवेदितं– संति पाणा वासगा रसगा' संति तिसुवि कालेसु छक्काया, ण तुच्छिज्जंति, पाणिणो इति वत्तव्वे सरीरे आओवतारं काउं पाणा वुच्चंति, वासंतीति वासगा, कोइलमदणसलागसूयादि, तत्थ तु जे जस्स गुणो सो तस्स विणासओ काउं, वासितदोसेणं पंजरत्था सइरपता-रवियोगाओ णिरोधाईणि दुक्खाणि अणुभवंति, रसिता रसगा महिसवराहमिगससगतित्तिर बद्धाति, उदते उदगचरा, मच्छगकच्छभमगर गाहा (   ) सुंसुमगा ते दुविहा–संमुच्छिमा गब्भवक्कंतिया य, उदगचरत्ति जे थलेवि जाता उदगे चरंति ते उदगचरगा,

॥२०४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२०५॥

प्राण-क्लेशादि

जहा महोरगा, एतेसिमं थले चरा वुतिया, केइ जले जाता थले विचरंति जहा मंडुक्कादि, बेइंदियादि संखणगादि, चिक्खल्लजलेवि जाता उभयचरा भवंति, जाखिणो चिक्खल्लजलयरा भवंति, केइ उभयचरा, आकासगामी आगासेण गच्छइ पक्खिणो, ‘पाणा पाणे किलेसंति’ ते सव्वेऽवि पाणा पाणे तुल्लजातिए अतुल्लजातिते वा बाहिं अंतो य किलेस्संति, तंजहा–केइ उवहणंति केइ संघट्टंति जाव जीवियाओ ववरोविन्ति, देवनारगाणं केवलं सारीरं माणसं च वेयणं उप्पाइंति, णो उद्दवेंति, ओरालियसरीरे परोप्परं संघट्टंती जाव उद्दवेंति, तं एतं ‘पास लोए महब्भयं’ लोगो छज्जीवनिकायलोगो जहुद्दिट्ठकमेणं, जहुत्तरोगादि जाव वासगा य, णो पाणे किलेसेन्ति, महंतं भयं महब्भयं, जं भणितं मरणं, तं एवं णच्चा मा हु तुमं कच्छभसरिसं काहिसि, किं भयं ?–‘बहुदुक्खा हु जंतवो’ बहूणि जेसिं दुक्खाणि, जं भणितं बहुकम्मा, जो भणितो रागादिकमो पच्छा संसारकमो, तंजहा–वासगा रसगा, एतेणं बहुकिलेसा बहुदुक्खा, जायंतीति जंतवो, कम्मोदयाओ वा जहा कच्छुल्लो कच्छुं, एवं ‘सत्ता कामेहिं माणवा’ सत्ता मुच्छिता, अप्पसत्थिच्छाकामेसु मदनकामेसु, मणो अवच्चाणि माणवा, लोगसिद्धं, अबलेण वधं गच्छंन्ति ण तस्स बलं विज्जतीति खुधतिसासीतउण्हदंसमसगरोगवहादिपरीसहहता अबलेणं छेवट्ठसंघयणेणं, केण छुहादिपभंगुरेण करणभूतेण तप्पगारेण वहं एगेंदियादीणं सत्ताणं जाव पंचिंदियाण तितिरादिणं, कंखंति पत्थंति गच्छंति एगट्ठा, एवं मुसावायं जाव परिग्गहं, सरतीति सरीरं, भिसं भंगसीलं पभंगुरं, तेण छुहादिपभंगुरेण सरीरेण वहं कंखतीति वट्टइ, अहवा अबलेण वहं गच्छंति, सरीरेण पभंगुरेण, जुद्धादिअसहं अबलं, तब्बलणिमित्तं अहंमं काउं वधो–संसारो तं गच्छति, केण ?–सरोरेण पभंगुरेण, अहवा अप्पेणावि दुक्खेण भज्जति अप्पभंगगुणं, एवं ‘अट्टे से बहुदुक्खे’ अट्टो पुव्ववण्णिओ रोगायंको वा, सो एवं अट्टो दुक्खउवसमणिमित्तं कायवहे पसज्जति, जतो ॥२०५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-१९३]

वुचति 'इति बाले पकुवइ' इति–एवं, जेण अट्टो रोगायंकेहिं रागदोसेहिं वा तेण दोहि आगलितो बालो भिसं कुव्वइ, जं वुत्तं पाणा पाणे किलेसंति.जोगत्रिककरणत्रिकेण, पढिज्जइ य 'इति बाले पगब्भंति' पाणाणं किलेसादि करेंतो पगब्भं गच्छति, जं भणितं धारिट्ठं, तंजहा–को जाणइ परलोगे, परलोगरूवस्स ण बिभेति, जातो एवं आतुरो रोगपडिगाराय पाणा पाणे किलेसंति 'एए एते रोगा बहुं मचा' जहुद्दिट्ठकम्मेणं 'गंडी अहवा कोढी सूलसीसरोगा य आयंका, बहु इति वातादिसमुत्थाणं रोगायंकाणं अट्ठुत्तरसयं, तेसिं उदयेण आतुरो भवति, अहवा खुधतिसासीतउण्हाइएहिं विसेसेणं णिचं आतुरे सत्ते, वातातिसमुत्था रोगा सविसयलद्धअवगासा परियावंति, ण य ते उप्पण्णे कोइ णियत्तेउं समत्थो, तेण वुचति 'णालं पासं' णो इति पडिसेहे, अलं णिवारणे, णो तेसिं उप्पन्नाणं सयणो अलं निवारणाय, भणियं च–"सयणस्सवि मज्झगओ०" णाणादिभेदसज्झं सव्वं कम्मं, रागाण उवसमणं तत्थ जइयव्वं, ण तु वातादिरोगउवसमे कज्जं, परमं णिव्वाणं, तं कंखंतेणं 'एवं पस्स' दट्ठूण य तहा करेहि, अहवा जं वुत्तं पाणी-पाणा किलेसंतित्ति, भट्टारओ भणइ–मा हु तुमं एयं तं दुक्खं निवारणपजत्तं उस्सेज्जासि वहकंखणेणं–वहपत्थणेणं, ण य रोगेसु पडिगारपवित्तस्स कम्मासवस्स अलं भवति, अट्ठविहं कम्मं एगपाणिवहे बज्झति तं जहा भणितं एतं पास, अत एव 'अलं तवेतेहिं' अलं निवारणे, अलं च कंखापसत्ताणं, अहवा अलं च तव, संजमे व सव्वदुक्खविमोक्खाय, अहवा विसया रोगा, एते बहुविसयरोगे सद्दफरिसादि, अहवा बहुत्ति इट्ठाणिट्ठे णचा–जाणित्ता, आतुरा अप्पत्ता विप्पयोगे वा समंता उवेह, इह परत्थ य ताव परितावए, किंच–एतेहिं णालं तस्स, णवि विसएहिं सेविज्जमाणेहिं अलं भवति, भणियं वा–तणकट्ठेण व अग्गी लवणजलो वा णदीसहस्सेसुं। ण तिसा जीवस्स (सका, तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥१॥) जतो य विसएहिं तित्ती णत्थि तेण

प्रगल्भादि

प्रत वृत्यंक [१७२-१८०]

दीप अनुक्रम [१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ||२०७||

धुतवादः

अलं विसयासेवणयाए, उवदेस–एतं पासह 'तं पास मुणी' एतदिति जं भणितं रोगादि कम्मेणं दुक्खं भवतीति तप्पडिगारणिमित्तं च वासगारसगादिपाणा पाणे मुसावायाइसु त पसज्जए, तं एतं पस्स, जं च अण्णं, भणितं च–गंतुं गंतुं सीहो पुणो पुणो मग्गओ पलोएइ। सुत्तत्थीवि हु एवं गतंपि सुत्तं पलोएति ॥१॥ मुणेति मुणी, हे मुणी, महंतं भयं महब्भयं, विचित्तकम्मफलविवागं संसारं, तब्भया पाणादिवायातिउज्झी, ण इति प्रतिषेधे, पतिवयणं प्रतिवातो, किंचिदवि तसं थावरं वा जोगत्रिकेण करणत्रिकेण वा जाव परिग्गहं जहुद्दिट्ठकमेण य 'आजाण भो' अचत्थं जाण, भो आमंतणे, जं करणीयं ण वा, अहवा जं भणितं वक्खमाणं च एतं अत्थं जाणह–पासह सद्दहह, सोतुं इच्छा सुस्सूसा धूणणोवायजाणत्थं गुरुकुलणिवासी जं इमं णियगधुणणाहिगारे वट्टमाणे 'धुयवायं पवेदइस्सामि' धुयं भणितं, धुयस्स वादो धुव्वति जेण कम्मं तवसा, भणियं च–"जं अण्णाणी कम्मं खवेइ बहुयाहि वासकोडीहिं०।" णागज्जुणीया 'धुतोवायं पवेदइस्सामि' जेण कलत्रमित्तादि अहवा पसंगं, पव्वज्जं उवेज्ज कम्मं धुणति तं उवायं साहु आदितो वा वेदितं पवेदितं, पुण केइ पढमेण पव्वज्जसत्तेण धुणंति कम्मं, केइ बितिएणं जाव अट्ठमेणं, एतेसिं च सव्वेसिं इमो चरित्तलाभोवातो,'इह खलु अत्तत्ता तेसु तेसु'इहेति इह मणुस्सलाभे, अत्तभावेण अत्तत्ताए उववज्जंति, ण तु अन्नो उववायंतो कोइ इस्सरो पयावई वा, सो उववज्जमाणो अत्तत्तेण उववज्जइ, णत्थि भूतधातुपच्चयासंघातमित्तमेव, 'तेसु तेसु'त्ति उत्तमअहममज्झिमेसु, जेहिं पुव्वं सामन्नं कयं सायगत्तं वा, मिच्छादिट्ठी वा पयणुकम्मा, (अभिसएण) अभिसंभूता तत्थ अभिसेगो सुक्कसोणितवातो तया उववण्णमित्ता तत्तुल्ला भवंति, ततो अभिसेए भूता 'सत्ताहं कललं भवति०' अनुपातो आरद्ध जाव पेसि ताव अभिसेयभूता, अभिसंजाया च पिलगादिकमसो अंगं उवंगं णारुच्छिरासीसरोमाइकमेणं अक्खता, अभिणिविट्ठा ||२०७||

प्रत वृत्यंक [१७२-१८०]

दीप अनुक्रम [१८६-१९३]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥२०८॥

पराक्रमादि

पभूता, अभिसंबुद्धा जाव अट्ठवरिसाओ आरब्भ सतिवरिसेणं देसूणा वा पुव्वकोडी, अभिसंबुद्धा तित्थगरा, सव्वे अभिसेगकाल एव संबुद्धा, सेसावि केई अपडिवडितेणं सम्मत्तेणं गब्भं वक्कमंति, केसिंचि गब्भट्ठाणं जाइसरणेणं उप्पज्जइ, पसूयाण वा बालत्ते जाव वुड्डत्ते अभिणिक्खंता, कम्माभिमुहा णिक्खंता अभिणिक्खंता, अणुपुव्वेणं जो एसो आदि उवक्कमो उवदिट्ठो, महंतं जेण मुणितं जीवादि वा सो महामुणी, 'तं परक्कमंतं परिदेवमाणा' तं ते च साहुं आदिओ वा कम्मंति अब्भुज्जयविहाराय मोक्खं वा माता-पितामादि णातिगा देवणं-कंदणं, मा णे जहाहि इति ते वदंति, 'छंदोवणीला' छंदो-इच्छा, छंदा उवणीया छंदेण वा उवणीतं, जं भणितं-अण्णोण्णवसाणुयत्तं, अज्झोववण्णा तेहिं तेहिं संबंधिविसेसेहिं कारोवकारविसेसेहि य मुच्छिता-गिद्धा गढिता अज्झोववण्णा, अच्चत्थं कंदो अक्कंदो, तेहिं उवसग्गविसेसेहिं अक्कंदं कुव्वंति अक्कंदकारी, जणंतीति जणगा, मम पिया बंधवा रोयंति, रुदंता य एवं भणंति-'अतारिसे मुणी' उद्धं णवि ओहं-संसारसागरतारी मुणी भवति जेण जणगा पगतं जढा विविहं जढा विजढा भावितं अणुरत्ता कुयमाणा दीणदुम्मणमाणसा 'णाह ! पित कंत सामिय०' एवमादि, अहवा अतारिसो ण तारिसो, मुणी णत्थि, जेण किं कयं ?-जेण जणगा विप्पजढा, अहवा अतारिसो पोतवहणं णावाभूतो अप्पणो परेसिं च संसारसमुद्दतरणाय जणया दुच्चता जेण विप्पजढा 'सरणं तत्थ से णो समेति' सरंति तमिति सरणं, तत्थ-बंधुगणे, ण णवि, सो तं अणुरत्तंपि बंधवगणं सरणमिति समत्थं समं वा, ते इति समेति, जह ते मम परलोगभया सरणं भविस्संति एवं ण समेति, अहवा सरीरादिपरित्ताणाए जह वुत्तं तेहिं ण सो संसारं तरति, जणगा जेण विप्पजढा, एतप्पगारं अणुलोमं उवसग्गं ण सरणं समेति, जहा मम मातापितिमादि, एवं दुक्खपरित्ताणाए भविस्सति, किं ?, न रमणीयो गिहवासो जेण सो ण रमति, गिहवासे किं धम्मो णत्थि ?, भणियं च-

॥२०८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१८०]

दीप
अनुक्रम
[१८६-१९३]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ३ उद्देशः ॥२०९॥

'या गतिः क्लेशदग्धानां०'ततो वुचति-विसयतिसियाणं अयाणगाणं एतं आलंबणं, जाणओ पुण 'किह णाम से तत्थ रमति' किहमिति परिपण्हे, कहं णाम सो णिव्विण्णकामभोगो पव्वइओ व संतो पुण गिहवासे रमति धितिं वा करेति?, "पुत्रदारकुटुंबेषु, सक्ता सीदंति जन्तवः। सरःपङ्कार्णवे मग्ना, जीर्णा वनगजा इव ॥ १ ॥" एवमादि, एतं से जं भणितं एयं धुणाविहाणं, एतं नाणं नाम अवितहं उवलंभो, अणुगतं अणुकूलं आयरियसमीवेऽणुवसाहिऽणुवासिज्जासित्ति बेमि। षष्ठस्याध्ययनस्य प्रथमोद्देशकः समाप्तः।

आतुर-लोकादि

उद्देसाभिसंबंधो स एव धुणणाहिगारो अणुयत्तति, तत्थ पढमे णियगा विधुया, बितिते कम्मविहुणणं भण्णति, ताणि दुक्खं धुणिज्जंति, तदत्थमेव नियगा विहुणिज्जंति, सुत्तस्स-किं णाम सया सरणं समेति अपरे चत्तदोसे जाणंतो पस्संतो, इमं च अन्नं जाणति पस्सति, तंजहा-आउरं लोगमादाय, किंच-एतं जं भणितं, एतं णियगविहुणणं, एतेण य संमं अणुवासिज्जासि, इमं च अण्णं, तंजहा-आउरं लोगं, अत्थत्थं तरतीति आतुरो, मातापितिमादि सयणलोगं, केण आउरं?, ओहेण आउरं तव्वियोगे, तेहिं तेहिं कज्जेहिं परिहायमाणेहिं आतुरं, तमादाय-तं घेप्प, जहिच्छाया संबोहणत्थेवि, अहवा तमादाय-तं घेत्तुं, बुद्धीए आतुरं लोगं णाणेण आदाय, जहित्ता पुव्वमायतणं-आयतणट्ठाणं-आसयो "गिहाणि धनधान्यं च, कषाया विषयास्तथा। कत्थो वाऽसंयमो ह्येते, सर्वमायतनं नृणां ॥१॥" 'हिच्चा उवसमं इह पव्वाहि वा' आदिअक्खरलोवा अहिच्चा, इहत्ति अस्मिन् प्रवचने, इहेति मणुस्सलोए, इह वा इहं अज्झयणे, उवसमणं उवसमो-संजमो, जो वा जत्थ पिइं करेंति से तस्स उवसमति, 'वसित्ता बंभचेरंसि' तं संजमो सत्तरसविहो, वसित्तु वा पालित्तु वा एगट्ठा, तं च बंभचेरं बितितं से णामं चारित्रं, अहवा संजमो दुहा भवति-से वसुमं ॥२०९॥

षष्ठं-अध्ययने द्वितीय-उद्देशकः 'कर्मविधुनन' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[१८१-
१८४]

दीप
अनुक्रम
[१९४-
१९७]

वसति जेहिं गुणो सो वसु, अणु पच्छाभावे थोवे वा, “वीतरागो वसुर्ज्ञेयो, जिनो वा संयतोऽथवा। सरागोऽनुवसुः प्रोक्तः, स्थविरः श्रावकोऽथवा ॥१॥” ‘जाणित्तु धम्मं अहा तहा’ सुणेत्तु धम्मं सुयधम्मं चरित्तधम्मं च, दसविहो वा, तं णच्चा, अहा तहत्ति तहा तहत्तिकाउं चिरं अप्पं वा कालं ‘अहेगे तमचाई कुसीला’ अधेति अणंतरिए, एगे, ण सव्वे, तमिति तं वसुं संजममियरं वा, अचाई णाम अचाएमाणा, जं भणितं-असत्तिमंता, कुच्छितं सीलं तमिति कुसीला, परिण्णालोवातो कुसीला, किं पुण जं अन्नं करिस्संति? केइ वा वण्णलिंगत्तणेणं अच्छंती, केइ लिंगं छड्डेंति, ये लिंगं मुयंति तं पडुच्च वुच्चति, तत्थ–‘पडिग्गहं कंबलं पादपुंछनं विउसज्ज’ वत्थं सुत्तियकप्पा पडिग्गहो–पादं कंबलगहणेणं उण्णितकप्पासिता गहिता, पादणिज्जोगो वा, पादपुंछणं रयहरणं, एवमादि, विविहं उसज्जा कोयि सावओ भवति, कोत्ति दंसणओवि, भविस्सति वा गिही कुलिंगी वा, कहं?–तो दुल्लभं लभित्ता चरित्तं ण अचंतं अणुपालितं, ते तु परीसहेहिं पराइया, ते य ‘अणुपुव्वेणं अणाहियासेत्ता’ अणुपुव्वी णाम कमो, (परिसहणंति वा) अहियासणंति वा एगट्ठा, परीसहा ते य एवं अणुपुव्वेणं ण अहियासिज्जंति, सद्दं सुणेत्ता तत्थ मुच्छति, तं वा प्रति अभिसर्प्पति, ण य से अव्वावारं करेइ, तदुवरमे य तदेव अणुस्सरति, एवं दुरधियासा भवंति, जाव फासा, एवं अणिट्ठेसु दोसं करेति, जहा सो खुड्डओ सुगओ जातो, एवं दुरधियासेज्जा, अणुपुव्वेणं अणहियासेमाणे पच्चावि यातुरं लोयं हिच्चा हि पुव्वमायतणं वसु अणुवसुत्तं वा पावित्ता पडिभज्जंति ‘कामे ममायमाणस्स’ अप्पसत्थिच्छामदणकामा, माणुसए तिविहे अधिज्जं कामेमाणस्स, तस्स हि पत्तकामस्सवि सतो अणेगे पच्चवाया भवंति, किं पुण जस्स ते ण चेव संति?, अहवा अहिकामे चक्कवट्टिबलदेववासुदेवकामे एवमादि, जो पुण धुणिज्जति–उप्पज्जाविज्जइ सो णियाणंपि करेमाणो ण उत्तिमे पुरिसो भोगे तंमि भवे पावति, तस्स कामभोगकारणस्स

वसुत्वादि

॥२१०॥

प्रत
वृत्यंक
[१८१-
१८४]

दीप
अनुक्रम
[१९४-
१९७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२११॥

उत्प्रव्राज-
नादि

जीवियस्स अंतराइयं भवति, किं पुण कामा ण सेवियव्वा ?–'इदाणिं वा मुहुत्ते' इमंमि काले इदाणिं, पव्वतंतो कोइ उप्पव्व-
अइ य, मित्तो वा जीवियाओ विहणति, वातादि अण्णतरे वा, रोगेण आसुकारिणा तं मुहुत्तस्स, कोयि तद्दिवसं कंडरीओ वा,
अहोरत्तसत्तरत्तस्स अद्धमास जाव कोडी एवं अपरिमाणाए, एतेणं तस्स परिमाणं ण विज्जति, भेदो जीवसरीरप्पा, अहवा अपरिमा-
णाए उवक्कमेणं अणुवक्कमेणं वा ण णज्जति कहं गमणमिति, उवक्कमेवि सति ण सो उवक्कमविसेसो णज्जति जेणं मंतव्वमिति, तंजहा–
'अज्झवसाणणिमित्तं जीवा बंधंति दारुणं कम्मं०' गाहा ॥ डंडकससत्थरज्जु०।'एवं से अंतराइएहिं' एवमधारणे, अवधारणा-
देव हि सअंतराया कामा, जति से केति पुव्वुज्जुत्ता अह तहा रागादि वा कम्मं काउं उवज्जेत्ता कोद्दवकूरासिणा साणियापउत्तेणं
पलालसाइणा वा, सो एवं तेसिं णिप्फलो दिक्खापरिच्चागो, ण य गृहं ण य परलोगो, साहूणं पुण जति णाम अण्हाणाइ दुक्खं तहावि
तप्फलं, धम्मं णं चरमाणस्स, सफला जंति राइओ।'अकेवलिएहिं' केवलं-संपुण्णं ण केवलिया–असंपुण्णा, मणुस्सेसु ताव पेह-
ज्जणे परोप्परेण कामभोगा छट्ठाणपडिया, ततो मंडलियस्स अणंतगुणा, बलदेव वासुदेव चक्कवट्टि अणंतगुणा, कमसो चक्कवट्टिस्स,
माणुसस्स वा केवलाण य पडिभग्गो समाणो मंडलियाईणं चउण्हं ठाणाणं एगतरंपि आराएति, रज्जं णाम कोइ आरातिज्जा, जहा
कंडरीओ, ते तु अकेवला, ते सव्वकामभोगे तु पडुच्च से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे० तस्स पुरिसस्स काम-
भोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणं मंडिलयबलदेववासुदेवचक्कवट्टिवाणमंतरजोइसिय जाव अणुत्तरोववाइयाणं, तेसिं केवलं 'अवितिण्णा
चेव' विविहं तिण्णा वितिन्ना ण वितिण्णा अवितिण्णा, वेरग्गेण एते कोइ तिण्णपुव्वो तरति वा तरिस्सइ वा, जहा अलं मम तेहिं,
च पूरणे, एते मणुस्सकामा, एवं दिव्वादि, आतुरं लोगमादाएत्ति जाव तहत्ति अहेगे तमचाई, पमादो उवदिट्ठो जाव इमं सुत्तं ॥२११॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१८१-१८४]

दीप
अनुक्रम
[१९४-१९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२१२॥

अप्रमादादि

अवितिण्णा चेते। इदाणिं पुण अप्पमादो सहिते-धम्ममादाय जाणि प्पमादसुत्ताणि भणिताणि तंजहा अहेगे तमचायी० एताणि विवज्जतेण पढिज्जंति, अत्थआसवातो तंजहा-अहेगे तं चाई सुसीले वत्थं पडिग्गहं अविउसज्ज अणुपुव्वेणं अहियासमाणो परीसहे दुरहियासओ कामे अममायमाणस्स, इदाणिं वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे, एवं ता अंतराइएहिं कम्मेहिं वितिण्णा चेते, एयाओ आलंबणाओ कामे अणासेवमाणे 'अह एगे धम्ममादाय' एवं अप्पमादेणं पमादो अंतरिओ उवदिट्ठो, भणियं च-“यस्त्वप्रमादेन तिरो प्रमादः, स्याद्वापि यत्नेन पुनः प्रमादः। विपर्ययेणापि पठंति तत्र, सूत्राण्यधीगारवशाद् विधिज्ञाः ॥१॥ एतं अण्णोण्णमणुगता अहिगारवसेणं, अधिगे, अधेति अणंतरं कामो उवदिट्ठो, एगे, ण सव्वे, रागदोसमुक्का एव एगे जइणं धम्मं आदाय, जं भणितं गिण्हित्ता, अहवा सुयधम्मं चरित्तधम्मं च, केरिसो सो-धम्मो ?, वुच्चति-अणेलिसं, केच्चिरं कालं ?, तेण वुच्चति-आदाणपभती आदीयत इति आदाणं-नाणादि, अणुवसुप्पभिंतिं वसुप्पभितिं वा, अण्णहावि पढिज्जति-सहिते धर्ममादाय, आदाणपभितं, सुपणिहिते-सुट्ठु पणिहितं सुपणिहितं, जं भणितं-सुप्पणिहितेंदियो, उवदेसमेव चर अपलीयमाणे दढे, चर इति उवदेसो, धम्मं चर, अप परिवज्जने, लीणो विसयकसायादि, तेण सत्तुहवल्लीणओ, जो जहारोवियभारवाही, अदढं जस्स खइयं कुडुंबा उद्देहिया खइयं वा कट्ठं दुब्बलं, बलियं खइरसारादि, भावो दुब्बलो धीईए संघतणेण वा दढो, तेहिं चेव सव्वं गंधं परिण्णाय, सव्वं निरवसेसं गंधो गेही कंखत्ति इति वा एगट्ठं, दुविहाए परिण्णाए सएण महामुणी, एस इति जेण गेही परिण्णाता, भिसन्नतो पणतो, धम्मं वेरग्गं इंदियं वा भावधुणणं, पणतो महंतं मुणेति संसारं, पहाणो वा मुणी, सो एवं महामुणी आसएण ते महामुणी अतियच्च सव्वओ संगं अतियच्च अतिकम्मं, सव्वं सव्वत्थ सव्वहा सव्वकालं, संगो णाम रागो, अहवा कम्मस्स संगो, ण महं ॥२१२॥

प्रत
वृत्यंक
[१८१-
१८४]

दीप
अनुक्रम
[१९४-
१९७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णि:
॥२१३॥

एकत्वादि

अत्थित्ति ण पडिसेहे ण मे कोइ अत्थि जो इहं जरामरणरोगपरित्ताणाए, किं परलोए ?, जहा धणे उवज्जिते अन्नेऽवि भोत्तव्व-सहाया लब्भंति, ण एवं कम्मउवज्जियस्स अण्णे वेयणसहाया लब्भंति, इति एगो अहमंसि जयमाणे इति एवं णचा एक्को अहं, मे ण कोयि, पिहं कम्मं विवागाणं, तेण एव जा परिव्वइत्तं, सयणसाहुसहाओ य, रागदोसवज्जितो एगल्लविहारी वा, कम्म-विधुणणाधिगारो अणुयत्तइ, अतो लोगमादाय आरब्भ जे एत्थ कुसीलादिदोसा भणिता तत्थ ट्ठिता एत्थ विरए अणगारे एत्थंति एत्थ कम्मविधुणणे विसयकसायविरागलक्खणे, णत्थि से अगारं अणगारे, सव्वओ मुंडे रीयंते, दव्वमुंडे सिरसा भाव-मुंडे इंदियमुंडो, तंजहा 'सद्देसु य भद्दयपावएसु०' एवं कसायमुंडोऽवि कोहस्स उदयनिरोहो विफलीकरणं वा, रीयमाणा अणियतविहा-रेणं, कोयि सो जे अचेले चिणंति तं चिज्जं, एवं चेलं दव्वे भावे य, दव्वे तित्थगर असंतचेलो, भावे रागदोसविजओ, सेहावि चेलेहिं अचेला संविक्खमाणा ओमोदरियाए संमं विक्खमाणे संविक्खमाणे, दव्वभाव उमोदरियाए, भावे अप्पकोहे अकोहे वा, से अकोहे य, हते व लूसिते वा अक्कुद्धो वा, एवं हते च हतो वा अट्ठिमुट्ठितलकोप्परादीहिं, लूसितेति उम्मुसितेत्ति, उम्मुएण जो अंकिओ, अणुवसुतेणं भंगो वा लूसितो वा हत्थे पादे वा, तत्थ अकोसा धुते णेव भवंति, तंजहा—पलियगंथे, पलियं णाम कम्मं, सो य कम्मजुंगितो पव्वइओ, ण तहा, कट्ठहारो वा, देसं वा पप्प णिल्लेवगादि णिक्खमंति, सो य केणइ सयक्खेण परीक्खेण वा असूयाए पगडं वा पगंथति, असूयाए ताव णाविअणिल्लेवगो तणहारगो, पगडं तुमं तणहारओ तहावि ण लज्जसि ममं सह विरुज्झ-माणो, सरीरजुंगिते वा सूयाएवि अहं काणो कुंडो वा पागडं कोढिग कुज्जो वा, एवं ओरालाहिं भासाहिं पगंथंति, अहवा पगंथ० अदुवेती अन्नेह चेव जगारसगारेहिं भिसं कंथमाणो पगंथमाणो, अहवा अदुवेति, एगे एक्कसिं दो वारे, एवं ताव केइ णिक्खंता

॥२१३॥

प्रत
वृत्यंक
[१८१-१८४]

दीप
अनुक्रम
[१९४-१९७]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥२१५॥

उविच्च धम्मं आयरियसमीवं उवसमस्स वा समीवं, कामादितिसच्छेदाओ उवसंते, नज्झोसमाणेत्ति 'जुषी प्रीतिसेवणयोः' तं जहोद्दिट्ठं झोसमाणे–फासेमाणे, एवं झोसंतस्स के गुणा भवंति ?—आदाणीयं परिण्णाय आदिज्जति आयत्ते वा आदाणीयं, जं भणितं–संसारबीजं पलियं भणियं, तंजहा–प्रलीयते भवं येन०, आदानमेव पलितं, परियाओ णाम सामण्णपरियाओ, नाण-दंसणपरियाओ, दीहेण वा अप्पेण वा परियाएणं, विगिंचइ विसोहेति अवकिरति छड्डेति, पिहीकीरमाणं णिज्जरा, णिज्जरत्ति वा तवोत्ति वा एगट्ठा, तत्थ बाहिरब्भंतरतवो अधिकृत्य वुच्चति, तत्थ इतरा इतरेहिं तत्थत्ति तत्थ साहुविहारपायोग्गे गामे णगरे णिवेसे, इतरा इतरं इतरेतरं, कम्मो गहितो, ण उद्धइयाहिं देसीभासतो वा जं अब्भंतरं वुच्चति, इतरा इतरं जंतवो विणिकट्ठतरं जाव दमगकुलं, एवमितरा इतरं इतरेतरं भवति, कुच्छिते सलतीति कुशलं, सो य एवं चरति, सकेसणाये सव्वेसणायो सुद्धे-सणाए अलेवकडाए, चत्तारि उवरिल्ला, एताओ गच्छणिग्गयाणं, तत्थ पंचसु अग्गहो अभिग्गहो अण्णतरियाए, सव्वेसणाएत्ति गच्छवासी सव्वाहिंवि गिण्हंति, से मेहावी परिव्वए स इति जो सो आदिआदिसुत्तेहिं उवदिट्ठो तंजहा, उद्धुअमाणो णियते धुणित्ता, कम्मधुणणाए उवट्ठितो, मेहाए मेहया धावति, परि समंता सव्वओ ते गामादीणि, अहवा जावंति सगच्छो नाणिएहिंतो परिव्वए सुद्धेसणा परिव्वयमाणो, समणुण्णं वा लद्धं इतरं वा अतो सुब्भि अहवा दुब्भि, सुरभिगहणा गंधादिहीणं, अहवा सुद्धे-सणाए सव्वेसणाए से परिच्चागो गहितो, सुब्भि अहवा दुब्भि, गंधकामपरिच्चागो भणितो, एवं इंदियाहिगारे, अहवा तत्थ भेरवा अहवा तत्थ विहरंतस्स भयाणगा भेरवा सद्दा गहिता अक्कोसा, तद्यथा–णिब्भत्थणादि, एवं रूवाणिवि भेरवाइं भवति, जहा 'तस्स पिसायस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–सीसं से गोकिलजसंठाणसंठिती', गंधात्ति अहिमडादि उव्वेयणया,

उपरत-जोषितादि

॥२१५॥

प्रत
वृत्यंक
[१८१-
१८४]

दीप
अनुक्रम
[--]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२१५॥

उपरत-
जोषितादि

उविच्च धम्मं आयरियसमीवं उवसमस्स वा समीवं, कामादितिसच्छेदाओ उवसंते, सज्झोसमाणेति 'जुषी प्रीतिसेवणयोः' तं जहोद्दिट्ठं झोसमाणे—फासेमाणे, एवं झोसंतस्स के गुणा भवंति ?—आदाणीयं परिण्णाय आदिज्जति आयत्ते वा आदाणीयं, जं भणितं—संसारबीजं पलियं भणियं, तंजहा—प्रलीयते भवं येन०, आदानमेव पलितं, परियाओ णाम सामण्णपरियाओ, नाण-दंसणपरियाओ, दीहेण वा अप्पेण वा परियाएणं, विगिंचइ विसोहेति अवकिरति छड्डेति, पिहीकीरमाणं णिज्जरा, णिज्जरत्ति वा तवोत्ति वा एगट्ठा, तत्थ बाहिरब्भंतरतवो अधिकृत्य वुच्चति, तत्थ इतरा इतरेहिं तत्थत्ति तत्थ साहुविहारपायोग्गे गामे णगरे णिवेसे, इतरा इतरं इतरेतरं, कम्मो गहितो, ण उद्धइयाहिं देसीभासतो वा जं अब्भंतरं वुच्चति, इतरा इतरं जंतवो विणिकट्ठतरं जाव दमगकुलं, एवमितरा इतरं इतरेतरं भवति, कुच्छिते सलतीति कुशलं, सो य एवं चरति, सकेसणाये सव्वेसणाय्यो सुद्धे-सणाए अलेवकडाए, चत्तारि उवरिल्ला, एताओ गच्छणिग्गयाणं, तत्थ पंचसु अग्गहो अभिग्गहो अण्णतरियाए, सव्वेसणाएत्ति गच्छवासी सव्वाहिंवि गिण्हंति, से मेहावी परिव्वए स इति जो सो आदिआदिसुत्तेहिं उवदिट्ठो तंजहा, उद्धुअमाणो णियते धुणित्ता, कम्मधुणणाए उवट्ठितो, मेहाए मेहया धावति, परि समंता सव्वओ ते गामादीणि, अहवा जावंति सगच्छो नाणिएहिंतो परिव्वए सुद्धेसणा परिव्वयमाणो, समणुण्णं वा लद्धं इतरं वा अतो सुब्भि अहवा दुब्भि, सुरभिगहणा गंधादिहीणं, अहवा सुद्धे-सणाए सव्वेसणाए से परिच्चागो गहितो, सुब्भि अहवा दुब्भि, गंधकामपरिच्चागो भणितो, एवं इंदियाहिगारे, अहवा तत्थ भेरवा अहवा तत्थ विहरंतस्स भयाणगा भेरवा सद्दा गहिता अक्कोसा, तद्यथा—णिब्भत्थणादि, एवं रूवाणिवि भेरवाइं भवति, जहा 'तस्स पिसायस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा—सीसं से गोकिलजसंठाणसंठिती', गंधावि अहिमडादि उव्वेयणया,

॥२१५॥

प्रत
वृत्यंक
[१८१-
१८४]

दीप
अनुक्रम
[१९४-
१९७]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२१६॥

उपरत-जोषितादि

भयं करेंतित्ति भेरवा, रसा तत्थेव, फरिसावि छेदभेददाहादि, जहा 'ततो मंससोल्लए विउव्वित्ता तेण उसिणेण मंसेण सोणितेण तत्र गायाइं आयंचामी', जहा संगमएणं भगवतो ते भेरवा उवसग्गा कया, कामदेव एवमादि, पाणा पाणा किलेसंति पाणा सीहा वग्घा पिसायादि, पुणरवि पाणाओ पाणादि, जं भणितं भैरवा प्राणा, साहुस्स आउप्पाणादि, किलेसंति—परितावेंति वा किलेसंति वा उद्वेंति वा इति किलेसो, ते फासे पुट्ठो धीरो त इति ते भेरवा इट्ठाणिट्ठा, फुसंतीति फासा, धीमां धीरो, समं अणाइले अणुव्विग्गो वासीचंदणकप्पो, अहियासिज्जासेत्ति, अहवा सुद्धेसणाए सव्वेसणाए मेहावी परिव्वए भिक्खायरियाए, तत्थ वण्णिज्जइ भिक्खाणिमित्तं सुब्भि अहवा दुब्भि जं लभते, तत्थ सुब्भी सुगंधं, आघाय अहो गंधो णाम अग्घाइज्जा, दुब्भिगंधे वावि ण दोसीणादिणा दोसं गच्छिज्जा, चंमाररत्थाए व वोलेंतो णासियं आवरिउं ण तुरियं गच्छिज्जा, अहवा तत्थ भेरवत्ति जति णं कोइ अडंतं तासिज्जा अक्कोसिज्ज वा सद्दा भेरवा रूवावी पडिणीता आयुधउग्गिरणादि, पंजरसंकलाओ वा फिडिता सीहवग्घवारणादि अभिभविज्जा, गंधा भणिता, रसावि तत्थेव, फासावि तालणउच्छोलणादि २, एवं पाणा तस्स साहुस्स पाणे किलेसंति, ते फासा पुट्ठत्ति तेहिं फासेंहिं पुट्ठा, ते वा फासे फुसित्ता अहियासिज्जासित्ति बेमि, अहवा सुब्भि एतं सम्मं अणहियासमाणो भेरवेहिं पुट्ठो सम्मं अणहियासमाणो पाणा पाणे किलेसंति, रुस्समाणो रागदोसेहिं अप्पाणं संकिलेसति, इह च परलोए य अणाराहगा भवंति, जतो एवं तेणं ते फासे पुट्ठो सम्मं अहियासिज्जा पुरिसुत्ति धुताध्ययने द्वितीय उद्देशः ॥

संबंधो पढमे णियगविधुणणं, बितिए कम्मविधुणणं, ततिए उवगरणसरीराणं धुणणं, ताणि कहं विधुणाति ?, तेसु ममत्तं छिंदति, णियगविधुणणाओ कम्मविधुणणं अब्भिंतरतरं, ताओ ममत्तं अब्भिंतरतरं, ततिए विधुणति, एसो अत्थसंबंधो, सुत्तस्स सुत्तेणं—ते ॥२१६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

षष्ठं-अध्ययने तृतीय-उद्देशक: ‘उपकरण-शरीर विधुनन’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१८५-१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-२००]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२१७॥

आदानादि

फासे पुट्ठो अहियासे, इयं च एयं अहियासिज्जति—एस मुणी आदाणं, एवमिति जं भणितं वक्खमाणं वा, मुणी तित्थगरो, एसा ताव तित्थयराउ आणा आगता, नवि रायाभिओगो नवि बलाभिओगो, अहंपि तित्थयराणं आणाए तह उवदिसामि नियगविधुणणं कम्मविधुणणं च, इमंपि तस्स आणाए भणामो उवगरणसरीरविहुणणं वत्थविसेसगरुयआए, एसा ते जा भणिता वक्खमाणा य, मुणी भगवं, सीस्सामंतणं वा, आणप्पत इति आणा, जं भणितं उवदेसो, अहं वा एतं मुणी ! आदाणं, इमं इति जं भणितं वक्खमाणं वा, मुणी तित्थगरो वा आमंतणं वा, आमंतिज्जति, आताणं—आयाणं नाणादि तेयं, जं भणितं भावविहूणणं, कत्थ एतं ?, सया सुयक्खायधम्मे, सया सव्वकालं, तित्थगरभत्तीए संसारभीरुत्तेण य जहारोवियभारविस्सामवाहिणा सुट्ठु अक्खातं सतासुयक्खायं, आणाइ वट्टति, सव्वण्णत्ता वीयरायत्ता य मया सुअक्खायं, धम्मो पुव्वभणितो, धुणणाधम्मो वा, केरिसो सो ?, विधूतकप्पणिज्झो, सति ता विधुतो कप्पोत्ति वा मग्गोत्ति वा आयारोत्ति वा धम्मोत्ति वा एगट्ठा, रागादिकिव्विसधुणणाकम्मविहूणणा वा विधूयकप्पो, विधूतं वा जेण कम्मं तेण तुल्यो विधूतकप्पो, गणहराओ पण्णवणिज्जे भावे मतिकेवलिणो अक्खरलद्धीए तुल्ला, णियतं णिच्छितं वा झोसइत्ता, अहवा 'जुसी पीतिसेवणयो' णियतं णिच्छियं वा झोसइत्ता जं भणितं णिसेवति, तो फासइत्ति पालइ, तीसे पुण गच्छवासी गच्छणिग्गतो वा, इमं पुण सुत्तं गच्छनिग्गयाणं, तंजहा—**अचेले परिवुसिते** चिज्जतीति चेलं, अचेलभावो णग्गयभावो. पुव्वं ता सो संतअचेलभावो परिवुसितो, अचेलत्ते को गुणो जेण ते दुरज्झवसेयंपि अज्झवसिज्जति ?, **तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवति** तस्स अचेलस्स 'परिजुण्णे मे वत्थे सुत्तं जाइस्सामि, सव्वओ जूर्णो अंतो मज्झे य परिजुण्णं वत्थं, इमं सीतं उवट्ठितं, तं कहं करेस्सामि ?, एवमादि णिमम्मस्स अज्झवसाणं ण भवति, एवमादि विसोत्तिया ण भवति, सुत्तं जाइ- ॥२१७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१८५-१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-२००]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२१८॥

संधानादि

स्सामि ततो संधिस्सामि, संधणा दोण्हालीणं, अहवा छिण्णस्स वा फालियस्स वा, उक्कसणं णाम हीणपमाणं णाउं पासेहिं दिग्घत्तेण वा वड्ढति, तस्सेवऽवकरिसणं वा, मसिणं णियंसणं णियंसिस्सामि, उवरिं पाउरणं, पडिग्गहधारिस्सवि अचेलस्स जो पादणिज्जोगो सो तं अहागडं चेव मग्गति, तस्स जइ जुण्णेहिं जुण्णेहिं अइमग्गतो, तहावि से अपरिकंमोवहित्ता ण एवं भवति—सुत्तं जाइस्सामि, जोवि अचेलो तस्सवि एवं ण भवती—परिजुण्णे मे वत्थे, किं कारणं ?, सो याणिं हेमंते समतिक्कंते परिट्ठविउकामो चेव उवगरणं, पडिग्गहधारिस्स पादणिज्जोगो सो तं अहागडं चेव मग्गति, तस्स जइ जुण्णेहिं मग्गति तहवि तस्स अपरिकम्मोवधिविहारित्ता एवं ण भवति—सुत्तं जाइस्सामि सूतिं जाइस्सामि संधिस्सामि उक्कसिस्सामि वोक्कसिस्सामि, पाउरणसहियस्सवि अन्नत्थ अपाउरणो भवति, हेमंते सिया पाउरणो, अहवा तत्थ परक्कमंतं—अत्थितिगामादिसु परक्कमंतं अचेलत्ता अणच्छुरणसेज्जासाइणं तणफासा फुसंति, दब्भ-कुसादि तणादि विंधंति वा फालेंति वा, अवाउडं च सिसिरे अवायसीतफासे फुसंति, वत्तव्वयं बहुवयणं तं जाणवेइ, तिव्वमंदमज्झि-माणि, तहा रुक्खसीयं सतुसारं चेव, तेउफासावि फुसंति, तेजो आदिच्चो, तेजो मंतो, तेजो तेजस्स संफासा तेउफासा, जं भणियं—उण्हफासा, गिम्हे सरते य, पुणो अवाउडं डंसमसगफासा फुसंति, तज्जातीया य मंकुणपिसुगादि, एगतरे—अण्णतरे, अत एव जे उद्दिट्ठा एगतरा अविसिट्ठा परीसहा, खुहा तिसा अचेल अरतिमादि, अहवा एएसिं एगतरो, एगतरो इतर एव, विरूवरूवफासे अहियासेइत्ति विविधं रूवं विरूवं २ रूवं जेसिं ते विरूवरूवा, फासंतीति फासा—परीसहा, गहिता कसिणा तज्जातीया य, उव-सग्गे अहियासेमाणे—सहमाणे, अचेले—णिचेले, कयरेण बलेण ? भावबलं अहिकिच्च वुच्चति—लाघवियं आगमेमाणे—लघुत्तं लघुभावो वा लाघवंति, दव्वे सरीरे उवगरणे य, भावे अलुद्धत्ता, भावलाघवित्थं उवगरणलाघवेणं अहिगारो, तं आगमेमाणे— ॥२१८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१८५-१८७]

दीप अनुक्रम [१९८-२००]

श्री आचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥२१९॥

लाघवादि

आसेवमाणे, तं अप्पाणं परिसयमाणे, भदंतणागज्जुणा तु 'एवं खलु से उवधारणलाघवियं तवं कम्मक्खयकरणं करेति', उवगरणलाघवाओ भावलाघवं, भावलाघवाओ य उवगरणलाघवं, अतो अण्णोण्णं, अविक्खित्ता अविरोहो, एवं भावलाघवाओ कम्मलाघवं कम्मलाघवाओ पसत्थं भावलाघवं अतो अविरोहो, ततो सिद्धं लाघवितं आगंम जओ तवे सो, अतो ताहे से अभिसमण्णागते भवति, ताहेत्ति, तप्पति वा जेण सो तवो, अभिमुहं सं अणु आगते अभिसमण्णागते, जं भणितं–सम्मं उवलद्धे, दव्वोमोदरिया तवे से अभिसमण्णागते भवति, कहं अभिसमण्णागते भवति ?, से जहेयं भगवया पवेदितं से इति णिद्देसे उच्चारणत्थं वा, जहेति जेण पगारेण, जं च भणितं–'पंचहिं ठाणेहिं अचेलगे पसत्थे' भगवया तित्थगरेणं साहु आदितो वा वेइयं पवेदियं सिस्साणं, किमिति ?–अचेलतं विहुणणं, तमेव अभिसमिच्चा तमिति जहा वुत्तं उवगरणलाघवं आहारेऽवि तं एतं जहा जत्थ य पडिवज्जइ तं अभिमुहं पुव्वं अभिसमेज्जा, तं आयरए य, कत्थ अभिसमेति ? कया कहं वा इति ?-भण्णति–सव्वओ सव्वत्ताए सव्वओ इति सव्वं उवदेसं सव्वहिं खित्ते सव्वहिं काले सव्वे भावे इति, णागज्जुणिया उ 'सव्वं चेव सव्वकालंपि सव्वेहिं' एवं विसेसेति, दव्वे सव्वं उवगरणं आहारं वा, सव्वत्थ गामे अगामे वा, सव्वता दिता राइं वा, तहा सुभिक्खे दुब्भिक्खे वा, सव्वभावेण सच्चभावेणं, णवि कइयवेणं परपच्चगा वा भयाओ मायाए वा, इह तु सव्वओ खित्तं गहितं, सव्वत्ताए सव्वअनुयायी भावो गहितो, जं भणितं–ण कल्लेण, तज्जाइयाणं एगग्गहणा दव्वकाला गहिता, सम्मं तमेव समभिजाणित्ता पसत्थो–सोभणो एगो संगतो वा भावो संमत्तं, प्रशस्तः शोभनश्चैव, एकः संगत एव वा । इत्येतैरुपसृष्टस्तु, भावः सम्यक्त्वमुच्यते ॥१॥ सम्मं अभिजाणित्ता समभिजाणित्ता, अहवा समभावो सम्मत्तमिति, जेवि एते अचेलगत्तं ण भावेंति तेवि अचेलगत्तं फासंति, ॥२१९॥

प्रत
वृत्यंक
[१८५-१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-२००]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२२०॥

अचेलत्वादि

जं भणितं–ण अवमन्नंति, भणियं वा 'जोवि दुवत्थ तिवत्थो' गाथा ॥ जिनकप्पिओ पुण जति एक्केणं संथरति एक्कं चेव धारेंति, परेण वा तिण्हं गच्छवासी, गच्छणिग्गया पुण तिण्णि वा दुण्णि वा एक्कं वा धारेंति अचेलभावा, सव्वेऽवि ते भगवतो आणाए उवट्ठिता–आणाए आराधगा भवंति, एवं सेसाणं वत्थाणं वा, तहा सचेलाणं अचेलाणं च आराहणं प्रति सम्मत्तं समभिजाणमाणे आराधओ भवतीति वक्कसेसं, एवं तेसिं महावीराणं एवं एतेणं पगारेणं, ण अण्णहा, तेसिमिति वसूणं अणुवसूण य, सोभणि वीराणं, विदारयति यत्कर्म० अरहंताणं, महावीरस्स अवच्चाणि महावीरा, जं भणितं–तस्सिस्सपसिस्सा, चिरं बहुयं, चिरा राईओ जेसिं पुव्वाणं वरिसाणं च ताणि चिररायाणि पुव्वाइं वासाइं पुव्वाइं पुव्वाउएहिं, मणुस्सेसु आसि पुव्वाउया मणुस्सा, जाव सीतलो ताव आसी, भणियं च–"एगं च सयसहस्सं पुव्वाणं आसि सीयलजिणस्स" तेणारेण वाससयसहस्साउया, भणियं च–'एगं च सयसहस्सं संतिस्सवि आउयं जिणवरस्सा' तेणारेण सहस्साउगा जाव अरिट्ठवरनेमी, दोसु जिणेसु वाससयाउया, एवं चिरपक्खाति चिरमासाइं, चिरमासाइं चिरउदूणी चिरया यतणाइं, अहवा चिरराइं, जं भणितं जावज्जीवाए, रीयमाणाणं–विहरमाणाणं, दव्वरिया कुंभारचक्कु रीयति, 'आइट्ठ भमर' गाहा, तेसिं भगवंताणं महावीराणं अप्पसत्थेसु दव्वादिसु भमंतकुलालचक्कं वा ण भावो चिट्ठति, कालेण कहंचिवि पडिबुज्झति, कहं णाम रत्ती भवे दिवसो वा ? तहा सुभिक्खे खेमादि, एरिसो वा कहं ण होज्जा ?, भावतो सद्दादिसु ण रागं दोसं वा करेति, एवं दव्वादिसु अपसत्थ रीयमाणाणं जं भणितं–ण तेसु अवत्थाणं करेति, पसत्थेसु उत्तरोत्तरं पगरिसेणं रीयमाणदव्वभूयाणं पास अहियासियं जहा दिग्घकालं पुव्वाणि वासाणि तेण फासादिदुक्खं अहियासियं फासियं पालियं तीरियं किट्टियं आणाए अणुपालियं तं एवं प्रकारं तेसिं अहियासियं पासह वसुत्तेण अणुवसुत्तेण वा, सद्दहाहि ॥२२०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१८५-
१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-
२००]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२२१॥

पत्तियाहि रोएहि, आगतपण्णाणं आगतं–उवलद्धं भिसं णाणं पण्णाणं, परोवदेसाओ सुयं तेणं आगतं, आगमितं गुणियं च एगट्ठा, आभिणिबोहियं तग्गयमेव, पच्चक्खाणाणि आयसमुत्थाणि पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणाहिं उप्पज्जंति, तं एवं तेसिं तं आगमं आगमेंताणं पुव्वगहियं वा गुणंताणं णिच्चसज्झाओवओगाओ अन्नेण य अब्भितरेण बाहिरेण वा तवेण अप्पाणं भावेंताणं किसा बाहा भवति 'एगग्गहणे तज्जाइयगहण'मितिकाउं अन्नंपि सरीरं किसीभवति, अतो वुच्चति–येन कतेण ते मंससोणिए भिसं तणुते, येन णयंतस्स रुक्षाहारस्य अप्पाहारस्स पायसो खलत्तेणेव आहारो परिणमति, किंचि रसीभवति, रसाओ सोणियं, तंपि कारणअपत्ता एते तणुयमेव भवति, सोणिते पतणुए य तप्पुव्वगं मंसंपि तणुईभवति, एवमेयं अट्ठि मंसं सुक्-मिति सव्वाणि एयाणि तणुईभवंति प्रायसो, दुःखं चायतं भवति, वाते य सति णसंतसतत्तायपागो व सोणियादीणं तणुत्तं भवति, घन्नो दिट्ठंतो गंडओ वा, 'से णं तेणं तेणं उरालएणं विउलेणं पयत्तेणं सुक्खे णिम्मंसे' एवं सरीरे विधुणणा भवति, उदयो भवति तेसिं, तणुयसीहवेलाइएणं जोवि उवगरणलाघवअत्थो भणितो सोवि जहासंभवं जोएयव्वो, तत्थ अतिक्कंतं सुत्तं अचेल-इए लाघवियागमे, पेहा नाणादिपरिहाणी ण भवति, तहा कम्मविधुणणत्थं सरीरलाघवंपि आगमेमाणे, न केवलं उवगरणलाघवं, एवं आगमतो वा स अभिसमण्णागतो, दुविहेणवि तवेण सरीरलाघवं भवति, जहेयं भगवया पवेइयं, भगवया तित्थगराणं तित्थ-गरेहिं वा, साधु आदितो वा वेदितं सरीरधुणणं, केसिं च 'तवसमाही चउव्विहा–णो इहलोगत्थयाए तवं अहिट्ठिज्जा'एवं पवेइयं, तहेव य सद्दहति आयरति य, तमेवं अभिसमिच्चा, तमिति तं तित्थगरभणियं सरीरधुणणं संमं अभिसमिच्च, जं भणितं णच्चा, सव्वओ सव्वत्तादिकमेणं सरीरं धुणाइ, दव्वओ किसा बाहा भवति, पतणुते मंससोणिते भवंति, ताणि दव्वओ आहारेइ जेहिं

आगत-
प्रज्ञानादि

॥२२१॥

प्रत वृत्यंक [१८५-१८७]

दीप अनुक्रम [१९८-२००]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२२२॥

बाह्वादिकृशता

तस्स सरीरं किसीभवति, खेत्तओ तारिसे तारिसे खेत्ते विहरति जत्थ से सरीरं किसं भवति, कालओ णिच्चं जयति, तंजहा— 'आयावयंति गिम्हासु०' भावओवि ण सरीरेण किसेणावस्सतेहिं अवसीयति, एवं सव्वओ सव्वत्ताए, **सम्मत्तमेव समभिजाणित्ता**, सम्मत्तं कहं ?, जो चाउम्मासियखमओ सो ण मासियखमयं हीलेति, अवण्णं वा तत्थ करेइ, एवं जाव एगंतरखमगं, ण वा वियट्टभोतिं हीलेइ, जहा एस ओणयमूढो णिच्चभोइत्ति, जिणकप्पिओ पडिमापडिवन्नओ वा कदायि छप्पि मासे अप्पणो कप्पेणं भिक्खं ण लभति तहावि सो समदरिसित्ता णवि अण्णो हीलेइ, तं एतं सीहालोइओ अत्थे भणितो, एवं तेसिं महावीराणं **आगतपण्णाणं किसा बाहा भवति, पतणुते मंससोणिते**, अणेगेसु एगादेसा वुचंति, **विस्सेणी कट्टु परिण्णाय** दव्वणिस्सेणी पासायाईणं आरोहणी, ओहरणी वा भूमिगिहादीण, भावे पसत्था अपसत्था य, पसत्था संजमट्ठाणसेणी, जाइ मोक्खं आहरति, अप्पसत्था जा ओसंजमट्ठाणा सेणी जाए णरगं पडति, संसारएगट्ठाए वा अपसत्थाए वा अहिगारो, सा पुण अण्णाणमिच्छत्तअविरइकसायविसयमयि, असंसारस्स णिविस्सेणि कट्टु परिण्णाएत्ति एताअ णातुं बितियाए पच्चक्खाएति, जेहिं वज्झति वा, एएहिं रागादीहिं सो एवं कम्मधुणणत्थं, धुतो वा गणो सरीरधुणणावट्ठिओ संसारस्स णीविस्सेणी **कट्टु तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिएत्ति बेमि**, तरमाणे तिण्णे संसारसमुद्दं, मुच्चमाणे मुक्के अट्ठविहेणं कम्मेणं, विरए असंजमाओ, विविधं विसेसेण वा अक्खाओ विक्खाओ, तेण भगवया तित्थगरेहिं वा एवं बेमि, तं च जेण भणितं सद्दहंतो रोयंतो, आह—भणितं भगवया—तरमाणो तिण्णो मुच्चमाणो मुक्को, तं एवं **विरतं भिक्खुं रीयंतं** अणवट्ठितं दव्वादीएहिं णिस्सरंतं पसत्थेसु गुणप्रकर्षेण उत्तरिं वड्डमाणं अतो रीयमाणं, **चिरराओसितंति** जाव देसूणपुव्वकोडी अणेगाणि वा वासाणि, जं भणितं चिरराओसितं, तं एवंगुणजुत्तं अरती

॥२२२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१८५-१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-२००]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२२३॥

अरति धारणादि

तत्थ किं वा होइ ?, कत्थ अरति ?, असंजमे, रति संजमे, अरतिं जं भणितं अरतिपरीसहो, किमिति परिपण्हे, एगज्झत्थं वेरग्गं मोक्खं वा अभिपत्थितं, विविहं वा धारए विधारए, इह हि दुब्बलाणि चलाणि अविणयवंति वा इंदियाइं तेण किंचिवि दुब्बलं विहारए, भणियं च—कम्माणि अणण्णगरुयाणि० अपुव्वाकरणं वा विरयं रीयंतं चिररातोसितं संधारणाए समुट्ठिते उसण्णं आसेवियबहुलीकृततवोकम्माणं अरतीति किं विहारए ?, किमिति अक्खेवे, कहं अरतिं धरेहिति ?, किं वा सा तस्स ?, सोवि खणे खणे विबुज्झति, संजमे व रमति संजमति, भणियं च—'अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं०'अहवा अरती किन्न धारए जो संधारणाए समुट्ठिते ?, दव्वसंधाणं छिन्नसंधाणं अच्छिन्नसंधणं च, दव्वे अच्छिन्नसुत्तं कत्तति, रज्जू वा वट्टिज्जति, छिन्नसंधणं कंचुगादीणं, भावे पसत्थ अपसत्थ, छिन्नसंधणा य जहा कोयि असंजए किंचि कालं कोहस्स उवसमं काउं पुणो रुस्सति, अच्छिन्नसंधणाई णिरुब्बद्धो चेव अणंताणुवंधिकोहकसाओ, एवं माण माया लोभे य,- पसत्थ भावच्छिन्नसंधणा जे खओवसमियाओ भावाओ उदइयभावं गतो आसी पुणो खओवसमियं चेव जाव, अच्छिन्नसंधणाओ समुट्ठिय उवसामगसेढी खवयसेढी वा, तमेवं पसत्थभावसंधणअच्छिन्नसंधणा य समुट्ठियं अहक्खायचरित्ताभिमुहं वा. अहवा तित्थगरगणधरा दुवालसंगगणिपिडगसंधणाय समुट्ठिता, तंजहा—'अत्थं भासइ अरहा०' तं एयं संधणाए उवट्ठितं संजमे अरती कहं धारए ?, धीर ! चिरराओसिगाओ ण भवति, भणियं च 'णारती सहती वीरे' से एवं संधणाए समुट्ठिते, पढिज्जइ य—संधिमाणे समुट्ठिते, दव्वभावसंधणं परूवेऊणं नाणादिपसत्थभावसंधणं संधिमाणे, सम्मं उट्ठिते समुट्ठिते, इह नाणाहिगागे जेणंति, जहा से दीवे असादीणे (आसासदीवे) दीवयति दिप्पयति वा दीवो, दव्वे दुविहो—आसासदीवो पगासदीवो, समुद्दे जहा काणणादीवाति, वसंतओ सुण्णओ वा, तं पप्प भिण्णवो- ॥२२३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१८५-
१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-
२००]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२२४॥

आश्वासद्वी-
पादि

तसंजत्तगा अभिण्णपोतसंजत्तगा वा समाससंति, एवं नदीआसासदीवंपि उत्तरिउकामा समासासित्ता सेसं उत्तरंति, महातलागादिदीवं वा, स तु संदीणो असंदीणो य, संदति संदि पोते वा, संदीणो कदायि लाविज्जति मासियपाणतेण वा संवच्छरियपाणिवाएहिं वा, असंदीणो तु ण कयाइ गिलाविज्जति, तंजहा–अ(सु)वण्णभूमी सिंहलदीओ एवमादि, पगासदीवो संघातिमो असंघातिमो वा, तत्थ संघातिमो घोलवट्टितेल्लकारंतगसंजोगा उज्जोवगे, णामपच्चया उप्पज्जंति, असंघातिमो चंदआइच्चमणी एवमादि, सोवि संदीणो असंदीणो य, तत्थ असंघातिमो णियमा असंदीणो, संघातिमोवि कोइ असंदीणो भवति, कहं ?, पभूतइंधणो अब्भपडण-पाओ उत्तरंति, न विज्झायंतेऽपि, केइ पगासे य अस्सासे य इच्छंति, तत्थ पगासयति गिहेसु उव्वरएसु दीवा पज्जलिज्जंति, आसासे तु वहणे पट्टणेसु उवट्ठाणेसु खलेसु वाणमंतर उवरिं चारेति, दीवो पज्जालियति, तमासासदीवं वाणियगा पासिउं ततो जुत्ता वच्चंति समासंतिया आसण्णं पट्टणंतिकाऊणं, भावदीवे दुविहे आसासदीवो पगासदीवो य, आसासदीवो संमत्तं, तं पाविता आसासो भवति, मो(णि)व्वाणं अवस्सं सिज्झीहामि, सुक्कपक्खिओ सो भवति उक्कोसेणं अवड्ढपोग्गलपरियट्टेणं सिज्झीहामि, तंपि संदीणमसंदीणं, खयोवसमयं संदीणं, अहवा पडिवाति संदीणं, अपडिवाई असंदीणं, पगासे दीवो, इदाणिं सोयणा–सोयणाणं संघातिमं इतरं च, तत्थ संघातिमो सुत्तणाणदीवो, तंजहा अक्खरसंघातणा पदसंघातणा कालिए जाव अंगसंघातणा, दिट्ठीवादेवि, एवं जाव पाहुडे, पाहुडपाहुडे पाहुडियापाहुडिया वत्थुसंघातणा, असंघातणा केवलनाणं, दुविहो संदीणो असंदीणो य, जस्स पडिवाइ यस्स संदीणो, अपडिवाई असंदीणो, अहवा संघातिमो इतरो वा, जस्स अपडिवाते केवलनाणं उप्पज्जइ तस्स असंदीणो, परिवडति संदीणो, एगी-मयं तु भावे आसासदीवो जो धम्मेऽवि बहूणं जीवाणं आसासो दीवो ताणं, संदीणो असंदीणो य जो पाउं भुंजेउं पुव्वुट्ठितो ॥२२४॥

प्रत
वृत्यंक
[१८५-१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-२००]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
॥२२५॥

असंदीनदीपादि

समाणो पुणो पण्णवेति सो संदीणो, अण्णया असंदीणो, तित्थगरगणधरा पगासेंति असामित्तेण य णिच्चमेव असंदीणो, एवं से आयरियदेसितो एवमवधारणे, स इति सो भिक्खू चिरराओसियं संधणाए समुट्ठितो आसासपगासअसंदीणदीवभूतो अरतिं धारेति तं अहिकिच्चा वुच्चति-एवं से धम्मे आयरियदेशिए, धम्मे दुविहे वट्टमाणे, दसविह नाणाइ, आयरिय पदरिसिते, अहवा अत्तपरादेसेणं उभयादेसेणं वा कहेयव्वं, एस धम्मे आयरिए, कयरे ?, अयमेव जतिणो, धम्मे य संजमरती असंदीणा भवति, एवमेव धम्मो आयरियदरिसितो, एवं से असंदीणो अभयवड्ढि, तहा धम्मे रतिं करेति, कतरत्थ ?, आयरियदेसिते, एगे अणेगादेसा वुच्चति ते **अवयमाणा भावसोया**, किं अवयमाणा ?, मुसावातं सव्वं वा वयणदोसं, जा य गिरा सावज्जा, पढिज्जइ य-ते अणवकंखेमाणा, मित्तणादिणियगा सयणकामभोगा वा पुव्वरतपुव्वकीलियाणि वा आजम्मं वा एवमादि, अणतिवादेमाणा कंठयं जाव अपरिगिण्हेमाणा, एगग्गहणे चियत्तोवगरणसरीरादिया वा, अहवा-धम्मपीईए संविग्गात्तिकाउं जयमाणा साहुवग्गस्स संनिवग्गस्स वा चियत्ता, जं भणितं-सम्मता, मेरा धावित्ता मेहावीणो, पावा डीणा पंडिता, एवं तेसिं भगवओ एवमधारणे, तेसिमिति देसि पवयणपदवीदीवभूताणं जगपईवभूयाणं वा भगवंताणं, आणाए उट्ठाणं अणुट्ठाणं वा, तत्थ आणाउट्ठाणे ठिच्चा इति वक्कसेसं, तित्थगरगणहर सुत्तं तहिं ठिता, अहवा अणुट्ठाणं आयरणं, लोगेवि वत्तारो भणंति-अणुट्ठिते हिते, पुण तेसिं भगवंताणं तित्थगरगणहराणं तं आणं अणुट्ठेति—पावि संपाडेति जहा सो उज्जेणओ रायपुत्तो, उज्जेणीए जियसत्तुस्स रण्णो दो पुत्ता, जिट्ठो जुयराया कणिट्ठओ अणुजुग्गराया, थेरागमो, रायपुत्तो णिग्गतो, धम्मं सुणेत्ता जुगराया पव्वइओ, सेहणिप्फेडीयाए णीतो, कालेणं बहुस्सुओ जाओ, जिणकप्पपरिकम्मं करेमाणे पभावेति, सा पंचविहा, पढमा उवस्सयंमि बितिया बहिं जाव पंचमा

॥२२५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१८५-
१८७]

दीप
अनुक्रम
[१९८-
२००]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२२६॥

अनुष्ठानोत्थानादि

मसाणंमि, सो य से कणिट्ठो भाउओ अणुरागेणं धम्मसद्धाए वा दसण्णपुरं गंतु आयरिए आपुच्छइ–अहं पव्वयामि महल्लभाउगो मे दरिसेहि, पव्वयाहि ताव, तं ते दरिसेमि, पव्वइओ, अवरण्हे पुणो भणति–दाएह अवेलियं, उकंठिओमि भाउयस्स, तेहिं भणितं–सो ण कस्सइ उल्लावं देति, जिणकप्पं पडिवज्जिउकामो, णिब्बंधे कते दरिसितो, वंदितो तुसिणीओ, वांछति अणुरागेणं, अहो ते तवसिरी, आउट्टो य तस्स, वारिज्जंतोवि तूरते, न ते कालो, पवज्जा सिक्खा वय एवं कालो भवतित्ति, भणति–अहंपि तेणं चेव पितरि जाओत्तिकाउं, बलामोडीए तहा चडिओ तस्स पासे, इतरेवि दरिसेउं परियागता, सोवि उट्ठितो वियाले हियतेणं आवासयं काउं करेति, इतरे सेहो किं काहिति ?, देवता वंदति अणुट्ठितं, अणुट्ठियं ण वंदति, रुट्ठो सेहित्ति, परिस्समाओ चलियगस्स एगेणं तलप्पहारेणं वेवि अक्खिडोलए पाडेति, आलोए उट्ठिओ, हियएणं देवतं भणइ–किं ते एस अयाणतो दुक्खाविओ ?, देहि से अच्छीणि, तीए वुचति–जीवप्पदेसपरिचत्ताणि, ण सका लाएतुं, तत्थ य वच्छकातीरे णगरे सागारिएणं बालओ मारितो, तस्स य सपदेसाणि अच्छीणि ताणि तस्स लाइताणि, एतं एलगच्छणिव्वत्ति, कहं पुण अणुट्ठिता ?, ‘पवज्जा सिक्खा वय’ तत्थ इमं सुत्तं ‘जहा से दियापोते’ जेण प्पगारेण जहा, अहवा जहा इति उवंमे, दो जम्माणि जस्स सो दिओ, बितिय अंडगभेदो, पततीति पोदो, दियस्स पोदो २ सो अंडत्थो पक्खवाएणं पुस्सति उब्भिन्नोवि किंचिकालं पक्खवाएणं, आहारसमत्थो सजातिपाउग्गेहिं आहारेहि य पुस्सति, ण य तरति उडणाए, लभति चरंतीति से देति ताव जाव सयं आरद्धो चरिउं, तहेव मातापितरो विहाय पत्तेगमेव चरंति, एस दिट्ठंतो। एवं ते सिस्सा दिया य सयो य अणुपुव्वेण ता इति पव्वज्जा सिक्खा वय०, के वाईति ?, गणहराई, एवं भणामि आणत्ति बेमि ॥ धुयज्झयणस्स तृतीय उद्देशकः ॥ ॥२२६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१८८-१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-२०६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२२७॥

वाचनाक्रमादि

उद्देसादिसंबंधो—पढमे णियगविधुणणा वुत्ता, बितिए कम्माणं, ततिए उवगरणसरीराणं, इह तु गारवतिययस्स, इह निव्वलेत्ता सरीरकिसत्ता तेयतवेण अहितो अहमितिकाउं इड्ढीगारवं गच्छे, ततो आहारादियेहिं पूयिज्जमाणो रससातागारवेहिवि विभूसिज्जा, अतो चउत्थे गारवतियस्स धुणणं वण्णिज्जति, सुत्तस्स सुत्ते—ततियस्स अंतिमसुत्ते वायणा, अधिच्छिता वायेतित्ति बेमि, इहवि वुच्चति, एवं ते सिस्सा एवमवधारणे, सो विसयस्स दुविहो—दिया य राओ य, दिया—उकालियं पडुच कदायि दिवसतो चत्तारिवि पोरिसीओ वाइज्जेज्ज, रत्तिपि पढमपोरिसिं वाइज्जति, सेसासुवि पादपुच्छगं, ‘अणुपुव्वेण—आयारातिक्कमेण अणुपुव्वीए, तहा य भणियं—जहा से दिया राओ, अहवा परियागमणतो तेणं, जहा ‘तिवासपरियागस्स कप्पति आयारपकप्पे उद्दिसितए’ एवं जाव दिट्ठिवाए, तं च जस्स जोगं, एवं अणुपुव्वीए सुत्तं अत्थं उभयं वा वादिया वाइज्जमाणा वा, अहवा नाणदंसणवातिया, चरित्तं च आसेवणासिक्खणा, तंजहा-एवं गंतव्वं०, ते तिविहा—जाणगा अयाणगा दुव्विड्ढगा, जाणगा पुव्वं सावगा एवं आसि अभिगतजीवाजीवा०, अयाणगा णाम अणभिग्गहियमिच्छादिट्ठी लोगधम्मे अविकोविता, उक्तं च—जे होंति पगइमु(सु)द्धा०, जेण लोइयसुतीहिं कुप्पासंडिसंजमे पभाविता दुवियड्ढगा, ते पायसो दुपण्णवगा भवंति, अहवा पगतीए केइ अहंकरेइत्ता भवंति, ण तव्विहा जाणंति, जहा अहंकारओ दुयता भवंति, तत्थ दुवियड्ढे पडुच उवदेसो, ते उ वाइज्जमाणा समितिगुत्तीसु उवदिस्समाणासु दव्वचिंताए वावि उत्थाणं जंति, गोट्ठामाहिलवत्, केयी वादिया जमालि वा, जत्थ इमं सुत्तं—तेसिं महावीराणं तेसिमिति तित्थगराणं गणहराणं वा खे(थे)राणं वा, सोभणा वीरा, परोवदेसो आगमस्स, सुयनाणं गहियं, साहु आदितो वा णाणं पण्णाणं, तं आयरियं पइ लब्भति, अहवा पण्णाणं बुद्धिमितिकाउं आभिणिबोहियं गहितं, जहा तहा जं भणितं पडुता, मइपुव्वगं च सुत्त- ॥२२७॥

षष्ठं-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशक: ‘गौरवत्रिक विधुनन’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१८८-१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-२०६]

मितिकाउं तदंतग्गतमेव, तत्थ सुयलंभा णियमा मतिलंभो, सुतलंभं केति भयंति, तत्थ समगुत्थावि मती भवति जहा सुविणंतिगी, जाइस्सरणं सुहुमअणुचिंतणं कप्पकिरियमादि, अवसेसणाणाणि समुत्थाणि चेव, जे य अण्णे तेवि महावीरा चेव, जेहिं नाणपण्णा य लद्धा, ते एवं सउणीवुड्ढी वा अणुपुव्वेणं वाइयसंगहिता बहुसुता कया, कसायादिउवसमं लभित्ता हिया ओवसमं उवसमणं उवसमो, सो दुविहो–दव्वे भावे य, दव्वे दव्वेण वा उवसमो, दव्वस्स उवसमो, तत्थ दव्वेण कचकफलेण कलुसं उदगं उवसमति, अंकुसेण कुंजरो, दव्वस्स उवसमो सुराए पागकाले, भावोवसमो नाणादि, तत्थ जो जेण नाणेण उवसामिज्जइ सो नाणोवसमो भवति, तंजहा–अक्खेवणीए०, अहवा इसिभासितेहिं उत्तरज्झयणा एवमादि, दरिसणोवसमो जो विसुद्धेण संमत्तेण, परं उवसमितेण परंउवसामितो, जहा सेणियरण्णो, सो मिच्छादिट्ठी देवो सक्कवयणं असद्दहमाणो० जाव दंसणप्पभावगेहिं सत्थेहिं उवसामिओ, गोविंद, जत्तादिणा चरितमेव उवसमो, तंजहा–उवसंतकोहे उवसंतमाणो उवसंतमाओ उवसंतलोभो, जाहे जयमाणं साहुं दट्ठूण उवसमति स चरित्तोवसमो, तं उवसमं हिच्चा, जं भणितं–उवगिरिसित्ता, विणयमूलं संजमं विण्णाणमदेण अक्खरपडुत्तेण वा फारुसियं समादित्ता फरुसियभावो फारुसियं परोप्परगुणाए अगुणाए अर्थमीमांसा, एवाउमं ! ण याणसि, ण य एस अत्थो एवं भवति, वितिओ पव्वहे, आयरिया एवं भणंति, पुण आह—अत्थओ आयरिओ, जति तित्थगरोऽवि एवं आह सोऽवि ण याणति, किं पुण अण्णो ?, अहवा भणति–सो किं सव्वण्णू ?, सो वायाकुड्डो पुड्डिविगलो किं जाणइ ?, तुमंपि तयोविव पाडि ठिओ णिरूहत्ताओ पुढविकाइयतुल्लो किं जाणेस्ससि ?, पढिज्जइ य 'हिच्चा उवसमं अप्पेगे फरुसियं समारभंति, अह इति अणंतरे, बहुस्सुयीभूतो संतो, एगे ण गणे सव्वे दुवियड्ढा, फरुसितं समादियंति समारभंति, समं आरभते समारभते, बहुस्सुयविण्णाणमादीणि

प्रत
वृत्यंक
[१८८-१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-२०६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२२९॥

ब्रह्मचर्यवासादि

कहिज्जमाणे वा अणाढायमाणा अच्छंति, अहवा आलत्ते वाहिते तुसिणीए हुंकारे, एवं फरुसितं समादियंति, ण मुंचति एगओ, वसित्ता बंभचेरंसि वसित्ता जं भणितं पालित्ता, बंभचरणं चरित्तं, अतिदुब्बलेण भच्छिता संता केइ कातरा आणं तं णोत्ति मण्णमाणा आणा सुत्तादेसो, तंजहा–एवं गंतव्वं एवमादि, ते तं तित्थगरआणं, णो देसपडिसेहो, ण सव्वमेवं अन्नमण्णति, सातागारवबहुला सरीरबाउसियत्तं करेंति, ण य दुक्खं भिक्खायरियं हिंडंति, रसगारवाओ उग्गमादि णो सोहेंति, पवतिते वादं च वदंति पुट्ठा अपुट्ठा य–ण एवं तित्थगरेहिं भणियं–आहाकम्मलक्खणं, समणं वाऽऽहा कम्मंति काउं संजममेव उवक्खडेति आहाकम्मं, अहवा एताणि ताव बलवंति, जहा वुत्तं–'कुज्जा भिक्खु गिलाणस्स, अगिलाए समाहीए' अण्णोवि जो जेण विणा सिथिलायति तं तस्स करेयव्वमिति, जं पुण परेणावि स अवसण्णविहारिसंसग्गिणो णिद्देसो, दोहिं आगलितो बालो सि, ण अबालो, यदुक्तं भवति–असंजतो, केण स बालो ?, णणु जेण आरंभट्ठी, आरंभणं आरंभो, पदणपादणादिअसंजमो, तेण जस्स अट्ठो से भवति आरंभट्ठी, अहवा इड्ढिगारवरसगारवसातागारवा आरंभट्ठी, तत्थ विज्जामंतणिमित्तसद्दहेतुमादी अहिज्जति पउंजइ वा जो रिद्धिहेउं सो रिद्धिगारवारंभट्ठी, ताणि चेव रसहेउं पउंजति अहिज्जति वा रसगारवारंभट्ठी, एवं सातागारवारंभट्ठीवि, अणुवयमाणोत्ति अणुवदणं अणुवादो, वदतो पच्छा वदति अणुवदति, तकादीसु पयणपयावणादिआरंभे वदंति, तदंडतकी, तस्स पक्खं ते अणुवदंति, एकोत्थ दोसो, ण असरीरो धम्मो भवति, तेण धम्मसरीरं धरेयव्वं, साहू य तं, जं भणितं–'मणुण्णं भोयणं भोच्चा' अहवा णितियादिवायो वा कुसीलं अणुवदति, मा एवं भण, जहा अम्हेवि णिहीणपेच्चवावारा इहलोगपडिबद्धा संसारसूयरा, ण तुज्झे, एवं ठिता चेइयपूयणं तो करेह, विसेसेण य आगंतुयआगमिते लक्खणखमते उत गिण्ह, सव्वं किर पडिवादी, ॥२२९॥

प्रत
वृत्यंक
[१८८-१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-२०६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि:
॥२३०॥

वेदावच्चं अपडिवाह, एवं तेसिं अणुकूलं वट्टंति, एवं सो अणुवट्टमाणे हण पाणे घातमाणे हणतीति हणो घाएतीति घायमाणे, हणओवि समणुण्णे, तत्थ सक्काणं अणुवसंपण्णा, तमादि सयं हणंति पाणेसु, अवि घायगा हणावेंति, भुंजंता अणुमोदंति, एगिंदिए प्रति सव्वे हणा पाणे घायमाणा, हणतो यावि, इह तु ओसण्णेहिं अहिगारो, तेऽवि हणपाणघाय, तत्थ आउकाय० सोदाफलादि, सचित्तभोयिणो वा सयमेव हणतीति हण, उद्दिस्सकतभोइणो तु सचित्ताहारविवज्जगा घातमाणा भवंति, अहवा तुमंसि णाम बाले आरंभट्ठी अणुवदमाणा तं एवं बाले जे तुमं आरंभट्ठी अणुवदसि गारवदोसाओ य, अहं सव्वे हितो नाणसंपण्णो दंसणसंपण्णो चरित्तसंपन्नो तवसंपण्णो विणयसंपण्णो एवं अणुवदमाणोवि बाल एव तुमं, ण अबालो, आरंभट्ठी पुढविकाइयादि- जीवे हणसि हणावेसि हणंतेवि योगत्रिककरणत्रिगेण, सो एवं बालो घोरे धम्मे उदीरति घोरो–भयाणगो, सव्वस्सवि णिरोधाओ, अहीव एगंतदिट्ठित्ता दुरणुचरित्ता कापुरिसाणं, धरतीति धम्मो, उक्तं च–"दुर्गतिप्रसृतं जीवं, यस्माद् धारयते ततः। धत्ते चैनान् शुभे स्थाने, तस्मात् धर्म्म इति स्मृतः ॥ १ ॥ देवविही वा, उड्ढं ईरितो उदाहरितो दरिसितोत्ति वा तित्थगरगणहरेहिं, तेहिं तेहिं चेव उज्जुयं ईरिते उदीरितो, यदुक्तं भवति–कतो, उवेहति णं अणाणाए तं उवेक्खति गारवदोसाओ० यद् उक्तं भवति–ण तित्थगरगणधराणं, अणाणाए–अणुवदेसेण, ते एवं पमादिणो गारववतो पमादी वा आरंभट्ठी अणुवदेमाणा जे वुत्ता ते एस विसण्णे वितद्दे, जे वा ते घोरं धम्मं उदीरेंति तं उवेहंति अणाणाए, अणेगेहिं एगादेसाओ वुच्चंति एस विसण्णे वितद्दे एस इति जो आरंभट्ठी घोरं धम्मं उदीरितं पमादेति विविहं सण्णो, दव्वे भारवाहे पहियनदीतरता एवमादि सो सज्जति, भावसण्णो णाणदंसणचरित्ताणि पत्तो तहावि ण तेसु जो भत्तिमंताण उज्जमति, णितियादि जाव छट्ठो, विविहं तद्दो २ दव्वे मच्छ-

वैयावृत्य-च्छलादि

॥२३०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१८८-१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-२०६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३१॥

वितर्दादि

कंटगादि गलए लग्गो वितद्दे, भावओ नाणस्स उवदेस अणणुलोमे वट्टति, एवं दंसणनाणचरित्ततवविणएवि, तिरिच्छीजंतोवितद्दो, एवं ते रागंचिता विविहं आहिता वियाहिता, तहावि ताए पव्वइया एवं वुच्चंति इति बेमि, केरिसेणं परिणामेणं ते पव्वइया जे गारवदोसेणं ओसण्णा जाव दिट्ठंता–किं ते सियालत्ताए चेव णिक्खंता उदाहु सीहित्ताएवि, ततो वुच्चति सीहत्ताएवि एगे, जेण पढिज्जति–किमणेण भो यणेण करिस्सामित्ति मण्णमाणे, अहवा असव्वण्णू ताव एरिसणिच्छयं असुंदरं पव्वावेति, तहावि किं सव्वण्णूवि ?, आमं, तेसिं तं करणं अज्झत्थं भवति, जेण पुणरवि कयाइ उज्झिज्ज कहंचि, वीतरागो सम्मं उट्ठितं णिच्छतीति, ते जणं एवं उवतित्थंति, तं०–किमणेण भो जणेण करिस्सामि ? ते पव्वावेति, किमिति परिपण्हे, अणेणेति जो संपयं जीवति, ण मतो, ण य अणुप्पण्णो, भो इति आमत्रणे, जायतीति जणो–मातापितिमाति सयणवग्गो, करिस्सामीति पयोयणं, इहंपि ताव जणणमरणरोगसोगाभिभूतस्स सयणो न ताणाइ अतो तस्स वेरग्गं उप्पज्जति, जेण अप्पणो आमंतणं काउं बेमि–किमणेण भो यणेण ?, जया वा णिक्खमंतो परेण वुच्चति–किं मातापितामादि सयणं णचिक्खति ?, ततो तेसिं आमंतणं काउं भणति–किमणेण भो यणेण ?, जो से इहं ण जरादिताणाए, किं परलोगे ?, जतो वुच्चति–इमे ते सव्वाति कामभोगाहिरण्णाई धणधान्यं च सव्वंपि एतं, भुज्जत इति भोयणं, अहो राइभावो य णं ते किं छड्डिज्जइ ?, ततो बेमि–किमणेण भोयणेण, णवि एतेण तित्ता सुबहुणावि भोत्तुं भवति, तणकट्ठेण व अग्गी० अग्गीसामण्णं चोरसामन्नं, अतो किमणेण भो यणेणं ?, एवं मण्णमाणा जाणमाणा इति अत्थो, पढिज्जइ य–एवं एगे विभत्ता एवमवधारणे, एगे ण सव्वे, आवकहाए सीहत्ताए विहरिस्सामो, मातरं पितरं हिच्चा णायते वीरा इव अप्पाणं आयरंति धीरा पमाणा, अहवा ते आदितो वा तवेण विरज्जमाणो एवासी, ॥२३१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत

वृत्यंक [१८८-१९३]

दीप

अनुक्रम [२०१-२०६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३२॥

सम्मं उट्ठाए समुट्ठाए, ण मिच्छोवट्ठाए, गोविंदवत्, अविहिंसगा सुव्वता दंता सच्चवादी जाव संतुट्ठा सोभणाणि वताणि तेसिं सुव्वता, तवजुत्ता इंदियनोइंदियदंता, णागज्जुण्णा ते-समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू अविहिंसगा सुवता दंता परदत्तभोइणो पावकम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए एवं महईए पइण्णं तरित्ता सियाविता विहारिणो अधऽणंतरे, एगे ण सव्वे, पासंडी णेव सीहि अणुदारसत्तत्ताए, परीसहपराजिते उड्ढं परतितिसत्ता उप्पइत्ता, आमरणंताए संजमट्ठाणे हिच्चा गारवदोसाओ पुणो पडिवयमाणे, कत्थ ?-अविरतीए गिहवासचारए वा, पडिवयमाणो पडिते य, वसहिकायरा जणावासे वट्टंतीति, वसही केसिं ?, इंदियवसहगारवाणं अत्थित्ते आदारे, जेसिं कायरा य दुक्खं भवति, ण तवसूरा, जाइंति जाइस्संति य जाणंति वा कम्माणि जणा, अहवा जणा इति साहू, ते पडिभग्गा समणा ण साहू जणा वुच्चंति, काउं दुद्धराणि अट्ठारससीलंगसहस्साणि धारेस्सतीति दव्वलिंगस्स भावलिंगस्स लूसगा भवंति, तेसिं वयाणं, केई दरिसणस्सवि 'अहमेगेसिं लोए पावए भवति' अह तेसिं भग्गवयाणं भग्गउच्छहाणं भग्गपरक्कमाणं गारववसोते उप्पज्जयित्ताणं, पंसेति पातेति वा पावगं असिलोगो, अहमेसो, सो तु सपक्खाओ परपक्खाओ तहा, सपक्खं परपक्खं वा, तत्थ ताव परपक्खाओ परोक्खं जति तं कोइ पसंसति सुतेण वा जातीए वा तो भणति-धिरत्थु या, तेसिं तु तस्स उवदेसे ण वट्टति, 'जहा खरो चंदणभारवाही भारस्स भागी ण हु चंदणस्स', हीणं से जाति कुलं वा, मा एतस्स कुलफंसणस्स णामंपि गिण्हाहि, असिक्खिगिज्झस्स पव्वइसु, उप्पव्वइयाणं देवावि बीभेंति, जेवि समविस्समियाहिं धम्मं करेंति, एवं सक्खमवि केइ भणंति, विवातउग्गहादिसु रोसिता अरोसिता वा मुक्कत्थं भणंति, अण्णं परावत्तेंति, आदिच्चाणि ज्झायंति, चप्पुडियं देंति, तंमि य आगते परिसमज्झाओ पंतीओ वा उट्ठेति सप-

सुव्वतादि

॥२३२॥

प्रत
वृत्यंक
[१८८-
१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-
२०६]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२३३॥

श्रमण-
वितंतादि

क्खेवि बहूणं समणाणं समणीणं हीलणिज्जे गरहणिज्जे, पुराणो इय वुच्चति, तरुणोवि होंतओ, एवं तस्स ण विपच्चइ णामं गद्दभेणेव वलवापच्चयस्स, इच्चेवं तस्स पावते सिलोगे भवति, अहवा सुत्तेणेव तेसिं पावते सिलोगे भण्णति, तंजहा—समणवितंते, जाचि विरतेहिं अविरतेत्ति अतिणिद्धरणं तवोकम्मेणं अम्हाणतेण या लूहएण य, भग्गं वा णेणं, विविहं तंतो वितंतो, समणे वितंतो समणवितंतात्ति, वीज्झासमणत्तणेण, विविहं तंतो २, जं भणितं—पुणो उप्पव्वज्जति, किंच—पसह समण्णागतेहिं, गिहत्था चेव परोप्परं भणंति—पुरिसभेयमागया ते एगंतेण लज्जाए विणियट्टमाणे पासित्ता पस्सह—पस्सऽहो वा समण्णागतेहि असमण्णागता, अन्नत्थवि संखडीते समुदये वा सण्णायएहिं समण्णागतेहिं लज्जाए ओभासमाणा भीता वा असमण्णागता, जं भणितं—ण तत्थेंति, ण वा सद्दाइज्जंति, जेवि समण्णायगा मित्ता वा तेवि एव मुच्चंति—एसो सो तुज्झं चउलो महासीसो एति वा गच्छति वा, देसं च पडुच्च कत्थइ समण्णागतोवि एस विट्टलितत्तिकाऊणं तेण सद्धिं ण भुंजंति, धीयारपव्वइतेण वा धीयारा सुयित्वादी भागवताति सण्णा- गयंपि ण भुंजंति संजयविट्टालितोत्तिकाऊणं, अतो सो तेहिं असंभुज्जमाणो भोयणेसु असमण्णागतेसु असमण्णागतो, ऊति णाम मरहट्टादिसु णादि दुगुंछिज्जति, तहारिसो अण्णोवि पडिभग्गो, सो तेण मंतक्खेण लोयहतेण वा सीसेणं समण्णागतेसु अस- मण्णागते, उत्तरपहादिसु चिर उप्पज्जइ तोवि गरहिज्जति, जत्थ वा धीयारा पिछिताऊगा, तत्थ णाममाणेहिं अणाममाणेहिं, ते तु तब्भाविता मरुते णमंति, सो पुण मा सम्मद्दरिसणातियारो भविस्सतीति णो णमति, तो तेहिं वंदमाणेहिं अवंदमाणे एवं लविज्जइ—एस समणतो णवि अण्णेसिं पणामं करेइ, अहवा अक्कोसते, किंच—दविते्सु अदविते दव्वं तं जस्स अत्थि स भवति दविए, तस्स य पुव्वं उज्झितं णत्थि, जंपि आसि तंपि तस्स अण्णयोगेहिं खइयं वइयं च, सो य कम्मरओ आसि विढवंतओ,

॥२३३॥

प्रत
वृत्यंक
[१८८-१९३]

दीप
अनुक्रम
[२०१-२०६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३४॥

अतो तेसु बंधवेसु इस्सरेसु सो अद्विते, जं भणितं–दरिद्दो, दवियउवज्ञणाणिमित्तं वराहऽभूतो किलिस्सति, अतोऽवि सण्णागतेहिं असमण्णागते, घाणाकुलोइयदिट्ठंतेण य णायसमण्णागतेहिं असमण्णागते ण सारीज्ञतीतिकाऊणं, जतिवि णाम कहिंचि सारिज्ञति तहावि भणंति–भुंजह ण तानि रिक्को, अतो समण्णागते असमं०, कुतो य ते अट्ठारसट्ठाणाए गारवदोसेण पावंति ?–‘हं भो दुस्समाए दुप्पजीवी’ तहा विरते, तेसुवि णाम तस्स संनायगा करेंसु, कम्मेसु चिरमंतिताणि य, सो अविच्छिन्नवुड्ढीए करेति, अतो विरतेहिं अविरते, अहवा णवि विरतेहिं समं जाओ, ण विकरेहिं समं जातो, णवि अविरतेहिं, कहं ?, जेण तस्स कामभोगा ण विज्ञंति, विणावि वित्तेण केरिसा कामभोगा ?, जम्हा एते दोसा उप्पन्नतिया पावंति उप्पवादिते ते अभिसमिच्चा, जं भणितं–जंपि दव्वं तंपि चओवचइयं, पापाड्डीणो पंडितो, णिट्ठियट्ठी वीरे णिट्ठं णेतीणि णेट्ठितं, जं भणितं–मोक्खो हि, उत्तमो अत्थो उत्तमत्थो, कोयि, सो नाणदंसणचरित्ततवविणय०, णय अगारोवत्थो, तं एवं उत्तमं आगममाणो–चिंतेमाणो सता निच्चं आमरणंताए कसिणकम्मखयत्थं सव्वओ परिव्वयेज्ञासित्ति बेमि ॥ षष्ठाध्ययने चतुर्थोद्देशकः परिसमाप्तः॥

उद्देसाभिसंबंधो–पढमे णियगविधुणणा भणिता, बितिए कम्मस्स, ततिए उवगरणसरीराण, चउत्थे गारवतियस्स, इह उवसग्गा जहा धुणिज्ञंति तहा उदाहरिस्सामि, तस्स गारवरहियस्स विरतौ, जति णाम चत्तारि चउप्पगारा उवसग्गा उप्पज्जिज्ञा, उवसग्गगहणेन पडिलोमा परीसहोवसग्गा गहिता, समाणग्गहणेण अणुलोमा, ते जति णाम कहिंचि जुगवं अजुगवं वा उप्पजेज्ञा ते वासीचंदणकप्पसमाणेणं विधुवयंति, सुत्तस्स–गारवतियं विधुणमाणो सुट्ठुं परिव्वएज्ञासि, तं च परिवयणं तस्स कत्थ ?, भणिज्ञति से गिहंतरेसु वा से इति णिद्देसे, कस्स ?, तस्स गारवरहितस्स साहुणो, गिण्हंतीति गिहा, तत्थ गिहेहिं उच्चणीयमज्झिमाणि ॥२३४॥

अट्ठव्यादि

षष्ठं-अध्ययने पंचम-उद्देशक: ‘उपसर्ग-सन्मान विधुनन’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१९४-१९६]

दीप
अनुक्रम
[२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ५ उद्देशः ॥२३५॥

गिहाणि घिप्पंति, ताणि तु भिक्खाणिमित्तं पविसिज्जंति, गिहतो गिहाणं वा अंतरं, ततो परं गामो, जेण वुच्चति-गामेसु वा, सण्णिवेसणे साही पाडओ वा तेसिं वा, अंतरालं रत्थातियचउक्कचचरं वा, विहारभूमीगयस्स वा, गच्छंतस्स वा, एवं विहारभूमीएवि, उज्जाणंतरेण उज्जाणगतस्स वा, जहा खंदगस्स उवसग्गा कया उज्जाणाओ, सेसं गामंतरं तु गामओ गामाणं वा अंतरं गामांतरं, पंथं उप्पहो वा, एवं नगरेसु वा नगरंतरेसु वा जाव रायहाणीसु वा रायहाणीअंतरेसु वा, एत्थं सण्णिगासो कायव्वो अत्थतो, तंजहा-गामस्स य नगरस्स य अंतरे, एवं गामस्स खेडस्स य अंतरे, जो गारवदोसे ण पावति 'हं भो दुस्समए दुप्पजीवी' तहा विरते, तेसुवि णाम तस्स सण्णायगा कयरेसु कम्मेसु चिरमंतिताणि य, सो अविहयं, गामस्स खेडस्स अंतरे जाव गामस्स रायहाणीए य। एवं एक्केकं छड्डेतेणं जाव अपच्छिमे रायहाणीए य, एवं एक्केकंतेसु जहुद्दिट्ठेसु जणवयंतरेसु वा अद्धाणपडिवन्नस्स अच्छंतस्स वा जाव काउस्सग्गं ठाणं वा ठियस्स संतेगइया जणा लूसगा भवंति संतीति विज्जंतीति, एगतिया, ण सव्वे, जायंतीति जणा, तंजहा-नेरइया तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा देवा, तत्थ नेरइया उवसग्गे प्रति अवत्थू, सेसा करेंति, तत्थवि मणुस्सा विसेसेणं, तत्थ भंगा-एगइया जणा एगइयाणं साहूणं अणुलोमे उवसग्गे करेंति, अत्थेगइयाणं पडिलोमे उवसग्गे, अत्थेगतिया जणा एगतियाणं अणुलोमेवि उवसग्गे, अत्थेगइया जणा णावि अणुलोमे णावि पडिलोमे, मज्झत्था चेव। तत्थ देवा चउव्विहा-हासा पयोसा वीमंसा पुढोमाया, वीमंसा जहा कामदेवस्स, माणुस्सगा चउव्विहा-हासा पयोसा वीमंसा कुसीलपडिसेवणा, तिरिक्खजोणिया चउव्विहा-भया पदोसा आहारहेउं वा अवचलेणसारक्खणया, साणगोणादि भएण पदोसेण य, सीहवग्घा आहारहेउं, अवचलेणसारक्खणयाए वायसमेण्ठाति। लूसंतीति लूसगा, सरीरलूसगा संजमलूसगा वा पडिलोमा, अणुलोमा

गृहान्तरादि

॥२३५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१९४-१९६]

दीप अनुक्रम [२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३६॥

तु एगंतेण संजमलूसगा, अदुवा(अहवावि)फुसंति अह इति अणंतरे, जस्स अविसद्दा उवसग्गा ते फासा, जं भणितं–आतसंवेयणिज्जा, तेवि चउव्विहा–घट्टणया थंभणया लेसणया पवडणया, अहवा वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइया। अहवा फुसंतीति फासा, सीतं उण्हं दंसमसगादि, ते फासे पुट्ठा अहियासते, हाकारलोवो एत्थ दट्ठव्वो, सम्मं अहियासते, संमंति रागदोसरहितो पसत्थअण्णतरज्झाणउववत्तो, जहा फासा तहा रसावि, जाव सद्दा रागदोसरहितोवि अहियासिज्ज, अतो भण्णति–**ओते समितदंसणो** ओते णाम एगो रागादिरहितो, समितदंसणे संमदरिसी अहवा संमितदरिसो, तं च मिच्छादंसणसमितं, सो एवं समितदंसणे गामादि रीयमाणे **दयं लोगस्स जाणिज्जा** दया अहिंसा, लोगो छज्जीवलोगो, तं जाणिज्जासि जस्स लोगस्स जहा कज्जति, जे दयतो गुणा इह परलोगे य भवंति, णच्चा, न तत्परस्य संदध्यात्, प्रतिकूलं यदात्मनः। एषः संग्राहिको धर्म्मः, कामादन्यत्प्रवर्त्तते ॥१॥ जहा खंदगसीसेहिं सुहदुक्खखमेहिं सावाणुगाहसमत्थेहिवि दयागुणं जाणित्ता दंडियस्स अहियासियं, एवं जाव परिग्गहं जाणित्ता ततो विरमति। ताणि एवं दयादीणि वताणि णच्चा **धंमं कहेमाणो तिरिज्जति**, सा य दया दव्वादिसु भवति, दव्वतो छसु जीवनिकायेसु, लोगग्गहणा दव्वग्गहणं। एवं च णातं भवति, जति कीरति, खित्ते उ पाईणं पदीणं सव्वाहिं दिसाहिं सव्वाहिं अणुदिसीहिं य पाणातिवातं पडिसेधंति, कालतो जावज्जीवं, भावतो अरत्तो अदुट्ठो, अहवा सो एवं लोगस्स दयं जाणित्ता गामादि रीयमाण इति अणियतचरित्ता पादीणं जाव ओहारणिं, केवलियपण्णत्तं धम्मं तित्थपभावणत्थं से आइक्खति, स इति णिद्देसे सो अणियतचारी भिक्खू भिक्खुणो अभिक्खुणो वा, किं अक्खाति? जाव रायिभोयणं चएज्जतित्ति। से य पाणाइवाए चउव्विहे दव्वादि ४, एवं जाव परिग्गहो, किट्टेति णामं इहपारलोइए पाणाइवाए अस्सवदोसे संवरगुणे य

स्पर्शादि सहनादि

॥२३६॥

प्रत
वृत्यंक
[१९४-१९६]

दीप
अनुक्रम
[२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३७॥

धर्मकथा

अक्खेवणादीहिं कहाहिं, वेतिज्जति अणेण वेदो, वेदेतित्ति वेदो, जं भणितं—सम्मदिट्ठी नाणी, अन्नेऽवि जीवातिपदत्थे वेदापयतीति वेदवी, नाणदंसणचरित्ततवविणए वा। अहवा दव्वं खित्तं कालं पुरिसं सामत्थं च विदित्ता कहेतीति, णागज्जुणा तु 'जे खलु भिक्खू बहुसुत्तो बज्झागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहियलद्धिसंपण्णो खित्तं कालं पुरिसं समासज्ज के अयं पुरिसे ? कं वा दरिसणं अभिसंपण्णो ? एवं गुणजाईए पभू धम्मस्स आघवित्तए, भणितो वेदवी, किं तेसिं कहेइ सो वेदवी गिहत्थो साहू कारणा एगो गच्छसहगतो वा, अण्णाणिवि तज्जातीयाणि पुव्वभणिताणि पदानि विभासियव्वाणि, आयर(उवरय)दंडेसु वा जाव सोवट्ठिएसु वा सोतुं इच्छा सुस्सूसा समूसुसमाणाणं कहिज्जति। साहु आदितो वा वेदिते पवेदिते, तं च इमं कहेति संति विरतिं उवसमं णिव्वाणं समणं संतिं, जं भणितं—अहिंसा, लोगेवि वत्तारो भवंति—संतिकम्मं कीरंतु, यदुक्तं भवति—आरोग्गं अव्वाबाहं, विरतिगहणा सेसाणि वयाणि गहियाणि, उवसमगहणा उत्तरगुणाण गहणं, तंजहा—कोहोवसमं० लोभोवसमं, अणुवसंतकसायाणं च पव्वयराइसमाणेणं० इहलोगपरलोगदोसे कधेति, इहलोगे डज्झइ तिव्वकसाओ० परलोगे णरगादि विभासा, णिव्वुति णिव्वाणं, तं च उवसमा भवति, इह परत्थ य, इह सीतिभूतो परिनिव्वुडोव्व, तहा 'तणसंथारणिवण्णो० परलोगेवि मोक्खो, तंजहा—कंमविवेगो असरीरया य०, सोयवितं सोयं, दव्वे भावे य, दव्वे पडादीणं भावे अलुद्धता, लोगेवि वत्तारो भवंति—सुतिउ सो, णवि सो उक्कोडं लंचं वा गिण्हेति, अज्जवा जातं अज्जवितं—अमाता, मद्दवाज्जातं मद्दवितं, लाघवाज्जातं लाघवितं, जं भणितं—अकोहत्तं। एवं पच्छाणुपुव्वीते केसिंचि, अण्णे तु असुतिकलसो तु कोहित्तिकाउं कोहोऽवि होतु, अपसण्णमणा कज्जाकज्जं ण जाणंति तेण अप्पतिकोहो, सोयवियत्ता अकोहत्ताऽऽहता, अणाणुपुव्वीकमेण तु अज्जवितं मद्- ॥२३७॥

प्रत
वृत्यंक
[१९४-१९६]

दीप
अनुक्रम
[२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३८॥

आशातनावर्जनं

वितं लाघवितं, लाघवाज्ञातं लाघवितं, यदुक्तं भवति–अलोभो, अणतिवातियं णाणादीणि जहा ण अतिवयति तहा कहेति, अहवा अतिपतणं अतिपातो, किं अतिवातेति ?, आयु सरीरं इंदियं बलं पाणातिवातो, ण अतिवातेति अणतिवातियं, तं तु सव्वेसिं पाणाणं, ण तु जहा कुलिंगीणं अम्हे न हंतव्वा, अन्ने हंतव्वा, एवं पभूताणं जीवाणं सत्ताणं अतिवातो ण भवति तहा तहा कहेइ, इमं च अन्नं विचिंतेति, तंजहा–के अयं पुरिसे ? कं वा दरिसणं० अहवा 'दव्वं खित्तं कालं' गाहा, भिक्खू पुव्वभणितो, धम्मो अगारधम्मो अणगारधम्मो य अक्खाइज्जति–परूविज्जति, सो एवं अणुवीति भिक्खू धम्मं कहेमाणो किं अन्नं कुज्जा ?, वुच्चति–णो अप्पाणं आसादिज्जा णो परं आसादिज्जा अहवा एतं च अणुचिंतेति जेण णो अप्पाणं आसादिज्जा, अश्लाघया अप्पा चेव घेप्पति, तव्वतिरित्तो परो साहू, आयं सातेतीति आसातणा, लोइया लोउत्तरा य, एकेक्का दव्वे भावे य, लोइया दव्वे सचित्तादिदव्वआसायणा, भावे तु जस्स जतो विज्जाइलंभो भवति ततो विणयातिखलितस्स आसायणा भवति, लोउत्तरिया दव्वे शरीरोवगरणाण अण्णपाणातिसातणा दव्वासातणा, भावे नाणदंसणचरित्ततवविणय०, से धम्मं कहेंतो तहा कहेति जहा आसायणा ण भवति दुविहावि, दव्वे ताव तहा कहेति धम्मं जेण आहारादिआयसायणा ण भवति, तंजहा–भिक्खुस्स अणुवरोहेण कहेयव्वं, पिंडियाए वेलाए हिंडंतो ण लभति अपज्जत्तं वा, तेण विणा जा हाणी, अहवा के पुरिसे ? कं वा दरिसणं० एवं भावं कहेयव्वं, इथरा हि उद्रुट्ठो समाणो अक्कोसे तहाऽनुसेहिज्ज वा विच्छिदिज्ज वा अवहरेज्ज वा, तेण तस्स सरीरे दव्वासायणा भवति, उद्रुट्ठो वा भिक्खं पडिसेधेज्जा, आहारासायणाओ जा परिहाणी भावासायणा, ण तहा धम्मो कहेकव्वो जहा से परिहाणी भवति, जहा य सुत्तत्थ तदुभयं आयपरतदुभयस्स सीतंति, सारण वारण चोयणा पडिचोयणा ते यत्थे, भणितं च–जोगे जोगा जिणसासणंमि०, ॥२३८॥

प्रत वृत्यंक [१९४-१९६]

दीप अनुक्रम [२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२३९॥

आशातनावर्जनं

ण य तारिसिताए इत्थियाए धम्मं कहेइ जतो चरित्तभावासायणा भवति, वक्खति य—अवि साविया पवातेण०, एत्थ भंगा, दव्वासायणा कति भवति भावासायणा, चत्तारि भंगा विभासियव्वा, णो परं आसाएज्जा, धम्मं कहेंतो अणुधम्मकाही निंदति, सो वरातो धम्मं चेव ण जाणति तो किं कहेहिति ?, णवि सो जहा अहं ससमयपरसमयवियाणओ, ण य वादं कहेति, ण य अक्खित्तो, प्रत्यायितुं समत्थो, लज्जालुओ वा, सो ण सड्डिओ ण हेउओ न वा सुमुहो एवं आसादेति, जाइकुलसब्भावादीहिं वा परं आसादेति, परावत्ताओ वा इत्थियाओ पुरिसा वा भणति, णवि सुलभो सुसाहुसमागमो, अच्चिन्तं सरीरेणं धम्मकहीणं तेण मुहुत्तंतरं सुणह, ततो ते अणुवरणाए सुणेति, पच्छा इत्थिया भत्तारेण ईसायमाणेणं अणिस्सायमाणेणं वारं २ भणति, ण करेसित्ति हम्मति, पुत्तो पितिमादिणा, भावासायणा णो अन्नहेउं वा कहेति, अहवा तेण कहेति जहा सम्मदिट्ठी वा थिरीभवति, जहा सक्केति, तो चउव्विहाए कहाए कहेति, अह अक्खिविऊणं णेतरि पुणो विक्खेविउं सम्मं नाणे चरित्ते तवे विणए, ततो तेसिं सुट्ठुयरं भावो सादितो भवति, संसारसमुद्दं तेण पडिन्तो समूढो भवति, कुसत्थभावितमतियस्स अण्णतित्थियस्स पुरतो परिसाते असमत्थेण ण भणियव्वं–सव्वे सेसा कुसिद्धंतगा, पुण अक्खेवे सति अपच्चाइंतस्स परिसाए सुट्ठुयरं मिच्छत्तं भविस्सति, सम्मद्दिट्ठीणं ओभावणा हीलणा य, बालमरणाणि य पसंसंतस्स दव्वभावासादणा भवति, जेण सुत्तेण तेसिं अन्नयरं मरिज्ज, अभूतउब्भावणं च मिच्छत्तं, णो पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसादेज्ज, पंथं गच्छमाणो पुढवि०, तत्थ आउतेउवाऊवणप्फइ छण्हं कायाणं अणंताणं आसातेइ, पुढविमादिसु वा कायेसु ठितो ठियस्स वा कहेति, धूमिताए भिण्णवासे वा पडंते पाणाइं भूयाइं सत्ताइं आसादेति, अत एवं भण्णति–णो पाणाइं णो भूयाइं णो जीवाइं णो सत्ताइं आसादिज्ज, सो एवं अणासातए–अणासायमाणे ॥२३९॥

प्रत
वृत्यंक
[१९४-१९६]

दीप
अनुक्रम
[२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२४०॥

आशातनावर्जनं

किंचि जति लोइया कुप्पावणिया वा दाणधम्मं कूवतलागादीणि वा पसंसंति तो पाणभूतजीवसत्ता आसादिता भवंति, अह भणति–दाणे दिज्जंते कूवतलाएहिं वा खणंतेहिं छक्काया वहिज्जंति तेण अप्पणिग्गहो सेयो, अतो अंतराअदोसासायणा तज्जीवणाइ य पाणिभूतजीवसत्ताणि आसादियाणि भवंति, भणियं च–'जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं' तेण जह उभयमवि ण विरुज्झति तहा कहियव्वं, जह पवतणबिंदुपदाण अज्ञापदाण सरियाए वा (?) अतो णो पाणभूतजीवसत्ता आसादिता भवंति, जो य एवं कहेति से अणासादिते, अणासातयसीले अणासातयगो, सता पाणादीणं णच्चा इति वट्टति, अणासातमाणोत्ति तहा ण कहेति जहा पाणभूयजीवसत्ताणं आसायणा भवति, अप्पं वा, अहवा धम्मं कहेंतो ण किंचि आसादए अन्नं पाणं वा, जं भणितं–तदट्ठा ण कहेति, ण तहा कहेति जहा सो पाणभूयजीवसत्ताणं आसादेति, कहंते तु दाणधम्मे पसंसिते पाणा भूते वा हंति, अतो तदासायणापडिसेहोत्ति, णवि तदासायणा कया भवति, सो एवं अणासादतो, अणासायमाणो य धम्मं केसिं कहेंति?, वुचति–वुज्झमाणाणं पाणाणं वहिज्जमाणाणं वा संसारसमुद्दतेण पाणाणं सरणं गई पइट्ठा भवति जहा से दीवे असंदीणे, जहा सो दव्वदीवो आसासपगासदीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा भवति एवं सोऽवि अप्पणो परस्स तदुभयस्स आसासदीवो भवति पगासदीवो य, जहुद्दिट्ठेण कहाविहाणेणं कहेंतो केति पव्वावेंति केति सावते करेति, तहेति अहाभद्दए करेति, आगाढमिच्छादिट्ठीवि मउईभवंति, तथा मुणित्ति तित्थयरगणधरो वा अण्णतरो वा साहू कम्मबललद्धिसंपन्नो एवं से उट्ठिते एवमवधारणे से इति सो जाणओ कहं कहेति गिहादीणि चइत्ता मोक्खगमणे उट्ठितो णाणादिपंथपट्ठितो जस्स अप्पा स भवति उट्ठिते उट्ठितप्पा, अणिहेति ण णिहेति तवोधिरियं ण णिहंति जं च रागदोसेहिं कम्मविधुणणत्थं णाणादिपंथए ठितो मेरूव वादेण ण कंपिज्जति परीसहोवसग्गेहिं अतो अचले,

॥२४०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१९४-१९६]

दीप अनुक्रम [२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥२४१॥

चलति चालयति वा चलो, जीवायो व अट्ठविहं कम्मसंघातं चालेतीति चलो, चालितेत्ति वा उदीरितेत्ति वा एगट्ठा, अबहिलेस्से परिवए दव्वलेसा सिलेसादि, भावे परिणामो, संजमनिग्गतभावो बहिलेस्सो भवति. अबहिलेस्सो ण बहिलेसा, अहवा अप्पसत्थाओ लेस्साओ संजमस्स बाहिं वहंतीतिकाउं सो बहिलिस्सो भवति, नो बहिलेस्सो अबहिलिस्सो अणुलोमेहिं पडिलोमेहिं उवसग्गेहिं उप्पण्णेहिं अबहिलिस्सो, अणाइलभावो अणिग्गयभावो, सचित्तो अबहिलिस्सोत्ति एगट्ठा, जेऽवि ते गामाणुगामं दूइज्जंतेणं आयरिया अणारिया वा धम्मं गाहिता तेहिं वंदिज्जमाणो पूइज्जमाणो य आढायमानो अणाढाइज्जमाणो वा तत्थ अबहिलिस्से चेव परिवतिज्ज, समता वते परिव्वते, यदुक्तं भवति–ण कत्थति पडिबज्झमाणो, एवं सो अणियतविहारी परीसहउवसग्गसहो संखाए पेसलं धम्मं संखाए परिगणित्ता, जं भणितं–णचा, किमिति ?–पेसलं धम्मं, पीतिं उप्पाएतीति पेसलो, धम्मो दुविहो–सुयधम्मो चरित्तधम्मो य, जो वुत्तो वुच्चमाणो वा, दिट्ठिमंति अविवरीतं दरिसणं दिट्ठी सा जस्स अत्थि जहिं वा विज्जति सो दिट्ठिमा, एवं जाव विणयवं परिणिव्वुडित्ति विसयकसाएहिं उवसमंतो, दव्वणिव्वुडो अग्गी सीतीभूतो, रागाउवसमाओ य णिव्वुडगा य भवंति, भावे अकसाओ सीतीभूतो परिणिव्वुडो य, तंणिग्गओ, परमो वा तणुयकसाओ वा असंजमविवज्जयओ वा णिवुत्तो, परिणिव्वायमाणे वा परिणिव्वत्तेति वुच्चति, जो पुण असंखाय पेसलं धम्मं मिच्छदिट्ठी अपरिणिव्वुडे भवति, तम्हा संगइं पासह अहवा सव्व एव एसो गिहंतराओ आरब्भ दुविहो उवसग्गसहो भिक्खू अक्खाओ धम्मकहलद्धिसंपण्णो, तव्विवज्जए तु संगतिं पासह, तम्हा इति जहोद्दिट्ठगुणविवज्जयाओ सदाईणं संगो, दव्वे पंकादि, पंचविहविवज्जतो वा, तदुवचितं कम्मं संगो भवति, संगोत्ति वा विग्घोत्ति वा वक्खोडित्ति वा एगट्ठा, कस्स ?–मोक्खस्स, जाणह वा संगं–गंथं पासह, यदुक्तं भवति–कम्मं संगंथंते, एवं

अबहिर्लेइयादि

॥२४१॥

प्रत
वृत्यंक [१९४-१९६]

दीप
अनुक्रम [२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२४२॥

कामविषण्णादि

संगिणो, गंथे पढिता णरा कतरे?, ते जेहिं ण णियगादि पंचवि धुया, अप्पाणं वा पंच गाहितो, तेहि य अचिट्ठिते हिते रागद्दोसादिएहिं गढिता बद्धा नरा विसन्ना कामविप्पिता विविहं सन्ना विसण्णा, दव्वे पंकादिविसण्णा भारवाहपरिया वा, भावसन्ना नियगा पंच, एयाए दुविहाए कामविप्पिता, विग्घितत्ति विप्पितत्ति वा एगट्ठा, दव्वे खंभादिविप्पिता दुरुद्धरा भवंति, भावे दुविहकामआसत्तचित्ता, सयणधणादिणा मुच्छिता वा कामा, जेहिं वा सारीरमाणसेहिं वा दुक्खादी, माणसेहिं इह विप्पिता परलोएवि बहूहिं डंडणेहि य जाव पियविप्पओगेहि य विप्पिज्जिस्संति, जंसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसंति जंसि जत्थ, इमे इति जे वुत्ता गंथेहिं गढिता नरा, अहवा इमे मिच्छादिट्ठी असंजतमणुस्सा, लूसंतीति लूसगा, पंचगस्स वा लूसगा भंजगा विहारगा एगट्ठा, णो परिवित्तसंति–णो उव्वियंति, णो बीभेंति, लूसगत्ता ण परिवित्तसंति, तदुवचियस्स वा कम्मस्स नरगादिभयस्स वा, तहा गंधाओ कामेहिंतो, पढिज्जइ य–तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसिज्जा जम्हा गंथेहिं गढिता णरा विसन्ना इह परत्थ य दुक्खेहिं च विपिज्जंति तम्हा तुमं लूहातो णो परिवित्तसिज्ज, दव्वे जं नेहविरहितं दव्वं तं लूहं, भावे रागादिरहितो धम्मो, तत्थ रुक्खत्ता ण कसादि बज्झति, भावरुक्खत्थं दव्वरुक्खाओ ण वित्तसे, भणियं च–अतिणिद्धेण चलिज्जंति० कतो सो लूहाओ ण परिवित्तसेत्ति?, णणु जस्सिमे आरंभा सव्वओ सुपरिणाता भवंति, जस्सेति जस्स साहुस्स, कतरे आरंभा:? पुढविकाइआरंभा आउकाइयारंभा तेउकाइयारंभा वाउकाइयारंभा वणस्सकाइयारंभा जाव तसकाइयारंभा, जह सत्थपरिण्णाए एक्केक्कस्स बहवे आरंभा भणिता तंजहा उवभोगे य सत्थे य, अहवा णामादिआरंभा, णामठवणाओ गयाओ, दव्वे कायारंभो, भावे 'रागादीया तिण्णि'गाहा, सव्वतो इति खित्तं गहियं, गामे वा जाव सव्वलोए, सव्वता इति सव्वअप्पत्तेण, भावे गहिते कालोवि तत्थेव, जाणणापरिण्णाए

॥२४२॥

प्रत वृत्यंक [१९४-१९६]

दीप अनुक्रम [२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२४३॥

कषाय-शमादि

वा, पच्चक्खाणपरिण्णाए पडिसेधित्ता, एवं लूडाओ णो परिवित्तत्थो भवति, अहवा से वंता कोहं च माणं च मायं च से इति से रुक्खातो अवितत्थो, सव्वओ सव्वअप्पत्तेणं सव्वआरंभपरिण्णाओ धुणणाधिगारो अणुयत्तति, तेण वंता कोहं च, जं भणितं-धुणित्ता हंता, कोहमाणमायालोभत्ति वत्तव्वं, जं एक्केकस्स उच्चारणं कीरति तंजहा-जावंतिज्ञ जइ व, एक्केको कसायो चउव्विहो, कसायो य एक्केकस्स खमणे कीरति, तंजहा-अण मिच्छ मीसं अट्ठ णपुंसित्थि वेद छक्कं च। आवस्सए, संवरेण निरुंभित्ता तवेण पुव्वउवचितं कम्मं खवित्ता, एस तिउट्टे एस इति जो साहू जहुदिट्ठकमेणं णियगादि विधूता त्रोडिज्जमाणा, तुट्टो त्रोडेति त्रोडइतवा, तं त्रोटये किमिति?, कम्मबंधणं, उभयथावि एत्थ समासो, कंमबंधणं जस्स त्रूट्टं, कम्मबंधणाओ वा तुट्टो, तित्थगरगणहरेहिं विविहं अक्खाओ विक्खाओ, इति एवं, वेगि(बेमि)पंचासवनिरोहसामत्था तुट्टति, केचिरं एवंविहे गुणे धरेंतेण कम्माइं तु तुडेति तिव्वाइं?, भवति-कायस्सवि ओवाए कम्मसरीरस्स भवोवग्गहकम्मचउक्कयस्स वा वियोवाते विविहस्स वा ओरालियतेयाकम्मसरीरकायस्स अचंतविओवाते, संगमतीति संगामो, संगामस्स सीसं संगामसीसं, दव्वसंगामो वइवीरघट्टणं, तंजहा-रही रहेहिं हत्थिगतो हत्थिगतेहिं एवं जाव पदातिभावे, परीसहरिउजयसंगामसिरं अट्ठविहकम्मारिसंगामसीसं, जहा दव्वसंगामसिरे पराजिणित्ता इट्ठे भोगे पावति एवं कम्मारिजयाओ को गुणो?, भणति-'से हु पारंगमे मुणी स इति सो दव्वभावजुज्झे कायवियोवाता परीसहरिउं जेता, पारं गच्छतीति पारंगमा, दव्वपारं नदीसमुद्दादीणं, भावे जहुदिट्ठनियगादि पंचगं धुणित्ता णाणादिपंचगपोतारूढो संसारसमुद्दपारं गच्छति, मुणी साहू आयरिओ अन्नतरो वा, सो एव परीसह अरी जिणति संसारपारं गच्छति, कदा?-अवि हण्णमाणो अवि पदार्थसंभावने, भणति-हण्णमाणो फलगावयट्ठी जहा उभयतओ फलतं अवगरिसिज्जमाणं

॥२४३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [१९४-१९६]

दीप अनुक्रम [२०७-२०९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ८ अध्य० ॥२४४॥

अवगरिसियं च फलगा भवंति, एवं सो बाहिरब्भंतरेण तवेण बाहिं अंतो य अप्पाणं अवकरिसति, तंजहा—बाहिं सरीरं अंतो कम्मं, दुविहेहि य उवसग्गेहिं अप्पाणं अवगरिसति, सत्थेण वा तच्छिज्जमाणे जोत्तेण वेत्ताइणा वा हंममाणो कम्मत्रोडणातो ण णिव्विज्जति—न नियत्तति, जह बाहिरे सरीरे हम्ममाणे ण णिव्विज्जति, कालोवणीते कालं उवणीतो कालोवणीतो, कालं मरणकालं, तं तु पाउवगमणं भत्तपच्चक्खाणं वा, एक्केकं वाघातिमं च निव्वाघातिमं च, कालोवणीतो, गहणे वा ण अप्पत्ते काले मरणस्स उज्जमियव्वं, एत्थ णागज्जुण्णा सक्खिणो—जति खलु अहं अपुण्णे आउत्ते उ कालं करिस्सामि तो परिण्णालोवो अकित्ती दुग्गतिगमणं च भविस्सइ, सो एवं कालोवणीतो पातो० भत्तपाणपडियातिक्खित्तो वा कंखिज्जपत्थेज्ज पीहिज्ज अभिलसिज्जा जाव करिसणो कम्मक्खओ, कालमिति पंडियमरणं, ण तु तेणं णिव्विण्णो समाणो वेहाणसं गामगद्धपट्ठं वा अण्णतरं बालमरणं वा जाव आउभेदे जाव परिमाणे अवहारणे वा, भेदणं भेदे, कतरस्स?, आउयकम्मगसरीगस्स, तदवबद्धाणि चिट्ठंति, यदुक्तं भवति—जीवसरीरवियोगो, तं जाव सरीरभेदो ताव कालं कंखिज्ज, सो य देहवियोगो खिप्पं चिरातो वा होज्जा, ण य अण्णतरं आससापयोगं आसंसेज्जा कम्मधुयं भवतीति बेमि ॥ षष्ठमध्ययनं समाप्तं ॥

ओवातो महापरिण्णाए संबंधो पुव्वभणितो, णिक्खेवणिज्जुत्ती, तंजहा—मोहसमुत्था परीसहोवसग्गा परिजाणियव्वा, परिण्णाय कम्मस्स णिज्जाणं भवति, यदुक्तं भवति—मरणं संपत्तं, महापरिण्णा ण पढिज्जइ असमणुण्णाया, तेसिंपि धुणणं विवेगं च करेइ, अयं सुत्तस्स सुत्तेणं—कालं कंखिज्ज जाव सरीरभेदो, तेणं सुत्तेणं, अवि सुत्ताओ आरंभ सव्वं संबज्झति, तत्थ आदिसुत्तेण सह संबंधो तंजहा 'इहमेगेसिं णो सण्णा भवति, ण सव्वेसिं, तहा इहमेगेसिं सण्णा भवति जहा पातोवगमणं भत्तपच्चक्खाणं वा ठितो कंखिज्ज

कालकांक्षितादि ॥२४४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

*** **पूर्वकालात् अध्ययन - ७ व्युच्छिन्नम्, वृत्तिकारेण स्वयम् अस्य अध्ययनस्य विच्छेदस्य कथनं कृतमेव | परंतु चूर्णिकारेण इह अध्ययनस्य क्रमं सप्तमं एव लिखितम् तत् चिन्त्यम् |** [यहां चूर्णिमें इस अध्ययन का क्रम ७ लिखा है, वृत्तिकारने यहा स्पष्ट लिखा है कि अध्ययन-७ विच्छेद हो गया है, चूर्णि और वृत्ति दोनोमे निर्युक्ति और सूत्र तो समान हि है सिर्फ़ क्रममे विसंवाद है ।]

अष्टम-अध्ययनं 'विमोक्ष' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२४५॥

उद्देशार्थाधिकाराः

कालं, सक्का पुण सुहेण धम्मोत्तिकाउं भत्तपच्चक्खाणं चेव णिच्छंति, जेवि इच्छंति तेसिंपि जहा अम्हं सुद्धं परिकम्मेउं च पच्चक्खाइज्जति तहा तेसिं णो सण्णा भवति, जह य अम्हं सरीरभेदाओ मोक्खो भवति, कर्मबन्धनबद्धसद्भूतस्यान्तरात्मनः सर्वकर्मविनिर्मुक्तो मोक्ष इत्यपदिश्यते, एवं अण्णेसिं णो सण्णा भवति, तेसिं सन्नाणलोवाण अणवज्ञो भवति, एवं आदिमसुत्ताओ आरब्भ जाणि पसत्थाणि उवदंसियाणि सुत्ताणि ताणि सद्दहमाणो आयरमाणो य अपसत्थाणि वज्जंतो कंखेज्ज कालं, जहा य आदिमंतस्स मंगलसुत्तस्स अवसानेण सुत्तेण सह संबंधो जोइओ एवं अन्नेहिवि सुत्तेहिं सह संजोएयव्वं, तंजहा—अट्टे लोए परिजुण्णो इहमेगेसिं णो सण्णा भवति, एवं सव्वसुत्ताणि जोएयव्वाणि, जहा य एतं आदिमं मंगलसुत्तं सव्वसुत्तेहिं सह संबद्धं एवं अण्णाणिवि सुत्ताणि अण्णोण्णं सह संबद्धियव्वाणि, भणितो संबंधो, अणुयोगदारा परूवेऊणं दुविहो अत्थाहिगारो-अज्झयणत्थाहिगारो य उद्देसत्थाहिगारो य, अज्झयणत्थाहिगारो पुव्वभणितो, 'णिज्जाणं अट्ठमए' अहवा विमोक्खेण अहिगारो, उद्देसत्थाहिगारो—पढमे असमणुण्णातं ॥२५२–२५६॥ तिण्हं तिसट्ठाणं कुप्पावयणियसताणं विवेगो कातव्वो, आहारउवहिसेज्जाओवि तेसिं संतियाउ वज्जेयव्वाओ, किं पुण जे तेसिं दिट्ठी ?, नाणादिपंचगे समणुण्णा, ते पासत्थादि चरित्ततवविणयसुअसमणुण्णा, अहाछंदा पंचसुवि असुहरूवा, तत्थुवसग्गा, बितिते अकप्पितविमोक्खोत्ति, णिमंतिज्ज ताव पडिसेहंति, पडिसेहेंतेसु जति णाम कहिंचि रूसति ताहे तेसिं सिद्धंतसब्भावो कहिज्जति, ततियंमि अंगचिट्ठा हेमंते भिक्खं हिंडंतं सीतवेवमाणगातं जति कोइ दुट्ठत्ताए पुच्छइ—किं ते सीतं अदुव गामधम्मा बाधंति ? जेण कंपसि, तत्थ तस्स सब्भावकहणं कीरति, न गाम० बाधंति, सीतं ममं कंपेति, उद्देसंमि चउत्थे वेहाणसं कंठं, पंचमए गेलन्नं कंठथं, स एव य उवगरणानां नाम 'छट्ठंमि उ एगत्ते' उवगरणमोक्खं तम्हा णाणिणं एकत्वं वक्ष्यति, ॥२४५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

अष्टम-अध्ययने प्रथम-उद्देशक: ‘असमनोज्ञ विमोक्ष’ आरब्ध:,

प्रत वृत्यंक [१९७-२०१]

दीप अनुक्रम [२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२४६॥

मोक्ष-निक्षेपाः

'एकोऽहं न मे कश्चित्, नाहमन्यस्य कस्यचित्।' इंगिणिमरणं अणुपविसेत्ता लाभं न लाति, अह स्वयं अणंतरपायोवगमकार्येव जो वयं चरिउं, 'अट्ठमे अणुपुव्वविहारीणं' कंठ्यं, णामणिप्फण्णे विमोक्खाययणं, सो छव्विहो णामं ठविओ मोक्खो दव्वमोक्खो य गाहा ॥२५७॥ दव्वविमोक्खो णिगलातिएहिं० गाहा ॥२५९॥ दव्वस्स दव्वाणं, तत्थ दव्वस्स बद्धस्स गोणपडिनिभस्स वा, बहूणं वा दव्वाणं, जो जेण दव्वेण मुचति, बद्धो सचित्तेण अचित्तेण वा, दव्वेहिं सचित्तादीहिं बहुणिगलेहिंतो, बहूहिं णिगलेहिं गलसंकलहत्थंदुगादीहिंतो वा, खेत्तविमोक्खो चारगाओ विमुच्चति, जो वा खित्तं दाऊणं विमोएति, अहाकप्पगं सव्वत्ताए वा, काले जो जहिं काले मुचति, दुब्भिक्खकालाओ वा मुक्को, मारिज्जिउकामो वा कत्तिमाइएसु अमाघाते घुट्ठे मुचति, दुविहो उ भावमोक्खो ॥ २५९ ॥ देशविमोक्खो दुविहो—सावगाणं साहूण य, सावगा दुविहा—दंसणसावगा य गहियाणुव्वया य, दंसणसावगाणं पढिमिल्लुगकसायविमोक्खो, सामिग्गहाण तु अट्ठण्हं कसायाणं विमोक्खो, साहूणं केसिंचि बारसण्ह कसायाणं विमोक्खो, केसिंचि 'दो दो०' एवं खवगसेढी उवसामगसेढी य रयेऊणं जो जत्तिएहिं कम्मेहिं विमोक्खो, सव्वविमुक्का सिद्धा, बद्धस्स मोक्खो भवति तेण बंधो भणियव्वो, केण विबद्धो कहिं वा ?, तेण पोग्गलपातेण सह संजोगा, भणियं च-सव्वआतप्पदेसेहिं अणंताणंतप्पदेसा, कहं वज्झति ?, 'कहंणं भंते ! जीवा अट्ठकम्मपगडीओ बंधंति ?, गो०! अब्भुत्तस्स रेणु उवलग्गते जहा अंगे, अहवा रागेण य गाहा ॥२६०॥ तथा सकषायत्वाज्जीवः, अहवा बद्धपुट्ठणिधत्तणिकातिएत्ति, एवं बंधो भणितो, इदाणिं मोक्खे, बंधवियोगो मोक्खो भवति, जीवस्स अत्तजणितेहिं गाहा ॥२६१॥ कंठ्या, भणितो भावविमुक्खो, भावमोक्खस्स उवाओ-भत्तपरिण्णा इंगिणि० गाहा ॥२६२॥ चरिममरणंति-चरिमभवसिद्धियमरणस्स संसारविमोक्खो भवति, तं पुण एकेकं ॥२४६॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२४७॥

मरण-विभक्तिः

मरणं दुविहं भवति, तंजहा-सपरक्कमं अपरक्कमं च, एक्केक्कं दुविहं-वाघातिमं निव्वाघाइमं च, सपरक्कमे य० गाहा ॥२६३॥ सुत्तत्थजाणतेणंति जहा सुत्तत्थतदुभयणिम्मातो भवति, ततो तिण्हं मरणाणं अन्नतरं अब्भुवगच्छति, अणिम्मातो वा गीयत्थं अब्भुवगच्छति, सपरक्कममादेसो० गाहा ॥२६४॥ सुद्धिणिमित्तं अज्जवतिरेहिं सपरक्कमेहिं चेव होंतएहिं पारिहृदगिरिंमि भत्तं पच्चक्खायं, पाउवगमणंमि तहा तहा तेण पगारेणं पाओवगमणं, किंचि तहा चेव सपरक्कमस्स भवति, अपरक्कम आदेसो ॥२६५॥ आदेसो णाम दिट्ठंतो, उदहि णाम अज्जसमुद्दा वुच्चंति, ते य गतिदुब्बला चेव आसि, पच्छा तेहिं लुंघालव(जंघाबल)परिहीणेहिं गच्छे चेव भत्तं पच्चक्खातं, पाउवगमणंति तहा तहा चेव जंघाबलि परिहीणो उवसग्गस्सेत्ते एगंते पाउवगमणं पडिवज्जति अणीहारिमं, इदाणिं वाघातिमं वुच्चति, वाघातिमं आदेशो ॥२६६॥ अवरद्धो णाम अवरद्धिया वा से उट्ठिता अतिगिच्छा, विसेण लद्धो, वालेण वा भक्खितो, रिंछेण वा चिरुगितो, तोसलिते वा महिसीते-हतो, तोसलीए बहुउदए बहुईओ महिसीओ अडवीए चरंति, पिंडारं ण मारेंति, अण्णं जणं मारेंति, तत्थ ताहिं एक्को साहू दिट्ठो, केइ भणंति-तस्सवि तोसलितो चेव णामं, सो ताहिं दुट्ठमहिसीहिं पाडेउं खुरेहि य तुंडेण य संचुन्नियंगमंगो अतिवेयणाए वाघातिमं पच्चक्खातं, वुत्तं वाघातिमं, अणुपुव्वियं तु— अणुपुव्विगमादेसो गाहा ॥२६७॥ पव्वज्जत्ति 'पव्वज्जा सिक्खावय अत्थगहणं च' तत्थ अत्थग्गहणं णिप्फाथिया य सिस्सा कहणंति ताणि सिस्साणं कहियाणि, णिप्फायिया य सिस्सा० गाहा। पच्छा जइ आयरिओ ताहे अण्णं गणे ठवेऊणं णीति, विरुज्झितो समाणो गणं, ण जाव आयरिओ ठविएल्लतो, जो पुण अणायरिओ सोवि जति उवज्झातो ताहे तं तु उवज्झातत्तं णिक्खिविउं णीति गुरुविसज्जितो, एवं पटंति-थेरा गणावच्छेतियावि, भिक्खुक्को वा विसज्जितो गणाओ णितो, अब्भुज्जयमरणकारणा ॥२४७॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

संलेखना

आहारोवहिसेज्जाओ विविहिं तिण्णि, जं भणितं-णिचं आसेविज्जंति, भत्ते वा पच्चक्खाते पाणगस्स आहारेण असणखाइमसाइमेत्ति सेसो तिविहो आहारो भवति, तस्स तियस्स मुक्को, अब्भुज्जतमरणं पुण अब्भुवगतो पढमं चेव संलेहं करेति, दव्वसंलेहणाए भावेण य, इहरहा विराहेति, तत्थ एक्को दव्वसंलिहितो ण पुण भावेणं, आयरिए उवट्ठितो विसज्जेहित्ति, मते, पच्छा आयरिएण पडिचोईओ-संलिहाहि ताव, सो कुवितो अंगुलिं भंजेउं दरिसेति, पुलि(एत्ति)एहिं किं संलिहितो ण वित्ति ?, गुरुणा भण्णति-अतो चेव ण संलिहितो ते भावो जेण कुप्पसि, पच्छा एत्थ तिक्खसीतला आणा वुच्चति, जहा तेण वेज्जेणं रण्णो, एक्को विचंडको राया, किरियं करेंतोवि अप्पणिज्जेहिं वेज्जेहिं नो पिछियाए मुच्चइ, आगंतुओ विज्जो आगंतुं भणइ-अहं एतं पउणावेमि ते, जति पुण एमेक्कं गुलियाणिवातं सहसि, ण वा ममं मुहुत्तमित्तं मारवेसि, अब्भुवगते अंजिताणि, तिव्ववेयणट्टो भणति-मारेह २ एतं वेज्जं, फुट्टाणि मे अच्छीणि, एवं सा तिक्खा आणा सीयला भूता, जेण पुव्वं चेव वुत्ता मुहुत्तमज्झे मते भणंतेवि ण मारिज्जह, मुहुत्तंतरेण पल्हाणाणि, पट्टा पेल्लिता, पूजितो वेज्जो, एवं चेव तम्हाऽऽयरिया तिक्खं आणं पउंजंति, तुमं पडिचोयणं ण सहेसि, तंबोलपत्तसरिसो अण्णेवि विणासेहिसि, भत्ते पच्चक्खाते समाणे भावाओ असिलीढो रुस्समाणो, तेसु कारणेसु दव्वओवि असंलिहितो एवं चेव वुच्चति, इच्चेतस्स विवेगो कीरति, अन्नगणातो आगतो ण पडिवज्जिज्जइ अतो विवेगो, अह सगणे चेव तो से ण ताव पच्चक्खिज्जइ अतो विवेगो, घट्टणत्ति एवं घट्टितमट्टितो कज्जति, एवं आतीयेति तक्खणाए पुज्जति, जइ पुण एवं घट्टिज्जंतो वा आउट्टति अकरणाए अब्भुट्टेति पच्छित्तं पडिवज्जति तहा से पसाओ कीरति, अतो तिक्खा आणा सीतलीभवती, णिप्फाइया य सीसा० गाहा ॥ सुत्तत्थतदुभयेसु णिप्फातिता, सउणिसि जहा से दियापोते अंडाओ आरब्भ जाव सयं पच्चिण्णो ताव

॥२४८॥

प्रत वृत्यंक [१९७-२०१]

दीप अनुक्रम [२१०-२१४]

सारक्खति एवं उवसंगिहितो णिग्माओ विसज्जितो बारस संवच्छरियं संलेहिं, चत्तारि विचित्ताइं गाहा ॥ ॥ चउत्थछट्ठट्ठमाईहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं, पारणते विगतिरहितेसु वा णिव्विगतितेहिवि भवति, पंचमाओ वरिसाओ आरब्भ जाव अट्ठ ताव विचित्ताणि चेव तवोकम्माणि करेति, पारणाए पुण ण विगइं पडिसेवति, दो संवच्छरे णवमदसमेसु संवच्छरेसु पक्खंतरएण आयंबिलेण परक्कमति, पक्खदिवसं चउत्थयं पारणाए आयंबिलं, ताहे एक्कारसमं वरिसं दो भाए, तत्थ आदिल्लेसु छम्मासेसु णातिविगिट्ठं चउत्थछट्ठट्ठमं तवं काउं परिमियं आयंबिलं भुंजइ, बारसमं संवच्छरं सव्वं चेव वरिसं कोडिसहियं काउं णिच्चं चेव आयंबिलस्स कोडियमिति, पच्छा आयरिए पुच्छिओ सति परक्कमे एएण कमेण लहुं मुच्चति अपरिकिलिट्ठो, तंजहा-किह णाम सो?, तावाहारेणविरहितो० गाहा ॥ पारणए पुण अप्पाहारो, बत्तीसं किर कवला०, पमाणाहारो तं हासंतो जाव एक्को लंबणो, अट्ठलंबणा एए निरुंभिज्ज, णिज्जुत्ती, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं, अक्खलियं०, सुयं मे आउसं! तेण भगवया, सव्वमेतंपि ण असुतं, किंतु सुतं, सो बेमि समणुण्णस्स वा सेत्ति णिद्देसे आमंतणे य, तस्स परिव्वयंतस्स भिक्खु अण्णतित्थियाणं च उभयहावि य अविरुद्धं समाणो, समणुण्णो दिट्ठीओ लिंगाओ, सह भोयणादीहि वा समणुण्णे, अन्नहा असमणुण्णो सक्कादीणं, समणुस्सस्स वा असमणुण्णस्स वा अविरुद्धाचालस्सवि असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पुव्वभणियाणि, पाएज्ज तहा पादिज्ज भोइज्जा, तीयग्गहणं देसीभासाओ असितपीतं भण्णति, जहा थक्के साहेहि वा, तहा लुक्खितोऽपि वा वातो वुच्चति पुव्वदेसाणं, जं जस्स कप्पं फासुयं अफासुयं वा तं चेव पातेंति भातेंति, सावसेसं तेसु चेव पात्रेषु वा पक्खिवंति, एवं ताव सतमागते पावंति वा भोइंति वा, अणुह्वियंतंपि अण्णे णिमंतेंति-दिणे दिणे एज्जासि, कुज्जा वा वियावडियंति गिलाणाति- ॥२४९॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२५०॥

समनोज्ञादि

निमित्तं, जाइत्ता अण्णतोवि दवावेंति, गिलायमाणस्स वा सयमेव उव्वट्टणादिवेयावच्चं करेंति, परं आढायमाणा, अहवा परमिति परेणं पयत्तेणं आढायमाणा, पासं णिमंतेंति वेयावडियं, जं भणितं—ण अणादरेणं, अहवा परं आढायमाणेत्ति जं वा देंति तहा तेसिं हत्थाओ गिण्हंति, अतो आढिता भवंति, एवं सव्वपासंडिणो णिमंतेंति, अम्हतणएसु अहिगारो, तेणंति हे साधु! धुवं वेयं जाणाहि, असणं वा जाव पादपुंछणं वा, धुवमिति णिच्चं, रज्झति सयट्ठाए, ण तवऽट्ठाए, जति तव उवक्खडितं ण गिण्हह तदा विधुता अम्हं, सव्वता तेल्लगुलघयादिगोरसखीरादिणि वा लभिय णो लभित, जतिवि अण्णहिं लभहा ताव अम्ह पीतिए इह एज्जाह, तो कुसणं गोरसं पाणगं वा गेण्हिह, जति विच्चं पज्जत्तं तोवि अम्हं चिति भविस्सति, अलद्धे तु णियमा चेव एज्जह, भुंजियत्ति भोत्तुंपि एज्जह पुणो भोक्खह, जति एते पढमालिता कयाओ इहं सव्वालियं करिज्जह, अभुत्ता तु एज्जह चेव, इह वा पढमालियं छिच्छिह, अतो अभुंजितेविअ चत्तं अचियत्तं, अणुपंथे सो अम्हं विहारावसहो वा, थोवं उच्चं कतिवि पदाणि, अहवा वत्तो पहो णिरावातो, ण तिणादिणा छण्णोवि भवइत्ति, अहा तुज्झं धम्मो, अन्नहा अम्हं, तं तुज्झे वित्तं अप्पणिज्जगं धंमं जोसमाणा, यदुक्तं भवति—सेवमाणा, मा तुज्झे मंसं वा कंदमूले वा गिण्हिज्जह, जहा य तुज्झं एसणिज्जं भवति तहा दाहामो आउकायादि असंघट्टित्ता, **समेमाणोत्ति** इमं बलं विहारं वा समेमाणा पत्ता मालेमाणा गच्छंता उवत्तेज्जहत्ति वट्टति इति, एवं पादिज्ज वा जाव कुज्जा वेयावडियं वा, ते पुण पुव्वसंगतिया वा अणुकंपाए वा आहारादीहिं वा लोभेऊणं कड्डितुकामा, एवं ते उवाएणं पादिज्ज वा जाव कुज्जा वित्ता(वेया)वदियं आढायमाणा, तेसिं एवं भावपराणं ण गिण्हियव्वं ण संवसियव्वं ण संथवो कायव्वो, परं अणाढायमाणाणं वज्जेयव्वा, भणियं च—एसा दंसणसोही, के दोसा?, वुच्चंति—इहमेगेसिं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति

॥२५०॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२५१॥

समनोज्ञादि

इह पवयणे, एगेसिं, ण सव्वेसिं सेहादीणं, आयारगोयरो विसतोत्ति एगट्ठा, णो पडिसेहे, सु पसंमायां, णिसंतो सुतो, अहवा सुणित्ता उवलद्धो, यदुक्तं भवति-हितपट्ठवितो, णो सुणिसंतो, तहा आणावि सिद्धंतो, ण ताव च उवधारितो भवति, ते य भिक्खायरिया अण्हाणगसेयाजल्लमलपंकपरितावितो तच्चिण्णियाति वट्टमट्ठ० विहारवासी सपंपि घट्ठा मट्ठा, ते दुट्ठं वुद्धधम्मावि ताव आहारादि-लोमेण तहिं परिणमंति, किमंग पुण अण्णे?, अधम्मदिट्ठीए विपण्णवेंति-णियंठाणं पत्थरावि जीवा, तेण एवं मिच्छत्तं, ण य जीव-पहुत्ते सकति अहिंसाणिप्फत्ति अ, णिरत्थओ य किलेसो अणुवहिज्जति, इह तु सुहेण धम्मो पाविज्जइ णिव्वाणं च, एवं वुग्गा-हिता समाणा तं कुदरिसणं सद्दहमाणा जाव रोएमाणा केति तमेव पडिवज्जंति, जेण पडिवज्जंति तेवि जिब्भा अवहिता ते एवं आरंभट्ठी, आरंभो णाम पयणपयावणादि असंजमो तेण जेसिं अट्ठो एसो आरंभट्ठी, सक्कादिते य आरंभेणं धम्ममिच्छंति, विहा-रारामासमतलागकरणउद्देसियभोयणादि, जे हि वदंति णत्थि एत्थ दोसो इति सोवि ते एवंवादी अणुवदति-को वा एत्थ दोसो जति गिलाणादिनिमित्तं पिज्जाती कीरति, निरोगे तु सति बले विणयधम्भाओ अतीति, एवं तिण्हं तिसट्ठाणं पावादियसताणं जस्स जं दरिसणं तहा अणुवट्टति, जे अहिंसगवादिणो ते भणंति-को दोसो?, तुज्झवि अहिंसा अम्हवि अहिंसा, तुज्झेवि पव्वइया, अम्हेवि पव्वइया, तुज्झेवि बंभयारी, हणपाणघातमाणा सयं हणंति, एगिंदियते पाणा रंधावेमाणा कड्ढावेमाणा भणओ यावि सम-णुजाणमाणा उद्दिसियं भुंजमाणा एवं ताव हिंसं अणुवदंति णवएण भेदेण, मुसावाते बहुयं भाणियव्वंतिकाउं तेण सो पच्छा वुच्चि-हिति, तेणं अदत्तं वुच्चति, अहवा अदिन्नं वाऽऽदियंति अणेगविहदरिसणाओ माणं भवति, भणियं च-उज्जमकजुत्तीणीकेण तं तेसिं उदगं दिण्णं जंणमादिएसु सगराहं अवगाहित्ता ण्हायंति पियंति य, अह राणतेणं अणुण्णातं तहावि जेसिं जीवाणं सरीराणि तेहिं ॥२५१॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२५२॥

लोक ध्रुवत्वादि

ण अणुण्णातं, एवं पुप्फफलपत्तादीणिवि गिण्हंति, गोणिमादिधण्णाण य वत्थे बधंति, वेंदियाणवि अग्गिहोत्तकारिते विसीयमाणे तेणं अणुण्णातं, एवं मेहुणं 'जहा गंडं खि(पि)लागं वा' विवाहदिवसते वा देंति, परिग्गहं त्रिविहं गिण्हंति गामखित्तगिहादीणि, अहवा मिच्छादिट्ठिस्स एगमवियं णत्थि, मुसावाते उवायाओ विजुज्जंति वयणं वा, ण केवलं हिंसंति तिविहकरणप्पयोगेण, वायाओवि एगे विविहं जुंजंति णाम विणासितं वुचति, पुव्वुत्तरं विरुद्धं भासित्तातो य विणासेंति, विजुंजंति णाम विणासंति, केति भणंति–अत्थि लोगो, णणु अत्थिमेव लोगो, तेण कहं विणासंति ?, भणिज्जइ–लोग अत्थित्तं एति अविरोधो, नाणाविहेहिं सच्छन्दविगप्पेहिं विणासेंति, तंजहा—लोगो किर वामतो, केसिंचि णिचं भवति, आदिच्चे अवट्ठियमेव तं आदिच्चमंडलं, अवट्ठियमेव तं आदिच्चमंडलं दूरत्ताओ जे पुव्वं पासंति तेसिं आइच्चोदयो, मंडलहिट्ठियाणं मज्झण्हे,, जे उ दूरातिकंता ण पस्संति तेसिं अत्थमिओ, तहा य धुवे लोगो, एवमादि विप्पडिवत्तीओ, णत्थि लोए, णत्थि लोएत्ति वेइतूलिया पडिवण्णा, तंजहा—गंधव्वनगरतुल्लं माताकारगहेतुपच्चयसामग्गिएहिं भावेहिं अभावा, एवमादिहेऊहिं णत्थि लोगो पडिवज्जंति इति, एवं ता वायं विजुज्जंति, धुवेत्ति संख्या वुच्चंति, धुवो लोगे वायंति वुच्चति, सत्कार्यकारणत्वात्तेसिं, ण किंचि उप्पज्जति विणस्सति वा, 'असदकरणा उपादानग्रहणात्सर्वसम्भवाभावात् । शक्यस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यं ॥१॥ एगो भणति–जातिरेव भावानां विनाशहेतुमितिकाउं कसिणं तेलोगं खणे खणे विणस्सति उप्पज्जइ य, ते पुण अधुवे लोगे तु वायं विउंजंति, अण्णे सादियं सह आदीये सादीयं, इस्सरेण अन्नतरेण वा सिट्ठो, से इति से तु किंचिकालं भवित्ता वलयकाले पुणो ण भवति अतो सादीयो, भणति–दिव्वं वरिससहस्सं सुयति, दिव्वं वरिससहस्सं जागरति, अणादीयो तच्चण्णिया पादं भणंति, जहा अणवदग्गोऽयं भिक्षवः संसारो, यतिवि ॥२५२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [१९७-२०१]

दीप अनुक्रम [२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२५३॥

वाग्वियुक्तिः

णाम केति णयादेसेण अण्णो लोगो भवति तहावि तेसिं ण भवति अतो वायं वियुंजंति सपज्जवसितोत्ति, जेसिं अणादीयो तेसिं अपज्जवसिओवि, परिमाणओ वा एगेसिं पज्जवसिओ तंजहा–सत्त दीवा, सव्वाणं सपज्जवसाणो अपज्जवसाणो वा इति अवाद्यं, एवं ता लोगं प्रति वायं वियुंजंति तहा अप्पाणमवि युंजंति, तंजहा–सुकडेत्ति वा सुट्ठु कडं सुकडं, दुट्ठु कडं २, किरियावाइणो पडिवज्जंति–सुकडेत्ति वा, पडिवज्जमाणोवि वायाओ वियुंजंति, अण्णस्स अण्णहा सुकडं भवति, अण्णेसिं हिंसाते अण्णेसिं अहिंसाते, अण्णेसिं तित्थाभिसेगादिणेहसोयसुतघोरणमुह इति एवं सुकडं इच्छंति, केइ अण्णहा, दुकडे विभासा, सुकडाणं कम्माणं कल्लाणं फलविवागो भवति, दुकडाणं पावओ, अकिरियावादीणं णवि सुकडं णवि दुकडं, कुतो तव्विवागो ?, णवि कत्ता णवि कल्लाणपावगं, एवं अण्णाणियवेणतियवादीवि भाणेयव्वा, अण्णाणियाणं अण्णाणा बंधो ण भवति, वेणतिया सव्वभावे मिस्से वदंति, किंचि साहूत्ति वा असाहुत्ति वा, जे साधवो ते असाहू भणंति, जे असाधू ते साहू भणंति, अहवा विवरीयग्गहणा जं साहू अहिंसादियं तं असाहू वदंति, जं च असाधु हिंसादिकम्मं तं साधु ब्रुवंति इति, एवं वियुंजंति, तहा सिद्धीति वा असिद्धीति वा, केसिंचि सिद्धी अत्थि, यदुक्तं–भवति णिव्वाणं, केसिंचि णत्थि, जेसिंपि णत्थि तेवि अन्नहा पडिवज्जंति, कारणविप्पडिवत्तीए कारियविप्पडिवत्ति, जह मट्टियातंतुवीरणाणं विवरीते कारणे कारियभावो भवति न तहा, अण्णे सिद्धिमेव ण इच्छंति, तथा 'णत्थि ण णिच्चो ण कुणति०' एवं एगे विप्पडिवण्णा, एतं जहुद्दिट्ठकमेणं तंजहा–अत्थि लोए णत्थि लोए जाव सेहीति वा असेधीइ वा वयं संपडिवण्णा, एते तु पादेण किरियावादिणो, अकिरियावदिणो य भणिता, अत्थि लोए छिण्णे छिण्णे व धुवो, यदुक्तं भवति–अवयणीयो, अणादीये णवि सासतो णवि असासतो, एवं अन्नहावि एगे वदंति, अहवा अण्णाणिया वेणयिया एते अन्नहा वदंति, अहवा ॥२५३॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२५४॥

धर्महेत्वादि

एवं एगे विप्पडिवन्ना, अन्नहावि उभयथावि आयारं प्रति एगे विप्पडिवण्णा, केइ सुहेणं धम्ममिच्छंति, केइ दुक्खेणं, केइ ण्हाणेणं केइ मोणेणं, केइ गामवासेणं केइ अरण्णवासेणं, एवं दिट्ठप्पगारेणं आयारपगारेहिं आयारपगारेहि य विविहं प्रतिपण्णा मामगं सिद्धंतं, मम एगो सिद्धंतो, अण्णे पण्णवेंति परूवेंति दंसेंति उवदंसेंति, इह सुद्धी नान्यत्र, अहवा सयं सयं पसंसंति, एवमादि, एवं मामगं धम्मं पण्णवेमाणा तेसिं अणुट्ठं धम्माणं विप्परिणामं करेंति, जतो एवं तेण हरतो वज्जेयव्वो, जइ पुण गिलाणादिकारणेण गतं अण्णत्थवि कत्थति, परिसाए वा अपरिसाए वा आगलेज्जा, तत्थ आगमे सति पासणिते गिण्हित्ता जं जं धावेंति तत्थ तत्थ वत्तव्वं–एत्थवि जाणह अकम्मा, यदुक्तं–एगंतेणं अत्थि लोगोत्ति, अत्थित्तणामो एतं ण भवति, कम्हा ?, परिण्णाविरोधाओ, तज्जहा–जं अत्थि तं लोगो, तप्पडिपक्खो य अलोगो, सोवि अत्थित्तिकाउं लोग एव अलोगो, अभावो, अलोगअभावे य तप्पडिपक्खभूयस्स लोगस्सवि अभावो, सव्वगतो वा लोगस्सेति, अहवा अलोगो अत्थि य, ण य लोगो भवति, तेण लोगोवि अत्थिणा लोगो भवति, तेणं लोगस्स अभावो पावति, अणिट्ठं च एतं, लोगबहुत्तपसंगो य, एवं तंजहा घडोवि अत्थि, सोवि लोगो, पडोवि अत्थि सोवि लोगो; एवं लोगबहुत्तं, पतिण्णाविसेसाओ य, तव जं अत्थि लोगो तेण पइण्णावि अत्थि स लोगो, हेऊवि अत्थि सोवि लोग इतिकाउं पइण्णाहेऊणं एगत्तं, एगत्ते य हेउअभावो, तस्सऽभावे य किं तेण पडिवज्जति ?, अह अत्थित्ताओ अण्णो लोगो तेण लोगस्स अभावे पइन्नाहाणी, जह एत्थं एगंतेणं लोगअत्थित्ते असदतेतदुवट्ठितं तहा इहंपि जाणह हे सिस्स ! अकम्मा अहेऊ ण कम्मा अकम्मा, जं भणितं–अहेतुं, जं वुत्तं–णत्थि लोएत्ति, किं भवं अत्थि णत्थित्ति ?, जति अत्थि लोगअंतगतो वा न वा ?, जति लोयअंतगतो कई भणसि–अत्थि लोगो ? अह न लोगअंतगतो तेण न लोकसि खरविसाणं ॥२५४॥

प्रत वृत्यंक [१९७-२०१]

दीप अनुक्रम [२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२५५॥

अकर्मादि

वा, तेण किं केण पडिसिद्धं ?, कस्स च उत्तरं मते दायव्वं इति, एवं जं जं भणति तत्थ तत्थ वत्तव्वं, एत्थवि जाणह अकम्मा जाव सेवति, अहवा जहा पइण्णा ते अकम्मा न तहा हेउणावि अकम्मा न, एवं दिट्ठंतउवसंथारेसुवि, एवं पुव्वोत्तरविरुद्धभासीणं तिन्नि तिसट्ठाणं कुप्पावयणपासंडीणं पंचावयवेण दसावयवेण ठाउं वत्तव्वं, निरुत्तरीभूतेसु एरिसं प्राप्य संडगाऽभिमतं करेइ, ण केवलमेव एतं एतेसिं ण जुज्जइ, अहवा ण केवलं एतेसिं एवं ण जुज्जति, अन्नेसिंपि कुतित्थियाणं साभिप्पायं पस्साहि ताणि मयाणि ण जुज्जंति, ततो वुच्चति—ण एसु धम्मे सुअक्खाए ण पडिसोहइ एस इति जो जेण जहा सइच्छाए विकप्पितो कुप्पवयणधम्मो, अहवा जो जो भणइ तं तं भणइ ण एस धम्मे सुयक्खाए, कहं सुयक्खाओ भवति ?, नणु से जहेतं भगवया पवेइयं, इति णिद्देसे, जेण पगारेण जह, भगवया वद्धमाणसामिणा, साहु आदितो वा वेदितं पवेदितं, जहा ण एसो कुतित्थियधम्मो सुयक्खाओ भवति, आसुपण्णेण पासना आसुरिति क्षिप्रं, आसुं पयाणति ओहीनाणी मणपज्जवनाणीवि ण अणुवउत्ता जाणंति उवओगाय अंहोमुहुत्ताउ, तेण तेऽवि ण आसुपण्णा, आसुप्पण्णो भवति केवलनाणी णिचो णिच्चोवयोगाओ सव्वपच्चक्खाओ य आउय आसुपण्णो, तेण आसुपण्णेण, वियाणता पासया य अक्खायं, ण एस धम्मे सुयक्खातेत्ति वट्टति, एवं आयसामत्थं णच्चा विगिज्झ णिप्पट्ठपसिणवागरणा कायव्वा, अहवा गुत्तीए, वा विभासायां, जइ असमत्थो एगंतेण उत्तरं दाउं ततो भणति—वयं आरिससुत्तपाढगा, जति तमेव इच्छसि ततो पागतेण वादं करेमो, सव्वहा अकीरमाणे सेहादिविपरिणामो भवति, सड्ढीला, सड्डवण्णो, अह पागतेणवि असमत्थो ततो बेति—अम्ह इत्थिबालवुड्डअक्खरअयाणमाणाणं अणुकंपणत्थं सव्वसत्तसमदरिसीहिं अद्धमागहाए भासाते सुत्तं उवदिट्ठं, तं च अण्णेसिं पुरतो ण पगासिज्जति, अतो गुत्ता वइगोयरस्स, यदुक्तं भवति—वायाविसओ ॥२५५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२५६॥

न, किंच-रागदोसकरो वादो, एवं जहा जहा उत्तरं भवति तहा तहा ठाएयव्वं, अहवा सुट्ठु विसद्धियं हेउस्स इमं उत्तरं दायव्वं-कहं भवां अम्हेहिं सद्धिं पावदिट्ठी विरोधं इच्छिह ?, कहं पावदिट्ठी ?, नणु सव्वत्थ संमतं पावं, सव्वसत्थे तिण्हं तिसट्ठाणं पावादियसयाणं, तेसिं सव्वेसिं पुढविआउतेउवाउवणस्सतिआरंभे कयकारियअणुमोयियातिहिंति अणुण्णाओ, तेण सव्वत्थ संमयं अप्पियं भवतां तेण तदारंभं ण करेतु, अहवा सव्वपगारेहिं सम्मतं, यदुक्तं भवति-अपडिसिद्धं, हिंसं ताव एगिंदियघाता उद्देसियभोइत्ता य णवभेदेण ण परिहरंति, अहवा अदिण्णमादियंति जाव परिग्गहं, वायाओ विजुज्जंति, अतो सव्वासवपगारेहिं तं तेसिं पावं अच्छंतं संमतं जेण तं न पडिसिद्धंति, तमेव उ वादिक्कमं, तमिति तं अण्णेसिं जं समयं उवसामिगादि, अतिरतिकमणादिसु, जं भणितं-धम्मं उविच्च-अतिकम्म, एस महाविवेगो वियाहिते एस इति जो उत्तो, महमिति मम, अहवा महंतणएण सता विवेगेणं, विवेगो मोक्खो, विमोहायतणं व एतं वट्टति, विविहं आहितो वियाहितो, तं कहं ?, अहं सव्वत्थ सव्वभावेहिं अपडीसिद्धअस्सवदारेहिं तं जायं अतिकंतो तेहिं समावमवि करिस्सामि, भणंतु वा सोतारो, किं ताव आरंभत्थितेणं एतेहिं सद्धिं असमाणेहिं संकहा कायव्वा ?, ण कायव्वा इति, एवं असमणुन्नविवेगं करेति, अहवा गिहिणोऽवि असमणुण्णा चेव धम्मावड्डियस्स, तेण उवदेशः एसो, सव्वत्थ सांमत्यं सव्वेसिं, अविरताणं संमयं हिंसादि तमेव उवक्कम, तमिति तं हिंसादि पावकम्मपवत्तो असंते उवातिकंम एस मम विवेगे वियाहिते एस अपमणुण्णविमोहाययणमिति वट्टति, अहवा सत्थअसंमत्तं अप्पितं तं च उवातिकंतो एस महं विवेगे अक्खाए, यदुक्तं भवति-अमोक्खो, जेण वा विमुच्चति, सो य मोक्खो, सो य तवो संजमो वा, अह कहं सव्वेसिं अन्नउत्थियाणं अहवा महा पहाणो संपावए ? कहं च सव्वे अन्नाणी मिच्छादिट्ठी अविरती अतवस्सी ?, णणु तेवि अह

वादनिषेधादि
॥२५६॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२५७॥

ग्रामादि

किल क्लिष्टभूमीवणवासिणो मूलाहारा कंदाहारा फलाहारा बीयाहारा जाव परिसडियपंडुपत्ताओ व सव्वण्णुप्पण्णतो भाणियव्वो, एवं उग्गं तवं अस्सिता, तहा अवरे पंसुमूलिता रुक्खमूलिता, तं कहं ते अन्नाणी जाव अतवस्सी असमणुण्णा य भवंति जेण परिवज्जंति ?, आयरिओ आह-'जइ वणवासमित्तेणं नाणी जाव तवस्सी भवति तेण सीहवग्घादयोवि णाणाइ पंचए वट्टेज्ज, ण तं इट्ठं, णाणातिपंचगवियुत्तोवि गामे अहवा रण्णे, ण व गामे, ण वसतीति वक्कसेसं, तहा सो नाणादिपंचगे वट्टति ण य समणुण्णो भवति, तत्थ गामग्गहणेण णगराईणि सव्वाइं घेप्पंति, तव्विवरीयं अरण्णं, जं भणितं-अमणुण्णस्स सेवितं च णं, जं अगामस्स अहरे तं णेव गामो भवति, ण च रण्णं, तं एवं गामे वा रण्णे वा गामेण व रण्णेण व वसमाणो ण य चीवरधारी वा सिही मुंडो वा असंजये वा णाणादिपंचगे भवति, ण मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण व तावसो, अवरो वियप्पो—भगवं ! जति गिहत्थगा य सव्वे असमणुण्णा, तेण वज्जाओ गामे रण्णे वसियव्वं, भण्णति-गामो अहवा रण्णो, गामे वा वसतु अरण्णे वा वसतु ण व गामे ण व रण्णे गामनिस्साओ गामं उवंते ण य जिइंदिओ णवि सो नाणादिपंचए भवति समणुण्णो वा, सिस्सो पुच्छइ-किं गामगएणं भगवता धम्मो पवेदितो ?, अरण्णगएण ?, भण्णति-गामे अहवा रण्णे, न च गामे न च रण्णे, तत्थ गामो दुविहो-दव्वगामो भावगामो य, एवं अरण्णंपि, तत्थ दव्वगामो जीवसमुदओ गिहत्थावडियदेउलमणुस्सा विवरीयमरण्णं, तत्थ दव्वगामं पति गामगतेण वा नगरगतेण वा कतादि, समावण्णा य अरण्णगतेणावि, जह **संमेतसेलसिहरे** मज्झिमतेहिं तित्थगरेहिं कहितं, भावगामं पडुच्च ण व गामेत्ति, केवलनाणस्स अतीतइंदियत्ता इंदियगामणवट्टितेण भगवता कहितं, भावारण्णं सुणीत्ता किरियावादी तं भयवं आतो, ण रण्णे, एवं धम्मं सुणित्ता चाती ते कयरत्थ वते ?, जहा परिव्वायगाणं वीसतिवरिसाओ हिट्ठा ण पव्वाविज्जति, किं एवं भग-

॥२५७॥

प्रत वृत्यंक [१९७-२०१]

दीप अनुक्रम [२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२५८॥

वयावि वुत्ताऽण्णोत्ति, भणइ–जामा तिन्नि उदाहडा, तंजहा–पढमे मज्झिमे पच्छिमे, जामोत्ति वा वयोत्ति वा एगट्ठा, उदाहडा कहिता, अक्खाआ, जेसु इमे आयरिया इमे खित्तायरियादि, नाणदंसणचरित्तारिएहिं अहिगारो छिण्णछेयणस्सद्धि, णाणादिआरियो पव्वाविज्जति, न तु अणारितो, खित्तारियादि भत्ता, अट्ठवरिसाओ आरद्धं जाव तीसतिवरिसाइं ताव पढमो जामो, तीसाओ आरद्धं जाव सट्ठिवरिसाइं मज्झिमो जामो, इत्थ अतिबालअतिवुद्धा पडिसिद्धा, सेसा अणुण्णाता, तिण्हं जामाणं अण्णयरे जामे, संमं बुज्झमाणा संबुज्झमाणा, चरित्तबोहिते अहिगारो, सम्मं संजमसमुट्ठाणेण उट्ठिता समुट्ठिता, तत्थ भगवं पढमे जामे संबुद्धो, गणहरा केइ पढमे केइ मज्झिमे, तत्थ संजमसमुट्ठाणेणवि उट्ठिता संता पमायबहुत्ता ण सव्वे णिव्वाणं गच्छंतीतिअतो भण्णति– जे णिव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं जे इति अणुद्दिट्ठस्स, जे ते तिण्हं वयाणं अण्णतरे समं बुज्झमाणा जामसमुत्थाणेण उत्थिता णिव्वुडा उवसंता, कतो? पाणाइवायाइएहिंतो अट्ठारसहिं ठाणेहिं, अणियाणा ते वियाहिया णियाण बंधणो, ण तेसिं णिदाणं अत्थि अणिदाणं, जं भणितं–अबंधणा, अहवा अणिदाणमिति हेउ रागादि, तत्थ जे णिव्वुडा तेसिं रागादिबंधहेऊ ण संभवंति अतो अणिदाणा, दव्वणिदाणं मातापितिमादि धणधन्नं च, भावनिदाणं विसयकषाया, विविहं आहिया वियाहिया, जे अमणुण्णा कुलिंगिणो लिंगिणो वा ते अत्थतो पावत्ति अणिव्वुडा सणियाणा य आहिता, केण सव्वसाहुसमणुण्णेहिं तित्थगरगणहरेहि य, जे अमणुण्णा ते उड्ढं अहं तिरियं दिसासु पण्णवगं पडुच्च उड्ढं पुप्फफलादिवणस्सइकाइ वासासवमूलकंददगादीणि वा तिरियं वाता सव्वत्त इति सव्वदिसाविदिसासु सव्वकालं च सव्वे सव्व जाव अ सव्वावंति सव्वभावेण य, एकेकं प्रति पत्तेयं, सक्का ताव सयं ण पचंति पायंति य, तत्थ तणकट्ठगामा य णिम्मित० तहा गामखित्तसयणासणधणधन्नगाविमहिसिमादि उवासगसंतिमाणि

यामत्रयादि ॥२५८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२५९॥

दंडवर्जनं

भवंति जेसिं परिभोगं च करेंति, विहारकूवतलागणिमित्तं सयमवि काये समारंभंति आरभावंती य, मांसमपि भक्षयंति, न य तत्थ दोसं मण्णंति, इति एवं पत्तेगं डंडं समारभंते, एयं च किर तेसिं उवदिट्ठं–संघनिमित्तं किर म अरट्टणदोसो भवति, अण्णे तु वणस्सइसमारंभं न इच्छंति, अण्णो उद्देसितमवि वज्जेंति, ण पुण आउक्कायं परिहरंति, अण्णो तु पियंति, ण तु ण्हायंति, अण्णे हत्थितावसा, अन्ने दिसापोक्खिता अन्ने मूलादिसचित्ताहारा, अन्ने परिसडियपंडुपत्ताहारा, एवं सच्छंदविगप्पएहिं विविहेहिं पगारेहिं पत्तेयं पत्तेयं संमत्तं कायेसु डंडं आरंभंते समारभंते, णायुकामा इति, साहू वा जहा ण आरभे, अहवा पत्तेयं इति जंपि संघातिणिमित्तं आरब्भति अन्नस्स अट्ठाए तंपि तेणेव वेदियव्वमिति, इति पाडियक्कं डंडं आरभंति, जतोऽयमुवदेसो—तं परिण्णाय मेहावी तं इति तं तेसिं मिच्छादिट्ठित्तं कायडंडअणिव्वाणं परत्थ य विवागं जाणणापरिण्णाए परियाणित्ता इतरीए पच्चक्खाइत्तुं जहा ते अण्णाणित्ता अविरइत्ताओ य काएसु डंडं पावित्ता तहा तम्हा इति उवदेसो, एवमादिसु कज्जेसु णेव सयं छज्जीवकाएसु य डंडं समारंभेज्जा, णोवि अण्णे एतेसु कायेसु डंडं समारंभावेज्जा, जाव समणुजाणिज्जा, एवं अन्नत्थवि जावंति जावंति सावज्जप्पयोगा ते जोगत्तियकरणत्तियजोगेण वज्जेज्जा, जाव मिच्छादंसणसल्लं, जे वऽण्णे एतेसु काएसु जे इति अणुद्दिट्ठस्स कुलिंगिपासत्थादि वा एतेसु इति पुढविमादिकाएसु णवगस्स ते दस अन्नतरेण सव्वेहिं वा समारंभंति तेसिंपि वयं लज्जामोत्ति वा परिहरामोत्ति वा, यदुक्तं भवति–णो तेसु संसग्गीं करेमो, अहवा जइ सासणपडिणीया चरगा अवि बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं जाव विहरंति, निण्हगा अहाछंदा य, तहा तेसिं लज्जामोत्ति वा दयामोत्ति वा एगट्ठा, भणियं च–लज्जा दया संजमो बंभचेरं, ण जहा राया व चोरादी सारीरेण अण्णयरेणं वा दंडेणं दंडेइ, तहा ते वयं घातेमो, मतिवि उ रण्णो बले, तहा बले वा, तेसिं हियत्थं च

॥२५९॥

प्रत
वृत्यंक
[१९७-२०१]

दीप
अनुक्रम
[२१०-२१४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
७ अध्य०
२ उद्देशः
॥२६०॥

अकल्पवर्जनादि

वाकडंडेहिं ते उवालभामो सासणपीतिते अट्ठिणादि, अवि उट्ठऽहे पविसे णिहोडेमो, त परिण्णाय मेहावी तमिति तं सव्वतिविहकरणजोगेण आयडंडं दुविहाते परिण्णाए मेहावी तं वा डंडेति अन्नउत्थितेसु डंडं अन्नं वत्ति छसु जीवनिकाएसु डंडं, अहवा तं पाणवहादिडंडं जहा कुलिंगिणो समारभंति, अण्णंति मुसावायं जाव सल्लं, अहवा पाणवहादि जाव राइभोयणं, अन्नं तं विसयकसायादि, णोऽभिडंडं, ते प्रति डंडो प्राणवधादि तक्करणे अप्पडंडोवि णगरादिसु, एतं ते डंडाओ बीभेति डंडभीरू, हे डंडभीरूणो डंडसमारभिज्जासीति, बेमि एवं बेमि भव्वहियत्थं सकम्मनिज्जरणाति। विमोहाययणस्स अज्झयणस्स सप्तमस्य प्रथम उद्देशः॥

उद्देसाभिसंबंधो असमणुण्णविमोक्खो भणितः, अण्णंपि जं अकप्पं उवदिस्सति, सुत्तस्स सुत्तेण–णो दंडभीरू डंडं समारभिज्जासि जाव समणुजाणेज्जा, तस्स पुण अकप्पस्स पगासं अप्पगासं वा संभवो होज्जा, पगासं भणिज्जति–भिक्खू य परक्कमिज्ज वा पर आणाभिमुहे परउक्कमेज्जा भिक्खाए वा वियारविहारट्ठाए वा अन्नतरेण वा कज्जेणं, चिट्ठिज्ज वावि यतो अच्छिज्ज, णिसितेज्ज वा णिविट्ठिओ अच्छेज्ज, ण चिट्ठिज्ज वा णिवण्णतो अच्छइ जागरति, ण णिद्दातुयट्टो, सुसाणे ण कप्पति गच्छवासिस्स अच्छित्ता, को जाणति अणुप्पेहेंतो आभावगं पमादेणं भणेज्जा, देवता अवरज्झेज्ज, पडिमापडिवण्णस्स जहिं चेव सूरो अत्थि समभिलसति ताहे चेव अच्छति तेण सो अच्छिज्ज जाव जिणकप्पस्स परिकंमं करेति, सत्तभावणाते, सोऽवि किर ण सुसाणमज्झे ठाति, सुसाणस्स पासे ठाति, अब्भासे वा सुण्णघरे वा ठितओ होज्जा, रुक्खमूले वा जारिसो रुक्खमूलो णिसीहे भणितो, गिरिगुहाए वा, लेणआवसहंपि, परिव्वायगआवसहमादिएहिं दगसोदरियमादीहिं जया छड्डिता, उवट्ठणं गिहं किर घंघसाला सा गाममज्झेसु कुज्जति पुव्वदेसमादीएहिं, दक्खिणापहे गामदेउलिया भवति, देउलियासु प्रायेण वाणमंतरा हविज्जंति, कम्मगारसालाए वा तंतुवा- ॥२६०॥

अष्टम-अध्ययने द्वितीय-उद्देशकः 'अकल्पनीय विमोक्ष' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[२०२-२०६]

दीप
अनुक्रम
[२१५-२१९]

आधाकर्मनिषेधः

यपसालाए वा लोहगारसालाए वा जत्तियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ, सुसाणादिसु ठियणिविट्ठो आवासिओ णिव्वण्णो जया तासु ण णिद्दावसीकतो, हुरत्थं बहिता गामादीणं देसीभासा उज्जाणादिसु, हुरत्था गच्छतो बहिं वट्टति, गच्छणिग्गतो विहरमाणो विविहेहिं पगारेहिं कम्मरयं हरति विविहं वा कम्मरयं हरति, तं भिक्खुं उवक्कमिज्ज गाहावती, एवं सो गिहत्थो सुसाणादिसु पुव्वट्ठितो वा होज्जा पच्छा वा एज्ज जुगवं वा, सो पुण अहिकोवितो सढो वा णिसग्गसम्मदंसणं वा, से तं साहुरूवं दट्ठुं दक्खिणा चेव उप्पज्जिज्ज, अहाभद्दउ व साहुं दिस्स साहुणो वा एते भगवंतो लद्धालद्धभोइणो भोएण ण सुट्ठु आढाइज्जंति, जहा मरुयचरगादि, अहं एतेसिं अज्ज देमि, तं उवसंकमित्ता बेति-आउसंतो! समणा आउसोत्ति आमंतणे, हे सुमण! अहं खलु तवट्ठाए अहमिति अब्भुवगमे, खलु विसेसणे, सावगो सावगपुत्तो वा भित्तो वा, तुज्झं अट्ठाए-तुज्झ णिमित्तं, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा असिज्जतीति असणं, पाणगं कहं उद्दिस्सकयं भवति ?, णणु खंडपाणगं, मद्दियापाणगादि फासुयंपि समारभते, जहा वा सिज्झति, वा विभापायां, कोइ असणमेव त्र्या अं करेमि, कोयि पाणं अणुत्तरं वा, अहवा दोन्नि तिन्नि सव्वाणि वा, एवं वत्थादीणि वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारंभ, समुद्दिस्स पाणेण, ण पाणादि आरंभअंतरेण उद्देसियं णिप्फज्जइ, कीयपामिच्चअच्छिज्जअणिसट्ठाणि वा, तेण अत्थावत्तीए उवदिस्सति-पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारंभ समुद्दिस्स समणत्थं आरंभसमारंभ०, छक्कायसमारंभगहणे आहाकम्मं गहितं, समुद्दिस्स सो पुणो बाहिते करित्ता, आहाकम्मग्गहणाओ य सव्वा अविसोहिकोडी गहिता, कीयपामिच्चअच्छिज्जअणिसट्ठअभिहडेहिं विसोहिकोडी गहिता, आहट्टु-आणित्ता, चेतेमिति केयि भणंति करेमि, तं तु ण जुज्जति, जेण तं आहियमेव, आहियस्स करणं ण ॥२६१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२०२-२०६]

दीप
अनुक्रम
[२१५-२१९]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२६२॥

आधाकर्म-निषेधः

विज्ञति, एरिसे सा चेतेमित्ति बेमि पदच्छामि, आवसहं वा समुस्सिणामि, से भुंजह वसह आउसंतो! समणा भुंजंतु भुंजह वा असणं वा ४, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा, आवसधे वसह, एवं पायवडणं करित्ता भणइ, आउसंतो! समणा अकप्पितविमोक्खत्ति, एवं णिमंतितो सो साहू जदिवि, अतिकमितुकामो अभत्तट्ठितो वा पज्जत्तं वा से तो पडिसेहेयव्वं, कहं?, वुच्चइ-तं भिक्खू गाहावतिं समणसं सवयसं पडियाइक्खेज्जा तमिति तं दातारं, भिक्खू पुव्वभणितो, समणसंति सम्मं सोभणेण वा मणसा समणसं णं एवं विन्नेयव्वा अहो अम्हं भगवया परगलओ ण वलितो जेण उद्देसियादि पडिसिद्धं, तत्थ तु अपमादो कायव्वो, अहो भगवयाऽऽदि सुदिट्ठीअ दिट्ठा अहिंसा निउणा दिट्ठा इंदियणोइंदियदमो य, एवं वायाएवि ण पुण एवं वत्तव्वं, किं?, करेह सावग! सुट्ठु भत्तो तुमं, अम्हं एसो भट्टारएण पोग्गलउवद्धओ, तत्थवि सीभरमेव उवदिसियव्वं, उज्जतेण वयसा कायेणवि, ण दीणदुम्मणेण होउं पडिसेहेयव्वं, सो दिट्ठिए महुराए, ण य काया लक्खिज्जति, ण वा रूसिज्ज एस अम्ह अकप्पितेण णिमंतेतित्ति, इच्चेवं पडियाइक्खिज्ज, तिविहेणवि करणेणं, आउसंतो! गाहावती हे आउसं! गिहवई णो खलु मे एवं वयणं पडिसुणेमि, कतरं?, जं मं संभणसि, आउसंतो समणा! अहं खलु तुज्झं अट्ठाओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा जाव आवसहं वा समुस्सिणामि, जति जातिएणेव सड्ढो तो उल्लो तेण पिंडणिज्जुत्ती कहेति, अहाभद्दगाणवि वा इमे उग्गमदोसा कहेइ-एरिसं कप्पइ असणादि वत्थादि, सिज्जाए, फासुयदाणविहिफलं च अक्खाति, सरिसवत्तिभागमात्रं वटस्य बीजं महंतमव्यस्तं अपच्छेदितमूलं जनयति विपुलं महाखंधं, जति ते सड्ढा तो खीरादि फासुयदव्वाइं दिज्जासित्ति चेतिमिति च करिज्जासि, एतावताए गयडंडं वुत्तं, अन्नो पुण कोइ असंविग्गभावितो सड्ढो असन्नी वा अणुकंपाए पच्छन्नं करेज्ज ततो वुच्चति- ॥२६२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [२०२-२०६]

दीप अनुक्रम [२१५-२१९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२६३॥

आधाकर्मनिषेधः

भिक्खू परकमिज्ज वा चिट्ठिज्ज वा णिसिएज्ज वा सुसाणंसि वा, सवस्सयणा सुमाणं, सुन्नमेव अगारं जाव हुरत्था वा कम्हिवि विहरमाणं पासेत्ता आतगताए पेहाए अप्पए गतां आयगता, इक्खा पेक्खा, यदुक्तं—साभिप्पाएण, जहा ममं ण अण्णो कोइ जाणति, मा पुण कण्णाओ कण्णंतरं गते सो साहू सोचा णो गिण्हिहित्ति अतो मम निरत्थओ उज्जमो भविस्सइ, भोइयाएवि अणभिगयाए, मा सा पगासेज्ज, असणं वा पाणं वा खाइमं वा जाव आवसहं वा समुस्सिणादि, तं च भिक्खुं परिघासेउं तं वा भिक्खुं ते वा भिक्खुणो परिघासेउं—पडिलाभेउं, जं भणितं—भोतावेत्ता वत्थादीणि परिभुंजावेउं आसवहे परिवसाइउं, तं च भिक्खू जाणिज्जा तमिति तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा जाव आवसहं, किमिति ?, जह एतेण अम्हे प्रति कीयं वा कारियं वा असणादि वत्थादि आवसहं वा, सहसंमुयाए सोभणा मती सहसंमुया ताए, अवही मणो केवलनाणी जाइसरणस्स य, एत्थ य अभावो, परस्स वागरणं परवागरणं, सो य तित्थगरो, तव्वइरित्तो सव्वो अन्नो, सो उ केवली मणविऊ चोद्दसपुव्वी जाव दसपुव्वी अन्नयरो वा साहू सावओ वा, तस्सयणो, समासितो वा अन्नतरो वा, किं हिंडसि ?, मा वा अज्ज हिंडिज्जासि तुज्झ अज्ज अम्ह घरे अमुगस्स वा घरे उवक्खडिज्जइ वा इति, एवं सयं णाउं सोउं वा जह एस गाहावई मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा आवसहं वा समुस्सिणादि तं एवं आयगयाए पेहाए आगमेत्ता, जं भणितं—तचतो णचा, जति जिणकप्पिओ तो तुण्हिक्कओ चेव अच्छति, पारिहारिया पुण अणुपरिहारिताणं कहेंति, अहालिंदिया सट्ठाणे कहेंति गच्छवासीणं, हिंडंता वा उवस्सयं वा गंतुं आणविज्ज, अचत्थजणो व ते आणविज्जा, किमिति ?—आउसंतो समणा! असुयत्थ गिहत्थेण मम णिमित्तेण अन्नतरस्स वा साहुस्स साहूण वा संघस्स वा असणं वा ४ वत्थपडिग्गह जाव ॥२६३॥

प्रत
वृत्यंक
[२०२-२०६]

दीप
अनुक्रम
[२१५-२१९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२६४॥

निषेधन-दुःख

आवसहं वा समुस्सिणाति, अणासेवणं अगमणं अग्गहणं पुव्वगहियस्स वा अपडिभोगो, एवं बेमि इति एवं अकप्पितविमोक्खो भवति, स एव अहिगारो, भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जो इमं आघच्च गंथा फुसंति भिक्खू पुव्वभणितो, च पूरणे, खलु विसेसणे, भावभिक्खुं विसेसेइ, पुट्ठो णाम आपुच्छित्ता, जहा अहं तुज्झ अट्ठाए असणादि करेमि जाव आवसहं समुस्सिणामि, सो जति वारितो ठाति तो सुंदरं, तेण ण अहिगारो, जो पुण वारितो संतो करेति अवस्सं एसो गिण्हिहित्ति, अपुट्ठा अपुच्छित्ता चेव करेंति, एवं पुट्ठा वा० जे इमे आहच्च णाम कयाइ गंथणं गंथो, से रायपुत्तो वा अन्नतरो इस्सरो वा अणिस्सरो वा, तत्थ बहुते दव्वजाते कतपरिच्चातो, सिद्धो, भंगे वा कते रोसेण बंधेज्ज णियलेहिं रज्जूए वा संडंसगरुद्धए वा कीरेज्ज, अतो ते णियलादिगंथा, यदुक्तं भवति–बंधा, फुसंति, जं भणितं–पावेंति, इमे य अण्णे–से हंता हणध खणह छणह डहह पयह जाव विप्परामुसह सेत्ति णिद्देसे इस्सरो इस्सराइज्जो अणज्जो, हंत आमंतणे संपेसणे वा, पुरिसे आमंतेत्ता संपेसेति, मते तु महता पयत्तेणं तेसिं साधियं असणाति, ण य इच्छंति, एत्तो तं मम ण दव्वं जातं ण धम्मो, तं एते हणह हत्थेण वा केसेण वा णखेण अवदार ताव कसेहिं पिहेह जाव सेंवमाणिपललिताणि एवं खतो भवति, छिंदह हत्थपादकण्णणासंति, डहह खारादिणा, पयध उंमुगादिणा आलुंपह मुखणखैभक्षय, एवं विप्पलुंपथ भूतो भूतो सहमकारेण, सीसं से छिंदह, हत्थिपायस्स वा णं देह, विविहं परामुसह, यदुक्तं भवति–डसह, ते फासे पुट्ठो अहियासए ते इति जे एते भणिया बंधवहखणणछेदणादि, अहवा फासा हेमंते सीतोडएण सिंचह, गिम्हे उम्हे धरेह, तेसिं फासेहिं पुट्ठो, समं अहियासए, अणुलोमे वा करिज्जा बहुयदव्वकयवतो सड्ढो जतो मम मंदपरिच्चएणावि ता वुज्झं, सव्वसंघस्स वा, णवग्गं ‘कयं च साली घयगुलगोरस’ गाहा, अन्नतरकालोपगं वा भत्तं, तं

॥२६४॥

प्रत
वृत्यंक
[२०२-
२०६]

दीप
अनुक्रम
[२१५-
२१९]

श्रीआचा-
राग सूत्र-
चूर्णिः
॥२६५॥

आचार-
गोचरादि

भुंजंतु अणुग्गहत्थं, कहं वा अम्हेहिं अहवा धम्मो करेयव्वो ?, जो जस्स भत्तो सो तस्स देइ, जहा उवासगा सकाणं, संखा चर-
गाणं एवमादि, एते अणुलोमे अहियासते, जे जिणकप्पितो सो अणुलोमेसु वा पडिलोमेसु वा उप्पण्णेसु तुण्हिक्को चेव अच्छइ,
गच्छवासी जइ कहणलद्धिसंपण्णो तो से कहेति, जतो भण्णति—अहवा आयारगोयरमाइक्खे आयारगोयरो जं भणितं—
विसयो, आयारगोयरं, णो आया एव तत्थ कहिज्जति, ण विणा दंसणं वा, दव्वचिंता वा, सो य आयारो मूलगुणा उत्तरगुणा
वा, मूलगुणथिरीकरणत्थं उत्तरगुणा कहिज्जंति, तंजहा—'पिंडस्स जा विसोही०' तत्थ भिक्खू परकडपरणिट्ठितं पेसितं वेसितं
तहा य णिज्जीवं जं सयं, एवमादि कहिज्जति. सोतारं अप्पणो य सत्ती णच्चा पंचावयवेहिं कहियव्वं, असमत्थो तु पागतेण महवं
आणेति, अणुलोमेणं उवसामति, तक्किया मणा भिसं ता जं भणितं णच्चा, आयरियं अणारियं वा, तहा अयं कं च णते ? तहा
को एस मिच्छादिट्ठी, सो य धम्मो ण भवति जत्थ कप्पाकप्पविही ण भणितो, एवं सम्मेण तहा तहा उवसामति जहा पव्वावेइ
सावगो वा अहाभद्दयो वा भवति, असरिसं जं भणितं—अणण्णतुल्लं, अणुन्नणाणि सम्मं, जं भणित—कम्मेण कित असरिसं, पडि-
लेहा पेक्खिता, आयगुत्ते तिहिं गुत्तीहिं उवउत्तो उत्तरेवि दिज्जमाणे कुप्पति ण वा, सतं उत्तरसमत्थो भवति ताहे, अह गुत्ती
एगंतेणं गुत्ती वयोगोयरे, से बुद्धेहेयं पवेइयं नाणादितियं बुज्झंतीति बुद्धा, तेहि य एतं पवेइयं, ण केवलं गिहत्थाओ अकप्पं
ण घेप्पति, जेऽवि असमणुन्ना कुलिंगी तेसिं ण वट्टति दाउं ततो वा घेत्तुं, तत्थ इमं सुत्तं—से समणुन्नो असमणुन्नस्स से इति
णिद्देसो, समणुन्नो साहू संविग्गो, असमणुन्ना अन्नउत्थिया, सो य समणुण्णो असमणुण्णस्सवि एसो मम समाणोत्तिकाउं असणं
वा ४ णो पाएज्जा णो णिमंतेज्ज णो कुज्जा वेयावडियं पूर्ववद् विभाषा, सो एवं भावपरो तं परं अणा[आ]दायमाणेत्ति ॥२६५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [२०२-२०६]

दीप अनुक्रम [२१५-२१९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः अध्य० ८ उद्देशः २ ॥२६६॥

बेमि जहा तेसिं णं दिज्जइ तहा ण घेप्पतीति तेहिंतो, अहवा समणुण्णो साहू संविग्गो, असमणुण्णा असंविग्गा, सो य समणुण्णो असमणुण्णस्स असंविग्गस्स असणं वा ४ वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा णो दिज्ज, जहा न देंति तहा ण गिण्हतीति, अहवा इमं लोइओ असमणुण्णो, अण्णसंभोइओ असमणुण्णो, तस्सवि तहेव असणं वा ४ वत्थं वा णो पाएज्ज, गिलाणमादी भदणा, तेण तुमं मा रूसाहि, णवि अम्हं सव्वं सव्वस्स वा मूलाओ घिप्पति वा दिज्जति वा, एतं केण भणितं ?, णणु बुद्धेमेतं पवेइयं, ण वेस सछंदेणं भणामो, इमं च अन्नं बुद्धेहिं पवेइयं निच्चं, अप्पते गुरुसु य बहुवयणं सव्वतित्थगरेहिं वा, साहू आदितो वा वेदितं पवेदितं, धम्मो दुविहो, अहवा साभावो धम्मो, जं भणितं—अत्थित्ति, अच्चत्थं जाणह आयाणह दरिसितं, समणेत्ति वा माहणेत्ति वा एगट्ठा, कतरेण माहणेण ? वद्धमाणसामिणा मतीमता, मन्नति जेण सा मती केवलनाणमती, मती जस्स अत्थित्ति मतिमता, समणुण्णो संविग्गो संभोइओ, सो य मणुण्णो समणुण्णस्स वा असणं वा ४ वत्थं वा ४ पाएज्ज परं आढायमाणे, एवं कप्पाकप्पविही अक्खाओ, असमणुण्णाण तु जत्तियं लब्भति तं अभिज्झं, गिहत्थाओ केवलमेव अकप्पं पडिसिद्धं, असमणुण्णेहिंतो सव्वं ॥ इति मोक्षाध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥

उद्देसत्थाहिगारो णिज्जुत्तीए भणितो, ततिए इस्सरगेहादिपविट्ठो साहू वादातीसीतेण कंपिज्ज, तं च गूही तथा संकते—किन्नु तं इत्थीतो अलंकियविभूसियाओ दट्ठुं मोहो वाहेति जेण वायधूता वा कंदलि कंपसि, इति आसंकिते पडिसेहो भणिज्जति, सुत्तस्स सुत्तेण—समणुण्णो अहिकितो, इहवि समणुण्णपव्वज्जाए अरुहो, सो कंमि काले पव्वाविज्जइ ?—मज्झिमेणं वयसा एगे वएतीति वयो, सो तिविहो; तंजहा—पढमो मज्झिमो चरिमो, एगे ण सव्वे, एगे पच्छिमे वए, एगे पढमे, मज्झिमगहणं तु प्रायसो ॥२६६॥

समनोज्ञेतरादि

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

अष्टम-अध्ययने तृतीय-उद्देशक: 'अंगचेष्टाभाषित' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[२०७-२१०]

दीप
अनुक्रम
[२२०-२२३]

मज्झिमे वये बुज्झंति तेण तग्गहणं, ते तु भुत्तभोगित्ता विगयकोउया सुहं विरागमग्गे चिट्ठंति, विण्णाणं च तेसिं पट्टुयरं भवति, गणहरा य पायसो मज्झिमे वये पव्वइया, तेहि य एतं सुत्तं आयणिक्खमणपज्जायरूवेणं भणितं, भगवंपि य मज्झिमवए पडिवण्णो निक्खंतो, एअकारणओ मज्झिमवयगहणं, सम्मं नाणादि बुज्झमाणा संबुज्झमाणा, चलमाणे चलितवत्, संजमउट्ठाणेण संमं उट्ठिता, ते तिविहा–सयंबुद्धा पत्तेयबुद्धा बुद्धबोधिता, तत्थ बुद्धबोधिते य पडुच्च वुचति–सोच्चा वई मेहावीणं सोऊणं भवति वयणं, मेरा धावति मेहावी मेहावीणं वयणं, सो एवं मेहावी सोच्चा तित्थगरवयणंति, वयणंति वायगं चेव, अत्थं भासइ(अरहा)सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं। सासणस्स हियट्ठाए ततो सुत्तं पवत्तति ॥१॥ पंडिता गणहरा, तं तित्थगरवयणं पंडितगणहरेहिं ता सुत्तीकयं, सोच्चा णिसम्म हियए करित्ता, स्यादेतत्किं धम्मो मज्झिमवयसामेव पवेदितो ? जम्हा वुत्तो, मा, मज्झिमवए किण्णु हविज्ज ?, समो कहितो लोगप्पदीवेहिंति, तदुच्यते–समयाए धम्मो आरिएहिं पवेदिते समता समं वा समिता तए तरुणमज्झिमवुड्ढाणं सव्वेसिं समताए अक्खाओ, वुत्तं च–'जहा पुण्णस्स कत्थति॰' धम्मो दुविहो नाणादि, आरिया तित्थगरा, साहू आदितो पवेइओ, एत एवं सम्मं धम्मं सोच्चा तिण्हं वयाणं अन्नतरे वए संबुज्झ, समुट्ठिता पव्वइआ संता ते अणवकंखमाणा इति, जे ते अन्नतरे एत्र णिक्खंता मोक्खअभिमुहा पट्ठिता, ण अणवकंखमाणा मित्तणातिमादि कामभोगे वा मिच्छाभावाण वा, अहवा सरीरं अणवकंखमाणा तवे, किं पुण सेसं ?, अहवा इहलोगं च परलोगं च प्रति अणवकंखमाणा, भणियं च–'छलिता अवयक्खंता अणवयक्खंता गया मोक्खं, अणतिवाएमाणत्ति अतिवयणं आयुसरीरइंदियबुद्धिपाणाहिंतो, ण अतिपातेमाणा अणतिवातेमाणा ते एवं अणतिवातेमाणा, यदुक्तं भवति–पाणादिपातं अकुव्वमाणा, अपरिग्गहो दव्वादि पुव्वभणितो, जहा अपरिग्गहमाणा

प्रत
वृत्यंक
[२०७-२१०]

दीप
अनुक्रम
[२२०-२२३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२६८॥

अनतिपातादि

तहा अलियमवि अभासमाणा अदत्तमवि अगिण्हमाणा मेहुणं च अणासेवमाणा, णो परिग्गहावंति, आदिरंतेन सहेता, जहा णो परिग्गहावंता तहा पच्छाणुपुव्वीए जाव णो पाणाइवायमंतो, अणेगेसु एगादेसाओ वुचति--स सवावंति च णं लोगंसि णिहाय डंडं स इमो पुव्वभणितो, तिण्हं वयाणं अन्नतरे वए पव्वइओ अणगारो अ समिताए सोचा धम्मं अणवकंखेमाणे अणतिवातेमाणे जाव णो परिग्गहावंति, गंतुं गंतुं सीहो तहा चेव दट्ठव्वं, ते कत्तिया पाणा जे अणतिवातेयव्वा ?, ततो वुचति–सव्वावंति च, समति धावति वा सव्वं, सव्वावंति जावत्ति पाणा, दव्वं गहितं खित्तं च, चसद्दा कालभावादि, एतेसिं चउण्हवि णिद्देसो, जहा सव्वं सव्वत्थ सव्वकालं सव्वहा, सव्वलोगेचि सव्वजीवलोए, णिहाय णाम णीक्खंता, डंडं घायणं मारणंति वा एगट्ठा, पाणा भूया जीवा सत्ता, सो एवं निक्खित्तडंडा पावकम्मं अकुव्वमाणा पावं कम्मं हिंसादि अष्टादशप्रकारं अवहमाणा एस महं अगंथे वियाहिते एस इति जो भणितो सव्वलोगपाणेसु णिक्खित्तडंडो, महां प्राधान्ये, गंथणं यो पूर्ववत्, ण तस्स गंथो विद्यत इति अगंथो, महां च अगंथे य महंअगंथे, विविहं विसेसेण वा अक्खाओ, स एव वायोये जुतिमस्स खेयण्णे, ओघो णाम एगो, यदुक्तं भवति–रागदोसरहितो, णिरुवहियत्ता अणासियत्तातो य, जुतिमं संजमो, खेयण्णो णाम जाणगो, जुतिमस्स खेयण्णो, जं भणितं–संजाणगो, अहवा जुत्तिमं सिद्धिक्षेत्रं, तं तु सव्वंतिमेहिंतो जुत्तिमं–जाजल्लमाणं एवमादि, अतो जुत्तिमं तस्स जाणतो, जुतिमस्स जाणतो, जुत्तिमस्स खेयण्णो, सो य भगवं केवली अण्णोवि ओयजुत्तिमस्स खेयण्णो छउमत्थवीतरागो उवसामिओ खइओ वा, अण्णोवि यो वीतरागवत् रागदोसनिग्गहपरो वीतरागवत् वीतरागो भवति, ‘सद्देसु य भद्दयपावएसु’ इति, एवं ओयभूतो जुतिमं खेयण्णो, केवली भगवं इमं जाणइ–जेहिं कम्मेहिं जह उववजति, तंजहा–नेरइएसु ताव महारंभयाए महापरिग्गहयाए ॥२६८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२०७-२१०]

दीप
अनुक्रम
[२२०-२२३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२६९॥

उपपातादि

जाव देवाणं चुयं-चयणं च, तं च जाणइ जो जत्तियं जीविता चयति, अहवा उववातो नारगदेवाणं, तिरियमणुस्साणं जम्मं, चयणं जोइसियवेमानिकानां, सेसाणं उव्वट्टणं, सो य सव्वं जाणइ, उववायं चयणं च णच्चा अन्नतरे वए वट्टमाणा ओय चउकम्मकखयाय पवत्तति केवली, अकेवली तउवदेसेणं अट्ठविहकम्मक्खयाय जयति-घडति, आह-जहा छउमत्थीभूओ अट्ठविहकम्मकखयट्ठताए पवट्टमाणो फासुयं आहारं तहा केवली ?, वुच्चइ, सो चउकम्मावसेसा छुहापरीसहवेयणिज्जकम्मे समोयरति, सा य छुहा जाव सरीरं ताव अत्थि, तं च सरीरं छुहाए उवक्कामिज्जति, छुहापडिघाएण पुस्सति, कहं ?, नणु आहारोपचिता देहा, आहारिज्जतीति आहारो असणाति चउव्विहं, उव्विच्चा चिज्जति जेण सो उवचओ, उवचओ णाम विहिआहारेहिं वा जइइट्ठेहिं उवचिज्जति तेण आहारोवचयो, आहारस्स ताव आहारप्रयोजणी देहि यत इति देहो, तदभावे तु हीयाति मिलायति मरते चेति, परीसहपभंगुरा परीसहेहिं मिसं भजइत्ति पढमबितिएहिं परीसहेहिं, अहवा अण्णेहिवि पभज्जंति दुब्बलीभवणं हीणंति, सव्वभंगे वा पतति, एवं अन्नेवि परीसहे विसीतति, सीतउसिणदंसमसगवहरोगघाताइएहिं पभज्जति, जयो य एवं तेण केवलीवि आहारधम्मित्ता सरीरस्स, अतो आहारेति, किंच-केवलीणं आहारगप्पसिद्धीए दिट्ठीओ भण्णंति, पासग सवं एगट्ठं इंदिएहिं परिगिलायमाणेहिं पस्सइ, एगे ण सव्वे, गइंदिएहिं परिगिलायमाणेहिं पस्सइ, एगे ण सव्वे, आहारेण विणा मणुस्से सव्वेहिं सोतादीहिं इंदिएहिं परिहायमाणेहिं, केइ एगे ण सव्वे, परिहायति छुहाए अविभज्जति, मंदं वा पस्सति, ण वा सुणेइ, जहा य एगे असंजयमाणुस्सा अकेवलिणो वा आहारेणवि सव्वेहिं इंदिएहिं परिहायमाणा पच्चक्खं दीसंति तहा य पासाहि एगे केवलिणो, ण सव्वे, आहारमंतरेण सव्विंदिएहिं परिहायमाणेहिं, जतिवि तेसिं दव्विंदियं आहारेण विणा परिगिलायतित्ति विपुच्छाय, जती आगति- ॥२६९॥

प्रत
वृत्यंक
[२०७-२१०]

दीप
अनुक्रम
[२२०-२२३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२७०॥

मादिविसेसेहिं परिहायति, गुणओ, चिरेण हि कालेण आहारसरीराओ ण परिहावंति, छहिं मासेहिं अट्ठहिं मासेहिं वरिसेणं, तं जइवि ताव उत्तमसंघयणाणं केवलं, सरीराणि आहारमन्तरेण ण पुस्संति, किं पुण अन्नेसिं ?, अतो आहारोपचता देहा परीसहपभंगुरा, णिराहारित्ता सव्विंदिएहिं परिहायमाणेहिंति सव्वमणुस्साणं दिस्संत इति वक्कसेसं, अकेवली अकियत्थसरीरधारणत्थं आहारं आहारेइ, दयादीणि वयाणि अणुपालित्ता सरीरोवरमा णियमा सिज्झंति, तेण किं सरीरं धारेंति तद्धारणत्थं च आहारेति ?, एत्थ धुव्वति, णणु सोऽवि चउकम्मवसेसो तक्खवणनिमित्तं च सरीरं धारेंति तद्धारणत्थं च आहारं आहारेति, दयाईणि अणुव्वयाणि अणुपालेंति, जत्थ इमं सुत्तं ओदे दयं दयाति ओजो भणितो, दीयत इति दया, दय दाणे, जं भणितं—ददाति, जहा दयं ददाति तहा सेसाणिवि वयाणि, एवं चरित्तं गहितं, जहा चरित्तं तहा नाणदंसणचरित्ते अणुपालेति, दिट्ठंते जहा भरवहणसमत्थस्स सगडस्स अडविमज्झे अक्खमक्खणं कीरति, एवं वईणवि आहारो भरवहणत्थं, एवं सिद्धिगमणोऽवि साहू सिद्धिणिमित्तं आहारेति, अकेवलीवि सातासातातिकम्मक्खयत्थं च अन्तसो सिद्धिगमणत्तेवि, केवली दयादीणि वयाणि अणुपालेइ आहारेतिय, को दोसो ?, अयमवि रोचिकप्पो, सो एवं ओयभूतो गुत्तिमंतो खेयण्णो उववायाइगणगहणं संसारं पच्छा आहारोवचयदेहतदभावे पढमएण अवहभंगुरा, किं ?, सव्वे परीसहा, गुणा णाणाति, तित्थगराओ जे अन्ने पासाहि सव्विंदिएहिं परिहायमाणेसु, एवं जाणित्ता पासित्ता य ओदे दयं दयाहि सव्वजीवाणं, कयरे सो ?, णणु जो सण्णिधाणस्स खेयण्णो जे इति अणुद्दिट्ठस्स निद्देसे, सन्निधि सन्निहाणं, जेण पुण जोनिग्गहणे चउगइए संसारे तासु तासु गतिसु सन्निधीयते तं सण्णिहाणं—कम्मं तस्स खेयण्णो—जाणग इति, अणइयाइणाए जे संणिहाणसत्थस्स खेयण्णे सण्णिहाणं तदेव तस्स सत्थं नाणादिपंचगं, एवंविहो दयं ददाति जाव परिग्गह- ॥२७०॥

देहस्याहारोपमचितत्वं

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत

वृत्यंक [२०७-२१०]

दीप अनुक्रम [२२०-२२३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२७१॥

वेरमणं, भणिया मूलगुणा । इदाणिं उत्तरगुणा–पिंडविसोही०, अविय–आहार एव वत्थुओ पिंडो आहारोवचया देहत्ति पभंगुरा, ओदे दयं दयाति जे संणिहाणस्स०, आहारगवेसणोवायो तु 'से भिक्खू कालण्णे बलण्णे जाव दुहतो छित्ता णिआति'-त्ति एतं पूर्ववत् , भिक्खावेलाधिगारो चेव वट्टति, सो य मज्झिमवओ अधिकृतो साहू, अभिगतत्थो, णवि अतितरुणो णवि अतिविद्धो य, तरुणस्स बलवन्तसरीरस्स ण सीतेण अंगं थरथरेति, वद्धे तु कंपमाणेवि वरो ण मेहुणसंकाए संकिज्जति, तेण मज्झिमवतो अधिकृतो साहू, सो य उच्चनीयमज्झिमाइं अडंतो एगस्स ईश्वरस्य गिहं पविसित्ता बाहिरे ठितो, सीतवाया य ते ण वारेण पविसइ, तस्स अंगं सव्वं कंपति, सो य इब्भो मियलोमपाउयो कुंकुमाणुगतअगरुविलित्तगत्तो इसित्ति सुराए च मत्तो इस्सरियउण्हाए अणुगतो, पुणो य अंगारसगडियाए अणुतप्पमाणो अंतेपुरपरिवुडो वरइत्थिणट्टगीतोवरमे कधंचि तं साहुं दट्ठुं कंपमाणं चिंतयति–किमथं साहू सीतेण कंपति ? उत एयाओ ममित्थीओ अलंकियाओ दट्ठुं मणस्स खोभो जातो ?, जेण से वतीवि धूतमिव कदलीपत्रं थरथरेति इति, एवं साहुं सीयफासेण वेवमाणगायं दट्ठुं आसणा ओवट्टाय तमुवसंकाम्य ब्रवीति–आउसंतो ! समणा ण खलु ते गामधंमा उबाहंति ?, आउसोत्ति आमन्त्रणं, समेति व वाणी समणो, अवणीयउवणीतवयणं, खलु ते गामधंमा ओबाहंति, खलु विशेषणे, किं विशेषयति–? इत्थीविसता गामा गणीया वा गामा सद्दातिविसया तेसिं धम्मो गाम०, यदुक्तं भवति–सभावो, इसित्ति बाधंति जेण ते अंगं वेपति, इति पुट्ठो जति विरहितो तो सऽणिचं भाविंतो बेति—हे आउसं ! अप्पं खलु मम गामधम्मा ओबाहंति अप्पंति अभावे भवति थोवे य, एत्थ अभावे, अप्पं च खलु मे गामधम्मा उवाहंति, सीयं फासं चऽहं णो चएमि अहियासित्तए, जेण मे अंगं थरथरेति, सो भणइ–अग्गीओ चालिज्जउ, तत्थ तावेह अप्पाणं,

कालज्ञत्वादि

॥२७१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२०७-२१०]
दीप
अनुक्रम
[२२०-२२३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२७२॥

आतापन-निषेधः

तत्थ भणिजइ–णो एवं खलु मे कप्पति अगणिकायं उज्जालित्तए वा, ईसिंत्ति जालणं उज्जालणं, तं कायं आयावित्तए वा, कायो सरीरं, ईसिं तावणं भिसं तवणं आतावणं पतावणं, पुणो २ वा तावणं पतावणं, अन्नेसिं वा वयणाए अ, णो मणेण कप्पति सेवेतुं, लद्धं अग्गिं ताव पज्जालेहि तत्थ कायं तविस्सामि एवं ण वयणेणवि वत्तव्वं, जाव कोइ अवुत्तोवि अग्गिं ममऽट्ठाए पजालए सोऽवि पडिसेहेयव्वो, सो सेवं वयंतस्स सियायि एवमधारणे वदतोवि परो स एव गाहावई, पाणाइं समारंभ घाएत्ता घुणादि कट्ठादिसंसिते संमं उद्दिस्स समुद्दिस्स एगं वा साधुं उद्दिस्स, कीतं कट्ठाणि किणित्ता, कट्ठाणि पामिच्चेति अलातं वा, अच्छिज्जं णाम अच्छिंदित्ता अण्णेसिं कट्ठाणि, अणिसट्ठेण वा कट्ठा णिंति, इंधणेण अगणिकायं उज्जालिज्ज वा पज्जालिज्ज वा, तं च भिक्खु अगणिकायं जाणित्ता आज्ञापयति, यदुक्तं भवति–उद्दिस्सति, तस्स गाहावइस्स जह मम अट्ठाए अग्गी पज्जालिए, ण वट्टति, जतिवि सयट्ठाए गिहीहिं पज्जालिते तहावि ण वट्टइ आतवित्तए वा पतावित्तए वा, ताहे सो गाहावई आउट्टो वंदित्ता तं साहुं ताहे चेव इंगालसगडियाए एतस्स कायं आतावेति, तत्थवि तं भिक्खू पडिलेहाए पडिलेहा णाम सुतोवदेसं ताए आगमित्ता–जाणित्ता आणाविज्ज अणासेवणाएत्ति परेणवि ण मे कप्पति कातो आतवित्तए वा०, आतवितो वा सातिज्जित्तए, जत्थ सो ठितो तत्थ गंतुं एगल्लविहारपडिवण्णस्स वा अणेगल्लविहारपडिवण्णस्स वा पडिमागतस्स वा इहरहा वा तस्स समीवे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारंभ समुद्दिस्स कीतं पामिच्चं जाव अच्छिज्जं अणिसट्ठं अगणिकायं उज्जालित्ता वा तस्स कायं आतावेति वा पतावेति वा तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमित्तए, यदुक्तं भवति–ज्ञात्वा, आणवेज्जा अणासेवणाए–अणुवभोगाइत्ति बेमि तित्थगरोवदेसाओ ॥ इति विमोक्षाध्ययनस्स तृतीयोद्देशकः ॥

॥२७२॥

प्रत
वृत्यंक
[२११-२१५]

दीप
अनुक्रम
[२२४-२२८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
५ उद्देशः
॥२७३॥

त्रिवस्त्रता

एस एव सीतफासाहिगारो, परित्राणं च वत्थं, तस्स उवायआसेवणं, जत्थ इमं सुत्तं परिणामपसिद्धीए–जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते जे इति अणुद्दिट्ठस्स गहणं, भिक्खू पुव्ववण्णितो, सो जहा पडिमापडिवन्नगो, परिउसितो पज्जुसितो थितोत्ति वा एगट्ठा, ण एत्तो परं मए वत्थाणि घेत्तव्वाणि, पादं तेसिं चउत्थं, पडिग्गहो गहितो, तओ ओहोवधीत्वेन पातग्गहणे सनिजोगो सत्त, तिन्नि वत्थत्ति एते दस, एक्कारसमं रयहरणं, बारसमा मुहपोत्तिया, ते पुण दो सोत्तिया एक्को उण्णितो, कप्पाणं तु पमाणं संडासो, अहवा दो य रयणीओ चिट्ठगं पाउणंति, पढमं एक्कं पाउणंति खोमियं, पच्छा अतिसीतेण बिइज्जयं तस्सुवरिं, तहावि अतिसीते ततियं पाउणति, सव्वत्थ उन्नितं वाहिं, ततो परं महासीते चउत्थं न गिण्हति, अतो एतं सुत्तं–जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं, तस्स णं णो एवं भवति–चउत्थं वत्थं धारिस्सामि, मणसावि एवं ण भवति, से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा से इति जो गच्छणिग्गओ जहेसणिज्जंति जहा जिणकप्पियस्स एसणा भणिता, उवरिल्लियाहिं दोहिं अग्गहो, अभिग्गहो अन्नतरिज्जाए, एवं जाएत्ता अहापरिग्गहाइं वत्थाइं धारेज्जा, जहा परिग्गहियाणि चेव धारए, णो धोएज्जा णो रएज्जत्ति कसायधातुकद्दमादीहिं, धोतरत्तं णाम जं धोवितुं पुणो रयति, अन्नं अरुच्चमाणगं धोइउं अण्णेण रयति, जहा अहोयरत्तं तहा अपरिकम्मियंपि, सो भगवं उज्झियधम्मियाणि चेव धारेति अहरणिज्जाइं, तेसिं इमो गुणो—अपलिउंचमाणो गामंतरेसु, पलिउंचणं समंता, यदुक्तं भवति–अन्नेण समं गमणं, अहवा कक्खंतरे वा गंठिए वा गोवेति चोरभएण, पंथे दूइज्जमाणे गामंतरेसु, अहवा गड्डाए वा दरीए वा ण णिहेति, जहा पंथे तहा भिक्खंपि हिंडंतो अपलिउंचंतो हिंडति, ण य चोरभयाईणि पडिलेहेति, पडिलेहितोवि अपडिलेहेउं चरमाणो पडिलेहेइ, णिच्चमेव तस्स पगासपडिलेहणा, ओमचेलिते गणणेण पमाणेण य, गणणपमाणेणं तिण्णि ॥२७३॥

अष्टम-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशकः 'वेहासनादि मरण' आरब्धः,

प्रत

वृत्यंक [२११-२१५]

दीप

अनुक्रम [२२४-२२८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२७४॥

त्रिवेषता

पमाणं, पमाणेण य संडासो दो य रयणीओ, एवं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं एवमिति जं भणितं, समस्तं ता सामग्गी सामग्गिओ जातं सामग्गीजातं उवगरणं, पव्वइयं झाणं तथा चरित्रं च असढभावस्स, अह पुण एवं जाणिज्जा अह अणंतरे, पुण विसेसणे, पयोयणेण विणा ण धरेति अयं विसेसो, अहवा इमो विसेसो, एवमवधारणे, जाणेज्जा–विदिज्जा, उविच अतिकंतो हेमंतो, गिम्हे पडिवन्ने चित्ते वइसाहे च, अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठविज्जा सव्वाइंपि, जति बितिज्जं हेमंतं ण पावेंति तो परिट्ठवेइ, तहा जुन्नाइं परिट्ठविता अट्ठ मासे अपाउओ चेव भवति, अह पुण एवं जाणिज्जा–पडीदुल्लहाइं, न भविस्संति वा, ताहे जं जुण्णं तं परिट्ठविता सेसगाणि धारेति, ण पाउणति, अहवा संतरुत्तरेत्ति, जति चित्ते सीतं पडति जहा गोल्लविसए ताहे संतरुत्तरो भवति, एगं अंतरे एगं उत्तरे सवडीभवति, अहवा दोण्णि अतिजुण्णाइं एक्को साधारणे ताहे दोन्नि परिट्ठविता एगं धरेतित्ति एगसाडो, यदुक्तं भवति–एगप्रावरणो, सोवि क्खोमिओ, इतरहा हि तस्स चोलपट्टोवि ण कप्पति, कतो पुण साडओ ?, एतं चेव दुल्लभवत्थेहिं वा जुण्णाइं परिट्ठविता एगं धारेति, किमत्थं सो एगेगं उद्धरति ?, ततो भण्णति–लाघवियं आगमेमाणे, लघुत्तं लाघवितं, दव्वलाघवितं उवगरणलाघवितं सरीरलाघवितं च, भावे अप्पकोहे अप्पमाणे अप्पमाणे अप्पलोभे, इह पुण उवगरणलाघवितं अधिकृतं, आगममाणे चिंतेमाणे, से जहेयं भगवता पवेइयं जाव सम्मत्तमेव समभिजाणित्ता एवं पूर्ववत्, उवगरणविमोक्खो भणितो । इदाणिं सरीरविमोक्खं भण्णति, भणियं णिज्जुत्तीए–उवगरणसरीराण चउत्थए, सो णपु सरीरविमोक्खो उस्सग्गेण भत्तपच्चक्खाणेण ठाइ पाओवगमणेण वा, अववादो वेहाणा, पसेण वा गिद्ध पुट्ठेण वा णं, तं कहं ?, वुच्चति–जस्स वा जेमिं वा भिक्खु पूर्ववत्, पडीमापडीवण्णो गच्छवासी वा भवति, जतेति स तं सरीरावत्थं दट्ठुं उवसग्गं वा, तव्विह- ॥२७४॥

प्रत
वृत्यंक
[२११-२१५]

दीप
अनुक्रम
[२२४-२२८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२७५॥

शीतस्पर्शासहत्वं

चिंता उप्पज्जति, 'पुट्ठो अहमंसि भवति पत्तो, केण ?, सीतपरीसहेण णालमहंसि ण पडिसेहे, अलं पर्याप्तवारणभूषणेषु, णवि अहं अलं तं उप्पन्नं अहियासेउं, किमिति ?, सीतफासं अहियासित्तए, ण दव्वसीतं भावसीतमवि, इत्थी सक्कारपरीसहो य दो भावसीतला एते, अहियासणा णाम सहणं, जहा सुदंसणो गाहावई तहा णालमहं तं पडुप्पन्नं अहियासेउं, से सव्वसमणागतपण्णाणेणं अप्पाणेणं से इति सह भोइया ओवरए ओहरितेल्लओ, सव्वसमण्णागतं पण्णाणं जस्स भवति सव्वसमण्णागते पण्णाणे, अतो य तस्स सव्वसमण्णागतं पण्णाणं, तंजहा-असहणिज्जे परीसहोदए काएण मणसा वायाए य ण खुब्भति, केयि अकरणाए, केयि ण सव्वे, अकरणं अणासेवणं, कस्स ?, मेहुणस्स सुदंसणावत्, आउट्टित्ति वा अब्भुट्ठित्ति वा एगट्ठा, जो पुण अबलो, मणेण वाताए काएण ण पारेति अप्पाणं साहारित्तए तवस्सिणो उवलेसे, तयो किं करेति ?, णणु भण्णति—जं सेवे णिहमादिते एगो रागदोसरहितो सण्णायएहिं उव्वरए, स च भोइयाए सण्णिरुद्धो ण सक्केति कतोइवि णिस्सरिउं, सा य तं आलिंगणाइएहिं उवयारेहि पुव्वलद्धप्पसरा खोभेति, ताहे सो कतितवमतो, तं च मतमिव णच्चा, देहमादि य तिविहं अगासं तं आदत्ते, यदुक्तं भवति—कइतवउब्बंधणं, सा य तं वारेति विद्धंसेज्जत्ति तो सुंदरं, अह ण विसज्जेति ताहे चिंतेइ—मा मे भंगो भविस्सति उब्बंधिज्जावि, विसभक्खणं वावि करेज्जा, इतराइंपि य भणइ—जति मे ण मुयह तो विसभक्खणं करेमि उक्कलंबेमि वा पासायतलाओ तट्ठीउ वा अप्पाणं मुयामि, एवमवि अमुच्चमाणो ताव करेति, अण्णोवि जो अणुवसग्गिज्जमाणो णिव्विइयातिकयपरिकम्मो तहावि ण ट्ठाति ण य तरति भत्तपच्चक्खाणं काउं सो गिद्धपट्ठं वेहाणसं वा अब्भुवेति इति, एवं तत्थेव तस्स कालपरियाए तत्थमिति तत्थ उवसग्गे, असहणिज्जे वा मोहणिज्जे, तस्स उवसग्गपत्तस्स अभिभवकीवस्स वा इतरस्स वा, ण एतं बालमरणं संसारवड्ढणं, ॥२७५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [२११-२१५]

दीप अनुक्रम [२२४-२२८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ५-६ उद्देशः ॥२७६॥

इच्चेतेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं मुच्चति, पणु कारणे पुण?, दो अणुण्णाता, तंजहा– वेहाणसे य गद्धपट्ठे य, कालकरणं कालपज्जाओ, जत्तियं सेसकालं आउएणं कम्मं निज्जरिज्जति इत्तियं सो अप्पेणवि लब्भति, से तत्थ वियंतिकारए स इति कारणितं मरणं मरमाणो, तत्थेति तत्थ वेहाणसे गिद्धपट्ठे वा, विसिट्ठा अंती वियंती, वियंतिं करेति वियंतीकारओ, यदुक्तं भवति–अंतकिरियाकारओ, तस्स तं कारणमासज्ज उवसग्गमरणमेव गणिज्जति, इति एवं, अवत्ताइयं मरणं अतीतकाले अणंता साहू मरित्ता निव्वाणगमणं पत्ता, जेण वुच्चति–इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुहं खमं निस्सेसियं अणुगामितं हियमप्पणो परेसिं च, ण उवघायगं, जहा अग्गिमरणं, आसुकारित्ता अप्पे असुहं, सव्वअवग्गहे सुहं, अपरोववाइत्ता अप्पसुहमवि, एवं खमं, निस्सेसिमं चेति, अणुगच्छति अणुगामितं, जइवि ण णिव्वाति तहावि पुण बोधिलाभाय पंडितमरणमिवेति, इति–एवं मज्झिमवयसाहिगारेण इहं उद्देसए पाएणं तरुणस्स तस्स सीयविमोक्खो भणितो, तस्साहणा य सव्वविमोक्खो।

इति विमोहज्झयणस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥

उद्देसत्थाहिगारो णिज्जुत्तीए वत्थए गच्छे सीते य, जिणकप्पाओ वा थेरकप्पाओ वा, दुवत्थपज्जुसितो पुण णियमा जिणकप्पिओ वा परिहारअहालंदव्व पडिमाए पडिवण्णो वा. जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं जाव पुट्ठो अहमंसि अबलो अहमंसीति, अपडियण्णत्ता अपडिवण्णत्तस्स, एत्तो थेरकप्पियाणं भणितो अहिगारो सुत्तं उच्चारित्ता–जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं सअंतरुत्तर वज्झो स एव वज्झो जाव संमत्तमेव समभिजाणित्ता, इमंपि जओ कप्पिए सुतं चेव, तंजहा–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति–पुट्ठो अहमंसि, जस्सवि गच्छणिग्गयस्स चउण्हं जिणकप्पियादीणं अण्णतरस्स, किमिति?–पुट्ठो–पुण्णो रोगेण आतंकेण वा, ॥२७६॥

आयवादिके मरणे

अष्टम-अध्ययने पंचम-उद्देशक: 'ग्लान-भक्त-परिज्ञा' आरब्ध:,

प्रत वृत्यंक [२१६-२१७]

दीप अनुक्रम [२२९-२३०]

तेण अपडिकम्मेण वाहिणा अबलो, किं करेतु ?, भण्णति-वसहीओ वसही, अन्नतरं, गिहंतरंति गिहाओ अन्नं गिहं गिहंतरं, तेण आसन्नंपि अबलत्ताए गिहंतरं ण भिक्खायरियाए गमणा, सो एवं अबलत्ता ण भिक्खा, नेरियं अभिगच्छंति, तं च केइ गाहावई परिकिलामियसरीरं दट्ठुं तस्स अणुकंपापरिणतो जत्थ इमं सुत्तं सेया सेयतरं, तस्सवि परो जं भणितं-तं दुक्खं अकहंतस्स परो णाम सावओ वा सण्णी अहाभद्दओ वा मिच्छादिट्ठी वा अणुकंपाए परिणतो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु आणित्ता आसन्नाओ दूरओ वा, आहट्टु दलएज्जा, अण्णट्ठा उवक्खडं, से पुव्वामेव आलोएज्जा से इति सो गिलाणो जिणकप्पिओ ४, आलोएज्जत्ति णाम आउसंतो ! गाहावई ?-आउसो गिहपती णो खलु मे कप्पए णो पडिसेहे, खलु विसेसणे, किं विसेसेति ?, ण केवलं गिहिणा, साहुणावि अण्णेण आहितं ण कप्पति, एवंविहे हि पडिमाभिग्गहविसेसे कप्पति-वट्टति, अभिमुहं हितं अभिहडं, असणे पाणे खाइमे साइमे भोत्तए वा पात्तए वा, भोयणं भोत्तुं, अण्णयरेण वा तहप्पगारेण या अभिहडं जीवोवरोहित्तिकाउं ण मम कप्पति, एवं अन्नं भवे, तेण पगारेण तहप्पगारं आहाकम्मादि उग्गमदोसअसुद्धं ण कप्पति-वट्टति, एवं उप्पायणाए गहणेसणाए वा अविसुद्धं, अहवा जीवा समारंभ समुद्दिस्स, कीयपामिच्चं, तत्थवि तहेव अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहिज्जा, गिलाणाधिगारो अणुयट्टति, गिलाणोचितं अभिग्गहणं णणु वट्टति, तंजहा-जस्स णं भिक्खुस्स एवं पकप्पे जस्स जओ वा जेसिं, भिक्खू पुव्वभणिओ, एवमवधारणे, साहु आदीओ कप्पो पकप्पो-सामायारी मज्जाता, कतरे सो ?, परिहारविसुद्धीओ अहालंदितो वा, अहं च खलु पडियन्नो अपडिण्णत्तेहिं च समुच्चये, खलु पूरणे, पडिपन्नो णाम पडिण्णवितो, जहा वयं वेयावच्चं करेमो उट्ठावणणिसियावणभत्तपाणाति, अपडिण्णतेहिं-ण ते मते पडिण्णत्ता जहा तुज्झे मम करिज्जह उट्ठावणादि ॥२७७॥

प्रत
वृत्यंक
[२१६-२१७]

दीप
अनुक्रम
[२२९-२३०]

वैयावृत्य-विचारः

वेयावच्चं, गिलाणोसहेण वावारसमणा णिव्वावण्णं भोइत्ता सूलादिगिलाणेण अगिलाणेहिं, तस्स पुण अणुपरिहारितो करेति, कप्पट्ठितो वा, जइ तेवि गिलाणाओ सेसगा करेंति, एवं अहालंदिताणवि, अभिकंख साहंमियवेयावडियं सो निज्जराकंखितेहिं सरिकप्पएहिं, ण पुण थेरकप्पिएहिं गिहत्थेहिं वा कीरमाणं सातिज्जिस्सामि, जहा चेव पडिण्णते अपडिण्णतेहिं गिलाणो अगिलाणेहिं वेयावडियं कीरमाणं सातिज्जिस्सामि तहा परस्सवि जहण्णेण कयपडिकतियाए अहं खलु पडिन्नत्तो पडिण्णत्तस्स पडिण्णत्ती णाम णाहं साइज्जिस्सामि ण य वेयावच्चं केणयि अब्भत्थेयव्वो इति अपडिण्णत्तो अपडिण्णत्तस्सत्ति अहं तव इच्छाकारेणं वेयावडियं करेमि जाव गिलायसि, अगिलाणो गिलाणस्स वेयावच्चं गुणे अभिकंखित्ता वेयावडियं करिस्सामि, एवं ताव दोण्हं भणितं, तंजहा—एगो करेति एगो कारवेति, इदाणिं तेसिं चेव चत्तारि विगप्पा—आहट्टु परिण्णं अणिक्खिस्सामि आरुभित्ता पइन्नं, अहवा अपडिन्नत्ते आरुभित्ता पइन्नं अनिक्खिस्सामित्ति—अणिस्सिसामि करेस्सामि, सरिकप्पियवेयावच्चं आहडं च साइज्जिस्सामि, अणुपरिहारितो अण्णतरो वा गिलाणस्स वेयावडियं काहिति तंपि अहं सम्माणिहामि, बितियो अभिग्गहं गिण्हति, तंजहा—सरिकप्पियस्स आहडं परिण्णयं अणिक्खिस्सामि गिलायमाणस्स, जं भणितं—आणेतुं दिस्सामि, पुण गिलायमाणोवि सरिकप्पितेणावि वेयावडियं कीरमाणं सातिज्जिस्सामि, एवं तइयचउत्था य जहा सुत्ते तहा विभावियव्वा, ततियभंगे अहालंदिया चेव पडिरूवी, चउत्थभंगे जिणकप्पिओ, लाघवितं आगमेमाणो सुण ता लाघवितं दव्वे भावे य, जं इच्छमाणे जाव संमत्तमेव समभिजाणित्ता, एवं से अहाकिट्टितमेव किट्टितो दरिसितो तित्थगरेहिं, जहा कित्तिओ अहाकिट्टितो, एवमवधारणे दुवत्थमादि धम्मं, जो य अत्थ अज्झाते अभिग्गहविसेसो भणितो तं अभिमुहं जाणमाणे समभिजाणमाणो पस्समाणो य संतो विर- ॥२७८॥

प्रत वृत्यंक [२१६-२१७]

दीप अनुक्रम [२२९-२३०]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ७ अध्य० ६ उद्देशः ॥२७९॥

एकवस्त्र-प्रतिमा

तेसु समाहिलिस्सो संते कोहादिएहिं, विरतो पाणाइवायातीतो, सुट्ठु संमं अप्पते अहिलिस्सो सुसमाहियलेसो, पसत्थासु लेसासु अप्पा आहितो जस्स जेण वा अप्पते आहियाओ लेस्साओ तत्थेव तस्स कालपरियाए एवमेव एसा, जेण सो गिलाणो अपडिकम्मसरीरो अण्णेण य असरिकप्पितेण गहितं अगिण्हमाणो कालं करेज्जा तस्स कालपज्जाओ मच्चुमेव तस्स गणिज्जइ से तत्थ वियंतिकारए, इच्चेयं विमोहायणं हितं सुहं धम्मं णिस्सेसं ४ आणुगामितंतिबेमि । विमोक्षाध्ययनस्य पंचम उद्देशकः॥

तिवत्थदुवत्थेहिंतो इमो बलवंतो संघयणजुत्तो जेण तस्स सुत्तं—भिक्खू एगेणं वत्थेणं परिवुसितो जाव संमत्तमेव समभिजाणित्ता, अभिग्गहविसेसाहिगारे एव अणुयत्तते, तंजहा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति जस्स जयो जेसिं वा भिक्खू पूर्ववत् एवमवधारणे, किं भवति?—ववसाओ बुद्धिअज्झवसाओ एगइं, जहा एगो अहमंसि एगो नाम रागदोसरहितो ण मे अत्थि कोइवि, ण पडिसेहे ण मम अत्थि—ण विज्जति, कोइविति पुव्वसंजोगो मातापितिमादि, सो भावतो परिचत्तो, विज्जमाणो भवति मम तहेव आयरिओ विसेसिज्जति एए वासिणोवि मे अत्थिचि जहेव भावओ परिचत्तं ता ण मम कोई णिओ तहा णाहमवि कस्सति, एवं से एगो णियमेव अप्पाणं समभिजाणेज्जा, एवं एएणं प्रकारेणं, स इति सो जस्स अयं अभिप्पाओ ण मम कोयि ण याहमवि कस्सति एगाणियं अचंतियं एवमेव अप्पाणं समभिजाणमाणो लाघवितं आगमेमाणो भावलाघवितं, यदुक्तं भवति—अममीकारो जाव सम्मत्तमेव समभिजाणित्ता से आहारं स इति सो एगो, जयावि ण मे कयाति आहारेइ ततोवि ण तं आहारं आहारेइ, आहारेमाणो नो वामातो हणुयाओ ण पडिसेहे वामाणाम अवसव्वा, हंतीति हणुया, णवि वामातो हणुयातो किंचि अससे, जण्णं आहारं दाहिणं हणुयं साहरेज्जा जामेव सव्वं मुहं पम्हालेति, निव्वत्तइत्ता कुतो तस्स ॥२७९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

अष्टम-अध्ययने षष्ठ-उद्देशक: 'एकत्व भावना/इंगित मरण' आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[२१८-२२२]

दीप
अनुक्रम
[२३१-२३५]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२८०॥

रागद्वेष-त्यागादि

अस्सातेव्वं ?, णणु कलमसालिओदणो कुम्मासाहिंगुदद्दराजीरगलवणसंजुत्ता वा सत्तुयपिंडी सअट्टाए मद्दित्ता अहवा तस्स जति स्थाने कयाइ णाम पज्जत्तं आहारं तस्स परिफुसियस्स किंचिदवि अस्सातणिज्जं भवति, पढिज्जइ य–आढायमाणे, आढा णाम आयरो, तत्थ आहारे मुच्छितो गिद्धो, अमणुण्णे वा अणाढायमाणे, सीतकूरादी भोयणे कुराणए वा, तं दुग्गंधं विरसं वा, णो वामातो हणुयातो दाहिणं हणुयं साहरेज्ञा अणाढायमाणो, दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं साहरेज्ञा, एवं रागेणं दोसेणं वा इतरेतरं हणुयं साहरति, तेण ते रागदोसा ण कायव्वा इति लाघवितं आगमेमाणे, कतरं लाघवितं ?, आहारलाघवियं जाव सम-भिजाणित्ता, एतेसु अट्ठसुवि उद्देसएसु एस आलावओ सव्वत्थ भाणियव्वो–ण मे अत्थि कोयि णाहमवि कस्सति, अहवा वेहाणसमरणउद्देसगातो आरब्भ एस आलावओ वत्तव्वो, ण मम अत्थि कोयि०, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति जस्स जतो जेसिं वा इह तु एगसाडए वा अधिकृतो एवं भवतीति, गिलाणमिव खलु अहं इमंसि समते, कतरेण गिलत्तेण ?, रोगेण, इहरह पुण एच्चिरकालिओ, ओसण्णं अपज्जत्तभोयणेण य, कुपाउरणो अपाउरणो वा, सुहीसु य णिच्चुकडुयासणेण य, एगजाममाइ, अगि-लाणोवि गिलाणो भवति, तस्स य एवं गिलायतो भवति–गिलाणमिव य खलु अहं इमंमि समते, च पूरणे, खलु विसे-सणे, ण केवलं गिलाणतातिसयाए तवेणं वा झुसितसरीरो गिलाति, इहं तु गेलण्णेण चेव गिलायइ, इमंमि से भवति इमंमि पच्छिमकालसमए भिक्खायरियसन्नाभूमिमादिसु आवसएसु इमं तवोसोसियं सरीरगं अणुपुव्वेण परिहित्तए, तत्थ अणुपुव्वी जहभणितकालोवमग्गोवक्कमो, कुत्सितं अणुकंपणिज्जं वा सरीरं सरीरगं, परि समंता गामाणुगामं भिक्खायरियातिसु आवसएसु सव्वओ वहित्तए परिवहित्तए, से अणुपुव्वीए आहारं संवट्टित्ता, रोगस्स संलेहणाविही णिज्जुत्तीए–चत्तारि विचित्ताइं० जस्स ॥२८०॥

प्रत वृत्यंक [२१८-२२२]

दीप अनुक्रम [२३१-२३५]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२८१॥

संलेखनादि

एचिरकालं आउयं पहुप्पिहिति, इमो पुण गिलाणो अणुपुव्वीए छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं आयंबिलपरिग्गहं दव्वसंलेहणाए आहारं
सम संवट्टेति, यदुक्तं भवति-संखिवति, अणुपुव्वीते वट्टित्ता भावसंलेहणाए कसाए य पयणुए किच्चा, अन्नोवि ततो साहू कसाए
पयणुए करेति, संलेहणाकाले विसेसेणं, कोइ सव्वे कसाए खवेति, अप्पाहारो वा अहाहारो वा अणाहारो वा गाहियव्वो, अच्चा णाम
सरीरं, सा अच्चा जस्स सम्मं आहिता स भवति समाहियच्चो, यदुक्तं भवति-कायगुत्तो, अहवा अच्चा लेसा, यदुक्तं भवति-भावो,
सो जस्स भावो समाहितो स भवति समाहियच्चो, यदुक्तं भवति-विसुद्धलेसो, अहवा अच्चा जाला, ता जेण रागदोसजालारहितो
स भवति समाहियच्चो, फलगावयट्ठी फलगमिव वासीमातीहिं उभयतो अवगरिसियं बाहिरतो अब्भिंतरओ य स भवति फल-
गावयट्ठो, बाहिरतो वहेणं सरीरं अवकरिसितं अंतो कसायकम्मं वा, जहा फलगंतं छिज्जंतं ण रुस्सति, चंदणेण वा लिप्पंतं ण
तुस्सति, रुक्खो वा, एवं सोवि वासीचंदणकप्पो, सो एवं रोगाभिभूतो दिणे दिणे सागारं भत्तं पच्चक्खायमाणो सव्वं
महारोगे आयंके वा अट्टायंते उट्टाय भिक्खू उवट्ठाणं ताव पुव्वं ताव संजमउट्ठाणं पच्छा अब्भुज्जयविहारं उट्ठाणं ततो य अब्भु-
ज्जयमरणउट्ठाणं भिक्खू पुव्वभणितो द्रव्यार्चिर्ज्वलनशिखावपुश्च भावे तु भावार्चिः लेश्या अन्योऽप्यर्चिः प्रोक्तो रागद्वेषानलज्वाला,
अभिमता निव्वुता अच्चा जस्स भवति अभिणिव्वुडच्चो अभिणिव्वुडप्पा वा, सो संलिहप्पा सप्पति सामत्थे अणुपविसित्ता गामं
वा नगरं वा खेडं वा कव्वडं वा जाव रायहाणिं वा अट्ठारसण्हं करभराणं गंमो गमणिज्जो वा गामो, गसति बुद्धिमा-
दिगुणे वा गामो, ण एत्थ करो विज्जतीति नगरं, खेडं पंसुपागारवेट्ठं, कव्वडं णाम धुल्लओ जस्स पागारो, मडंबं जस्स अड्ढाइ-
ज्जेहिं गाउएहिं णत्थि गामो, पट्टणं जलपट्टणं थलपट्टणं च, जलपट्टणं जहा कालगदीवो, थलपट्टणं जहा महुरा, आगरो हिर- ॥२८१॥

प्रत वृत्यंक [२१८-२२२]

दीप अनुक्रम [२३१-२३५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२८२॥

ग्रामादि

णागरादी, गामो विज्जसण्णिविट्ठो दोहिं गम्मति जलेणवि थलेणवि दोणमुहं जहा भरुयच्छं तामलित्ती एवमादि, आसमो आसमपदं, जहा आसन्नसन्निवेसो सन्नासन्निवेसो य, जहा समागमो वा, णिग्गमो जत्थ णेगमवग्गो परिवसति, रायहाणी जत्थ राया वसइ, तणाइ दव्भकुसादीणि अझुसिराणि डगलतणादीणं जस्सोग्गहं करेति–तणसामी जायति, जाइत्ता से तमादाय एगन्तं उवक्कमेज्जा, ताणि आदाय–गिण्हित्ता एगंतमवक्कमति, अणावातमसंलोगं गमेत्ता अप्पपाणे बंभाणुलोमेण अप्पपाणं, इहरहा अप्पाणमेव, अप्पबीजं सामगादीबीयरहियं, अप्पहरियं हरियविवज्जियं, अप्पाओसे जस्स हिट्ठाओ वा उप्परातो वा ओसा णत्थि, एवं अप्पोदगमवि, भोमो अंतरिक्खो वा, उत्तिंगं कीडियानगरं, पणतो णाम उल्लितिया भूमि, उदगमट्टिया, आणेति वा फासुगीए भूमीए छुभित्ता, अहवा उदगमट्टिया मक्कडगसंताणउक्कलियाओ, अहवा संताणओ पिपीलियादीणं, एरिसं थंडिल्लं पडिलेहित्ता संथारगं संथरेइ, संथारगं संथरेत्ता पुरत्थाभिमुहो संथारोवगतो करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं काउं एत्तिवि समए इत्तिरियं करेति, इत्तिरियं णाम अप्पकालियं, तं केयि भण्णंति–इत्तिरियं भत्तपच्चक्खाइयं, यदुक्तं भवति–सागारं, जति एत्तो रोगायंकाओ मुच्चीहामी णवहिं वारसहिं दिवसेहिं तो मे णवरि कप्पति पारेत्तए, अह ण मुच्चामि तो मे तहा पच्चक्खायमेव भवतु, सागारं भत्तं पच्चक्खाति, इतरसद्दमेत्तो, केइ एवं इच्छंति, तं ण भवंति, वयं भणासो–एवं सावगा अभिग्गहे अभिगिण्हंति, सेसगाओ पडिमाओ पडिवज्जंति, ण तु साहवोऽवित्तरे, ण तु जिणकप्पिया, ते तु अण्णहंपि काले णिच्चं अप्पमाति, ताण सागारं पुरिमड्ढमादि पच्चक्खं, किं पुण आवकहितं भत्तपच्चक्खाणमिति, जं पुण वुच्चति–एत्थंपि समए इत्तिरियं करेति, तं एवं जाणावेति–एसो इंगिणीमरणं उद्देसिओ, चउव्विहाहारविरओ, से जावज्जीवाए एत्थंपि समएत्ति इंगिणिमरणकालसमए, इत्तिरियं णाम ॥२८२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [२१८-२२२]

दीप अनुक्रम [२३१-२३५]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२८३॥

अप्पकालियं ठाणसिज्जणिसीहियं करेति, तं सच्चं सच्चवादी, तमिति इंगिणिमरणं, सच्चं णऽलियं, तित्थगरोवएसाए तं सच्चं, जहोवदेसअणुट्ठाणतो, अहवा सच्चो संजमो, तं जावज्जीवे अणुपालित्ता अंतेण सच्चमरणेण मरंतो सच्चं सच्चकरो जहारोवियपत्तिण्णे अंतं णेता सच्चं कतं भवति, ओए तिण्णे छिन्नकहे ओयो णाम एगो रागदोसरहितो, तरमाणे तिण्णे पव्वज्जं, एगत्तत्थओसित्ति जिणकप्पपइण्णं इंगिणिमरणं च चरमाणे, तिण्णं ण तस्स पुणरावत्ती भवति, छिन्नकहं कहा संसयकरणं, कहं कहा भवति ?, किमहं एतं भत्तपच्चक्खाणं णित्थरेज्ज ण णित्थरेज्ज ?, जीवादि० पयत्थेसु छिन्नकहं, कहं ?, 'तमेव सच्चं निस्संकं' आइट्ठो अणातीते आतीतं णाम गहितं, तत्थ जीवादिनाणादीण वा पंचाण आतीतो अणातीतो, जहारोवियभारवाही, पुव्वंपि इंगिणिमरणेति, अतीता अत्था वा सावज्जाओ सत्थासणसयणधणधन्नाउ आरंभाउ अतीता, अतिक्कममाणो अतिकंते, अहवा अतीतं संमाणियं, असमत्ता तस्स नाणादी पंच अत्था कियपओयणा दत्तफला, समाणिज्जमाणा समत्ता, **अस्सि विस्संभणयाए** अस्मिन्निति अस्सि जहा जहा लद्धिट्ठे इंगिणीमरणं, विहीए विस्सं अणेगविहं विस्संभावित्ता विस्संभणियाए, कहं ?, अन्नं सरीरं अन्नो अहं अन्ने संबंधिबंधवा, अथवा 'भज सेवाए' एवं भजित्ता, यदुक्तं भवति-सेवित्ता, अहवा विस्सं भवित्ता जीवाओ सरीरं संधीसु भवति, देसीभासाओ वीसं पिडं, विचा णो भेउरं कायं वेच्चा णाम विइत्ता, भिदुरधम्मं भेउरं, दुट्ठाणेहिं दुस्सेज्जाहिं दुन्निस्सीहिताहिं भिज्जंति, अहवा आगंके से वहाए होति संकप्पे से वहाए मरणंते से वहाए एतेहिं पगारेहिं भिदुरधम्मं भेउरं, कायो सरीरं, **संविहुणिय** विरूवरूवेहिं परीसहोवसग्गेहिं संमत्तं विहुणियं, विसिट्ठं विविहं वा रूवं जेसिं ते इमे विरूवरूवा, अणुलोमा पडिलोमा य, परीसहोवसग्गा य भणिया, अस्मिन् विस्संभणयाए विस्सं अणेगप्पगारं विस्सं भवित्ता, तंजहा-अण्णं सरीरं अण्णोऽहं,

सत्यसत्यवादित्वादि

॥२८३॥

प्रत
वृत्यंक
[२१८-२२२]

दीप
अनुक्रम
[२३१-२३५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ७ उद्देशः ॥२८४॥

भैरवानुचीर्णत्वादि

भय सेवाए, एवं भवित्ता, यदुक्तं भवति—सेवित्ता, अहवा विस्सं अणेगविहं भवो तं भइत्ता, वीसं वा भइत्ता, जीवो सरीराओ सरीरं वा जीवाओ, अहवा जीवाओ कम्मं कम्मं वा जीवाओ, भेरवमणुचिण्णे भयं करोतीति भेरवं, भेरवेहिं परीसहोवसग्गेहिं अणुचिज्जमाणो अणुचिण्णो, दंसमसगसीहवग्धातिएहि य रक्खसपिसायादीहि य, अहवा दव्वादीहिं अणुचिण्णो तहावि अक्खुब्भमाणो, तत्थेव तस्स कालपरियाते तेसिं वा कालपरियाए, तत्थ इंगिणिमरणे कालपरियाए से तत्थ वियंतिं करेइ, इच्चेयं विमोहातणं विविहं सुहं खेमं णिस्सेसं आणुगामियंति बेमि ॥ सप्तमस्य षष्ठोद्देशकः परिसमाप्तः ॥

भणिता वत्थधारिणो सीतफासअहियासणा कमेण, इदाणिं सीतफासविसोही वुच्चंति—जे भिक्खू अचेलए परिवुसिते एस पुण पडिमापडिवन्नओ मासादि जाव सत्तमासा, केइ तु भण्णंति—पडिमापडिवन्नोवि कोइ जावजीवं होति, वासारत्ते ण पुण विहरति, तस्स णं एतं भवति, किं भवति ?, भिक्खू अचेलए परिवुसिते, एस पुण पडिमाकिसप्पो वा एव, अहं तणफासं अहियासेत्तए, एवं सीतफासं दंसमसगफासं जाव एगतरे अन्नतरे विरूवरूवफासे अहियासेत्तए, हिरिपडिच्छायणं वऽहं णो संचाएमि हिरी णाम लज्जा, ताए हिरीए पडिच्छायणं, यदुक्तं भवति—लज्जापडिच्छायणं, ण सो अहं अचाउडोत्ति लज्जति शरीरं नैरूपतया लज्जति, अरिसाउ संणिग्गतेल्लियाउ, ईसिंचि दूरं वा लंबंति, पउमुप्पलो वा अवदंसितो वा अतिखद्धसागरिओ वा विरुं पिएल्लयं वा से अविरइयं वा दट्ठूणं ततो य थंभा घडंति, रसिया वा से संगलति, मेधपगारो वा मुत्तं, पुणो २ क्रमिया वा कस्सइ पडंति, सागारियाओ संपातिमा वा लग्गंति, अरिसासु सागारे, एवमादिपगारेहिं लज्जमाणस्स एवं से कप्पइ कडिबंधणं धारित्तए, कडीए कज्जति कडिबंधणं, पमाण० लज्जमाणेणं एक्कं, जुन्ने जुन्ने अन्नं मग्गति, एगस्स पुण एगल्लविहारपडिमपडिवण्णस्स णं

॥२८४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

अष्टम-अध्ययने सप्तम-उद्देशकः 'पादपोपगमन' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[२२३-२२६]

दीप
अनुक्रम
[२३६-२३९]

भवति ततो ते उ दंसमसगा, इतरेसु अण्णतरे, एवमेतं एगं कडिबंधणं मुइत्ता से एगल्लविहारकप्पं अणुपालेति लाघवितं आगमेमाणे, अचेलगत्तं लाघवितं जाव संमत्तमेव समभिजाणित्ता, अभिग्गहअहिगारो वट्टति, तंजहा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति जस्स जतो जेसिं वा, पडिवण्णगस्स कप्पो दसासु भणिज्जिहिति, तंजहा—परिजितकालामंतणं, अहवा तत्थ परक्कमंति अह इति अणंतरे, तत्थेति तहिं काले, एगल्लविहारे एगकडिबंधणधारि अचेलत्तेण परिकमंतं, भुज्जो विसेसेणं अचेलं अपाउरणं हेमंतसीतफासा फुसंति एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अहमिति अत्तणिद्देसे, च पूरणे, खलु विसेसणे, किं विसेसेति ? पडिमापडिवन्नओ चेव सो, अन्नेसिं आयवतिरित्ताणं सरिकप्पियाणं चेव पडिमापडिवन्नाणं चेव असणं वा ४, विभासाए वत्थमादि कडिबंधणं तणं वा आहण्ह(ट्टु)परिण्णं आहण्ह(ट्टु)निक्खिविस्सामि आहण्ह(ट्टु)पइण्णं-अणिग्गहं गेण्हित्ता दाहामि तेहि य आहडं साइज्जिस्सामि पढमो, अण्णस्स पुण अभिग्गहो—आहट्टु परिण्णं दाहामि पुण गिलायमाणो विसरिकप्पियस्सवि गिण्हिस्सामो असणादि बितियो, तइयस्स कस्सइ करेमि जइवि से लद्धी णत्थि अण्णं वा किंचि कारणं, आहडं पुण सातिज्जिस्सामि, चउत्थे उभयपडिसेहो, लाघवितं आगमेमाणे आहारउवगरणलाघवितं, चत्तारि पडिमा—अभिग्गहविसेसा वुत्ता। इदाणिं पंचमो—सो पुण तेसिं चेव अ तिण्हं आदिल्लाणं पडिमाविसेसाणं अभिग्गहं दरिसेति—जस्स णं भिक्खुस्स० अहं च खलु, अहमिति आतणिद्देसे, चः समुच्चये, खलु पूरणे, अन्नेसिंति अप्पाणं वज्जित्ता, समाणा सरिसा वा धम्मिया साहम्मिया, जति ते एगट्ठा न भुंजंति तहावि ते अभिग्गहसाहम्मिया एगल्लविहारसाहम्मिया य संभोइया गणिज्जंति, तेण समणुण्णस्स, यदुक्तं भवति—सरिसाभिग्गहस्स, परिहारकवत् पडिवण्णाणं, एतं चेव तेसिं परिहारतवं जस्स कस्स देंति, ण पडिग्गहेंति, अहेसणिज्जा, जहा तस्स एसणा वुत्ता, ॥२८५॥

प्रत
वृत्यंक
[२२३-२२६]

दीप
अनुक्रम
[२३६-२३९]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२८६॥

वैयावृत्त्य-कल्पः

पंचहिं अग्गहो अन्नतरीए अभिग्गहो, अहा अहापरिग्गहितं अहाभावपरिग्गहितंति, अहाभावपरिग्गहितेणं अत्तट्ठाए परिग्गहितेण तात्र न देति, अतस्तस्स, एवं वत्थपत्ताइंपि, अहवा तेसिं कारणे मग्गिजा अहातिरित्तं च से देजा, अभत्तरोयगमादिएहिं अगिलाए णो तिगिलाएति, अपरितंमंतो अणुग्गहवुड्ढी(बुद्धी)ए निज्जरट्ठाए अतिकम्म साहंमिएहिं अभिकंखंति, वेयावच्चं अभिकंखंतो, किह णाम अहं पक(एया)रिसस्स वेयावच्चं करिज्जामि, कम्मणिज्जरं वा अभिकंखंतो, अहवा इच्छतो करेति, ण बला कारिज्जति वेट्ठिं वा मण्णति, विदालयति कम्मगंठिं, वेयावडियं करिस्सामि, अहवावि खलु तेण अहातिरित्तेण, अहमिति आतणिद्देशे, वा विभासा, खलु प्रेरणे, तेणेति तेण सरिसएण साहम्मिएण, अहेसणिज्जेणं अत्तट्ठाए तेण तं परिग्गहितं, आहारसित्ति, जइ तस्स अभत्तट्ठं दाति उव्वरीते सह सट्ठाणेण वा अतिरित्तं जातं, अभिकंखंतेण णिज्जरलाभो, तेण साहम्मिएण पडिमापडिवण्णएण चेव अगिलायंतएगं ण कयमणेणं वेयावडियं कीरमाणं सातिजिस्सामि-इच्छिस्सामि, जो वा अण्णो सरिकप्पियस्स करेति तंपि अहं मणेण अणुमोदीहामि-सुट्ठु एस करेति, वायाए अणुबूहयिस्सामि, काएणवि दिट्ठिमुहपासायादीहिं अणुबूहामि, से जहेतं भगवया पवेइयं जाव संमत्तमेव समभिजाणेज्जा, एवं ते भगवंता जयंता घडंता परकमंता, अह चाए उप्पण्णे वा आउसेसं आसन्नं वा जाणेत्ता पच्छा एत्थ उद्देसए पाओवगमणं अधिकृतं उच्यते-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति, अभिग्गहाहिकारेण वा अतो अणुयत्तति, इमो तवो चेव, तंजहा-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति, किमिति गिलामि, च खलु इमंमि समए जाव तह चेव संथारगं संथरेति, संथारगं संथरेत्ता समारुहति, समारुहित्ता एवं वदति-नमोत्थुणं अरहंताणं० सिद्धाणं, सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेति, सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभित्ता एयं पाओवगमणं अधिकृतं, तेण अत्थ चउव्विहंपि आहारंपि वज्जित्ता कायं च योगं च रीयं च गमणागम- ॥२८६॥

प्रत
वृत्यंक
[२२३-२२६]

दीप
अनुक्रम
[२३६-२३९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ७ अध्य० ८ उद्देशः ॥२८७॥

अनशनं-आनुपूर्वी च

णादि पच्चक्खाएज्जा, णिसण्णो सयणत्थो वा, आउट्टणपसारणं दिट्ठिसंचारणं च सव्वं काययोगं निरुंभति, वायोयोगं निरुंभति, अहवा काय इति सरीरं तं वोसिरति, जोगे णाम तस्सेव आउंटणपसारणादी वाइयो गहितो, माणसियंपि अपसत्थं निरुंभति, रीयं च गमणादि पच्चक्खाएज्ज, पाओवगमणं भणितं, समे विसमे वा पादवोविव जह पाडिओ, णागज्जुणा-कट्ठमिव आलट्ठे नत्थ संचतितं सञ्ञ:करेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकहं कहेज्जा जाव इच्चेयं विमोहामतणं हितं सुहं खमं निस्सेसं अणुगामियंति ॥ विमोक्षाध्ययनस्य सप्तमोद्देशकः समाप्तः ॥

भणियं चउत्थउद्देसए वाघातिममरणं वेहाणसगद्धपट्ठं च, पंचमे भत्तपच्चक्खाणं इच्चेयं छट्ठे इंगिणिमरणं, सत्तमए पाओवगमणं, अट्ठमए तेसिं तिण्हंपि पडिसमणेण वुच्चति, पुव्वभणियं तु जं भण्णइ तत्थ कारणं०, ताणि तिन्नि भत्तपच्चक्खाणाईणि, वाहातिमाणि वा अणुपुव्वीए भणियाणि, इमं पुण निव्वाघातिमे चेव, जतोऽभिधीयते-अणुपुव्वेणं विमोहाइं० (१७) अणुक्कमो अणुपुव्वी, तंजहा-पव्वज्जा सिक्खा वय अत्थग्गहणं च० पुरिसं आसज्ज अणुपुव्वी भत्तपच्चक्खाणं इंगिणि पाउवगमणं, संलेहणाणुपुव्वी तंजहा-चत्तारि विचित्ताइं०, विमोक्खंतेति विमोहा, जं भणियं-मरणाणि जाणि वीरा समासज्ज, वीरा भणिता, वुसिमंता मतिमंतो, संजमो उसी जत्थ अत्थि जत्थ वा विज्जति सो उसिमं, भणियं च-"संजमे वसता तु वसुवंसी वा, येनेन्द्रियाणि तस्य वशे, वसु च धनं ज्ञानाद्यं, तस्यास्तित्वान्मुनिर्वसुमां" वुसिमं च वुसिमंतो, एवं मतिमंतोत्ति, यदुक्तं भवति-नाणमंतो, सव्वं णच्चा अणेलिसं भत्तपच्चक्खाणाइ तिविहं मरणविहाणं जो य जत्थ विही जं च जस्स अणुण्णातं मरणं स्वतः संघयणधितिबलाणि आसज्ज, अणेलिस इति अणण्णसरिसं, अट्ठाणे अणेलिसं, वालमरणाणि वा पडुच्च अणेलिसं, दुविहंमि ॥२८७॥

अष्टम-अध्ययने अष्टम-उद्देशक: 'अनशन-मरण' आरब्ध:,

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-२५]

दीप अनुक्रम [२३६-२६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णि: ॥२८८॥

बाह्याभ्यन्तरादि-त्याग:

विदित्ताणं बुद्धा धम्मस्स पारगा (१८) बज्झं अब्भितरं च, बज्झं सरीरोवगरणादि, अब्भितरं रागादि, पढिज्जइ य– 'दुविहंपि विगिंचित्ता बुद्धाबुद्धाण जाणगा' तिविहं वा मरणं बुद्धा, धम्मो दुविहो, धम्मस्स पारं गच्छंतीति, अणुपुव्वीए संखाए, अणुक्कमो अणुपुव्वी, संखाए जाणणाए, यदुक्तं भवति–संखाए णच्चा, किं ताव जीवंतस्स ममं गुणा? अह सरीरं विमोक्खं कुणमाणस्स? कस्स वा अहं मरणस्स जोगो? इति संखाए, आरंभा य तिउट्टति आरंभणं आरंभो–सरीरधारणत्थं भत्तपाणाईओ तिउट्टति, अहवा वेयावच्चवायणपुच्छणादिआरंभा तिउट्टति, यदुक्तं भवति–णिज्जति, पढिज्जइ य–कम्मुणा य तिउट्टति, कम्मं अट्ठविहं ततो तुट्टमाणो तुट्टे, दुविहंपि संलेहं करेंतस्स जया जया सो अतिगिलाणो भवइ कसाइ पतणुते किच्चा (१९) अहवा मूलसंलेहणाए कसाए पतणुकरणं, तेण सा आहिये–भणिज्जति, कसंतीति कसाया कोहादि सव्वघाइओ वा तणुए, तणुए संलेहणाए अप्पाहारो तिउट्टति, यदुक्तं भवति–अपज्जत्ताहारो, एत्थ दुविहाए संलेहणाए कोंकणगट्ठंतो, अक्खोवंजणाणुलेवणसमाहिणिमित्तं आहारते इति, तितिक्खणं सहणं सहणं सहति ओमोदरियं अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव कारणा अह इति अन्न(णं)तरे, भिक्खू पुव्ववन्नितो, गिलायति, किं निमित्तं?, आहारकारणा, आहारेण संलेहं करेमाणो अंतियं अब्भासे अतीव संलिहित्ता, जं भणितं–आसन्नमरणकालो, एवं गिलायमाणोऽवि जीवियं णाभिकंखिज्जा (२०) कह णाम जीविज्जा चिरतरं?, संलेहणं वा पमादेति, मरणंपि ण पत्थए अतीव छुहाए वा विज्झामि, कहं णाम मरिज्जति?, पच्चक्खाते वा जति से देवता णट्ठोवहाराति अणुलोमे उवसग्गे करेइ, थयादिणा वा मणुया पूयं करेंति तहवि जीवियं णावकंखेज्ज, पडिलोमेहि वा कीरमाणे मरणं णोवि पत्थए, दुहओवि ण सज्जेज्जा दुविहो दुहतो, कत्थ?, जीविए मरणे तहा। मज्झत्थो

॥२८८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-२५] दीप अनुक्रम [२३६-२६४]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥२८९॥

समाधिपालनादि

णिज्जरापेही (२१) मज्झेहिं चिट्ठतीति मज्झत्थो, जीवियमरणे ण आसंसते सुहदुक्खे वा, पडिलोमअणुलोमेहिं वा उवसग्गेहिं णिज्जरं पेक्खतीति णिज्जरापेही, कह मम णिज्जरा भविज्जा ?, नाणादि पंचविहं **समाहिं अणुपालेति** इति, एवं **अंतो बहिं विउस्सज्ज** अंतो रागादीविवित्तिउस्सग्गो, बाहिरं सरीरं, आहारउवगरणमादीइ, एवं बहिं अब्भितरं च उवहिं विउस्सज्ज, अहवा अंतो वा बाहिं वा गामादीणं सरीरं विउस्सज्ज, विसेसेण चयणा वियोसज्ज, अज्झत्थं **सुद्धमेसए** अप्पाणं अहिकिच्च वट्टति, अज्झत्थं सुद्धं णाम जीवितमरणादि विवज्जेति, रागदोसादिरहियं वा, एसति णाम मग्गति, सो एवं संलिहंतो **जं किंचि उवक्कमं जाणेज्ज** (२२) इति अणुदिट्ठस्स किंचि इति अतिगिलाणितो पित्तमुच्छं वा आयंबिलं परिग्गहितेण वा तवेण अतिघाती सरीरस्स **आउखेमस्स अप्पणो** आउसो खेमं—अबाधायत्तं जीवियस्स, अहवा जं किंचिदिति तस्स उक्कोसेहिं तवेहिं सोसितसरीरस्स अण्णादिरूवा उवक्कमकारी भवंति, तं एवं आउसो खेमं समतीए परवागरणेण वा जाणेत्ता तस्सेव अंतरद्धाए अद्धा णाम कालो, अंतरे अद्धा अंतरद्धा, यदुक्तं भवति–तत्थेव कालंतरे, **खिप्पं सिक्खिवेज्ज** खिप्पं सव्वासंगेण तहेव कालो, सिक्खा णाम आसेवणा, जं तवमिति जं तेण अज्झवसितं तदेव सिक्खिज्ज, तक्खणादेव आलोइयपडिक्कंतो वयाइं आरोवित्ता भत्तं पच्चक्खावेज्ज, पावाइणो पंडितो, तत्थ **गामे वा अहवा रण्णे** (२३) अंतो गामस्स वसही तव्बाहिं वा उज्जाणे ठितो गिरिगुहाइसु वा, पाडिचरएहि सद्धिं, आसुक्कारेण वा एगाणितो, **थंडिलं पडिलेहए** थाणं ददातीति थंडिलं पडिलेहेहि, तं दुविहं सरीरं पडिहाय पाणियथंडिलं च, जत्थ य भत्तं पच्चक्खाति जत्थवि थंडिले सरीरगं परिट्ठविज्जिस्सति तंपि जति अगीयत्था सेहा य ताहे तंपि सयमेव पडिलेहेति, एरिसे थंडिले मते परिट्ठविज्जाह, पारिट्ठावणिया च बहिं च सिं कहेति, जत्थ पुण ण विज्जति तं अप्पपाणं ॥२८९॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२५]
दीप
अनुक्रम
[२३६-
२६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२९०॥

अनाहारादि

अप्पबीयं च अप्पहरितं जाव विथाणेत्ता तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता दब्भकुसादीणि सयमेव अणाहारो णिवज्जेज्ज
(२४) मुणी, तस्स आहारो ण विज्जतीति अणाहारो, तिविहं वा पच्चक्खाति, ताणि वज्जेज्जा जाव णिवण्णो संतो, पुट्ठो तत्थऽधि-
यासिज्जा पुट्ठो णाम दिगिंछाते, तिविहे पच्चक्खाए, तिविहे चउव्विहे वा पच्चक्खाया, पिवासितो तत्थऽहियासए, एवं अन्नेहिवि
परीसहेहिं पुट्ठो अहियासए णातिवेलं उवचरे ण पडिसेहे अतिरतिक्कमणादिसु, वेलत्ति वा सीमत्ति वा मेरत्ति वा एगट्ठा, दव्व-
वेला समुद्दस्स, भाववेला चरित्तपाली, तं सो परीसहेहिं उवसग्गेहिं पुट्ठो ण अतिवेलं धम्मसुकज्झाण, उवगरणे आहारो दाइज्जा,
मणुस्सेसुवि पुट्ठवं धम्मं मणुस्सेसु, अणुलोमेहिं वा पडिलोमेहिं, तत्थ अणुलोभो आहारनिमंतणादी, इत्थिया वा उवसग्गं करेति,
पुरिसएसणी वा गणिया चउसट्ठिकलाविसारया, पडिलोमे वा कट्ठलेहिं पिट्टिज्ज वा कड्ढविकड्ढिं वा करेज्जा, अवि पदत्थादिसु,
दिव्वेहिवि पुट्ठवं, तिरिक्खजोणिया पुण उवसग्गा सिरीसिवादि, ततो भणिज्जति-संसप्पगा य जे पाणा (२५) संसप्पंतीति
संसप्पगा-भुयंगाओ मक्कोडगबगसीयलसीहवग्घतरच्छादि, जे य उड अहे चरा उड्ढे चरा उड्ढचरा पक्खिणो कागा गिद्धा सण्हादि,
दंसमसगादयो य, पण्णवगदिसं पडुच्च अहेचरा बिलवासिणो, तंजहा-अहिमूसगादि, भुंजंते मंससोणियं तत्थ मंसं सीहवग्घ-
जंबुगादि भक्खयंति जहा अवंतिकुसुमालस्स, सोणियं तु दंसमसगपिपीलिगादि पिबंते, सव्वेवि ण च्छणे हत्थेण वा पादेण
वा कट्ठेण वा तणेण वा ण छणिज्ज, यदुक्तं भवति-ण मारेज्ज, पमज्जते दंसमसगे वत्थेण वा हत्थेण पत्तेण वा पाणा देहं विहिं-
संति (२६) इत्थ इमं आलंबणं काउं अहियासेयव्वं-मा तेसिं अंतराइयं भविस्सति, एते तु पाणा मम देहमेव विहिंसंति, ण पुण
नाणादिउवरोहं करेति, कहं ?-अण्णो जीवो अण्णं सरीरमितिकाउं, भणियं च-अण्णं इमं सरीरं अन्नोऽहं०, अन्ने संबंधिबंधवा, तं ॥२९०॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२५]
दीप
अनुक्रम
[२३६-
२६४]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥२९१॥

उद्भ्रम-वर्जनादि

जति पाणा देहं भक्खेंति मया णिसड्डमिति एत्थ किं मम अवरज्झति ?, अंतरं वा तेसिं, अतोवि ण णिवारते, ठाणाओ णवि उब्भमेत्ति दव्वठाणं सो चेव ओवासो, भत्तट्ठाणं भत्तपरिण्णा, विविहं उब्भमे विउब्भमे, सो एवं भावठाणाओ अचलितो भवति, जतो अवसव्वेहिं विचित्तेहिं अवसव्वंतीति अवसव्वा विसयकसाया हिंसादयो य विचित्ता-मुत्ता, अहवा विरूवप्पिहभावो, विचित्तेहिं अवसव्वेहिं अमिलितेहिं पमाणे अहियासएति पमाण इति अमएणेव सिच्चमाणो खुहप्पिवासिएहिं परीसहउवसग्गेहिं मिलायमाणे छिज्जमाणे वा देहित्ति तो वसे, णवि कायावायामणेहिं तिहिं तप्पति अहेयासेज्जत्ति-सहिज्ज, कम्मक्खयत्थं कंमगंथेहिं विचित्तेहिं (२७) दव्वगंथो सरीरवत्थपत्ताति भावे रागादि, आउकालस्स पारते आउकालस्स पारगो पइण्णापारगो य जाव चरिमा उस्सासणिस्सासा सिद्धिगमणं वा देवलोगउववातं, भत्तपच्चक्खाणं वुत्तं। इदाणिं इंगिणिमरणं वुच्चति, पग्गिहियतरागं च एतं भिसं गहियतरं पग्गहियतरं भत्तपच्चक्खाणाओ भारिततरं पूइततरं च, दुक्खतरं, कस्स ?-दवियस्स वियाणओ रागदोसरहियस्स दवियस्स सुट्ठु आदितो वा आहिते सुयाहितो, पव्वज्जा सिक्खावय अत्थगहणं च०, सोवि ता परिकम्मं करित्ता उवगरणादिउवहिं चइत्ता थंडिलं पमज्जित्ता आलोइयपडिक्कंतो वयाणि आरुभित्ता चउव्विहं आहारं पच्चक्खाय संथारारुढो चिट्ठति, सयमेव चंकमणाकिरियं करेतित्ति सो, आयविज्जं पडिगारं (२८) सयमेव उट्ठेति निसीयति चंकमणं वा करेति, आयविज्जं नाम नो तं असुहीभूतं अन्नो कोई उट्ठवेति णिसियावेइ वा उच्चारपासवणभूमिं णेति वा आणेति वा, पडियरणं पडियारो गायस्स आउंटणपसारणगमणागमणादि विजहेज्ज निद्दा तिधा त्रिविहं २ जहिज्ज विजहिज्ज, तिहा २ योगत्रिककरणत्रिकेण, केरिसए थंडिले णिवज्जति ?, भन्नति-हरितेसु ण णिवज्जेज्जा (२९) सयमेव थंडिल्लं पडीलेहित्ता गंतुं तत्थ णिविज्जति, ॥२९१॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२५]
दीप
अनुक्रम
[२३६-
२६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२९२॥

अनाहारादि

मुणी पुव्वभणितो आसीत, आसए वियोसज्ज, अणाहारो, कयसज्ञचउव्विहं वा आहारं, अणाहारो पव्वतव्वऽधियासए, पुट्ठोत्ति छुहाईहिं परीसहेहिं उवसग्गेहि य अहियासए तिविहकरणेणवि, सो एवं दिट्ठो संतो इंदिएहिं (३०) अंगपच्चंगसहसंचिट्ठो संकुडीतो वा समितं साहरे मुणी, संकुडितो परिकिलंतो वा पमज्जिता साहरति, एवं उववत्तंतो परियत्तंतो होऊण परावत्तति, यदुक्तं भवति–पडिलेहित्ता, तहेव से आउंडेन्तो पसारेंतो वा चंकमणियं वा करेंतो अगरहणिज्जो चेव सो भवति, अचले जे समाधिते अचलति अचलो, समाधिते अ, जति अचलो समाधितो भवति, इंगिणिमरणसमाधितो अहवा पतिण्णि, अचलो चेव अच्छइ वते, चलंतोवि समाधितो अचलो गणिज्जति, किंच–ण केवलं उव्वत्तत्ति वा परियत्तति वा, कताइ णिसण्णो सयणत्थो वा अवि परिसंतो उट्ठाय अभिक्कमे पडिक्कमे (३१) पव्ववगं पडुच्च अभिमुहं कमे, अभिमुहो क्रान्तभूतो, किमिति पडिक्कमे ?, यदुक्तं भवति–तं गमणागमणं करेति, हत्थं वा पायं वा परिस्संतं संकोडिज्ज वा पसारेज्ज वा, सम्मं कुचणं संकुचणं, यदुक्तं भवति–पडिलेहित्ता, प्रसृति प्रसारणं, किमत्थं वुच्चति ? काया साधारणट्ठाए सम्मं धारणं संधारणं, जं भणितं–सारक्खणं, एगपक्खेण सयमाणस्स गायाणि परिस्समंति ताणि उव्वत्तणपरियत्तणआकुंचणपसारणेहिं साधारेति, एत्थं वावि अचेयणेत्ति इत्थं इंगिणिमरणे वा विभासा जहा पाओवगमणेसु कट्ठमिव अचेयणा सर्वक्रियारहिते चिट्ठति एवं एत्थवि इंगिणिमरणे जति से सामत्थं अत्थि तो अचेयणो, अचेयणोव्व किरियारहितो चिट्ठति, अचेयणेण तुल्लो अचेयणवत्, जो पुण परिगिलाति कट्ठमिव चिट्ठमाणो सो परक्कमे परिकिलंतो (३२) परिक्कमणंतेण तेणवि जदा क्रान्तो भवति तदा अहवा चिट्ठे अहायतं अहायतमेभवित्ता चिट्ठति जहा परिहियगतो ठितओ वा अच्छति, जया पुण ठाणेणावि परिकिलेमति तदा छातो परिक्कमणं, तेणवि ठाणेणं परिकिलंतो निसिएज्ज वा

॥२९२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२५]

दीप
अनुक्रम
[२३६-
२६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२९३॥

पर्यंकासनादि

अंतसो ठाणस्स अंते यंतसो णिसण्णोवि जया पलियंकेण वा अद्धपलियंकेण वा उक्कुडुयासणो वा परितंमति णिविज्जति, उत्ताणतो वा पासिल्लितो वा उड्ढायतो वा लगंडसायी वा जहासमाहीते सव्वत्थवि (२३) आसीणमाण मिलं आसीण इति, उदासीणो मज्झत्थो रागदोसरहितो, अणेलिसो, अहवा धम्मं आसीतो मरणं वा अणण्णसरिसं इंदियाइं समीरते 'ईर् गतिकंपणतो' संमं ईरते समीरए इट्ठाणिट्ठेसु विसएसु रागदोसअंकणं इंदियसमीरणं, अहवा ठिनो चेव कोलावासं समासज्ज कोला णाम घुणा, केइ आहु–उद्देहियाओ, कोलाणं आवासो कालावासो, यदुक्तं भवति–घुक्कइं, णवि अदे कट्ठे कोला संभवंति, तं च अजुन्नं अघुणितं अणुद्देहियाखइयं उविच्च—आसज्ज समासज्ज, अहवा अवथंभे पत्ते वितहं पादुएसते सतो णं तहं वितहं, किंमितो सो कोलावासो?, जधा कोलेवि अवट्ठितो भवति तदा व तत्थ सन्ना भवति, तदवि पादुज्जतेसए–पादु पगासणे, पगासे अवट्ठितं तं चक्खुसा य आलोके, बद्धमूलं अझुसिरं एसति, यदुक्तं भवति–अवद्धं भवति, अवलंबति वा, जतो वज्जं समुप्पज्जे (२४) जम्हा ततो जत्थ वा कट्ठे कुड्डे वा अवलंबमाणो, वज्जं णाम कम्मं, समत्थं उप्पज्जइ समुप्पज्जइ, किमिति पुण?, वयलिज्जंति, उद्देहियाउ वा संचरओ वा बंधा भज्जंति, पडंति वा, ण तत्थ अवलंबते, उक्कसे अप्पाणं ततो जम्हा ईसित्ति कसिता उक्कसिता अप्पाणं सव्वे फासेऽधियासए, अहियासणे ठाणे वा निसियणे वा तुयट्टणे वा, जहा फासे तहा संसेवि विसए, भणियं इंगिणिमरणं, अयं तु सिलोगत्थो तहवि मरणोहे समोयारेयव्वो, तंजहा–कदायि पातोवगमणं पिडितयो वा करेज्जा, अवत्थंभियं वा कट्ठं हत्थेण अवलंबिउं, सोऽवि जतो वज्जं समुप्पज्जे ण तत्थ अवलंबते, भत्तपच्चक्खाणेवि जतो वज्जं समुप्पज्जे जतो वा णिदाणकरणादि परिणावितो वा, वज्जं कम्मं उप्पज्जति ण तत्थ अवलंबते–ण तं परिणामं पुणो अवलंबिज्जा, ततो उक्कसे अप्पाणं, विसुद्धपरिणामं- ॥२९३॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२५]

दीप
अनुक्रम
[२३६-
२६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥२९४॥

आवतरादि

तरमासज्ज सम्मं ठावति अप्पाणं, पाओवगमणमियाणिं, तंजहा–अयं वाततरे सिता(३५)अयमिति जो वुच्चति अंततरो अंततरी वा आयतरो, पढिज्जइ आयरे–द्रढग्गाहतरे धम्मे मरणधम्मे इंगिणिमरणाओ आयतरे उत्तमतरे जो विवेकं करेति, नणु जो एवं अणुपालते तहेव एत्थवि पव्वज्जा सिक्खावय० जाव संलेहितुं णिवज्जति, सो पुण सव्वगायनिरोधेवि गातं हत्थपादं जतिवि से चरिमट्ठाणट्ठियस्स उत्ताविंतेहिं मुच्छा उप्पज्जति मरणं समुग्घातो वा तहवि ततो ठाणाओ णवि उब्भमे, दव्वट्ठाणं स एव अवगासो, भावट्ठाणं स एगो मरणभिग्गहो, ईसितमेव उज्जमे, एयस्स पादवेण उवमा कीरति पाओवगमणं, जहा पायवो अच्छिन्नोवि ण चलति, किं छिन्नपातो?, सो डज्झमाणे वा छिण्णमाणे वा विसमपडितो वा मित्तिकाउं ण ततो ठाणाओ चलति, अण्णहा ठाणं ण करेइ, एवं एसोऽवि पातववत् पडितो निच्चलो निप्फंदो चिट्ठति, कत्थ पुण सो चिट्ठति?–गामे अहवा रण्णे, कहं पुण गामेत्ति?, जति जाणइ एस गामो अचिरेण डंहिति, मम असमत्ते चेव पाओवगमणा, ताहे गामे ठाति, इहरा तु सति परक्कमे अरण्णे चेव करेति, अचिरं पडिलेहित्ता अचिरं णाम ठाणं, अहवा अचिरं कालं, कालकतं अचिरं, तं पडिलेहित्ता पमज्जेत्ता विहरे चिट्ठ माहणे विहरेत्ति अच्छति णिसण्णे वा णिवण्णो वा चिट्ठति, उड्डीयतो अच्छति, काउस्सग्गे ठिओ वा, माहणेत्ति वा समणेत्ति वा एगट्ठं, णिच्चले निप्पडीकम्मो णिक्खिवति जं जहिं जहा अंगं, अचित्तं तु समासज्ज (३७) अचित्तं अचेयणं किंचि अवट्ठंभणं जा कुड्डं वा कट्ठं वा तं आसज्ज समासज्ज, यदुक्तं भवति–प्राप्य, तत्थवि किर कीरति अवट्ठंभितं पाओवगमणं संमं, जो तित्थ० पाओवगमणं, एतं कतरस्स?, अहवा अयं थंडिलं, सो थंडिल्ले णिसण्णो अवट्ठंभो वा अविलंबितो वा वोसिरे सव्वसो कायं सव्वेहिं पगारेहिं सव्वसो सव्वसत्था पणामए देहे परीसहाण णामए देहिं किंचि परायतं एतं सरीर-

॥२९४॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२५]

दीप
अनुक्रम
[२३६-
२६४]

मेते, सव्वहा वोसट्टं, सयं परीसहतीति, सेति देहे, दुक्खाणं भवंति, सो य देहो मम ण विज्जति, कतो परीसहा ?, अहवा ण मम देहे परीसहा संतीति सुहदुक्खसमत्ता, एवं मण्णति पुढवी चिव सव्वसहे णणु कम्मसत्तुजयसहायकत्ता तो परीसहाणं अपरीसहा एव मन्नति, ते पुण केच्चिरं कालं परीसहा अहियासेइ उवसग्गा ?, वुचंति—जावज्जीवं परीसहा (३८) उवसग्गा य, परीसहा दिगिञ्छादि उवसग्गा य अणुलोमा पडिलोमा य, इति संखाय एवं संखावां तेण भवति, यदुक्तं—ते न भवंति ततो अहियासते, पुण सुद्धते पडुच ण संखाया भवंति, अहवा जावज्जीवं एते परीसहा उवसग्गावि ण मम तस्सविसंतीति एवं संखाए अहियासए, अहवा परीसहा एव उवसग्गा ण देहे छिज्जमाणे डज्झमाणे वा इति पण्णे अहियासए इति एवं प्रज्ञावां उप्पण्णे अहियासए—सहेज्जासि, परिणिद्देसो वा, एवं सो पण्णो अहियासेति, देहदुक्खं महाफलंतिकाउं अहियासेति, एवं तं अध तं कोति विविहेहिं कामभोगेहिं णिमंतिज्ज सद्दातिविसएहिं तप्पडिसेहे इमं सुत्तं आरभति—भेउरेसु न रज्जेज्जा (३९) कामेसु बहुतरेसु भेउरधम्मा भेउरा सद्दादिएसु कामेसु, बहुतरा णाम पभूततरा, अलाहि आसत्तमाओ कुलवंसाओ, पढिज्जइ य—कामेसु बहुलेसुवि, यदुक्तं भवति—बहुएसु, जतिवि रायकन्ना गणिया वा चउसट्ठिकलागुणोववेया उवसग्गे करेति तंपि सहति, एवं पडिलोमेवि भेउरे सहति, जह खंदसीसेहिं, किंच—इत्थ (च्छा)लोभं ण सेविज्जा इच्छा चए लोभो, ते पुरिसे, अन्नोऽवि काम इच्छा, पसत्था इच्छा नाणादि, सा तु लोभग्गहणा अपसत्था इच्छा, णिदाणकरणं, जहा बंभदत्तादीहिं, तं ण सेविज्जा, ण पत्थेज्जा ण अभिलसेज्जा, इहलोगे वा आहारादि, अहवा इहलोगासंसप्पयोगे परलोगासंसप्पयोगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्पयोगे कामभोगासंसप्पयोगे, सुहुमरूवे उवसग्गे सूयणीया सुहुमा, वण्णो णाम संजमो, सो य सुहुमो, थोवेणवि विर-

सर्व-
सहनादि

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-२५]

दीप अनुक्रम [२३६-२६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२९६॥ | ध्रुवप्रेक्षादि

हिज्जति बालपद्मवत्, सम्ममेहिता समेहिता, पढिज्जइ य-धुवमन्नं समेहिता थिरसंजमं पेहित्ता, सो कहं थिरो ?, धुवं अव्वभिचारी, अहवा धुवमन्नं सपेहिया धुवो मोक्खो, सो य आणा, संजमो उ जस्स दोहि ता, किंच-सासतेहिं णिमंतिज्जा दिवं मातं न सद्दहे (४०) सासयमिति णितिएहिं, कोयी देवता व समत्थं पडिणीतताए वा, तं मायां, किं एवं किलिस्ससि ? अहं ते सासते कामे देमि, जं भणितं-दिव्वे, उद्वेहि एतं विमाणं, तं च अट्ठाए सक्केण देवराइणा पेसिता, सरूवेणमेव सग्गं आरुभिज्जासि, अन्नं वा जं इच्छसि तं ते वरं देमि रज्जं धणं वा अक्खयं जीवितं, एतं निमंतते तहिं देवे, तं दिव्वमायं ण सद्दहे ण एत्तिते जाव तं सव्वं तिविहेण करणेणवि, अहवा दिव्वं आयं ण सद्दहे, आतं-लाभं आगमणं ण सद्दहे, एवं देवीवि दिव्वं रूवं विउव्वित्ता भोगेहिं निमंतिज्जा साभावितं कइयविग्रं वा, तं दिव्वमायं ण सद्दहे, तं पडिमिति तं मायाठाणं पडीबुज्झे, यदुक्तं भवति-जाणिज्जा, समणेत्ति वा माहणेत्ति वा सव्वणूमं विधूणिता धूञ् कंपने, तं मातं विधूणिता, जं भणितं-खवित्ता, अहवा नूमं कम्मं, जेण तासु तासु गईसु मिज्जति-निहिज्जति, मातागहिताओ वा रागगहितो, तं विधूता, एवं दोसंपि, अहवा तमिति तं दव्वं मुंचति तिविहं, धूमित्ता विधूमित्ता विमोक्खो य इति। एवं सो सव्वत्थेहिं अमुच्छितो (४१) अत्था सद्दादि, ते य दिव्वा माणुसा य, केइ इच्छंति तिरिक्खजोणियंपि, दिव्वा सामाणीया तायतीसगादी, मणुस्सा चक्कवट्टिबलदेववासुदेवमंडलियादि एतेसु कम्मबंधणगेसु अट्ठेसु अमुच्छिते-अगिद्धो आयु कालस्स पारतो एतीति आयुं तस्स आयुकालस्स पारं गच्छतीति पारगो जाव तस्स सव्वविमोक्खो भवति देसविमोक्खो वा, भणियं वा पाओवगमणं, एतेसिं तिण्हवि मरणाण किं आलंबणं ?, तदुच्यते-तितिक्खं परमं णच्चा णाविमो(तिण्हम)ण्णतरं हितं तधिंमि तितिक्खणं, यदुक्तं भवति-सहणं तं, एतेसिं तिण्हवि मरणाणं ॥२९६॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ८ अध्य० ॥२९७॥

परमं सिद्धं पहाणं भवति, जं भणितं–जाणेत्ता जह विही विमोक्खतीति विमोक्खं, अण्णतरं णाम तिण्हवि एतेसिं अन्नतरं, अणुपालिज्जंति इच्चेयं विमोहायपयणं एगंतियं च अचंतियं च हितं सुहं आवकहितं परहितं मेत्ति एवं धु(बु)वामि, तित्थगरोवदेसाओ, ण सेच्छातो इति ॥ आचारचूर्ण्यां सप्तममध्ययनं विमोक्षायतनं नाम परिसमाप्तं ॥

अज्झयणाभिसंबंधो जहा णिज्जुत्तीए पढमे अज्झयणे वुत्तो, तंजहा–कयरेण इमं सुयखंधं प्रणीतं ? केण वा एते गुणा अणुचरिता जे अडसु अज्झयणेसु उत्ता ?, तं पुच्छ(वुच्च)ति–वद्धमाणसामिणा भगवया, एस ट्ठितकप्पो चेव सव्वतित्थगराणं जेण बंभचेराणं नवमे अज्झयणे तवोकम्मं वण्णेति जं अप्पणा अणुचिण्णमिति, जं च साहूहिं अणुचरियव्वमिति, तत्थ गाहा–'जो जइता तित्थगरो०' ॥२७५॥ कंठ्यं, चत्तारि अणुयोगदारा वण्णेत्ता दुविहो अत्थाहिगारो, अज्झयणे ताव चउहिवि उद्देसएहिं तवोकम्मेहिं अहिगारो वद्धमाणसामिणा य, उद्देसत्थाधिगारो इमो–चरिया १ सेज्जा २ य परीसहा य ३ आयंकिते तिगिच्छाए ४ ॥२७६॥ तत्थ पढमए उद्देसए चरिया वण्णिज्जति जहा सा चरियव्वा, बितिए सेज्जाओ वण्णिज्जंति जारिसियासु सो भगवं वसिताइओ, ततिए उवसग्गा वण्णिज्जंति, चउत्थे ओमोदरिया, जं च आहारं भगवं आहारियमो, णामणिप्फण्णे उवहाणसुतं, तस्स णिक्खेवो–नामं ठवणुवहाणं० गाहा ॥२८०॥ दव्वुवहाणं वइरित्तं उवहाणं सयणिज्जस्स एगतो दुहतो वा, निरुवहाणो उत्तंभयंति, आदिग्गहणा उवविट्ठस्सवि, भावोवहाणं चरित्तस्स सेज्जाए, बाहिब्भंतरो तवो, पंचमहव्वयसिज्जाए वा, जतो य एवं नाणदंसणचरित्त अभिगमणं–अभिगच्छणं, जं भणितं–करणं, तवसा को गुणो ?, भण्णति–जह खलु मइलं वत्थं० गाहा ॥२८२॥ कंठ्यं, तस्स पुण भावोवहाणस्स इमे एगट्ठा नामधेज्जा भवंति, जं वा तेणं भावोवहाणेण वुच्चंति एगट्ठियाणि, तंजहा -'उवहणण०'गाहा ॥२८३॥ ॥२९७॥

उद्देशार्थाधिकारः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

नवम-अध्ययनं 'उपधानश्रुत' आरब्धः,

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥२९८॥

श्रीवीर-दीक्षा

एतं किमत्थं वण्णिज्जति उवहाणसुयं ?, वुच्चति-'तित्थगरो चउनाणी०'गाहा ॥२७७॥ एवं तु समणुचिण्णं० जं अणुचरेंदु वीरा सिवं० गाहा ॥२८४॥ जहा य तेण भगवया एतं अणुचिण्णं एवं अण्णेहिवि अणुचरियव्वमिति अयं संखेवत्थो, सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं, अहासुयं वइस्सामि (४२) अज्जसुहंमो जंबुस्सामिं पुच्छंतं भणति-अहासुतं वइस्सामि, जहा सुतं अहासुतं, जहेति जेण पगारेण, ण अन्नहा, वइस्सामि, अहं वा जह सुतं तहा वदिस्सामि, जहा से जेण पगारेण सेत्ति णिद्देसे, कस्स ? भगवतो समणस्स, कतरस्स ?-वद्धमानस्सामिनो, अपच्छिमतित्थगरस्स, उट्ठाणं उट्ठाय, तंजहा-पंथं किर देसित्ता साहूणं अडविविणप्पट्ठाणं० सामाइयनिज्जुत्तीगमएणं जहा पज्जोवसणाकप्पे भणियं जाव आभरणअलंकारं ओमुइत्ता पंचमुट्ठियालोयं सिद्धाण णमोक्कारं काउं सव्वं सावज्जं एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता मणपज्जवे उप्पण्णे इति, एवं अट्ठविहकम्मसत्तुनिग्घायणट्ठयाए तित्थपवत्तणाय उट्ठिते संखाय तंमि हेमंते संखाय परिगणित्ता, यदुक्तं-णच्चा, पुव्वं चेव अंमापीतिहिं देवत्तं गतेहि नंदिवद्धणपभितिण सयणाण अज्झत्थिते गब्भकालपतिण्णाते परिसमत्तीय निग्गहीभावो सयणं अणुयत्तति, अफासुयं आहारं राइभत्तं च ण आहारेंतो बंभयारी असंजमवावाररहितो ठितो इति, एवं संखाय, पव्वज्जाकालं च छउमत्थपरियागं च कम्मक्खयकालं च संखाय संसारे दुक्खं सुहं च एवमादि संखाय, तत्थ हेमंते मग्गसिरबहुलदसमीए पाईणगामिणीए छायाए अहुणा पव्वतिए रीतित्था, रितित्था णाम विहरित्था, ततो दिवसे मुहुत्तसेसे कुमारगामं अणुपत्तो, अयं च उद्देसओ चरियाधिगारेणं जाति, जहा सामियीयनिज्जुत्तीए छउमत्थचरिया, इहं तु किंचि विसेसं भण्णति, सो भगवां णिगिणो भवित्ता एगदूसं वा से खंवे काउं पव्वइतो, तस्स पुण भगवतो एतं आलंबणं-नो चेव इमेण वत्थेण पीहेस्सामि तंसि हेमंते, ण पडिसेहे, ण अहं इमेण वत्थेण ॥२९८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

नवम-अध्ययने प्रथम-उद्देशक: 'चर्या' आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥२९९॥

दिव्वेण, पिहिस्सामि, न तस्स जहा मम एतं सीतत्ताणं हिरिपडिच्छायणं वा भविस्सति, से पारते आवकहाए स इति सो भगवं वद्धमाणो, पारं गच्छतीति पारगो, सीतपरीसहाणं वत्थमंतरेणावि, जं पुण तं वत्थं खंधे ठितं धरितं वा तं अणुधम्मियं तस्स अणु पच्छाभावे अन्नेहिवि तित्थगरेहिं तहा धरियं तं अणुधम्मियमेव एतं, जं भणितं—गताणुगतं, अहवा तित्थगराणं अयं अणुकालधम्मो—से बेमि जे य अतीता जे य पडुपण्णा जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो जे य पव्वइया जे य पव्वयंति जे य पव्वइस्संति सव्वे सोवहिगो धम्मो देसिअव्वत्तिकट्टु तित्थधम्मयाए एसा अणुधम्मियत्ति एगं देवदूसमादाय पव्वइंसु वा पव्वइंति वा पव्वइस्संति वा, भणियं च- गरीयस्त्वात् सचेलस्स, धर्मस्यान्यैः तथागतैः। शिष्यसंप्रत्ययाच्चैव, वस्त्रं दध्रे न लज्जया ॥१॥ स हि भगवां दिव्वेहिं गोसीसाइएहिं चंदणेहिं चुन्नेहि य वासेहि य पुप्फेहि य वासितदेहोऽपि णिक्खमणाभिसेगेण य अभिसित्तो विसेसेणं इंदेहिं चंदणादिगंधेहिं वा वासितो, जओ तस्स पव्वइयस्सवि सओ चत्तारि साधिगे मासे तहावत्थो, ण जाति, आगममग्गसिरा आरद्ध चत्तारि मासा सो दिव्वो गंधो न फिडिओ, जओ से सुरभिगंधेणं भमरा मधुकरा य पाणजातीया बहवो आगमेंति दूराओवि, पुप्फितेवि लोहकंदादिवणसंडे चइत्ता, दिव्वेहिं गंधेहिं आगरिसिता, तस्स देहमागम्म आरुज्झ कायं विंधंति, कायो णाम सरीरं, तं आरुभित्ता विहरींसु, ततो जतो जतो भट्टारतो जाति ततो ततो विलग्गा चेव केति विहरंति, केइ मग्गओ गमेंता मग्गओ अण्णेंति, जहा पुण किंचिवि ण रोएंति ततो आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु अचत्थं रुस्सिताणं आरुस्सिताणं, तत्थेति तत्थ सरीरे, हिंसिंसु णहेहि य रसयंति, वसन्तकालविरियं किंचि रत्तो व सुमणेहिं भवति, ततो विलग्गिउं तं पिबित्ता आरुसिताणं तत्थ हिंसिंसु, मुइंगादीवि पाणजातीओ आरुब्भ कायं विहरंति, जाव गाते वत्थे वा चंदणादीविलेवणाणं चुन्नादीणं चकेति अवयवोवचितं ताव

देवदूष्यादि

॥२९९॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३००॥

ते खाइंसु तेहिं णिद्धेहिं, पच्छा ते ठितस्स वा चंकमंतस्स वा आरुट्ठा समाणा कायं विहिंसिंसु, जे वा अजितेंदिया ते गंधे अग्घात तरुणइत्था तं गंधमुच्छिता भगवंतं भिक्खायरियाए हिंडंतं गामाणुगामं दूइज्जंतं अणुगच्छंता अणुलोमं जायंति देहि अम्हवि एतं गंधजुत्तिं, तुसिणीए अच्छमाणे पडिलोमा उवसग्गे करेंति, देहि वा, किं वा पिच्छसित्ति, एवं पडिमाट्ठियंपि उवसग्गेंति, एवं त्थियाओवि तस्स भगवतो गायं प्रस्वेदमलेहिं विरहितं णिस्साससुगंधं व मुहं दट्ठुं भणंति–कहिं तुज्झे वसहिं उवेह ? पुच्छंति जुत्ती, ण से, सो एवं विहरमाणो संवच्छरं साहियं मासं सो हि भगवं तं वत्थं संवच्छरमेगं, अहाभावेण स्थितवान्, ण तु रिक्कमतो साहियं मासेणं साहियं मासं, जं ण रिक्कासि तं तस्स खंधं तेण वत्थेण रिक्कं ण आसि, अहवा ण णिक्कासितवान् तं वत्थं सरीराओ, अहवा णिर इति पडिसेहे तत्थ तं न कासि, वत्थभावो वत्थता, देसीभासाए वा सुत्तभणितीए वत्थता सव्वतित्थगराणं वा तेन अन्नेण वा साहिज्जइ, भगवता तु तं पव्वइयमित्तेण भावाओ णिसट्ठं, तहावि सुवण्णवालुगानदीपूरे अवहिते कंटए लग्गं दट्ठुं पुणोवि वुच्चइ वोसिरामि, इमं च अवलोइयं, किमिति ?, वुच्चति–चिरधरियत्ता, सहसा व लज्जता, थंडिले चुतं णवित्ति, विप्पेण केणति दिट्ठं, सो पेक्खित्ता तं दिव्वं, एवं चरित्ता अचेलए, ततो चागी, अचेलया णाम अवत्थता, तप्पभिइ तं वोसज्ज वत्थमणगारो, चरियाधिगारो अणुयत्तइ, अदु पोरिसिं निरियभित्तिं (४६) अदुत्ति सुत्तभणितीते अह इति वुत्तं भवति, पुरिमा णिप्फण्णा पोरुसी, यदुक्तं भवति–सरीरप्पमाणा पोरिसी, पुणतो तिरियं पुण भित्तिं, मण्णित्ता दिट्ठी, को अत्थो ?, पुरतो संकुडा अंतो वित्थडा सा तिरियभित्तिसंठिता वुच्चति, सगडुद्धिसंठिता वा, जतिवि ओहिणा वा पासति तहावि सीसाणं उद्देसतो तहा करेति जेण निरुंभति दिट्ठिं, ण य णिच्चकालमेव ओधीणाणोवओगो अत्थि, चक्खुमासज्ज अंतसो झायति पस्सति अनेण चक्खुं,

सवस्त्रता

॥३००॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३०१॥

ऋजूवयो-
गादि

चक्खुसा आसज्ज, यदुक्तं भवति-पुरओ अंतो मज्झे यातीति पश्यति, तदेव तस्स ज्झाणं जं रिउवयोगो अणिमिसाए दिट्ठीए बद्धेहिं अच्छीहिं, तं एवं बद्धअच्छी जुगंतरणिरिक्खणं दट्ठुं, अह चक्खुभीत सहिता ते अह इति अणंतरे, तं चेव रूवाणि भीसणेणऽक्खिमिव दट्ठुं भीताणि एम रक्खसोत्ति, सहितेति समागता बाला अवत्तवया, कट्ठलट्ठगादिएहिं हंता हंता कदाइति अन्नाइंपि चेडरूवाणि खोहिंसु एव, एहित्ति पस्सह इमं पिसायं, इरियाणंतरं सेज्जा भवति तेण सतणेहिं विमिस्सेहिं (४७) सातिज्जति जत्थ तं सयणं-उवासओ, वीतिमिस्सं अन्नउत्थियगिहत्थेहिं तत्थ ण ठाति, जति पुण पुव्वट्ठियस्स एति से इत्थिया पुरिसा जहा पत्तकालगादिसु एक्किताओ वा एज्जा संकेयगदिण्णिताउ वा तदट्ठीओ वा ताहे ताओ जाणणापरिण्णाए परिण्णाय जहा एता हुसियाओ 'एता हसंति च रुदंति च अर्थहेतोर्विश्वासयंति पुरुषं च ण विश्वसंति।' किंपाकफलसमाना विषया हि णिषेव्यमानरमणीयाः, एवं जाणणापरिण्णाए परिण्णाय पच्चक्खाणपरिण्णाय पच्चक्खाय सागारियं ण सेवेइ च सागारियं णाम मेहुणं तं ण सेवति, इति एवं सेति भगवतो णिद्देसो, वेरग्गे पविसित्ता अप्पाणं मरणं सोक्षा ज्झाति, ण ततो सोतं वा चक्खुं वा समरणं वा देति, अप्पसागारितेवि सइं पवेसित्ता ज्झायति, दव्वसागारि बहि सति न भावसागारियं, जं भणितं-ण सेवति, सो भगवं णिच्चमेव एगंते सुन्नागारादिसु ट्ठाति, अह वाघातो ज्झाणट्ठयाए, जइ पुण से कहवि वीतिमिस्सा वसहि सेज्जा आसन्ने वावि गिहत्थाणं तत्थ वारेति, जे केइ मे अगारत्था(४८)जइ पुव्वुदिट्ठस्स, एता गृहस्था, स्थाने पयणादि अत्थि, करिज्जा भासिज्ज वा, तत्थ मीसभावं तेसु पहायति, न तेसु मणंपि संधेति, तेसु रोसो वा, समासो अगारे चिट्ठतीति अगारत्थो, इत्थीओ पुरिसा य, ते मिस्सीभावं पजहाय, यदुक्तं भवति-संमिस्सभावं, अन्नउत्थियाणवि जहा दृष्ट्वाऽज्जंतएसु दरिद्रप्रसूयगीतणक्ष(ट्ट)उणुरु- ॥३०१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

आगम (०१)	**“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:)** श्रुतस्कंध [१], अध्ययन [९], उद्देशक [१], निर्युक्ति: [२७५-२८४], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक २२६/गाथा: १-२३]
प्रत वृत्यंक [२२६- गाथा १-२३] दीप अनुक्रम [२६५- २८७]	श्रीआचा- रांग सूत्र- चूर्णिः ॥३०२॥ कादि तदत्थे चइत्ता ज्झाति, यतो किंच-पुट्ठेवि स हि अपुट्ठे वा पुच्छितो अपुच्छितो वा, अह ते भत्तं करेमि वा?, तुसीणीओ, अपुच्छिऊणं वा जो कोइ करेति तंपि नाणुजाणइ, तं अणिण्हता णाणुण्णातमेव भवति, अहवा पुच्छंति-केण हडो? केण हितं, केण दड्ढं? केण भग्गं? एवं पुट्ठो, णागज्जुण्णा तु पढंति-पुट्ठो व सो अपुट्ठो वा णो अणुण्णाति पावगं भगवं, पुट्ठो सो अपुट्ठो वा गच्छति मोणेणं, ण तु अतिवत्तति वा, ज्झाणाओ वा, अज्ञवं अज्ञो-रागदोसरहितो, रिजुमग्गं जाति अमायावी, णायि पडियस्सवि उल्लावं ण देति, पडिलोमे वा उवसग्गे करेंति, तस्स एतं वा णो सुकरमेतमेगेसिं न पडीसेहे, सुहं कीरति सुकरणं, एतमिति जानाति आसवो भवति, मंतेहिं पयत्तेणवि दिज्ञमाणो, पादगतेहिंवि उवसिज्ञमाणो, जमणियमअव्वाबाहं च पुच्छिज्जमाणो, ण एतं तहा दुक्करं जहा पडीलोमेहिं उवसग्गेहिं कीरमाणेहिं तुसिणीओ अच्छति, अणुलोमेहिं तु कीरमाणेहिं तुण्हिको तु एवं सुदुक्करं, अहवा सव्वमेव एवं, एगेसिं, न सव्वेसिं, दुरणुचरं हस्तिसरवत्, जहा परिजयमितो हत्थी संगामे सरप्पहारेहिं ण नियत्तति, एवं भगवंपि, आराहणपडागगहणत्थं, परिसहभिजुद्धं वा, जायंते परीसहा उवसग्गा पडीलोमा अणुलोमा य, तत्थ अणुलोमा भणिया, नो सुकरणा एतमेगेसिं, पडीलोमे आह-हतपुवो तत्थ दंडेणं छउमत्थकाले विहरंतो पडीमागतो वा हतपुव्वो, तत्थ दंडेणं डंडो, अहवा डंड इव डंडो लीलप्पहारः, जहा डंडेण तहा लेट्ठुणा दूरत्थिण अट्ठिणा वा मुट्ठिणा वा, फलेति मुट्ठिणा, कसेण जोत्तेण वा, एते पहारप्पगारा, एतेहिं चेव पहारपग्गारेहिं लूसियपुव्वो अप्पपुण्णेहिं लूसितो, यदुक्तं भवति—भग्गो, अहवा लूसियपुव्वो भक्खियपुव्वो, तं पुण दस्सुआयतणेसु, अप्पपुण्णा णाम मंदपुण्णा, जइ भगवंतं वहियवंतो दोग्गइगामिणो, एवं सुधम्मो जंबुणामं कहयति, तेहिं अप्पपुन्नेहिं लूसियपुव्वो, अण्णाणि य फरुसाणि फारुसियाणि दुतितिक्खाणि पीतिरहिताइं पप्फरुसाइं कक- अननुज्ञादि ॥३०२॥
	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-२३]

दीप अनुक्रम [२६५-२८७]

साइं, दुतितिक्खाणि तितिक्खं सहणं दुक्खं तितिक्खिज्जंति दुतितिक्खाइं, अतिच मुणी परक्कममाणे अतिरतिक्रमणादिषु अतीव एत्य अतिअच्चा, अगणेंतो, तेण च मणे सति तेण चिंतेति, मुणी भणितो, धम्मे तहेव परक्कममाणो, परीषहा विषयं वा परक्कमानो, भणिता पडीलोमा। इदाणिं अणुलोमा, आघातणट्टगीताइं आघातं अक्खाणगं, अग्घातितंति वा आतिक्खियंति वा एगट्ठा, लोइयं भारहादि, कुप्पावयणियाणि वा आघाइज्जंति, कहं?, पवो लासगो मक्खो जुवति, णट्टं णच्चंते, तं पुण इत्थी पुरिसो वा णच्चति, गति(गीत)मेव तंतीवंसादि आयोज्जं, जुद्धं तिविहं, तंजहा—डंडजुद्धाणि मुट्ठिजुद्धाति, डंडेहिं जुद्धं मल्लाणं जुद्धाणि वा, रागियाइं एयाइं पाएण तेण ताइं वारेति एव, गढिते विधूत(मिहुकहासु)समयंमि(५१)गढितं यदुक्तं भवति—बद्धं विसयंमि, तहा विद्धं अन्नेहिं वा, से तंतिं चोएन्तो अच्छति, भगवं च हिंडमाणो आगतो, सो तं आगतं पेच्छेत्ता भणइ—भगवं देवज्जगा! इमं ता सुणेहि, अमुगं कलं वा पेच्छाहि, तत्थवि मोणेणं चेव गच्छति, णातिवत्तति अंजूं, अतियच्च मुणी परक्कममाणो, एवं कहगस्सवि, मिहोकहासमयोत्ति जे केवि इत्थिकहाति कहेंति, भत्तकहा देसकहा रायकहा, दोन्नि जणा बहू वा, तहिं गच्छति, णातिवत्तति अंजूं, अहवा रीयंतं अच्छंतं वा पुच्छइ—तुब्भं किंजाइत्थिया सुंदरी?, किं बंभणी खत्तियाणी वतिस्सी सुद्दी व?, एवमादी मिहुकहा, समतो गच्छति, णातिवत्तए णेहहरिसे, अरत्ते अदुट्ठे अणुलोमपडिलोमेसु, विसोगे विगतहरिसे, अदक्खित्ति दट्ठुं, एयाणि से उरालाणि एयाणित्ति जहा उद्दिट्ठाइं, अणुलोमाणि य उवसग्गाइं, उदाराणि उरालियाणि, यदुक्तं भवति—उक्किट्ठलोमाइं, पडिलोमाइं तेण असुभपगारेण, उरालं गच्छतीति अतिकमति, णायपुत्ते असरणाए असरणं अचिंतणं अणाढायमाणंति एगट्ठा, अहवा सरणं गिहं, णऽस्स तं सरणं विज्जतीति असरणगो, ण य सरणंति अतिक्कंताणि पुव्वरयाणीति, किं एत्थवि

| प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७] | श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णि: ॥३०४॥

तं ?, जं भगवं अपरिमितबलवीरियपरक्कमो पव्वइयो स इंदियदमं कृतवान्, सो भगवं आघवति जो फासुयाहार एवासी, कहं ?, तस्स हि अट्ठावीसतिवरिसस्स अम्मापियरो कालगयाइं, तेसिं मरणे सो समत्तपइन्नो भूतो, जणो ण देइ, तेहिं णातखइ(त्ति)एहिं विन्नवितु–भगवं ! खये खारावसेगं मा कुरु, पच्छा भगवं उवउत्तो, जइ अहं संपयं चेव णिक्खमामि तो एत्थ बहवे सोगेण खित्तचित्थादि भविस्संति, पाणा चइस्संति, एवं ओहिनाणेण णच्चा भणइ–केचिरं अच्छामि भणह ?, तेहिं भण्णाति–अम्हं परं विहिं संवच्छरेहिं रायदेविसोगा णासिज्जंति, तेण पडिस्सुतं, ताहे भणइ–तता नवरं अच्छामि जति अप्पच्छंदेण भोयणातिकिरियं करेमि, तेहिं सामत्थियं, अतिसयरूवंपि ता से किंचिकालं पेच्छामो, तं तेसिं भगवया वयणं अब्भुवगयं, सयं च णिक्खमणकालं णच्चा, **अवि समहिते दुवे वासे** (५२) अच्छइस्सि, अन्नतरे जम्हा ते तिव्वसोगे संतत्ता मा भू, मच्चुवसं गता भविस्संति, अह तेसिं तं अवत्थं णच्चा साधिते दुवे वासे वसतीति, दुवे वरिसे सीतोदगं भावओ परिचत्तं न पुण पिवीहामि, जहा सीतोदगं तहा सव्वाहारं सचित्तं अभोच्चा–अपीच्चा, अपिइत्ता इति वत्तव्वे जाणावेति अन्नंपि सचेयणं अभोच्चा, ण य फासुतेणवि ण्हातो, हत्थपादसोदणं तु, फासुएणं आयमणं, सव्वसचेतणाहारपरिच्चागे सति दुपरिहरं उदगमितिकाउं तेण तस्स गहणं, इतरहा हि सो पंचवि सचेतणे काये परिहितवां तिविहकरणेणवि, परं णिक्खमणमहाभिसेगे अफासुएण ण्हाणितो, जहा पाणाइवायं परिहरियव्वं तहा मुसावायंपि अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं राईभत्ताणिवि, ण य बंधवेहिवि अतिणेहं कृतवां, ततो वुच्चंति **एगत्तिगते पिहितच्चा** एगत्तिगतो णाम ण मे कोति णाहमवि कस्सइ, पिहिता अच्चाओ जस्स स भवति पिहितार्चः, अच्चा पुव्वभणिता, सरीरं वा, तं पंचेंदियसमुदितो, सो रागदोसोदयं प्रति पिहितो, कायवायमणगुत्तो वा, भावअच्चाओवि अपसत्थाओ पिहीताओ, रागदोसऽणलज्जाला पिहिता,

प्रासुकाहारादि ॥३०४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि: |

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-२३]

दीप अनुक्रम [२६५-२८७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३०५॥

दर्शनादि

से अभिण्णायदंसणे संते स इति सो भगवं छउमत्थकाले ग्वातिते सम्मदरिसणे, दरिसणे य सति णियमा नाणं अत्थि, तं च पुव्वगइयस्स भगवतो चउव्विहं, मणपज्जवनाणे य सति णियमा चरित्तं, अतो दरिसणे गहणं तज्जातीयाणं, संतेत्ति विज्जमाणे, केइ बेंति खओवसमियं सम्मदंसणं तस्स आसी, तं च संतं, जो एवं भगवं गिहवासे व सीतोदगादि छप्पि काए दोण्णि साधिए वासे अभोच्चा णिक्खंतो सो कहं निक्खंतो ते आरभिस्सति?, अत एव वित्थरा वुच्चति-'पुढवि आउं च'(५३) कंठ्यं, पणतो णाम उल्ली अणंतकायो, सो जीवत्तं प्रति दुव्विभावो अतो तग्गहणं, तेण जो पणगमवि परिहरिहिइ सो कहं वत्त-जातिवुड्ढिआहारमरणधम्माणं वणस्सतिं न परिहरिस्सति?, अतो पणगग्गहणं बीयग्गहणं च, हरियाणि तु वत्तलिंगाणि, वणस्सइ-भेददरिसणत्थं च पणगादिगहणं, एवं पुढविकायियादि, पुढवीभेदो भाणियव्वो, तसा बेइंदियादि, सव्वसो पगारेहिं सुहुमबादरप-ज्जत्तगादी व भेदे णच्चा उज्झित्ता 'एयाणि संति पडिलेहे' (५४) एयाइंति मागहाभिहाणाण एताइं कायाइं, संतीति विज्जंति, यदुक्तं भवति-ण कयाइ विज्जंति, कयाइ न विज्जंति, आह-'इमा णं भंते! रयणप्पभा पुढवी सव्वजीवेहिं जढपुव्वा सव्वजीवेहिं जढा?, गोयमा! इमा णं रयणप्पहा पुढवी सव्वपुव्वे(जीवे)हिं जढपुव्वा, नो चेव णं सव्वजीवेहिं जढा, एवं सेसासुवि', अतो संतिग्ग-हणं, चित्तमंताणि से अभिण्णाय चित्तमिति जीवस्स अक्खा, चित्तं तेसिं अत्थीति चित्तमंता, पुढविकाइयादीणिवि कायाइं, स इति तित्थगरो छउमत्थकाले, अभिमुहं णच्चा अभिण्णात, यदुक्तं भवति-ण विवरीतं, परिवज्जियाण विहरित्ता इति संखाय से महावीरे एतं कंठ्यं, अह थावरा तसत्ताए (५५) तसजीवावि थावरत्ताए, यदुक्तं भवति-उववज्जंति, अदुवा सव्वजोणिया सत्ता अदुवत्ति अदुवसदा अववज्जं, सो सुहदुहउच्चारणत्ता सव्वासु जोणिसु उववज्जंति सव्वजोणिया, ण तु जहा लोइता ॥३०५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३०६॥

सर्वयोनिकत्वादि

जा इत्थी सा इत्थीमेव, ण यऽन्नो, इस्सरो स इस्सरो एव, जो मुणी सो मुणी चेव, चउरासीइ य सयसहस्सविहाणा कम्मेहिं अभिसित्ता सत्ता कंमणा कप्पिता पुढो बाला कप्पिता, यदुक्तं भवति–उववादिगे, वुत्तं च–छसु अन्नतरंसि कप्पति, पुढो णाम पिहप्पिहं, जं भणितं होति–पत्तेयं पुणो पुणो वा, दोन्नि आगलिता बाला, ते एवं कम्मेहिं कप्पिते, भगवं च एवमण्णासिं (५६) च पूरणे, एवमवधारणे, एवं अनिसित्ता, जं भणितं भवति–अणुचिंतेत्ता, गिहवासे अवहिनाणेण पव्वइए चउहिं नाणेहिं अणिसित्ता, किमिति निक्खमणकालं, जं भणिता होति–अह सामिवे दुवे वासे जाव कम्मुणा कप्पियत्ति, इमं च अन्नं अणिसेत्ता सोवच्चिते हु लुप्पती बालो दव्वउवही रन्नादि, भावे कम्ममेव उवही, सह उवहीणा सोवही, इह परत्थ य लुप्पति–छिज्जति भिज्जति वहीज्जति मारिज्जति, इहं ताव 'कतिया वच्चति सत्थो ? किं भंडं ? कत्थ ? कित्तिया भूमी ?। को कयविक्कयकालो ? णिव्वि-सति को ? कहिं ? केण ? ॥ १ ॥' मणूसा लुप्पंति, चोररायअग्गिमादीहिं आलुप्पति, परत्थ कम्मोवहीमादाय नरगादिएसु लुप्पति, कम्मग्गाओ लुप्पति, मोक्खसुहायो य लुप्पति, अहवा इमं अणिसित्ता–जे पव्वइयावि संता कथं विणावि कारएहिं जीविकाइएहिं जीविस्सामो ?, मंसादिणिट्ठभोयणेण वा अच्चंतेण वा, तेसु उववज्जमाणो, सो य उववज्जमाणो बालो, सोयविधिया माइट्ठाणिउ, तंजहा—सयं ण पयामि, अन्नेहिं पाययामि, एवं सतं ण छिंदामि छिंदामऽण्णेहिं, एवं लोगरंजणणिमित्तं सोवि, जं भणीतं–वं मोहकंमोवहिमादाय नरगादिभवेसु लुप्पति पकति य, ते पेहियव्वा काएण, जहा णच्चा सोवहियदोसे य णच्चा, इमं च अन्नं णच्चा, तंजहा–कम्मं च सव्वसो णच्चा कम्मं अट्ठविहं, तं सव्वसो सव्वपगारेहिं पदिसठितिअणुभावतो णच्चा, जो य जस्स बंधहेऊ कम्मफलविवागं च, पडियाइक्खे पावगं भगवं हितजुयो पच्चक्खाति पावगं हिंसादि, अणवज्जो तव्वोकम्मादि, ण तं पच- ॥३०६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

क्खति, कम्माहिगारे अणुयत्तमाणे दुविहं समिच्च मेहावी ('५७) दोन्नि विहा दुविहं, कीरतीति कम्मं इरियावहियं संपरायं च, अहवा पुन्नं पावं च, अहवा इहलोगविवागं परलोगविवागं च, समिच्च संमं णच्चा, मेरा धावी (मेहावी) गहणधारणेवि, सव्वतित्थगरऽक्खायं अनेलिसं—असरिसं, अहवा दुविहं अगारधम्मं अणगारधम्मं च, तहा रागं दोसं च, पुन्नं पावं च, किरियं अकिरियं च, संजमपुव्वगो तवो, कसिणकम्मक्खयकिरिया, तं समेच्च, नाणं अस्स नाणी, किंच तं?, सुतं नाणं, सुहुमत्ता कम्मपोग्गलाणं ण अवधी तस्स, मणोदव्वविसयं च मणपज्जवनाणं, तेणंतेण सुतं अधिकृतं, अहवा देसेण नाणी, कम्महिगार एव अणुयत्तए, जतो वुच्चति—**आदाणसोयमतिवायसोतं** आददाति आदीयते वा तेण इति आदाणं, आदाणस्स सोयं आदाणसोयं, सोतादीणि इंदियाणि सद्दादिअत्थाणं आदाणाणि भवंति, अतिवादसोत तु हिंसादिपरिग्गहत्थं, अहवा आदाणसोयं संपराइयं, अतिपातं इरियावहियं, तेण हि अतिपतति संसारातो अतिपातसोतं, अयं तु आरिसो अत्थो, आयाणसोयं नाणादि, अतिपातं हिंसाति, योगो तिविहो, तंजहा—आदाणसोय अतिवातसोयस्स जोगं सव्वहा सव्वसो णच्चा करेति, भन्नति—**अतिवत्तियं अणाउट्टिं** अतिवादिज्जति जेण सो अतिवादो—हिंसादि, आउट्टणं करणं, तं अतिवातं णाउट्टति सयं, अण्णेहि **अविकरणाएत्ति** ण करेति अन्नेहिं नाणुमोदति कतं जोगत्रिककरणत्रिकेणं जाव मिच्छादंसणसल्लं, केति भणंति—जया किर सो बंधूहि पण्णविओ दुवे वरिसे चिट्ठत्ति तदा फासुआहारो **सुपासनंदिवद्धणप्रभृतीहि** सुहीहिं भणितो—किं ण ण्हासि?, ण य सीतोदगं पिबसि?, भूमिए सुवसि, ण य सचित्तं आहारं आहारेसि, पुच्छितो पडिभणति—**आदाणसोतं अतिवातसोतं** (५८) तहेव वच्चो, **अतिपत्तियं अणाउट्टिं** तहेव, अह इत्थीओ किं परिहरसित्ति भणितो यदि भगति—**जस्सित्थीओ परिण्णाता**, अहवा उवदेसगमेव, एवं मूल-

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-२३]

दीप अनुक्रम [२६५-२८७]

गुणाधिकारो अणुयत्तति-जस्सित्थीओ परिण्णाता जतो जेसिं वा दुविहाए परिण्णाए जाणणापरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए य, जाणणाए 'एता हसंति च रुदंति च अर्थहेतु०' बितियाए पडिसेहेति सव्वं अट्ठविहं कम्मं आवहंति एवं पेक्खित्ता, एवं सेसेवि अस्सवे, परिहरियं वा जहाय, एतं मूलगुणे परिहरितं वा, तं चेव उत्तरगुणेवि, जेण भण्णति-**आहाकडं न से सेवे (५९)** जति कोति निमंतिज्ज अज्ज अम्हंतणए भुंजसु गेहे अहं ते साधयामि भोयणं, तं एवं अहाकडं तमाहाय मणसीकृतं, जोवि अपुच्छिअ पिउवणखंडे हिंडंतस्स दाहामि तंपि अहाकडं, **सव्वसो कम्मुणा य अदक्खु** सव्वस्स इति सव्वभावेण ण लेसुद्देसेण, किमिति?, नणु कम्मुणा कम्मबंधो अदक्खुत्ति, अत एव दट्ठं भवति-जं पावं न सेविज्जति, जेण आहाकम्मेण भुत्तेण, एवं सव्वं अविसोधिकोडिं वज्जेतव्वं, जं किंचि पावगं भगवं जमिति अणुद्दिट्ठस्स, जं च आहारिमं असणपाणखाइमसाइमं वा, पावगमिति असुद्धं विसोधिकोडीए वा, तहा आहाकम्मं च वज्जेहि सेस उग्गमदोसेहिं उप्पायणदोसेहि एसणादोसेहि य, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्ता अकुव्वं सतं अन्नेहिं पावयं जोवि सो कोइ आगताए पेहाए उवक्खडेज्ज आगतस्स दाहामि तंपि नाणुमोदेति, यदुक्तं भवति-न गेण्हाति तेण अणुण्णा ण भवति, अहवा पापगमिति मंसमज्जमादि, तत्थ अकुव्वं ण असति, जं च अण्णं संजोयणादिपमाणइंगालधूमणिक्कारणादि आहारअस्सितं पावं तं अकुव्वं, तहा य चेव सुरुसुरादिपावं अकुव्वं, विगतजीवं वियडं, एवं पाणगमवि चाउलउण्होदगसोवीरगादिपगारो, अतिक्कंतं चायी, जं भणितं-भुत्तं वा, भणितं आहारविधाणं, इदाणिं उवहिं वुच्चति, सो य दुविहो-वत्थं पत्तं च, जतो वुच्चति-**णो सेवइ य परवत्थं (६०)** जं तं दिव्वं देवाइ संपव्वयंतेण गहितं तं साहियं वरिसं खंधेणं चेव धरितं, णवि पाउयं, तं मुइत्ता सेसं परवत्थं पडिहारितमवि ण धरितं वा, केइ इच्छंति-से वत्थं तस्स तत्, सेसं परवत्थं, जं गाहितं

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३०९॥

परपात्र-
निषेधादि

णासेवितंपि, तहा सपत्तं तस्स पाणिपत्तं, सेसं परपत्तं, तत्थ ण भुंजितं, तो केइ इच्छंति-सपत्तो धम्मो पण्णवेयव्वुत्ति तेण पढम-
पारणं परपत्ते भुत्तं, तेण परं पाणिपत्ते, पगारो तहेव, अतिक्कंतं यावि, गोसालेण किर तंतुवायसालाए भणियं-अहं तव भोयणं
आणेमि, गिहपत्ते काउं तंपि भगवता निच्छितं, उप्पण्णनाणस्स लोहज्जो आणेति-धन्नो सो लोधज्जो खंतिखमो०, किं तत्थ
ता ण अडियवं ?, भणियं-'देविंदचक्कवट्टी मंडलिया ईसरा तलवरा य। अभिगच्छंति जिणिंदं गोयरचरितं ण सो अडति ॥१॥'
छउमत्थकाले अडियं, परिवज्जिताण ओमाणं सव्वओ वज्जिता परिवज्जिता, ओमं माणं करेति, ओमाणं जं जस्स दिज्जति तं
जणं दिज्जति, सव्वेहिं दुपदचउप्पदादीहिं आहारकंखीहिं संतेहिं पडिपुन्नेहिं चरंति, आउयखंडणा संखडी, सयट्ठाए परेहिं उव-
खडितं, जा य णाम संखडी अप्पातिण्णा होज्जा, भिक्खायरा जत्थ णत्थि तत्थ गच्छति, असरणाएत्ति ण ता सरति हिज्जो होहिति
परसुए होहितित्ति, अहवा पडिवाडी, ण घराणि वा मोत्तुं गच्छति, जुण्णा संखडी, अहवा संखडित्ति ण उस्सुगभूतो भवतित्ति,
एत्थं मणुन्नं पणीतं बहुयं च लभिस्सामित्ति ण सरति, अहवा सरणमिति गिहं, तं तस्स नत्थि असरणो, जइवि णाम छमासपा-
रणाए संखडीए असंखडीए वा मणुण्णं भत्तपाणं परं लभति, तत्थवि मायण्णे असणपाणस्स (६१) मत्तं जाणतीति मातण्णो,
कस्स ?, असणपाणस्स, भणियं च-'जह सगडक्खोवंको कीरति भरवहण०' जतिवि भगवओ अणुत्तरओरालियसरीरल-
द्धिजुत्तो ता ण अजिण्णादयो दोसा भवंति, तहावि सो भगवं तंनिवारणत्थं सुभज्झाणादिकिरियत्थं च मायण्णे असणपाणस्स, नाणु-
गिद्धे रसेसु अपडिण्णे गिहवासेवि ताव भगवं रसेसु अविम्हितो आसि, किमु पव्वज्जाए ?, रसा तित्तादि, अपडिण्णे ण तस्स
एवं पडिण्णा आसी जहा मते एवंविहा भिक्खा भोज्जा ण वा भोइयव्वा इति, तत्र अभिग्गहपइण्णा आसी जहा कुम्मासा मए

॥३०९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३१०॥

अपरि-
कर्मत्वादि

भोत्तव्वा इति, एवं ताव आहारं प्रति, रसपरिच्चागासितं तवो भणितो । इदाणिं कायकिलेसासितं वुच्चति, तंजहा—अच्छींपि, भगवतो अणिमिसगाणि चेव, नीलुप्पलपत्तसमाणाइं अच्छीणि आसि, बीयअंसुविरहिताणि, तं च 'पद्माक्षः क्षीरगौरः०'आहारियं तु, रेणु वा रयो वा तृणावयवो वा पाणजाती वा परियावज्जेज्जा तहा तं ण पमज्जति, न वा पादे धुवति, हत्थे परे लेवाडं भोत्तुं मणिबंधाओ जाव धोवति, न वा पिपीलियादीहिं खज्जमाणोवि कंडूइतवां, भणियं च–'आरुब्भ कायं विहरिंसु, सव्वं गायमविप्पमुक्के आसी' चरियाहिगारे एव अणुयत्तए, जतो सुत्तं–अप्पं तिरियं पेहाए (६२) अप्पमिति अभावे, ण गच्छंतो तिरियं पेहितं, ण वा पिट्ठतो, पच्छा वा अवलोगितं वा, किंतु 'पुरतो जुगमाताए,पेहमाणो महिं चरे'अयं तु आरिसो अत्थो-अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पमिति दूरा न, अतिदूरं निरिक्खमाणे आसण्णे वा दोसा, अतिआसण्णं ण पस्सति, तिरीयमवि पस्संतो तिरियं संपातिमे अक्कमति, ण एतं भगवतो भवति तहावि आयरियं धम्माणं सिस्साणमितिकाउं अप्पं तिरियं पेहाए, पट्ठतोवि नातिदूरं, नातिदूरं ठिच्चा पिट्ठतो पच्चवलोगितवां मंचादि, मा भू अभिघाताओ वते पीला, उव्वउत्तमणो वा मग्गतो हरितादीणि छिंदिज्ज, अप्पं बुतिए पडिनाणी कयो एहि ? जाहि वा ? कतो वा मग्गो ? एवं पुच्छितो अप्पं पडिभणति, अभावे दट्ठव्वो अप्पसद्दो, मोणेण अच्छति, पंथापेही चरे जतमाणो पंथं पेहति पंथापेही, चरे इति गच्छे, जयमाणे दट्ठूण तसे पाणे अभिक्कमे पडिक्कमे, जयं चरेति अतुरियं रियाए चरियादिणिविट्ठदिट्ठी, चरियाहिगारे एव वट्टति, जतो भवति–सिसिरंसि अद्धपडिवण्णे (६३) सिणातीति सिसिरं, सिसिरेवि सो भगवं अद्धाणपडिवन्ने, यदुक्तं भवति—पंथं गच्छति, तं दिव्वं वत्थं वायुउद्धूतं कंटगलग्गं वोसिरिज्जा, वोसिरितुं, ण तस्स वरं विज्जतीति अणगारो, पसारेतुं वा एक्कं बाहुं पसारिय, किमिति णाविलंबिताण

॥३१०॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-२३]

दीप
अनुक्रम
[२६५-
२८७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३११॥
८ अध्य०
२ उद्देशः

आवेश-
नादिशय्या

कंधंसि बाहूहिं परकमितवान् , ण कंधे अवलंबितवां, चरियाहिगारे पडिसमाणे णत्थि, इमं भवति—एस विही अणिक्वं-(णुक्कं)तो (६४) माहणेण मतीमता एस इति जो भणितो आ पव्वज्जाओ, विहाणं विही, अणु पच्छाभावे, जहा अण्णेहिं तित्थगरेहिं कतो तहा तेणावि अणुण्णातो अणुकंतो, माहणेण—मा हण इति माहणं, जं भणितं—सव्वसावज्जजोगपडिसेहो सव्वयणिज्जमेतं, समणोत्ति वा, मती जस्स अत्थि स भवति मतिमां तेण मतिमता, अपव्वतितेणावि सता बंधवज्जणेण सण्णिरुद्धेण जाव छउमत्थकालो बारसवरसितो अपडिण्णे रियती (वीरेण कासवेण महेसिणा) सरीरसकारं प्रति अपडिण्णेण, अहवा 'णो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिस्सामि' इति अपडिण्णो, वीरो भणितो, कासवगोत्तेण कासवेण महरिसिणा इति, पढिज्जइ य—बहुसो अपडिण्णेण भगवता रीतियंति बेमि बहुसो इति अणेगसो, अपडिण्णो भणितो, भगवता रीयमाणेण रीयत्ताए वा, बेमि जहा मए सुतं। उपधानश्रुतस्य प्रथम उद्देशकः समासः॥

चरियाणंतरं सेज्जा, तव्विभावगो अ दस्सते—चरितासणाइं सिज्जाओ एगतियाओ जाउ वुतिताओ। आइक्ख ताति सयणासणाइं जाइं जाइं सेवित्थ महावीरो (६५) एसा पुच्छा, आएसणसभापवासु पणियसालासु एगता वासो, णवि भगवतो आहारवत् सेज्जाभिग्गहा णियमा आसी, पडिमाभिग्गहकाले तु सिज्जाभिग्गहो आसी, जहा एगराईयाए बहिया गामादीणं ठिओ आसी, सुसाणे अन्नयरे वा ठाणे, अहाभावकमेण जत्थेव तत्थ चउत्थी पोरिसी ओगाढा भवति तत्थेव अणुन्नविता ठितवान् , तंजहा—आएसणसभापवासु, आगंतु विसंति जहियं आवेसणं, जं भणियं—गिहं लोगप्पसिद्धं, जहा कुंभारावेसणं लोहारावेसणं एवमादि, सभा ग्राम नगरादीणं मज्झे देसे कीरंति, गामे पउरसमागमा य भवंति, सेणिमादीणं तु पत्तेयं ॥३११॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

नवम-अध्ययने द्वितीय-उद्देशक: 'शय्या' आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[२८८-
३०३]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३१२॥

सभादि
स्थानादि

सभा भवंति, जत्थ रुद्दादिपडिमाओ ठविज्जंति, पिविस्संति पेहियादि सा पवा, तंजहा—उदगप्पवा गुलउदगप्पवा खंडप्पवा सक-रप्प वा एवमादि, पणियगिहं आवणो पणियसालत्ति, पढंति सालघराणं विसेसो, सकुड्डं घरं कुड्डरहिता साला, जं वा लोगसिद्धं णाम, जहा सकुड्डावि हत्थिसाला वुच्चति, एगता णाम कताइ, वास इति राईगहिता उडुबद्धे, वासासु **अदुवा पलियट्ठाणेसु पलालपंजेसु एगया वासो** अदुवेति अण्णतरे पलियं नाम कम्मं, यदुक्तं भवति—कम्मंतट्ठाणेसु, दब्भकम्मंतादिसु, अहवा पलि-गाति ठाणं, तंजहा—गोसाला, गोबद्धो वा करीसरहितो, ण अज्झावगासं, पलियं तु पलालं, पुंजो संघातो, पलालमंडवस्स हेट्ठासु सिरत्ताणे पलालपुंजेसु पविसति, एगता कयाइ, **आगंतारे आरामागारे** (६७) **गामरण्णेऽवि एगता वासे** गामस्स अंतो बहिं वा, आगंतु जत्थ आगारा चिट्ठंति तं आगंतारं, आरामे आगारं आरामागारं, गामेत्ति कताइ गामे कयाइ नगरे, अयं तु विसेसो-गामे एगरत्तं नगरे पंचरत्तं, एवं उडुबद्धे, वासासु नियमा चत्तारि मासे वासो, गामादीणं पुण कयाइं अंतो कयाइ बाहिं अब्भासे **सुसाणे सुन्नागारे वा रुक्खमूलेवि एगया** वासो सवसयणं सुसाणं सुसाणब्भासे, सुन्नं अगारं सुन्नागारं, रुक्खे वा—मूले वा खंधस्स अणब्भासे, जत्थ पुप्फफलाई ण पडंति, एगतत्ति उडुबद्धे, न तु वस्सासु, सुसाणरुक्खस्स तले वा वसति, सुन्नागारं वा जं न गलति, **एतेसु मुणि सयणेसु** (६८) एतेसुत्ति जाणि एताणि उद्दिट्ठाणि, अन्नाणि य एवंविहाइं सेलगिहादीणि, मुणेतीति मुणी, सुप्पति जत्थ णं सयणं, समणेत्ति स एव वद्धमाणसामी, अहवा तेसु पवातनिवातसमविसमेसु सोवसग्गनिरुवसग्गेसु वसतिसु समण एव आसी अतो समणे, जहा दुक्खसिज्जा आसी तहा तहा भिसतरं समण आसी, वरिसं पगतं पत्थियं वा, तेरसमं वरिसं जेसिं वरिसाणं ताणिमाणि पतेरसवरिसाणि छउमत्थकाले, **राइंदियंपि जयमाणे** जहा रत्तिं तहा दिवा, उभयग्गहणमवि सामत्थं

॥३१२॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[२८८-
३०३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३१३॥

निद्रावर्जनादि

ण तु जहा अण्णे थाणमोणादीएहिं जइत्ता रत्तिं सारक्खणत्थं णिद्दं भजंति, सो तु भगवं जहा दिवा तहा रत्तिंपि जयमाणेसि मणोवाकाएहिं एगग्गो अप्पमत्त इति जितिंदियो कसायरहितो, कहं ?, मम एते पमादा ण भविज्ज, ठाणाइएसु अप्पमत्ते ज्झाणे य, सम्मं आहितो समाहितो धम्मे सुक्के ज्झायति भगवं, सव्वपमादाणं णिद्दप्पमातो गुरुगातो सोवि जितो, जो य दुज्जयं तं णिद्दप्पमादं परिहरिततो सो कहं इंदियादिपमादं काहिति ?, जत्थ भण्णति–णिद्दंपि णो (६९) पमादे, मिसं कामो पगामे, तं निद्दं सो ण पगामं सेवितवां सेवइ वा भगवं, स एव उवट्ठाणंति अणिव्वजागरियत्तं संजमे समुट्ठाणं वा तेणं वा तेण उट्ठितो, भदन्तनागार्जुनीया तु–णिद्दावि णप्पगामा आसी तहेव उट्ठाए जतिआसि, तक्खणादेव उट्ठियं वा, जग्गवती अप्पाणं पायसो छउमत्थकाले जग्गवइ भगवां अप्पाणं ज्झाणेण पमादाओ, सरीरसंधारणत्थं वा चिरं जग्गित्ता ईसिं सम(इ)तासि इत्तरकालं णिमेसउम्मेसमेत्तं लवमित्तं वा ईसं सइतवां आसी जहा अट्ठीयग्गामे, निद्दासुहं प्रति अपडिण्णे, यदुक्तं भवति–अणभिलासी, सव्वं किर छउमत्थकालं निद्दापमादो अंतोमुहुत्तं आसी, सो एवं भट्टारओ निद्दापमादा अणंतरं संजममाणे (७०) पुणरवि सयं संमं वा बुज्झमाणो, ण परेहिं विबोधिज्जमाणे, बुज्झमाणो एव वुट्ठो, ण पडिसेहो, तेण य ज्झायंति, ण णिद्दापमादं चिरं करेति, सो एवं ज्झाणेण निद्दं जिणिज्जमाणो जति कदाइ निद्दाए अभिभूयति ततो निक्खम्म एगता रातो बहिं चंकमिया मुहुत्तागं णिच्छितं कम्म णिकम्म उवस्सगाओ निक्खंमिओ, एगयादि गिम्हे अतिणिद्दा भवति हेमंते वा जिघांसुरादिसु, ततो पुव्वरत्ते अवरत्ते वा पुव्वपडिलेहियउवासयगतो, तत्थ णिद्दाविमोयणहेतु मुहुत्तागं चंकमिओ, णिद्दं पविणेत्ता पुणो अंतो पविस्स पडिमागतो ज्झाइयवान्, जेसु गुत्तागुत्तेसु व समणस्स, सयणेसु तत्थुवसग्गा (७१) सुप्पति तत्थ तं सयणं, तस्सेति तस्स छउमत्थकाले ॥३१३॥

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-१६]

दीप अनुक्रम [२८८-३०३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३१४॥

अरुहतो, उवसग्गा दिव्वादि भयंकरा भीमा संगमादिपउत्ता, ण एगं तेसिं रूवमिति अणेगरूवा, एक्केका चउव्विहा, अहवा अणुलोमा पडिलोमा य, किंच–उवसग्गाहिगारे एव तिरिक्खजोणियमणुस्सउवसग्गदरिसणत्थं वुच्चति–संसप्पगा य जे पाणा संसप्पंतीति संसप्पगा–अहिनउलसाणमज्जारपिपीलियादि खायंति केइ भूमिगता केई कायगता अहवा पक्खिणो उवचरंति पक्खा तेसिं संतीति पक्खिणो, ते तु दंसमसगमक्खियादि, तेवि एगतावि उवचरिंसु, एगता दिवसउ रत्तिं वा, सोणीयादीहिं भिज्जमाणोवि ण अवज्झाणं गतवान्, भिसतरं ज्झाणाइगतचेता आसी, अह मणुस्सगा अदु कुयरा उवचरिंसु अदु इति अणंतरे, कुत्थियं चरंतीति कुत्थियचारी, तंजहा–चोरा पारदारिया य, गामं रक्खंतीति गामरक्खगा, हिंडिता चोरगाहा ते सत्तिकुंतहत्थगता तं उवचरंति, चोरपारदारिया पुरिसत्ति अभिद्दवंति आहणंति, तंपि खयं लक्कुं चेव पउणाति, गूढपहारोवि णिगिद्धं बंधति, उवसग्गाहिगार एव तेण वुच्चति अदु गामिता उवसग्गा इत्थी एगइया पुरिसा य, गामा जाता गामिता, गामो नाम खलजणो, मणोवाक्कायिए तिविहेवि उवसग्गे, वतिमणसा अंतो, तस्स तं रूवं दट्टुं जहा जातं, पदोसारुहहणणेण जणो भयं करेति, अप्पसत्था णं वायाए अक्कोसंति, काएणं तालंति, इच्चेते तिविहेवि गामिते उवसग्गे सहितातिया, अहवा गामधम्मसमुत्था गामिता, ता तु इत्थी एगतरा पुरिसा य, इत्थीओ तं रूवमंतं रत्तिं आगंतुं उवसग्गंति, णपुंसगा य, कम्मोदया अभिद्रवंति, मणसावि भगवंतो ण पकुज्झवंति, अहवा एस अम्हं तणियाओ इत्थीओ पत्थेमाणो अम्हं अब्भासे वा समुवागतोत्ति पुरिसा तं चाहणंति णिच्छुभंति पिट्टंति वा, ते एते सव्वेहिंवि उवसग्गा तिविहा, तंजहा–इहलोइया परलोइया उभयलोइया य, ते य सव्वे सहियव्वा, अतो भणिज्जति–इहलोइयाइं परलोइयाइं (७२) तत्थ इहलोइयाइं माणुस्सग्गा, पारलोइया सेसा, अहवा इहलोइया इहलोगदुक्ख-

मनुष्याद्युपसर्गादि

॥३१४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[२८८-
३०३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३१५॥

लेहलौकिकोपसर्गादि

उप्पायगा पहारअक्कोसदंसमसगादिया, यदुक्तं भवति–पडिलोमा, परलोइया परलोकदुक्खुप्पायगा, यदुक्तं भवति–अणुलोमा, केइ उभयलोइया, तंजहा–अस्सगतो पुरिसो अतिणेंति, तहा अणुलोमे परलोमे य करेंति जहा अभयसुदरिसणस्स, भीमाइं अणेगरूवाइं भीमा पुव्वभणिया, अणेगरूवाइ य भणिया, उवसग्गाहिगारे एव अणुलोमा पडिलोमा य, जेण वुच्चति–अवि सुब्भिदुब्भिगंधाइं अवि पदार्थसंभावणे, सुरभिग्गहणा अणुलोमग्गहणं, दुब्भिगहणा पडिलोमा, पडिगहणा अणुपडिलोमग्गहणं सुरभिगंधपुप्फमल्ल देवा पूएंता, मणुस्सा य तेहिं सुरभिएहिं, दुरभिगंधेहि पाणभोयणेहिं, चमरादिअस्सिता, दुरभिगंधा मासा णेया, पडिमाए ठियस्स अस्सादा गंधा आसी, जत्थ गंधो तत्थ रसोवि, जहा गंधाइं तहा सद्दाइंपि अणेगरूवाइंपि, अणेगरूवाइंपि अणुलोमपडिलोमाइं, अणुलोमा थुइवंदणापूयाअच्चणाइं, णिब्भत्थणाति पडिलोमा, अहियासए सया समाहिए (७४) फासाइंपि विरूवरूवाइं अहियासितवां, अहियासए सयतं–णिच्चं, जहा एगदिवसं तहा अद्धतेरसवासे पक्खाधिते णाणादिएहिं, पढिज्जइ य–समिते सम्मं इतो समितो वासीचंदणकप्पो समभावे ठितो, जह गंधरससद्दाइं तहा फासाइंपि, विरूवरूवाइंपि सुहासुहफासाइं अवुत्तमवि णच्चति, एवं रूवाणिवि, अहवा अणेगरूवाइंति रूवग्गहणमेव कयं भवति, पढिज्जइ य–अहियासए समाहिते इति मंता भगवं अणगारे इति पदरिसणे, तंजहा–ते चेव सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दयाए परिणमंति, अहवा इमं मंता–कम्मनिज्जरा भवति अहियासेंतस्स, इहरहा कम्मबंधो, ण तस्स अगारं विज्जतीति अणगारो, किंच–सव्वेहिं विसएहिं अणुलोमपडिलोमेहिं अरती समुप्पज्जति, संजमरती ण भवति, अरतिं रतिं च अभिभूता जा संजमे अरती उप्पज्जति पडिलोमेहिं उवसग्गेहिं, विणा वा उवसग्गेहिं, असंजमे वा रती सद्दातिविसए पप्प पुव्वरतअणुस्सरणाओ वा, ते अभिभूत सज्झाणेणेव रीयति माहणेत्ति ॥३१५॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[२८८-
३०३]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णि:
॥३१६॥

मौनादि

बहुचायी रीयति गामाणुगामं, माहणो पुव्ववण्णितो, न तस्स बहुवयो, यदुक्तं भवति-मोणेण, अहवा जायणिं अणुण्णवणिं च मोतुं पुट्ठस्स वागरणं च, जहा सादिदत्तआतपुच्छा, सेसं मोणं, किंच-स एवं गुत्तो सुसयणेहिं तत्थ पुच्छिसु (७५) एगचराबि एगदा राओ एगा चरंति एगचरा उब्भामिया, उब्भामगपुच्छत्ति, एत्थ को आगओ आसी मणुस्सो पुरिसो वा? इत्थि पुच्छति, अहवा दोन्नि णं, जणाइआगमं पुच्छंति—अत्थि एत्थ कोयी देवज्जओ कप्पडिओ वा ?, तुसिणीओ अच्छइ, दट्ठुं वा भणंति-को तुमं ?, तत्थवि मोणं अच्छति, ण तेसिं उब्भामइल्लाण वायंपि देति, पच्छा ते अचाहिते कम्मइ, एत्थ पुच्छिज्जंतोवि वायं ण देइत्तिकाऊणं रुस्संति पिट्टंति य, उब्भामिया य उब्भामगं सो ण साहतित्तिकाउं, किं आगतो आसि? णागतोत्ति, अव्वाहिते कसाइय भण्णाति-अक्खाहि धम्मे, अहवा हंसपरिण्णो विसयसमासनिरोही णिव्वणसुहसमाणेहिं वा पेहमाणो विसयसंगदोसे अ पेहमाणो, इह परत्थ य अपडिन्ने, तंजहा-णो इहलोगट्ठयाए तवं अणुचिट्ठिस्सामि, विसयसुहेसु य अपडिन्नो, सव्वप्पमादेसु वा, एगतरपुच्छा गता, सुत्ता रागादिसु, इदाणिं केइ भणंति-प्रभू, पच्छा जेण से दिट्ठओ पविसंतो, पुत्ते वा मातरि वा, जेण भण्णाति-अयमंतरंसि को एत्थं के भणंति ?, ते चेव एगचरा आगंतुं दट्ठूणं भणंति-अयमंतरंसि, अयं अस्मिन् अंतरे अम्हसंतगे को एत्थं ?, एवं वुत्तेहिं अहं भिक्खुत्ति एवं वुत्तेवि रुस्सति, केण तव दिन्नं? किं वा तुमं अम्हं विहारट्ठाणे चिट्ठसि ? अक्कोसेहिंति वा, कम्मारगस्स वा ठाओ सामिएण दिन्नो होज्जा, पच्छा रन्नो भण्णति-को एस ?, सामी ट्ठितो, तुसिणीओ चिट्ठति, तत्थ गिहत्थे ममत्तं, कसाइते संका य, ते सकसाइते णातुं ज्झातिमेव ण भवति, पढमं दाऊणं एत्ताहे रुस्सह, असंकिते चेव ज्झाति, जंसि एगे पवेदेंति सिसिरे मारुते पवायंते जइ गिम्हकाले एते अन्नतित्थिया गिहत्था वा णिवेदेंति, सिसिरं सिसिरे वा

॥३१६॥

आगम (०१)	**“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्तिः+चूर्णिः)** श्रुतस्कंध [१], अध्ययन [९], उद्देशक [२], निर्युक्तिः [२८४...], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक २२६/गाथा: १-१६]
प्रत वृत्यंक [२२६- गाथा १-१६] दीप अनुक्रम [२८८- ३०३]	(see text below)

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३१७॥
८ उप०
२ उद्देशः

निवाताद्य-
भावः

मासाओ, पत्रायति भिसं वायति, तंपि एगा अण्णतित्थिया वसहीओ निवाता करेंति, पाउरणाइं फुंफगाइं, उप्फं आहारयं, चुण्णं एत्थं भुंजंति, जतिवि कुंचियाविज्झे(छिद्दे)ण सीतं एति तेणेति भणति—दुक्खाविओ, जेवि पासावच्चिज्जा तेवि ण संजमे रमंति, संघाडीओ (७८) वत्थाणि कंबलगादि पहिरिस्सामो पाउणिस्सामो, समिहातो कट्ठाइं, ताइं समाडहमाणा गिहत्थअण्णउत्थिया, एवं सीतपडिगारं करेमाणो तहावि दुक्खं सीतं अहियासेइ, पिहिता पाउया वा पस्सामो अतिव दुक्खं हिममयं पएसं (७९) तहिं काले भावेंति अपडिण्णे वसहिं पडुच्च ण मए णिवाता वसही पत्थेयव्वा, अहिगदाएवि अहियासेति, दव्वितते पुव्वभणिते, अह अचत्थं सीतं ताहे णिक्खंम एगता राओ वसहीओ रातो—राईए मुहुत्तं अच्छित्ता पुणो पविसति रास भदिट्ठंतेणं, पुणो य वसतिं च एति, स हि भगवं समियाए सम्ममणगारे, न भयट्ठाए वा सहति, एस विही अणुक्कंतो (८०) स इति जो भणितो, विहाणं विही, अणु पच्छाभावे, जहा अन्नतित्थगरेहिं कंतो तेणावि अणुकंतो, पूर्ववत् एतस्स सिलोगस्स वक्खाणं कायव्वं, पढमुद्देसए इति ॥

उपधानश्रुतस्य द्वितीय उद्देशकः परिसमाप्तः ॥

उद्देसाभिसंबंधो भणितो, चरिता पढमुद्देसए, अज्झयणे तस्स तया, बितिए सेज्जाविहाणं भण्णति, णिसीहियाहिगारो संपयं, सो जहा सामायियणिज्जुत्तीए भगवं अच्छारियदृष्टान्तं मणसा परिकप्पेऊणं लाढाविसयं पविट्ठो, एत्थेव निसीहियापरीसहो अधिकतो, तत्थ निसीयणं णिसिज्जा, यदुक्तं भवति—निसीहियासु वसतो उवसग्गा आसी, तंजहा—तणफासं सीयफासं तेउ-फासे य दंसमसए य (८१) तरतीति तरणं, तत्थ पहुंजयमादी तणा लगंडसीतफासेण ठितं विंधति, णिसन्नं वा कडगकिसा-सरदब्भादि, सीतं पुण पव्वयाइन्नदेसे अतीव पडति, तेउत्ति उण्हंति, आतावणभूमी जं च हालदामाए अग्गिमेव आसी, उल्लु- ॥३१७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

नवम-अध्ययने तृतीय-उद्देशकः परीषह' आरब्धः,

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-१४]

दीप अनुक्रम [३०४-३१७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३१८॥

दंशाद्यध्यासनं

एण वा कोइ, दंसमसगा य जलोयाओ एवमादि उवसग्गे अहियासए, सया समिते सया नाम निच्चकालं, फुसंतीति फासा विरूवरूवाइंति एयाणि य अन्नाणि य अणुलोमाणि पडिलोमाणि य, अवि दुच्चरलाढमचारी (८२) अवि इति अणंतरे, उवसग्गबहुत्ता दुकरं चरिज्जतीति दुच्चरं, लाढ इति जाणवतो, सो दुविहो—वज्जा भोम्मा य, सो तेसु भगवं तत्र तेसु पन्तं सेज्जं सेवित्था, आसणाइंपि चेव पंताणि, पंताओ णाम सुन्नागारादीओ, सडियपडियभग्गलग्गाओ, आसणाणि पंताणि पंसुकरीससक्करालीट्ठुगादीउवचिन्नाणि, कट्ठासणा वा णिवलाणि फलहपट्टयादीहिं, एरिसेसु सयणआसणेसु वसमाणस्स लाढेसु (८३) ते उवसग्गा बहवे जाणवता आगंम लाढा, त एव दुविहा वज्जं सुज्झ० उवसग्गा बहवे पडिलोमा य अक्कोसवहादि, जाणवता उवसग्गा जणवते भवा जाणपदा, यदुक्तं भवति—अणगरजणवओ पायं सो विसओ, ण तत्थ नगरादीणि संति, लूसगेहिं सो कट्ठमुट्ठिप्पहारादीएहिं अणेगेहिं य लूसंति, एगे आहु—दंतेहिं खायंतेत्ति, किंच—अहा लूहदेसिए भत्ते, तद्देसे पाएण रुक्खाहारा तैलघृतविवर्जिता रूक्षा, भक्तदेस इति वत्तव्वे बंधाणुलोमओ उवक्कमकरणं, णेह गोत्रांगरससीरहिणि, रूक्षं गोत्रालहलवाहादीणं सीतकूरो, आमंतेऊणं अंबिलेण अलोणेण एए दिज्जंति मज्झण्हे लुक्खएहिं, माससहाएहिं तं पिणाति प्रकामं, ण तत्थ तिला संति, ण गावीतो बहुगीतो, कप्पासो वा, तणपाउरणातो ते, परुक्खाहारत्ता अतीव कोहणा, रुस्सिता अक्कोसादी य उवसग्गे करेंति, कुक्कुरा तत्थ हिंसिसु णिवतिंसु तत्थ बहवे कुकुरादी हिंसंतीति हिसिंसु णिवतिंति सव्वओ तं निविसयंति, भट्टारगस्स य नत्थि दंडउत्ति जेण ते पुण पवारेहिति, ते एवं णिब्भया सुक्खिया णिवतंता अपि अण्णे निवारेंति (८४) जति सहसा सो कोति एगो निवारेति लूसणगा, जं भणितं होंति—भक्खणगा, भसंतीति भसमाणा, जेवि नाम ण क्खायंति तेवि ते छुच्छुकारेंति आहंसु आहंसुत्ति ॥३१८॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१४]

दीप
अनुक्रम
[३०४-
३१७]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३१९॥

परुषादि-
सहनं

आहणेत्ता केति चोरं चारियंति च मण्णमाणा, केई पदेसणेण, एवं तत्थ छम्मासे अच्छितो भगवं, एलिक्खए जणे भुज्जो (८५)
एलिक्खएत्ति एरिसए, भुज्जोत्ति पुणो, ताइं चेव भूय ठाणाणि विहरयं तो बहवे वज्झभूमि फरुसासि बहवेत्ति पायसो ते फरुसा
फरुसं आसंति फरुसासिणो, फरुसासित्तातो य फरुसा एव, फरुसा वा आसी अतिकंतकाले, लट्ठीं गहाय नालीयं दंडं लट्ठिं च
गहाय, दंडो सरीरप्पमाणा ऊणो लट्ठी सरीरप्पमाणा, दूरतर एत्रायरति, नालिया चउरंगुलअतिरित्ता, एगे चउरंगुलादि, विहरियं
तो बहवे वज्झसुब्भे भिक्खं हिंडिंसु, ते एवं लट्ठिहत्था एगावि एवंपि तत्थ विहरंतो (८६) पुट्ठपुव्वा य अहेसि सुणतेहिं,
एवमवधारणे, एवमवियप्पं तेण विहरंता पुट्ठपुव्वा भक्खितपुव्वा बहवे समणमाहणा संलुंचमाणा सुणएहिं सव्वे लुंचंति, संलु-
चमाणेसु देसेसु संलुंचमाणसुणगा, दुक्खं चरिज्जंति दुच्चरगाणि कामादीणि वक्कसेसं, निधाय डंडं पाणेहिं (८७) णिधायेति
णिक्खिप्प, डंडं ण भणति सुणए वारेहि, उवाएण डवति, मणसावि ते णावकंखंति, सो एवं विहरमाणो अवि गामकंटए भगवं
गामकंटगा सोतादिइंदियगामकंटगा, जं भणितं होति–चउव्विहा उवसग्गा, लाढेसु पुण माणुसतिरिच्छिएसु अहिगारो, तेरिच्छगा
सुणगादयो, माणुस्सगावि ते अणारिया पायं आहणंति, अभिसमेच्चत्ति तं लाढविसयं, यदुक्तं भवति–प्राप्य, अहवा ते चेव उव-
सग्गे प्राप्य, कहं सहियव्वा ?, णाओ संगामसीसे वा (८८) ण तस्स किंचिवि अग्गमिति णागो, संगामसीसं, जं भणितं
होति–अग्गाणीयं, सो हि अग्गतो ठितो दूरत्थेहिं चेव उसुमादीहिं विज्झति, समीवत्थेहि य असिमादीहि य, सो य कृतयोगत्ता
तह हण्णमाणोऽवि ण सीतति, पारमेव गच्छति, पारं नाम परेसिं जतो, एवं भगवयाऽवि परीसहसत्तू पराजिता, एवंपि तत्थ
विहरंतो एवं अवधारणे वोसट्ठं काउं विहरंतओ, यदुक्तं भवति–अणवरज्झमाणो, एगया कदायि, गामि पविट्ठेण णिवासो ण लद्ध-

॥३१९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-१४]

दीप अनुक्रम [३०४-३१७]

श्रीआचा-रांग सूत्र-चूर्णिः ॥३२०॥

वसत्य-लाभादि

पुव्वो, जेण उवस्सतो ण लद्धो तेण गामो ण लद्धो चेव भवति, कत्थति पुण उवसंकमंति पतिण्णं भिक्खट्ठाए वसहीणिमित्तं वा उवसंकमंतं (८९) जं भणेज्ज—गाममभिगच्छंतंति, अपडिण्णो णाम पए पए परीसहउवसग्गाणं उदिण्णाणं ण पडिकिरिया कायव्वा, कारणेण गाममणियंतियं गामब्भासंते लाढा पडिनिक्खमेत्तु लूसेंति, णग्गा तुमं किं अम्हं गामं पविससि ?, लूसिंतित्ति पिट्टेंति, एत्तो परं पलेहेति—एत्तो चेव परेण लेहेन्ति, भसणस्स च्छज्झाहित्ति पात्रं निकटंते, जं लाढा तारिसेण रूवेण तज्जंति, बुवंति ते तुच्चिरु विघायण, तारिसे रूवे रज्जंति, सरिसासरिसु रमंति, तत्थ अन्नत्थ चाहियपुव्वो, तत्थ दंडेण अदुवा अट्ठिणा अदु कुंतफलेणं (९०) दंडो मुट्ठी कट्ठं, फलमिति चवेडा, अध लेलुणा लेलू नाम लेट्ठुगो, कवालं णाम कप्परं, उट्टिकवालं वा, हंत हंतत्ति हणेत्ता अण्णित्ता वड्डंते, अन्ने कंदंति. जं भणितं—चाहरंति, अन्नेहिं पुण मंसाणि छिन्नपुव्वाणि (९१) केयि थूभातेणं उट्ठुभंति थुक्करिंति य, परीसहाणि लुंचिंसु अदुवा पंसुणा अवकिरिंसु पंसुणाइ कयाइ व करेंसु, धूलिए वा छारेण वा भरेंति, तहावि भगवंतो अच्छीवि ण णिमच्छिति, एगे तु उच्चालइत्ता णिहणिंसु (९२) केइ आसणातो खलयंति आयावणभूमीतो वा, जत्थ वा अन्नत्थ ठिओ णिसण्णो वा, केति पुण एवं वेवमाणो हणेत्ता आसणातो वा खलित्ता पच्छा पाएसु पडितुं खमिन्ति, केरिसो य भगवं, वोसट्ठकाए पणतासी उवसग्गेहिं अहियासे पणतो आसी, दुक्खाणि सारीराणि सीतउसिणमादीणि ताणि सहति, अपडिण्णो वुत्तो, सूरो संगामसीसे वा (९३) संगामअग्गं परेहिं संमादीएहिं विज्झमाणोवि ण णियत्तति एवं सो भगवं, रागं दोसं वा ण करेति, एवंपि बहूहिं उवसग्गेहिं कीरमाणेहिं तत्थ लाढेसु य तवे उवसग्गे वा सहमाणो रागदोसरहिते तेरसमे वरिसे पतेलिसे, पति पति सेवमाणो, जं भणितं भवति—सहमाणो, फरुसाइं—कक्कसाइं ओरालाइं अचलत्ति परीसहो-

॥३२०॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[३०४-
३१७]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३२१॥ ९ उप० ४ उद्देशः

दएवि ज्झाणाओ ण चलति, रीयं–चज्जामिति। एस विही अणोक्कंतो माहणेण मतीमता (९४) इति तृतीयः॥

उद्देसाभिसंबंधो सेज्जासु एमणादीसु य निसीहियाठाणेसु केइ तस्स रोगा उप्पन्नपुव्वा, तेसिं वा उदिन्नाणं अणुदिन्नाणं काति चिगिच्छा न कयपुव्वा, भणंति ण च तस्स रोगा उप्पज्जंति, जति णाम उप्पज्जेज्ज तोवि ण करेति किरियं, जारिसा पुण अट्ठविहकम्मरोगतिगिच्छा तेण कया भगवता सा तिहिं उद्देसएहिं भणिया, इहंपि चउत्थउद्देसए तवसंजमतिगिच्छा, अखिलेसु उद्देसएसु अवि सीतदंसमसगअक्कोसतालनादि, सक्कं परीसहा सोढुं, दुक्खं तु ओमोदरिया, कहमिति ?, अतो ओमोदरियं चाएति (९५) सा य दुविहा–दव्वे भावे य, दव्वे ताव उवगरणं प्रति ओमोदरियं अचेलता, आहारेवि अप्पाहारे आसी, ण अतिपमाणभोई 'बत्तीसं किर कवला' एत्तो एक्केणवि घासेणं ऊणगं, भावे परिताविज्जमाणोवि ण रुस्सति, भणियं च–णो सुकरणं मोनमेगेसिं, चाएतित्ति अहियासेति, इह पायसो दव्वओमोदरिया, जेण वुच्चति—अपुट्ठेऽवि भगवं रोगेहिं वातातिएहिं रोगेहिं अपुट्ठोवि ओमोदरियं कृतवान्, लोगो तु जतो पुट्ठो रोगेहिं भवति ततो पडिकारणनिमित्तं ओमं करेति, भगवं पुण अपुट्ठो वातादीएहिं ओमोदरियं चाएति, सुभुजंगं वा जहा आहारेति, आह–किमितमेगंतो रोगेहिं ण सो फुसिज्जति ?, भण्णति–धातुक्खोभितेहिं ण फुसिज्जति, जइ कोवा कडं सलागं पवेसए तहा, तह(हत)पुव्वो दंडेणं, अतो वुच्चति–पुट्ठे व से अपुट्ठे वा पुट्ठे वा, पुट्ठे तेहिं आगंतुएहिं णो सतं स करेति, जोवि अण्णो करेति तंपि ण च करेतुत्ति साइज्जइ, अतो णीणिज्जंति, एवं ताए कडगसलागाए मणसावि भगवता ण सातिज्जिता, सा पुण तिगिच्छा तंजहा–संसोधणं च वमणं च (९६) संसोधणं विरेयणं, वमणं वमणमेव, गायब्भंगणं मक्खणं, सिणाणं देसे ताव हत्थपायधोवणं, दगपडिगतो वा किंचि सिंचति, सव्वे सव्वगायअभिसेयणं, आता-

चिकित्सा-वर्जनादि

॥३२१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

नवम-अध्ययने चतुर्थ-उद्देशक: ‘आतंकित’ आरब्ध:,

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[३१८-
३३४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३२२॥

संवाहनादि वर्जनं

वणपरिस्संतो सोवि संबाधणं ण सेविज्ञा, ण च सतं संबाहेति, ण च अण्णेण संबाधावेति, एवं दंतवणंपि दंतवणेण अंगुलिए वा उदएण वा परिण्णाय जाणित्तु ण करेति। एवं ताव सरीरतिगिच्छं ण करेति सउ गायपरक्कमविमुक्को, मोहतिगिच्छावि विरते गामधम्मेसु (९७) गामा इंदियगामा, धम्मा सद्दाति, एहिंतो विरतो रीयति माहणे अबहुवाई रियति, माहणो पुव्वभणितो, अबहुवायमाणो ण बहुवाई, सिसिरंमि एगता भगवं सीतकाले एगता कदावि छायाए झाति आसीत छायाए ण आतवं गच्छति, तत्थेव ज्झातियासित्ति, अतिकंतकाले हेमंते अतिक्कंते आयावयंति गिम्हासु (९८) उकुडुयासणेण अभिमुहवाते उण्हे रुक्खे य वायंते, एवं ताव कायकिलेसो, रसचागो तु अदु जाव एत्थ लूहेणं अदु इति अहिजावइतवां जीवितं अद्धाणं वा, अप्पाणं वा जावइतवान्, भावलूहे अरागत्तं, दव्वरुक्खं ओदणं विरहितं, मंथु इति मंथुसत्तुया णग्गोहमंथुमादी वा भुज्जितएहिं तएहिं, कुम्मासा कुम्मासा एव, सव्वत्थ रुक्खसद्दो अणुयत्तति–एयाइं तिण्णि पडिसेवे(९९)अट्ठ मासे य जावते भगवं एतेहिं ओदणमंथुकुम्मासेहिं, अट्ठमासेत्ति उडुबद्धिते अट्ठ मासे, वासासु णवरि आदिल्लेसु तिसु, गुत्तीसु, अद्धमासं मासं दोमासं च कितकं, वासारत्ते णेव चेव भुत्तो अपिंयत्थ एगता भगवं जो पाणगं ण पियति सो पादेण आहारं ण आहारेति, एवं च सव्वं च तवोकम्मं अप्पाणगं, अवि साधिते दुवे मासे(१००)जाव छम्मासे रीयितवान् रीयित्था, एवं परिग्गहित उराल तवोकम्मं रातोवरातं अपडिण्णे पुव्वरत्ते अवरत्ते य, दो पढमजामा पुव्वरत्तं, पच्छिमरत्तं पच्छिमा दो, तेसु जग्गति, अहवा रत्ति उवरत्ति रातोवरात्तं–राती जाव सा उवरता, अपडिण्णो भणति अण्णगिलाए एगता भुंजे (१०१) अहवा अट्ठमेण दसमेण दुवालसेण एगता भुंजे एतं कंठचं, पेहमाणे समाही अपडिण्णे समाधिमिति तवसमाधी णेव्वाणं समाही तं

॥३२२॥

प्रत वृत्यंक [२२६-गाथा १-१६]

दीप अनुक्रम [३१८-३३४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३२३॥

आधाकर्मवर्जनादि

पेहमाणे, यदुक्तं पस्समाणो, आहारं पडुच अपडिण्णो, णच्चा णं स महावीरे (१०२) णोवि य पावगं सयमकासी अकप्पियस्स आहारस्स दोसं णचा, 'आहाकम्मं णं भंते! भुंजमाणो किं बंधेति?, गोयमा! अट्ठ कम्म०'सतं पावमकासी–ण कारितवान् अण्णेहिं केण कारित्था? कीरमाणंपि नाणुमोतित्था कंठं, गामं पविस्स नगरं वा घासमेत्तं कडं परट्ठाए घासं–आहारं 'अद् भक्खणे' परट्ठाएत्ति अण्णेसिं अट्ठाए सुविसुद्धं एसिया भगवं आयतजोगजाए गवेसित्था सव्वउग्गमादिदोससुद्धं आयतेण जोगेण–तिविहेणावि सुयनाणगवेसणाए सेसेहि य केवलवज्जेहिं नाणेहिं, अदु वायसा दिगिंछित्ता (१०४) जे अण्णे रसेसिणो सत्ता घासेसणाए चिट्ठंते संथरे णिवतिते य पेहाए अह इति अणंतरे, दिगिंछा छुहा, ताए अंता तिसिया वा जे अण्णे रसेसिणो काया पारेवयचिड्डियादि, घासं एसंतीति घासेसणा ताए चिट्ठंति–संचिट्ठं सततं संणिवेंतया, ते मा उट्ठेहिंति ततो परिहरति, एवं गोणादिएवि, घरं घरेण हिंडंति, तेसिं चारी दिज्जति कूरो य, एवं ताव तिरिक्खजोणिए परिहरति घासेसणाए उट्ठितो, इदाणिं मणुस्से अह माहणं च समणं वा (१०५) गामपिंडोलगं च अतिहिं वा माहणा मरुयादि, समणे पंच, पिंडेसु दिज्जमाणेसु उल्लंतीति पिंडोलगा, जं भणितं–दमगा, गंडगा वा, केति भणंति–अतिहिं आगंतुया, सोवागमूसियारिं वा कुक्कुडं चिट्ठितं पुरतो सोवागो साणं पचंतीति सोवागा–डोंबादि, मूसगारी मज्जारो, कुक्कुडं वा, उवट्ठितो पुरतो, साणं वा विगप्पन्नतरं तेसिं विर्त्ति अछेदेज्जंतो (१०६) तेसिमप्पत्तियं परिहरंतो, वित्तिच्छेतो जं तेसिं दायव्वं तं मा मम देहित्ति, तत्थागच्छता वित्तिच्छेदो परिहरितो भवति, अप्पत्तियं भवति जायंतस्स वा देंतस्स वा, मंदपरक्कमे भगवं अविहिंसमाणो घासमेसित्था मंदं णाम अतुरियं घासं एसितवान्, जता पारेति तया तं जहावलद्धं भुंजेति ॥३२३॥

प्रत
वृत्यंक
[२२६-
गाथा
१-१६]

दीप
अनुक्रम
[३१८-
३३४]

अवि सूचितं च सुक्कं वा सीयपिंडं पुराणकुंमासं (१०७) सूचितं णाम कुसणितं, असूचितं सुक्कंति, पिंडो नाम सीत-
कूरो, पुराणकुम्मासोवि पज्जुसियकुम्मासो, अदु बुक्कसं पुलागं वा लद्धे पिंडे अलद्धे दविए पदे चैतो एकारो, पुराण
धण्णंकुर पुराणतणुसत्तुगा वा फरुसा वा, पुराणगोधूममंडगो वा, पुलागं णाम वत्रयत्रो णिप्फावादि, लद्धेपि पज्जत्ते दवितो-ण
रागं गच्छति, जहा अज्ज मते पज्जत्तं लद्धं, अलद्धेवि ण दोसं दायगाणं करेति, एवं मणुण्णामणुण्णेवि अभिग्गहपाउग्गे वा इच्चेवं
सरसं विरसं अप्पज्जत्तं पज्जत्तं वा भुंजिऊण पसत्थो उवस्सगं आगंम अवि ज्झाति से महावीरे (१०८) आसणे अकुकुते
ज्झाणं ज्झाइति धम्मं सुक्कं वा, आसणं उक्कुडुओ वा वीरासणेणं वा, अकुकुओ णाम निच्चलो, दव्वतो सरीरेण निच्चलो भावओ
अकुकुओ पसत्थज्झाणो वगतो झियाति, किं झियाति? उड्ढं अहेयं तिरियं च सव्वलोए झायति समितं, उड्ढलोए जे भावा एवं
अहेवि तिरिएवि, जेहिं वा कम्मादाणेहि उड्ढं गंमति एवं अहे तिरियं च, अहे संसारं संसारहेउं च कम्मविपागं च ज्झायति, एवं
मोक्खं मोक्खहेऊ मोक्खसुहं च ज्झायति, पेच्छमाणो आयसमाहिं परसमाहिं च अहवा नाणादिसमाहिं, अपडिण्णो भणितो,
अकसायी विगतगेहिय (१०९) अकसायवां, अकसायत्तमवि गतगेहियस्स भवति-विगतगेही, कत्थवि विसएसु सद्दादिएहि
य अमुच्छितो ज्झायति, अरत्तो अदुट्ठो व, छउमत्थोवि परक्कममाणो छउमत्थकाले विहरंतेणं भगवता जयंतेणं धुवंतेणं परक्कमं-
तेणं ण कयाइ पमाओ कयतो, अविमद्दा णवरं एक्कसिं एक्को अंतोमुहुत्तं अट्ठियगामे, सयमेव अभिसमागम्म (११०)
आयतजोगमायसो भीए सयंबुद्धो भगवं अभिगम्मागम्म णच्चा-एवं विमोक्खो भवति, ण अण्णहा मम इति, आयंत णाम दट्ठुं
पवत्तितेण णाणदंसणचरित्ततवजोगेण अन्तसोही, एवं परक्कमंतो भगवं अभिणिव्वुडो अमाइल्लो आवकहा भगवं समि-

पुराणकु-
ल्मासादि

॥३२४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

आगम (०१)	“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) श्रुतस्कंध [१], अध्ययन [९], उद्देशक [४], निर्युक्ति: [२८४...], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक २२६/गाथा: १-१६]
प्रत वृत्यंक [२२६- गाथा १-१६] दीप अनुक्रम [३१८- ३३४]	श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३२५॥ २ श्रुत० १ अध्य० तासि अभिनिव्वुडो सीतीभूतो विसयकसाएसु कम्मबंधणजणएहि अ भावेहिं, अमाइल्ले-अमाइल्ले, ण माइट्ठाणेण तवो कतो भगवता वरं देवो वा दाणवो मणुस्सो वा तुस्सिहिति, णवरं कम्मक्खयट्ठाए, आवकहा जावज्जीवाए, भगवं समितो आसी। एस विही अनोक्कंतो (१११) माहणेण मतीमता। बहुसो अपडिन्नेण भगवता रीयते ॥ त्तिबेमि पूर्ववत् इति ॥ इति ब्रह्मचर्याध्ययनचूर्णिः॥ आचारे प्रथमश्रुतस्कन्धस्य चूर्णिः परिसमाप्ता ॥ उक्तो आचारार्थः नवबंभचेरः, इतो यदत्र विस्तरेण नोक्तं तदिह आचारे विस्तार्यते, आचारस्य अग्गाणि आचारग्गाणि, आचार एव वा अग्गं आचारग्गं, तेषां तेषामाचाराग्राणामयं न्यासो दशप्रकारः, णामग्गं(२८५) णामस्थापने पूर्ववत्, दव्वग्गं तिविहं, सचित्तं कुक्कुडसिहा रुक्खग्गं वा, अचित्तं कुंतग्गं, मासग्गं, तस्सेव देसे अवचिते, ओगाहणं सासयपव्वयग्गं चतुद्वागाढं, जं वा जावतियं किंचि ओगाढं, आदेसग्गं पंचण्हं अंगुलीणं जा पच्छा आदिस्सति, देवदत्तादीणं वा अंतो, मायणकमादिसु वा कज्जेसु, भुंजता करेहिं वा जो आदिस्सति, कालग्गं सव्वद्धा, अतः परं नास्ति कालः, कमग्गं चउव्विहं—दव्वादि ४, दव्वओ परमाणूदुपदेसियादीणं अणंतपएसितो अग्गं, खित्ततो एगपदेसोगाढादीण असंखिज्जपएसोगाढो कमग्गं, कालओ कम्माणं जा जस्स उक्किट्ठठिई, आउए कम्मे चउगइयाणं जीवाणं जा उक्कसा ट्ठिती, अजीवदव्वाण वा परमाणुमादीणं जा वुक्किट्ठट्ठिती, एतं कालग्गं, भावकमग्गं जे जेसिं वण्णादीणं अंतिमा पज्जवा, वण्णेसु अणंतगुणकालओ, एवं सेसेसुवि, गणणग्गं सीसपहेलिया, संचयग्गं तणकट्ठमादीणं जं उवरिं, अण्णे वा कस्सइ रासि जस्स उवरिं तं संचयग्गं तिविहं, पधाणग्गं बहुअग्गं उवचारग्गं, पहाणग्गे खाइओ भावो, ॥३२५॥ अग्रादिनिक्षेपः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:
	‘आचार’सूत्रे प्रथम श्रुतस्कंध: परिसमाप्त: *** अथ ‘आचार’सूत्रे द्वितीय-श्रुतस्कंध: आरब्ध:

प्रत वृत्त्यंक [२२६- गाथा १-९]

दीप अनुक्रम [३३५-३४३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३२६॥

अग्रादि-निक्षेपः

बहुअग्गं जीवादीणं छण्हं पज्जवग्गं (२८६) उवचारे णवबंभचेराणि, उवचरितं आचारग्गाणि दिज्जति, अतो आयारस्सेव अग्गाणि आयारग्गाणि जहा रुक्खस्स पव्वयस्स वा अग्गाणि, तधेयाणिं आयारस्स अग्गाणि, जहा रुक्खग्गं पव्वतग्गं वा रुक्खा पव्वया वा ण अत्थंतरभूयाणित्ति एवं ण आयारा आयारग्गाणि अत्थंतरभूयाणि, एत्थ पुण भावग्गेण अहिगारो, तत्थवि आयारउवयार-भावग्गाणि, उवचारंति वा अहीयंति वा अज्झितंति वा एगट्ठं, एयाणि पुण आयारग्गाणि आयारा चेव णिज्जूढाणि, केण णिज्जूढाति ?, थेरेहिं (२८७) थेरा गणधरा, किं णिमित्तं ?, अणुग्गहत्थं साहूणं सिस्साण हियत्थं पागडत्थं च भवउत्ति आयारस्स अत्थो आयारग्गेसु णिज्जूढो, दवितो भवितो, पिंडीकृतो पृथक् पृथक्, पिंडस्स पिंडेसणासु कतो, सेज्जत्थो सेज्जासु, एवं सेसाणवि, सो पुण कतरेहिंतो कतो ?, बितियस्स (२८८) अज्झयणस्स पंचमगाओ उद्देसगाओ, ‘जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जंति, तंजहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं धूईणं सव्वामगंधं वा परिण्णाय वत्थपडिग्गहकंबलेण पादपुंछणं ओग्गहं कट्ठासणं’ अट्ठमस्स बितियाओ उद्देसगातो तं ‘भिक्खू उवसंकमित्तु गाहावई बूया—आवसंतो! समणा अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा ४ वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारंभ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेमि आवसहं वा समुस्सिणोमि’ एतेहिंतो पिंडेसणसेज्जावत्थेसणा पादेसणा, उग्गहपडिमा णिज्जूढा पंचमस्स (२८९) लोगसारअज्झयणस्स चउत्थाओ उद्देसगाओ, ‘गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स तद्दिट्ठीए पलिबाहिरे पासित पाणे गच्छिज्जा से अभिक्कममाणे’ एत्तो रिया णिज्जूढा, छट्ठस्स पंचमाओ उद्देसगाओ ‘पाईणं पडीणं दाहिणं उदीण्णं आइक्खे विरुए किट्टे’ एत्तो भासज्जाता, सत्त सत्तिक्कगाइं (२९०) सत्तवि महापरिण्णाओ एक्केकाओ उद्देसाओ, सत्थपरिण्णाओ भावणा, धुयाओ ॥३२६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

♣ प्रथमा चूलिका आरब्धा,

प्रत वृत्यंक [१-९]

दीप अनुक्रम [३३५-३४३]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३२७॥

अग्रादि-निक्षेपः

विमुत्ती, आयारपकप्पो (२९१) पच्चक्खाणपुव्वस्स ततियवत्थूतो आयारणामधिज्ञाओ वीससतितमातो पाहुडच्छेदाओ, आयाराओ आयारग्गाइं णिज्जूढाइं, बितियातो 'जहा पुण्णस्स कत्थति तहा तुच्छस्स कत्थति' अव्वोगडो (२९२) अविसतो अवि तेसिं तो अव्वोकट इति, डंडणिक्खेवो 'णेव सयं छज्जीवनिकायसत्थं डंडं वा समारभेज्जा, लोगविजते अवि ते–'एसिं रक्खणा अप्पसत्था, विसयकसायवज्जणा कीति (पसत्था), सीओसणिज्जेवि जीवसंरक्खणमेव, सीतोसिणा परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, सम्मत्ते लोगसारे य उज्जमइ त जीवसंरक्खणत्थमेव, धूतमहापरिण्णावि जीवपालणत्थं, अट्ठमे च इमा जीवविराहणा तेण भत्तपरिण्णा, केण तं णातं ?, आयरियं ? उवदेसियं वा ?, जिणेण भगवता, जीवरक्खणत्थं पिंडेसणाओ जहा तहा सेज्जारिया जाव विमोत्ती जीवपालनार्थं, एवं ता चिट्ठतो, अथ सूत्रम्–एगविहो पुण (२९४) सदविशेषात्सर्वमेकं, तदेव भूयो द्विविधो–जीवाश्चाजीवाश्चेति, सव्वनिक्खेवो एवं वित्थारिज्जति विरइज्जति तहा, अहवा एगविहो असंजमे, दुविहे अत्थतो–बाहिरतरो अज्झत्थो, ते सेवंता, कहं च बाहिरहितो ?, कायवायाणं, मणादिविभासा, चाउज्जामो य, बहिद्धा आदाणं ग्रहणमित्यर्थः, गृहीतं परिभुज्यते नागृहीतमिति, तेन गहणमेव, पंचमे पंच महव्वता, सराइभोयणा छट्ठा, जाव सीलंगसहस्सा आयारस्स पविभागो, सव्वं आतिक्खेउं (२९५) जेण सुहतरं होइ, एतेण कारणेणं पंच महव्वया पण्णत्ता, तेसिं चेव (२९६) रक्खणट्ठाए एक्केक्कस्स तस्सेव महव्वयस्स पंच २ भावणाओ, सत्थपरिण्णाए अब्भितरो सव्व एव आचारार्थमित्यर्थः, पिंडेसणादि जाव उग्गमउप्पायणेसणा जाव अट्ठविह पिंडनिज्जुत्तीए, सेज्जाएवि वत्थेसणाए पादेसणाए उग्गहपडिमाए, भासज्जाताणं जहा वक्कसुद्धीए, सेज्जायरियाउग्गहे तिण्हं छक्को णिक्खेवो सो, पिंडभासा वत्थे पाते चउक्कओ णिक्खेवो, आयारग्गाणेसो पिंडत्थो वण्णितो समासेणं। एतो एक्केक्कं पुण अज्झ- ॥३२७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

♣ प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं “पिण्डैषणा” आरब्धं

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं “पिण्डैषणा”, प्रथम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत वृत्यंक [१-९]

दीप अनुक्रम [३३५-३४३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३२८॥

प्राणसंसक्तादि-निषेधः

यणं वन्नइस्सामि ॥१॥ पिंडेसणाओ चउके पुव्वाणुपुव्वादीसु जहासंभवं, सुत्तालावगे सुत्तं उच्चारेयव्वं–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा भिक्खू हेट्ठिमज्झयणगुणयुत्तो दशवैकालिकमुत्तराध्ययनेषु अहवा 'जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते' भिक्खू चउप्पगारो विभासा, तधा भिक्खुणीवि, गाहत्ति वा गिहंत्ति वा एगट्ठं, गिहस्स पती गिहपत्ति, गिहपतिग्गहणं रायपिंडप्रतिषेधार्थं, कुलग्गहणं पडिकुट्ठपडिसेहार्थं, पिंडं पातयामि अनया प्रतिज्ञया, अविसेसिते पिंडो, स एव विसेसितो असणादि चउव्विहो, जहा सुत्तं, पाडेउं वा णिग्गतो णिग्गतो व णं पाडेउं, जं लब्भति तस्स पाडेउंति सण्णा, पाणगस्सत्ति सामइगी संज्ञा पिंडो, यथा जीवो क्षेत्रज्ञो सांख्यानां, पडिया प्रतिज्ञा, विश प्रवेशने अनु पश्चाद्भावे, सुत्तत्थपोरिसिं सण्णाभूमिं च गंतुं पच्छा पविट्ठे वा, अहवा गिहीणं पागकते पच्छा पविट्ठे अणुपविट्ठो, अहवा पिंडोलगादि पविट्ठेसु पच्छा पविट्ठेसुमणुपविट्ठे समाणे, गच्छवासीणं संघाडएण समं, अहवा समणाणऽस्थित्ते इत्यर्थः, पुनर्विशेषणे, किं विशिनष्टि ?, अशनादि–सत्तुकोदणकुम्मासादी, अहवा प्राणादीन् प्राणेहिं वा, पाणेहिं अदुव आगंतुएहिं, अहवा जहा चउत्थरसिते गोरससत्तुयदोसीणेसु होज्जा, आगंतुगा मूयंगादी, पणगो खज्जगदोसीणाइसु, भायणेसु वा, पइणइतेवी वा तलारतियातो वा, अहवा बीयग्गहणा कंदाती, हरियं मूलगमादी, हरितग्गहणा रुक्खादी, बलिमादिसु संभवं होज्जा, सत्तेहिं संसत्तं, इतरेहिं उम्मीस्सं, सीतोदएण अभिसित्तं, कहं ?, अग्गि(ग्गा)भिक्खमादी पाणितेण अभिसिंचति, निक्खेवो, तंदुलोदएण छूमित्तगं उदगं, भिक्खा वा वरिसे पडंतए, रयसा घासितं, समंता रएण मिस्सितं, उवचितसकुतपाणाणिमादि, तहप्रकारं एतेहिं दोसेहिं जुत्तं, परत्थहते (हत्थे) हत्थे चेव परमत्थो, परभायणं, अफासुगं सचित्तं, अणेसणिज्जं गवेसणगहणेसणाय असुद्धं, मन्नमाणो चिंतमाणो, लाभे संते–विज्जमाणे नो पडिग्गाहिज्जा, आहच्च–सहसा सिता–कदाति अणाभोगे पडीच्छितं, भंगा चत्तारि, ॥३२८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१-९]

दीप अनुक्रम [३३५-३४३]

श्रीआचारांग सूत्र चूर्णिः ॥३२९॥

से तमादाय गहणाय एगंतमवक्कमिज्ञा, एगकाः एकान्ते, अहे आरामंसि वा २ अधित्ययं णिपातः अहग्गहणाऽगोयरे वा अंडगा पाणा जत्थ णत्थि हरितोदगं उस्सा वा जहिं णत्थि, उत्तिंगा गद्दभा कीडियाणगरं वा, पणओ उल्ली, दएण मिस्सिता, मट्टिगा वा, मक्कडगा लूतापुडगा, तत्थ चेव कीडगा कीडियं च वा, तत्थ वा विगिंचिता एकंसि, विमोहिया बहु सोहिया, लोगमुहपोत्तियाए काए पमज्जेत्ता, ततो संजतगं भुंजेज्ज वा पिएज्ज वा जं चाएति २, ज्झामथंडिलं अज्झुसिरं सामितगं अट्ठि किट्टे हिरण्णसुवण्णाईणं तत्थ खज्जगादि णिसिरिज्जति, वीहितुसेसुं कुंडगादिसु, ण उरणगादिसु संगुलिया, तत्थवि सत्तुगादि गोयमकरिसमच्छिगातो, णवगणिविसे पवेसे गामे दुछभथंडिले अवकरे परिट्ठविज्जइ पडिलेहिय २ त्ता पमज्जित दूरोगाढे द्रवसिणेहादि, अदूरे सित्थादि, ततो संजतामेव परिट्ठविज्ञा, ओसहीओ सचित्ताओ पडिपुन्नाओ अखंडिताओ, सस्सियाओ परोहणसमत्थाओ, जहा सालि, किल अतसितिलस्स तिवरिस पंचवरिसयं, अविदला कणाण विणा, अतिरिच्छच्छिण्णाओ उज्झिताओ, फालिताओ पुण तिरिच्छीछिण्णा, आहाविणा जीवेण तरुणिया, छिवाडी कोमलिया मग्गअलिसंदातीणं, अणभिकंता जीवेहिं, भज्जिता मीसजीवा चेव, एत्तो विवरीता कप्पणिज्ञा, अववादेणं पिहुगा सालिवीहीणं, बहुरया जवाणं भवंति, भुज्झगा गोधुमाणं वुच्चंति, मंथु बोरादि अण्णे वा फला केति, मथिता–चुण्णिता, मथ्यतेति मंथु, चाउलं तंदुला चाउलपलंव सुगिज्ञा विही सुक्कविता कुमिस्सिताओ तंदुला कणिगा वा से, दुब्भज्जितं एकसिं, दुब्भजितं अफासुगं, विवरीयं असइं भज्जियं दुपक्कं तो कप्पणिज्जं । अन्नउत्थिया परिभहा(द्दा)ति, गारत्थिया धीयारादी, अन्नो वा गिहत्थो, परिहारितो साहू, अपरिहारितो पासत्थो उ, भावणा वयणेण जाणंति च अप्पाणं, इरियावहियादि विराहणा वियारे दवअण्णकण्ण० असती विहारे चट्टा वारउग्घट्टगादि, गामाणुगामे थंडिलसंकमणअप्पमज्जणरागादियादिदोसा,

पिंडैषणाध्ययनं ॥३२९॥

प्रत वृत्यंक [१-९]

दीप अनुक्रम [३३५-३४३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३०॥

पिंडैषणाध्ययनं

देंति सयमेव, अणुप्पदाणं दवावणं, तत्थवि अहिकरणादी देसा, अस्सिन् पडियाए--अस्सिन् साधुं एगं प्रतिज्ञाय प्रतीत्य वा, समानः धर्म्मः साधर्म्मिकः, समुद्दिश्य समस्तं उद्दिश्य समुद्दिश्य समारंभ, अविसोधिकोडी सव्वेसिं पति ण कप्पइ, पुरिसंतरकडं अण्णस्स दिन्नं, णीहडं वहिता णिप्फेडितं, केहिं णीणितं ? अत्तट्ठितं, णो कोइ गिण्हइत्ति अम्ह जेण भवतु, अण्णेण वा अप्पणएण, मिस्सियं अफासुएणं, अपरिभुक्तं णाम भुत्तिसेसं अच्छति, आसेवितं आरुब्भ भोत्तुं ईसि संचितं, एतं सव्वंपि न कप्पइ, एतेसिं अपडिपक्कतो पडिसिद्धं चेव, बहवे पासंडिया, संघं गणं कुलं गच्छं वा, एवं एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ, पगुणियत्ति प्रागण्य, समणग्गहणेण आजीवरत्तवडपरिवायतावससाहूणं पंचण्हं, एसा विसोहिकोडी, छट्टं यावंतियं, बहवे समणा० पुरिसंतरकडाइं कप्पंति, णितिओ पिंडो णिच्चसि भिक्खा, अग्गपिंडो अग्गभिक्खा, जो उ भत्तट्ठो अवड्ढंभतो, अद्धभत्तट्ठो तस्सद्धं उवड्ढभातो, एतेसिं गिण्हणे णेकंतियदोसा, अन्नेसिं दिज्जमाणे उम्माणं, अह दोण्हवि देति ता अप्पणो सिं उमाणं पच्छा धन्नं रंधेंति, अह बहुतरं तो छक्कायवहो, तम्हा सपक्खपरपक्खोमाणाइं वज्जेज्जा, एतं खलु० एवं परिहरता पिंडेसणागुणेहिं उत्तरगुणसमग्गता भवति, समग्गभावो सामग्गियं, मूलओ सम्मगता पाणसंसत्तगादि परिहरता, अगुणसमग्गता अपरिहरणेण, गुणसमग्गता उत्तरगुणाणं, तंसामग्र्या चरित्तसामग्गी, चारित्रसामग्र्या अव्वाबाहा एसणा सामग्री भवति, सव्वट्ठेहिंति सव्वाहिं समितीहिं जहा पिंडेसणासमितीए तहा सेज्जारिया भासी जाव वियोचीए वा सुसमितीओ संभवंति चेव, आत्महितो वा समितो, सहितो नाणादीहिं, सया णिच्चकालं आमरणंता जतेत्ति बेमि। **इति प्रथमा पिंडेसणा समत्ता ॥**

इदाणिं सो चेव पिंडो कालखित्तेहिं मग्गिज्जइ, कोइ अट्ठमीए उववासं करेत्ता भोयणं करेइ, अट्ठमिग्रहणेण सेसा दिवसावि ॥३३०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रथम चूलिकायाः प्रथम-अध्ययनं "पिण्डैषणा", द्विवितीय-त्रुतियौ उद्देशकौ आरब्धौ

प्रत
वृत्यंक
[१०-२१]

दीप
अनुक्रम
[३४४-३५५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३१॥

पिंडैषणाध्ययनं

सूतिता, अद्धमासितं वा उववासं काउं अवामंसाए वा करेति भत्तं, मासितं पुन्निमाए, २३४५ छम्मासिए —अयणभत्तए उडुसिसिरतादिसु ऋतौ घृतो गुलो गोरसा साली य पउरा अहवा पदोसा, हेमंतसिसिरगिम्हे सत्तुगमादि, एवं जा जंमि उडुंमि दिज्जति, उडुसंधी दोण्हं उदूणं संधी, परियट्टे हेमंतो वसंतो अहवा से उदूधु समत्ता, उक्खाओ खलिया, कुंभी कुंभप्पमाणा, कलसी गिहकुंभे भरिज्जति, कलोवादी पच्छीपडिगमादी, सन्निधी गोरसो, संणिचओ घतगुला, एत्थवि तचेव पगारा, अपुरिसंतरकडादी ण कप्पति, कुतो ? विसुद्धा णो भत्तपाणा भंगा ४, दोसविसुद्धेसु गहणं, सेसेसु पडिसेहो, उग्गा जे सामिणो दंडधरा आसी, भोज्जा गुरुत्थाणीया, राईणा राइणो, खत्तिया इक्खागहरियवंसपसिद्धा, एसिता दरिसणा, वेसिता रंगोवजीविणो, गंडगा गामतित्तिवाहगा, कोट्टगा हरगाए कोट्टकीत्यर्थः, गामरक्खगा गामाउन्तगा, बोक्कसा लित्ताणंतिका, एवमादि अ, दुगुंछिता चंमारादी, तेसु फासुसगाणवियग्गहणं। समवातो–गोट्ठीभत्तं, पिंडणिगरो–पितिपिंडो, इंदमहे इंदो, खंदो महासेणो, रुद्दो रुद्दमेव, मुगुंडो बलदेवो, णागा णागवलियाए, जक्खा आणंदपुरे सिद्धा चेव, मूले जहा देवणिम्मिते, चेइयं वाणमंतरं, रुक्खा पत्तच्छोवगाणि कज्जंति, गिरि उज्जंताई, दरी उच्चयअंधारियासु, कूपंजणगा दहणागदुमो, णदीए भमंतीए, सरे जहा भट्टचरणे, अन्ने य सागारे, अन्नतरेसु वा विरूवपर० एगाओ वक्खाओ तहेव अपुरिसंतरकडं णो पडिगाहिज्जा जाव अह पुण जाणेज्जा दिण्णं जं तेसिं दायव्वं अह तत्थ ण भुंजेज्जा, भुज पालनाभ्यवहारयोः, पभू वा पभुसंदिट्ठो वा पभू गाहावई आयरियगिलाणादीणं अलंभे वा सो देज्जा जाव पडिगाहेज्जा। इदाणिं खित्तं–परतो अद्धजोयणं भिक्खाचरियं गम्मति गामं वा रण्णं वा चउद्दिसिं, जत्थ संखडी तत्थ अवराएवि जई जाइ, सा संखडी प्रतिज्ञातुं न कप्पति। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पाईणं पुरिमदिसाए वारेंतेवि जति तत्थ संखडी ॥३३१॥

प्रत
वृत्यंक
[१०-२१]

दीप
अनुक्रम
[३४४-३५५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३२॥

पिंडैषणाध्ययनं

भवंति तंजहा–अणाढायमाणे पडिगच्छति अन्नं वा, एवं सेसासुवि, एवं ता बहिता, सग्गामेवि न कप्पति, जत्थेव सा संखडी सिया तंजहा–गामंसि वा जम्हा तं पड़, गामं वा २ गामादि पुव्ववण्णिया, णो अभिसं० केवली जतो केवली परं समत्थो णाउं ते दोसे, आदाणं दोसाणं, प्रसवो संभवः, अहवा केवलिवयणेण भणामि दोसे, ण सच्छंदेणं, कतरतरो केवली ?, सुयनाणकेवली, आहाकंमितादीणं संभवो, तत्थ ताओ संखडीओ एगदेवसियाओ जहा सरस्सईजत्ता अहाभदएसु य सघरपासंड० जावंतियादी दोसा पंतेसु पंतावणादीया दोसो, खुड्डितो दुवारे जातो, महाप्रकाशः प्रवातअवकाशाऽर्थं बहुपाणा, महिल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डुयाओ सुसंगुत्तणिवातार्थं, यो वा णं साहुसमणजावंतियाणं अर्थाय समं भूमिं विसमं करेति, साहू अट्ठाए पडिणीयट्ठयाए वा, तो हेमंते सीतरक्खणट्ठं णिवाता, गिम्हसरते पवातिट्ठं, एत्य सव्वा पडिणीता, अणुकंपणट्ठा वा करेज्जा, अंतोवि बाहिं बाहिरिया छिंदिया दलेति कुसा, खरा पिट्टेंतो संथरंति, एस खलु भगवया एवं आहाकम्मंमि संजतदोसा, तम्हा से संजते णिययट्ठे तहप्पगारे पुरिसे संखडिं वा पुव्वग्गामे पुरेसंखडी, अहवा पुव्वण्हे अग्गिट्ठिगादी जाते वा पुरेसंखडी, पच्छिमा गामे पच्छा संखडी, अवरण्हे वा जहा गिरिकन्निगादी वा पच्छासंखडी, विवाहे वा पुव्वसंखडी दीज्जा, दयिता रसगेहीए उक्कस्संति काउं, अतिप्पमाणं भुंजित्ता पिवित्ता वः एगाणियदोसेण वा वियडमादि पीतं होज्जा, जावज्जीवो वोसिरा वण्णिता, वमणं वमणा, वागहणात् छिद्रतं ण वमियं, न सम्मं परिणायं, अजीण्णगमित्यर्थः, आगत्य संकोचयंति आयुं सरीरं बुद्धीं व संकोचयंतीति आयङ्को, अन्नतरो षोडशानां एकतरः, अहवा अण्णतरे दुक्खे 'अलसते विसूइ' गाहा, अलस एव अच्छति, विसूइगा एवमच्छइत्ति, वोसिरइवि एगतरं वा करेति, अहवा आयंको जरमादी, आयंको सज्जघाती, रोगो कालेण, असंजता करणकारावणे जीवघाता, असमाधिं जरं वा, केवली बूया पुव्व-

॥३३२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१०-२१]

दीप अनुक्रम [३४४-३५५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३३॥

पिंडैषणाध्ययनं

भणिता, इमे अन्ने-पव्वयणादी, गाहावई अगारिओ वा, परिव्वाया काबलियगादी, परिवायाओ तेसिं चेव भोईयो, वासगिम्हरीकादीसु संखडीसु, एवंपि अगारीओवि, माहेस्सरसिरिमालउज्जेणीसु एगब्भं एगवत्ता एगचरित्ता वा, सव्वंमि भवा वा, सोंडं विगडं चेव पिबंति, पादुः-प्रकाशने प्रकाशं पिबंति, रे प्रकाशे, पीवितं प्रकाशीभवति, भो! त्ति शिष्यामन्त्रणं, व्यामिश्रं नामा तेहिं पासंडगिहत्थेहिं, अहवा वे सुराओ, अहवा सिधुं य सुरं च अणुकंपया संजतं पाएज्जा, पडिणीययाय पाएज्जा जा उड्डाहो भवतु, मत्तगदोसा गाएज्ज वा नच्चेज्ज वा वमेज्ज वा, मत्तेण य पडिस्सओ ण गविट्ठो, हुरत्था णाम बाहिं विगालो य जातो, को वा मत्तेल्लगस्स देति, गतिए संतस्सवि, तेहिं चेव सम्मिस्सभावं पगतएल्लउ आपेज्जेत, अन्नमणो णाम ण संजतमणो, सव्वेते विप्परिया, स० सव्वओ णाम अचेतो आतपरउभयसमुट्ठेहिं दोसेहिं, इत्थीविग्गहे वा विग्गहगहणं मत्तगसरीरवत्, तत्रापि ग्रहणं दृष्टं, किलीवो णाम नपुंसओ, एते गेण्हेज्ज, पियधम्मेवि न देसो, किमंग पुण मंदधम्मे ?. एवं वा ब्रूयात्-आउसंतो! समणा एयाओ संज्ञा विगालो रत्तीवि परिचरियव्वा, गामणियंतियं गाममब्भासं, कण्हुइ रहस्सितं कम्हिवि रहस्से, उच्छूअक्खाडे वा अन्नतरे वा पच्छण्णे मिहुणस्स सहयोगे च, पवियरणं पवियारया, आउट्टामो कुव्वीमो, एगतीया कोइ विधम्मोवि साइज्जेज्ज, सातिज्जणा समणुजाणणा, अकृत्यमेतत्, ज्ञात्वा आदाणत्ता, सासंति विज्जंतो, प्रत्यवाया इह परलोगे य, तम्हा णो अभि० अण्णयरे संखडी णिसम्म, समत्तं धावति, उस्सुगभूतो सज्झायादीणि ण करेति, धुवा अत्थि णत्थि, होंतीएवि लंभो हुज्ज वा ण वा, लब्भमाणोवि वेला फिट्टिज्जा, णो संचाएति-न शक्नोति इतराइतराइं-उच्चनीयाणि जाणि पुव्वभणियाणि समुदाणता तं समुदाणियं, फासुगं उग्गमादिसुद्धं एसणीयं, एसियं फासुगमेव एसितं, वेसियं णाम जहा वेसियाणुरूवं, विरूवत्थे रयणे वा ण जोएति, केवलं कवलिते,

॥३३३॥

प्रत
वृत्यंक
[१०-२१]

दीप
अनुक्रम
[३४४-३५५]

एवं साहूवि एसणाजुत्तो, वच्छगदिट्ठंतेणं एसणं जोएति, जं एवं लद्धं तं वेसितं, माइट्ठाणसंस्पर्शो, ता एवं गामादि पुव्वभणिता, आइण्णा चरगादीहिं, उम्माणा त सतस्स भत्ते कते सहस्सं आगतं, णाऊणं माणं, ण विणा रसगेधीए संखडी गम्मति, आइण्णाए य इमे दोसा–पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवति, आलावा पसिद्धा, असंखडादयो य दोसा, अणेसणिज्जं सोलसण्हं एगतरं, तम्हा से संजए णियंटे वितिगिच्छा संका उग्गमएसणासु पंचवीसे, असमाहिया असमाहडा, कण्हलेस्सादि तिन्नि, चरित्ता णो सव्वे, तिन्नि, मंदं अव्वोगडो, उवहीआदी सुत्तेसुवि भासिज्जति, एवं विहारो अव्वोगडो जिणथेराणं, जिणकप्पिता सुहुमबुद्धी काएवि णाणंति, थेरकप्पिता सुहुमेण वा सन्नाणेणं, इतरंमि कारणे, तिव्वदेसितं सव्वदिवसं, सुट्ठुं वा वदाहि वा धाराहिं अव्वोच्छिन्नं, तिरिच्छं संपातिमा, निज्जाति, उरंसि वा णं णिलिज्जिज्जा, कक्खंसि वा णं आहडेज्जा, पाणिणा पाणिं पिधित्ता, एयाणि करेति पाणिपडिग्गहतो थेरकप्पियाणं, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा खत्तिया चक्कवट्टीबलदेववासुदेवमंडलियरायाणो, कुराया पच्चंतियरायाणो, रायवंसिता रायवंसप्पसूया, णरा णारी य सिया, अन्नतरा भोइता, अंतो अंतो नगरादीणं बाहिणिग्गताणं सण्णिविट्ठाणं इतरेसिं गच्छंताणं भंगलत्थं वा, सयमेव आणिउं दुकस्स देज्जा, देंताणं सयमेव अदेंताणं अण्णो दिज्ज असणं वा ४, लाभे संते णो पडिगाहिज्जा, इस्सरतलवरकोडुंबिय लाभे संते रयणमा० एसणामादी० एवं खलु भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं। तृतीया पिण्डेसणा परिसमाप्ता ॥

संखडिअहिगारो अणुयत्तति, मंसादि मासं चाउम्मासं वा णिज्झिसितो आसि, पारणे मांसेहिं चेव संखडिं करेति, 'अद् भक्षणे' मंसं अदंतीति मंसादी मिगपट्ठिता वा, गोमहिसवराहादीहिं मारिज्जेज, संखडिं करेति, एवं मच्छाइतेसु दो पगारा, णवरं गोगाहेण

॥३३४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रथम चूलिकायाः प्रथम-अध्ययनं “पिण्डैषणा”, चतुर्थ-उद्देशकः आरब्धः

प्रत
वृत्यंक
[२२-२४]

दीप
अनुक्रम
[३५६-३५८]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३५॥

पिंडैषणाध्ययनं

मारिज्जेज, मंसखलं जत्थ मंसा सुक्खाविंति सुक्खस्स वा कडवल्ला कता, एवं मच्छगाणवि सामाणो, तणखलाई काउं सुक्खावेत्ता विभयं भत्ताइं करेति, पहेणं आहेणं वा तित्ताणं, वधुया हिज्जति एहेण वधूइत्ता, अहवा जं आणिज्जति तं पेहिणं(पहे)हि, हिंगोवलं करडयभत्तं, सम्मेलो विवाहभत्तं, पच्छाकम्मेण वा मित्ता वा कज्जंति भत्तं काऊण, अहवा गोट्ठीभत्तं संमेलं, हीरमाणं, अहवा कीरति अंतरा, बहुपाणा पीपीलगसंखणगइंदगोवगइंदजुवादि पुव्वुत्ताणि, बहवो समणमाहणा उवागता गमिस्संति पच्छा अत्यर्थः आइण्णा अच्चाइण्णा चरगादीहिं नो पन्नस्स प्रज्ञावां प्राज्ञः तस्य प्राज्ञस्य अच्चाइण्णत्तणेण ठाणादी ण सक्कंति काउं, विसयपवेसा दुक्खं, लोगो य भणेज्ज–अहो जिब्भिदियं अदंतं साहूणं, सो एवं णच्चा रायभिसेयाईसु चेव अप्पपाणादिसु अप्पादिन्नासु निक्कारणे ण कप्पति, गिलाणणाणकारणादिसु कक्खडखेत्तवत्तव्वा, असंथरणे वा एगदिवसअणेगदिवसियासु गिण्हेज्जा, तत्थ य वेलाए चेव पविसिज्जति, अवेलाए उस्सक्कणं पवत्तणदोसा। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा खीरिज्जमाणासु संजयट्ठाए गावी दुहितुं दिज्जा, उवक्खडिज्जमाणे संजतट्ठाए किंचि छड्डन्ती उवक्खडिज्ज, अप्पहितं ण तात्र दिज्जति, संजयट्ठाए पवत्तणं होज्जा, एते दोसे जाणित्ता णो गाहावइकुलं सेत्तमादाण आदायं नाणं इह ज्ञात्वा, एगंतमवक्कमिज्जा अणावादमसंलोए, खीरियासु उवक्खडिते, पज्जूहियं पडिन्तं, एते दोसा ण–णत्थि पविसिज्जा, भिक्खणसीला भिक्खागा, नामगहणा दव्वभिक्खागा, एगे ण सव्वे, एवमवधारणे, आहंसु कंठा, समाणा वुड्ढवासी, वसमाणा णवविकप्पविहारी, दूतिज्जमाणा–मासकप्पं चउमासकप्पं वा काउं संकममाणा कहिंचि गामे ठिता उडुबद्धे अहव हिंडमाणा, माइट्ठाणेण मा अम्हं किर विसमो भवतुत्ति पाहुणए आगते भणंति खुड्डाए खलु अयं० वसती खुड्डगा, तेसिंपि महतरा दैंतगाई णत्थि, थोवा भोज्जाणि, मंडिहिं वा अकंता, से हंता हंतामंत्रणे, पुरसंथुता मातापितादि, पच्छा ॥३३५॥

प्रत वृत्यंक [२२-२४]

दीप अनुक्रम [३५६-३५८]

संथुता ससुरकुलादि, अहवा गिहवासे पुव्वसंथुता, पव्वज्जाए पच्छासंथुता, गाहावतिपिंडं णाम संपन्नरसं स्निग्धं द्रवं पेसलं उत्तरसंलोयगं वण्णादीहि अ सोभणितमित्यर्थः, सुकुली सुखज्जगं, फाणियं द्रवगुलो, पुव्वो वा पूवओ, उल्लं खज्जगं सव्वं गिहितं, सिहिरिणी मज्जिता, सिहरवयत्ति चिक्कणत्तणेण, तं भोच्चा पच्छा साहुणो हिंडावेति, तंमि गहिते साहुणो किं करेतु ?, माइट्ठाणसंफासो, ता न एवं करिज्जा, केवलिपडिसेधियं अकप्पितं, सेवंतो मायामोसे वट्टति, कहं कुज्जा ?, सग्गामे परग्गामे अविसेसे पाहुणइत्तिए, तिण्णि दिणे पाहुण्णं, से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण कालेणंति सति काले तत्थितरा० सामुदाणितं तं आहारं आहारेज्ज, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स वा २ सामग्गियं। **चतुर्थी पिंडैषणा समाप्ता ॥**

इहापि कालोऽधिगार एव, **अग्गपिंडः** अग्गो णाम अरिज्जओ **खिप्पमाणे** संजाए अगारी बंभणस्स अग्गं पिंडं दातुं समणसग्गदहपवत्तणदोसा अहवा उक्खलियादोसाओ वा उक्खिवति णिक्खिप्पति अण्णेहिं विज्जति हीरमाणं न निज्जति परिभाइज्जति, परिभुज्जति अण्णे भुंजंति, परिट्ठविज्जति अच्चणीया कीरति, पुरा असणादी वा (४) तत्थेव भुंजति जहा बोडियसरक्खा, अहे चरति णाम उक्कममडति, खद्धं खद्धं णाम बहवे इह संकमंति तुरियं च, तत्थ भिक्खुवि तहेव सो० सा० माइट्ठाणं संफासे णो एवं करेज्जा। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अप्प० केतारो तलागं वा जं उवस्सं वा, फरिहा गामो उदएणं वेढितो फलिहतो वा, पागारतोरणअग्गलाणि, जहा हत्थिवारी अग्गलपासओ, अग्गलाए वा कायं, उच्चारणाओ वलितो, अणंतरहिता नामांतरो अंतर्वा तेन अंतरहिता सचेतणा इत्यर्थः, सचेतणा, अहवा णो अणंतेहिं रहिताओ, सहिता इत्यर्थः, इत्थं न दीसति, ससिणिद्धा घडउऽच्छपाणियभरितो पल्हत्थणो, वासं वा पडियमेत्तयं, ससरक्खावितो मट्टिता तहिं पडति य सगडमादिणा णिज्ज- ॥३३६॥

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं "पिण्डैषणा", पंचम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[२५-३०]

दीप
अनुक्रम
[३५९-३६४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३७॥

पंचमी पिंडैषणी

माणा कुंभकारादिणा चलणं वा, चित्तमंता मसिणा सिला एव सचित्ता, लेल्लू गहिता, उडओ सचितो चेव, कोला मता मधुणो, तस्स आवासं कंठं, अन्ने वा दारुए, जीवपतिट्ठिते हरितादीणं उवरिं, उद्देहिगाउ वा सचित्ते वा, सअंडो सपाणे पुव्वभणिता, आमजति एकसिं, पमजति पुणो पुणो, असरक्खं अचित्तं, देंतगे असति उग्गहो अणुण्णविजति तणादीणं, एवमादीहिं पम-ज्जेज्जा, मणुस्सं वियालो णाम गहिल्लमत्तओ, गहिल्लउ हारणपिसाइया गहिता, सेसा गोणादिमारगा अलक्कइभावा, खुड्डगा खायंति अस्सिमन्निति तं, उवातं, वेसी मूसिगा धूली वा, भिल्लुगा पुडाली वा विसमंमि सुण्णयं पाणियं तिलविज्जलं, न दुवारवाहा अग्ग-दारं कंटगवोंदिता अहेसी, वोंदियग्गहणा कडंगचेलादिणा पिहितं, अणुण्णवित्तावि ण वट्टति, अणुन्नवितु वट्टते गिलाणादिसु कारणेसु। गामपिंडोलतो विज्जमाणा ओलेति, संलोगो जहिं ट्ठितो दिस्सति, सपडिदुवारं सपडिजुत्तं दारस्स, केवली बूता, तस्स पुव्वपविट्ठस्स णीणियं विहरेज्जा, अचियत्तं अंतरालियदोसा, गिहत्थो वा भणति—जो एत्तो चेव पडिच्छति, एते दोसा जम्हा पुव्वोद्दिट्ठाए पइण्णाए, प्रतिज्ञा हेतुरुपदेशः, एष भगवतां जं णो संलोए, सेत्तमादाय ज्ञात्वा अणावातअसंलोए तस्सवि, तस्स तस्स गिहत्थो सव्वेसिं सामन्नं गिहपासंडसंजएहिं सम्मं दिज्ज, भणेज्ज य—अहं अक्खणितो तुज्झे चेव भुंजत परिभातेत वा, तं च केइ गिण्हित्ता तुसिणीए० माइट्ठाणं० णो एवं करेज्जा, जइ फव्वंति ण गेण्हंति, अह असंथरणं गिलाणादीण वा णत्थि ताहे गेण्हंति, अह असंथरणं तचेव भायंति, अह भणंति—तुमं चेव भाएहि, ते वा वेंटलेंति ताहे परिभाएति, खद्धं—बहुगं, डागं सागं वाहंगणमादि, अह भणंति—भुंजामो, तत्थ अप्पणो उक्कड्डति तेसिं तहेव देति, अह णिच्छंति, एवं पुण पासत्थेहिं असंभोइएहिं वा, गामपिंडोलादि पुव्वपविट्ठे उवादिक्कम्म णो पविसे, मा पडिसेहिते व दिण्णे वा पवेसेज्ज वा ओभासेज्ज वा, एवं खलु भिक्खुस्स ॥३३७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [३१-३६]

दीप अनुक्रम [३६५-३७०]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३३८॥

वा २ सामग्गियं ॥ पंचमा पिंडैषणा ॥

इह हि अंतराइयमेव तिरियाणं, रसं एसंतीति रसेसिणो पाणा—सत्ता, घासेसणाए आहारवइ, संथडा णिरंतरं सण्णिचतिया, दवदवस्स०, तिरियदुट्ठा, के ते ? कुकुडजात्तीयं वा, जातिग्गहणे स्त्री नपुंसको वा कुक्कुडपेच्छगा, करिसमादीसु कणयाओ वा कोइ दिज्जा, कुकुडा कलेवरा, लेहणे वा सरणगराणं कए कुडगं कोति दिज्जा, वायसा अग्गपिंडंमि, तत्थ अंतराइयं अहिकरण-दोसा, दुवारवाधा दुवारपिंडो, अवलंबणं अवत्थंभणं काएण वा हत्थेण वा, दुब्भलकुड्डि उद्देहिपरिवहिते, फलहिते कलहो चेव दाणं उत्तरतरो कवाडतोरणेसु एतेसु चेव दोसा, दगच्छड्डणगं जत्थ पाणियं छड्डिज्जति, चंदणिउदगं जहिं उच्छिट्ठभायणादि धुव्वंति, एतेसु वयणदोसा, सिणाणं जहिं ण्हायंति, वच्चं नाम पंचवडओ, तहिं पवयण० भुताभुत्तेण कंखंतरेहिं दोसो, आलोगं उलाव-(छंकि)गादि, निग्गलणं कुड्डो खंडितओ, संधी दोण्हं घराणं कडगाण वा, दगभवणं ण्हाणघरं, प्रतिज्झिता बाहं पूरिता, अंगुलीए उद्देसिय २ निज्झाति जहा इमे दीणारवत्थाइं थिग्गला वा दीसंति, णट्ठहिते वट्टखुरे संका, अंगुलीए दाएत्ता भणंति—एतं कुसाणं मे देहि, बालेति, हेतु होतु सव्वेसिं देहि, अम्ह ण देहि, किं अणुदंसणु ?। अह तत्थ किंचि भुं० भुज पालनाभ्यवहारयोः, हत्थो हत्थो चेव, मत्तो पिट्ठकुंडगं, मट्टितजाति, दव्वी दव्वी चेव, उल्लंकिगादीणं वा गहणं, भायणेण कम्मं भायणं कडगादि गहिता, सीतं विगडं चउभंगो, इह अविगतजीवं गहितं, उदउल्लं पुरेकम्मसंजयट्ठाए घडंति, ण ससणिद्धाए चिट्ठति, संसट्ठेण जाव पडिगा-हेज्जा, पुहुगादि कोट्ठेसुं २ सचित्तसिलादिसु, बिललोणं फासुगं कड्डिज्जइ, उब्भियग्गहणा सा सुद्धसिंधवादि, अफासुगं हि तं देसं-तरसंकमणगा उण्हादीसु फासुगीभवति, रेवट्ठादि भिज्जति रुचति वा। उस्सिंचति ततो णिस्सिंचति तहिं अण्णत्थ, तत्तं उण्होदगं

षष्ठी पिंडैषणी ॥३३८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं "पिण्डैषणा", षष्ठ:-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत

वृत्यंक [३७-४२]

दीप

अनुक्रम [३७१-३७६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३३९॥

सप्तमी पिंडैषणा

घृतं वा आमज्जी, अगणिकायं उक्खलितं, तं वा दव्वं जं देतियं पुणो पुणो उवेत्तुं ओतारेमाणे वा अगणिविराहणा, एतं खलु **भिक्खुस्स वा २ सामग्गियं। षष्ठी पिंडेषणा॥**

संबंधो अगणिकाए संयमविराहणा, इहावि संजमतवविराहणादि, खंधो पागारओ, अहवा खंधो सो तज्जातो, घरे चेव पाहणखंधो वा, तज्जातो गिरिणगरे, अतज्जातो अन्यत्र, मंचो मंच एव, कट्ठेहिं कीरति, मालो मालो चेव, पासादो पासादो चेव, हंमियतलं आगासतलं, अण्णतरं अंतलिक्खग्गहणेणं ता सिक्कगादि गहिता, एतेसु मालोहडदोसा, पीढं छगणगोमयमादी, फलयं कट्ठमादी, णिसेणी णिस्सेणी चेव, उदूक्खलं मुसलं उक्खलं वा, अवहट्टु अण्णतो गिण्हित्ता अण्णहिं स्थावेति, उस्सविउं उड्ढं ठवितुं, तं चंचलं पचलिज्जा, तत्थ पडेंतस्स सरीरिंदियविराहणा जीवविराहणा य, तम्हा ण पडिगाहेज्जा, उब्भाया मालोहडं, कोट्ठिगा एव कालेज्जओ, विसमं ओवरि संकडओ, मूढिगाहा भूमी एगा खणितु भूमीघरगं उवरिं संकडं हेट्ठा विच्छिन्नं अग्गिणा दहित्ता कज्जति, ताहिं तु चिरंपि गोधूमादी वत्थुं अच्छति, कुंथा पुंजिगा, ओकुज्जिय अवकुज्जिय, अवकुज्जिय ओहरिय ओतारिय आहट्टु—आहृत्य णो परि०। मट्टिओलित्ते कायवहो, उब्भिज्जमाणे छण्हवि, जउणा लित्ते अगणिमादीओवि, लिप्पमाणेऽवि छक्कायविराहणा पच्छाकम्मं वा, एवं पुढविआउतेउकाएसु पतिट्ठितेवि, उस्सक्किय णिव्वविया ओहरिय उत्तारेतुं। अगणिकाए अ दंसितं सूत्रं, सुप्पं विधुवणं वंयणओ, सेसाणि पागडट्ठाणि चेव, जाव ण पडिगाहेज्जा। वणस्सपतिट्ठितं पिट्ठस्स हरियकायअस्स वा उवरिं। पाणगजातं, उस्सेइमं पिट्ठदीवगादि, संसेइमं तिलज्जयं तिपण्णगादि, सीतेण उण्हेण वा चाउलोदउ तिलोदगे य, अहुणाधोतं—धोयमित्तं चेव, अणंबिलं ण अंबिलीभूतं, अव्वोक्त[त] ण अचेयणं, अपरिणतं वन्नादीहिं तारिसं चेव, अविद्धत्थं ण जोणी विद्धत्था, एतं ण पडिगाहेज्जा ॥३३९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं “पिण्डैषणा”, सप्तम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[३७-४२]

दीप
अनुक्रम
[३७१-३७६]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३४०॥ | ८ पिंडैषणा

तिला भुज्जितगा पाणीते छुभन्ति, तुसोदए तुसिता भुज्जियगा छुभंति, जवोदए जवा भुज्जियगा छुभंति, आयामं अवस्सावणं, सोवीरगं अंबिलं, केइ भणंति–कोसलाए परिसित्तियं, सुद्धवियडं संसट्ठपाणगं, निज्जा वा अहिगारो, अहुणा धोताईणी णो पडिगाहिज्जा, इमं पुण सुत्तं चिरधोतादिसु–से पुव्वामेव आलोए, पडिग्गहो एवं मत्तओवि गिहिभायणेण वा वक्खेवे चकिया फुडा चेव पडिगाहेज्जा। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पाणगं अणंतरहितादिसु, उद्धट्टुत्ति उद्धृत्य, णिक्खितं ठवितं, उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा सकसाएण वच्छा(छा)दिणा कसाएणं, सो य सचेयणो य होज्जा, मत्तेण भायणेण, सीतोदएण संभोएत्ता भासेत्ता णो पडिगाहेज्जा, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स वा० सामग्गियं। सत्तमा पिंडेसणा॥

संबंधो इह पाणगं, अंबगाइं धोवेंति अंबसालस्स वा संसट्ठपाणगं खोल्लविसए अंबगाणि फालेत्ता सुक्काविज्जंति तेसिं धोवणं अंबपाणगं, एवं अंबाडगकविट्ठमाउलिंगमुद्दियादालिमखज्जूरनालिएरकरीरकोलआमलगचिंचादीणं सव्वेसिं धोवणं, रसमीसं वा अट्ठियं अट्ठिल्लओ, सह अट्ठिएणं सअट्ठियं, सह कणुएण य सकणुयं, कणुयं अट्ठिएगदेसए वा अतुस्सो कच्छो वा, बीतेण सह साणुवीयकं, छव्वकं दूसं वत्थं, वालं सउणीघरए वा, रएण वा, आवीलेति एकसिं, परिपीलेति बहुसो, परिसएति गालेति ण पडि०। आगंतारो मग्गो, मग्गे गिहं, अहवा यत्र आगत्य आगत्यागारा तिष्ठंति तं आगंतागारं, आरामे आगारं, गृहपतिकुलं वा, परिव्वायगादीणं आघातो परियावसतो, अन्नगंधाणि कलयसालिमादीणं, पाणगंधो कप्पूरपाडलावासितादि सुरभिगंधो चंदणागुरुकुंकुमादीणं आसायपडिता भाणमुहं, णो तत्थ सिद्धा, सालुगं उप्पलकंदगो, बिरालिया गोल्लविसए वल्ली, पलासतो सासवसिद्धत्थपालिता, आमयं अरद्धं, असत्थपरिणतं सचित्तं, पिप्पली पिप्पलिमूलं, मिरियं मि २, सिंगबेरं सुंठी अल्लगं वा, चुण्णे एतेसिं चेव, ॥३४०॥

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं "पिण्डैषणा", अष्टम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत वृत्यंक [४३-४८]

दीप अनुक्रम [३७७-३८२]

अंबफलं च फलमत्थओ, झिज्झिरी वल्लिपलासगमूलं, सुरभिपलंबं सग्गयमूल, सल्लइए मूलं मोयई, पलासा(वाला)णवि, आसोट्टपलासं वा आसट्ठो पिप्पलो, तेसिं पल्लवा खज्जंति, नग्गोहो नाम वडो, पिलक्खू पिप्पली, ऊरसल्लइएवि, अंबसरोडुगं डोहियं वा, एवं अंबाडगकविट्ठदालिमबिल्लाणवि, उंबरमंथुं वा मंथु नाम फलचूर्णा एव, णग्गोहपिलक्खुआसोट्ठाणं मंथु वमणितिलेहिं समगं चुण्णिज्जंति, आमगं आमगमेव, दुरुक्कं दुपिट्ठं, अह अणुब्भी बीजो साणुबीयं आमडागं आमपत्तं, न मृतं अमृतं सजीवमित्यर्थः, पूतीपिण्णाओ सरिसवभक्खो, अहवा सव्वो चेव खलो कुधितो पूतिपिण्णाओ, महुंपि संसज्जति तव्वण्णेहिं, एवं णवणीयसप्पीवि, खोलं कल्लाणाणं, एत्थ पाणा अणुप्रसूता जाता संवृद्धा वकंता जीवा, एत्थ जीवा, णत्थि परेण विद्धत्था, एत्थ संजमविराहणा, वलीकवग्गुलेस्सादिदोसाण पट्ठिओ, मेरगं च्छोडियणं, मिज्झो मेदो, अंककरेलुगं वालिखरगं वा, एते गोल्लविसए, कसेरुगसिंघाडग, कोंकणेसु पूति आलुगं वा, ण पडिगाहेज्जा, एते जलजातीया होंति, उप्पलनालो सव्वेसिंपि खिज्जति भिसं जढरए, पोक्खरं केसरं सुकलं, पुक्खलगं खलगं, पुक्खरविगा कच्छभओ, अग्गबीया सालिमादी अन्नो वा जो परिभोगमेति, मूलबीया फणसमादी, खंधबीया उंबरमादी, पोरबीया उच्छुमादी, अण्णाणिवि एतेहिं चेव जाई परिभोगमेति, एते आसमाणकुप्पं, अण्णत्थ तक्कलिमत्थएण वा तक्कलीसीसएण वा नालियेरिमत्थएण वा खज्जूरिमत्थएण वा, एते एगजीवा, ते छड्डित्ता मत्थओ घेप्पति, सो लहुं चेव विद्धंसति, एते ण कप्पंति, काणं पुण खइयरातं ? अंगिरगं खइराएणं समंडवाहियं वा यासिताला तेहिं दूमयंतं न सक्केयं खाइतुं चेव, तस्स अग्गगं-कंदली उस्सुगं-मज्झं कत्तं तीए हत्थिदसगसंठितं, कलतो सिंबा, कलो चणगो, ओली सिंगा तस्स चेव, एवं मुग्गमासाणवि, आमत्ता ण कप्पेंति, लसणं सव्वं, मिंजाउ वा पत्तं तस्सेव, णालोवि तस्सेव, कंदओवि तस्सेव ॥३४१॥

प्रत
वृत्यंक
[४३-४८]

दीप
अनुक्रम
[३७७-३८२]

तया आमं ण कप्पति। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अच्छिरं कुंभीए पचति तेंडुगं तेम्बरूवं, एवं चेव वेलुगं बिल्लं, कासवणालिता सीवण्णगं, आमगं असत्थपरिणतं लाभे संते नो पडिगाहेज्जा, कणतंदुला कणियाओ, कुंडओ कुकुसा, तेहिं चेव पूवलिता आमलिता, चाउला तंदुला, पिट्ठत्ति आमं, पिट्ठलोवि तिलपिट्ठं, तिलपप्पडं आमं असत्थपरिणयं लाभे सन्ते णो पडिगाहेज्जा ॥ अष्टमी पिंडैषणा परिसमाप्ता ॥

संबंधो सीलमधिकृतं, इहापि सीलं, पिंडोऽधिकृतो वा इहापि पिंड एव, खेत्तं ठवित्ता चउदिसिं पण्णवगदिसं वा पडुच्च संते० सड्ढा भवंति, संभवो तं साहुं प्रशान्तं दट्ठुं हिंडंतं सीलमंतादि संसिद्धा, इमं पुव्वं सिद्धं, मेहुणादो, इतरं आहारकंत्तिणि, छंदिहि, से भिक्खू विस्सामकरो वा खुहाए समणं च, एतप्पगारं सो तं अंतरिओ भणेज्जा पुरओ वा भणिज्जा—एतस्स देह, अम्हे अण्णतरं, धम्मो, लाभे संते णो पडिगाहेज्जा। समणादी पुव्वभणिता, गामादिसु पुरेसंथुता पच्छासंथुता, पुव्वं पविसमाणस्स, केवली बूता, उकरेति—परिवड्ढेति, उवक्खडेति रंधेति, सेत्तमादाय एगंतमवक्कमिज्जा, कालेण सतिकाले तत्थेव पढमं वच्चति इहरहावि हिंडंतं दट्ठुं आरंभं करेज्जा, गिही चेइयं; अहा सकालेवि पविट्ठस्स उवक्खडिज्जा आहू तं पडियाइक्खिस्सं, माइट्ठाणं संफासे, णो०, पुव्वामेव पडिसेहिज्जा, तहवि करेज्जा ण पडिगाहेज्जा। मंसमच्छा भज्जिज्जंति, सक्कुलिग्गहणा सुकखज्जगं, पूयग्गहणा वेल्लरद्धो तेल्लापूतो, आदेसो पाहुणओ उ, णो खद्धं २ पुणो २, णण्णत्थ गिलाणो। अण्णतरं अणेगप्रकारं, सुब्भिगाम वन्नगंधरसफासमन्तं, तव्विवरीतं दुब्भिं, एगं भुंजति एगं परिट्ठविज्जति मायादोसा सइंगालदोसो य, रागदोसरहिता भुंजिज्जा, पाणगं पुप्फं अच्छं, कसायकलुसं कणट्ठं, कसाए उट्ठो होज्जा, अच्छेण पुण सोधणादि, सुहेति मुहं, से भिक्खू वा भिक्खुणी ॥३४२॥

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं "पिण्डैषणा", नवम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[४९-५५]

दीप
अनुक्रम
[३८३-३८९]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः
॥३४३॥

१० पिंडैषणा

वा बहुपरियावण्णं णाम परिट्ठावणियं, बहुभिः पर्यायैः आपन्नं बहुभिः पर्यायापन्नं, गिलाणपाहुणगायरियमादीहिं। साहंमिया संभोइया उवहिसुत्तभत्तपाणादिसु, मणुन्नामणुन्नंसि य भंगा चत्तारि, अपरि० परिहारतवं न पडिवन्ना, सखिजे उवस्सए अन्नसाहिते ता अन्नपाडए वा सग्गामे, अणु पच्छा, परिट्ठवेंतेणं पाहुणगिलाणादी परिचत्ता, तत्थ गंतुं वदिज्जा–इमे मे असणपाणखाइमसाइमे भुंजह, पाणे, परिभाएह वा णं, उके सतमेव परियाभाए वा, अण्णमण्णेसिं देह, जावतियण्णं भवति, भुंजंतस्स पारिट्ठावणियं, भुत्ते पढमे कप्पं दाऊण इतरेण कप्पेतव्वं, अह भणाति इतरेण चेव परिट्ठाएयव्वं वा। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं समुद्दिस्स चारभडं कुलपुत्तगं मतहरगं वा, णीहडं बाहिं णिप्फिडितं, तं पुण छिन्नं वा अच्छिन्नं वा, छिन्नेत्ति देयं कुलगस्स वा, विवरीयमच्छिन्नं, समणुण्णातं गिण्हाहि, णिसट्ठं, एगंते पडी० सओ य गिहत्थाणं भावं आगारेहिं जाणित्ता एतं कप्पति एतं ण कप्पतित्ति॥ णवमी पिंडेसणा समत्ता॥

संबंधो साधारणाहिगारे इमंपि साहंमिएहिं साहारणं, मा ण सामन्नं, तं पुण बिण्हं तिण्हं वा, तस्स अणापुच्छा जस्सिच्छति तस्स देति असामायारीए वट्टति माया, सेत्तमादाय–तं गहाय तत्थ गच्छिज्जा, संति पुरेसंथुता पुव्वायरिया पव्वावगा आगता तेसिं देमि, जया वा आयरियाण मज्झगता जेसिं पासे सुतं पढितं सुतं वा ते पच्छासंथुता तेसिं, खद्धं २, कामं णाम इच्छातः, अहापज्जत्तं जहा पज्जत्तं जावइयं वा वदेज्जा, इहरहा साधारणतेणिता, इमा णिसाधारणतेणिया, अहवा तदपि सामण्णं आलावगसिद्धं चेव, भद्दगं णाम मणुन्नं धन्नादि, संपत्तं वा, भिक्खागतो चेव भुंजति जिब्भादंडेगं, विवन्नं वन्नादीहिं विगतं विवन्नं, विगतरसं वन्नगंधरसफासेहिं वा नु(५)प्रदेइ अण्णेसिं रसेहिं वा का (४) आहारति, माया णो०, एवं अंतरुच्छगं दोण्हाराणं मज्झं,

॥३४३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: प्रथम-अध्ययनं “पिण्डैषणा”, दशम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[४९-५५]

दीप
अनुक्रम
[३८३-३८९]

गंडीता चक्कलिता, छेदेण छिन्नता, चोदगं उच्छितोदया छल्ली इत्यर्थः, उच्छुसालगं गिरो, अहवा सगलं उच्छंदो फालीओ बहुगीतो, चोदगं खंडाखंडी, खंडाणि दलिता, सिंबलिं वा थोवातो सिंगाउ, थाली सव्वातो चेव, पिंडो समूहो य, उज्झियधम्मियादोसा। मांसे संजमायपवयणविराहणा, कारणिगगिलाणसड्डा जावइयं मंसगं दलेहि, सो य पुण सड्डो सड्ढी वा फरुसं ण भणेज्जा। खंडं गिलाणणिमित्तं वा मग्गितं लोणं दिण्णं, अणाभोगेण, पुव्वभणिता लोणा, सेसं आलावगसिद्धं जाव बहुपरियावण्णो। दसमी पिंडेसणा समासा ॥

संबंधो गिलाणाहिगारे इहापि गिलाणएण वा, भिक्खणसीलो भिक्खू 'अक्षु भक्षणे' भिक्षां भक्षन्तीति भिक्षाकाः समणादि भणिता, गिहि पव्वइतो वा, गिलाणस्स एत्थ बेति-से हंदह णं तस्साहरह खणेध दोण्हवि तेणियं करेति, पलिउंचणया आलोयमाणे, पिंडं संपत्तं, कहं पुण पलिउंचति?, पित्तितस्स तित्तकडुगं भण्णति, सिंभवियस्स महुरं ण भवति, सेसेसु विवरीयं जहिच्छियं आलोएइ, जहा गिलाणस्स सदति, कदाइ वाधातेणं ण णिज्जावि थोवं भत्तपाणं गिलाणे, अत्थंतो सूरो, गोणा खंधावारो हत्थी मत्तो सूलं वा होज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं-आयतणदोसाइं, अपसत्थाइं संसारस्स, पसत्थाइं मोक्खस्स णाणादी। इमा वा सत्त पिंडेसणा, तंजहा-असंसट्ठा १ संसट्ठा २ उद्धडा ३ अप्पलेवा ४ उवट्ठियाए उग्गहिता ५ पग्गहिता ६ उज्झियधम्मियागा ७, पढमा दोहिवि असंसट्ठा, सत्तुगकुम्मासा सुक्खोदणो वा, सयं जायति परो वा देति, गिलाणादिकारणेण वा इतरंपि गिण्हति, बितिया दोहिवि संसट्ठा, सुट्ठुतरं पच्छेकम्मादोसा वज्जित्ता, ततिया पाईणादि पण्णवगदिसा गहिता, कुक्कुडीयंच्छति वा, कंसरुप्पमयं वा पहडए वा अन्नंमि च्छूढं, सरगं व समयं पिच्छिगादि, पिडीया छड्डगं पलगं वा परगंसि वा, धरा भूमी, अहावराहं तंजहा ॥३४४॥

प्रथम चूलिकायाः प्रथम-अध्ययनं “पिण्डैषणा”, एकादशम-उद्देशकः आरब्धः

प्रत
वृत्यंक
[५६-६३]

दीप
अनुक्रम
[३९०-३९९]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३४५॥

पिंडैषणाध्य०

वरा हंतीति वराहं उकारतीत्यर्थः, तं अलंदिग: वा कुंडगं वा, परज्झं मणिमत्रमादी, विरूवरूवभायणाणि अणेगप्पगाराणि, भायणं अणेगप्पगारमेव, असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते चत्तारि भंगा, गच्छवासीणं चउहिंपि अणिसीणं चउहिंपि गिण्हंति, जाव णं संसट्ठेहिं दोहिवि गहणं भंगेहिं, सुत्तादेसेण वा ३, पुहुगादी पुव्वभणिता, अप्पसत्थकम्मे अभावे, अप्पसत्थे पज्जवजायंति निरवसेसं, पाणतं तक्कणेसरणा ४ पंचमी उवगहिता, उवगहियं भुंजमाणस्स सअट्ठाए उवणीतं, सरावं सरावमेव, डिंडिमं थडिक्कगं, कोसओ कोसगमेव, जस्स तं उव्वत्तंतस्स पाणीसु जो दगलेवो सोवि परिणतो सो वा दिज्जा, जेण वा उवणीतं सो वा देज्जा ५, छट्ठा उग्गहिता पग्गहिता, उग्गहितं दव्वं हत्थगतं, पग्गहितं दिज्जमाणं, एलुगविक्खंभमेत्तं जस्सवि अट्ठाए उग्गहियं सोवि तं नेच्छति, पादपरियावन्नं कंसभायणं, थिगदगलेवो पाणीसु, नत्थि दगलेवो, देंतस्स नियत्तो भावो छट्ठी ६ सत्तमी देंतस्सवि जस्सवि दिज्जति दोण्हवि णियत्तो भावो, अवउज्झियधम्मिया, पुव्वदेसे किर पुव्वण्हे रद्धं तं अवरण्हे परिट्ठविज्जति, साहू आगमणं च, तंपि भायणगं वा दिज्जा कप्पति, जिणकप्पियस्स पंचहि गहणं, थेराणं सत्तहिवि, एवं पाणएवि, चउत्थी अप्पलेवा तिलोदगादि, इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं, गव्वो ण कायव्वो जहाऽहं एगवत्थो दुवत्थो, मिच्छापडिवन्ना वा एते, अहमेगो समाहिपडिवण्णो, तमाणा भगवतो, अन्योऽन्यसमाधानार्थं । **पिण्डैषणाध्ययनं प्रथमं समाप्तं ॥**

संबंधो—एवं भत्तपाणं गहाय ठायव्वं भोत्तव्वं वा, एतेण संबंधेणं सेज्जा आगता, सेज्जा णाम वसही, 'सेज्जा उग्गम उप्पायण' गाहा ( ) पमाणे अतिरित्ता, इंगाले सुभा, धूमे विसमा, कारणे वासमावसतां दो अहिगारा वसहीए, ओहे विसेसो य आहिओ, जहा एगा मणुस्सजाती सचेव बंभणादीहिं विसेसिज्जति, एवं ओहओ सव्वेवि सेज्जविसोहिकारगा, विसेसो उद्देसएहिं, पढमे उग्ग- ॥३४५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: द्वितीय-अध्ययनं “शयैषणा”, आरब्धं

आगम (०१)	"आचार" - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) श्रुतस्कंध [२], चूडा [१], अध्ययन [२], उद्देशक [१], निर्युक्ति: [२९८-३०४], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक ६४-७१]
प्रत वृत्यंक [६४-७१] दीप अनुक्रम [४००-४०५]	श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३४६॥ मदोसा 'एसं साहम्मियं समुद्दिस्स' संसत्ता सागारिय सागणिय पाणेहिं वा, संजयपच्चवाईए, सचेव वसही इत्थी बंभपच्चवाता, पासंडचारगादीहिं पच्चवातो, बितिएण वा सोचवादी गाहावती सूयीसमायारा य बहुविहाण य सिज्जाण विवेगो, 'नतिए जयंतच्छलणा' गाहा (३०७) सिद्धा चेव, तीसे पुण सेज्जाए छक्को णिक्खेवो णाम ठवणा गता, दव्वे सचित्ताचित्तमीसगा, (३०२) सचित्ता दुपदचतुप्पदअपदाणं, दुपदस्स मणुसस्सुवरिं, चतुप्पदस्स हत्थिखंधपट्ठेसु महिसयस्स वा, अपदे हरियकायस्स, अहवा सचित्ताए दव्वसेज्जाए इमं उदाहरणं—उक्कलो कलिंगो य दो भायरो पल्लीवती य, तेसिं च दोण्हं भइणी वग्गुमती णाम, गोयमो य परिव्वायतो, तेणं तत्थ संवसंतेणं बहु धणं विढत्तं, ताहे वग्गुमतीए पासा अत्थिधणो ठिओ, अपत्थो त्तिकाऊणं अहममग्गेण धाडितो, इतरेणं सधिं णाऊणं सिद्धत्थगा विकिण्णा, ते उग्गता, तेण मग्गेण ते पल्लीवती आहणाविया, परिव्वायओ वेल्लु(वग्गु)मतीए पोट्टं फालेत्था सुत्थो, एसा च सचित्ता दव्वसेज्जा, वितियादेसेणं वेल्लुमती चेव पल्लीए आहेवच्चं पोरेवच्चं पोरेति, गोयमो बंभणो तहिं, तत्थ उक्कलिकलंगा आजीवगा दोन्नि आगता, तहिं कोंटलेण वल्लुमती लासिता, तीए गोयमज्झयणाओ आवासो हरित्ता तेसिं दिण्णो, तहेव अन्नमग्गधारणा सिद्धत्थगपाडणं च, तत्थ पइण्णा गोयमेग कया—फालेउं पोट्टं सुयामि, पूरिया सा, एतिसा अचित्ता भूमिसंथारएहिं उग्गमादिसुद्धा वा वसही, मीसिगा सतणिज्जे पुप्फोवयारकलिते, तणा वा अफासुगा न भूमी, फासुगा वा भूमी तणा अफासुगा, एसा तदुभवमीसिगा, पच्छतियमीसगा वा वच्चा, खित्ते जम्मि खित्ते वण्णिज्जति, एवं कालेवि, भावे दुविहा—कायगता छव्विहभावंमि, गब्भो काए वसति सा सुहा दुहा य, जहा सुहिताए होति सुही दुहियाए दुक्खितो भवति, उदइओ उदइए भावे वसति एवं सेसावि, जहा जत्थाहं तत्थ मे गिहं, अणुयोगदारवत्तव्वयाए तिण्हं सद्दणयाणं आयभावे चेव वसति, पिंडैषणाध्य० ॥३४६॥ मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:
	प्रथम चूलिकाया: द्वितीय-अध्ययनं "शयैषणा", प्रथम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[६४-७१]

दीप
अनुक्रम
[४००-४०५]

दव्वसेज्जाए पगतं, सा केरिसिता संजमजोगत्ति नायव्वा (३०१) सुत्तालावं 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा०' ठाणं काउस्सग्गादी, सयणीयं सेज्जा, णिसीहिया जत्थ णिवसति, चेतिज्ज आसेविज्जत्ति, तं अप्पंडं० एगं साहम्मियं समुद्दिस्स च्छलणा आलावा तहेव जहा पिंडेसणाए, णवरं बहिया णीहडं छण्णी सगडं वा च्छड्भंगं णीणिज्जति कड्ढितो पासेहिं, ओकिंचिमे उवरिं उल्लवितो, छन्नो उवरि चेव, लित्तो कुड्डा, एते उत्तरगुणा, मूलगुणे अट्ठवि हणंति, घट्ठा विसमा समीकता, मट्ठा माइता, संमट्ठा पमज्जिता, संपधूविता दुग्गंधा सुगंधा कता, वंसगकडणो कम्मे अविसोहिकोडी, दूमित धूविता विसोधिकोडी, खुड्डिनाइं दुवारियाओ जहा पिंडेसणाए, णिण्णुक्खु णीप्पता तं अंतो वा बाहिं वा, उदए पसूयाणि कंदाणि वा जहा उप्पलकंदगा, पोमणी वा, उस्सए कुंडएसु मट्टियं, तप्पोसणिया छादुं वाविज्जति, एवं मूलबीयहरियाणि, उदगप्पसूयाणि वा इतराणि वा, संजयट्ठाए णीणेज्जा, पीढं ण्हाणपीढादी पुव्वभणितानि, स्थानात् अन्यस्थानं साहरति-संकामेति, दोसा ते एव, खंधंति एवं खंभे पासाते दुड्डे वा विच्छिण्णे अट्टपारए वा, फालिहोवि कोइ विच्छिन्नो जत्थ सुप्पेज्जति, ठाती वा, अण्णतरग्गहणा चंपले वा जत्थ पुरिसो निवन्नो मादि, नान्यत्र, आगाढागाढं असिवाती अलब्भमाणो वा, आहच्च-कदाचित् स्थितः स्यात् हत्थाणि ४, अविरुद्धं पागते बहुवयणं विण्हं, सुहाणि वा, कहं ?, उच्यते, अत्रापि त्रयं, आसए आलुए णववामणमुहाणि, उच्छिते उस्सद्धं उच्चारादि, पवयणादिसु दोसा, सागारिया पामट्ठच्छगिभत्था पुरिसेहिं, सागणियाए अगणिसंघट्टो सउदयाए उदगवाहा, सेहगिलाणादिदोसा, सह इत्थिताहिं सइत्थिया आतपरसमुत्था, सखुड्डुत्ति खुड्डाणि चेडरूवाणि, सण्णाभूमिं गच्छंति, पडंते य वदंताणि, इहरहा य वाउलेंति, अह वासुट्ठा सीहवग्घा सुणगा, पसू गोणमहिसादि तं, भंगमादि दोसा, एतेसु भत्तपाणाइं च दट्ठुं सेहाणं भुत्ताभुत्तदोसा, आताए सेत्तं भिक्खुस्स

प्रत वृत्यंक [६४-७१]

दीप अनुक्रम [४००-४०५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३४८॥

पिंडैषणाध्य०

अलसताए वा विसूइगा वा, रोगा सोलस, आयंको जरादी, दीहघाती वा रोगा, आयंको आसुघाती, कालुणपडियाए तेल्लेण वा ४ सिणाणं उव्वण्हाणं, कट्टुव(को)लवणगं, लोद्धं कसाए, वण्णेण हलिद्दमादी, चुण्णो छगलं इट्टालचुण्णओ वा, पउमं कुसुंभं कुंकुमं वा, आघंसंति एक्कसिं, पघंसंति पुणो २, उव्वलिज्ज वा २, सीतोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज पहोएज्ज, सिणाविज्जत्ति अण्णेणं, सिंचति सयं, दारुणा दारुपरिणामंति कट्टुड परियट्टेति दारुं, अथवा उत्तराधरसंजोएण अगणिं पाडित्ता उज्जालेज्जा उक्कोसंति वा, उच्चावयं मणं णियच्छिज्जा, उच्चावयं अणेगप्पगारं, अक्कोसंतु वा मा वा, अगणिकायं उज्जालिज्जा, ससणिद्धा एव एत्थ उज्जा, उज्जलंतो चोरा सावयं वा ण एहिंत्ति, अहवा सुट्ठु विज्झवितो, मा एणं दच्छितुं सावट्टाहिंति तेणगा एहिंति, एवं कस्सइ उज्जोओ पितो, कस्सइ अंधगारो, अनाणमेतं, कुंडले च कुंचितं, गुणो दोरादी एगतरं, मणी मणिरेव, सूचिए सुत्तिका, हिरण्णं मासगमाला, तरुणियं कुमारिमज्झिमवयं वा, एरिसगा मे भोतिगा आसि णं वा एरिसिगा भाणिज्जा, ण मए समाणं संचिक्खाहि, मा ण सा एज्जा, कहं मम एताए सव्वं मेलतो होज्जा ?, अहवा सा कण्णा ताहे चिंतेति—एस मए पडुप्पज्जेज्जा, अतो ण मे तं इत्थिगाति लवे सीलमंतादि, संवासा जा एतेहिं सद्धिं मेहुणं अप्पता य सेवति, भूयवियाइणिं पुत्तं पुत्तवियाइं यस्मिन् ओरालसरीरं ते, यस्मिन् सूरो, वच्चंसी दीप्तिवान्, जसंसी लोगकयसंपराइयपराक्रमः, आलोगदरिसणिज्जं दरिसणादेः प्रीतिजणणं उवसंपाओ उवसप्पं करेज्जा, आयपरतदुभयसमुत्था दोसा, तम्हा तारिसए ण ठाइयव्वं, एतं खलु तस्स भिक्खुस्स वा० सामग्गियं। इति शय्याध्ययने प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥

संबंधो सागारिदोसा अणुयत्तंति चेव, गाहावई नामेगे सुइसमायारे, गिम्हे चंदागादिणा समालभंति, सिसिरे अगरुणा, ॥३४८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रथम चूलिकायाः द्वितीय-अध्ययनं "शय्यैषणा", द्वितीय-उद्देशकः आरब्धः

प्रत वृत्यंक [७२-८६]

दीप अनुक्रम [४०६-४२०]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३४९॥

शय्याध्ययनं उ० २

वरिसारत्ते धूवेणं, साहुणो ण ण्हायंति, मोयसमा० वियरंति तेण तेसिं सो गंधो पडिकूलो, जं पुव्वकम्मंति गिहत्थाणं पुव्वकम्मं उच्छोलणा तं वा पच्छा पव्वज्ञा, समाउट्टा होंति, तत्थ बाउसदोसा, अह ण करेति तो उड्डाहो, अहवा ताइं एवं एए जेमणमाइओ पच्छा, संजयउवरोहो सुत्तत्थाणं, उस्सूरेणं वा पच्छिमाए पोरिसीए जमिताइओ, ताहे संजयाणं पाढवाघातोत्ति पदे चेव जिमिताइं, उवक्खडणावि एवं, प्रत्यागते उस्सक्कणं, उस्सक्कणदोसा, भिक्खुप्पडियाए वा वड्डमाणा करेज्ज वा ण वा, अह भिक्खु० आताणमेतं भिक्खुस्स, अप्पणो उवक्खडिज्जा, तत्थ भुंजेज्ज वा पीतिज्जिदावि, पट्टि तए एसिं चक्खुपहे अच्छति, ताहे सीदंति गिण्हंते संजमविराहणा, अणेगरूवाइं भिन्नं पुढालिताणि, दारुणा परिणायं परियट्टणं अभिजाणणं वा, वियट्टित्तए अदूरे, तप्पति संजमविराहणा, से भिक्खू वा भिक्खुणी कवाडं तदेव संधिं चरति तस्संधीचारि, तं घरं उब्भकट्ठेहिं कतं, खेत्तं अलभमाणगा बाहिरछिड्डं मग्गंति, साहू णिग्गतो, संधी णाम अंतरे छिड्डं, तेणं उडयं पविसिज्जा, आयुधहत्थगतो०, भिक्खु नो कप्पति अयं तेणे पवसिति वा ण वा पविसति, उवल्लयति ढुक्कति व्रजति रुस्सति, साहू भणति—तेणं हडंति अमुतेण हडं ?, ताहे साहू भणति—अण्णेण हडं, ण तेण, एवं साहू चेव भणति, तस्स अमुगस्स ठवियगं हडं, ताणि वा भणंति—अमुगस्स ठवियगं हडं ?, ताहे साहू भणति सो—तस्स अन्नस्स हडं, सो वा साहू किंचि दरिसेति अयं उवचरए, उवचरओ णाम तारिओ, ताणि वा साहुं चेव भणंति—अयं तेणे अयं उवचरिये, अयं एत्थ अकासी चरियं, आसि वा एत्थ, सब्भावे कहिए चोराओ भयं, तुण्हिक्के एवंगिरा अतेणगमिति संकति, एते सागारिए भवे दोसा। से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तणपुंजेसु जा गिहाणं उवरितना कया, पलालं वा मंडपस्स उवरिं, हेट्ठा भूमी रमणिज्ञा, संडेहिं णो ठाणं चेतिज्ञा, अप्पंडेहिं चेतिज्ञा। से आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा साहू मासं अच्छितत्तो अह ॥३४९॥

प्रत
वृत्यंक
[७२-
८६]

दीप
अनुक्रम
[४०६-
४२०]

तंमि चेव दिवसे तओ ण एति, एवं सव्वं, निरंतरं—अविरहिता, साहूण तत्थ दोसा, सीते सड्ढी तीए वा परिकम्मं, छावणं संजयट्ठाए भवति, इदाणिं भण्णति अप्पकिरिया, कालाइक्कंता जहिं स मासकप्पं वासावासं वा करेति, अतिकंता पाइणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा दिसा पन्नवगकप्पत्ति, कालाक्खरा रज्जादिसा वा गहिता, अड्डो भणितो एव, णो सुणिस्संतो न सुद्ध-आयारगोयरं सद्दहति, पुन्नफलं वसहीदाणस्स समणमाहणा अतिथिकिवणवणीमगा समुद्दिस्स, आएसणा णित्थरणं सिज्झति वणिवुस्सति, अहवा लोहारसालमादी, आयतणं पासंडाणं, अवत्थन्तिया बुद्धस्स पासे, देवउलं वाणमंतररहितं, देउलं वाणमंतरं सपडिमं इत्यर्थः, सभा मंडवो, चलंती वा सा सत्ताणमंतरा इतरा वा, पवा जत्थ पाणितं पिज्जइ, पाणितगिहं; आवणो सकुडओ, पणियसाला आवणो चेव अकुडओ, जाणगिहं रहादीण वासकुडं, सा एगेसिं चेव अकुड्डा, छुहाकडा छुहा जत्थ कोहाविज्जति वा, दब्भा वलिज्जंति विणंति वा छिज्जंति वा, वच्चओ पिज्जति वलिज्जति य, वज्झा वरत्ता, जा गड्डीणं दलिज्जंति, इंगालकम्मं, एतेसिं सभातो भवंति, सुसाणे गिहाइं, गिरि जहा रवइयागिरिंमि लेणमादी, कंदरा गिरिगुहा, संतिथे घराइं, सेलपाहाणघराइं, उवट्ठाणगिहं जत्थ जावइओ उड्डावितु दज्झंति, सोभणंति भवणं, भा दीप्तौ, उच्चत्तंतेहिं उवत्ति, एसा अतिकंता, सा दुसीलमंतात्तिकाऊणं एते आहाकम्मंमि ण वट्टंति, अप्पणो सयट्ठाए कयाइं, एतेसिं दोसा—अप्पणो अण्णाइं करेमो इतराइतरेहिं कालातिकंता, अणतिकंता इमा अज्जा इतरा, एवं सेसावि अण्णतरा इत्यर्थः, पाहुडेहिं पाहुडंति वा पहेणगंति वा एगट्ठं, कस्स ?, कर्मबन्धस्स, णिरतस्स पाहुडाइं दुग्गतिपाहुडाइं च अप्पसत्था सेवणाए सावज्जकिरिया, महावज्जा पासंडाण अट्ठाए एसा चेव वत्तव्वया, सावज्जा पंचण्हं समणाणं पगणित २ एसा चेव वत्तव्वया, महासावज्जा एगं समणस्स जातं समुद्दिस्स जावति गिहाणि वा महता छज्जीवनिकायस-

प्रत वृत्यंक [७२-८६]

दीप अनुक्रम [४०६-४२०]

मारंभेणं महता आरंभसमारंभेणं अणेगप्पगारेहिं च आरंभेहिं संजयट्ठाए छावत्ति लिप्पति संथारगा उयरगा कुणंति दुवारं करेंति पीवंति वादो अ, सीतोदगपडे अब्भितरता सण्णिक्खित्ता, अगणिकायं वा उज्जालेंति, पाउया वा जे एतेसु उवागच्छंति, इतराइतरेहिं पुव्वभणितं दुपक्खं कम्मं सेवंति अपसत्थासु, जहा रागो दोसा य, पुव्वं पावं, इहलोइयं पारलोइयं च, अहवा संपराइयं ईरियावहियं एसा महासावज्जा, अप्पसावज्जाए अप्पणो सयट्ठाए चेएति, इतराइतरेहिं इह अप्पमत्थाणि वज्जित्ता पसत्थेहिं पाहुडेहिं णिव्वाणस्स सग्गस्स वा एगपक्खं कम्मं सेवति, एगपक्खं ईरियावहियं, एसा अप्पसावज्जा, एतं खलु तस्स भिक्खुस्स वा० सामग्गियं ॥ इति शय्याध्ययनस्य द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥

संबंधो अफासुगेणं विवागे फासुगाणं गहणं, वसही सेया णो सुलभा, फासुए च उञ्छसए आहारो सुहं सोहिज्जति, से बही दुक्खं, अचत्थं अण्णातेण कतउंछे अहेसणिज्जे जहा एसणिज्जे सद्दो पुच्छति, उज्जगं साहुः, कम्मत्थसाहणेण अत्थंति भणंति, पढमस्स ता णत्थि अप्पणो ठाणाइउ, पडिस्सयं करेउ, एवं नो सुलभे फासुए उंछेण य सुद्धं इमं पाहुडेहिंति कारणेहिं, काणि वा ताणि च ?, णंगलमादीणि, ते कुडाण भूमीते वा लेवणं, संथारगा उयट्ठगो, दुवारा खुड्डुगा महल्लगा करेंति, पिहणं चेडस्स वा, पिंडवातं मम गिण्ह दोसा पुच्छंति वा, किमत्थं इव साहू तं इच्छंति ? उज्जू भणति, अह आह आयरिया–णवकम्मणभूमीणं छिड्डाणं काउस्सग्गा भायणाणि वा जत्थ पुच्छंति निसीहिया, एवं एतेसिं पभवो, चरिया जत्थ साहुणो चंकमणियं करेंति, आयरिओ ठाणं काउस्सग्गादी निसीहिया, जत्थ उ वसति सेज्जा सयंति, संथारओ इक्कडादी, पिंडवातो आयरिओ, को एवं अक्खाति ? संति भिक्खुणो एज्जगा णियागपडिवण्णा चरित्तपडिवण्णा अमातिणो, त्रियाहिया व्याख्याता, एवं भणितुं साहुणो गता, पच्छा ते ॥३५१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: द्वितीय-अध्ययनं “शयैषणा”, तृतीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[८७-
११०]

दीप
अनुक्रम
[४२१-
४४४]

वा अण्णे वा गता, रयणग्गहणा संविग्गो, सो गिहत्थो, मज्झो असिन् भत्तिए, केषां एगता उक्खित्तपुव्वा—पढमं साहूणं उक्खिवति अग्गे भिक्खं, भिक्खं हिंडंताणं, 'थक्के थक्कावडितं', अभत्तए सालिभत्तं जातं मज्झाजातं 'मज्झ य पइस्स मरणं दियरस्स मे मया भज्जा' उक्खित्तपुव्वा मा एतं चरगादीणं देह, परिभूतपुव्वतं अप्पणो भुंजंति, साहूण य देंति, परिट्ठवियपुव्वा अच्चणियं करेंति, तुरि पच्चाइतुं, मा मे से सज्ञातरो अगिण्हंतेण भत्तिभंगं, अण्णपासंडावि जस्स भणिता तस्स अणुग्गहं करेंति, एवं गेण्हणे दोसा, कत्थति पुण वसही दुल्लभा नो भिक्खा दुल्लभा, णो वसही एगत्थ भिक्खा, से एवं साहू उज्जुकडो उक्खायमाणो सम्यक् अक्खाति ण लज्जति, कम्मं बंधेणं पुच्छा, आस० गाहा, वागरणं, हंता सम्यक् भणति, ण लिप्पति कम्मबंधेण इत्यर्थः, एते परसमुत्था दोसा, इमे आयसमुत्था वसहीदोसा, अतिरित्ता पड्डिता ण अण्णतित्थिया एज्जा खुड्डाखुड्डि एव दुवारं संनिरुद्धं, खुड्डलगं वा, णिव्वितओ निरुद्धा साधूहिं बा भरितिया, अहवा खुड्डुतिया चेव भण्णाति सण्णिरुद्धिया, एतासु दिवावि ण कप्पति, कारणि ट्ठियाणं जयणा, राइविगाला भणिता, पुरा हत्थेण रयहरणेण हत्थोपचारं कुज्जा पच्छा करेज्जा, आवसियाणिसज्ज णिन्ताणं, पविसंताणं णिसीहिया आसेज्जा, के च दोसा ?, समणा पंच, माहणा धीयारा, अहवा सावगा, भत्तं, छत्तगा मे, वमेत्तए उच्चारादि, भंडयादि णिज्जोगो, सव्वं वा उवगरणं, अट्ठी आयप्पभिसिता कट्ठमयी, तिसिगा भिसिगा चेव, वलग्गहणा वत्थं वलयिणीदोसा, चंमए मिगचंमं, उदाहरणाओ वा चंमकोसं, उक्खल्लओ अंगुजट्ठा कोसए वा, चंमछेदणयं बज्झो दुवट्टादी, साहू पवडमाणेसु स दोसा, पउरण्णपाणं अन्नत्थ णत्थि, वसही दुल्लभे य, अण्णतित्थियमादीसु जयणा, अणुवीयि अणुविचिंत्य, इस्सरो पभू सामी, स महिड्ढिए पभु संदिट्ठो कामं जाव तत्र अम्ह य इच्छा, अहालंदं जहाकालं उदगवासासु अहा-

प्रत वृत्यंक [८७-११०]

दीप अनुक्रम [४२१-४४४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३५३॥

शय्याध्य०

परिण्णायं जाव अणुजाणसि ता ता चेव वसिस्सामि, सो आउत्तो भण्णइ–अहं पुव्वं दिज्जिस्सामि जाव आउसो ! जाव तुमं जाव साहम्मियत्ति जत्तिया तुमं इच्छसि जे वा तुमं भणसि, णामेणं अणुसुओ गोत्तेणं विसेसिओ, कारणे एवं, णिक्कारणे ण ट्ठायंति, तेण परं जति तुमं उवविज्जहिसि ण वा तव रोएइ, इह हि उवस्सओ वा भज्जिहिति, परेणवि, वाहरण्णामो णामो गोत्तं जाणेत्ता, णामेणं उस्सुओ गोत्तेणं विसेसितो, भत्तपाणं ण गिण्हति, सागारिय सागारितो, पण्णो आयरिओ, अहवा विदू जाणओ, तस्स पण्णयस्स ण भवति, निष्क्रमणं प्रवेश संकड इत्यर्थः, वायणपुच्छणपरियट्टणधम्माणुओगचिंताए, सागारिए ण ताणि सक्कंति करेउं, तम्हा ट्ठाणादीणि ण कुज्जा, मज्झेण गंतुं वत्थए अक्कोसमादी, सिणाणादी सीतोदएण पंच आलावगा सिद्धा, णिगिणाणग्गाओ ट्ठियाओ अच्छंति, णिगिणातो चलिज्जंति, मेहुणधम्मं विन्नवेंति ओभासंति अविरतगा साहुं वा तत्थरिंस, मेहुणपत्तियं चेव अन्नं किंचि गुहा, आदिण्णो णाम सागारियमादिणा सलाखा, सच्चित्तं कम्म इति पढमं संथारगं ण गेण्हेज्जा, बितियं अप्पंडं गुरुयं तंपि ण गेण्हति, ततियं अप्पंडं लहुयं अपाडिहारियं न गिण्हति, चउत्थं अप्पंडं लहुगं पाडिहारियं णो, अहावच्चं न गेण्हेज्जा, पंचमं अप्पंडं लहुगं पाडिहारियं अहावच्चं पडिगाहिज्ज, लहुओ जो वीणागहणे आणिज्जति, लहुओ आहावच्चे, पाडिहारिओ अट्ठ भंगा, पढमो पसत्थो, इच्चेयाइं आययणाइं आयतणाणि वा, संसारस्स अप्पसत्थाइं, पसत्थाइं मोक्खस्स, पडिमा प्रतिज्ञा प्रतिपत्तिर्वा, उद्दिस्सित णामं गेण्हेत्तुं, जहा इक्कडं वा इक्कडाकयारादिके, कढिणो किं घम्मादी वासरत्ते, जंतुयं तणजाती, परओ मंडओ, मोरगो तणजाती वा, तणं सव्वमेव जंकिंचि, कुसा दब्भा, कुचते सण्हए दव्वे, वच्चए सिन्धु, पलालं पलालमेव, एतेसिं माणसेज्जं गिण्हंति जत्थ भूमी ओमिज्जेति, उद्दिट्ठे कताइ छिंदित्तु आणेज्ज, गते ण पेहा विसुद्धतरा, पेहा णाम पिक्खित्तु, एरिसगं ॥३५३॥

प्रत
वृत्यंक
[१११-११९]

दीप
अनुक्रम
[४४५-४५३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः
॥३५४॥

शय्याध्य०

देहि, बितिया पडिमा, ततिया अधासमण्णागता णाम जति बाहिं वसति बाहिं चेव दुकडाणि, णो अंतो, साहीओ ण वेसणीओ आणेयव्वा, अह णं अंतो अंतो चेव इक्कडाणि चेव, णत्थि तो उक्कुडगो णेसिज्जिओ विहरिज्ञा तच्चा पडिमा, अहावरा चउत्था अहासंगडा तत्थत्था अहासंगडा पुढविसिलाओ पट्टओ पाहाणसिला वा कट्ठसिला वा, सिलाइग्गहणा गुरुया अहासंधडग्गहणा भूमीए एलगग्गं चेव, अलाभे उक्कुड्डुगणेसिज्ञतो चउत्था पडिमा, मिच्छा, पडिमापडिवण्णा दीहतवे अप्पिण०, जय णाम सअंडं ण पच्चप्पिणंति, अप्पंडं पडिलेह पमज्ञतोविय विणुद्धुणिय चलिय पच्चप्पि० लेहित्ता व राओ वा वियाले वा पवडणमादी दोसा, सेज्ञासंथारभूमीए गिज्झंतीए इमे आचरियगाई एकारस मुतित्तु सेसाणं जहाराइणिया, गणी अण्णगणाओ आयरिओ, गणधरो अज्ञाणं वावारवाहतो, सव्वेसिं एतेसिं विसेसो कप्पो, वातादीण य ट्ठाणं तत्थेव, समविसमपवायाण य तत्रैव, अंतो मज्झे वा, बहुफासुगादी सेज्ञा संथारगा आलावगसिद्धा, णवरं आसादेति संघट्टेति आसतं–मुहं पोसियं–अधिट्ठाणं, पवायणिवायमादिसु पसत्थासु सइंगाला, अप्पसत्थासु सधूमा, पडिग्गहियतरं विहारं विहरेज्ञा णो किंचि गिलाएज्ञा वलादि णाम मातं करेति, कहं ?– विसमदंसमसगादिसु बाहिं अच्छति अण्णत्थ वा इति ॥ शय्याऽध्ययनं परिसमाप्तं ॥

संबंधो सेज्ञाओ भुज्जित्तु सण्णाभूमिं गच्छंतस्स रिया अहासेज्ञं च भिक्खं च मग्गंतस्स रिया सोहेयव्वा, ताए विही भाणियव्वा, ठाणाओ अणंतरं वा रिया, तस्स उद्देसगाहिगारो सव्वेऽविरियाविसोधिकारगा (२१३) तहेति इमो विसेसो–पढमे पवेसो णिग्गमो य सरते अद्धाणजयणा णावजयणा वा बितियए णावारूढे छलणं णाम जंघाहिं संतारिमे व पुच्छियव्वं सपच्चवायणिपच्चवाये, ततिए दाणं नावियादीणं अप्पडिबद्धो य उवधिंमि वच्चे, ण य रायसंपसारियं गाहावइसंपसारियं वा, वज्जेयव्वा, ॥३५४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: तृतीय-अध्ययनं “ईर्या”, प्रथम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[१११-११९]

दीप
अनुक्रम
[४४५-४५३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३५५॥

ईर्याध्ययनं

दव्वरिया सच्चित्तस्स जहा वाउणो पुरिसेण वा पेरियं दव्वं, मणुस्सस्स वा गच्छतो अणाउत्तस्स, अचित्ता जहा रसस्स, परमाणुस्स वा, मीसगा जहा सगडस्स, खेत्तरिया जंमि खेत्ते भूमिवलं पडुच्च, कालएरिया जहा धूयते णयाणं, भावे रीया रियासमिती संजमे सत्तरसविहे संजमो, कहं वा णिद्दोसं गमणं समणस्स पुच्छा ?, वागरणे सोलस भंगा, पंथेण दिया जयणाए सालंबो पढमो सुद्धो, सेसाणं जत्थ आलंबणं अत्थि नाणादि, उप्पधि वासवाति, जयणाएवि सुद्धो चेव, गाहाणुलोमं बद्धा वा सोलस भंगा, सुत्ताणुगमे अब्भुवगते अभ्यर्णं प्राप्तः अभ्युपगत इत्यर्थः, वासा० वर्षासु वासो, वासे चेव, अहवा वासाकाले वासो वासे चेव वर्षासु वर्षा इत्यर्थः, अभिमुखेन प्रविष्टः अभिप्रविष्टः वृद्धे काले पत्ते णो वासे भंगा, पाणग्गहणा इंदगोवबीयोवगादी अभिसंभूता जावइया, अहुणुब्भिण्णा अङ्कुरिता इत्यर्थः, अंतरितो वरिसारत्तो जहा 'अंतरघणसामलो भगवं' अंतरालं वा अंते अणोकंतो लोएणं चरगादीहिं वा, अकंतावि अणकंतसरिसा णो विण्णाता पाणियंण वच्चति०, सेवं वा णो गा० से भिक्खू वा वीयारभूमिं, णत्थि विहारभूमी सज्झायभूमी, पीढके णत्थि मया, इहरहा वरिसारत्ते णिसिज्जा कुत्थति, फलगं संथारओ, सेज्जाओवहिमादि जहन्नेणं चउगुणं खेत्तं, विरायइ समिई विहारवसही आहारे उक्कस्सं तेरसगुणोववेयं चिक्खिल्ल पाण थंडिल गोरस वसही जणाउले वेज्जा। ओसध णिचता अधिपति पासंडा भिक्खु सज्झातो ॥१॥ णो सुलभे फासुते उंछे पुव्वुत्तं पिंडेसणाए, उवालएज्जा आगच्छेज्जा, विवरीएसु पसत्थए उल्लिएज्जा, अह पुण एवं जाणेज्जा चत्तारि मासा णिग्गमो तिविहो, आरेण पुण्णो परेण असिवादिसु कारणेसु, आयरियअसाधए आरेणवि, वाघातेण सुक्खेसु पव्वेसु, कत्तियपाडिवए, दसराए गतेसु, ततो परेण पवसेणवि णिग्गंतव्वं, आला दसराए यतिक्कंते बहुपाणे मसगादिसु, समणातिसु अणागएसु ण रीतेज्जा, विवरीते रीएज्जा, कहं ?, ॥३५५॥

प्रत
वृत्यंक
[१११-११९]

दीप
अनुक्रम
[४४५-४५३]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३५६॥ | ईर्याध्य०

पुरतो जुगमात्रं पेहाए दुहतो य पार्श्वत इत्यर्थः; दट्ठुत्ति उक्खिवित्तु अतिक्कमित्तु वा, साहट्टु पाएत्ति साहरति निवर्त्तयतीत्यर्थः, वितिरिच्छं पासेणं अतिक्कमति, सति अ विज्जमाने, अन्यत्र गच्छेत, ण उज्जुगं चीयमाइसुवि ण गच्छिज्जा, विरूवरूवाणि भासाए वेसेण य, भासाए जहा मीडसवरादीणं, वेसेण बाहुकट्टेण वा अवणइम्मि चूडगा सीसे मणुस्साण ओलिहिज्जति, एवं अणेगप्पगारा, पचंतियाइं अद्धछवीसाए जणवयाणं जे अंता एए भवंति—रिताए जए वेयाए, पच्चंता, पच्चंते भवा प्रत्यंतिका णिमाणुस्सगणा इत्यर्थः, दसंतीति दसुगाणि, जहा पुव्वसमुद्दलग्गा, दसुंति मिलक्खाणि, जं किंचि भणितो रुस्सति, अणारियाणि अनार्यवृत्ताणि, दुस्सण्णप्पाणि रुद्दाणि दुःखं सण्णविज्जंति दुक्खेण वा पज्जाणि धम्मं न गेण्हंति, तहिं अच्छंताणं तित्थवोच्छेदो, अकालपडिबोहीणि रत्तिं उट्ठित्ता गच्छंति मूलकंदादीणं, अकालभोई रत्तिं चेव भुंजंति, सति लाढे सति विज्जमाने लाढेत्ति संयतस्याख्या, जावति अन्यत्र इत्यर्थः, विहाराय, संथरमाणेसु सुभिक्खे वट्टमाणे ण विहाराए, केवली०, तेणं बाला, उवचरतो चरतो, ते य आरिएहिं विरुद्धा०, कारणे सत्थेण तेसिं मज्झेण वीतिक्कमिज्जा। अण्णरायं राया मतो, जुगरायं जुगराया अत्थि कता वा दावं अभिसचति, दोरज्जं जत्थ वेरं अण्णरज्जेण राएण वा सद्धिं, विरुद्धगमणं यस्मिन् राज्ये साधुस्स तं विरुद्धरज्जं सं०, भिक्खू वा २ अंतरा विहं विणा सत्थसण्णिहाणमित्यर्थः, एकाहेण अह इति दिवससंख्या, कहं ?, उच्यते, असावित्ति, णावा० णावासंतारिमे किणेज्जत्ति केति सड्ढी—श्रद्धी, दुक्खं दिने दिने मग्गिज्जति ण वा०, पामिच्चं उच्छिदति, परिणामो णामं परियट्टेति, इमा साहूण जोग्गत्ति वट्टिया खुड्डिया सुंदरी वत्तिकट्टु, पुण्णा भरितिया, सण्णा खुत्तिया चिक्खल्ले, उड्ढगामिणी अणुसोयं, तिरिच्छंति तीरियगामिणी, अद्धजोयणं दूरतरं वा, ण गच्छिज्जा, अप्पतरो अद्धजोयणा आरेण, भुज्जयरो जोयणा परेणं, ॥३५६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत वृत्यंक [१११-११९]

दीप अनुक्रम [४४५-४५३]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३५७॥

ईर्याध्ययनं

अहवा एक्कसिं अप्पतरो, बहुसो भुज्जयरो, तिरिच्छसंपातिम जाणित्ता एगंतं एगायतं भंडगं, हेट्ठामुहे सांतरो करेति, उवरि भंडगए, पडिग्गहं एगजुयगं करेति, कायं सव्वं पाए य पमज्जति, भत्तं पच्चक्खाति सागारं, ताव एगंते अच्छति जाव अप्पणो जाएण पट्ठिता; जहा एगेण त्थले एगेण णावाए, असक्कये जले एगे एगे णावाए, अहवा एगे जले एगे थले, थलं आगासं, ण विसेलेंते, ठाणतियं परिहरित्तु मज्झे दूरुहेज्जा, ण बाहातो पगिज्झिय २ उण्णमिय २ णिज्झाएज्जा अहो रुक्खा धावंति, एगचित्तो ज्झाणे, ऊर्द्धं कसणं उक्कोसणं, समुद्दवातेणं, अधस्तात्कसणं, भंडंतेणं खिवलं लग्गाए रज्जाणं ढोकणं णयणं वा, ण तस्स तत्प्रतिज्ञं परियाणेज्जा, ण आढाएज्जा करिज्ज वा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, अच्छिज्जा खड्डओ, अलित्तओ कोट्टिबियाए फिट्टो महल्लो वंसो, वंसए वलउ, कट्ठो वट्टगं, अवल्लओ अवल्लगमेव, कंठगंधो उच्यते, उत्तिंगं आगलंतगं, चेलमट्टिता चीवरेहिं समं मट्टिया मद्दिज्जति, कुशपत्तओ दब्भो, कुंभीचक्को वा गोल्लविसए असवत्तओ भण्णति, कुविंदो सोदइ वक्काडओ, उत्तिगणं आसेवति, उवरिगं दूसे गेण्हति, कज्जलेतित्ति पाणिते भरिज्जति, णो परं०, अप्पुस्सुओ जीवियमरणं हरिसं ण गच्छति, अबहिलेसे कण्हादि तिण्णि बाहिरा, अहवा उवगरणे अज्झोववण्णो बहिलेसो, अबहिलेस्से परमतिं गतो, 'एगो मे सासओ०' अहवा उवगरणपुतित्ता एगीभूतो, वोसज्ज उवगरणसरीरादि, समाहाणं समाधी, संजतगं ण चडफडेंतो उदगसंघट्टं करेति, एवं आधारिया जहा रिया इत्यर्थः॥ **रियाए प्रथम उद्देशक समाप्तः ॥**

संबंधो नावाधिगारो, नावाए य डंडगमादी, आत्मीयउपगरणं गेण्हाहि, एयाणि य असिधणुमादीहिं धारेहिति, दारगं वा पमज्जेहित्ति भुंजावेहि, घरेहिं वा णेज्जा, अम्हे णावाए कम्मं करेमो, भंडभारेति जहा भंडभारियं ण वा किंचि करेति, थेरा उव्वे- ॥३५७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: तृतीय-अध्ययनं "ईर्या", द्वितीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[१२०-१२६]

दीप
अनुक्रम
[४५४-४६०]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३५८॥ | ईर्याध्ययनं

ढेंति, जिणकप्पिओ उप्फेसं करेति, उप्फेसो नाम कुडियंडी सीसकरणं वा। अभिक्कंतकूर० अभिक्रांतकर्म्माणः, ते भणिता सयमेव उल्लंभासि, सहसा वा छुभिज्जा, णो सुमणो, कहं?—मरामि चेव, अहवा अहो मरियव्वगं, दुम्मणो हा मरियव्वं, कहं च उत्तरियव्वं?, उच्चावए तो जणवहंते उरस्स वल्ली वा णिद्धातति, राउले वा च्छुभणेति, णियाणं करेति, वहपरिणतो मरंतो, हत्थेण हत्थादीणि संघट्टेति मा आउकायविराहणा होहिति, दुब्बलभावो दुब्बलियं, ताहेति उयहितीरे ताव अच्छति जाव दगं सव्वं गलितं, उदउल्लससणिद्धाणं कालकओ विसेसो, आमज्जेज्ज कहंचिगा दोसा, जं वल्लेण परिणामिते आमज्जेज्ज, परे गिहत्था अण्णउत्थिया वा, परिगविय चुंफं करेंतो जाति, धम्मं वा कहेंतो, संजमआयविराहणा, तेणपहे वा घेप्पेज्जा, जंघासंतारिमे कंठं, वप्पाती पुव्वभणिता, अहवा वप्पो वट्टो वलयागारो, गंभीरोदयं वा तलागं, केदारो वा, मट्ठा अपाणिता दरीपव्वयकुहरा भूमीए वा, जिणकप्पितो पाडिपहियहत्थं जाइत्तु उत्तरति, थेरा रुक्खादीणिवि, जावसाणि वा मासजवसो वा, जहा गोधूमाण वाभुसो, सगडरह० सचक्कं सविसयराया, परचक्कं अन्नराया, सेणा सराइगा, विरूवरूवा अणेगप्पगारा, हस्त्यश्वरथमनुष्यैश्च, चारउत्ति वा काउं आगसेज्जा, कड्डिआ सुमणो, एते णाविताओ वादेणं दंडियं पडुप्पाएमि, उच्चावदं घातवहाए सावे देति, गामाणु० पाडिपहिया पुच्छेज्जा केवइए से गामे णगरे वा, केवतिएत्ति केवट्टे केत्तिया आसा हत्थी, ते चारिया अण्णो वा कोइ पुच्छेज्ज, ण पुच्छे, न कयरे वा, णो वागरेज्जा, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स वा २ सामग्गितं। इति इरियाद्वितीयोद्देशकः समाप्तः॥

संबंधो रियाधिगारे, इहापि रिया एव, अंतरा वप्पाणि ते चेव, कूडागारं रहसंठितं, पासाता सोलसविहण्णूमगिहा, भूमीगिहा भूमीघरा, रुक्खगिहं जालीसंछन्नं, पव्वयगिहं दरी लेणं वा, रुक्खं वा चेइयकडं वाणमंतरच्छादियगं, पेठं वावि भेरवं, थूभेवि ॥३५८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: तृतीय-अध्ययनं "ईर्या", तृतीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[१२७-
१३१]

दीप
अनुक्रम
[४६१-
४६५]

एवमादीणि आमिरासुगा(एसणा)णि जहा गिरिणगरे, णो परिगिज्झिय २ णिज्झाए, णगरणगखरिया णेज्झा व लोलया, पययावहिता पलिमंथु, कच्छाणि जहा नदीकच्छा, दवियं सुवण्णारावणो, वीमं वा चलियं वा, णदिकोप्परो, णूमं भूमीघरं, गहणं गंभीरं जत्थ चक्कमंतस्स कंटगसाहातो य लब्भंति, वणं एगरुक्खजाइयं वा, वणदुग्गं नाणाजातीहिं रुक्खेहिं, पव्वतो पव्वयाणि वा, मागहभासाए एगवयणेण णपुंसगवत्तव्वयाणं, पव्वइएवि पव्वइयंपि, प्रासादकप्रासादकाइं, पव्वयदुग्गाइं बहू पव्वता, अगडतलागदहा अणेगहा संहिता, णदी पउरपाणिया, वावी वट्टा मल्लगमूला वा, पुक्खरणी चउरंसा, सरपंतिया पंतियाए ठिआ, सरसरपंतिया पाणियस्स इमंमि भरिते इमावि भरिज्जति परिवाडीए पाणियं गच्छति, केवली बूया जीवाणं उत्तसणं ईषत् वित्तसणं अणेगप्पगारं वा तससति, सरणं मातापितिमूलं गच्छति जं वा जस्स सरणं, जहा णिपाणं गवीणं गद्दाणं दिसावसरणं पक्खीणं आगासं सरिसवाणं बिलं, अंतराइयअहिगरणादयो दोसा। से भिक्खू वा २ आयरियउवज्झाएहिं समगं गच्छंतो हत्थादि संघट्टेति आधाराइणियाए पगतो, आयरिया पाडिपहिया पुच्छंति, जिणकप्पिओ तुण्हिको, थेरकप्पिता कहेंति आयरिया, तस्स णो अंतरभासं करेज्जा, एवं राइणिए दो आलावगा, पडिपाहगोणमादी आइक्खह दूरगतं, दंसेह अब्भासत्थं, परिजाणेज्ज कप्पिज्ज हिज्ज पाडिएहिं ता उदगपन्नयाणि कंदाति ४ पुच्छति छुहाइतो तिसिओ पिविउकामो रंधेउकामो सीयइ तो वा अग्गी एवं चेव जह साणिगामो, कोद्दे गामह मणुस्सवियाल पुव्वभणिता जिणकप्पियस्स सुत्ता, विहं जाणेज्जा विहं अडवी अद्धाणं आमोसगा धम्मियजायणा थेराणं तुब्भे च्चिएहिं चेव दिण्णाइं, जिणकप्पिओ तुसिणीओ चेव, सयं करणिज्जंति रुच्चति तं करेंति अक्कोसणादी, रायं संसरतीति रायसंसारियं णो सुमणे सिया सुकोसियंतोवहिस्स इदि ॥ समाप्तं रियाऽध्ययनं तृतीयं ॥

प्रत
वृत्यंक
[१३२-
१४०]

दीप
अनुक्रम
[४६६-
४७४]

श्रीआचारांग 'सूत्र-चूर्णिः ॥३६०॥

भाषाध्ययनं

उक्ता रिता समिति, इदाणिं भासासमिति, आहारसेज्जं पंथपुच्छा (पादपुंच्छणा) य, सव्वेवि वयणविभत्तिकारगाइं तहावि विसेसो अत्थि, पढमे सोलसप्पगारा वयणविभत्ती अप्पीतिवज्जणा वितिए काणकुंटणादी, णामणिप्फण्णे भासा चउव्विहा जहा वके तहा दव्वतो उप्पत्तीए पज्जवं अंतर, गहणे, उप्पत्ती वा भासाणं किमादीयं पज्जवं, जतो जाइं मूलभासादव्वेहिं परिणामिताइं विस्सेणिं गच्छंति, अंतरं जतो जाति अणुसेढीए मीसाइं गच्छंति, गहणे जारिसाइं गिण्हंति दव्वओ अणंतपएसियाइं, भासा किमात्मीया? पोग्गलात्मिका, यथा घडं मृत्तिकात्मकं न सिकतापापाणैर्निष्पद्यते एवं भासापयोग्गेहिं दव्वेहिं णिप्फज्जइ, खित्ते जंमि ट्ठितो गिण्हति जहा छद्दिसिं जत्तियं वा खेत्तं गच्छति जहा परे सजोणि, जंमि वा खित्ते वण्णिज्जति भासा, कालो जंमि जंमि जेच्चिरं काला भासा भवति जाव ताव कालेणं जच्चिरं वा, से दो भवति काले—भावे उप्पत्ति पज्जवअंतरे जाता तं भावं भावेंता णिणादं करेंताणि, तिसुवि कालेसु वयि, आयाराइं भणियाइं जाइं वा भन्नमाणाइं, जाणेज्ज भासेज्ज, जे कोहातो वायं युंजंति, क्रोधात् विविहमनेकप्रकारं जुंजंति सज्झसवत्थो वा जं जुंजंति, जहा कोहा न मम पुत्रः पिता वा, अन्यं माता वा इत्यर्थः, माणा अहं उत्तमजाती उच्चहीनजातीयः, अट्ठहिं वा मयठाणोवरीतत्ते विजुंजणा, माया गिलाणोऽहं, लोभा जहा वाणिज्जं करेमाणे जणो अचोरं चोरं भणति अदासीं दासीं, अजाणंतो भणति, सव्वमेयं सावज्जं वज्जए, विविच्यते येन स विवेकः, विवेकमादाय, विवेगो संजमो चरितं वा कम्मविवेगं सत्यवचनं आयविवेगं कातुं अनृतस्य, लभिहिति, केणति भणितो—भिक्खु! हिंडामो, भणति—सो तत्थ लभति, ण वदति एवं भणितुं, अंतराइयं उदिज्जा, ताइं असण्णिहिताइं होज्जा, अहवा भणति—सो तत्थ णो लभिहिति, एवं हि ण वदति, कयाइ लभेज्ज, भिक्खायरियाते गतओ भणति—सो तत्थ भुंजिउं एहिति, अहवा अभुत्तो एहिति, छउमत्थविसओ य वदति उ सओ, ॥३६०॥

प्रथम चूलिकाया: चतुर्थ-अध्ययनं "भाषाजात", आरब्धं

प्रत
वृत्यंक
[१३२-१४०]

दीप
अनुक्रम
[४६६-४७४]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३६१॥

भाषाजाता०

तत्थ णिरुं आगतो, अज्जा एते ण दाएति, एन्थवि आगते, अस्मिन् संखडीए वा, तिविकालो, अणुवीति विचिंति पुव्वं बुद्धीए पासित्ता निश्चितभासी सिद्धभासी, सम्यक् संजतो भाषेत, संकितः मण्णेत्ति, ण वा जाणामि, एगवयणं वृक्षः इत्थी वदनं कन्या वीणा लता, पुमवयणं राया गिरी सिहरी, णपुंसगवयणं वणं अच्छि कंसं, अज्झत्थं आयरियसन्नागारं नाउं सन्नाभूमीं गंतुकामो अणुण्णवति, उवणीतवयणं पढाहि, ता भणति —तुब्भं पसाएणं, अवणीतं तुमं सोत्ति भणिते भणति—नाहं सोत्ति, उवणीतअवणीतवयणं अहो रूपवती स्त्री किंतु कुशीला, अवणीतउवणीतवयणं विरूवरूवो फोक्कणासो कालो, किंतु इस्सरो, ण य भिक्खायारसीलो, तीतादि अतीतत्वात्, करोति करिस्सति, पच्चक्खं एस, देवदत्तः सो, एगवयणं वतिस्सामीति, तदेव वदिज्जा, इत्थिं पुरिसणेवत्थितं ण वदेज्ज एसो पुरिसो गच्छति एषोऽप्येवं, एवमतिनिस्संदिद्धं अन्नहा वा, एवं णिस्संदिद्धं नाणकज्जेसु ण वत्तव्वं, चत्तारि भासाजाता वत्तव्वा, केन तानि उक्तानि?, जे य अतीता अरहंता,-अचित्ताइं णिज्जीवाइं, वण्णादिगुणजुत्ताणि चयोवचयाइं, अनित्यो वैशेषिकः, वैदिको नित्यः शब्दः, यथा वायुर्वायनादिभिरभिवंजिज्जते, एवं शब्दः, ण च एवमरहतानां, यथा पटः चीयते अवचीयते च एवं विप्परिणामसभावाणि, ते चेव णं सुब्भिसद्दा पोग्गला०, पुव्विं न भासा भासिज्जमाणी भासा भासासमयंति वीतिकंता वा णं अभासा, दृष्टान्तो घटः, पूर्वं पांशुकाले न घटः, मुद्गराभिघाताच्च अघटो भविष्यतीति जो नासेज्जा, जहा काणं काणमिति मोसा, चोरं चोरमिति, सच्चामोसा दासचोरस्तं, स तु दासः न चोरः, सहऽवज्जेण सावज्जा, सकिरिया कम्मं जेण भवति, कक्कसा किसं करोति, कडुकी जहा मिरिएहिं वावडवडादिवुत्तो समाणो, णिट्ठुरा जकारसगारेहिं, फरुसा णेहवज्जिता, अण्हयकरी आश्रवकरी, छेदकरी प्रीतिच्छेदं करेति, भेदं स्वजनस्य भूतस्य वार्थस्य परियदभूतो, अभिकंख जंमं सोक्खं वा न भाषते, ॥३६१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रथम चूलिकायाः चतुर्थ-अध्ययनं "भाषाजात", प्रथम-उद्देशकः आरब्धः

आगम (०१)	**“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:)** श्रुतस्कंध [२], चूडा [१], अध्ययन [५], उद्देशक [१,२], निर्युक्ति: [३१५], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक १३२-१४०]

प्रत
वृत्यंक
[१४१-१५१]

दीप
अनुक्रम
[४७५-४८५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३६२॥

भाषाजाता०

सच्चा सुहा सा सूक्ष्मार्था, जह सुहं मोरंगादिना स्पृष्टस्य, सवस्स न युक्तं भवति, जूरणं खारवणादिना भवति, एवं जीवद्यं प्रति सुहुमा, जा य असच्चामोसा अपात्रिगा असावज्जा, होलेति हुलं हुलो ऊरणतो, गोलेज्जतित्ति वली वड्डी, सवलेत्ति वृषल, कुपक्खे दासचोरपक्खो जेट्ठउ दासिगपुत्त इति वाच्यं इति वा, ते नाणगा पितरः, पितं वते, पसत्थाइं आउसो! ति वा, स्त्रियामपि कंठं, ण देवेइ वा नभमाकाशं, आकाश देव इत्यर्थः, गज्जितदेव विज्जुता य तदेव प्रतिष्ठो देवः निव्वुट्ठं देवेन, फइडुया वा कंठं असज्झाबुज्झाणं अहिगरणं च, अंतलिक्खादि भासेज्ज इति। **भासज्जाते प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥**

अप्पितियवज्जणा वितिए, जहा वा एगइयाइं रूवाइं, णो एवं वएज्जा गंडी गंडीति वा, सोलसहा, हत्थछिन्नो हत्थछिन्नाणि वा एवं न वत्तव्वं ?, जहा वासुदेवो तम्मि सुणए, एगमवि गुणं भासति, उयत्ति सरीरं, तेयंसी, वचसा दीप्तिः, सज्जो जसो कित्ती, अभिमतं अभिरूवं, रूवाणुरूवा गुणे, पडिरूवं प्रासादं जनयतीति प्रासादनीयं द्रव्यं, दर्शनीयं, जति सो किंचि पुच्छियव्वो उभासियव्वो वा ततो सोवयारं वत्तव्वो, भद्दगं पहाणं, उसद्धं उत्कृष्टं, रसालं रसियं, पुल्लेवि अप्पत्तियं असंखडं मारिज्जेज्ज वा, सुब्भे सद्दे एगा इतरे दोसा वक्कसुद्धीगमाणं चंता कोधं च निश्चितभाषा णिस्समभासी न बध्यते येन कर्म्म तं भाषेत इति। **भासज्जाताध्ययनं समाप्तं ॥**

इदाणिं एषणासमिती, तत्थ पिंडेसणा भणिता, वत्थ, पादेण अहिगारो, इह पढमे गहणं वितिए धारणा, वत्थे उग्गमउप्पायणा, ता वत्थे चउक्कणिक्खेवो, नामंठवणाओ गयाओ, दव्ववत्थं तिविहं–एगिंदिय० विगलिंदियणिप्फण्णं पंचिंदियणिप्फण्णं, एगिंदियणिप्फण्णं फलिहमादी, विगलिंदियं कोसियारादी, पंचेंदियं कंबलेयादि, अहवा उक्कोसं मज्झिमं जहण्णं, अहवा अहागडं कय- ॥३६२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: चतुर्थ-अध्ययनं “भाषाजात”,द्वितीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रथम चूलिकाया: पंचम-अध्ययनं “वस्त्रैषणा”, आरब्धं

प्रथम चूलिकाया: पंचम-अध्ययनं “वस्त्रैषणा”, प्रथम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[१४१-१५१]

दीप
अनुक्रम
[४७५-४८५]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३६३॥

वत्त्रैषणा

परिकम्म वा, जंगियमादी वा दव्ववत्थं, भाववत्थं सीलंगसहस्साइं अट्ठारस साहुगुणे णियत्थो, भाववत्थसंरक्षणार्थं दव्ववत्थेणाहिगारो, सीतदंसमसगादीणं च, जंगमाज्ञातं जंगियं, अमिलं उट्टिणं, भंगियं अयसिमादी, सणयं सणवागादि, पेच्छगं तालसरिसं, संघातिमतालक्षति वा, क्षोमियं मूलकडं कप्पति, सण्हं ण कप्पति, तूलकडं वा उण्णियउण्णियउट्टियादि, तरुणीनीसातो आरब्भ जाव चत्तालीसा, सोलसश्रुता आरब्भ जाव तीसा जुगवं, ण णियमा तरुण्यो, तरुणो जगव्वंधू भजित्ता, जति व पत्तबलवं जति य अणातंका अप्पायंका वा थिरसंघयणो, एक्कं जिणकप्पिओ, आयंकिता य जहा समाहीए, अथिरसंघयणो तिण्णि, थिरकप्पितवासिणो एगं पाओणति, आयारसंति आयारसंतिए धरेति, भणियं च–तिण्णि कप्पा जहण्णेण पंच दढ दुब्बलाई गेण्हेज्जा सत्त य, निग्गंथीएवि संघाडीविभासा, पडिस्सए दुहत्थवित्थरा, सण्णाभूमी भिक्खायरियाए दो तिहत्थाओ, एगा समोसरणे चउहत्था, जह भिक्खं अद्धजोयणा, परेण सुत्तादिपलिमंथो, उग्गमदोसा, एगं साहम्मियं समुद्दिस्स जहा पिंडेसणा एत्थ आलावगा, कीतादिविसोहिकोडी, धायंता कता संजयट्ठाए, दाउं कामेण रत्तकद्दममाणासामुलीचालक्खासादिसियादिणाइणा घडं पोहम्माइं ट्ठावेति, मट्ठं अघाडगादि, अमाणं निसंसट्ठं आहोडियं संपधूवितं वा, विसोधिकोडी सव्वा संजयट्ठा ण कप्पति अपुरिसंतरकडादी, पुरिसंतरकडा कप्पति, महद्धणमुल्लाइं छावत्तरीए परेण अट्ठारसण्हं वा, आईणाणि चम्माणि सहिणाइं, संकल्लाणाणि सण्हाइं. लक्खणजुत्ताणि य, आयाजायाणि आयताणि, कायाणि, जत्थ इक्खागवण्णो पडिओ, तत्थ मणी, तस्स पभावेण सोवालो जाओ, अइगाणं पदविते मुसो सग्गो, आवणे तु विज्जति जारिसी मणीणं पभा, सिरीए वत्थाणं भवति, एयाणि कायाणि, अहवा आयाणि खोमियाणि, पलेहीयाणि पलेहाणि दुगुलाणि, दक्खिणापहे वागेसु पच्चुप्पण्णाणि काये, पायालो दीवाणं मुगाणि, सण्हाणि अमुगाणि, देशरागाणि ॥३६३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१४१-१५१]

दीप अनुक्रम [४७५-४८५]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३६४॥ | वस्त्रैषणा

एगपदे सरित्ताणि, अमिलाइं सामुलीओ, गज्जलाणि कडकडेंताणि कायकंठलपावारादीणि, सुसिरदोसा य ण गृह्णीयात् आयाणाणि चंमाणि उद्दाणि वा, उद्दा मच्छा सिंधुविसए, तेसिं चंमं मउयं भवति, पस्सा तहेव, पसत्तेयगणगाणि कणकप्पोलियाणि, कणगपट्टाणि सोवन्नपदा दिज्जंति कणगकताइं अंतेसु मंडिताणि, कणगखइयाणि कहिं २ चि कणगफुसियाणि इतिलिगा दिज्जंति, वग्घाणि विग्घाइचित्तगस्स, आभरणाणि एगजातितेण आभरणेण मंडियाणि आभरणविहिता, णो विचित्तेहिं आभरणेहिं वरो, पडिमा उद्दिस्सिय दंसियमादी, वितिय पेहाए, पुच्छिते भणति–एरिसं, अहवा पेहाए पुच्छिते भणति एरिसं, अहवा पेहाए उक्खेवनिक्खेवनिद्देसं बीयाण उवरि, ततियाए अंतरिज्जगं पंगुरणं, अहवा अंतरिज्जं हेट्ठिमपत्थरणं उत्तरिज्जगं पेच्छाओ, उज्झियधम्मियं चउत्थे च, दव्वादि आलावगसिद्धं, सिणाणादिणा वा घडगं मक्खुउ धोवति, दव्वतो सीयं णो भावतो, फासुगं, भावतो उसिणं तधोदगं, दोहिं सित्तं सचित्तो होति, उसिणं उण्होदयं तिलकंदादी, कुंडलादी अंतो अंतेण सव्वओ उक्खलित्ता सअंडं वत्थं, अणलं अपज्जत्तगं, अथिरं दुब्बलंगं, अधुवणं पाडिहारियं, अधारणिज्जं अलक्खणं, एतं चेव न रुचति, अहवा तुण्णियकुट्टियपज्जवलीढे ण गेण्हेज्ज, विवरीतं गेण्हेज्जा, ण णवए इमे वत्थंति कट्टु बहुदिवसपिंडं तं बहुदिवसितं, बहुदिवसतं बहुगं वा बहुदिवसितं, लोद्धादिणा सीतोदएण वा, एवं दुब्भिगंधेवि, जाहे पुण तिन्नं होति किहइ, कप्पे वा कते, तं णो अणंतरहिताए पुढवीए थूणा वेली गिहुगं उंमरो कुरुमुयागं उक्खलं मुसलं वा, कामे वलं ण्हाणपीढं, कुले पंकुड्डो दिग्घोलिओ घरे जिदिग्वा ते कुड्डा जे अंतिमपच्छिमा ताओ भित्तीओ सीला, सीलाए च लेलू लहुओ, खंधादी पुव्वभणिता, झामथंडिल्लादिसु, अतो वज्जा। **वस्त्रैषणायाः प्रथमोद्देशकः समाप्तः॥**

वत्थेसणाए वितियाए धारणा, इंगालधूमपरिसुद्धं, परेवचं, एसणिज्जाइं आहापडिग्गहिताइं विमोहावयणे जिणकप्पितो एसेज्ज, ॥३६४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: पंचम-अध्ययनं “वस्त्रैषणा”, द्वितीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[१४१-१५१]

दीप
अनुक्रम
[४७५-४८५]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३६५॥

पात्रैषणा

चीवरमादाय गाहावति बहिया विहारभूमिं वा गामाणुगामं तिव्वादि सतंगादिसु ण कप्पति मुहुत्तगं २ दिवसं अहोरत्तं पक्खं मासं जत्तियं वा कालं, असादुस्स मा पाडिहारियं गिण्हेन्तु, आयरियपेसणेणं गतो एगताणिउ सो तत्थ कज्जे समत्तिवि अगिलाणो, ण य गिलाणकज्जेण, एगागी पंचाहा परेण, विप्परिवसितसिद्धु तेणं, तेण उवही उवहाणविऊ, तं उवहिं जाणिऊणं उवहिं सामिणाणं गिण्हियव्वं अन्नेसिं दायव्वं अज्झ उवहयंति पामिज्जिज्जावि, तो विपरिगहणत्ततो अन्नं गेण्हेज्जा, णवरं धूतायारेहिं परिहराहि वा, ण पलिछिंदिय परि० थिरं संतं ससंधियं, संधी नाम ओवी तं वोलीणं, तस्स चेव णिसिरिज्ज, एवं निग्घोसं, सव्वो माइट्ठाणेणं उवहि हणावितो तं ताणि उस्सवेतुं परिट्ठाएयव्वं, वन्नवन्नाइं करेज्जा, पावगं णाम अचोक्खं भण्णति अदत्तहारी, आलावगा जहा रियाए, इति **वस्त्रैषणा परिसमाप्ता** ॥

दव्वपादं तिविहं, भावे अप्पा सीलंगसहस्साणं भाणं, जिणो एगं धरेति, एगम्मि भत्तं बितियम्मि पाणगं, मत्तओ अपरिभोगो, सण्णाभूमिं गच्छंतस्स भवति, हारपुटं ते लोहिगं चेव पादं, बिल्लगिरिमादिणाईं भोतुं कीरति, चम्मपादं चम्मकुतुओ, उद्दिट्ठं लाउगमादी, पेहाए एरिसगं संगतियभत्तओ, वेजयंतियं पडिग्गाहिओ, अहवा संगतियं च, पादा वारा वारएगं वा होति, तिण्णि वा, तत्थेगं देति, जत्थ पत्तयणदोसो णत्थि, वेजयंति णाम जत्थ अब्भरहियस्स रायाहियस्स, रायादि धण्णो उस्सवि कालकिच्चे वा, भज्जिया हुंडं छोढुं णिज्जति, उज्झियधम्मियं, सेसा सव्वे तेल्लादी आलावगसिद्धा, **पात्रैषणायाः प्रथमोद्देशकः समाप्तः** ॥

गाहावतिकुलं पविट्ठे पेहाए पडिलेहेतु पडिग्गाहियाओ अवहट्टु पाणे अवणेतु रियं पमज्जियं पमज्जिय परियाभाएति, छुभितु ॥३६५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: षष्ठं-अध्ययनं “पात्रैषणा”, आरब्धं

प्रथम चूलिकाया: षष्ठं-अध्ययनं “पात्रैषणा”, प्रथम-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत
वृत्यंक
[१५२-१५४]

दीप
अनुक्रम
[४८६-४८८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३६६॥

अवग्रह-सप्तकं

पडिगं, परहत्थगयं ण गेण्हेज्ज, आहच्च गहिते गिहत्थो एस चेव उ दए, जति परिसहारति लद्धं, अन्नत्थ वा उ पत्थइ, अन्नहिं तणे पक्खिवति, सपडिग्गह परियसति पडिग्गहए व संताए उच्चो दारए जोएण, तडीए ठाति, ताए लोढेति, ससणिद्धाए वा पुढवी आयरति, उदउल्लससणिद्धं पडिग्गाहियं आमज्ज पमज्ज अंतो संलिहति बाहिं णिल्लिहति उवल्लेति उवट्टेति आयवेज्ज पतावेज्ज।

इति पात्रैषणा समाप्ता ॥

उवग्गहेक्कणिक्खेवो दव्वे सचित्तादी तिविहो, लोइओ लोगुत्तरिओ य, सचित्तो सेहो अचित्तो वत्थादी मीसे स भंडमत्तोवधिगरणे उ, लोगोवि जहासंभवं, खेत्तेवि उड्डादि खित्ते गामे रण्णे वा, एगदिसि छद्दिसिं वा, काले उडुबद्धे वासारत्ते वा, भावोग्गहो दुविहो–मतीए गहणतो य, मती दुविहा–अत्थोग्गहणमती वंजणोग्गहणमती, छव्विहो चउव्विहो होइ, गहणोग्गहे अममत्ते अपरिकम्मा, परिणामा ण मम एतं अपरिग्गहस्स समणस्स गहणपरियणस्स पडिहारिते अपडिहारगा जा जयणा, अहवा देविंदाइ पंचविहो उग्गहो, अहवा इमो गहणो० समणा भविस्सामो अकिंचणा, दव्वे अपुत्ता अपसू, भावे अकोहादी, गहो परतः परिग्रह इतिकृत्वा आदौ परिग्गहणं पापं, हिंसादिसेसरक्षणार्थाय उग्गहो वण्णिज्जति, सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, तं कहिं?, गामे नगरे वा लोइयं गतं, लोउत्तरं उडगादि, छत्तगं देसं पडुच्च जहा कोंकणेसु, णिच्चं वासत्ताणा ओल्लंति उडएण, सन्नाभूमीं गच्छंतो अप्पणो अदिस्संतो अणुन्नवेत्ता णो तिसंधा, गामादिसु वा अणुण्णवति, ओगिण्हति एक्कंमि, पगेण्हति पुणो २, से आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा इस्सरो राया, भोइओ जाव सामाइओ, सामाइओ समधिट्ठाए, पभुसंदिट्ठो, गाहावतिमादी, समणुण्णेण तेण समं असणं, ण वा एगल्लविहारी परवेयावडिया, परसंतिएणं अण्णसंभोइए, पीढएण वा फलएण वा सेज्जासंथारएण ॥३६६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रथम चूलिकाया: षष्ठं-अध्ययनं “पात्रैषणा”, द्वितीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रथम चूलिकाया: सप्तमं-अध्ययनं “अवग्रह प्रतिमा”, आरब्धं

प्रथम चूलिकाया: सप्तमं-अध्ययनं “अवग्रह प्रतिमा”, प्रथम-उद्देशक: आरब्ध:

आगम (०१)	“आचार” - अंगसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) श्रुतस्कंध [२], चूडा [१], अध्ययन [७], उद्देशक [२], निर्युक्ति: [३१६-३१९], [वृत्ति-अनुसार सूत्रांक १५५-१६२]
प्रत वृत्यंक [१५५-१६२] दीप अनुक्रम [४८९-४९६]	श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३६७॥ — अवग्रह-सप्तकं उवणिमंतेज्ज, सूईपिप्पलगमादी, अणंतरहिया सव्वे, सव्वे आलावगा आलावगसिद्धा इत्यवग्रहप्रतिमायाः प्रथमोद्देशकः ॥ उग्गहे य दव्वशेषं, से आगंतारेसु वा आरामगारेसु वा 'पुव्वभणियं तु भण्णति०' किं पुण तत्थोवग्गहे समणा पंच, माहणा धीयारा, डंडए वा छत्तए वा, वाशब्दाद् हत्थेण वा किंचि उवगरणं, णो अंतोहिंतो बाहिं णीणिआ, सुत्तं वा ण उट्ठवेति, उट्ठेहिं अम्हेहिं एस वसही लद्धा, णो तासिं अप्पत्तियं करिज्जा, एरिसए कारणट्ठिया उच्चारपासवणे जयणाए, णेव संघाडए वेरत्तियं करेंति, अंबवणे ण वट्टति, दारुयअट्ठिमादी दोसा, कारणे ओसहकज्जे सड्ढो मग्गिओ भणति—भगवं ! अंबवद्दादे कस्सवि गंधेण चेव विणस्सति वाहीति सव्वईए गिलाणो, जहा वा हरीडयीए गंधेण विरिच्चति एगेयाए किल, सअंडमादी ण कप्पति, अप्पंडादी कप्पति, भत्तए अद्धं, पेसी चउभागो, दोट्टगं छल्लिमोयगं, गिरो अंबसालओ, कोंकणेसु अतिरिच्छच्छिन्ना वक्कविच्छिन्ना अव्वोच्छिन्ना वा जीवेण विणिभिन्नं, उक्खुवणेवि अंतरुच्छुगा पव्वसहितं, पव्वरहियं खंडं, चोदगं च्छोति वा, मोदगछोडियतं उच्छुसगलगं, छल्ली उच्छुसगलगं, चक्कली चक्कलिरेव, लसुणेवि चोइओ, वाहिकारणे लसुणेवि भासियव्वं, इक्कडाडि तण्णो अच्छिदिय २ विच्छिदिय २ परिभुंजिय २ सत्त पडिमा तज्जातिया उग्गहमग्गणा सव्वा सत्तण्हं अब्भितरा, तहा पिंडमग्गणा पिंडेसणाणि, एवं सव्वपडिमासु पढमा संभोइयाण सामण्णा, बितिया गच्छवासीणं संभोइयाणं, ततिया अन्नसंभोइयाणं, कारणे तेण लब्भंति, अहालंदिया वा आयरियस्स गिण्हंति, सुत्तत्थावसेसो आवन्नपरिहारियोवि गेण्हति, कारणे तच्चा पडिमा, चउत्थी गच्छे ठिओ जिणकप्पातिपडिकम्मं करेंतस्स, पंचमा जिणकप्पियस्स पडिमाए पडिवण्णगस्स वा, पच्छिमाओ दोवि जिणाणं, छट्ठो अंतेहिंतो बाहिं णीणेयव्वा बाहिताउ वा अंतो नेयव्वा, अलाभे उक्कुडुगणेसज्जिओ, समिती अहासंथडं तम्मि व संथिता अंतरवादी वासं, सुयं मे आउसं ! ॥३६७॥ मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:
	प्रथम चूलिकाया: सप्तमं-अध्ययनं “अवग्रह प्रतिमा”, द्वितीय-उद्देशक: आरब्ध:

प्रत वृत्यंक [१६३]

दीप अनुक्रम [४८९-४९६]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३६८॥

तेण भगवया पंचविहे उग्गहे परूवेयवे, एवं पिंडेसणाणं सव्वज्झयणाण य। इत्यवग्रहप्रतिमाः समाप्ताः॥ अवग्रहसप्तकं

सत्तिका बितिया चूला, दारा अणुपुव्वीए अहिगारा एगसरगा, उ ट्ठाणे पगतं, तं पुव्वं भणितं लोगविजये, णिसीहियाए छक्कं, णिसीयणं णिसीहिया, दव्वे कोंचफलेण पंको णिसियति, अहवा दव्वनिसीहिया वसही सज्झायभूमी वा, खित्ते जंमि खित्ते, जत्तियं वा खेत्तं फुसंति, काले जंमि काले जत्तियं वा कालं, भावे उदइयाई जेण भावेण अच्छति, सरीराओ उच्छलति–णिफिडवति तेण उच्चारो, स्रवतीति तेण पस्सवणं, कहं तमयाणमाणस्स ठाणनिसीहियं उच्चरणं वा संजमसोही भवति ?, उच्यते, मुणिणा छक्कायदयावरेण, छक्कं रूवे, रूवए द्रव्यस्य जो संठाणाकृतिरेव, तं रूवं जत्तियं खित्ते पिच्छति जंमि वा खेत्ते रूवं वण्णिजति, कालरूवं अणादीयं अपज्जवसियं, जहा हरितं साद्वलं प्रावृषेण, तत्कालरूपं, भावतो वण्णं कसिणं जह भमरो कसिणोववेतो, सभावो वा जहा कोहपरिणतस्स रूवं, कालगं मुहं, अच्छी य रत्ताणि भवंति, जहा रूवणेण दाइयं, अहवा 'रुद्दस्स खरा दिट्ठी उप्पलधवला पसन्नचित्तस्स।' तहा सद्दो जं दव्वं सद्दपरिणयं, जहा कंसताला घंटासद्दो वा, खेत्तसद्दे जतिए खित्ते सुव्वति, जहा बारसहिं जोयणेहिंतो, जंमि खित्ते सद्दो कीरइ, कालसद्दो जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागो, भावसद्दो गुणेण कित्तियं, जहा उसभसामी पढमं जायो णरवई, धम्माण कलाविहीण विभासियव्वा, छक्कं परमं, तदन्नपरमाणु परमाणुस्स तद्दव्वपरो, परमाणु दुपदेसियस्स अन्नदव्वपरो अ, से दो सपंतीए द्विताण जे परित्ता तेसिं गाहेहि देहि वा, कम्मपरो परमाणूतो दुपदेसिओ, जीवो पोग्गलविसेसा, परो दुपदादि, एवं अन्नेवि, जयमाणस्स जं परो करेति, कंठ्यं। इदाणिं सव्वेसिं सुत्तालावगा–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज ट्ठाइत्तए, सअंडादिसु ण ठाएज्जा, अणंतरहिताए पुढवादी जाव आइण्ण०, सलिक्खा आलावगसिद्धा, गामादिसु ॥३६८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्वितीया चूलिका- "सप्तसप्तिका"

द्वितीया चूलिकाया: प्रथमा सप्तसप्तिका- 'स्थान-विषयक'

प्रत
वृत्यंक
[१६३]

दीप
अनुक्रम
[४९७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३६९॥

एगो वा २, ३, ४, तेहिं सद्धिं एगततो ठाणं ठाएमाणो आलिंगणा वज्जेज्ज, जम्हा एते दोसा तम्हा अंतरा सुवंति, दो हत्था अणाबाधा, चउहिं ट्ठाणं ट्ठाएज्जा, अचित्तं अवसज्जिस्सामि, अन्नमज्जणं अवत्थंभणं, कुड्डे खंभादिसु वा पट्टीए वा, पट्टीए उरेण वा, अवलंबणं हत्थेणं, लंबंता परिस्संता, अग्गलादिसु अवलंबति, ट्ठाणे परिचाओ, कायविपरिक्कमणं सवियारं चंकमणमित्यर्थः, उचारपासवणादिसु भवति तं जाणेज्जा, सण्णिरुद्धगामट्ठाणं ठाइस्सामि, कहं सन्निरुद्धं ?, अन्न अन्न समेति अप्पतिरियं एगपोग्गलदिट्ठी अणिमिसणयणे विभासियव्वं, परूढणहकेसमंसू, पढमं ट्ठाणसत्तिक्कयं समात्तं ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज णिसीहियं उवागच्छित्तए जहा ठाणसत्तिक्कए पढमावज्जणिसीहियासत्तिक्कयं, सअंडं थंडिल्लं ण उवागच्छंति, अप्पंडं उवागच्छंति, पादपुंछणं रयहरणं तं गहाय सतं, सए असंते णट्ठे हिते विस्सरिते उल्ले वा पराययं जाएत्तावि गिज्झंति, वोसिरति विसोधेति णिल्लेवेति एगट्ठं, गाहा 'खुदाइसंनिरुद्धे' पवडणादिदोसा, बीयाणि पडिसारेंति वा पडिसाडिस्संति वा खलगादिसु, काहिंति वा अच्चणिया, काया बीएहिं ट्ठावेंति, तिसु वा ट्ठावेंति ट्ठाविस्संति वा खेत्तादिसु अणंतरहियादि जाव बंधो भणितो, आगंतगारेसु वा आरामागारेसु वा, उज्जाणं जत्थ उज्जाणियाए गंमति, णिज्जाणं जत्थ मत्थो आवासेति, गिहा एतेसु चेव, अट्टालग एव चरिया, अंतो पागारस्स अट्ठहत्थो, दारं च गोपुरं, पागारो, तत्थ छड्डंताणं पंतावणादी, दगमग्गो मग्गो णिक्का सारणी वा पाणियाहारिपंथो, गुत्तागारं तं चेव पडिबंधं, भिक्खागारं रहसंट्ठियं, कोट्ठागारं धन्नसाला, जाणसाला सगडादीणं, वाहणसाला बलद्दादीणं, तणसारा वा, लीच्छुभंति तुससाला कुंभकारा जत्थ तुसा ट्ठवेंति जवगोधूमाणं, तुससाला पलासस्स भरिता, गोमयसाला च्छाणुंडगा करीसो वा, महाकुलं रायादीणं, महागिहं राउलगिहं, आवासो वा, इत्थीणं जा सण्णाभूमी ॥३६९॥

सप्तसप्तिका:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्वितीया चूलिकाया: द्वितीया सप्तसप्तिका- 'निषिधिका-विषयक' एवं
द्वितीया चूलिकाया: तृतीया सप्तसप्तिका- 'उच्चार प्रश्रवण-विषयक'

प्रत
वृत्यंक
[१६४-१६७]

दीप
अनुक्रम
[४९८-५०१]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३७०॥

सप्तसप्तिकाः

काइयभूमी वा गिहमज्झं, गिहमुहं अग्गुमरो, गेहिदुवारं उग्घाडवारिया, गिहंगणं उग्घाडं, सारणंतरं, गिहवच्चं पुरोहडं, मडगं मृतकमेव, वच्चं जत्थ छड्डिज्जति, डज्झति जत्थ तं छारियं, मडगलेणं मतगगिहं, जहा दीवे जोगविसए वा, थूमिया चियंगं, इंगालदाहसि वा जत्थ इंगाला डज्झंति, खारो जत्थ तित्तकुंतलया डज्झंति, गावीसु रमंतीसु मसगाइं सरीराइं उवसमणत्थं डज्झंति, अड्डिगाणि वा, गाविआलोगे जत्थ गावीओ लिहंति, मट्टियाखाणी जत्थ कुंभारा मट्टियं खणंति, लोगो वा, सेओ पाणियमिस्सतो पंको, जत्थ खलु पतिपणओ, जत्थ उल्लिया भूमी, आययणं, एतेसिं ड्डाणाणि देसो वा उंवरपव्वंसि वा, पव्वं णाम जत्थ पत्ता पुप्फा फला वा सुकविज्जंति, णग्गोहआसड्डपिलुक्ख पिप्परि, मालुगा वल्ली भवति, वणे वत्ति अंववणमादी, चंपगवणमादी पत्तोवगतं, वल्लीपुप्फोवगा जहा पुन्नागा, फलोवगा जहा कवित्थादी, णिच्छा उवगा, तंजतणं णंदिरुक्खादी, उवयोगं गच्छंतीति उवगा, से भिक्खू वा २ राओ वा वियाले वा, वारगं णाम उच्चारमत्तओ, अप्पणगं परायगं वा जाइत्ता अभिग्गहिओ धरेति न णिक्खिवति, विगिंचति वोसिरति, विसोहिति निल्लेवेति सेतमादाणं झामथंडिलादीसु परिट्ठावेति, तृतीयं समासं ॥

ड्डाणणिसीहिगाउच्चारभूमिं पत्तस्स रूवाइं, तेहिं रागो दोसो वा ण कायव्वो, से भिक्खू वा २ वा जहेव जाइं रूवाइं ‘ण सका चक्खुविसयमागयं ण दट्ठुं जं तंनिमित्तं गमणं तं चयेज्ज, तंजहा—वप्पाणि वा पुव्वभणिताइं, कच्छादीवि य भणियव्वा, गाममादीणि पेच्छामो आगाराओ य पासायंताओ, पहाविते तेसिं चेव, जहा सोपारए लित्ता, महामहावि एतेसिं महिमा, उम्मगं वालमादी, णगरस्स वा, गामवहाणि गामघायाणि, आसकरणाणि आसा सिक्खाविज्जंति, रहचरियादिसु जह हत्थी सिक्खाविज्जंति, चेलुग्गाहा गहिता, उड्डगोणमहिसा, उट्ठाणाणि चेव सण्णादी, जुद्धाणि तेसिं चेव, मेंढगादीण य णियुद्धं, सविवसं खलीकरेति, ॥३७०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्वितीया चूलिकाया: चतुर्था सप्तसप्तिका- ‘शब्द-विषयक’ एवं
द्वितीया चूलिकाया:पंचमा सप्तसप्तिका- ‘रूप-विषयक’

प्रत वृत्यंक [१६८-१७१]

दीप अनुक्रम [५०२-५०५]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३७१॥

सप्तसप्तकाः

उज्जुहियाणि गावीओ उत्रद्धणातो अडत्तिंतेणं उज्जूहंति, णिज्जूहियाणि णिखोडिज्जंति गावीओ चेव जोइज्जंति वा, मिहो जुहिगाणि, परियाणगं च उंत्तराणं, हयाणीयाणि वा अणियग्गहण्या चत्तारिवि अणियदंशणाणि, एगो वा एगपुरिसं वा वज्झं, नवरं सेहस्स दरिसिज्जति थिरीकरणत्थं, ओप्पाइताबि केवलपुस्तकवाचणाणि, माणुस्साणि याणि जत्तासुहत्ताणि, जाणाणं गोणाणं च जह कंच-लसंवला, अहवा माणुस्साणं चेव एवंविहं णामणविज्जाहिं णामिज्जंति रेखा, अहवा णट्टं सिक्खाविन्ताणं अंगाइं णामिज्जंति, जोई-सत्थे कहियाइं कव्वाइं, धण्णाइं वा पारमिता गधेतुं, कमवित्ताण पाउरणाणि कीरंति, तं जाणरुक्खाइं मग्गो, दट्ठुं सचरभासाक-लहाणि जहा सेंधवाण भासाओ, वेराणि गामाईणं, सग्गामा वा, जणवयाणि चेव जणवयाणि जत्थ सभामाईसु जणवया वट्टंति, कट्ठकम्माणि वट्टाति सरूवायारस्स वा पोत्थगा, कहिगादी, चितागं लेप्पारमादी, गंथिमाण पुप्फमादी, वंटीसंमं विहागगं, पूरिमो रहो, संघातिमो कंचुगो महतो। से भिक्खू वा २ इच्छा ण वा, से भिक्खू वा २ महामहाणि बहुरयाणं ससुरउमादि, बहुणडाणि जहा इंदमहे, सव्वतालायरा बहुसद्दाणि, सरक्खगतला मत्तहजानएहिं, मिलक्खूणि आभामियाणि, ण वा तेसिं परिवुच्छिज्जंति। से भिक्खू वा २ इहलोइयं मणुस्साणं पारलोइगं हियगतादी, अहवा जहा धम्मिलो इहलोइएसु परलोइएसु संवदंतो (बंभदत्तो, सेसं कंठथं, एवं सद्दाइंपि संखादीणि तताणि वीणावचीसमुग्घायादीणि विततााणि भंभादिकणाइं लउलकुडा सुसिराइं वंसपव्वगादिपव्वादीणि सद्दं सुणेन्ताणं, जतो जाति पिक्खतो वण्णिज्जंतेसु चारगादीणि जाति। पंचमं सत्तसत्तिक्कगं समत्तं॥

परकिरिया परेण कीरमाणे कम्मं भवति, किरिया कम्मं, अध्यात्मकं तस्स २ करेंतस्स, जति सातं कज्जं साएति, अध्या-त्मस्थिता अब्भत्थिया, संसयता संजोयो भवति तत्थ अज्झत्थेणं, ततो कर्मसंश्लेषो भवति, तम्हा णो सादिजेज्जा, सा य इमा ॥३७१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

द्विवितीया चूलिकाया:षष्ठा सप्तसप्तिका- 'परक्रिया-विषयक'

प्रत
वृत्यंक
[१७२-१७३]

दीप
अनुक्रम
[५०६-५०७]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३७२॥

सप्तसप्तैककाः

सिया मेरा, आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा एक्कसिं पुणो पुणो, सादिज्जणा करावेति करेतव्वा वा, ण वा करेंते समणुजाणेज्जा, समणुमोदणा परियाइक्खिज्जा, मक्खणा उव्वलणधावणा आलावगसिद्धा, णहा पदा फुसिता कोविता अलत्तगं गिण्हंति, एवं काएवि, एवं कायंसि वणं गलगंडादि, अरतीओ अंधारईओ, असियाओ अरिसाओ, पिलगा भगंदलं, अपानप्रदेसे सत्थेण अच्छिंदणा विच्छिदणा, सीतोदगादि उच्छोलणा, तेल्लादि आलेवणा, जतो उट्टुवणं जाते उट्टुविज्जति उद्धूयवितो य सज्जति, पालुंकिमितो भगंदलाओ, कुच्छिकिमिता गंडूलगा किमिया य, से से परो दीहाओ सिहा अग्गगाइं कप्पेति छिंदति संवड्ढेति समारेति, कण्णाणि अच्छिफुमणं कन्नधं पदंसेयव्वं, सेओ प्रस्वेदो, जल्लो कमढो मल्लो, पायवो रुक्खो, रेसो चेव पाणिस्स पंको भवति, अणंतरं पुण आगंतारे कोउच्छंगो, एगम्मि जुण्णगो उक्खित्ते, पालियंको दोसुवि, अणुफासणं थोवं पातुं पच्छा दंसणं, एवं अणुपालणंपि, मूलाणि वा, पाहणाओ, कन्नाणि सुद्धेण वइबलेण विज्जामंतादिणा, तम्हा अपडिकम्मं सरीरेण होयव्वं, किं कारणं ? जेण तिगिच्छा, एवं रसाणीए पचंति, पयंति भाणवा, पचंति पूर्वकृतेन कर्मणा, ते पचमाणा अन्योऽन्यंपि संतापयंति, यदुक्तमातापयंतीत्यर्थः, इति साम्प्रतं पावंति, तेवि एति एयंति अणंतगुणं कडुगविवागं कम्मं एति, करोत्यस्मिन्निति कट्टुं, एतेत्ति कतारं एति कम्मं, कट्टु कडाणि वेदेंति, कृत्वा च कृतानि च वेदेंति कर्माणि कम्मं इत्यर्थः, वेदणं चिरं कारए वा एस, वेदणया वेदणापि विदार्यतो विगतो भवति कर्मणां ते पच्छा प्रकृतिपुरुषेश्वरनियतवादीनां विगमनं विविक्तिः, अथवा कृत्वा यदुक्तं भवति फुसति च, तम्हा संपयं ण करेमि दुक्खं। छट्ठं सत्तिक्कयं समासमिति ॥

अण्णमण्णकिरिया दो सहिता अण्णमण्णं पगरेंति, ण कप्पति एवं चेव, एयं पुण पडिमापडिवण्णाणं जिणाणं च ण ॥३७२॥

द्विवितीया चूलिकाया: सप्तमा सप्तसप्तिका- ‘अन्योन्य क्रिया’-विषयक’

प्रत
वृत्यंक
[१७४]

दीप
अनुक्रम
[५०८]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३७३॥

भावनाध्ययनं

कप्पति, थेराणं किंपि कप्पेज, कारणजाए कुज्जावि, भाषितव्वं विभूसावडियाएवि, निग्गमो सो चेव, णवाणं वत्थाणं रयहरणादि-वदा आलावगा, अविया मतिलाणि विभूसापडिया धरेति, वरं अन्नाणि लभंतो । इति सप्तमं सत्तिक्कगं समाप्तम् ॥

संबंधो—केण सो आयारो ? केवतितो ? भगवता, आचारवस्थितेन वा भावणा भावेयव्वा, इमा वा इतियातुला, भावणात्ति भावयंति तमिति भावयति वा अनया भावनया, अज्झासो भावणत्ति वा एगट्ठं, णिक्खेवो चउव्विहो, दव्वे गाहा, दव्वं गंधं गाहा (३३०) गंधंगेहिं वत्थे माविज्जंति, तिला य पुप्फमालादीहिं, आदिग्गहणा कविल्लुगादी भाविज्जंति सीतभावं चणकट्ठ-काणं, सियवल्ली एगा वालाणं, मियाणं घोडगाण य, आदिग्गहणा आगदीहिं भाविंति, भावे दुविहा—पसत्था य अपसत्था य, अपसत्था **पाणवहमुसावाया** (३३१) पाणवहा पढमं थिणाति पच्छा णिद्धं ईहेति, वीरल्लसउणं वा, मुमावाते वाणियगाणं च, अहवा **दंसणाणचरित्ते** गाहा (३३२) जहा य भावेयव्वा तासिं लक्खणं वोच्छामि सुलक्षणतः आत्मीयदंसणं भावणा, अप्प-सत्था **धीयारवच्छल्लगाणं** तब्भत्ता ओचिट्टभायणाणि गिण्हंति, अप्पगं बलं दावेंति, नाणेवि अप्पसत्था—दंभकाराद्धितिं कृत्वा, नीतिलाधवमासुरैः। नातिसूक्ष्ममुलूकादि, तापिज्ञाकरणाद्यशः ॥१॥ चरित्तेवि जहा वृक्षमूलिकायां एवमादि, ताहे तवे पंचग्गि-तावणादी, वेरग्गे सते कवलंतस्स कुब्जंमि पुरे लिख्यते, तं पासित्ता वेरग्गं भावेति, एसा अपसत्था, इमा पसत्था दंसणे 'तित्थ-गराणं' गाहा (३३३) जहा भगवं जोयणणीहारिणा सद्देण धम्मं कहेति, सव्वेसिं सभासाए परिणमति, जहा 'एकरसमंतरि-क्षात्०' कस्सऽण्णस्स ?, एवं पवयणे दुवालसंगं गंभीरं, सव्वतो रुद्दं, प्रवचनं वेत्ति प्रावचनः, सव्वो दसपुव्वी चउदपुव्वी—पभू ! घडाए घडसहस्सं, अनिसाचारादी, इड्ढी विउव्वणादी जहा 'इत्थी असी पडागा' एतेसिं अप्पसत्थाणं अतिक्कमणं दूरत्थाणं ॥३७३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

तृतीया चूलिका- "भावना" आरब्धा:

प्रत
वृत्यंक
[१७५-१७९]
+
गाथा:

दीप
अनुक्रम
[५०९-५४०]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३७४॥

भावनाध्ययनं

गथणं, दरिसणेणं कित्तणाए संथुयणाए पूयणाए दंसणभावणा, दंसणसुद्धी य भवति, अहवा ठाणं इमं 'जंमाभिसेग'गाहा (३३४) जंमभूमी, अभिसेगो, अभि० ग्रत्थ, जत्थ रायाभिसेओ वा, निक्खमणं जहिं णिक्खंतो, चरणं कम्मारगामा अट्ठियगामादि, जत्थ हिंडंतो, णाणुप्पभूमी णिव्वाणभूमी भावेंतस्स आगाढं दंसणं भवति, एवं दियलोए विमाणभवणेसु मंदरणंदिस्सरभोमणरगेसु पवेइयपूया, अट्ठापदादि (३३५) पाससामिणो अधिछत्ताए, प्रावचने रथावित्ते, जत्थ वा बहुस्सुता कालगता अइच्छिताइया विहरंता वा, चमरुप्पायं च, णिरणुचप्पुता वा जत्थ पवयणा, इदाणिं (३३६) गणितं बीयादि णिमित्तं अट्ठंगं जुत्ती सुवण्णादी जोणीपाहुडं वा, संदिट्ठगाइं एयाइं, अवितहाइं णाणादि, नान्यसमयेषु एतानि, एगत्ते उवगता दर्शनभावना इत्यर्थः, गुणपच्चइया गुणनिप्फन्ना, इमे अत्था गणियादी (३३७) पवयणीणं गुणमाहप्पं जहा विण्हुअणगारस्स इच्छियसिद्धिदाति वा, इसिणामकित्तणं इसिमंडलत्थउ सुरपूजितो, हरिएसादी, सुरिंदेण अज्जरक्खिता, नरिंदपूजिता मरिचीढंढादि, पोराणचेइयाणि काइत्तारे जुन्नस्वामीत्येवमादि, अतिसतो तिविहो—ओहिमणपज्जवकेवलाणि आमोसहाइ वा, इड्ढी विउव्वणादि, दंसणभावणा। णाणे णाणेण भावेति (३३८-४०) तत्थ जीवाजीवादीनां पदार्थानां च नाणं इह दिट्ठं जिनप्रवचने वा, इह ज्ञाने लोके वा, कज्जं फलं, कारणं नाणादी ३, कारकः साहू, सिद्धी, बन्धमोक्षे, सुहबद्धो जीवो, बंधहेतुः मिथ्यादर्शनअविरति० बंधनं अष्टप्रकारं कम्मं, बंधफलं तद्विपाको, एताणि इह सुकथियाणि, संसारपवंचो इह कहितो जिणवरेहिं, जेण 'अत्थं भासइ अरहा सुत्तं' इमे य गुणा— “पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं अहिज्जेज्जा—नाणनिमित्त”, एवं पंचहिं ठाणेहिं सज्झाए आउत्तो, एवं वायणादी, सज्झाए आउत्तयाए य गुरुकुलवासो भवति, किंच 'जं अन्नाणी कम्मं खवेति०' एसा णाणेण भावणा 'साहु अहिंसाधम्मो' गाहा (३४१) साहु अहिंसा-

॥३७४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१७५-
१७९]
+
गाथा:

दीप
अनुक्रम
[५०९-
५४०]

धम्मो, सुट्ठु सोहणो अहिंसता धर्म्मः, एवं सेसव्वतेहिं, एते मूलगुणा, साहू बारसविहो य तवो, उत्तरगुणा, वेरग्गं विसएसु आयसरीरया, अप्पमादो खणलवपडिबुज्झणातो, एगत्तं 'जायत्येको मृयत्येको०' अहवा 'एगे मे० सव्वे०' अप्पाएसित्तं, अन्नंपि जं किंचि चरित्तभावगं चरित्तवुड्ढिकारगं च, सा चरित्तभावणा इति, चरित्तमणुगता, अणुगता अनुसृता इत्यर्थः, इदाणिं तव-भावणा 'किह मे होज्ज अवंझो' गाहा (३४३) निव्वीतियादिणा तवेणं, किं वा पभू समर्थः, काउं तवं, को इध दव्वे जोगे णिप्फावचणगादि अहोरत्तस्स को जोगो तवो, तहा पणीतं लभंतस्स दव्वं, को वा खित्ते मंगुलखित्ते सोभणे वा जो जोगो, काले वरिसारित्ते गिम्हे वा जोगो, भावे दुब्बलयं धितिमंतं च जाणेत्ता जो जोगो ओच्छाह(बल)गाहाओ (३४४) तवे य बार-सविहे णिण्हियव्वे पालेयव्वे य इति तवभावणा, संजमसंघयणा तववेरग्गेसु समोयरंति, संजमसंघयणगुरुता वेरग्गे, बारसविहा अनित्यता, अस्सवण्णं वर्णयित्वा चरित्तभावणाए इह अध्ययने एगत्तं, केण एयाओ उवदिट्ठाओ ? केण वा भावियाओ ?--तेणं कालेणं तेणं समएणं० तस्मिन् उववायसमए इत्यर्थः, हत्थो जासिं उत्तराणं आसन्ने हत्थस्स वा जाओ आसन्नाओ ताओ हत्थु-त्तराओ, चयं चयित्ता, इह जंबुदीवे दीवे, नान्येषु, असंख्याता जंबुद्दीवा, आहारभवसरीरेसु वोच्छिण्णेसु दावेसु, तिणाणोवगतेति तिन्नाणे, एगसमए जोगो णत्थि तेण ण याणइ चयमाणो, ओहीरमाणी ईसिं विबुज्झमाणीए निद्दाए, हिताणुकं० हितं अप्पाणं सकस्स य, अणुकंपओ तित्थगरस्स, अदुघित्तएत्ति अव्वाबाहं तिण्हवि, उम्मिजलमालओ जंमि जले तद्धवति उम्मिजलमालं उम्मि-जलमालतुल्ला उम्मिजलमालभूता, देवेहिं ओवयंतेहिं कहकहभूतो, सोभणा मतिः सन्मतिः सन्मत्या सह गतः सहसमु(संम)दियाए, अचले परीसहोवसग्गेहिं भयभेरवाणं खंती अहियासइत्ता पडिमाओ पालए अरतिरतिसहे इदि, श्रेयः श्रेयसि तस्मिन्निति श्रेयांसः, ॥३७५॥

प्रत
वृत्यंक
[१७५-
१७९]
+
गाथा:

दीप
अनुक्रम
[५०९-
५४०]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३७६॥

भावना-
ध्ययनं

विदेहेन विदेहवइदिन्ना, त्रिदेहजचा, प्रियं करोति प्रेयकारणी, नास्य पओजणं, अणोज्जा सेसवइ, दविणजातस्य पती, दक्खे क्रियासु पतिण्णो जाणकः, पडिरूवो रूवाइगुणो, भद्रस्वभावः भद्रकः मध्यस्थ इति, विणीतो विग्घादिगुणजुत्तोवि ण माणं गच्छति, णातपुत्तेवि ण थद्धे, णातकुलाज्ञातः, त्रिदेहदिन्नोति विदेहाए जेणित्थ जातो विदेहवर्चभूतो वा, गुरूहिं अब्भणुन्नातो दोहिं वासेहिं गतेहिं, मणुस्सधम्माओ मणुस्सभावो सोइंदियादि वा, णाणं बुज्झाहि चरित्तधम्मे, अंतोदीपं दीपशिखावत् सव्वाओ, विधिअणियट्टा सरीराओ, पोरिसपमाणपत्ता चतुभागो, मंजुमंजुत्ति मधुरं, अपडिबुज्झमाणे ण विभाविज्जति, रोरेणं कंको भवति, छिन्नसोतित्ति इंदियसोएहिं न रागद्वेषं गच्छति, कहं छिन्नसोते ?, कंसपादी दिट्ठंतो, उदगं कंसभाणे ण पविसति, एवं भगवं उदगं ण पविसति, संखे जहा रंगणं ण गेण्हति एवं भगवंपि कम्मं, जीवो अपडिहयगई एवं भगवंतो जत्थ सीतउण्हभयं वा, जत्थ न पडिहम्मति गतिगमणंमि, एवं भगवं ण किंचि अवलंबति तवं करेंतो देवंदादी, एवं वसहीए गामे वा अपडिबद्धं, सारयं न कलुसं, पुक्खर० एवं कम्मुणा णोवलिप्पति, कूर्मवत् गुप्तेन्द्रियः, विहग इव ण वसहीए आहारोवधिमित्तव्व पुच्छति, खग्गविसाणं व एवं एक्को चेव, रागदोसरहितो, भारंडवत् अप्रमत्तः, कुंजर० सूरभावो सौर्यं सोडीर्यं वा, एवं परीसहादीहिं ण जिज्जति, सेसा जहासंभवं वच्चा, जच्चकणगं वा जातरूवे पुणो कम्मुणा ण लिप्पति, बहुसहा वसुंधरा एवं भगवं दव्वतो सचित्ते दुपदादिसु अचित्ते वज्झचामरादिसु मीसए आसहत्थिमादिसु सइत्थिउत्तेसु, खित्तकालभावेन, बुध्यंतो बोधिवान्, अन्नतरं नाणं लोगप्रमाणं ओधी, पव्वइयस्स चत्तारि नाणाइं जाव छउमत्थो, खाइयं दंसणं अहक्खायं चरित्तं, सुचिभावो सोवच्चिका तेसिं फलं परिणिव्वाणं तस्स मग्गो नाणादी ३, झाणंतरिया सुहुमकिरियं असंपत्तं, अरहंति वंदणनमंसणाइं, जिणा जिणकसाया, तत्र अभिप्रायः अध्यवसायः!, ॥३७६॥

प्रत वृत्त्यंक [१७५-१७९] + गाथा:

दीप अनुक्रम [५०९-५४०]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३७७॥

विमुत्त्यध्ययनं

भुत्तं पडिसेवियं, आविः प्रकाशे कर्म, रहः अप्रकाशं रहो कर्मः, अरहा रहसि कृतानां मानसिकानां मावानां प्रकाशकृतानां च काइकानां वेत्ता भगवं जानको इत्यर्थः, तं तं कालं तीतानागतवत्तमानं तिहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं, सव्वलोए उड्डलोए अहोलोए तिरियलोए, सव्वजीवानां तसथावराणं भावे जाणमाणे पासमाणे विहरति, अजीवाणं च, अभिसमिच्चा ज्ञात्वा, किं कृतवान् ?, धम्मं आख्याति छज्जीवनिकाये तेभ्यश्च विरमणं, वट्टमाणेइ, ताव आतिक्खे एतन्मात्रं, णत्थि उत्तरिएणं, एतद्विशिष्टो एतद्व्यतिरिक्तो वा आख्याति, पूर्वैः भावाः, एतद्व्यतिरिक्तो न कश्चिद्धर्मोऽस्तीति तम्हा वुत्ते पढमे महव्वए, तस्स उपसंपज्जनार्थं, ज्ञानभावना दर्शनभावना चोक्ता, चरित्रभावनेयमपदिश्यते, भावयतीति भावना, यथा शिलाजतो आयसं भाजनं विषस्य कोद्रवाः, सिद्धा य गाहाए व इमा भावना, तत्र इमा पढमा रियासमितेणं गच्छंतेण य भवियव्वं, एसणासमिति, आलोगपाणेति, आलोगो प्रेक्षणा, आदाणं दोसाणं आपज्जेत पाणादि, निक्खेवणासमिति, आदाणग्गहणेण वतिकायाण सत्तभंगा वायासमितिरुक्ता संजमे, इदानीं आध्यात्मिकी मणसमिति, कहं ?, जे य मणे पावए सकिरिए, एवं वई व, अहासुत्तं जहा सुत्ते भणितं, अहाकप्पं जहाविधि, अहामग्गं जहामग्गं मग्गो नाणादि, अहातच्चं जहासत्यं, हासं परिजाणे न हसे इत्यर्थः, हसंते संपाइमवायुवहो, हसंता किल संधेत मुसं वा ब्रूयात्, अणुवीयि पुव्वं बुद्धीए पासित्ता, कोहे पुत्रं अपुत्रं ब्रूयात्, इह परत्र च दोषं ज्ञात्वा, कुंचश्च कार्याकार्यानभिज्ञः, लोभस्स दोषां ज्ञात्वा, तं परिज्ञाने, भयसीले उरगजातीओ, आचारं भणति, तइएणं अदिन्नादाणसंरक्खणत्थं अदिण्णादाणे णियत्तित्तं च भावणा, आगंतारेसु अणुचिन्त्य उग्गहं जाएज्ज, पभुसंदिट्ठाइसु उग्गहणसीले, एतेण इगलच्छारमल्लगउच्चारादिसु अणुण्णविज्जति, जइ सागारियस्स, उग्गहो ततो मनःसंकल्पः कल्पते, ते संथाडइल्लगादिसु अणुण्णावंतु, भंजेज्ज जहा रातीणिया, गंतओ वा सामिएसु जाएत्तु ततो

॥३७७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णिः

प्रत
वृत्यंक
[१७५-१७९]
+
गाथा:

दीप
अनुक्रम
[५०९-५४०]

श्रीआचा-
रांग सूत्र-
चूर्णिः
॥३७८॥

विमुक्त्य-
ध्ययनं

चिट्ठिज्ज वा जाव पताविज्ज वा, तिन्नि रागादि तिदोसा, धंमिए अह एगो साहंमिउग्गहो, णो पणीयं आहारिज्ज, पणियं णिद्धं, रुक्खंपि णातिबहु, संनिसिज्जत्ति भोदेवरिता उ विविधो भंगो विभङ्गः चित्तविभ्रम इत्यर्थः, धम्माओ भङ्गः पतनमित्यर्थः, अइ-णिद्देणं विभूसाए हत्थेण पादधोवणादी वत्थाणि च सुक्किल्लादि वंदियसुलादीणि मनसः इष्टानि मनोज्ञानि, मणं हरंतीति मणो-हरणाइं, नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं, णो इत्थीणं कहं कहित्ता, इत्थिपरिवुडे इत्थियाणं कहेति, परिग्गहे पंचसु विसएसु न रागदोसं गच्छंति, गद्योक्तोऽर्थः पुनः श्लोकैरेव समनुगम्यते, तद्व्यक्तिर्व्यवसायार्थं, पुनरुक्तोऽनुगृण्हाति, रियासु नित्यं समितो सताजतो पेक्ष्य भुंजते पाणभोयणं, आयाणणिक्खेवे दुगुंछति अपमज्जितादि सत्त, सम्यक् आहितो समाहितो, संजमए–निरुंभए अप्रशस्तं मणवइ, हस्सइ न हसमानस्स असच्चं भवति, कोहलोभभयानि च त्यजेत् छड्डए इत्यर्थः, सह दीहरातेण, दीहरायं जावज्जीवं, समीक्ष्य, एताए भावणाए मुसं वज्जए। समये च उग्गहे जाइतव्वए घडति, संमं पराइयं जंतिकाय अणुण्णाया, ताणि मतिमां णिसम्म जाणितु, अहियच्चा व परिभुंजे पाणभोयणं, साहंमियाणं उग्गहं च अहिट्ठए, आहारे भुत्ते वित्तसिता जो स्त्री न पेहए, संधविज्जति ण संवसेज्ज, तंमि संमं वुद्धे, सुमणुत्ति आमंत्रणं, खुड्डा इत्थिगा, तासिं कहा खुड्डाए कहा ण कुर्यात्, धर्मानुपेक्षी संव-सेज्ज, एवं बंभचेरं दुविहाए संधणाए, अहवा सद्दए बंभचेरं जे सद्दरूव० आगमे आगंते तेषु विषयप्राप्तेषु वा, धीरो पयपदोसा, द्वेषं तं न करेति पंडिते, स दंते इंदियनोइन्द्रियैः स विरतः स चाकिंचणः, अकिंचणो अपरिग्रहः, सुसंवृत्तः पंचहिं संवरेहिं, णवं ण कुज्जा विधुणे पुराणं कम्मं, आर्यगुप्तः स्थित इत्यर्थः, अहवा जो धर्मो उक्तः, वुत्तो भणितो इत्यर्थः, अहवा अज्ज धर्मः योऽत्र स्थितः अविरतः समणुन्नवति स च पुण जातिमरणं उवेति संसार इत्यर्थः। इति भावनाऽध्ययनं परिसमाप्तम् ॥

॥३७८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत वृत्यंक [१७९] + गाथा: १-१२

दीप अनुक्रम [५४१-५५२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३७९॥

संबंधो-एयाओ भावणाओ भावेंतस्स कर्म्मविमुक्तिर्भवति, अहवा इहवि भावणा एव तस्स अणुयोगदारविभासा, अधिगारो य से पंच अणिच्चे पव्वए रुप्पे गाहा (३४५) जो चेव होइ मोक्खो (३४६) कंठ्यं, णवरि णिक्खेवो दव्वमुत्ति जो जेण दव्वेण विमुच्चति यथा निगडैर्विमुक्तः, भावविमुत्ती कर्म्मक्षया, स च भावणाजुत्तस्स, ताओ य इमाओ भावणाओ अणिच्चतादी, अणिच्चमावासमुवेंति जंतवो (१३६ सू०) माणुस्सं वासं सरीरं वा अणिच्चं, अहवा सव्व एव संसारवासो अणिच्चं, उवेंति-प्राप्नुवन्ति, जंतवो जीवा, लोइया पासितुं सोच्चा समिच्च जाणेत्तु, इतरकालीयं इतरं, भणिवि अणिच्चते, जहा देवाणं चिरकालट्ठिईणं ण तहा मणुस्साणं आउं, इदं तु अल्पकायस्थितियं संसारं च कदलीगर्भणिस्सारं ज्ञात्वा तस्माद्ववस्थे(व्युत्सृजेत्), जे तु विण्णु-विद्वान्, अकरणं, अकारणबंधणं, तं तु इत्थिगा गिहं वा, किं एतदेवमिति ?, उच्यते इदमन्यत्-अभीतो परीसहोवसग्गाणं, आरंभो परिग्गहनिमित्तं भवति, आरंभपरिग्गहो अतस्तं आरंभपरिग्गहं न कुर्यात्, छड्डे चए वोसिरे इत्यर्थः, एवं सेसव्रता अधिगता। तं च एवंगुणजातीयं जहा पस्साहि अत उच्यते-तहा गतं भिक्खुम (१३७*) जहा तित्थगरगणहरा गता तहा गतः, तंजहा-कहं ?, उच्यते, भिक्खुं अणंतेहिं चरित्तपज्जवेहिं संजतं, जावज्जीवं संजयं वा, अणेलिसं असरिसं णाणादीहिं ३ अन्नउत्थियादीहिं वा असरिसं, चिण्हचिट्ठं-सचरित्तं, एसणंति एसमाणं एसणं, कस्स ? मोक्खमग्गस्स संजमस्स वा, तुदंति 'तुद् व्यथने' केण तुदंति ? वायाहिं अभिभवंता अभिद्दवं, नरा मणुस्सा, जहा सरेहिं संगामगतं कुंजरं जोद्धारं अभिद्रवंता तुदंति एवं तं भिक्खुं णरा असंडीयाहिं तुदंति, जहा कोलियचमारा अलसगसामाइगा गहवतिं, दरिद्दा एते पव्वइता, तहाविहेण (१३८*) तहापगारेण, जणेण बालजनेनेत्यर्थः, हीलते णिंदए, कहं हीलेति ? सद्दफासेत्ति स इति णिद्देसे स भिक्खू, अहवा सह सद्देहिं फासा सपहारा

विमुत्त्यध्ययनं ॥३७९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] "आचार" जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

चतुर्था चूलिका- "विमुक्ति"

प्रत
वृत्यंक
[१७९]
+
गाथा:
१-१२

दीप
अनुक्रम
[५४१-५५२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३८०॥

विमुत्त्यध्ययनं

फासा इत्यर्थः, फरुसा णिट्ठुरा अमनोज्ञा, उदीरिता प्रेरिता, तितिक्खएत्ति 'तिज निशामने क्षमायां च' नाणेत्ति विदिते परा-परज्झो, उक्तं च–'आकुष्टेन मतिमता०' विद्यते वैद्धा(द्विष्यते दुष्टः) तेण अदुट्ठचेयसत्ति मणसा न पदुस्सति, कुतो वाया कम्मणा वा, कहं ?, जहा गिरि वातेण ण संपवेवए 'वेपृ कंपने' कंपये इत्यर्थः, कुतो ?, वैराग्या संजमदर्शनाद्वा। उवेहमाणो (१३९*) केसु उवेहं करोति ? तेसु बालजणेसु, तेहिं वा फरुसेहिं सद्फासेहिं उवेहं करेमाणा कुसला जे अहिंसादिसु वट्टंति तैः सार्द्धं संवसे, अहिंसगेणेव संवसे इत्यर्थः, किंनिमित्तं ?, जेण अक्कंतदुक्खा, अकंतं अप्पियं, अप्रियदुक्खा इत्यर्थः, के ते ?, तसथावरा, दुहीये ते संसारे चिट्ठमाणा, तम्हा एवं णच्चा अलूसए, अलूसएत्ति नो हिंसए, सव्वे पया सव्वजीवा, सव्वासु पयासु दया परा यस्स यस्स दयावीरो वा, तहत्ति जहोवदिट्ठं भगवता तेन प्रकारेण, हि पादपूरणे, सेत्ति निद्देशे, योऽविकृतो भिक्षुः सोभनको श्रमणः सुसमण इति उच्यते भवति, एवं सेसावि वता, किंचान्यत् ? विण्णु विद्वान्, स नतेत्ति प्राप्तः, कं ?–धम्मपदं चरित्रमित्यर्थः, अहवा णातकत्तेण ये धम्मपवापदं, कीदृशं ?–अणुत्तरं तस्माद् अन्यत् शोभनतरं न अणुत्तरं, अतस्तस्यैव विदुषः न तस्य धर्मपदं, विनीततृष्णस्य नातृप्तस्य इत्यर्थः, मुनेर्ध्यायतः, किं भवति ?, समाहि तस्य ध्यानादिषु यथा अग्नि इंधनादितस्य घृतावसिक्तस्य वा शिखा वर्द्धति, केन ?, तेजेन, सिहा जाला, तेजो दीप्तिः, एवं स मुणितो तेण प्रव्रज्जया जसेण य वड्ढते, जसो संजोगो, अहवा नाणदंसणचरितेहिं वड्ढति, किंच–तक्ते द्योतते ? दिसोदिसिं (१४१*) सव्वासु खित्तदिसासु पण्णवगदिसा वा प्रतीत्य मनुजा तिरिया वा, अणंतो संसारो सो जेण जितो स भवति अणंतजिणो तेण अणंतजिणेणं, तायतीति ताई तेण ताइणा, किं कतं ? भावदिसाओ पालणत्थं मता, खेमा अपमादा जेसु महव्वएसु ते खेमंकरा वा, महव्वता खेमंकरा वा, पवेदिता कहिता,

॥३८०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

प्रत
वृत्यंक
[१७९]
+
गाथा:
१-१२

दीप
अनुक्रम
[५४१-५५२]

श्रीआचारांग सूत्रचूर्णिः ॥३८१॥

विमुक्त्यध्ययनं

तेण अणंतजिणेण ताइणा, महगुरुत्ति दुःखं ते धरेउं महव्वते, गुरु च महागुरुं णिस्सीकरेत्ति, खइंतेत्ति यदुक्तं भवति, कहं ? क्षपणकरा उदीरिता प्रेरिता, जहा तमेव तेऊत्तिंदिशं तमं अंधकारं, तेउ आदिच्चो, तिदिशिं उड्ढं अहे तिरियं, जं च तमं नाशयति प्रकाशयति च, एवं ते महाव्रता प्रकाशाः। किंच-सितेहिं भिक्खू (१४२*) सिता बद्धा अष्टविधेन कर्मणा, अहवा तिहिं पासेहिं, असितो गिहपासनिग्गतो कर्मखवणउज्जतो वा, संमं व्रजे परिव्रजेति, असज्जमाण इति, कस्मिन् ?, इत्थीसु, इत्थी गुरुयतरा, मूलगुणा हिता, उत्तरगुणा—जहेज्ज पूयणं पूयणं सत्कारः, स एवं मूलगुणउत्तरगुणावस्थितो ण इहलोगपरलोगणिमित्तं तपः कुर्याद्, जहा इहलोगनिमित्तं धम्मिल्लो परलोगनिमित्तं बंभदत्तो, अणिस्सिते अनाश्रुतः इहलोगं, परलोगं-इदं ण परलोगं, तहा परं कामं एवं गुणजुत्तो ण मिज्जति ण भरिज्जइ कामगुणप्रत्ययिकेन कर्म्मणा, न वा मूर्च्छति, अहवा ण विज्जते-जो हि जहिं वट्टति सो तहिं विज्जते दृश्यते, तहा विमुक्तस्य (१४३*) तेण प्रकारेण मुक्तस्य परिण्णा-ज्ञानं परिण्णा चरतीति परिण्णचारी तस्य परिन्नाचारिणः, धितीमतो-धृतियुक्तस्य, दुःखं परीसहोवसग्गो तं खमिति-अहियासेति सहति तस्य दुक्खक्षमस्य, कस्य ?-भिक्षुणो, किं भवति ? उच्यते-विमुच्चति(विसुज्झइ)निद्धति मलं कम्मरयं वा पुरे भवे कडं पुरेकडं असंजमेणं, कहं विसुज्झति ?, समीरितं-रूपं सम्यक् ईरितं प्रेरितं इत्यर्थः, रूप्पं समलं किट्टो सो अग्गिणा तावियस्स फिट्टति (१४४*) सच्चेवं-गुणजातीओ यो भिक्षुः, कस्मिन् च व्रते परिज्ञानसमए-ज्ञानोपदेशे वर्त्तते, उक्तं च-"ज्ञातागमस्य हि फलं०" निरासंसः आसंसा प्रार्थना, सा च इहलोगे परलोगे वा, तत्र प्रार्थयति, आरते उवरतः मेहुणा चरे-विहरे, यः एवं चरेत् स कर्मभ्यो विमुच्यते, कहं ? भुजंगमे, भुजंगमः सर्प्पः जीर्णत्वचं जहा त्यजेत्, दुहसेज्जासंथारा संसारा विमुच्यति, कः?, माहणः जमाहु ओहं (१४५*)

॥३८१॥

प्रत
वृत्यंक
[१७९]
+
गाथा:
१-१२

दीप
अनुक्रम
[५४१-
५५२]

श्रीआचारांग सूत्र-चूर्णिः ॥३८२॥

विमुक्त्य-ध्ययनं

जं आहु-उक्तवान् तीर्थकरो ओहं सलिलं अपारगं-यस्य पारं न गम्यते, कस्य ?-महासमुद्रस्य, अहवा महासमुद्र इव भुयाहिं दुत्तरो एवं संसारो दुत्तरो अणुपातेणं, अधस्तं परिजाणाति दुविहाए परिण्णाए जेण उत्ताएण उत्तरिजति, जाणित्ता य करेति स पण्डितः स मुनिः स ओहंतरः स चांतकरत्ति उच्यते, अन्यच्च जहा य बद्धा (१४६*) जेण प्रकारेण जह रागादिभिः समतीता तिण्णि तु इह मनुष्यलोके, केन बद्धा ?-कम्मणा, के नट्ठा ?, पया नाम जीवा, जहा बद्धाणवि परो वेरमणाधैस्तपसंजमेण वा, अहा तहा यथातथत्वेन बंधमोक्षं ज्ञात्वा कृत्वा च स अंतकड इह उच्यते। तस्यैवंगुणयुक्तस्य इमंमि लोए (१४७*) परमपदो इमो लोगो माणुस्सभवो परो देवलोको उभए वा इहलोगे परलोगे, उभए वा बंधनं कर्म तत्तस्य न विज्ञते किंचिदपि, पच्छा तस्स वोच्छिण्णस्सऽबंधणस्स किं भवति ?, उच्यते-से हु निरालंबणः आलंबणं-सरीरं असरीर इत्यर्थः, न कर्म तस्मिन् प्रतिष्ठितं सो वा कर्म्मसु पसत्था, तस्स को गुणो भवति ?, उच्यते-कलंकली संकलेया भवसंततिः आउगकम्मसंतती वा, पवंचो हीणमध्य-मोत्तमपदा भृत्यस्त्रीनपुंसकपितापुत्रमादी नटवत् कलंकलीभाव एव प्रपंचः तस्मात्कलंकलीभावप्रपंचाद्विमुच्यते पुमान् वा, प्रकामं मुच्यते विमुच्यतेति, निव्वाणं गच्छंतीत्यर्थः, बेमित्ति न मयं तीर्थकरउपदेशात् आचार्यसुधर्मो ब्रवीति, अथवा भगवान् श्रीव[र्द्ध]मानस्वामीति, अथवा अस्य वृत्तार्थस्य अयमभिसंबंधो तस्याकर्मचारिणोपसंपन्नस्य चतुर्थचूलोपचारिणः प्रमादाचरितं पंच[म]साहूणो मल्यते स्थितौ, शेषं तदेव ॥ इति आचाराङ्गचूर्णिः परिसमाप्ता ॥

प्रत्नानामप्यादर्शानामशुद्धतमत्वात् कृतेऽपि यथामति शोधने न तोषः, परं प्रवचनभक्तिरसिकता प्रसारणेऽस्याः प्रयोजिकेति विद्वद्भिः शोधनीयैषा चूर्णिः, क्षाम्यतु चापराधं श्रुतदेवीति।

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता......आगमसूत्र-[०१], अंग सूत्र-[०१] “आचार” जिनदासगणि विहिता चूर्णि:

आचाराङ्गसूत्रस्य जिनदासगणि विहिता चूर्णि परिसमाप्ता:

मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुन: संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

01

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“आचारांगसूत्र” [भद्रबाहूस्वामी रचिता निर्युक्ति: एवं जिनदासगणि विहिता वृत्ति:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“आचार” चूर्णि:” नामेण

परिसमाप्त:

Remembar it’s a Net Publications of ‘jain_e_library’